व्याससूत्र भाषाभाष्यम्

Phuman Ram Pandit

व्याससूत्रभाषाभाष्यम् ॥

श्रीपण्डितताराचन्द्रेण वर्म्मणा निर्मितम् ॥

मुन्शी बालमुकुन्द, ठाकुरदास और दीवानसिंहजी
की सहायता से छपा ॥

बाबू अविनाशीलाल की आज्ञानुसार पण्डित
हरिशङ्कर ने काशीआर्य्ययन्त्रालय कर्णघण्टा में
छापा ॥

जिन महाशयोंको लेनाहो जिला बदाऊं परगने
दातागञ्जमौजे पापर पण्डित ताराचन्द्रशास्त्री
के यहांसे मगालेवें ॥

सन १८८२

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ व्याससूत्रभाषाभाष्यमारभ्यते ॥

भाषयाभाष्यतेभाष्यं ताराचंद्रेणवर्मणा ।
लोकानामुपकाराय ब्रह्मसूत्रेषुसुस्फुटम् ॥ १ ॥

उत्थानिका ॥

अपौरुषेय वाक्य वेद है यह उसका सामान्य लक्षण मीमांसक मत से है सो मन्त्र और ब्राह्मण इन दो भागों से द्विविध है मन्त्र भाग त्रिविध है । क्रतुकारक द्वारा द्रव्य देवता का प्रकाशक वाक्य विशेष मन्त्र है यह मन्त्र का सामान्य लक्षण है । और जो गायत्र्यादि छन्दों में रचा पादवान्सो ऋग्वेद है । जैसे अग्निमीले इत्यादि गीति और छन्दों से युक्त साम है जैसे अग्निमीडे इत्यादि प्रायः छन्द और गीति से रहित यजुर्वेद के मन्त्र हैं इषेत्वादि और यजु में सम्बोधन रूप भी मन्त्र हैं । जैसे अग्नि दग्नी न्विहरभो इत्यादि यद्यपि जैमिन्यादिने जे लक्षण तीनों वेदों के विशेष पृथक् २ कहे हैं तथापि शावरभाष्य प्राति शाख्यादिसे प्रकट है कि जे लक्षण मिथो व्यभिचारी हैं तिस से उन तीनों का यह एक लक्षण अव्यभिचारी है कि जिसको अध्यापक कहे कि मैं ऋक् या यजुः या साम को पढ़ाता हूं और अध्येता कहे कि मैं ऋक् या यजुः या साम को पढ़ता हूं ॥

विधायक वाक्य ब्राह्मण है जैसे अग्निहोत्रं जुहुयात्स्वर्ग काम इत्यादि कहीं २ कठिनार्थ मन्त्रों के अर्थ का भी बोधक ब्राह्मण है, सो ब्राह्मण भी त्रिविध है। विधि नामक १ अर्थ वाद नामक २ विध्यर्थ वाद शून्यरूप ३ प्रवृत्ति निवृत्ति का बोधक वाक्य भी ब्राह्मण है । और निन्दास्तव ऐतिह्य आदिसे युक्त भी है, जो कि वेद कर्म सङ्कर्षण ज्ञान इन तीन की चर्चाओं से पूर्ण था सोही कर्मकाण्डियों ने यज्ञ में तीन प्रयोगों की सिद्ध के लिये ऋगादि नामों से विभक्त किया है यज्ञ में होत्र अर्थात् होता नाम ऋत्विज् के योग्य कर्मोपयोगी वेद से विभाग का नामहोत्र प्रयोग और ऋग्वेद है दूसरा भाग आध्वर्यव है जो कि अध्वर्यु नाम ऋत्विज् के कर्मोपयोगी वेद था सो आध्वर्यव और यजुः कहाता है तीसरा औद्गात्र अर्थात् उद्गाता नाम ऋत्विज के कर्मोपयोगी वेद औद्गात्र और साम नाम से कहा है। इसी से इनका नाम वेदत्रयी भी है हम तो कहि छुटे ऋग्यजुः साम का मूलार्थ। ब्रह्मा और यजमान इन दो के कर्मोपयोगी तीनों वेद साधारण हैं। तिस्से इन दोके कर्मों के निमित्त से चौथा और पचमा भाग न किया गया है अग्निहोत्रादि हयमेधान्त यज्ञों में होता अध्वर्यु २ उद्गाता ३ ब्रह्मा जे चार ऋत्विज् और पचमायजमान इन पांच के बिना यज्ञ नहीं हो होता है॥

मैत्रावरुण १ अच्छावाक २ ग्रावस्तुत् ३ होता ४

इन चार का नाम होतृगण है वे तन में इनके गांये हैं उनका वांटमन्वादि के दाय भाग में प्रकट है॥

प्रतिपस्थाता १ नेष्टा २ उन्नेता ३ अध्वर्यु ४

इसका नाम अध्वयुगण है॥

प्रस्तोता १ प्रतिहर्त्ता २ सुब्रह्मण्य ३ उद्गाता ४ यह उद्गातृगण है ॥

ब्राह्मणाच्छंसी १ अग्नीध्र २ पोता ३ ब्रह्मा ४ यह ब्रह्मगण है ॥

और कौषीतकि शाखा में एक सदस्य नाम ऋत्विज् को भी कहिके सत्तरह ऋत्विज् कहे हैं किसी ने यजमान को मिला के सत्तरह पूरे किये हैं और किसी ने उपद्रष्टा नाम एक अन्य कहके अठारह ऋत्विज् कहे हैं और किसी ने यजमान और पत्नी इन दो को मिलाके बीस पूरे किये हैं यह चर्चा कात्यायनादि के श्रौतसूत्रों से है। श्रुति। प्लवा ह्यतेऽदृढ़ायज्ञरूपाअष्टादशोक्तमवरंयेषुकर्म। एतच्छ्रेयोयेभिनन्दन्तिमूढाजरामृत्युंतेपुनरेवापियन्तीति ॥ अर्थ। विनाशी और अनित्य फल के अर्जन में लगे हैं ऋत्विजादि उक्त अठारह इससे सब विनाशी और अनित्य है ॥

गर्भाधान १ पुंसवन २ सीमन्तोन्नयन ३ जातकर्म ४ नाम निरूपण ५ निष्क्रमण ६ अन्नाशन ७ कर्णवेध ८ चौलकर्म ९ उपनयन १० स्नान ११ विवाह १२ अन्त्येष्टि १३ देवयज्ञ १४ पितृयज्ञ १५ भूतयज्ञ १६ नरयज्ञ १७ अतिथियज्ञ १८ वेदव्रतचतुष्टय १९ अष्टका २० पार्वणश्राद्ध २१ श्रावणी २२ आग्रायणी २३ प्रौष्ठपदी २४ चैत्री २५ आश्वयुजी २६।

ये सात पाक यज्ञ कहाते हैं ॥

अग्न्याधान २७ अग्निहोत्र २८ दर्शपौर्णमास २९

आग्रायणेष्टि ३० चातुर्मास्य ३१ निरूढ़पशुबन्ध ३२ सौत्रामणी ३३

ये सात हविर्यज्ञ कहाते हैं चिरस्वर्गार्थ अर्थात् बहुत काल लों स्वर्ग में रहिने के लिये करते हैं ॥

अग्निष्टोमोत्पत्ति ३४ अत्यग्निष्टोम ३५ उक्थ्य ३६ षोडशी ३७ वाजपेय ३८ अतिरात्र ३९ आप्तो-र्याम ४०

ये सात सोमसंस्था हैं ॥

इनको अर्थी समर्थ विद्वान् अपर्युदस्त साधारण मनुष्य कर सक्ते हैं और अश्वमेध विश्वजित् सर्वमेधादि यज्ञों को विशेष मनुष्य कर सक्ते हैं ॥

सब भूतोंपर दया । दाक्षिण्य । क्षान्ति । अनसूया । शौच । अनायास । मङ्गलाचार । अकार्पण्य । अस्पृहं ॥ ये आठ आत्मगुण कहाते हैं ॥

उक्त अर्तालीस संस्कारों से जैमिन्यादि कर्ममीमांसक मुनि मुक्ति मानते हैं विप्रादि की न कि शूद्रादि कि ॥

और दक्षिणाग्नि, गार्हस्पत्याग्नि, आहवनीयाग्नि, इन तीन अग्नि से ही तीनों वेदों के यज्ञादि कर्म होते हैं ॥

और चौथा अथर्ववेद उक्त तीन अग्नियों से रहित और यज्ञों से शून्य है । शान्ति और पुष्टिकर्मार्थ और शत्रु के वधार्थ और साधुओं के सुखार्थ अथर्वाङ्गिरस आदि मुनियों ने रचा है ॥

त्रेताग्निरहितोथर्ववेदोयज्ञविवर्जितः ।

शान्तिपुष्टिकरोदुष्टहरःशिष्टसुखावहः॥

इस आप्तवाक्य से कर्म एक आमुष्मिकफलार्थ हैं । जैसे होमादि । एक ऐहिकफलार्थ हैं । जैसे कारीरी यज्ञादि । एक अनियतफलार्थ हैं । जैसे चित्रेष्ट्यादि ॥

पर मुनियों ने अपनी परिभाषा में इनही कर्मों को वैदिककर्म कहा है परन्तु वेदमंत्रों में कृष्यादि कर्म भी इति कर्त्तव्यता के साथ ही पढे हैं ।

जैसे इन्द्रःसीरपतिरासीदित्यादि । यहां समझना चाहिये कि कृष्यादि कर्मों को साधारण मनुष्य भी कर सके हैं इससे उनका नाम लौकिककर्मधरा है । और लौकिककर्मों के विधायक मन्त्र पारस्करादि के गृह्यों में देखलो कहिछुटे हम तो पूरापूरासफलकर्मकाण्ड का वृत्तान्त वेद में दूसरा सङ्कर्षण नाम काण्ड है संकर्षणकाण्ड उपासनाकाण्ड भक्तिकाण्ड ये एकार्थवाची शब्द हैं। इस काण्ड का प्रयोजन चित्त की एकाग्रता है तिससे मुक्ति मुख्य प्रयोजन है आदित्योमधु इत्यादिश्रुति भी इस में प्रमाण हैं ॥

तीसरा ज्ञानकाण्ड है कि जिसमें सारा वेद समुद्र में नदियों सा घुसा जाता है यही व्यास मत है ॥

ज्ञान से और भक्ति से जो कर्म किया जाता है सोही वीर्यवत्तर होता है इससे ज्ञान और भक्तिकाण्ड ये दोनों कर्मकाण्ड के शेष हैं और केवल कर्मकाण्डही शेषी है यह मत कर्मठों का सिद्धान्त है ॥

कर्मों से मन को शुद्ध कर फिर शुद्ध मन से ईश्वर को

जानके उसकी भक्ति करे ऐसे कर्म और ज्ञान दोनों मध्यकाण्ड के शेष हैं और मध्यकाण्ड शेषी है यह मत शांडिल्यादि भक्ति शास्त्रों का है। प्रथम कर्म की विधि जानके फिर कर्म से विरक्त कर्मी के पास उपासना है उसको करे यह हो सक्ता है और इस में सत्पुरुषों का विश्वास भी है और ज्ञान से भक्ति कही थी सो ठीक नहीं है क्योंकि साकारोपास्य ईश्वर का वेदन भक्ति का शेष होने से। और निराकार असङ्ग उदासीन अकारक पूर्णकाम को जानके कर्त्ता किसी कारण से किसी कर्म को आचरण नहीं करेगा। यदि देह से विलक्षण नित्य उपनिषत् कहता है तदा मीमांसाशास्त्रक अकर्त्ता आदि के कहने से अधिक नहीं कह सकेंगे।

इससे गर्भाधानादि से शुद्ध और उपासना से स्थिर बुद्धि पुरुष को स्वात्मानन्दाद्वय ज्ञानही शेषी है इसी व्यास की व्यवस्था में विघ्न निवृत्ति है। वेद।

नान्यःपन्थाविद्यतेऽयनायेत्यादि संग्रहः श्लोकः।

शेषाभ्यांपूर्वकाण्डाभ्यांशेषकाण्डेनशेषिणा
कर्मोपासनविज्ञानकाण्डैर्वेदास्त्रिकांडिनः

वेदान्तभाग न अर्थवाद न विधि न विधि अर्थवाद से अन्य है अभय और अशोकफल का दाता है अनुष्ठान के विनाही

वेदान्तभागोनोवादोनविधिस्तोभयेतरः।
अभयाशोकफलदोनिरनुष्ठापकत्वतः॥

सारसंग्रहः ॥

एवं चतुर्विधो वेदः सर्वः प्रवचनादिभिः ।
विभिन्नानेकशाखावान् कर्मकांडेषुभेदवान् ॥
ज्ञानकांडे ब्रह्मबोधित्वे करूपतयास्थित :
तस्य सर्वस्य चार्थोवै सूत्रव्यासप्रकाशितः ॥

कर्मकाण्ड के भेद से अनेक शाखा हैं वेद की और ज्ञानकाण्ड में एकही रूप वेद है लौकिक कर्मशास्त्रीय मोक्षशास्त्रीय त्रिविध साक्षि सिद्ध व्यवहार है विधिनिषेध पर ऋगादि कर्मशास्त्र है । उभय शून्यप्रत्यग्ब्रह्म पर मोक्षशास्त्र वेदांतवाक्य हैं ॥

इस बात के निश्चयार्थ एक व्याप्ति कहता हूं कि जो मत वेद में मिथो विरुद्ध नहीं हो और सर्व वेदसंमत हो सोही मत बुद्धिमान् को मान्य ग्राह्य उपास्य है और ऐसा न कर्मकाण्डन कि संकर्षणकाण्ड किन्तु ज्ञानकाण्ड है नित्य निर्विशेष निःसंगादि के बोधन से ॥

वेदाङ्ग चर्चा है कि छन्दः गायत्रादि वेद के पाद हैं १ और कल्प सूत्र हाथ हैं २ ज्योतिष नेत्र है ३ निरुक्त कान है ४ शिक्षा नाक है ५ व्याकरण मुख है ६ उदात्तादिस्वरों का सिखाने के लिये पाणिनि ने पञ्चखण्ड में शिक्षा रची है सो सब वेदों में साधारण है और हर एक शाखा के उदात्तादि पाठ शब्दादि की सिध्यादि के बोधार्थ जे ग्रन्थ रचे हैं उनका नाम प्रातिशाख्य है । मुनियों ने कर्मों के भेदार्थ कल्प सूत्र रचे हैं ॥

आश्वलायन ने ऋग्वेद में हौत्र प्रयोग के लिये कल्प सूत्र रचे हैं मन्त्रार्थ द्योतक हैं ॥

सांख्यायन ने यजुर्वेद में आध्वर्यव के लिये कल्प बौधायन आपस्तंब कात्यायन तुलायन लाट्यायन आदि ने साम के औद्गात्रादि के प्रयोगार्थ कल्प सूत्र रचे हैं उक्त रीति से कल्प सूत्र त्रिविध हैं॥

पाणिनि ने आठ अध्याय में व्याकरणके सूत्र रचे हैं इस पर वार्तिक कात्यायन ने और भाष्य पतञ्जलि ने रचा है॥

यास्कने निरुक्ति तेरह अध्याय में रची है॥

जर्फरी तुर्फरी इत्यादि शब्द मन्त्रों में पढ़े हैं उनके अर्थ के बोधार्थ क्योंकि जिस मन्त्र का अर्थ नहीं जाना है उसके जप या उस से कर्म करने में कुछ भी फल नहीं होता है॥

और निघण्टु पांच अध्याय में रचा है। वेद में जो देवतादि शब्द आये हैं उनके पर्याय के बोधक शब्दों से।

पिङ्गल ने आठ अध्याय में छन्द रचा है जिस में गायत्र्यादि सात छन्दों का निर्णय है॥

भानु ने दर्श पूर्णमासादि काल के बोधार्थ ज्योतिष रचा है जिसके चालीस श्लोक हैं॥

वेद के छः अङ्गो की चर्चा हो चुकी॥

फिर व्यास जी ने उस भूम वृत्तान्त वेद का सार अपनी युक्ति और उक्ति सहित चार अध्याय में निचोड़के धर दिया है उसका नाम वेदान्त शास्त्र है। अध्यायों के नाम। पहिला समन्वायाध्याय, दूसरा अविरोधाध्याय, तीसरा साधनाध्याय, चौथा फलाध्याय है॥

उक्त चार अध्यायों में सोरहे पाद हैं उनका अर्थ संक्षेप

से यह है कि पहिले अध्याय के पहिले पाद में वचनों से ब्रह्म स्पष्ट कहा है इससे स्पष्ट पाद है दूसरा अस्पष्ट पाद है क्योंकि शाण्डिल्योपासना वाक्य में मनोमयादि धर्म जीव और सोपाधिक ब्रह्म के समान कहिने से २ तीसरा ज्ञेय पाद है ज्ञेय ब्रह्महो है दहरादि उपासना के विचार से ३ इस ढब तीन पादों से वाक्यों का विचार पूरा किया है चौथे पाद में अव्यक्त आख्यादि सन्दिग्ध पदों के अर्थ का निर्णय किया है इससे पद चिन्ता पाद है ४ ॥

फिर दूसरे अध्याय के पहिले पाद में वेदान्त के साथ जो सांख्यादि स्मृतियों का विरोध था उसका निवारण किया है इस से स्मृति पाद है और दूसरे पाद में सांख्यादि सब मत दूषित किये हैं २ इस से तर्क पाद है और तीसरे में पांच महाभूतों के कहिनेवाली श्रुतियों में और भोक्ता और जीव के कहिनेवाली श्रुतियों में जो कलह थी सो निवारदी है इस से भूत पाद है और चौथे से लिङ्ग देह की श्रुतियों में भी सुमति करवा दी इस्से लिङ्ग पाद है फिर तीसरे अध्याय के पहिले पाद में जीव के आने जाने के विचार से वैराग्य का वर्णन किया है इससे वैराग्य पाद है दूसरे में त्वं और तत् इन दो पदों के अर्थ का निर्णय किया है इस से तत्वं पदार्थ शोधन पाद है। तीसरे में सगुणविद्या और सगुणोपसंहार किया है और निर्गुणब्रह्म में अपुनरुक्त पदों का उपसंहार किया है। ३ इस से गुणोपसंहार पाद है। चौथे में निर्गुण ज्ञान के लिये संन्यास और यज्ञादि बहिरङ्ग साधन और शमादि अन्तरङ्ग हैं इससे ज्ञानान्तरङ्ग बहिरङ्ग साधन पाद है अर्थात् कर्म शून्य विद्या

पुरुषार्थ का मुख्य साधन है । चौथे अध्याय के पहिले पाद में वेदान्त के श्रवणादि से और सगुण या निर्गुण ब्रह्म की उपासनादि से ब्रह्म का साक्षात्कार होने पर जीवस्थूल देह युक्तही पाप पुण्य के नाश से मुक्त कहा है। इस से जीवन्मुक्त पाद है और दूसरे में म्रियमाण जीव के निकरने का ढब कहा है। इससे उत्क्रान्ति पाद है तीसरे में मृत सगुणवेदी उत्तर मार्ग से जावेगा । इस से ब्रह्मप्राप्ति पाद है। चौथे में सगुण ब्रह्मवेदी को सत्यलोक में ठौर मिलेगी और निर्गुण ब्रह्मवेदी को विदेह कैवल्य होगी। इस से ब्रह्मलोक पाद है यह संक्षेपार्थ है ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

जिज्ञासाधिकरण १

जिस में पांच वस्तु हों सो अधिकरण है । विषय वाक्य अर्थात् श्रुति या स्मृति उदाहरण के लिये होवें १ फिर सन्देह होवे २ फिर सङ्गति होवे ३ फिर पूर्व पक्ष होवे ४ फिर सिद्धान्त होवे ॥ ५ ॥

अध्याय का नाम समन्वयाध्याय है। और पाद का नाम स्पष्ट लिङ्ग पाद है ॥

अथातोब्रह्मजिज्ञासा ॥ १ ॥

अथ मङ्गल आरम्भ आनन्तर्य पश्चात् का वाचक है इन में से आनन्तर्यार्थक यहां पर गृहीत है नकि अधिकारार्थ ब्रह्मजिज्ञासा के अनधिकार्यत्व से अतः शब्द हेतु वाचक है। ब्रह्म चित्सत् मोद स्वरूप है। जिज्ञासा। जानने की इच्छा है जैसे पूर्वकाण्ड में अथातोधर्म जिज्ञासा इस सूत्र से अभ्युदय के अर्थ धर्महो जिज्ञास्य कहा है तैसेही उत्तर काण्ड में उक्त सूत्र से ब्रह्महो निःश्रेयस के अर्थ जिज्ञास्य कहा है। और वेदही अग्निहोत्रादि हयमेधांत श्रेयः के साधन यज्ञों के फल को बिनाशी कहिता है। वेद। यथेहकर्मचितोलोकःक्षीयतएवमेवामुत्रपुण्यचितोलोकःक्षीयतइति

और वेदही ब्रह्मज्ञान का अनन्त फल परम पुरुषार्थ को कहिता है। वेद। ब्रह्मविदाप्नोतिपरमित्यादि । फिर कौन सा

बुद्धिमान् प्राप्त बड़ा फल छोड़के थोरे चयी में फंसेगा। इस से ब्रह्मही जानने योग्य है। वेद। तद्विजिज्ञासस्वेत्यादि॥

अथवा जिज्ञासा विचार: कर्त्तव्य:। कर्त्तव्य शब्द सूत्र में डालना चाहिये। और जिज्ञासा शब्द विचार में रूढ़ या लाक्षणिक है यह चिन्ता यहां नहीं की है क्योंकि ग्रन्थ बड़े के डर से। खुलासा साधनचार की सम्पत्ति से भूत ब्रह्म अखण्डार्थ परमेश्वर की जिज्ञासा है जैसे कर्म काण्ड में भव्यधर्म की जिज्ञासा है साधन। नित्य और अनित्य वस्तु का विवेक करना। जैसे सत् मोद अनन्त ब्रह्म नित्य है। और दृश्य जड़ परिच्छिन्न प्रपञ्च अनित्य है इहामुत्रार्थ विराग। इस लोक के भोग राज्य स्त्री आदि सब चयी हैं और परलोक के भी स्वर्ग वैकुण्ठ इन्द्र आदि देवों के लोक में निवास अमृतपानादि सब चयी हैं जैसे लौकिक सब उद्यमों का फल चयी है तैसे वैदिक सब कर्मों का फल चयी है। भावार्थ, परस्त्री वेश्यादि के भोग को सूकरी कूकरी का सा भोग जान छोड़ना और छल बल से पर राज्य धनादि भोग को विष मिले अन्न के वमन सा या सूकर कूकर काक की बिटसा जान छोड़ना और स्वर्ग सुखार्थ पशु वधादि वैदिक कर्म भी उक्त से हैं इसी का नाम इहामुत्र फल भोग विराग है और जोकिसंन्यासादि का उपदेश है सो केवल गृहाश्रम उजार मठ बसाने के लिये है जो वृद्धत्व में संन्यास कहो तो जवानी में मरा नरकही को गया क्योंकि संन्यास विना न ज्ञान और न ज्ञान बिना मुक्ति है। तो सिद्ध हुआ कि बच्चे को ही ईश्वर का ज्ञान सिखावे कर्म उपासना के काल में इसी में उस श्रुति का तात्पर्य है जो ब्रह्म-

चर्यादि से संन्यास को दिखाती है ॥

आत्मा वा अरेद्रष्टव्यः। इस में आत्म दर्शन फल के लिये वेदान्त वाक्यों का ब्रह्म में तात्पर्य के निर्णयानुकूल विचार का विधान है । और विचारविधायक वाक्य विषय हैं और ब्रह्म विचारात्मक शास्त्र आरम्भ है या अनारम्भ है यह सन्देह है फिर विषय और प्रयोजन के अभाव से अनारम्भ है संदिग्ध वस्तु विचारार्ह है और ब्रह्म तो असन्दिग्ध है यदि सन्देह है तदा क्या ब्रह्माकार से या आत्माकार से है ॥

पहिले पक्ष में । सत्यंज्ञानमनन्तं ब्रह्म । इस मन्त्र से ब्रह्माकार का निश्चय है और दूसरे पक्ष में अहं प्रत्यय से आत्माकार का भी निश्चय है । यदि अध्यस्तात्म विषयक अहं प्रत्यय कहो सो नहीं अध्यास के अनिरूपण से तिमिर प्रकाश सा अत्यन्त विरुद्ध स्वभाव चिज्जड़ जीव देह का शुक्ति में रजतसा परस्पर तादात्म्याध्यास निरूपण को शक्य नहीं है तिस से अभ्रान्त श्रुति और अहं प्रत्यय करके निश्चित ब्रह्म संदिग्ध नहीं है तो विचार का विषय भी नहीं है ॥

और हम प्रयोजन भी नहीं देखते हैं। उक्त रीति से ब्रह्मात्मा के निश्चय में मुक्ति देखने से तिस से न ब्रह्म विचारार्ह है और न कि शास्त्र आरम्भ है यह पूर्व पक्ष है। शास्त्र आरम्भ है विषय प्रयोजन के होने से। वेद और अहं प्रत्यय दोनों विप्रतिपन्न हैं तिस से ब्रह्म सन्दिग्ध है अयमात्मा ब्रह्मेति यह वेद असङ्ग ब्रह्म को आत्मा कहिता है अहं मनुष्य ऐसो अहं प्रत्यय देहादि के तादात्म्याध्यास से आत्मा को बताता है और जो तुम ने कहा था कि अध्यास दुर्निरूप्य है सो ही अद्वयवाद में अलङ्कार है तिस से संदिग्ध ब्रह्म

विषय है और ब्रह्म के निश्चय से मुक्तिरूप प्रयोजन भी है ॥ तमेवविदित्वेति तद्वैतत्पश्यन्नृषिर्वामदेवःप्रतिपेदे अहंमनुरभवंसूर्यश्चेत्यादि यह विद्वदनुभव भी प्रयोजन में प्रमाण है इस से प्रयोजन सिद्ध है तिस से वेदान्त वाक्यों के विचार द्वारा ब्रह्म विचारार्ह है। इस से शास्त्र भी आरम्भ्य है यह सिद्धान्त पक्ष है ॥

और विप्रतिपन्नों की विप्रतिपत्तिनिरासार्थ ब्रह्म जिज्ञास्य है जैसे देहमात्र चैतन्य विशिष्ट आत्मा प्राकृत जन और लोकायतिक मानते हैं अन्य इन्द्रियों को चेतन आत्मा मानते हैं अन्य मन आत्मा मानते हैं विज्ञानमात्र क्षणिक आत्मा बौद्ध मानते हैं। शून्य आत्मा शून्यवादी मानते हैं। देहादि से भिन्न कर्त्ता भोक्ता संसारी कोई मानते हैं भोक्ताही है केवल नकि कर्त्ता है ऐसा कोई मानते हैं। इन से भिन्न जड़ बोध रूप कोई मानते हैं सर्वशक्तिमान ईश्वर कोई मानते हैं जीव का और अकर्त्ता साक्षी का ईश्वर आत्म स्वरूप है यह वेदान्त मत है बृहधातु से ब्रह्म पद सिद्ध है ॥

शम १ दम २ तितिक्षा ३ उपरति ४ समाधान ५ श्रद्धा ६ इनका नाम शमादिषट्क है ज्ञान का श्रवण मनन ध्यान शम है बाहिर भीतर की इंद्रियों को निषिद्ध वस्तु से हटाना दम है वेदविहित कर्मों को न करना उपरति है। हिम तप्त आदि जोड़ों का सहना तितिक्षा है। या अज्ञान लोभ मोह काम क्रोधादि से बचना। सुज्ञान द्वारा सब ठौर से मन को थाम के ज्ञान से बर्त्तना ज्ञान का सुनना समाधि है। बुद्धि से निश्चित वस्तु में विश्वास श्रद्धा है। मुक्ति की इच्छा मुमुक्षा है। फिर जिस में उक्त वस्तु हैं वही वेदान्त का

अधिकारी और प्रमाता है ॥

श्रुति । आत्मा वा अरेद्रष्टव्य:श्रोतव्योमन्तव्योनिदिध्यासितव्यस्त्विति । अर्थ । आत्मदर्शनरूप फल के लिये श्रवणादि तीनही कहे हैं न कि संन्यासादि लिङ्ग धारण करना । संन्यास के लिङ्गों से भी सब दु:ख दुर्निवार है। तिस से ब्रह्म जानन योग्य है । सर्वंत:प्रागभूमानंविजानीयात् ब्रह्मज्ञानायविचार: कर्तव्य इतिसूत्रस्यश्रौतोर्थ: संपद्यते इति ॥

—— —— * —— ——

(जन्माद्यधिकरण ॥ २ ॥)

जन्माद्यस्ययत: ॥ २ ॥

जन्म । उत्पत्ति: । आदि । प्रभृति: । अस्य । स्थूल सूक्ष्म प्रपञ्चस्य । यत:कारणात् । भवतितद्ब्रह्मतिसौत्रोर्थं । अन्यसंस्कृतमधिकृत्य विश्वोद्भवादिहेतुर्ब्रह्मेति । भाषा । प्रत्यचादि प्रमाणों से उपस्थित जो प्रपञ्च है तिसका जन्म स्थिति भङ्ग जिस कारण से है वही ब्रह्म है और यास्क मुनि ने भी महाभूतों का लक्षण नहीं कहा है किन्तु ब्रह्मही का कहा है। वाक्य । जायतेऽस्तिवर्द्धतेविपरिणामतेऽपक्षीयतेनश्यतीति । ब्रह्म का निर्णायक वेद । आनन्दाद्धेयवखल्विमानि भू*तानिजायन्तेआनन्देनजातानिजीवन्ति आनन्दंप्रयन्त्यभिसंविशन्तीति। भाषा । मोद रूप ब्रह्म से सब प्राणी जन्मते हैं और उसी से

*प्राणिनोव्योमादयोवा

जाते हैं और मरके सब उसी में घुसेंगे और ऐसीही यजुर्वेद के तैतिरीय शाखा की भी श्रुति है ॥ यतोवाइमानिभूतानि-जायन्तेयेनजातानिजीवन्तियत्*प्रयन्त्यभिसंविशन्तीतितद्विजि-ज्ञासस्वतद्ब्रह्मेति । इन श्रुतियों से व्यास जी ने उक्तसूत्र रचा है । इसका भी अर्थ पहिली श्रुति के तुल्य है ॥

(शास्त्रयोनित्वाधिकरण ॥ ३ ॥)

शास्त्रयोनित्वात् ॥ ३ ॥

शास्त्रस्यऋगादेर्वेदस्ययोनिःकर्त्ता । तस्यभावःशास्त्रयोनि-त्वन्तस्मात्शास्त्रयोनित्वात् । वेदनिर्मातृत्वादित्यर्थः । भाषा । वेद का बनानेवाला ईश्वरही है ॥

अथवा शास्त्रं । वेदः । योनिः । मूलम्प्रमाणंयस्मिन्तस्य-भावःशास्त्रयोनित्वंतस्मात् । वेदमूलप्रमाणसिद्धत्वंतस्माद्ब्रह्मा-स्तिविश्वकारणमितिशेषेणार्थः । भाषा । जो परमेश्वर विश्व का कारण है उस में अशेष विशेष का बोधक वेदही प्रमाण है न कि अनुमानादि कर्तृमात्र के बोधक होने से और दृ-ष्टान्त के लिये लोक में सर्वज्ञादि गुण विशिष्ट न देखने से ॥

ऋग्वेदादि को या वाणी मात्र को ऋग्वेद का मन्त्र नि-त्य बोधन कर्त्ता है । जैसे वाचाविरूपनित्ययेत्यादि । अर्थ । हे विश्वरूप वाणी नित्य है । तिससे तू नित्य वेदवाणी से ही स्तुति को करै यही प्रार्थित है ऋषि को । नित्य वाग्वेद है

---

* यत्प्रियमाणानि ।

और ऋग्यजुः सामादि के पुरुषसूक्तादि मन्त्रों ने कहा है कि ऋगादि का कर्त्ता ईश्वर है। जैसे। अस्यमहतोभूतस्यनिश्वसितमेतदृग्वेदोयजुर्वेदःसामवेद इत्यादि। जैसे निश्वास अप्रयत्न सिद्ध है तैसेही ब्रह्म से ऋगादि अप्रयत्न सिद्ध हैं॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचःसामानि यज्ञिरे इति॥ इस में यज्ञशब्द वाच्य ब्रह्म से ऋगादि का जन्म स्पष्ट कहा है। और नित्यबोधकमन्त्र प्रतिकल्प में एकरूप वेद रहिते हैं या प्रवाहरूप नित्यका बोधक हैं या चिरकालस्थायी वेदों को कहिते हैं जैसे सोमपान है मन्त्र सोमपान से चिरकालस्थायी मुक्ति को जताता है॥ मन्त्र। अपामसोममृता अभूवन्नित्यादि। और कर्म से जन्य स्वर्ग को गौण अक्षयत्व बोधवत् वेद की नित्यता है। जैसे। अक्षय्यंहवैचातुर्मास्ययाजिनंसुकृतंभवतीति। सब विश्व की व्यवस्था के अवभासक वेद का कर्ता ब्रह्म सिद्ध हुआ तिससे सर्वज्ञ भी सिद्ध है। पहिले श्रुति से ब्रह्म को सुने फिर अनुमान से मनन करे फिर अनुभव से साक्षात्कार करे इससे ब्रह्मवेदैकमेय है और अनुमानादि सब प्रमाण वेद के अनुवादकही हैं। यतोवाइमानीतिसत्यंज्ञानमनन्तंब्रह्मेति। जो दो वाक्य विषय हैं इन में श्रुत ब्रह्म का लक्षण घटता है या नहीं घटता है यह संशय है। नहीं घटता है कैसे नहीं घटता है॥

सुनो। क्या जन्मादि ब्रह्म का लक्षण है या सत्यादि नहीं है। पहिला पक्ष। जन्मादि जगत् के हैं इससे उसका ब्रह्म से सम्बन्धही नहीं है। दूसरा पक्ष भी नहीं है यदि लोक में प्रसिद्ध सत्यादि को स्वीकार करो तो तदा सत्यादि भिन्नार्थ वाची होने से अखण्ड ब्रह्म की सिद्धि नहीं होगी और

अप्रसिद्ध सत्यादि लक्षण के योग्यही नहीं है । तिससे ब्रह्म का तटस्थ लक्षण और स्वरूप लक्षण दोनों नहीं हैं यह मत समझो जो मैं कहिता हूं सो समझो जन्मादि जगन्निष्ठ हैं तो भी ब्रह्म में कल्पना से जन्मादि के कारण सम्बद्ध है इसी का नाम तटस्थ लक्षण है लोक में जैसे जो सांप है सो माला है तैसेही जो जगत् कारण है सो ही ब्रह्म है ऐसे कल्पित वस्तु से ब्रह्म का लक्षण शक्य है । और जैसे लोक में पिता भ्राता जामाता सुतादि शब्द भिन्नार्थ बाची हैं तो भी उनका एक चैत्र में पर्यवसान होने में कुछ विरोध नहीं है तैसेही लोक प्रसिद्ध भिन्नार्थ बाची सत्यादि शब्द अखण्ड ब्रह्म में पर्यवसायी होने से स्वरूप लक्षण की सिद्धि है इससे दोनों लक्षण सिद्ध हैं ॥

मन्त्र । अस्यमहतोभूतस्यनिःश्वसितमेतदृग्वेदोयजुर्वेदःसामवेदइत्यादि । तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऋचःसामानियज्ञिरेइत्यादि मन्त्रों से उक्त सूत्र रचा है । भावार्थ० । मन्त्रों में ईश्वर को मावयवमान प्राणी को साम के निकरने के तुल्य वेद का जन्म कहा है और किसी ढब से साम नहीं घटेगी ।

और कोई कहिते हैं कि याज्ञवल्क्य ने शाकल्य से पूछा कि मैं तुम से उस पुरुष को पूछता हूं जो उपनिषत् से जाना जाता है क्योंकि ब्रह्म में रूप रसादि नहीं हैं इससे इन्द्रियां उसको नहीं जानसक्ती हैं और लिङ्ग और सदृश उस का कोई नहीं है इससे अनुमान और उपमान भी उसको नहीं बता सक्ते हैं फिर यही सिद्ध हुआ कि ब्रह्म केवल वेदही से जाना जाता है । यद्यपि उस में अनुभव अनुमानादि भी प्रमाण हैं तथापि पहिले श्रुति से सुने पीछे उन से मन न क-

रे। श्रुति ॥

तन्त्वौपनिषदंपुरुषंपृच्छामीतिनावेदविन्मनुतेतंबृहन्तमित्यादि। अर्थ। विद्यावान् बड़े ईश्वर को जानता है न कि संन्यासादि लिङ्गधारी बाह्य चिन्ह धरने से। इससे ब्रह्म वेदैकमेय है ॥

(समन्वयाधिकरण ॥ ४ ॥)

तत्तुसमन्वयात् ॥ ४ ॥

तु शब्द पूर्व पक्ष की निवृत्ति के लिये है। तत्। ब्रह्म साक्षात्परम्परयावासमग्राम्नायप्रतिपाद्यमस्तीति ब्रह्म में केवल वेद प्रमाण है क्योंकि सब वेद साक्षात् या परम्परा से ब्रह्म का ही प्रतिपादन कर्त्ता है। जैमिनि मीमांसक मानते हैं कि वेद में जीव के प्रकाशक वाक्य कर्त्ता को और ब्रह्म प्रकाशकवाक्य देवता को और सृष्टि प्रकाशकवाक्य यज्ञ की सामग्री सब वस्तु को कहिते हैं तिससे वेदान्त कर्म का उपयोगी होके सार्थक होगा और ब्रह्म परमानेसे अनुष्ठानमें नहीं आवेगा उससे निरर्थक होगा। तिससे वेदान्त कर्त्ता देवता साधनके प्रतिपादक हैं व्यास वेदान्ती मानता है कि सब वेदान्त वाक्य ब्रह्महो को कहिते हैं और न कर्त्ता आदि को जिससे वे कर्म का अङ्ग होके रहें क्योंकि वेदान्त सब प्रकरणों से वेद में पृथक् पढ़े हैं। और ब्रह्म के निश्चायक छह चिन्ह हैं। जैसे। सदेवसौम्येदमग्रआसीदिति। ऋग्वेद में। एकमेवाद्वितीयं। यजुर्वेद में। आत्मावाइदमेकएवाग्र आसीन्नान्यत्किञ्चनमिषत्सईक्षतलोकानुसृ-

ना इति । सइमान्लोकानसृजेति । तदेतद्ब्रह्मापूर्वमनपरमनन्तरमवाह्यमयमात्माब्रह्मसर्वानुभूःब्रह्मैवेदममृतम्पुरस्तादिति छांदोग्य के छठे अध्याय से इहां से आरम्भ कर। ऐतदात्म्यमिदंसर्वंतत्सत्यंसआत्मातत्वमसीति । यहांलो उपक्रमोपसंहार नाम एक चिन्ह है १ बार २ एक बात कहिना अभ्यास नाम दूसरा चिन्ह है २। जैसे। तत्त्वमसि, यह उपदेश नौ बार है। वेद के विना अन्य प्रमाणों से ब्रह्म नहीं जानाजाता है यही अपूर्व नाम चिन्ह है ३ । एक के जानने से सब जाना जाता है यह फल नाम चौथा चिन्ह है सृष्टि १ स्थिति २ लय ३ प्रवेश ४ नियमन ५ जो पांच अर्थ बाद नाम चिन्ह है ५। जैसे मट्टी के घटादि सब विकार झूठे हैं फिर मट्टीही सच्ची है यह दृष्टान्त है इसी को उपपत्ति नाम छठा चिन्ह कहा है ६ इन छहों चिन्हों से वेदान्त का तात्पर्य केवल ब्रह्म में ही है॥

और यह शङ्का भी मत करो कि वेदान्त अनुष्ठान में न आने से निष्फल हैं क्योंकि जब मनुष्य सांपसी रस्सी देख डरता कांपता भागता खड़ा रहिता है तब उससे कहे कि यह सांप नहीं है किन्तु रस्सी है यह सुन भय छाड़ सुखी होता है तैसेही वेदान्त भी सब अनर्थ की निवृत्ति के लिये हैं। वुह यह कि जीवबद्ध कर्त्ता भोक्ता संसारी है। और इसकी निवृत्ति है कि जीव शुद्ध मुक्त है और बन्धन औपाधिक है आत्मावाअरेद्रष्टव्यः। यआत्माअपहतपाप्मासोन्वेष्टव्यःसविजिज्ञासितव्यः। आत्मेत्येवोपासीत आत्मानमेवलोकमुपासीतब्रह्मवेदब्रह्मैवभवतीत्यादि॥

जब तक देह है तब तक सुख दुःख का तारतम्य नहीं छुटता है। श्रुति। नहवैसशरीरस्यसतःप्रियाप्रिययोरपहतिर-

स्तीति । अशरीर को सुख दुःख नहीं है । श्रुति । अशरीरम्वा-वसन्तन्नप्रियाप्रियेस्पृशत इति । अभयंवैजनकप्राप्तोसितदात्मा-नमेव।वेदहंब्रह्मास्मीतितस्मात्तत्सर्वमभवत्तत्रकोमोहःकःशोकः-एकत्वमनुपश्यत इति ।

ऋग्मन्त्रः । तयोरन्यःपिप्पलंस्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्योभिचाकशीतीति । अर्थ । प्रमाता और साक्षी के बीच बुद्धि के सङ्गही से कल्पित कर्तृत्वादिमान् कर्म फल का भोक्ता है वुही शुद्ध साक्षी रूप से प्रकाशता है । यजुर्मन्त्रः । सपर्यगाच्छुक्रः स आत्मा पर्य्यगात् व्याप्तः शुक्रा दीप्तमान् अकायः १ लिङ्गशून्यः १ अव्रणः अक्षतः अस्नाविरः शिराविधुरः अनश्वरोवास्थूलदेहशून्यः शुद्धः रागादि मलशून्यः अपापविद्धः पुण्यपापाभ्यांशून्यः इतिमन्त्रपदार्थः । इससे जो जैमिनिने कहाथा कि वेद यज्ञके अर्थ है और जो यज्ञार्थ नहीं है सो अनर्थक है सो झूठ है । आम्नायस्यक्रियार्थत्वादानर्थक्यमतदर्थानामिति इष्टाहितस्यार्थः कर्माववोधनंनामेतिभाष्यञ्च ॥

और एक देशीइ यों मानता है कि यद्यपि वेदान्त ब्रह्म बोधक हैं तदापि ब्रह्म में वेदान्तों का पर्यवसान नहीं है तो क्या है कि परोक्ष से ब्रह्म को कहिके पीछे प्रत्यक्ष प्रतिपत्ति को कहिते हैं जैसे पहिले श्रवण से परोक्ष ज्ञान कहके पीछे मननादि से अनुभव ज्ञान प्रत्यक्ष कहा है । तिससे प्रतिपत्ति के विधाता वेदान्त हैं यह पक्ष भी सच्चा नहीं है । प्रतिपत्ति विधि के असम्भव से कर्म करने को अकरने को अन्यथा करने को पुरुष तन्त्र है जो शक्य है । और शास्त्र तो अनुष्ठेय के शासनार्थही नहीं नियत है किन्तु सिद्ध वस्तु के शंसन से भी शास्त्र की सिद्धि है और यह भी नहीं कहि सक्ते हो कि

शाब्दज्ञान के जन्म पीछे अनुभवात्मक मननादि विधान है। जैसे तू दशमा है इस में शब्दही अपरोक्षानुभव ज्ञान का जनक होने से शाब्द बोध से पहिलेही असम्भावनादि की निवृत्ति कोर्थ व्यापार रूप कर्त्त तन्त्र मननादि के बिधान से क्योंकि शब्द से भी प्रत्यक्ष ज्ञान होता है। जैसा कि यह एक दृष्टान्त है कि जुह्व धरभूला ऋत्विक् जिधर तिधर खोजता था व्याकुलता से फिर दूसरा बोल उठा कि जुह्व वुह धरो है कुशों पर तभी उसको शब्द से प्रत्यक्ष हुआ जुह्व का और चिन्ता कपूर्सी उड़ गई तैसेही तत्वमस्यादि वेदांत हैं कर्मकाण्ड में भव्य धर्म जिज्ञास्य है और ब्रह्मकाण्डमें भूत नित्य निर्वृत्त ब्रह्म जिज्ञास्य है यह वै लक्षण्य है॥

यद्यपि ध्यानचिंतनमानस है तद्यपि करने को अकरने को अन्यथा करने को पुरुषतन्त्र है। और ज्ञान प्रमाणजन्य फिर प्रमाण जैसी वस्तु है तैसी ही ऊंची चौड़ी लम्बी बतावेगा इससे ज्ञान करने अकरने अन्यथाकरने को शक्य नहीं है केवल वस्तुतन्त्र है नचोदनातन्त्र नकि पुरुषतन्त्र तिससे ज्ञानमानस है तोभी उसको बड़ी वैलक्षण्य है॥

और शाण्डिल्य के मत में ब्रह्म की उपासना के लिये वेदान्त वाक्य हैं सोभी सच नहीं है क्योंकि उपासना को मुक्ति में कारण न होने से लोक में उपासक मुक्त न देखने से जैसे राजसेवक है। वेद भी ज्ञानही से मुक्ति दिखाता है। तमेव विदित्वेति ऋग्यजुर्मन्त्र है और उपासना को विधि का अङ्ग मानने में कोई प्रमाण नहीं है। सार तो यह है कि वेदान्त वाक्य न कर्म के अङ्ग और नकि भक्ति का अङ्ग हैं किन्तु केवल वेदप्रमाणक स्वतन्त्र ही हैं ब्रह्मवेदान्तवाक्यसमन्वय से सिद्ध

है और जब तक ईश्वर का निश्चय नहीं है तब तक प्रमाण चाहिये। तिससे तत्वमसीत्यादि वेदान्त ब्रह्म के निश्चायक हैं॥

(ईक्षत्यधिकरण। ५॥)

ईक्षतेर्नाशब्दं। ५॥

नास्ति वेदो मानं यस्मिन्तदशब्दं । वादिभिः कल्पिताः पदार्था विश्वनिदानभूता वेदमानशून्या भवन्तीति भावार्थः॥ भाषा। जो सांख्य ने अचेतनप्रधान विश्वनिदान माना है सो नहीं हो सक्ता है। क्योंकि वेदान्तों में न सुनने से और जो वेदान्तों में विश्वनिदान सुना है सो सांख्यकल्पित प्रधान नहीं हो सक्ता है। क्योंकि ईक्षण सुनने से। ईक्षण जड़ प्रधानमें नहीं हो सक्ता है। अचेतनप्रधान सर्वज्ञ नहीं हो सक्ता है और चेतन सत्व के उत्कर्षद्वारा सर्वज्ञ हो सक्ता है साक्षी निमित्त से भी प्रधान में ईक्षण नहीं कल्प सक्ते हो जैसे अग्निनिमित्त से लोहे से दाह है क्योंकि जिस निमित्त से उस में ईक्षण है सोही विश्वनिदान है॥ वेद। छान्दोग्य के छठे अध्याय में पढ़ा है कि। सदेवसौम्येदमग्रआसीत्। एकमेवाद्वितीयं ब्रह्मेति यहां से पढ़ा कि। तदैक्षतबहुस्यांप्रजायेयेति तत्तेजोऽसृजतेति यहां तक एक प्रकरण है इस ऐक्षत शब्द से उक्त सूत्र रचा है। और षोड़शकलपुरुषों की सृष्टि मे भी चेतनही विश्वनिदान कहा है। जैसे सईक्षांचक्रे सप्राणमसृजत तस्मादेतद्ब्रह्मनामरूपमन्नंच जायते। और मन्त्र भी देहके वि-

नाही ईश्वर से सृष्टि बताते हैं।

न तस्य कार्यं करणं च विद्यते न तत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते।
पराऽस्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते स्वाभाविकीज्ञानबलक्रिया च॥
अपाणिपादो जवनो गृहीता पश्यत्यचक्षुः स शृणोत्यकर्णः।
सवेत्तिवेद्यंनचतस्यास्तिवेत्ता तमाहुरग्र्यं पुरुषंमहान्तमिति॥
नाकृष्यवत्सम्पन्नाऽत्रमनित्यफलत्वादिति॥

गौणश्चेन्नात्मशब्दात्॥ ६॥

जो ईक्षण श्रुतिसे सुना सो गौण नहीं है जैसा कि तेज जलका ईक्षण है किन्तु नामरूप को करनेवाली देवता आत्म शब्दसे चेतन जीवको कहती है गौणी श्रुतियां। तत्तेजऐक्षत ता आप ऐक्षन्त इत्यादि। गौण का लौकिक दृष्टान्त यह है। जैसे खाट कोठा पीढ़ी बोलते हैं॥ श्रुति। अनेनजीवेनात्मनानुप्रविश्य नामरूपे व्याकरवाणीति। सयएषोऽणिमैतदात्म्यमिदं सर्वं तत्सत्यं स आत्मा तत्त्वमसि श्वेतकेतो इति। इस में चेतन ही श्वेतकेतुका आत्मा कहा है नकि जड़प्रधानको॥

तन्निष्ठस्यमोक्षोपदेशात्॥ ७॥

ब्रह्मसंस्थस्य पुरुषस्य मुक्तिकथनात्। विश्वनिदानके साथ जिस जीव का तादात्म्य ज्ञान है उस की मुक्ति है। तरति शोकमात्मविदिति। अर्थ। ईश्वर का जाननेवाला मृत्यु को तरता है और तत्त्वमसीति इस वाक्य से भी पिता ने श्वेतकेतु को विश्वनिदान के साथ अभेदही उपदेश किया है। भावार्थ। जैसे स्वर्गाद्यर्थिको अग्निहोत्रादिद्दृयमेधान्त साधनों का उपदेश है तैसेही मुमुक्षु को भी आत्मा का उपदेश है यही युक्त है। जैसे अन्ध को ग्राममें पहुंचाने के लिये दुष्टवर्ई-

की पूछ यमादी तैसे भी श्वेतकेतु को उपदेश नहीं है पुरुषार्थहान से ॥

हेयत्वावचनाच्च ॥ ८ ॥

तैतिरीय शाखा में देह प्राण मन बुद्धि आनन्द इन पांच में पहिले की अपेक्षा से आगे२ श्रेष्ठ२ समुझ आनन्दमय पर विश्राम किया है तिस्से जाना गया कि आनन्दमय आत्मा है तैसेही यहां पर और कुछ न कहिने से आत्माही ग्राह्य रहा। जैसे मूज में सींक छिपी होती है तैसेही आत्मा अन्नमय प्राणमय मनोमय विज्ञानमय आनन्दमय इन में छिपा है। कारण के जानने सें सब कार्य जाना जाता है। जैसे एक मट्टी का घड़ा देखने से सब मट्टी के घड़े जाने गये कि मट्टी के विकार अनित्य है और मट्टीही सत्य है। तिससे सत् शब्द वाच्य आत्मा है न कि प्रधान है। सदेव सौम्य इत्यादि से ॥

स्वाप्ययात् ॥ ९ ॥

स्वस्मिन्नप्ययोलयस्तस्मादिति ॥

ब्रह्मही में सब का लय कहा है तिससे भी प्रधान विश्वनिदान नहीं है। सो ते पर सब चेतनों का लय होता है जिसमें सोही चेतन विश्वनिदान है। श्रुति। प्राज्ञेनात्मनासम्परिष्वक्तोनवाह्यंकिञ्चनवेदनांतरमिति यत्रैतत्पुरुषःस्वपितिनामसतासौम्यतदासम्पन्नोभवतिस्वमपीतोभवति तस्मादेनंस्वपीतीत्याचक्षतेस्वंह्यपीतोभवतीति। जिस में सब चेतनों का लय है सो ही चेतन विश्व निदान है न कि प्रधान। सवाएषआत्माहृदितस्यैतदेवनिरुक्तंहृदयमितितस्माद्धृदयमिति आपएवतदशितन्नयन्तितेजएवतत्पीतन्नयतइतिच ॥

गतिसामान्यात् ॥ १० ॥

जैसे नेत्रादि इन्द्रियां रूपादि में समान गति से वर्त्ते हैं तैसे सब वेद ब्रह्म को ही जगकारण कहते हैं। न तार्किकों के समान भिन्न२ कारण है। यथाग्नेर्ज्वलतःसर्वादिशोविस्फुलिङ्गाविप्रतिष्ठेरन्एवमेवैतस्मादात्मनः सर्वेप्राणायथायतनंविप्रतिष्ठन्तेप्राणेभ्योदेवादेवेभ्योलोकाइति तस्माद्वाएतस्मादात्मन-आकाशःसम्भूतइति आत्मनएवेदंसर्वमिति आत्मनएषप्राणोजा-यतइति। कहीं चेतन विश्वनिदान है कहीं जड़ प्रधान कहीं अन्य है। ब्रह्म हि रूपही जाना जाता है ॥

श्रुतत्वाच्च ॥ ११ ॥

वेद से उपादान करण कर्त्तादि सब का कारण चेतनही सुना है। नतस्यकश्चित्पतिरस्तिलोके नचेशितानैवचतस्यलिङ्गं सकारणंकरणाधिपाधिपो नचास्यकश्चिज्जनितानचाधिप इति यह श्वेताश्वतराणां मन्त्रोपनिषत् है। द्वासुपर्णाविति इस मन्त्र की व्याख्या में किसी ने जीव ईश्वर लिये हैं और पैंगीने बुद्धि जीव लिये हैं। पैङ्गीरहस्यब्राह्मणेनान्यथाव्याख्याता द्वास्तावितीसत्वचेत्रज्ञौ सत्वचेत्रज्ञशब्दयोरन्तःकरणशारीरपरतया-प्रसिद्धत्वात्तत्वैवव्याख्यातत्वात् ॥ तिससे सिद्ध हुआ सर्वज्ञब्रह्म विश्वनिदान और नकि जड़प्रधान या अन्य कोई ॥

(आनन्दमयाधिकरण । ६ ॥)

आनन्दमयोभ्यासात् ॥ १२ ॥

प्रथम सूत्र से ब्रह्म शब्द सर्व सूत्रों में लिया है वुही सा-
ध्य होने से तैत्तिरीय में देह प्राण मन बुद्धि आनन्द जे पांच
क्रम से पढ़े हैं इन में सब से पीछे आनन्दमय पढ़ा है सोही
ब्रह्म है क्योंकि वार२ आनन्दमय पढ़ने से । और आनन्द
शब्द से जो आनन्दमय का बहुबार वर्णन है सोही अभ्यास
है ॥ श्रुतिः तैत्तिरीया । अन्नमयं प्राणमयं मनोमयं विज्ञानम-
यं तस्माद्वा एतस्माद्विज्ञानमयादन्यो अन्तरआत्मा आनन्दमय
इति । इसमें संशय है कि आनन्दमय परब्रह्म है या अन्नम-
यादिवत् ब्रह्म से अन्य है ॥ अभ्यास में श्रुति । तस्यैषएवशा-
रीरआत्मायःपूर्वस्येति रसोवैसः रसंह्येवायं लब्ध्वानन्दी भवति
कोह्येवान्यात्कःप्राण्याद्यदेष आकाशआनन्दो न स्यात् । एष
ह्येवानन्दयाति सैषानन्दस्य मीमांसा भवतीति एतमानन्दमय
मात्मानमुपक्रामति ॥ आनन्दंब्रह्मणोविद्वान्नबिभेति कुतश्चनेति
आनन्दोब्रह्मेति व्यजानादिति । विज्ञानमानन्दं ब्रह्मेति एत-
स्यैवानन्दस्यान्यानि भूतानि मात्रामुपजीवन्तीति । वेद । तस्य
प्रियमेवशिरःमोदोदक्षिणःपक्षः प्रमोदउत्तरःपक्षः आनन्दआत्मा
ब्रह्मपुच्छंप्रतिष्ठति । वेद में पक्षिरूपकालंकार से सुगमबोधा-
र्थब्रह्म दिखाया है इस में निरुपाधि आनन्दमय पांच अङ्गों
से कहा है । चहींतो वस्तुके देखने से जो सुख है सो प्रिय है
उसीका लाभ मोद है २ उसीका भोग प्रमोद है ३ सुषुप्ति
आदि में भासमान जो अज्ञानोपहित सुख सामान्य सो आ-
नन्द है ४ आनन्द निरतिशय पूंछ है ५ उपासनार्थ निरुपाधि
ब्रह्मके ही शिरादि पांच अङ्ग कल्पना किये हैं इससे संसारी
नहीं है किन्तु चिन्मय ब्रह्म है फिर चिन्मय के तात्पर्य से अ-
भ्यास किया है और प्रियादिअङ्ग औपाधिक हैं तिससे ईश्वर

आनन्दमय है यह एक का मत है । अन्यमत का वर्णन यह है कि ब्रह्म क्या आनन्दमय का अवयव है या प्रधान है। लोकमें पूछशब्द अवयवको कहिता है तिससे पूछ आनन्दमय का अवयव है सो नहीं है क्योंकि पूछ पशु का अवयव नहीं है किन्तु लांगूलही है फिर आनन्दमय में पूछ का सम्भवही नहीं है इससे पूछ के मुख्यार्थ को छाड़ लाक्षणिकार्थ आधार लिया है तिससे जीव का आधार ब्रह्म मुख्यवर्णन किया है और भी निगमन श्लोक में ब्रह्मशब्द का अभ्यास है॥

असन्नेवसभवतिअसद्ब्रह्मेतिवेदचेत् अस्तिब्रह्मेतिचेद्वेदसन्तमेनन्ततोविदुरिति ब्रह्मविदाप्नोतिपरमिति। यह ब्रह्मका उपक्रम भी अनुकूल है। यहां पर मनुष्यादि की आनंद से आगेर को सौगुनी आनन्द बढ़के ब्रह्मानन्द है उस में सब आनन्द का अन्त है॥

विकारशब्दान्नेतिचेन्नप्राचुर्यात् ॥ १३ ॥

आनन्द शब्द के आगे जो मय शब्द है सो विकार वाचक नहीं है किन्तु प्राचुर्य अर्थात् बहुत अर्थ का वाचक है। जैसे अन्नमय यज्ञ और पशुमय घर और नारीमय नर इन में बहुत अन्न पशुवाला घर और बहुत स्त्री प्रियनर है। तैसे आनन्दमय यहांपर है तिससे बहुत अर्थमें मयट् है नकि विकार में॥

तद्धेतुव्यपदेशाच्च ॥ १४ ॥

आनन्द का हेतु ब्रह्मही है। ब्रह्म से अन्य में आनन्द के लेश पहुंचते हैं। एषह्येवानन्दयाति। ब्रह्मही आनन्द कराता है। जैसे। लोक में जो अन्य को धनी कर्त्ता है सो उससे अ-

धिक धनी समझा जाता है ॥

मांत्रवर्णिकमेवचगीयते ॥ १५ ॥

इससे भी आनन्दमय परही आत्मा है कि । ब्रह्मविदाप्नोतिपरमिति । यहां से उपक्रम कर। सत्यंज्ञानमनन्तंब्रह्मेति इस मन्त्र में जो प्रकृत ब्रह्म था सो ही सत्यज्ञान अनन्त शब्दों से निर्णीत है । यस्मादाकाशादिक्रमेणस्थावरजङ्गमानिभूतान्यजायन्तयच्चभूतानिसृष्ट्वातान्यनुप्रविश्यगुहायामवस्थितंसर्वान्तरंयस्यविज्ञानायान्योन्तरआत्माअन्योन्तरआत्मेति । इस में मान्त्रिक ब्रह्मगाया है । अन्योन्तर आत्मानन्दय इति । यह मन्त्र और ब्राह्मण की एकार्थता युक्त है । आनन्दमय से अन्य आत्मा नहीं कहा है यह भार्गवी वारुणी विद्या है तिस से आनन्दमय पर आत्मा है ॥

नेतरोनुपपत्तेः ॥ १६ ॥

आनन्दमयके प्रकरणमें सुना है कि एक ने बहुतकी इच्छा से विश्वसृजा है सो यह काम जीव का नहीं है तिससे जीव आनन्दमय नहीं है अथवा आनन्दमय का मुख्य वर्णन नहीं है क्योंकि ब्रह्म वेदी ब्रह्म को प्राप्त होता है और जो ब्रह्म असत् जानता सो असत् ऐसे आगे पीछे के सन्दर्भके विरोध से संसारी जीव या प्रधान आनन्दमय नहीं है किन्तु ईश्वरही है । श्रुति । सोकामयतबहुस्यांप्रजायेयेतिसतपोतप्यत्सतपस्तप्त्वाइदंसर्वमसृजतयदिदङ्किंचेति । अर्थ । जो कुछ कार्य है सो सब ईश्वर ने देख के रचा है ॥

भेदव्यपदेशाच्च ॥ १७ ॥

रसोवैसःरसंह्येवायंलब्ध्वानन्दीभवतीति। अर्थ। जीव ब्रह्म के लाभ से आनन्द होता है यहां प्राप्य ब्रह्म और प्रापक जीव है यह भेद का कहिना है अविद्या कल्पित देह कर्ता भोक्ता विज्ञानात्मा से ईश्वर अन्य है। जैसे खड्गधारी मायावी सूत्र पर चढ़ आकाश को जाता दिखाता है और परमार्थ से मायावी भूमिही पर खड़ा है और जैसे व्योम घटादि उपाधि से भिन्न अनुपाधि अन्य है तैसेही जीव ब्रह्म का भेद है॥

कामाच्चनानुमानापेक्षा ॥ १८ ॥

कामना सुनने से सांख्य सम्मत अचेतन प्रधान आनन्दमय या विश्वनिदान नहीं है। और न कि जीव आनन्दमय है। सोकामयतवहुस्यांप्रजायेयेति अथवा कामआनन्द है फिर आनन्द को दृष्टान्त और आनन्दमय को पक्ष और प्रधान साध्य है फिर आनन्दमय प्रधान है आनन्दवत्। ऐसे अनुमान की सम्भावना भी सम्भव नहीं हो सक्ती है क्योंकि वेद में प्रधान या जीव को आनन्दमय कहिनेवाला वाक्य न होने से ईक्षतेर्नाशब्दं इससे निरस्त प्रधान का फिर निरास प्रपञ्चार्थ ही है॥

अस्मिन्नस्यचतद्योगंशास्ति ॥ १९ ॥

इस आनन्दमय के प्रकरण में जीव का योग आनन्दमय ब्रह्म के साथ वेद उपदेश कर्त्ता है इससे उपचार का इच्छा से भी आनन्दमय वाक्य का अर्थ प्रधान या जीव नहीं है। श्रुति। यदाह्येवैषएतस्मिन्नदृश्येनात्म्येऽनिरुक्तेऽनिलयेऽभयंप्रतिष्ठांविन्दतेथसोऽभयङ्गतोभवति यदाह्येवैषएतस्मिन्नुदरमन्त-

रंकुरुतेथतभयम्भवस्यतीति । अर्थ । तादात्म्य से ईश्वर की देखि सो देखना परमात्मा के ग्रहण से बनता है न जीव या प्रधान के ग्रहण में तिससे आनन्दमय परमात्मा है न कि विज्ञानात्मा । श्रुति । सवाएषपुरुषोन्नरसमयस्तस्माद्वाएतस्मादन्नरसमयादन्योन्तरआत्माप्राणमयस्तस्मादन्योन्तर आत्माविज्ञानमयइति। अर्थ । यहां पर भी विकारार्थ की परम्परा से आत्मा अद्वै जरतीय है ॥

च हेतु में है जिससे आनन्दमय को आनन्द का सम्बन्ध वेद ने उपदेश किया है। तिससे उपासना के लिये भी आनन्दमय प्राधान्य नहीं है। और आनन्द प्रचुर कहिने में दुःख अल्प भी मत समझो अद्वितीय से। श्रुति । रसंह्येवायंलब्ध्वानन्दीभवतीति ॥

———*———

(हिरण्यमयाधिकरण ॥ ७ ॥)

———*———

अन्तस्तद्धर्मोपदेशात् ॥ २० ॥

परमेश्वरस्यधर्माइहोपदिश्यन्तइति सोचोनुवादः ॥ छांदोग्यके प्रथमाध्यायमें उद्गीथउपासनाओं के बीच गौण उपास्योंका उपदेशकर फिर मुख्य उपास्यका उपदेश किया है वुह यहकि सूर्य के बीच मे हिरण्मय पुरुष है और ऋग्, साम उक्थ, यजुः, जो ब्रह्मधर्म हैं और ब्रह्म सब पापों से मुक्त अद्वितीय ईश्वर कहा है । यह अर्थ इन श्रुतियों से लिया है कि । सैवर्क्तत्सामतदुक्थन्तद्यजुस्तद्ब्रह्मेति उदेति ह वै सर्वेभ्यः पाप्मभ्यइति । अथयएषोन्तरादित्येहिरण्मयः पुरुषोदृश्यते इत्य ादि मेस इ

संशय है कि विद्या कर्म की अतिशय से वड़ा होके सूर्यादि में प्राप्त उपास्य कहा है या नित्य सिद्ध ईश्वर है फिर रूपी सुनने से संसारी है न कि ईश्वर नीरूप से निरूप का रूप उपासना के लिये मान लिया है। अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययमिति इस श्रुति से। और ईश्वर अपनी सत्ता से ही निराधार ठहिरा है। सभगवःकस्मिन्प्रतिष्ठितइति स्वेमहिम्नीति। इस वाकोवाक्य रूप श्रुति से। निर्विकार और अनन्त है। आकाशवत्सर्वगतश्चनित्यः इस श्रुतिसे। कभी२ विकारोंसे भी कहा है। सर्वकामःसर्वगन्धःसर्वरसइत्यादि श्रुति से। तात्पर्यार्थ है कि जो बाहिर गन्ध रसादि देखते हैं सो सब ईश्वर की सत्ताही है और न कि मृदु द्रुत कठिनादि वस्तु कुछ ही है तिससे ईशही सूर्य और नेत्र के बीच उपदिष्ट है॥

भेदव्यपदेशाच्चान्यः॥ २१ ॥

जो सूर्य में है उससे ईश्वर अन्य है इस भेद से सूर्य आधार और ईश्वर आधेय जान पड़ता है यह अर्थ इस श्रुति से लिया है कि। यआदित्येतिष्ठन्नादित्यादन्तरोयआदित्योनवेदयस्यादित्यःशरीरंयआदित्यमन्तरोयमयत्येषतेआत्मांतर्याम्यमृतइति। तिससे हिरण्मय ईश्वर है और न कि जीव देवतादि॥

(आकाशाधिकरण॥ ८॥)

आकाशस्तल्लिङ्गात्॥ २२ ॥

छान्दोग्य में शालावत्व नाम महर्षि ने प्रवाहण नाम रा-

जा से पूछा कि हे भगवन् जो सब का आधार और कारण है आप उसे हमे बताइये फिर उसने कहा कि आकाश है। अब क्या आकाश शब्द से जो भूतों में गिना आकाश सो है या ब्रह्म है यह संशय है। भूताकाश नहीं है क्योंकि आकाशही आकाश का कारण नहीं हो सक्ता है और ब्रह्म शब्द के बदले में आकाश शब्द इस हेतु से कहा कि ब्रह्म व्योम-दोनों अनन्तता में बराबर हैं और वेद से आकाश शब्द ब्रह्म में और लोक से पांच भूतों में प्रसिद्ध है। यह अर्थ इस श्रुति से लिया है कि। अस्यलोकस्यकागतिरित्याकाश इति होवाचसर्वाणिहवाइमानिभूतान्याकाशादेवसमुत्पद्यन्तेआकाशं प्रत्यस्तंयंत्याकाशोह्येवैभ्योज्यायानाकाशःपरायणं इति॥

पृथिवी अन्तरिक्ष दिव और सब लोकों से बड़ा है। श्रुति। ज्यायान्पृथिव्याज्ज्यायानंतरिक्षाज्ज्यायान्दिवोज्यायानेभ्यो लोकेभ्यः इति। कर्म फल देने को ईश्वरही समर्थ है॥

श्रुति॥ विज्ञानमानन्दंब्रह्मरातेर्दातुःपरायणमिति। आनन्त्य ब्रह्म का चिन्ह है। सएषवरोवरीयानुद्गीथःसएषो नन्त इति। श्रुति। ऋचोक्षरेपरमेव्योमन्यस्मिन्देवाअधिविश्वेनिषेदुःसैषाभार्गवीवारुणीविद्यापरमेव्योमन्प्रतिष्ठिता इति। ईश्वर में ऋचो वेदही प्रमाण हैं। छान्दोग्य ॐकंब्रह्मखंब्रह्मेति। बृहदारण्य है कि खंपुराणमिति। अग्निरधीतेनुवाकं। इस में जैसे अग्नि शब्द लड़के का वाचक है तैसेही आकाश शब्द के पर्याय कखादि शब्द भी ब्रह्मही को कहिते हैं आकाशोवैनामरूपयोर्निर्वहितातेयदन्तरातद्ब्रह्मेति। और भी अन्तवत्त्व दोष से शालावत्य पक्ष की निन्दा कर कुछ अनन्त कहिने की इच्छा से व्योम का ग्रहण किया है इसे सिद्ध हु-

था कि आकाश शब्द से ब्रह्महो कहा है न कि भूताकाश ॥

(प्राणाधिकरण ॥ ६ ॥)

अतएवप्राणः ॥ २३ ॥

अतः । ब्रह्मलिङ्गादेव प्राणपद वाच्यं ब्रह्मास्ति आकाश वाक्य के अगिले वाक्य में प्रस्तोता नाम ऋत्विज् ने उषस्ति से पूछा कि प्रस्ताव नाम साम के भाग का देवता कौन है उसने उत्तर दिया कि प्राण है। सो क्या मुह के भीतर आता जाता वायु है या ब्रह्म है। लोक में सास को हो प्राण कहते हैं तिससे वुही है यह मत कहो क्योंकि प्राण सोते पर सब इन्द्रियों के लय का स्थान है फिर प्राण के लय का स्थान कौन है इससे जो सब की लय का स्थान है सो ही ब्रह्म है। लोक से प्राण शब्द सास में रूढ है। और वेद से ब्रह्म में है और प्राण शब्द ब्रह्म परमाने से सर्व शब्द के अर्थ का सङ्कोच और व्यभिचार भी नहीं रहा है और सब भूतोंमें घुसना निकरना यह ब्रह्म का चिन्ह भी बना रहा। यह अर्थ इन से लिया है कि कतमासादेवतेतिप्राणइतिहोवाचसर्वाणिहवाइमानिभूतानिप्राणमेवाभिसम्विशन्तिप्राणमभ्युज्जिहते - सैषा देवता प्रस्तावमन्वायत्तेत्यादि यदावैपुरुषःस्वपितिप्राणं तर्हिवागप्येतीत्यादि सयदाप्रबुध्यतेप्राणादेवाधिपुनर्जायन्तेइत्यादि। अर्थ। स्वापकालमें प्राण वृत्ति कालय नहीं है और इन्द्रिय वृत्तियों का लय है और प्रबोध में इन्द्रिय वृत्तियों का उदय है जो लय उदय प्राण को ब्रह्म बताते हैं और ब्रह्म

कहने की इच्छा से ही प्राणोंका प्राण कहा है। श्रुति। प्राणस्यप्राणंप्राणबन्धनंहिसौम्यमन:इत्यादि। तिससे ब्रह्मही प्राण शब्द से कहा और न कि सास॥

(ज्योतिरधिकरण ॥ १० ॥)

ज्योतिश्चरणाभिधानात् ॥ २४ ॥

ज्योति: ब्रह्म कुत: पाद्कथनात् इत्यर्थ: ।

छान्दोग्य के तीसरे अध्याय के बीच गायत्री विद्या में हृदय के छिद्रकी उपासना कहके कहा कि द्युलोक से परे प्रकाशमान वस्तु ब्रह्म है क्योंकि पहिले गायत्री खण्ड में एक पाद उसका सब भूत और तीन पाद अमृत रूप द्युलोक में कहे हैं ऐसा चार पाद ब्रह्म कहा है फिर वुही ब्रह्म प्रकृत है और ब्रह्मही का पद् शब्द से अनुकर्ष किया है तिससे ज्योति: परब्रह्म है और नकि सूर्यादि यहां ज्योति: शब्दार्थ ज्ञान है यह अर्थ इन श्रुतियोंसे लिया है कि। अथयदत:परोदिवो ज्योतिर्दीप्यतेविश्वत:पृष्ठेषुसर्वत: पृष्ठेष्वनुत्तमेषूत्तमेषुले।केष्विदं वावतद्यदिदमस्मिन्नन्त:पुरुषेज्योतिरिति। शांडिल्य विद्या में भी ब्रह्मही ज्योति: शब्द से कहा है। श्रुति। ब्रह्मतस्मादिहज्योतिरिति। और कार्यो में भी ज्योति: शब्द कहा है। श्रुति येनसूर्यस्तपतितेजसेद्धइति वाचैवायंज्योतिषास्तेमनोज्योतिर्युषतामिति तमेवभांतमनुभांतिसर्वं तस्यभासासर्वमिदंविभाति तदेवज्योतिषांज्योतिरायुर्होपासतेऽमृतमिति मन्त्र एतावानस्य महिमाततोज्यायांश्चपूरुष: पादोस्यविश्वाभूतानित्रिपादस्यामृतन्दिवीत्यादि॥

छन्दोभिधानान्नेतिचेन्नतथाचेतोर्पण निगदात्तथाहिदर्शनम् ॥ २५ ॥

छन्दो वृत्तं अभिकथनात् न इति चेत् यदि न तथा चेतः चित्तं अर्पणं समाधानं निगदात् उक्तः तथाहि दर्शनं गायत्र्याख्यछन्दोद्वारेण तदनुगते ब्रह्मणि चित्तसमाधानमनेनब्राह्मणवाक्येननिगद्यतेइत्यर्थः । गायत्री नाम छन्द के कहने से ब्रह्मज्योतिः नहीं है सो मत कहो क्योंकि गायत्रीद्वारा ब्रह्म में चित्त लगाने के लिये कहा है। जैसा कि ऋग्वेद में देखा है कि ऋग्वेदी ब्रह्म को वड़े उक्थ में मन न करते हैं तैसेही गायत्री में जानो । यह अर्थ इससे है कि ।

यथैतंह्येवबह्वृचामहत्युक्थ्येमीमांसते । एतमग्नावध्वर्यवः । एतंमहाव्रतेछन्दोगा इत्यादि । कर्मठ याग में उपासते हैं । यथा अग्निमीलेपुरोहितमित्यादि ऋग्वेदे । अग्निमीडे इत्यादि सान्नि च । याज्ञिक यज्ञ में । जैसे । यज्ञोवैस इस श्रुति से ऐसेही अन्य ठौर जानो । इससे ज्योतिः शब्द से ब्रह्मही कहा है नकि छन्द ॥ गायत्रीवाइदंसर्वंभूतंयदिदंकिंचेति यथा सर्वंखल्विदं ब्रह्मेति । गायत्रीशब्द से साक्षाद्ब्रह्म कहा है सङ्ख्या की बराबरी से जैसे छह अक्षर के पदों में गायत्री चतुष्पदा है तैसे ब्रह्म भी चतुष्पात् है इस पक्ष में ब्रह्मही कहा न कि छन्दः ॥

भूतादिपादव्यपदेशोपपत्तेश्चैवं ॥ २६ ॥

भूत पृथिवी शरीर हृदय जे चार पाद और वाक् प्राण जे दो मिला के गायत्री वर्णन की है यह भी कहिना ठीक

नहीं है क्योंकि गायत्री एक छन्द का नाम है फिर वह सब भूतों का आदि नहीं हो सक्ता है इस लिये गायत्री में घुसा चेतन सब कार्यों का कर्त्ता सम्भव है यह अर्थ इससे लिया है कि । भूत पृथिवी शरीर हृदयानिसैषाचतुष्पदाषड्विधागायत्री-तियद्वैतद्ब्रह्मेति पञ्चब्रह्मपुरुषाइतिचसुषुम्निषुब्रह्मपुरुषाः । हृदयमें चार ओर चारछिद्र हैं और एक ऊपर है यही ब्रह्म पुर श्रुतिने ध्यानार्थ कल्पा है ॥

उपदेशभेदान्नेतिचेन्नोभयस्मिन्नप्यवि-रोधात् ॥ २७ ॥

श्रुति में भेद कहा है तिससे ब्रह्म नहीं है किन्तु ज्योतिः है यह मत कहो क्योंकि एक बस्तु में भी भेद कहने से ब्रह्म में बिरोध नहीं है । जैसे लोकमें आकाशका कल्पित भेद से भेद कहिते हैं कि वृक्ष के आगे से पक्षी उड़ा और वृक्ष में से भी श्येन है तैसेही द्युलोकसे और द्युलोक में कहा है । इन से यह अर्थ लिया है कि परोदिवः । अमृतन्दिवि । इन में पहिली पञ्चमी विभक्ति और दूसरी सप्तमी है किसी मत से गङ्गामें घोषके तुल्य लाक्षणिक दिवि आधार ब्रह्म का है सम्बन्ध असम्बन्धका भेद है यही भेद है ऐसे अविरोधसे ब्रह्मही ज्योतिश्शब्द से कहा है और न कि सूर्यादि ॥

(प्रतर्दनाधिकरण ॥ ११ ॥)

प्राणस्तथानुगमात् ॥ २८ ॥

प्राणः ब्रह्म अनुगमात् बोधनात् ॥

कौषीतकी में इन्द्र और प्रतर्दन के सम्बाद से जाना गया कि इन्द्र ने प्रतर्दन से कहा कि तू मुझ से वर मांग फिर उसने कहा कि मनुष्य को जो हित तम होवे सो मुजि को दे। फिर इन्द्र ने कहा कि मैं प्राण हूं और प्रज्ञात्मा हूं और जो प्राण है वुही आयुः है और जो आयुः है वुही अमृत है और जब तक देह में प्राण रहिता है तब तक आयुः है इस से तू मेरी उपासना कर। फिर इन्द्र के वाक्य में प्राण शब्द से ब्रह्म कहा है न कि प्राण वायु मात्र न देवतात्मा और इन्द्र का अहङ्कार और जीव कहा है। क्योंकि वाक्य में आगे पीछे देखने से प्राण शब्द का वाच्य ब्रह्म माने में हिततम वर आदि और आनन्द अजर अमर आदि का सम्बन्ध सम्भव हो सक्ता है तिससे प्राण पद वाच्य ब्रह्म है। यह अर्थ इससे लिया है कि प्राणोस्मिप्रज्ञात्मातंमामायुरमृतमुपास्स्वेति। अथखलुप्राणएवप्रज्ञात्मेदंशरीरंपरिगृह्योत्थापयतीति नवाचंविजिज्ञासीतवक्तारंविद्यात् अन्तेचसएषप्राणएवप्रज्ञात्मानन्दोजरोमृतइत्यादि॥

नवक्तुरात्मोपदेशादितिचेदध्यात्मसंबन्धभूमाह्यस्मिन्॥ २९॥

वक्तुः इन्द्रस्य आत्मो० स्वोपदेशात् प्राणो न ब्रह्म इति चेत् न अध्यात्मसम्बन्धस्य हिततमत्वादिलिङ्गस्य भूमावाहुल्यं अस्मिन् अध्यायेस्तीतिपदार्थः॥ अवागमना इस श्रुति से। भावा इन्द्र ने अपनी उपासना नहीं करने को कही है आत्मयोग से और इस प्रकरण में ब्रह्म के बहुत चिन्ह है जैसे अयमात्माब्रह्मसर्वानुभूरित्यादि। इससे ब्रह्म का उपदेश करा

है न कि देवता का । यह अर्थ इससे लिया है कि जो मांविद्
नहवैतस्यकेनचनकर्मणालोकोमीयन्तद्दत्यादि । जैसा मेरा लोम
भी नहीं नष्टहुआ ब्रह्म बोधसे तैसा तेरा भी नाश नहीं है ॥

शास्त्रदृष्ट्यातूपदेशोवामदेववत् ॥ ३० ॥

जैसे तत्व मसीति इस शास्त्र को देख वामदेव ऋषि ने ऋग्वेदमें कहा कि मैंही मनु और सूर्य और कक्षीवान् हुआथा तैसेही इन्द्र ने कहा कि जो मैं ज्ञानरूप हूं तू उसको उपासना कर । यह अर्थ इससे लिया है कि अहम्मनुरभवं । इस ऋग्वेदके सूक्तसे वामदेव का मनोर्थ प्रकट है ॥

जीवमुख्यप्राणलिङ्गान्नेतिचेन्नोपासात्रैविध्यादाश्रितत्वादिहतद्योगात् ॥ ३१ ॥

जीवलिङ्गात्मुख्यप्राणलिङ्गात्त्रिविधोपासनंजीवोपासनं १ मुख्यप्राणोपासनं २ ब्रह्मोपासनं ३ जीवश्चमुख्यप्राणश्चतयोर्लिङ्गान्नप्राणोब्रह्मेतिचेत्न कुत:लिङ्गानांप्रतीकत्वेनब्रह्मोपासायोक्तेः भाषा । जीव और मुह की वायु इन्द्रियादि के चिन्ह प्रकट हैं इससे प्राण ब्रह्म नहीं है यह मत कहो क्योंकि बुद्धिप्राणादि उपाधियों के भेद से पृथक् २ ब्रह्म को ही उपासना के लिये कहे हैं इससे यह अर्थ लिया है कि सएषप्राणएवप्रज्ञात्मानन्दएषलोकपालइत्यादि ब्रह्म धर्म है । तिससे प्राण पद से प्रह्मही कहा है और न कि मुह को वायु और इन्द्रियां और जीव इह इस अध्याय मे लिङ्ग विद्यमान होने से नप्राणेनना पानेनमर्त्योजीवतिकश्चन इतरेणतुजीवन्तियस्मिन्नेताउपाश्रिताविति श्रुतेः । आश्रितत्वात् जिस ब्रह्म मे धरे प्राणापान

हैं उसी से जीते हैं ॥

अथवा प्राण धर्म से प्रज्ञा धर्म से ब्रह्म धर्म से जो त्रि-विध उपासन उपाधि दो के भेद से कहा सो एकही इष्ट है तिससे सिद्ध हुआ कि यह ब्रह्म वाक्य है ॥

इति श्रीयुगताराचन्द्रवर्मणा कृतेब्रह्मसूत्रभाषाभाष्ये प्रथमाध्यायस्य प्रथमपादः पूर्णः ॥

दूसरा अस्पष्टपाद है ॥

(मनोमयाधिकरण । १ ॥)

सर्वत्रप्रसिद्धोपदेशात् ॥ १ ॥

लोकेवेदेचप्रसिद्धमनोमयस्यकीर्तनमस्तीति ।

जो ब्रह्म सब वेदान्तों में प्रसिद्ध है सोही मनोमयाधिधर्मों से शांडिल्य विद्या में उपासना के लिये उपास्य कहा है न कि जीव इन से यह अर्थ लिया है कि सर्वंखल्विदंब्रह्मतज्जलानितिशान्तउपासीत सक्रतुंकुर्वीतमनोमयःप्राणशरीरोभारूपइति । असङ्ग ब्रह्म पर वाक्य । अप्राणोह्यमनाःशुभ्रइति सगुण पर वाक्य । अथखलुक्रतुमयःपुरुषोयथाक्रतु*रस्मिंल्लोकेपुरुषोभवति तथेतःप्रेत्यभवति ॥

विवक्षितगुणोपपत्तेश्च ॥ २ ॥

जो उपासना में उपादेय गुण सत्य सङ्कल्पादि कहे हैं ते परब्रह्म में युक्त हैं तिससे मनोमय ब्रह्म है और न कि जीवादि । यअपहतपाप्मासत्यकामःसत्यसङ्कल्पइत्यादि । इससे उपास्य पर उपदिष्ट है ॥

* सङ्कल्प या ध्यान है ॥

अनुपपत्तेस्तुनशारीरः ॥ ३ ॥

और जीव में सत्य सङ्कल्पादि गुणों का असम्भव है तिससे मनोमयादि धर्म्मों से उपास्य नहीं है ॥ श्रुति । यत्कारणंसत्यसङ्कल्पआकाशात्माऽवाक्यनादरोज्यायान्पृथिव्याइत्यादि । जे गुणजीव में सम्भव नहीं है अवाकी इन्द्रियशून्य इत्यर्थः यद्यपि जीव ईश्वर दोनो देह में हैं तोभी जीव केवल देहही में है अन्यत्र वृत्ति के अभाव से और ईश्वर सर्वव्यापक सर्वत्र है जैसा कि ऋग्मन्त्र है । द्वासुपर्णा । ईश्वरविषयक वाक्य ज्यायान्पृथिव्याज्यायानन्तरिक्षादिति आकाशवत्सर्वगतश्चनित्य इत्यादि । तु शब्द निश्चयार्थ है ॥

कर्तृकर्मव्यपदेशाच्च ॥ ४ ॥

श्रुतिः । एतमितःप्रेत्याभिसंभवितास्मीति । एतं मनोमयादि गुणयुक्त उपास्य आत्माही प्राप्य कहा है । अभिसम्भवितास्मीति । शारीरं अर्थात् उपासकं । कर्तृत्वेन । अर्थात् प्रापक कहा है । प्राप्त होता है उपास्य उपासक भाव भी भेदमें बन सक्ता है इससे शारीर मनोमयादि गुणयुक्त नहीं है ।

शब्दविशेषात् ॥ ५ ॥

विभक्ति के भेद से मनोमयादि द्वारा जीव से अन्यही उपास्य है । यथा व्रीहिर्वायवोवाश्यामाकोवाश्यामाकतंडुलोवैवमयमन्तरात्मन्पुरुषोहिरण्मय इति । इसमें शारीर आत्माका वाचक शब्द सप्तम्यंत है । जैसे अन्तरात्मनिति । और इस से अन्यपुरुष प्रथमान्त मनोमयादि विशिष्ट आत्मा का वाचक है जैसे पुरुषोहिरण्मय इत्यादि इससे दोनो का भेद है ॥

स्मृतेश्च ॥ ६ ॥

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठतीति । इससे भी हृदय में जीव से अन्य ईश्वर उपास्य है ॥

अर्भकौकस्त्वात्तद्व्यपदेशाच्चनेतिचेन्ननि-चाय्यत्वादेवंव्योमवच्च ॥ ७ ॥

अर्भकं वाल्यं अल्पंवा ओको नीडं हृत्स्थानं निचाय्यत्वादेव हृद्पुण्डरीके द्रष्टव्यः वा उपास्यः व्योमवत् यथा सर्वगतमपि सत् व्योमशूचीपाशाद्यपेक्षयार्भकौकोऽणीयश्चव्यपदिश्यते इति । एवमेव ब्रह्मापि । धानयव से भी छोटा कहा है । अणीयान्व्रीहेर्वायवाद्वेति । आराग्रमात्र इति इश्वरही जीव यहां कहा है जैसे सब पृथिवी का पति अवधिपति कहाता है । बालक के हृदयसा और धान जौ से छोटा इत्यादि उपाधियों के भेद से ब्रह्मउपासना के लिये कहा है नकि स्वरूप से जैसा अनन्त व्योम घटाकाशमठाकाशादि से छोटासा कहा है । इससे एषमेआत्मान्तर्हृदय इति ॥

संभोगप्राप्तिरितिचेन्नवैशेष्यात् ॥ ८ ॥

सर्वगतब्रह्म का सब प्राणियों के हृदय में संबन्ध से और चेतनरूप से और एकत्व से और शरीर के अभेद से सुख दुःखादि की प्राप्ति सम्यक् हो अन्य संसारीके न होने सेनान्योऽस्ति विज्ञातेति इससे । फिर सोपाधिक माने से उपाधि धर्म दुःखादि की प्राप्ति न होगी क्योंकि उपाधि बिम्ब में नहीं होती है तिससे ब्रह्म में भोग की गन्ध भी नहीं है जीव ब्रह्म का भेद मिथ्याज्ञान से और सत्यज्ञान से अभेद है इससे । अनश्नन्नन्योभिचाकशीति । कर्त्ता भोक्ता धर्माधर्मसाधन सुख दुःखादिमान् एक है और दूसरा अपहतपाप्मादिमान् है

इसविशेष अर्थात् भेदसे जो सम्बन्ध मात्रहीसे कार्य होता है तो व्योमादि को भी दाहादि होना चाहिये। सर्वगता ने कात्म वादी को भी उक्त चोद्य परिहार समान है और जो शास्त्र जीव पर की एक ता कहिते हैं ते एक ताके द्वारा संयोग की निवृत्ति भी करते हैं। जैसे, तत्वमसि, अहंब्रह्मास्मीत्यादि। जैसे, किसी ने व्योम को मलिन कहा तो क्या वह मलिन-होशक्ता है तिससे वेद में जीव उपास्य नहीं कहा है किन्तु-ब्रह्मही तैसे मिथ्या ज्ञानसे भोग और सम्यक् ज्ञानसे ऐक्य है यही विशेष है तिससे ईश्वर में भोग गन्ध भी नहीं कल्प सक्ता हो॥

(अत्ताधिकरण॥ २॥)

अत्ताचराचरग्रहणात्॥ ९॥

कठवल्ली में सुना है कि जिसके ब्राह्मण क्षत्रिय भात और मृत्यु दाल है वुह जहां है उसको कौन ऐसे जानता है कि ईश्वरही सर्व भक्षा है क्योंकि, अग्निरन्नादइति, इस श्रुति से और लौकिक प्रसिद्धि से अग्निही सर्वात्ता है अथवा तयोरन्य इस श्रुति से अत्ता जीव है न कि ईश्वर है यह मत कहो क्योंकि अनश्नन्निति इस श्रुति ने कर्म फलका भोग वारण किया है न कि विकार संहार तिससे विकारमात्र का संहार ईश्वर मेंही है यस्यब्रह्म चक्षत्रञ्चोभेभवतओदनः मृत्युर्यस्योपसेचनंकइ-त्थावेदयत्रसइति। लोक वेदमें अग्निजीव ईश्वर तीनों भक्षक प्रकट हैं अग्नि जीव सबके भक्षक नहीं है असम्भवसे और ई-श्वर कर्म फलों को छोड़ सब स्थावर जङ्गम विकार जात का

भक्षक संहर्ता है ॥

प्रकरणाच्च ॥ १० ॥

ईश्वर जन्म मरण रहित है इस प्रकरण से संहर्त्ता ईश्वर ही है। यह अर्थ इससे लिया है कि नजायतेम्रियतेवाविपश्चितेत्यादि। और प्रकृतही का ग्रहण न्याय्य है। और दुर्विज्ञानत्व भी परमात्मा का लिङ्ग है। कइत्थावेदयत्रसःइत्यादि इससे अत्ता ईश्वरही है ॥

—*—*—

(गुहाधिकरण ॥ ३ ॥)

—*—

गुहांप्रविष्टावात्मानौहितद्दर्शनात् ॥ ११ ॥

कठवल्ली में सुना है कि सुकृत का फल नर देह है और वुही परब्रह्म की प्राप्ति का स्थान है विद्या शमादि के सम्भव से। फिर देह में या हृदय में ब्रह्म जीव ठहिरे हैं और कर्म फल के पाता है और न कि बुद्धि जीव हैं। जड़ और अजड़ के विरोध से जड़ बुद्धि सुकृत पान नहीं कर सक्ती है चेतन क्षेत्रज्ञ कर सक्ता है एक कर्त्ता अन्य अकर्त्ता इनको देख कह शक्ते हैं कि कर्त्ता चलते हैं उपचार से। जैसे तैसे जीव पाता और ईश अपाता दोनों सङ्ग से पाता कहे हैं तिससे जीव ईश हैं या जीव पीता ईश पिवाता है। छाया और आतप की नाईं। और जीव हृदय में प्रत्यक्ष से और ब्रह्म श्रुति से दिखाता है। गुहाहितङ्गह्वरेष्टंपुराणंयोवेदनिहितंगुहायांपरमेव्योमन्। आत्मानमन्विछगुहांप्रविष्टमिति। जैसे लोक में इस गो का दूसरा लाओ यह कहिने से न घोड़ा

या भैंसा लाता है किन्तु गौ ही लाता है तिससे चेतन जीव ब्रह्म सम स्वभाववाले हैं और न कि विषम स्वभाव-वाले जड़ चेतन बुद्धि जीव हैं । ऋतंपिबन्तौसुकृतस्यलोके । गुहांप्रविष्टौपरमेपरार्द्धे छायातपौब्रह्मविदो वदन्तिपञ्चाग्नयोये-चत्रिणाचिकेताइति ॥

विशेषणाच्च ॥ १२ ॥

जीव मार्गके पार पहुंचानेवाला प्रापक है विष्णु का स्थान पहुंचनके योग्य प्राप्य है फिर इस प्राप्य प्रापकभावसे दोनों विशेषण हैं और ईश्वरही की महिमा जानके शोकसे छुटता है श्रुति सोध्वनःपारमाप्नोतितद्विष्णोःपरमंपदमित्यादि । इससे सिद्ध हुआकि गंता और गंतव्य दोनों चेतन जीव ब्रह्मही हैं और न कि जड़ चेतन बुद्धि और जीव है और पैंगीरहस्यब्राह्मणमेंद्वासुपर्णा । इसका अर्थ बुद्धिजीव कहा है न कि जीव ईश्वर, इससे ऐसे मन्त्र इस अधिकरण के योग्य नहीं है ॥

(उपकोसलाधिकरण ॥ ४ ॥)

अन्तरउपपत्तेः ॥ १३ ॥

छांदोग्य के चौथे अध्याय में सत्य काम नाम गुरु ने उपकोसल नाम शिष्य से कहा कि जो आंख में पुरुष दिखाता है सो अमृत अभय ब्रह्म है क्योंकि अमृतादि गुणों का सम्भव ब्रह्म में हो है और न कि छाया जीव देवता में है । इससे यएषोऽन्तराक्षिणिपुरुषोदृश्यतएषआत्मेतिहोवाचैतदमृतमभयमेतद्ब्रह्मेति । इससे अन्तर ईश्वर उपपन्न है। एतंहि-

सर्वाणिवा*मान्यभि?संयन्ति एषउएव ??वामनीरेषहिसर्वाणि-वामानिनयंतिएषउ एव**भामनीरेषहि सर्वेषुलोकेषुप्रभातीति ईश्वर है ॥

स्थानादिव्यपदेशच्च ॥ १४ ॥

ईश्वर के स्थान रूप नामादि कल्पना से बहुत कहे हैं तिससे नेत्र में ईश्वर है । श्रुति । यःपृथिव्यांतिष्ठन्नित्यादि । नामधरने में और रूप में । श्रुति । तस्योदितिनामहिरण्यश्म-श्रुरित्यादि ॥

सुखविशिष्टाभिधानादेवच ॥ १५ ॥

जो सुख रूप ब्रह्म पहिले वाक्य में कहाथा उसी को नेत्र में उपासना के लिये कहा है तिससे नेत्राधार ईश्वर है । पहिला वाक्य । प्राणोब्रह्मकंब्रह्मखंब्रह्मेति । ऐसा अग्नि का वाक्य सुनके उपकोसल ने कहा कि जाना मैं ने प्राण ब्रह्म है और कं और खं को नहीं जाना है । उत्तरवाक्य यद्वावकंतदेवखंयदेवखंतदेवकमिति ॥

जो ख शब्द विशेषण क शब्द का न होता तो क शब्द का अर्थ विषयेंद्रियजन्यसामय अर्थात् विनाशी सुख होता और जो क शब्द ख शब्द का विशेषण न होता तो ख शब्द का अर्थभूताकाश होता और इतरेतर विशषण से सुखात्मक ब्रह्म कहा है और गार्हपत्यादि । अग्नि अपनी २ महिमा को कहिके फिर कहा कि हे सौम्य तुम से अग्नि विद्या और आ-

---

* कर्मफलानि ॥ ? उत्पद्यन्ते ॥

?? कर्मफलदाता ॥ ** सर्वार्थप्रकाशक ॥

त्मविद्या का उपसंहार कर पहिले कहे ब्रह्म को ही जताती हैं यथा पुष्करपलाशआपोनश्लिष्यन्तएवमेवम्विदिपापकर्मन-श्लिष्यत इति । क सुख का नाम निरुक्ति में है ॥

श्रुतोपनिषत्कगत्यभिधानाच्च ॥ १६ ॥

जो सगुण ब्रह्मोपासक है उसको जो गति श्रुति मे प्र-सिद्ध है तिसका इस सूत्र में चिन्ह कहा है यह सूत्रार्थ है । अथोत्तरेणतपसाब्रह्मचर्येणश्रद्धयाविद्ययात्मानमन्विष्यादित्यम-भिजायन्ते एतद्वैप्राणानामायतनमेतदमृतमभयमेतत्परायणमे तस्मान्नपुनरावर्तन्त इति । अथ यदुच्चैव।स्मिच्छव्यं कुर्वन्ति यदुच-नार्चिषमेवाभिसंभवति इस उपक्रम से आदित्याच्चन्द्रमसं च-न्द्रमसोविद्युतं तत्पुरुषोऽमानवः स एतान्ब्रह्मगमयति एषदेव पथाब्रह्मपथ एतेन प्रतिपद्यमाना इमं मानवमावर्तं नावर्तन्त इति । सारार्थ । सगुणब्रह्मज्ञानी अर्चिरादि मार्ग से ब्रह्मलो-क में जाता है तिससे भी नेत्र में ईश्वरही है । इससे । ते-र्चिषमभिसंविशन्तीति । और नकि कोई उपासक उपासना के काल में अन्य पुरुष को बैठाके अक्षिपुरुष की उपासना करता है तिससे अक्षिस्थब्रह्म निश्चित है ॥

अनवस्थितेरसंभवाच्चनेतरः ॥ १७

और छायात्मा देवता जीव इनमें से एक का भी आंख में संभव नहीं है क्योंकि दूसरे पुरुषके समीप के विना आंख में छायापुरुष नहीं रहि सक्ता है । और अमृतादिगुणोंका भी छाया में संभव नहीं है और मरण नाश सुनने से देवता भी नहीं है अमर चिरकाल रहने से हैं ऐश्वर्य ईश्वराधीन है न स्वाभाविक है जैसा कि । भीषास्माद्वातः पवते भीषोदेतिसूर्यः

भीषास्मादग्निश्चेन्द्रश्चमृत्युर्धावति पञ्चमः इति मन्त्रवर्ण से और अविद्या से जीव में समत्व भयत्व आरोपित है तिससे जीव भी नहीं है और अमृतादि गुणों का जीव में ठिकाना नहीं है तिससे उसको उपासना को क्या चर्चा है। भव्यं सेवेत बुद्धिमान् इस न्याय से भी अक्षिस्थ ईश्वरही उपास्य कहा है तिससे ईश्वरही अक्षिस्थान जानो। यह उपदेश प्ररोचनार्थ है

(अन्तर्याम्यधिकरण ॥ ५ ॥)

अन्तर्याम्यधिदैवादिषुतद्धर्मव्यपदे- शात् ॥ १८ ॥

अन्तर्यामी परात्मा अधिदैवादिषु पृथिव्यादिषु भवितुमर्हतिकुतः तत् तस्य परात्मनःधर्माणांगुणानांव्यपदेशात्कथनात् भाषार्थः, वृहदारण्य के पचये अध्याय में याज्ञवल्क्य ने उद्दालक से कहा कि पृथिव्यादि में अन्तर्यामी ईश्वर है क्योंकि पृथिवी में रहिता है पर उसको पृथिवी नहीं जानती है फिर ज्ञान और अमृतादि गुणों का उसी में सम्भव है। इससे यइमञ्चलोकंपरञ्चलोकंसर्वाणिभूतानियोंतरोयमयति । फिर कहा कि यःपृथिव्यांतिष्ठन्पृथिव्याअन्तरोयंपृथिवीनवेदयस्यपृथिवीशरीरं यःपृथिवीमन्तरोयमयत्येषतेआत्मांतर्याम्यमृतइत्यादि। ऐसे वाक्यों में न कि अधिदैवादि का अभिमानी देवता या योगी याअपूर्वसंज्ञा है किन्तु परमात्मा है अन्तर्यामी अमृतत्व गुण से ॥

नचस्मार्तमतद्धर्माभिलापात् ॥ १९ ॥

कपिलादि की स्मृति से सिद्ध प्रधान अन्तर्यामी नहीं हो सकता है क्योंकि द्रष्टा श्रोतादि गुणों के कहिने से फिर प्रधान में उन गुणों का असम्भव है गौण भी नहीं है मुख्य के संभव होने से गौण मानना अनुचित है। इससे, अदृष्टोद्रष्टा ऽश्रुत:श्रोताऽमतोमन्ता ऽविज्ञातोविज्ञातेति। यद्यपि प्रधान में अदृष्टत्वादि व्यपदेश संभव है तथापि द्रष्टृत्वादि व्यपदेश संभव नहीं है क्योंकि उनने प्रधान अचेतन माना है ॥

शारीरश्चोभयेपिहिभेदेनैनमधीयते ॥ २० ॥

काण्व और माध्यं दिन जे दोनों जीव से अलग ईश्वर को पढ़ते हैं तिससे जीव भी अन्तर्यामी नहीं है और न प्रधान है किन्तु अन्तर्यामी ईश्वर है। काण्व योविज्ञानेतिष्ठन्निति माध्यन्दिन: यआत्मनितिष्ठनात्मानमन्तरोयमयतीति। अणु से अणु और महान् से महान्, पृथिवी व्योमादि सब वस्तु में अन्तर्यामी को कहिने से परात्माही सर्वव्यापक है। अन्तर्यामी है। और न कि विज्ञानमय शारीर है ॥

———*○*———

(भूतयोन्यधिकरण ॥ ६ ॥)

अदृश्यत्वादिगुणकोधर्मोक्तेः ॥ २१ ॥

मुण्डक में जो भूतों का कारण सुना सो ब्रह्म है सर्व-

ज्ञादि गुणों के कहिने से। यहां योनि निमित्तोपादान कारण का नाम है। श्रुति। अथपराययातदक्षरमधिगम्यते यत्तदद्रेश्यमग्राह्यमगोत्रमवर्णमचक्षुःश्रोत्रन्तदपाणिपादं नित्यम्विभुंसर्वगतंसुसूक्ष्मंतदव्ययंयद्भूतयोनिंपरिपश्यन्तिधीराइति। अर्थ। अपर ऋगादि विद्या है कर्म के बोधन से और ब्रह्म बोध से परब्रह्म बिद्या है। अद्रेश्यं अदृश्य है। प्रधान पक्ष में तीसरी प्रधानबिद्या भी कहिनी चाहिये थी। यह ब्रह्मबिद्या अथर्वा नाम जेठे बेटेसे कही थी। यहां भूत योनि प्रधान और जीव है जैसे मकरी से जाला और पृथिवी से औषधि और देह से केशलोमादि होते हैं तैसेही प्रधान से भूतों का जन्म है यह ठीक नहीं है क्योंकि ईश्वरही भूतयोनि धर्मयुक्त सुना है। यः सर्वज्ञःसर्वविद्यस्यज्ञानमयंतपः तस्मादेतद्ब्रह्म नामरूपमन्नंचजायते इति। तिससे अदृश्यादि गुणी ईश्वर ही भूतयोनि है॥

प्लवाह्येतेऽदृढायज्ञरूपा अष्टादशोक्तमवरंयेषुकर्मएतच्छ्रेयोयेभिनन्दन्तिमूढाजरामृत्युन्तेपुनरेवापियंतीति। बिरक्त को पर बिद्या में अधिकार है जैसे परीक्ष्यलोकान्कर्मचितांब्राह्मणोनिर्वेदमायान्नास्त्यकृतःकृतेनेति। स्थूल पृथिवी दृष्टान्त है तैसे दार्ष्टान्तिक भूत योनि स्थूल नहीं मानते हैं॥

विशेषणभेदव्यपदेशाभ्यांचनेतरौ ॥२२॥

इतश्चपरेशएवभूतयोनिर्नशारीरःप्रधानंचेति॥

जीव भूतों का कारण नहीं हो सकता है क्योंकि अमूर्त्त पुरुष बाहिर भीतर इत्यादि विशेषणों से व्यापक ब्रह्मही कहा है न कि परिच्छिन्न जीव। इससे दिव्योह्यमूर्तःपुरुषःस-

वाह्याभ्यन्तरोह्यजःअप्राणोह्यमनाः शुभ्रइति । और प्रधान भी भूतों का कारण नहीं हो सक्ता है क्योंकि प्रधान से भूतों का कारण अलग कहा है । इससे अक्षरात्परतःपरइति अक्षरं अव्याकृतं नामरूपबीजशक्तिरूपं भूतसूक्ष्ममीश्वराश्रयन्तस्यैवोपाधिभूतंसर्वस्मात्विकारात्परोयअविकारस्तस्मात्परतःपर इतिभेदेनव्यपदेशात्परमिहविवक्षितन्दर्शयतीतिसंस्कृतमाश्रितम् ॥

रूपोपन्यासाच्च ॥ २३ ॥

भूतयोनिका रूप सब विश्व कहा है तिससे भूतयोनि ईश्वरही है । इनसे । पुरुषएवेदम्विश्वङ्कर्मेति अग्निर्मूर्द्धाचक्षुषीचन्द्रसूर्यौदिशःश्रोत्रेवाग्विवृत्ताश्चवेदावायुःप्राणोहृदयम्विश्वमस्यपद्भ्यांपृथिवीह्येषसर्वभूतान्तरात्मेति । आग सिर नेत्र चन्द्र सूर्य दिशा कान बाणी वेद वायु प्राण हृदय विश्व पाद पृथिवी जिसके सोही सब भूतों का अन्तरात्मा है । मन्त्र । हिरण्यगर्भःसमवर्तताग्रेभूतस्य जातः पतिरेकआसीत्सदाधारपृथिवींद्यामुतेमांकस्मैदेवायहविषाविधेम ॥

वृत्तिकार मत में यह रूप का कथन नहीं है किन्तु जायमान प्रपञ्च का वर्णन है आगे पीछे सृष्टि का वर्णन है तिससे बीच में भूतयोनि के रूप का वर्णन अनुचित है । इससे एतस्माज्जायतेप्राणोमनःसर्वेन्द्रियाणिचखंवायुर्ज्योतिरापःपृथिवीविश्वस्यधारिणीति । आगे पीछे । तस्मादग्निसमिधोयस्यसूर्यइत्यादि । अतश्चसर्वाओषधयोरसाश्च । यह अन्त में कहा है इस पक्ष में सर्व रूपोपन्यास ईश्वर कीप्रतिपत्ति के लिये है ॥

(वैश्वानराधिकरण ॥ ७ ॥

वैश्वानरःसाधारणशब्दविशेषात् २४

वैश्वानरःसर्वात्मपुरुषइत्यर्थः ॥

छान्दोग्य से वैश्वानर विद्या में वैश्वानर की उपासना सुनी है यस्त्वेतमेवंप्रादेशमात्रमभिविमानमात्मानंवैश्वानरमुपास्ते। संशय जाठराग्नि या भूताग्नि या भूताग्न्यभिमानी देवता या शारीर या परमेश्वर वैश्वानर है आत्मा और वैश्वानर दोनों साधारण शब्द हैं वैश्वानरशब्द तीन में साधारण हैं आत्मशब्द दो में साधारण हैं तो भी विशेष है ॥ सब पापों की हानि सुन्ने से । प्राचीनशालसत्ययज्ञेन्द्रद्युम्नजनबुडिल इन पांच ने उद्दालक से पूछा उसने मने करा तो इन्होंने अश्वपति कैकेय राजा से पूछा उसने सब की परीक्षा कर द्यु सूर्य वायु गगन वारि पृथिवी इन को कहा तो उसने सब की निन्दा कर ईश्वर बताया था तिससे ईश्वर वैश्वानर है ॥

स्मर्यमाणमनुमानंस्यादिति ॥ २५ ॥

जो स्मृतियों से सुधि दिया गया रूप ईश्वर का सो बोधक लिङ्ग है । द्यांमूर्द्धानंयस्यविप्रावदन्तीत्यादि । अर्थ । ब्राह्मण द्युलोक को सर्वात्मक पुरुष का सिर कहिते हैं । खंवैनाभिं चन्द्रसूर्यौचनेत्रेदिशःश्रोत्रेविद्धिपादौचितिञ्च । सोऽचिन्त्यात्मा सर्वभूतप्रणेता । यस्याग्निरास्यंद्युमूर्द्धाखंनाभिश्चरणौक्षितिः । सूर्यश्चक्षुर्दिशःश्रोत्रेतस्मैलोकात्मनेनमः इत्यादि सब पहिले अपना मूल भूत वेद का अनुमान कराते हैं फिर ईश्वर को ही वैश्वानर बताते हैं ॥

शब्दादिभ्योऽन्तःप्रतिष्ठानान्नेति चेन्न- तथादृष्ट्युपदेशादसंभवात्पुरुषमपिचै नमधीयते ॥ २६ ॥

संस्कृतमधिकृत्य । वैश्वानराग्निशब्दादिभ्यः अन्तः अन्तर- स्थानात् न वैश्वानर ईश्वरः इति चेन्न कुतः तथादृष्ट्युपदेशात् । जाठरे ईश्वर दृष्ट्युपदेशात् असंभवात् द्युमूर्द्धत्वादेर्जाठरेसम्भवा- भावात् एनं पुरुषं अधीयते पठन्ति वाजसनेयिन इति शेषः गा- र्थः येतुपुरुषविधमपीतिसूत्राङ्गम्पठन्तितेषामेषोर्थः केवल जाठर परिग्रहेपुरुषेऽन्तःप्रतिष्ठितं केवलंस्यात्नपुरुषविधत्वमिति श- ब्दः वैश्वानरशब्दोनपरेसंभवतिअर्थान्तरेरूढत्वात् तथाग्निशब्दः सएषोग्निर्वैश्वानर इत्यादि पुरुष के जाठर में भी सुना है पुरुषेन्तःप्रतिष्ठितंवेदेति और मूर्द्धैवसुतेजा यहां परमात्मा वै- श्वानर है । तो यह निर्णय कैसे होगा क्योंकि दोनोंमें विशे- ष भान हो तो परमेश्वर वैश्वानर हो न जाठर अथवा भूता ग्नि का सम्बन्ध सर्वत्र है तिससे वह है । जैसे योभानुनापृथि- वींद्यामुतेमामाततानरोदसीअन्तरिक्षमिति नतथादृष्ट्युपदेशा- दिति शब्दादि कारणों से परमेश्वर का निषेध युक्त नहीं है पर दृष्टि जाठर वैश्वानर में कही है । जैसे । मनोब्रह्मेत्युपा- सीत् अथवा जाठर उपाधिवाला ईश्वर देखने को कहा है । जैसे । मनोमयःप्राणशरीरोभारूपइत्यादि असम्भवात् द्युमूर्द्धैव सुतेजा इन विशेषणों का जाठर में असम्भव है जाठर माने से केवल पुरुष के भीतर ठहिरा न पुरुष और वाजसनेयि वैश्वानर को पुरुष पढ़ते हैं । सएषोग्निर्वैश्वानरोय त्पुरुषः स

योऽहैतमेवमग्निम्वैश्वानरम्पुरुषविधम्पुरुषेंतः प्रतिष्ठितम्वेदेति । ईश्वर तो भीतर बाहिर सब ही सक्ता है ॥

भावार्थः । वैश्वानर अग्नि शब्दादि के भीतर रहिनेवाले को कहिते हैं तिससे वैश्वानर ईश्वर नहीं है सो नहीं है किन्तु पेट की आग में ईश्वर बुद्धि कही है और जो पेट की आगही वैश्वानर है तो उसमें द्युलोकादिका सिरादि अङ्ग होना सम्भव नहीं है और वाजिसनेयिशाखावाले वैश्वानर को पुरुष पढ़ते हैं सूत्र में आदि शब्द से हृदय की अग्नि चेता का कल्पन है । श्रुति । सएषोऽग्निर्वैश्वानरइत्यादि ॥

अतएवनदेवताभूतंच ॥ २७

द्युमूर्द्धत्वादिकल्पनादेवेत्यर्थः देवता आदित्यः भूतं भौमाग्निरितिपदार्थः । भाषा । उक्त हेतु से सूर्य और आग वैश्वानर नहीं हो सक्ते हैं क्योंकि उन में आत्मा का असम्भव होने से ॥

साक्षादप्यविरोधंजैमिनिः ॥ २८ ॥

पहिले जाठराग्निप्रतीक वा जाठराग्न्युपाधिक ईश्वर उपास्य कहा था अवतो दोनोंसे मुक्त साक्षात्परमेश्वर उपास्य है इस में कछु विरोध जैमिनि नहीं मानते हैं योगवृत्तिसे ॥

अभिव्यक्तेरित्याश्मरथ्यः ॥ २९ ॥

जो हृदयादि स्थानों में वितीभर ईश्वर श्रुति से अभिव्यक्त सुना है सो स्थानकी अपेक्षा से अभिव्यज्यमान है और न कि स्वरूप से । क्योंकि अतिमात्र होने से । और उपासकों के कल्याणार्थ प्रादेशमात्र परिमाण कहा है यह आश्मरथ्य का मत है ॥

अनुस्मृतेर्बादरिः ॥ ३० ॥

जो ईश्वर अप्रादेश मात्र है उसको प्रादेशमात्रअनुस्मरणके लिये कहा है श्रुति ने जैसे सेर से तोले धान सेरभर कहाते हैं तैसे ईश प्रादेशमात्र हृदय कीअपेक्षा से है॥ यह बादरि का मत है॥

सम्पत्तेरितिजैमिनिस्तथाहिदर्शयति ॥ ३१ ॥

सम्पत्तिरुपास्तिरित्यर्थः ब्राह्मण प्रादेशमात्रमिहवैदेवाःसुविदिताइत्यादि ॥ सिर से ठोडी तक अङ्गों में अपने अङ्गोंपर हाथ धरर राजा ने प्राचीनशालादि से वैश्वानर कहा है सो उपासनाके लिये प्रादेशमात्र ईश्वर कहा है सर्बशाखा प्रत्यय से यह जैमिनि का मत है ॥

आमनन्तिचैनमस्मिन् ॥ ३२ ॥

संस्कृतमाश्रित्य जाबालामूर्द्धचिबुकान्तरालेपीश्वरंपठन्ति भाषाभणिति। जाबालसिर और ठोडीके बीच ईश्वर के द्युप्रभृति सब अङ्गों को कल्पना करते हैं यह उपास्य श्रवणादि से सेव्य है। अविमुक्तबद्ध जीव के स्वरूप में और ध्यानादि से मन रोकने के लिये और उपासकों को ब्रह्मलोक में पहुंचाने के लिये ईश विमान है मान के वियोग से। और सब विश्व का कारण होने से अभिमिमीता है। श्रुति। यएषोनन्तोव्यक्तआत्मासोविमुक्तेप्रतिष्ठित इत्यादि ॥

श्रुति का अर्थ लिखता हूं सो विमुक्त किस में स्थित है उत्तर। बरणा और नासी के बीच में स्थित है। फिर कौन

वरणा और कौन नासी है। उत्तर सब इन्द्रियों के पापों को वारण करे सो वरणा और नाश करे सो नासी है। फिर पूछा कि इनका स्थान कहां है। उत्तर। भौंह और नाक की सन्धि है सोही द्युलोक और पर की संधि है तिससे युक्त है परमेश्वर में वितीभर का सुनना इति। तिससे वैश्वानर और अग्नि दोनों शब्द ईश्वरही के वाचक हैं॥

इति श्रीयुक्ताराचन्द्रवर्मणा कृतब्रह्मसूत्रभाषाभाष्ये प्रथमाध्यायस्यद्वितीयःपादःपूर्णः॥

तीसरा ज्ञेयलिङ्गपाद॥

(द्युभ्वाद्यधिकरण॥ १॥)

द्युभ्वाद्यायतनंस्वशब्दात्॥ १॥

संस्कृतभाष्यि। द्यौश्चभूश्चद्युभुवौस्तस्तावादिर्यस्यतदिदंद्युभ्वादि तस्यायतनमाधारोब्रह्मास्तिकुतः स्वशब्दादात्मशब्दादित्यर्थः। भाषार्थ। मुण्डक से सुना है कि जिस आधार में द्युलोकादि सब वस्तुधरी है उस आत्मा को जानों और सब अनात्मतर्कादि विद्याओं को छाड़ो क्योंकि वे मुक्ति का कारण नहीं है फिर सब का धार ब्रह्म है ब्रह्म वाचक आत्मशब्द कहिने से। इससे यस्मिन्द्यौःपृथिवीचांतरिक्षमोतंमनःसहप्राणैश्चसर्वैस्तमेवैकंजानथआत्मानमन्यावाचोविमुञ्चथामृतस्यैषसेतुरिति। सेतु यहां पर ब्रह्म या अर्थान्तर है अर्थान्तरस्मार्तं प्रधान है ब्रह्म अनन्त अपार सुन्ने से धारणार्थक है

कि पारवान् है षिञ् बन्धन कर्मा धातु से सेतु बना है और वायुर्वैगौतमतत्सूत्रंवायुनावैगौतमसूत्रेणायञ्चलोकःपरश्चलोकःसर्वाणिचभूतानिसंदृब्धानिभवन्तीति। इसने विश्व का बिधारक वायु कहा है। जीव सब का भोक्ता है। इससे भोग्य पांच का स्थान है। छान्दोग्य में ब्रह्म स्थान सुना है कि तन्मूलाःसोम्येमाःसर्वाःप्रजाःसदायतनाःसत्प्रतिष्ठाइति। एक रस है ब्रह्म न कि वृक्ष सा वहु विधक्षेय है। जैसे। मृत्योःसमृत्युमाप्नोतियइहनानेवपश्यतीति। ऐक्य प्रपञ्च के बिलापनार्थ है न कि अनेक रूप रस ब्रह्म कहिने के अर्थ है। जैसे, सर्वंखल्विदंब्रह्मेति। ब्रह्म स्वरूप जताने के लिये श्रुति है कि जैसे, नोन का ढेला भीतर बाहिर एक रस है तैसेही ब्रह्म सर्वत्र ज्ञानघन है। श्रुति। सयथासैंधवघनोऽन्तरोऽवाह्यःकृत्स्नोरसघनएवैवं वा अरेयमात्मानन्तरोऽवाह्यः कृत्स्नः प्रज्ञानघनःइति। और से तु शब्द से सांख्य प्रधान लेते और वेदान्ती अनन्त अपार ब्रह्म लेते हैं। अन्य मत में एक का ज्ञान आत्मज्ञान है और वाग्विमोचन अमृत का साधन है इससे द्युभ्वादि का स्थान ब्रह्म से अन्य है॥

मुक्तोपसृप्यव्यपदेशात् ॥ २ ॥

मुक्तैरुपसृप्यंप्रत्यक्त्वेनप्राप्यंयद्ब्रह्मतस्याचोक्तेरितिसूत्रार्थः॥

भाषा। जिससे रागद्वेषादि शून्य मुक्त ब्रह्म को ही प्राप्त होता है तिससे आत्म शब्द ब्रह्मवाचक है और न कि प्रधानादि। श्रुति। विद्वान्नामरूपाद्विमुक्तःपरात्परंपुरुषमुपैतिदिव्यमिति। अर्थ। ज्ञानी नाम रूप से छुट के सब से श्रेष्ठ

* ग्रथितानि॥

ब्रह्म को पहुंचता है। श्रुति॥

यदासर्वेप्रमुच्यन्तेकामायेस्यहृदिश्रिताः अथमर्त्योमृतोभवत्यत्रब्रह्मसमश्नुतेइत्यादि। श्रुतियों से मुक्त का जाना ब्रह्म मेंही सुना है न कि प्रधान में कहीं किसी से। कामाअर्थात्स्वर्गादि सुख फले का अथवा निषिद्ध विषय से बनेका वायु में मुक्त की प्राप्ति के लिये कोई शब्द नहीं है तिससे वह भी द्युभ्वादि का स्थान नहीं है। तमेवधीरोविज्ञायप्रज्ञांकुर्वीतब्राह्मणःनानुध्यायाद्बहूञ्छब्दान्वाचोविग्लापनंहितदिति। ज्ञान का प्रतिबन्धक कर्मकाण्डादि से विमुख हो तत्वपुराणेतिहास से भी हाथ धोवे जो काल धन खोने को ही है। भूमा।

नानुमानमतच्छब्दात्॥ ३॥

अनुमानंप्रधानंतस्याचेनस्यप्रतिपादकः शब्दःतच्छब्दःनतच्छब्दोऽतच्छब्दःतस्मात्॥

अचेतन को कारण और आधार कहिनेवाला वेद में कोई शब्द नहीं है। और चेतन को कहिनेवाला वैशेषिक हेतु है तिससे आत्मशब्द का अर्थ प्रधान नही है। श्रुति। यःसर्वज्ञःसर्वविदिति॥

प्राणभृच्च॥ ४॥

न पिछिले सूत्र से इस सूत्र में लिया है। यहां आत्मशब्द जीव का वाची नहीं है सर्वज्ञादि गुणों के असम्भव से यद्यपि प्राणभृत् विज्ञानात्मा चेतन है तथापि उपाधि से परिछिन्न है इससे द्युभ्वादि का आधार नहीं हो सक्ता है और न कि वाय्वादि सूत्रात्मा है॥

भेदव्यपदेशाच्च॥ ५॥

प्राणभृत् मुमुक्ष ज्ञाता है और आत्मशब्द वाच्य ब्रह्मज्ञे-य है इस भेद के उपदेश से ब्रह्म सब का आधार है और न कि प्राणभृत् तमेवैकंजानथआत्मानमित्यादि ॥

प्रकरणात् ॥ ६ ॥

प्रस्तावात् ॥

ईश्वर का प्रकरण है कि हे भगवन् किस एक के जाने से सब जाना जाता है इस उपक्रम से और ब्रह्मवेदी ब्रह्म है इस उपसंहार तक ब्रह्म का प्रकरण है तिससे यहां आत्मा ब्रह्म है और न कि जीव है। श्रुति। कस्मिन्नुविज्ञातेसर्वमिदंविज्ञातं भवतीति। ब्रह्मवेदब्रह्मैवभवतीति। परमात्मा के जाने से सब जाना जाता है न कि केवल प्राणभृत् के जाने से सब जाना जाता है॥

स्थित्यदनाभ्यांच ॥ ७ ॥

द्युभ्वाद्यातन के प्रकरण में स्थिति और भक्षण कहा है। तयोरन्य:पिप्पलमिति। इससे कर्म फल भोग कहा है। अनश्नन्नन्योभिचाकशीति। इससे अन्य ईश्वर उदासीन कहा है। फिर वे ईश्वर और क्षेत्रज्ञ हैं अन्यथा अप्रकृत आकस्मिक असंबद्ध वाक्य और इस मन्त्र के व्याख्यातापैंगीउपनिषत्कारने*सत्व और क्षेत्रज्ञ कहे हैं। फिर सत्वादि उपाधि का अभिमानी प्रतिदेह भिन्नर है तिससे वुह स्थान नहीं हो सक्ता है। और सत्वोपाधि से प्राणभृत् भी घटादि छिद्रवत् औपाधिक है फिर सिद्ध हुआ कि भूम विश्वाधार है। गुहांप्र-

*बुद्धि

विष्टाविति । इस सूत्र से ही यहां अर्थ पूरा हो चुका था फिर प्रपञ्चार्थ यहां कहा है ॥

(भूमाधिकरण ॥ २ ॥)

भूमासंप्रसादादध्युपदेशात् ॥ ८ ॥

संस्कृतमाश्रित्य । वहोर्भावोभूमालक्षणयावहुत्व, गुण की धर्मी । परमात्मैवकुत:सम्यक्प्रसीदत्यस्यामवस्थायामिति । संप्रसाद: सुषुप्ति: तस्यांसंप्रसादावस्थायांस्थित:प्राणोलक्ष्यते संप्रसादात्प्राणादधिउपरिप्राणोपासनं निरस्यव्रह्मरूढमत्यशब्देन-पृथगुपक्रमादित्यर्थ: ॥

प्राण भूमा है या परमात्मा भूमा है सर्वत्र यही बीज है कि किसका उपादन न्याय्य है और किस का हान संशय में प्राणोवाआशायाभूयानिति । इससे प्राण भूमा है । श्रुतंह्येव-मेभगवद्दृशेभ्यस्तरतिशोकमात्मविदितिसोहंभगव:शोचामितं-माभगवांच्छोकस्यपारन्तारयत्विति । इस प्रकरण में परमात्मा भूमा कहा है । तस्मैमृदितकषायायतमस:पारंदर्शयति-भगवान्सनत्कुमार: तम:शोकादि का हेतु अविद्या है। भाषा छान्दोग्य के सतये अध्याय में सनत्कुमार ने नारद को वाक् मन नामादि प्राणांत वहुत तत्वों का उपदेश आगे२ कर अन्ति में प्राणही भूमा कहा था । तिससे जाना जाता है कि प्राण और भूमा का भेद नहीं है तिससे प्राणही भूमा है और प्राणोपासक सत्यवादी है और जो सत्यवादिता है सो ही भूमा है । यह मत कहो । क्योंकि । सत्य वदन में हेतु प्रा-

णापासन था सो श्रुति ने तु शब्द से निवृत्त कर और जो मुख्य सत्यवदनमें ब्रह्म हेतु है उसका सत्य शब्द से पृथक् ग्रहण किया है और जानने के लिये महोपक्रम में परमात्मा कहा है। इससे। तरतिशोकमात्मविदिति। भूमात्वेवविजिज्ञासितव्यइति। भूमानंभगवोविजिज्ञासइति। यत्रनान्यत्पश्यतिनान्यच्छृणोतिनान्यद्विजानातिसभूमा। अथयत्रान्यत्पश्यत्यन्यच्छृणोत्यन्यद्विजानातितदल्पमित्यादि। एषतुवाअतिवदतियःसत्येनातिवदतीति। कोई कोसत्य कहिनेसे सत्य वचन इष्ट है और कोई को, सत्यंज्ञानमनन्तंब्रह्मेति। इस मन्त्र से ब्रह्म इष्ट है सत्य शब्द से॥

श्रुति प्राणाग्निकाजागरण सुषुप्ति मे दिखाती है। प्राणाग्नयएवैतस्मिंपुरेजाग्रतीति सुख भी सुनाती है यदैषदेवःस्वप्नान्नपश्यत्यथयदैतस्मिंच्छरीरेसुखम्भवतीति। अमृत भी प्राण को कहती है। प्राणोवाअमृतमिति। जैसे। चक्र की नाभि में अराधरे हैं। तैसे। प्राण में सब धरा है। यथावाअरानाभौसमर्पिताएवमस्मिन्प्राणेसर्वंसमर्पितमिति। प्राण पिता माता भ्राता स्वसाआचार्य और प्राणही सब का कर्त्ता है तिससे प्राण भूमा है। यह मत कहो। भूमा परमात्मा है।

श्रुति में सत्य पद से परब्रह्म कहा है। सत्यंज्ञानमनन्तंब्रह्मेति। तैसेही बोधित नारद से विज्ञानादि साधनों की परम्परा द्वारा भूमा कहा है। फिर जो प्राणसे अधिवक्तव्य प्रतिज्ञात था वुही भूमा कहा है। इस प्रकरण में प्राण आत्मा नहीं विवक्षित। क्योंकि प्राण मुख्य वृत्ति से आत्मा नहीं हो सक्ता है। परमात्मा के ज्ञान विना और ज्ञानसे शोक नहीं छूटता है। नान्यःपन्थाविद्यतेऽयनायेति। ब्राह्मण प्राण का

स्थान आत्मा को कहता है। आत्मन:प्राण:। प्रकरण की पू
र्ति तक भूमा ही का अनुकर्ष है। सभगव:कस्मिन्प्रतिष्ठि
इतिस्वेमहिम्नीत्यादि॥

धर्मोपपत्तेश्च॥ ९॥

जो धर्म भूमा में सुनते हैं ते परमात्मा में युक्त होते हैं
जैसे, आपही आप देखता सुनता जानता है जो सहज ध
द्वैतके निषेधसे पर में सम्भव हैं और सुषुप्ति में सुखरूप आत्म
ही कहा है। इससे, एषोऽस्यपरमानन्दएतस्यैवानन्दस्यान्य
निभूतानिमात्रामुपजीवन्तीति। सामय सुख के निरास से
ब्रह्मही भूम सुखरूप कहा है अद्वय मत में द्वैत में भूम सुख
वत् ब्रह्म है और जैसे भूमा में दर्शनादि व्यवहार का निषे
ध श्रुति ने किया है तैसेही परमात्मा में भी है। यत्रत्वस्य
सर्वमात्मैवाभूत्तत्केनकम्पश्येदिति। तिससे अद्वैत पर भूमा है

सामय सुख निराकरण कर ब्रह्मही निरामय सुख भू
दिखाती है। यो वैभूमेति यो वैभूमातदमृतमिति। यहां पर
कारण अमृत है विकारों में आपेक्षिक अमृतत्व है अतोन्य
दार्तमिति। सत्यत्व स्वमहिमप्रतिष्ठितत्वसर्वगतत्वसर्वात्मत
जो सुने धर्म परमात्मामें घटते हैं न और में तिससे भूमा प
मात्मा है॥

(अक्षराधिकरण॥ ३॥)

अक्षरमंबरान्तधृते:॥ १०॥

अक्षर वर्ण है या ईश्वर है। यह संशय है यह विषय अ

कार है ॐकार एवेदंसर्वमित्यादि । तिससे अक्षर वर्ण हैं यह मत कहो क्योंकि ब्रह्म की प्रतिपत्तिका साधन ॐकार हैं । तिससे उसका स्तव है तिससे नित्य और व्यापि अक्षर ब्रह्म है। और न कि लोक सिद्ध प्रणवादि वर्ण हैं क्योंकि बृहदारण्य के पचये अध्याय में गाथा है कि याज्ञवल्क्य ने गार्गी से कहा कि अक्षर में ब्रह्मवादी स्थूलाणु ह्रस्वादि विश्व के सब धर्मों का निषेध करते हैं और इस अक्षर में अव्याकृत धरा है और धरादि व्योमान्त का धारक है सन्दंश रीति से अन्य प्राणीका भी धारक है तिससे अक्षर ब्रह्म है । श्रुति । कस्मिन्नुखल्वाकाशओतश्चप्रोतश्चेतिमहोवाचैतद्वैतदक्षरंगार्गिब्राह्मणा अभिवदन्त्यस्थूलमनण्वह्रस्वमिति । एतस्मिन्नुखल्वक्षरेगार्ग्याकाशओतश्चप्रोतश्चेति । अक्षरंब्रह्मकुत:पृथिव्यादिव्योमान्तधारकत्वात् ॥

साचप्रशासनात् ॥ ११ ॥

साचव्योमान्तधृति:पारमेश्वरमेवकर्मकुत:प्रशासनादिति । श्रुति । एतस्यैवाक्षरस्यप्रशासनेगार्गिसूर्याचन्द्रमसौविधृतौतिष्ठतइति । यह धरना घड़े में घी की नाईं प्रधानादि का नहीं सम्भव है किन्तु चेतन को शासन रूप सम्भव है ॥

अन्यभावव्यावृत्तेश्च ॥ १२ ॥

प्रधानादिभ्योभेदाच्च ॥

तद्वाएतदक्षरंगार्ग्यदृष्टंद्रष्टृश्रुतंश्रोत्रमतंमन्तृविज्ञातंविज्ञात्रिति । इससे अदृष्टत्वादि प्रधान में सम्भव हैं और द्रष्टृत्वादि का कहिना सम्भव नहीं है अचेतन से जैसे नान्यदतोस्ति द्रष्टृ इत्यादि न शरीर है उपाधि के निषेध से । जैसे, अवाग-

मन इत्यादि। प्रधानादि जड़वर्ग से शासिता अक्षर भिन्न है तिससे अक्षर ब्रह्म है। द्रष्टृत्वादि अचेतन में नहीं सम्भव है नान्यदतोस्तिद्रष्टृनान्यदतोस्ति श्रोतृनान्यदतो स्तिमंतृनान्यदतोस्तिविज्ञातृ इति। इससे आत्मभेदका प्रतिषेध है सोपाधिक शारीर भी अक्षरका अर्थ नहीं है। अचक्षुष्कमश्रोत्रमवागमन। इससे उपाधिमत्ताका प्रतिषेध है शारीर निरुपाधिक होताही नहीं है तिससे परब्रह्माक्षर है यही निश्चय है॥

(प्रश्नाधिकरण॥ ४ ॥)

ईक्षतिकर्मव्यपदेशात्सः॥ १३॥

परएवायंसम्यग्दर्शनविषयभूतकर्मत्वेनव्यपदिष्टःसएवेह परपुरुषपदाभ्यामभिध्यातव्यः। प्रश्नोपनिषत् में सुना है कि जो ॐ इस अक्षर से पर पुरुष का ध्यान कर्ता है सो साम कमलासन के लोक में पहुंचाया जाता है। इस में ध्येय वस्तु हिरण्यगर्भ नाम अपर ब्रह्म या परब्रह्म है इस संशय अपर ब्रह्म प्राप्त है कमलासन लोक की प्राप्ति फल सुनने इससे कहा कि परब्रह्म धेय है जिस उपासना से ब्रह्मलो प्राप्त उपासक सब जीव समष्टि रूप से और हिरण्यगर्भ से श्रेष्ठ सब प्राणियों के हृदय के ईशान को देखता है। फिर द्रष्टव्य है सो हि परमात्मा है और उसका पर और पुरुष न दो शब्दोंसे कथन है तिससे ब्रह्मही ध्येय है। श्रुति। यः पु नरेतत्त्रिमात्रेणोमित्यनेनैवाक्षरेणपरं पुरुषमभिध्यायीत सते सिसूर्येसम्पन्नःससामभिरुन्नीयतेब्रह्मलोकमिति। सएतस्माज्ज

वघना*त्परात्परंपुरिशयंपुरुषमीचते स कर्त्ता पुरुषं कर्म ईचति-क्रिया ईचदर्शनांकनयोःधातुः । इस में जीव घन शब्द से को-ई ब्रह्मलोक लेते, कोई विषयेन्द्रियों से पर जीव घन लेते हैं जीवों का संघात वहां होने से, कोई मूर्ति जीव लक्षण जीव घन कहिते हैं ॥

एतद्वैसत्यकामपरञ्चापरञ्चब्रह्मयदोंकारस्तस्माद्विद्वानेतेनैवायतनेनैकतरमन्वेति । इस में सगुण निर्गुण ब्रह्मध्यातव्य कहे हैं । सूत्रयोजना ॐकारेणैवाभिध्येयःसपरएवात्मावाक्यशेषेईचणीयत्वात्तरच्चश्रुतिप्रत्यभिज्ञानात्सएवायमिति । कोई ब्रह्म को जीव घन कहते हैं जीव समूह उस में रहने से । इससे परे परमात्मा ईचण कर्म है वही ध्यातव्य है परन्तु पर पुरुष परमात्माही है पुरुषान्नपरंकिंचित्साकाष्ठासापरागतिरितिश्रुतेः । जैसे, सर्प त्वचा से छुटता है तैसे परब्रह्म के ध्यान से सब पाप छुटते हैं । यथापादोदरस्त्वचाविनिर्मुच्यतएवंहवैसपाप्मनाविनिर्मुक्तइत्यादि । परके ध्यान से ब्रह्मलोक देश में परिछिन्न फल कैसे होगा ऐसा होगा कि ॐकार द्वारा पर ध्यान से ब्रह्मलोक फल फिर सम्यग्दर्शनोत्पत्ति इस क्रम से मुक्ति होगी । जीवघनः मूर्तिजीवलक्षणोघनो जीवघनः सैंधवखिल्यवत् यःपरमात्मनो जीवरूप खिल्यभावः उपाधिकृतः परश्चविषयेन्द्रियेभ्यः सोत्रजीवघन इति कोई मत से पहिले है ॥

———*◯*———

(दहराधिकरण ॥ ५ ॥)

———————

*अल्पपिण्डात्

दहर उत्तरेभ्यः ॥ १४ ॥

दह्योमब्रह्मास्त्रिकुतःवाक्यशेषगतहेतुभ्यः ॥

जो दहरमें दहराकाश सुना है सोक्या भूताकाश याविज्ञानात्मा यापरमात्मा है। एकमें उपमानोपमेयभाव अयोग्य है तिससे भूताकाश दहर नहीं है काल्पनिक भेद मानना बिना निर्वाहकी रीति है। आकाश और ब्रह्म पर इन दोसे आकाश शब्द दोनों का वाचक है तोक्या भूताकाश दहर या पर है। जो भूताकाश पर है तो उस में अपहत पाप्मादि गुणों का सम्भव नहीं है। श्रुति। एषआत्माअपहतपाप्माविजरोविमृत्युर्विशोकोविजिघत्सोपिपासःसत्यकामःसत्यसङ्कल्पइत्यादि। और ब्रह्मपुर से क्या जीवब्रह्म है उसका पुर है या परब्रह्म का पुर है। जैसे, राजापुर के एक देश में रहिता है तो भी राजपुर कहाता है तैसेही मन उपाधिवाला जीव है। ब्रह्मपुर से ब्रह्ममुख्य है। श्रुति। सएतस्माज्जीवघनात्परात्परंपुरिशयंपुरुषमीक्षतेसवाअयंपुरुषःसर्वासुपूर्षुपुरिशयइत्यादि ॥

भावार्थ। छांदोग्य के अठये अध्याय में सुना है कि देह ईश्वर की प्राप्ति का स्थान है इससे देह ब्रह्मपुर है फिर पुर में छोटा घरसा देह के बीच हृदय में कमल है उसी में दहराकाश है वह आकाश ब्रह्म इन हेतुओं से जाना गया कि जितना आकाश है उतनाही हृदय में आकाश है तिससे दहर ब्रह्म है और न कि व्योम है इन से यह अर्थ लिया है कि अथयदिदमस्मिन्ब्रह्मपुरेदहरंपुण्डरीकंवेश्मदहरोस्मिन्नंतराकाशस्तस्मिन्यदन्तस्तदन्वेष्टव्यंतद्वावविजिज्ञासितव्यंइत्यादि सब्रूयाद्यावान्वाअयमाकाशस्तावानेषोन्तर्हृदयआकाशउभेस्मिंद्यावापृथिवीअन्तरेवसमाहितेइति। दहराकाश उक्तहेतुओं से ई

श्वर है। तद्यथेहकर्मचितोलोकःक्षीयतएवामुत्रपुण्यचितोलोकः क्षीयते। इससे सब कर्मोंका फल अन्तवाला कहिके फिर दहराकाश का अनन्त फल सूचन करा। अथयइहात्मानमनुविद्यव्रजन्त्येतांश्चसत्यान्कामांस्तेषांसर्वेषुलोकेषुकामचारोभवतीति इन उक्त हेतुओं से परमेश्वर दहराकाश है॥

गतिशब्दाभ्यांतथाहिदृष्टंलिङ्गम् ॥ १५ ॥

उक्त हेतुवोंका प्रपञ्च सुनो सोते पर जीव हृदयके आकाश में जाते हैं यह गति कही है और ब्रह्मलोक यह शब्द कहा है इन से प्रकृत दहर कहके फिर जीवों को दहरप्राप्ति कही है यह अर्थ इनसे लिया है। कि इमाःसर्वाःप्रजाअहरहर्गच्छन्त्यएतंब्रह्मलोकन्नविन्दन्तीति। ब्रह्मलोक पद से ब्रह्मही लोक है यही अर्थ समुझना और न कि ब्रह्म का लोक क्योंकि सर्वगत ब्रह्म के लोक का सम्भव न होने से ब्रह्मलोक सुषुप्ति है न कि पद्मासन का लोक सत्यलोकाख्य कार्य ब्रह्मलोकको जीव मरे विना नहीं जासक्ता है॥

आगे के हेतुसे दहर परमेश्वर कहा था वे उनके प्रपञ्च अब करते हैं सुषुप्ति में सब जीव ब्रह्म में जाते हैं। सतासोम्यतदासम्पन्नोभवतीति। जो षष्ठी समास होतो तो ब्रह्मलोक शब्द कमलासन लोक को कहता यहां तो कर्मधारय समाससे ब्रह्मही लोक कहा है क्योंकि सब सत्यलोकको नहीं पहुचि सक्ते हैं॥

धृतेश्चमहिम्नोऽस्यास्मिन्नुपलब्धेः ॥ १६ ॥

सर्वेश्वरादि गुण और सर्व का धारण ईश्वर में सम्भव है नकि जीव में तिससे ब्रह्म दहर है। महिमा, एषसर्वेश्वरएष-

भूताधिपतिरेषलोकपालइत्यादि । धृति अथयआत्मासमेतुर्वि धृतिरेषांलोकानामसंभेदा*येति ॥

अथयआत्मासमेतुर्विधृतिरेषांलोकानामसम्भे*दायेति ॥

प्रसिद्धेश्च ॥ १७ ॥

रूढेश्च ॥

वेद मे दहरात्मा में आकाश शब्द रूढ है और लोक से व्योममें फिर लोकरूढि वेदरूढि से बाधित है और आकाश नामरूपका निर्वाहक है। इससे, आकाशोवैनामनामरूपयो- र्निर्वहितासर्वाणिहवाइमानिभूतान्याकाशादेवसमुत्पद्यन्त इति

इतरपरामर्शात्सइतिचेन्नासम्भ- वात् ॥ १८ ॥

जीव के चिन्हों से भी दहर को जीव नहीं कहि सक्ते हो जीव परामर्श में । श्रुति । अथयएषसम्प्रसादोस्माच्छरीरात्समु- त्थायपरंज्योतिरुपसम्पद्यस्वेनरूपेणाभिनिष्पद्यतइत्यादि । और जीव में कहीं आकाश शब्द नहीं सुना है तिससे दहर ब्रह्म है । इससे, यआत्मापहतपाप्मेत्यादि यआत्मासमेतुर्विधृतिरि ति जीवोदहरपदवाच्योभवितुमर्हति कुत:जीवपरामर्शात् नेदं समीचीनंकुतोयत:जीवोनदहरपदवाच्योभवितुमर्हतिअपहतपा प्मत्वादिगुणशून्यत्वादिति ॥

यदिएषआत्मापहतपाप्मेत्यादि । वाक्य शेष करके ईशका ग्रहण करोगे तो । इतरस्य । जीव का भी वाक्य शेष से प- रामर्श होगा । जैसे । अथयएषसंप्रसादोस्माच्छरीरात्समुत्थाय

*असङ्करा्य ॥

परंज्योतिरूपसंपद्यस्वेनरूपेणाभिनिष्पद्यतेसउत्तमपुरुष इत्यादि एषआत्मेतिहोवाचेति ॥

——*○*——

(अर्चिपुरुषाधिकरण ॥ ६ ॥)

उत्तराच्चेदाविर्भावस्वरूपस्तु ॥ १९ ॥

उत्तरवाक्यात् तुशब्दोनार्थे । कोई पारमार्थिक जैवरूप मानते हैं । दहर विद्या के आगे प्रजापति विद्या में इन्द्रविरोचन प्रजापति के सम्बाद से सुना है कि जो नेत्र में पुरुष दिखाता है सो जीव है और उसकी उपाधि छूटनेसे उस में अमृतादि गुण भी हो सक्ते हैं सो नहीं है क्योंकि प्रजापति वाक्य में तात्पर्य से ब्रह्म स्वरूप कहा है और न कि संसारी स्वरूप । जैसे । ब्रह्मदशा के नहीं प्रगट होने से जाग्रत्स्वप्न सुषुप्तिमान्संसारी कहाता है तैसे ही ब्रह्मदशा प्रकट होने से अपहत पाप्मादिमान् उत्तम पुरुषादि शब्दोंसे कहा है यह निर्दोष है । श्रुति । यएषोचिणिपुरुषोदृश्यतेएषआत्मेतिहोवाचेत्यादि ॥

यआत्मापहतपाप्मा है वही ढूढ़न जानन योग्य है । फिर यएषोचिणिपुरुषोदृश्यतेसआत्मा एतंत्वेवतेभूयोनुव्याख्यास्यामीति यएषस्वप्नेमहीयमानश्चरत्येषआत्मातद्यत्रैतत्सुप्तः समस्तःप्रसन्नःस्वप्नंनविजानात्येषआत्मा । इनसे जीवही कहा है अवस्थाओं के भेद से । एतदमृतमभयमेतद्ब्रह्मेति । अर्थ । उक्त वाक्यों से जीवमें ईश धर्मों का सम्भव है । तिससे । दहरोस्मिन्नन्तराकाश इस वाक्य से जीव कहा है यही कोई कहता है उससे कहा

जाता है कि आविभूतस्वरूपम्स्विति तु शब्द पक्ष व्यावृत्ति के लिये है उत्तर वाक्य से भी यहां जीव की शङ्का का सम्भव नहीं है। आविर्भतंस्वरूपमस्य त्याविर्भतस्वरूपः। अक्षिपुरुष उदशराव में दिखाता है यह शरीरात्मवाद है जीवका पारमार्थिक स्वरूप तत्वमसीत्यादि से है और उपाधि कल्पित नहीं है जौलौ स्थाणु में पुरुष बुद्धि द्वैत लक्षण अविद्याको न दूर करे है तौ लौ कूटस्थनित्य दृक् स्वरूप आत्मा को न जानेगा तावतहो जीव की जीवत्व है। अहंब्रह्मास्मीति। श्रुति सिखाती है कि तू देह इन्द्रिय मनबुद्धिका संघात और संसारी नहीं है किन्तु सत्य चैतन्यमात्र रूप है नासित्वंदेहेन्द्रियमनोबुद्धिसङ्घातोनासिसंसारीकिन्तर्हितद्यत्सत्यंमआत्माचैतन्यमात्रस्वरूपस्तत्त्वमसीति। तब तो नित्यादि स्वरूप आत्मा को जानिके देहाभिमान छाड़ कूटस्थ होता है। सयोहवैतत्परमंब्रह्मवेदब्रह्मैवभवति। वही जीव का शुद्ध रूप है। हेमादिक्षारादि से लोक में शुद्ध होते हैं यह कूटस्थ आपही आप कैसे शुद्ध होता है और नक्षत्रादि सौर से दिन में छिपे रात्रि को स्वरूप से प्रकट होते हैं। तैसे। आत्मचैतन्यनित्यज्योति का किसी से अभिभव संभव नहीं है असङ्ग से व्योम सम है जैसे। शुभ्र स्फटिक में शौक्ल्य विवेक से और उपाधि से नीलिमादि है जब विवेक से नीलादि अलग जाने तब स्फटिक रूप से निष्पन्न हुआ। अशरीर मन्त्र वर्ण से। अशरीरंशरीरेष्विति। शरीरस्थोपिकौंतेय। अनाविर्भूत स्वरूप भी विवेक विज्ञान के अभाव से विवेक विज्ञान से आविर्भूत स्वरूप कहते हैं। नहिखल्वयमेवंसंप्रत्यात्मानंजानात्ययमहमस्मीतिनो एवेमानिभूतानीति। यह सुषुप्ति में विज्ञान के अभाव को

दिखाती है विज्ञाता का निषेध नहीं करती है। विनाशमे-वापीतोभवतिनहिविज्ञातुर्विज्ञातेर्विपरिलोपोविद्यतेऽविनाशित्वादिति । श्रुति । एकएवपरमेश्वरःकूटस्थोनित्योविज्ञानधातुरविद्ययामायया मायाविवदनेकधाविभाव्यतेनान्योविज्ञानधातुरस्तीति ॥

अन्यार्थश्चपरामर्शः ॥ २० ॥

जीवस्यब्रह्मबोधार्थंउपन्यासइत्यर्थः ॥

जो दहरवाक्य के शेष में जीव का परामर्श दिखाया था अथयएषसंप्रसादइत्यादि । सो जीव परामर्शार्थ है और न कि जीव स्वरूप पर्यवसायी है किन्तु परमेश्वर स्वरूप पर्यवसायी है। संप्रसाद शब्द वाच्य जीव जागरितव्यवहार में देह पञ्जर का अध्यक्ष होके जागरित बासनादि सेवता है और स्वप्न में नाड़ीचर होके अनुभव कर थका शरण चाहता है फिर इन दो देह के अभिमानों से उठके सुषुप्ति में आकाश शब्दवाच्य पर ज्योतिर्ब्रह्मको प्राप्त होके फिर जीव ज्ञान छाड़ । परंज्योतिः रूप निष्पन्न होता है इससे अपहतपाप्मादि गुणो उपास्य है इस लिये जीव परामर्श है । भावार्थ । जीव को ब्रह्म जतानेके लिये सम्प्रसन्न कहा है । इससे, यएषसम्प्रसादइति ॥

अल्पश्रुतेरितिचेत्तदुक्तम् ॥ २१ ॥

जीव आराग्रसम है तिससे उस में अल्पत्व सम्भव है सो नहीं है किन्तु श्रुति ने ही अल्पत्व दूर करी है । श्रुति । यावान्वाअयमाकाशस्तावानेषोहृदयआकाशइति । भावार्थ । दहर छोटा है और ब्रह्म बड़ा है तो बड़े के ग्रहण से छोटा छुटि जावेगा सो नहीं है किन्तु उपासना के लिये बालक के

हृदय के तुल्य कहा है अर्भकौकस्त्वादिति इस सूत्र में। इससे, दहरोस्मिन्नंतराकाशइति। यह अधिकरण भी दहर के भीतरही लिखने योग्य था। व्यास जी को॥

(अनुकृत्यधिकरण ॥ ७ ॥)

अनुकृतेस्तस्यच ॥ २२ ॥

तस्यच इससे श्लोक का चौथा पाद सूचित है॥

नतत्रसूर्योभातिनचन्द्रतारकंनेमाविद्युतोभांतिकुतोयमग्निःतमेवभांतमनुभातिसर्वंतस्यभासासर्वमिदंविभातीति। जिसके भान से सबका भान है और जिसके अभान से सब का भान नहीं है वह क्या तेजोधातु और प्राज्ञआत्मा है। तैजस चन्द्र तारकादि तैजस भाभस्कर से भासमानदिनमेंनहीं भासते यह प्रकट है तैसेही सूर्य सहित चन्द्र तारकादि जिस में नहीं भासते हैं सोपि तैजसही है अनुकरण समान स्वभाववाले में देखा है। जैसे। जानेवाले के पीछे जानेवाले को अनुजानेवाला कहते हैं तिससे तेजो धातु है यह मत कहो क्योंकि प्राज्ञआत्माही है कैसे अनुकृतेरनुकरणमनुकृतिः अनुमान प्राज्ञ के मानने से बनाता है। भारूपःसत्यसङ्कल्प इत्यादि श्रुति। और कोई तेजो धातु नहीं जिसके भान से सूर्यादि का अनुभान होवे। दीप दीप के पीछे नहीं भासता है भिन्न स्वभाव में भी अनुकरण है। जैसे। तप्तोयःपिंडअग्न्यानुकृति अग्निदहंतके अनुदहती है भौम रज वायु वहन्तअनुवहती है। अन्यच्च। तद्देवाज्योतिषांज्योतिरायुर्होपासतेमृत

मिति । इससे भी प्राप्त कहा है तेजस्तेजोंतर का प्रतिघातक है । जैसे सूर्यादि की ज्योति सत्तारूपजाति की अभिव्यक्तिका निमित्त है । तैसे । इस सब के नाम रूप क्रिया कारक फल जात की अभिव्यक्तिका निमित्त ब्रह्म ज्योति: सत्ता है । फिर हिरण्मयेपरेकोशेविरजंब्रह्मनिष्कलं तच्छुभ्रंज्योतिषांज्योतिस्तद्यदात्मविदोविदुरिति यतोयदुपलभ्यतेतत्सर्वंब्रह्मणैवज्योतिषोपलभ्यते ब्रह्मतुनान्येनज्योतिषोपलभ्यतेस्वयंज्योतिस्त्वात् येनसूर्यादयस्तस्मिन्भायुः ब्रह्मह्यन्यह्यनक्तिनतुब्रह्मान्येनव्यज्यते आत्मनैवायंज्योतिषास्ते अत्तरह्मोनाहिरत्ह्यतदृति ॥

अपिचस्मर्यते ॥ २३ ॥

नतद्भासयतेसूर्योनशशांकोनपावक इत्यादि स्मृतियोंमें उक्त श्रुतियों का अर्थ दिखाया है तिससे तत्पदार्थ ब्रह्महै ॥

——*—*——

(अङ्गुष्ठमात्राधिकरण ॥ ८ ॥)

——————

शब्दादेवप्रमित: ॥ २४ ॥

कठवल्ली से सुना है कि अंगुठा के समान देह के बीच पुरुष है सो क्या विज्ञानात्मा या परमात्मा है परमात्माअनन्त है तिससे अंगुठामात्र परिमाण नहीं हो सक्ता है और औपाधिक जीव का हो सक्ता है सो नहीं है क्योंकि भूत भावी सब विश्व का ईशान कहिने से ब्रह्म है । इससे । अंगुष्ठमात्र:पुरुषोमध्यआत्मनितिष्ठति तथांगुष्ठमात्र:पुरुषोज्योतिरिव धूमक इत्यादि अन्यत्रधर्मादन्यत्राधर्मादन्यत्रास्मात्कृत कृता-

न्यत्रभूताच्चभव्याच्चयत्तत्पश्यसितद्वदेतिशब्दादेवाभिधानश्रुतेरेवे
शानःपरमेश्वरोस्ति ॥

हृद्यपेक्षयातुमनुष्याधिकारत्वात् २५

सर्वगत ईश का हृदय में स्थान की अपेक्षा से अं-
गुष्ठमात्र कहा है। जैसे। वंश पर्व की अपेक्षा से गगन वि-
तोभर कहा जाता है असुमा तो अतिमात्र ईश अंगुष्ठ मात्र
नहीं हो सकता है ईशान पद से प्रभु को छोड़ और का
ग्रहण योग्य नहीं है शङ्का हर एक प्राणी के हृदय एकसे नहीं
हैं इससे अंगुष्ठमात्र नहीं बनता है। उत्तर, मनुष्याधिकार-
त्वादिति। शास्त्र समान है तो भी उसके अधिकारी मनु-
ष्यही हैं। फिर। शक्तअर्थी अपर्युदस्त उपनीत। इन तीनसे
तीन वर्ण का यज्ञमें अधिकार है शूद्र को नहीं है। शूद्रोयज्ञे
नवक्लृप्त इति। पर्युदाससे। पश्वादि को शास्त्रादि सामग्री न
होने से इन्द्रादि देवों को इन्द्र के निमित्त द्रव्य त्याग के अ-
योग से ऋषियों को आर्षेय वर्ण में ऋष्यन्तर के अभाव से।
मुमुक्षु को चित्त शुद्धिके लिये शमस्नानादि में अधिकार है न
वैदिक कर्म कामोंमें शुद्ध चित्तों को मुक्ति के लिये उपनिषद
के सुन्ने में अधिकार है न वैदिक कर्म में। सुश्रुत से। शूद्र
को भी उपनयनाध्ययन प्राप्त है फिर स्वर्ग सबको इष्ट है तो
मनुष्य जातिको वैदिक कर्ममें अधिकार है इस शङ्का के नि
वर्तन में। वसंतेब्राह्मणोग्नीनादधीतग्रीष्मे राजन्यःशरदिवै
श्यः। इससे तीन को पाया। जो मनुष्यों के लिये शास्त्र है
तो उनके हृदय की अपेक्षा से अंगुष्ठमात्र परमात्माकहा है
जैसे। स आत्मातत्वमसि। इससे संसारी सत् को ब्रह्म कहा
तैसे संसारी सत् अंगुष्ठमात्र को ब्रह्म कहा है। वेदान्तवाक्य

दो प्रकार के हैं कोई परमात्मस्वरूप के निरूपक हैं कोई विज्ञानात्मा के साथ ऐक्य के बोधक हैं तो कोई अंगुष्ठमात्र नहीं है। अंगुष्ठमात्रःपुरुषोन्तरात्मासदाजनानांहृदयेसंनिविष्टः तंस्वाच्छरीरात्प्रवृहेत्मुंजादिवेषीकांधैर्येणतंविद्याच्छुक्रमम्रृतमिति ॥

——*◯*——

(देवताधिकरण ॥ ८ ॥)

तदुपर्य्यपिबादरायणःसम्भवात् ॥ २६ ॥

बाढं। शास्त्र मनुष्यों का है परन्तु मनुष्यों का ही नहीं है। क्योंकि ब्रह्मविज्ञान में नियम नहीं है मनुष्यों से ऊपर देवादि को भी अधिकार है क्योंकि अर्थि आदि अधिकार कारण उनको भी सम्भव हैं विषय का सुख सामय सातिशय अनित्य देख मोक्ष सुख निरामय निरतिशय नित्य जान मुक्ति के अर्थी देव हैं मन्त्र अर्थ वादों से विग्रहवाले हैं तिससे सामर्थ्य भी है उपनयन वेद पढ़ने के लिये है और उनको वेद स्वयंप्रकाशित है। तिससे निषेध भी नहीं है। एकशतंहवैवर्षाणिमघवाप्रजापतौब्रह्मचर्यमुवास भृगुर्वैवारुणिःवरुणांपितरमुपससारअधीहिभगवोब्रह्मेत्यादि। जो कर्ममें अनधिकार के कारण कहे थे उनका विद्या में प्रयोजनहो है। जैसे। इन्द्र को इन्द्र की पूजा के लिये दूसरा इन्द्र नहीं और ऋषि को वरण के लिये दूसरा ऋषि नहीं है। जैसे। भृगु को दूसरा सगोत्र भृगु वरण के लिये नहीं है। विद्या में इन्द्रादि को इन्द्रादि के लिये कछुकर्तव्य नहीं है। तिससे देवादि को ब्रह्म विद्या में अधिकार है इसका कोई बाधक न

हीं है देवों के अंगुष्ठमात्र में कछु विरोध नहीं है ॥

विरोधःकर्मणीतिचेन्नानेकप्रतिपत्ते-र्दर्शनात् ॥ २७ ॥

जो रूपवान देव मानों तो ऋत्विक् की नाई इष्टयकर्म का अङ्ग होना चाहिये तो विरोध है। स्वरूप से इन्द्रादि का यज्ञ में अङ्ग भाव न देखा न सम्भव है बहुत यज्ञों में युगपत् एक इन्द्र के स्वरूप की अनुपपत्ति है यह विरोध नहीं है। क्योंकि एक देव के युगपत् अनेक स्वरूप का संभव है। वैश्वदेव शस्त्र में शस्यमान देव कितने है यह शाकल्यने याज्ञवल्क्य से पूछा तो उसने उत्तर दिया कि निविन्नामशस्य मान देवों की संख्यावाचक शब्द तीन सौ साठि तीन सहस्र संख्या कही है और संख्येय स्वरूप की पृश्न में महिमा। नोविभूतयःसर्वेदेवाएषांत्रयस्त्रिंशद्देवानांत्रतोष्टौवसवःएकादशरुद्राद्वादशादित्याइन्द्रःप्रजापतिश्चेतित्रयस्त्रिंशदेवदेवास्तेपिषसांत्रग्निपृथिवीवायून्तरिक्षादित्यदिवांमहिमानस्तेपिषट्सुदेवेषुग्रन्तर्भवंतीति षट्देवास्त्रिषुलोकेषु त्रयश्च द्वयोरन्नप्राणयोर्द्वौचैकस्मिन्प्राणे हिरण्यगर्भे अन्तर्भवत इति दर्शितमित्यर्थः। कतिदेवाइतिपृष्टेत्रयश्चत्रीचशतात्रयश्चत्रीचसहस्रेतिचनिरूच्यकतमेते। इस पृश्न में। महिमानएवैषामेतेत्रयस्त्रिंशत्त्वेवदेवाः। यह कहती श्रुति एक एक देव के युगपत् बहुरूप के दिखाती है फिर त्रयस्त्रिंशतों को भी षट् आदिमेंअंतर्भावक्रम से कर फिर कतम एक देवइति प्राणइति। सब देवों के प्राणैक रूपता दिखाती है फिर उसी प्राण को युगपत् अनेक रूप दिखाती है। अणिमाद्यैश्वर्यों से योगियों के युगपत्

अनेक शरीर स्मृतियों ने दिखाये हैं। आत्मनोवैशरीराणीति। फिर जो योगी को ऐसी दशा होती है तो आजानसिद्ध देवों का क्या कहिनो चाहिये। एक एक देव अपने को बहुत रूप बनाके युगपत् बहुत यागों में अङ्ग होगा। उसको कोई न देखेगा अन्तर्धान से। कहीं एक भी विग्रहवान् बहुत का युगपत् अङ्ग नहीं हो सकता है। जैसे। एक सेवक बहुत प्रभुओं की सेवा नहीं कर सक्ता है या बहुत घरों में एक युगपत् नहीं खा सक्ता है कहीं एक भी विग्रहवान् बहुत का अङ्ग हो सक्ता है। जैसे। एक राजा या मूर्ति बहुत नमस्कार कर्त्ताओं से नमस्कार किया जाता है। तैसेही विग्रहवती एक देवता को उद्देशकर बहुत अपने२ द्रव्य को युगपत् फेंकते हैं। इससे विग्रहवती देवता है तो भी कुछ कर्म में विरोध नहीं है॥

शब्दइतिचेन्नातःप्रभवात्प्रत्यक्षानुमानाभ्यां॥ २८॥

देही देव मानेसे कर्ममें कछु विरोध नहीं तो भी। शब्दे। अर्थात् वेद में है क्योंकि देहादि के योग से मनुष्य सम जनन मरणादिवाला अनित्य होगा। तो नित्य शब्द का नित्यार्थ के संग नित्य सम्बन्ध से वैदिक शब्द प्रमाण ठहिरा था उसके सङ्ग विरोध होगा। यह नहीं क्योंकि अतःप्रभवात्। वैदिकशब्दों से देवादि सब जग होता है। कैसे वसुरुद्र आदित्य विश्वेदेव मरुत जे अर्थ जन्म हेतु से अनित्य हैं तो इनके वाचक वैदिक शब्द भी अनित्य हैं यह लोक सिद्ध है। जैसे जब चैत्र के पुत्र जन्मा तब उस का नाम मैत्र धरा जाताहै तैसे वैदिकवस्वादिनामधरे गयेहैं द्रव्य गुणकर्मों को

व्यक्ति जन्मती है न आकृति फिर आकृति के सङ्ग शब्द का सम्बन्ध है न व्यक्ति के सङ्ग।

क्योंकि व्यक्तिअनन्त है तिससेसम्बन्धकीसिद्धिसम्भव नहीं है। व्यक्तिजन्म में आकृति का जन्म नहीं। तिससे वुह नित्य है इससेकछु बिरोधनहींहै देवोंकीआकृतिमन्त्रार्थवादसेप्रसिद्ध है और सेनापति के समान इन्द्रादि शब्द स्थान विशेष के वाचक हैं तो जो उस स्थान पर पहुंचा वही इन्द्र है। कैसे जाना कि शब्द से जग जन्मा है। प्रत्यक्षानुमानाभ्यां श्रुतिस्मृतिभ्यां श्रुति स्वतः प्रमाण है स्मृति अपनी प्रामाण्य के लिये श्रुति की अपेक्षा करती है। वे दोनों शब्द से सृष्टि बताती हैं॥ एतदूतिवै। यह मन्त्र वर्ण है अन्यकुन्दोग ब्राह्मण है प्रजापतिर्देवानसृजतासृग्रमितिमनुष्यानिन्दवइतिपितृंस्तिरःपवित्रमितिग्रहानाशवइतिस्तोत्रं विश्वानीतिशस्त्रं अभिसौभगेत्यन्या प्रजाइति श्रुतिः समनसावाचम्मिथुनंसमभवदित्यादि असृग्रं रुधिर मनुष्य इन्दु पितर तिरः पवित्र: ग्रहा आशु गीतिरूप विश्वः शस्त्रा सौभग सर्वत्रसौभाग्ययुक्त जो स्मारक हैं समनसावाचंत्रयींमिथुनंसमभवत्। मन बाणी का मिथुन कर्त्ता था मन से त्रयी प्रकाशित सृष्टि को देखता था। स्मृति अनादिनिधनानित्यावागुत्सृष्टास्वयंभुवा आदौ वेदमयीदिव्यायतःसर्वाःप्रवृत्तयइति। यह सम्प्रदाय प्रवर्त्तक देखा जो अर्थ किया चाहते उसका वाचक शब्द पहिले स्मरण कर फिर उस अर्थ को करते हैं यह तो हम तुम सबको प्रसिद्ध है तैसेही प्रजापत्ति के मन में सृष्टि से पूर्व वैदिक शब्द प्रगट हो गये पीछे से उनके अर्थानुसार सृष्टि सृजी है। श्रुति। सभूरितिव्याहरन् सभूमिमसृजतेत्यादि। कैसे शब्द से सृष्टि सृजी है स्फोट से

वा वर्ण से। वर्ण और ध्वनि से स्फोट अर्थात् अर्थबोधक शब्द पृथग् है उससे जग रची। स्फोटही शब्द का अर्थ है। नेव-र्णाएवतुशब्दइति भगवानुपवर्षः—

ते प्रत्यभिज्ञा से नित्य हैं दो गोशब्द कहे हैं नकि दो गोशब्द हैं उदात्तादि भेद ध्वनि से हैं नकि वर्ण से इससे उदात्तादि सालम्बन हैं अन्यथा निरालम्बन होवेंगे गबुद्धि समस्तवर्ण विषयक है अनेक एक बुद्धि विषय है जैसे सेना बन पंक्ति दशशतादि। यदि समस्त वर्ण एक बुद्धिविषयपद होवे तो जारा राजा कपि पिक इन में पदविशेष की प्रतिपत्ति न हो। चींटी की पंक्ति से वर्णा में भी पदबुद्धि होती है वर्णवादी की कल्पना लघु है स्फोटवादी की दृष्टहान अदृष्टकल्पना गुरु है तिससे नित्य शब्द से देवादिव्यक्तियों का प्रभव है यह अविरुद्ध है॥ भगवानुपवर्ष तो वर्णोंही को शब्द मानते हैं अतिरिक्त उनसे अनुभवमें न आनेसे। ते वर्ण नित्य है जैसे मूंड़ पीछे वेही केश हैं इस प्रत्यभिज्ञा से। अनेक में एक बुद्धि। जैसे पंक्ति बन दशशतसहस्रइत्यादि। तैसे वर्णोंमें है। जैसे क्रमानुरोधिनी पिपीला पंक्ति एक योजनिका है। तैसे वर्ण भी हैं कपिपिकइत्यादी। स्फोट में गौरव वर्ण में लाघव है वर्ण स्फोटके व्यञ्जक स्फोट अर्थका व्यञ्जक है यह गौरव है। ध्वनि पक्ष में भी यही है वर्ण में नहीं है वर्ण पक्ष में सृष्टि होना अनहोना है जात नष्ट होनेसे। तिससे नित्य शब्द से देवादि देह का प्रभव है यह अविरुद्ध है॥

अतएवचनित्यत्वम् ॥ २९ ॥

नियताकृतेर्देवादेर्जगतोवेदशब्दप्रभवत्वात्वेदशब्देनित्यत्वम पप्रत्येतव्यमिति सोऽर्थः यज्ञेनवाचःपदवीमायन्तामन्ववि

न्दनृषिषुप्रविष्टामिति ॥

याज्ञिकों ने पूर्व सुकृत से ऋषियों में स्थित वेद भाषा को पाया था यह मन्त्र वर्णार्थ है वेद ब्रह्मवत् कूटस्थ नित्य नहीं है और न कि मृदादिवत् परिणामी नित्य है किन्तु पारिभाषिक नित्य है ॥

समाननामरूपत्वाच्चावृत्तावप्यविरोधोदर्शनात्स्मृतेश्च ॥ ३० ॥

संसार अनादि है सब व्यवहार स्वापप्रबोधवत् हैं स्वाप में व्यवहार पुरुषांतर में रहिते हैं वे प्रबोधमें होते हैं महाप्रलय में सब व्यवहार के लोप से जन्मान्तरवत् कल्पान्तर में अनुसन्धान अनुचित है ईश्वर को अनुग्रह से मान लो । जैसे । प्राकृत जनों में ज्ञानैश्वर्यादि की तारतम्य है । तैसे देवादि में है लीन भी शक्ति अवशेष होती है अन्यथा आकस्मिक हो जो चराचर को देह के समान देवादि देह भी सन्तत जन्म मरण से अभिधान अभिधेय अभिधातृ अभिधीतिका व्यवहार के अनाश से सम्बन्ध नित्य द्वारा शब्द में विरोध दूर हो सका है जब तो तीनों लोक नाम रूप छाड़ निर्लेप नाश हुये फिर न अन्य होते हैं तब विरोध न दूर हुआ इससे समान नाम रूपत्वादि कहे हैं संसार अनादि है स्वप्न प्रबोध सम प्रलय प्रभव है स्वाप और जागर प्रलय और प्रभव श्रुति से सुने हैं। यदासुप्तःस्वप्नमित्यादितदेनंवाक्सर्वैर्नामभिःसहाप्येतिचक्षुःसर्वैःरूपैःसहाप्येतिश्रोत्रंसर्वैःशब्दैस्सहाप्येतिमनःसर्वैर्ध्यानैःसहाप्येतिसयदाप्रतिबुध्यतेयथाग्नेर्ज्वलतःसर्वादिशोविस्फुलिङ्गाविप्रतिष्ठरन्नेवमेवैतस्मादात्मनःसर्वेप्राणायथायतनंविप्रतिष्ठंतेप्राणेभ्योदेवादेवेभ्योलोकाइति । महाप्रलय में तो ईश्वर की कृपा से

हिरण्यगर्भादि की कल्पान्त का व्यवहार जान पड़ता है प्राकृतों को जन्मान्तर का अनुसंधान नहीं देखते हैं वैसे उनको भी न होता होगा यह मत कहो। स्त्रम्बनरादि में प्राण समान है तो भी ज्ञानका भेद है। तैसे हिरण्यगर्भादिमें ज्ञानैश्वर्यादि की अभिव्यक्ति भूयसी है। श्रुति। योब्रह्माणंविदधातिपूर्वं योवैवेदांश्चप्रहिणोतितस्मैतं हदेवमात्मबुद्धिप्रकाशम्मुमुक्षुर्वैशरणमहं प्रपद्ये इति। जिसने कल्पादि में ब्रह्मा को बनाके उसकी बुद्धि में वेदों को आविर्भाव किया तिस देव को जो महावाक्य से बुद्धि में प्रकाशमान है उस निःश्रेयसरूप को हम पहुंचे इत्यर्थः। स्मरन्तिचशौनकादयोमधुच्छन्दःप्रभृतिभिऋषिभिर्दाशतय्योदृष्टाः इति। अर्थ। ऋग्वेद के दश मण्डल हैं उनकी ऋचः दाशतय्यः कहाती हैं। प्रतिवेदं चैवमेवकाण्डर्ष्यादयः स्मर्यंते और वेदों में भी काण्डसूक्त मन्त्रों के दृष्टा बोधायनादिने कहे हैं। श्रुति। योहवाअविदितार्षेयच्छन्दोदैवताब्राह्मणेन मन्त्रेणयाजयतिवाध्यापयतिवास्थाणुंवर्च्छतिगर्त्तंवाप्रतिपद्यतेतस्मादेतानिमंत्रेमंत्रेविद्यादिति आर्षेय ऋषियोग गायत्र्यादि अग्न्यादि विनियोगय त्तानि स्मृति तेषांये हिंसा॥ जो लीन होता है उस के संस्कार शेष रहते हैं वुही जन्मता है यह न मानो तो आकस्मिकजगजन्मगा। श्रुति। स्वोपादानेलीनकार्यरूपाशक्तिस्तुमहांन्यग्रोधस्तिष्ठतिश्रद्धत्स्वसौम्येति। इससे अविद्या तत्कार्य से अन्य शक्ति नहीं है वही संस्कार है आत्माविद्येवनःशक्तिरितिसिद्धांतःसमाननामरूपत्वाच्चावृत्तावपि महासर्गमहाप्रलयलक्षणायांजगतोभ्युपगम्यमानायांनकश्चिच्छब्दप्रामाण्यादिविरोधः सूर्याचन्द्रमसौधातायथापूर्वमकल्पयत् दिवंचपृथिवींचांतरि

त्समयोरुखरिति । जैसे । सूर्यादि पहिले भ्रमते थे । तैसे । अब भी भ्रमते हैं अग्निर्वाअकामयत अन्नादोदेवानांस्यामितिसएत मग्नयेकृत्तिकाभ्यःपुरोडाशमष्टाकपालंनिरवपदिति । अर्थ । भावीइष्टि से यजमानने अग्नि अन्नाद अग्नि मैं हूं इस कामना से कृत्तिका नक्षत्राभिमानी देवताग्नि के लिये आठ कपाल में हवि: पचनीय धरा था इस नक्षत्रेष्टि में जोअग्निनिरवपत और जिसके लिये निरवपत् है तो दोनोंके समान नाम रूप हैं ऐसी श्रुति उदाहरण यहां है ॥

मध्वादिष्वसम्भवादनधिकारंजैमिनि: ॥ ३१ ॥

जो अधिकार देवोंके ब्रह्म विद्यामें माना था उसको जैमिनिनहींमानताहैक्योंकि मध्वादिष्वसंभवात् कैसेअसौवाव-आदित्योमधु मनुष्यतोआदित्यमेंमधुकाअध्यासकरउपासनाकरसक्तेहैं औरदेवनहींकरसक्ता क्योंकिआदित्यकैसेऔरआदित्यकोउपासनाकरसक्ता है पुनश्चादित्यव्यपाश्रयाणिपञ्चरोहितादीन्यमृतानीत्युपक्रम्यवसवोरुद्राआदित्यामरुत:साध्याश्चपञ्चदेवगणा:क्रमसेतत्तदमृतमुपजीवन्तीत्युपदिश्यसयएतदेवममृतंवेदवसूनामेवैकोभूत्वाग्निनैवमुखेनैतदेवामृतंदृष्ट्वातृप्यन्तीत्यादि जैव स्वादिकोअमृतउपासतेहैं तेउनकीमहिमापातेहैं औरवस्वादिकोनऔरअमृतापजीवीवस्वादिकोजानेऔरकिसअन्यवस्वादिकीमहिमाकोपावे आदिपदार्थ तथाग्नि:पादोवायु:पाद:आदित्य:पादोदिश:पादोवायुर्वासम्वर्गआदित्योब्रह्मेत्यादेशइत्यादितथेमावेवगोतमभरद्वाजावयमेवगोतमोयंभरद्वाजेत्यादि ॥

ज्योतिषिभावाच्च ॥ ३२ ॥

जोज्योतिर्मण्डलद्युस्थानरातिदिनचलतादिखाताहै जग-
कोप्रकाशताहै उसमेंसूर्यचन्द्रशुक्रज्यादिशब्दलोकप्रसिद्धिऔर-
वाक्यशेषसेकहेजातेहैं नज्योतिर्मण्डलकोहृदयादिवाविग्रहचे-
तनताअर्थत्वादिकायोगकहिसक्तेहैं मृदादिकेतुल्यसबअचेतन-
हैं अग्निवायुभूमिजलादिशब्दअचेतनकेवाचकहैं लोकस्वतन्त्रप्र-
माणनहीं अविचारितविशेषप्रमाणप्रत्यक्षादिसेअर्थलोकमेंप्रसि-
द्धहै इतिहासपुराणभीमनुष्यरचितहैं वेभीअपनेमूलश्रुतिकोचा
हतेहैं अर्थवादभीविधिकेसङ्गस्तुतिनिन्दाकेलियेहैं मन्त्रभीअनु-
ष्ठानकालमेंअनुष्ठेयअर्थकेस्मरणकरानेवालेहैं वज्रहस्त:पुरन्दर:स
त्व सोरो ऽरोदीत्यर्थवाद:उक्तदेवोंकोदेहोजतानेमेंपृथग्प्रमाणनहीहैं
पार्थगर्थ्यसेविग्रहहो।हविषां भोगऐश्वर्यं चप्रसन्नताफलप्रदानमित्ये-
तत्पञ्चकं विग्रहादिकमिति तिससेदेवादिकोअधिकारनहीं ॥

भावन्तुवादरायणोस्तिहि ॥ ३३ ॥

तुनापूर्वपक्षोवार्यते ॥

सर्वत्रसबकोअधिकारनहींतोभीजहांजिसकोअधिकारहै त
हांतिसकोउसकीनिवृत्तिनहींहोसक्तीहै जैसेराजसूयादिमेंब्राह्म
णोंकोअधिकारनहीहै तोक्यादर्शादिवाजपेयादिमेंभीउसकोअ
धिकारनहींहै क्योंकिकर्मएकहीहै तैसेमधुविद्यादिमेंदेवोंकोअ
धिकारनहोनेपरभीब्रह्मविद्यामेंउनकोअधिकारहै देवोंकोब्रह्म
विद्याअधिकारसूचकवेदहै तद्योय:इत्यादिविद्यमानवादप्रती-
तिशरणोंसेआश्रयणीयनकिगुणवादआदित्यादिशब्दचेतनावन्त
ऐश्वर्यादियुक्तदेवकोकहतेहैं सुब्रह्मण्यार्थवादमें मेधातिथेर्मेषेति

मेधातिथिंह्वाएकायनमिन्द्रोमेषोभूत्वाजहारेति ज्योतिरादि-
भीयथेष्टएश्वर्य्ययोगसेअनेकविग्रहग्रहणकीसामर्थ्यरखतेहैं मृदा-
दिकेचेतनअधिष्ठाताहैं मृदब्रवीदापोब्रुवन्निति ज्योतिरादिभी-
भूतधातुअचेतनऔरचेतनताअधिष्ठातादेवतासेहैं चित्तमेंआरो
पकेलियेविग्रहहै यस्यैदेवतायैहविर्गृहीतंस्यात्तांमनसाध्यायेद्व
षट्करिष्यन्निति मन्त्रजपसेदेवतानिकटआतावोबोलताहै यो-
गसूत्र स्वाध्यायादिष्टदेवतासंप्रयोगइति योगमाहात्म्यश्रुति पृ-
थिव्याप्यतेजोनिलखेसमुत्थितेपञ्चात्मकेयोग?गुणप्रवृत्ते नतस्य
रोगोनजरानमृत्युःप्राप्तस्ययोगाग्निमयंशरीरमिति अवदेवोका-
विग्रहादिमन्त्रादिसेवोऽर्थित्वादिसेब्रह्मविद्यामेंअधिकारवोक्रम
मुक्तिआदिसबबने ॥ ——*○*——

(शूद्राधिकरण ॥ १० ॥)

शुगस्यतदनादरश्रवणात्तदाद्रवणात्सूच्यतेहि ॥ ३४ ॥

छांदोग्यकेचौथेअध्यायकीसंवर्गविद्यामेंसुनाहै किजानश्रु-
तिनामराजासहस्रगायादिभेंटकेलियेलायाफिरहंसनामऋषि-
नेउसकाअनादरकिया तिससे वहशोकितहोकेरैक्वनामऋषिके-
पासआयाफिरउसउपायनको रैक्वनेदेखाऔरकहाकिहेशूद्रजान
श्रुतेतूजोसहस्रगायादिसामानलायाहै सोजेगायेंलड़िकियांके-
समहैंतूइनकोदेमुजिकोप्रसन्नकरपढ़ाचाहताहै इसरैक्ववाक्यसे
जानागयाकिशूद्रभीविद्याकाअधिकारीहै सोनहींहै क्योंकिशो
कयोगसेरैक्वनेजानश्रुतिकोशूद्रकहाथा औरनकिजातिसे शूद्रश

*धारणयाजितो ? अणिमादि

व्दशूद्र जातिमें रूढ़ है और जानश्रुतिमें यौगिक कहा है शोक के योग सेजिसे यही अर्थ उस गाथामे सूचित है श्रद्धासेदातृत्वादिविशेषण- क्षत्रियमेंही घटते हैं श्रुति अहहारेत्वाशूद्र तवैवसहगोभिरस्त्विति कं?वरएनमेतत्सन्तंसयु*ग्वानंरैक्कमिवात्थेति यह हंसवाक्य है श्र द्धादेयो बहुदायी बहुपाक्य आसीतिसु चर्मभिद्रद्रावशुचावाभिद्रुद्र- वते जानश्रुतिनामराजा निदाघकालकी रातिमें प्रासादतलसे सोता था उसके अन्नदानादिसे तुष्ट ऋषिगण उसके हितार्थ मालाकार हंस- सरूप हो उसके ऊपर आयेउनमें से पिछिला हंस आगे चलनेवालेए- कहंससे बोला कि हे हे सुनयन तुम क्यों नहीं देखते हो जानश्रुतिकाते- जस्वर्गमे पहुंचा है वह तुमको जला वेगा आगे मतजाओ फिर आगे- के हंसने उत्तर दिया कि इसदीन विद्याहीन को अरे क्या रैक्कके समान कहते हो रैक्क तो ब्रह्मिष्ठ है उसका तेज कोई नहीं सहिसक्ता है और इस अनात्मज्ञ का तो कुछ भी तेज नहीं है हंस के रेवाक्यसे खिन्न राजा शकटलिंगसे रैक्कको ज्ञानविद्यावान् हो गाय ही हंसोंका अभिप्राय था उनके अनादर वचन सुनि राजाको शोच हुआ वुही शोच रैक्कने शूद्र- शब्दसे सूचन किया था इस वैदिक कहानीका तात्पर्य यह है कि जो धनी धन यज्ञ मंदिर आदि में उठाते हैं उसका कछु भी फल नहीं है जो विद्या में लगाते वुह सर्वत्र प्रकाशता है ॥

क्षत्रियत्वगतेश्चोत्तरत्र चैत्ररथेनलि- ङ्गात् ॥ ३५ ॥

सम्वर्गविद्याके आगे अभिप्रतारी चैत्ररथके साथ जानश्रुति पढ़ा

? कं उ अरे इति छेदः ॥
* शकटी ॥

है फिरसङ्गसेत्वत्रियजानाजाताहै नकिशूद्र श्रुति अग्रहशौनक-
श्वक।पेयमभिप्रतारिणांचकाक्षसेनिपरिविष्यमा।णौब्रह्मचारी वि-
भिक्षइति ऐतेनवैचित्ररथंकापेयाअयाजयन्निति प्रायःसमानवं-
शकेयाजकहोतेहैं यहपहिलीवातथी समानान्वयानांचप्रायेणा
समानान्वयायाजकाभवन्तितस्माच्चैत्ररथिर्नामैकःक्षत्रपतिरजाय-
तइससेक्षत्रीथा तौअभिप्रतारीकेसङ्गसमानविद्यासेकहनेसेजा-
नश्रुतिभीक्षत्रीथा क्षत्तासूतःतस्यरैक्वान्वेषणार्यप्रेषणं अन्नगोदा-
नादिकस्वजानश्रुतेःक्षत्रियत्वलिङ्गम् ॥

संस्कारपरामर्शात्तदभावाभिला-
पाच्च ॥ ३६ ॥

विद्यापढ़नेकेलियेउपनयनादिसंस्कारसुननेसे शूद्रविद्याप
ढ़नेका अधिकारीनहींहै औरस्मृतिसेशूद्रकोसंस्कारकानिषेधहै
स्मृति नशूद्रेपातकंकिंचिन्नचसंस्कारमर्हतीति तंहोपनिन्ये अधी
हिभगवइति होपसमार ब्रह्मपराब्रह्मनिष्ठाःपरंब्रह्मान्वेषमाणा
एषहवैतत्सर्वंवक्ष्यतीतितेहसमित्पाणयोभगवन्तंपिप्पलादमुपस
न्नाइति वतान्होनुपनीयैवेति इसमें उपनयन का उपदेशकहा है
परवैश्वानरविद्यामेंराजानेऋषियोंकोविनाहीउपनयविद्यापढ़
दीथा ऋषान्राजानुपनीयैवविद्यामुवाचेतिश्रुति ॥

तदभावनिर्धारणेचप्रवृत्तेः ॥ ३७ ॥

गाथा जाबालगौतमकेपासपढ़नेकोगयातौउसनेउससेपू
छाकितेराकौनसागोत्रहै यहप्रश्नसुनिउसनेउत्तरदियाकिमैं
नहींजानताहूं इससत्यकहिनेसेनिश्चयकियाकियहब्राह्मणहै फि
रउसकोशूद्रनहींजानाऔरउपनायाऔरवनमेंलकड़ियोंकेलि

भेजिदियाथा इसगौतमकेवर्त्तावसेवुहशूद्रनहींथा श्रुति किञ्चो मौतिगौतमउपनेतुमनुशासितुंचप्रववृतेनैतद्ब्राह्मणोविवक्तुमर्ह तिसमिधंसौम्याहरोपत्वानेष्ये नसत्याद्गाइतिश्रुतिलिङ्गसेनत्य वानसिमत्यन्त्वं ॥

श्रवणाध्ययनार्थप्रतिषेधात्स्मृतेश्च ॥ ३८ ॥

जोशूद्रवेदकोसुनेतोउसकेकानमेंसीसायालाखतपाकेभरदे जोउच्चारणकरेतोजीभकाटदे जोअर्थजानेतोहृदयकोभेदनकर दे स्मृति अथास्यवेदमुपशृण्वतस्त्रपुजतुभ्यांश्रोत्रंप्रतिपूरणमुदाहरणेजिह्वाछेदोधारणेहृदयभेदइत्यादि गौतमस्मृतिहै और शूद्रवेदकोनसुनेनपढेनअर्थजानेनअनुष्ठानकरे श्रुति य?द्युहवाए तत्श्मशानंयच्छूद्रस्तस्माच्छूद्रसमीपेनाध्येतव्यं औरविदुरादिज्ञानापहिलीजातिकोसुधिसेहुयेथे नकिविद्यापढ़केतिससेशूद्रको वेदकाअधिकारनहींहै किन्तुमुक्तिकेलियेस्मृतिपुराणेतिहासादिपढ़लेऔरभारतमेंहैकि ब्राह्मणकोआगेबैठाकेफिरचारोवर्णो कोसुनावे इससे केवलब्राह्मणहीवेदकाअधिकारीनिकलताहै नकि अन्यकोई श्रावयेच्चतुरोवर्णानिति तिससे वेदपूर्वकशूद्रकोअधिकारनहींहै यहस्थितहै किसीकेमतसेस्मार्त्तनिषेधहै नकिवैदिक औरकिसीकेमतसेगर्भाधानादियज्ञकर्मोपयोगीवेदमेंशूद्रकोअधिकारनहींहै ईश्वरज्ञानोपयोगीमें है और वाजसनेयशाखाके-२६वेंअध्यायमेंहै कियथेमांवाचङ्कल्याणीमावदानिजनेभ्योब्रह्मराजन्याभ्यांशूद्रायचार्यायस्वायचारणायइति ईश्वर कहिता है किजैसेमैंहितवाणीमनुष्यकेलियेकहिताहूं वैसेब्राह्मणक्षत्रियवै

? पादयुक्तंसंचरिष्णुरूपं ॥

ध्यशूद्रदासादिकेलियेकहा ओरअरणाइमपदकाअर्थमहीधरनेश
वुकहाहै ओरओरोंनेम्ले छादिकहाहै तैसेहीमनुष्यमात्रकेलि
येवेदकोकहाओरमतकिपाओइसीअर्थकोमनुनेप्रकारान्तरसेप्र-
कटकियाहै किनीचादप्युत्तमाविद्येति जोकिनीचकोविद्यान-
हींहै तोउस्को विद्याकेग्रहणका विधानव्यर्थहै व्यवस्था निषेधवा-
क्योंकातात्पर्यकर्मबोधकवेदकोनहींसुनानेमेहै क्योंकिशूद्रभीउ
त्तमकर्मकरदास्यकर्मसेनिवृत्तहोगा तिससेसबकेलियेदिव्यभा-
षाहै ॥

——*○*——

(कम्पनाधिकरण ॥ ११ ॥

कम्पनात् ॥ ३९ ॥

कठवल्लीसेसुना किविश्वकाकम्पकप्राणहै सो क्यावायुहै या
वज्रहै याब्रह्महै फिरवायुवज्रनहींहोसक्तेहैं क्योंकिअनन्तजीव
नफलसुनेसे तिस्से प्राणशब्दवाच्यब्रह्महै ओरबुहीअन्तर्यामीभय
काकारणहै ओरआगजरातासूर्यधूपदेताइन्द्रवज्रउठानावायुच
लतामृत्युमारताहै जेपांचकामईश्वरकेभयसेहोतेहैं वायुजवज-
लहोताहै तबविद्युत्स्तनयित्नु वृष्टिवज्रहोतेहैं श्रुतिमेंवायुबोध
सेअमृतफलसुनाहै वायुरेवव्यष्टिर्वायुःसमष्टिरपपुनर्मृत्युंजयति
यएवंवेदेति इसमेंब्रह्मसिद्धान्तसूत्रसेबाहिरशङ्करसम्मतहै यदि
दंकिञ्चजगत्सर्वंप्राण*एजतिनि?सृतंमह'द्भयंवज्र;मुद्यतंयएतद्वि
दुरमृतास्तेभवन्तीति ईश्वरसे अन्यत्र अमृतत्वश्रवणआपेक्षितका
वायोहिपर्जन्यभावेनविवर्त्तमानेविद्युत्स्तनयित्नु वृष्ट्यशनयोवि
वर्तन्तइत्याचक्षतेआगेपीछेतोब्रह्मका निर्देश है बीचमेंवायुकैसे

---

* स्पन्दते ॥ ? उत्पन्नं ॥
' एजृकम्पने ॥ ; वायुजलसेवज्रवनाहै ॥

जानसकतेहैं आगे तदेवशुक्रं तद्ब्रह्म तदेवामृतमुच्यते तस्मिंल्लोकाः स्थिताःसर्वे तदु नात्येति कश्चनेति यहांब्रह्मनिर्दिष्ट है जगत्सर्वंप्राण एजतीति प्राणशब्दभीआत्मवाचीहै जैसे प्राणस्यप्राणमिति ए-जनकर्त्ताभीईश्वरहै नवायुमात्र नप्राणेननापानेनमर्त्योजीवति कश्चन इतरेणतुजीवन्तियस्मिन्नेतावुपाश्रितौइत्यादि पीछेभी ब्रह्मनिर्दिष्टहै नवायु भयादस्याग्निस्तपतिभयात्तपतिसूर्यः भ-यादिंद्रश्चवायुश्चमृत्युर्धावतिपञ्चमइत्यादि जैसे भयभीतजनराज शासनमानतेहैं किवज्रउद्यतसेरेहीशिरपरपरेगा तैसेअग्निवायु सूर्यादिसबजगब्रह्मभयसेडरनियमसेअपने२कामकरतेहैं इससे भयानकवज्रोपमितब्रह्महै अमृतत्वफलसुनेसेब्रह्महै तमेवविदि त्वेति जीवायुविज्ञानसेअमृतत्वसुनाबुद्धआक्षेपिकहै अतोन्य-दार्त्तमिति इसनेवाय्वादिसबआर्तकहेहैं आत्मासे ॥

——※◡※——

(ज्योतिर्दर्शनाधिकरण ॥ १२ ॥)

ज्योतिर्दर्शनात् ॥ ४० ॥

छांदोग्यकीप्रजापतिविद्यामेंसुनाहै कि ज्योतिःरूपहोता-है सोक्यातमोघ्नतेजहै यापरब्रह्महै औरनाडीखण्डमें अथयवै तदस्माच्छरीरादुत्क्रामत्यथैतैरेवरश्मिभिरूर्ध्वआक्रमतइति इस-नेमुमुक्षुकोसूर्यकीप्राप्तिकहीहै तिससेज्योतितेजहै सोनहींहैज्यो तिपरब्रह्महै क्योंकि दर्शनात् यआत्मापहतपाप्मासोन्वेष्टव्योविजि ज्ञासितव्यइति इसप्रतिज्ञासे एतंत्वेवतेभूयोनुव्याख्यास्यामीति-औरइसअनुसन्धानसे अशरीरंवावसन्तंनप्रियाप्रियेस्पृशतइति इससेअशरीरतौर्घज्योतिको सम्पत्ति कहिने से और ब्रह्म भाव-से अन्यत्रअशरीरनहींहोसक्ताहै परंज्योतिःसउत्तमःपुरुष इन-

विशेषोंसे औरगतिउत्क्रांतिकहिनेसे सूर्य कीप्राप्ति कहीहै और आत्यन्तिकमुक्तिमेंगतिउत्क्रान्तिनहींहैं उपसंपत्तिअर्थात्तीनदे-हसेपृथक्शुद्धत्वंपदार्थजीवकोब्रह्मबोधकादृढ़है तिससेज्योतिर्ब्र-ह्महै श्रुति एषसम्प्रसादोस्माच्छरीरात्समुत्थायपरंज्योतिरुपसम्प-द्यस्वेनरूपेणाभिनिष्पद्यतेसउत्तमःपुरुषइति योवेदेदञ्जिघ्राणी-ति सआत्मेत्यादिघ्राणघ्रेयइनकासाक्षीजोघ्राताहै सोही आत्माहै मेघरूपकसेजीवकेपहिचाननेकीरीति मेघविद्यासेसु-नाहैकि जैसेमेहपहिलेअदेहक्रमसे व्योमवायुअभ्रविद्युत्मेंरहि-ताहै फिर ग्रीष्ममें सूर्यकीधूप सेपृथक्गगनसेजानपड़ताहै फि-वर्षामेंमेहरूपसेप्रकटहोताहै फिरजोवायुनेउड़ायाताअभ्रमेंलय नहुआ नहींतोजहांकहींवर्षगया तैसेहीजीवसर्वत्रमिलासादे-हमेंप्रकटहोकेउपासनासेअर्चिरादिपथद्वारासूर्यकेऊपरहोकेव-यंब्रह्मकोपहुंचकेमुक्तहोताहै इसीकानामक्रममुक्तिहै जोयहभी नहुई तोजन्मतामरतारहिताहै ॥

——*○*——

(आकाशाधिकरण ॥ १३ ॥)

आकाशोर्थान्तरत्वादिव्यपदेशात् ॥ ४१ ॥

छांदोग्यसेसुनाहै किआकाशविश्वकेनामरूपकानिर्वा-है वहजिससेपृथक्है याउसकेभीतरहै सोआकाशमरणशून्य-श्वरप्रत्यागात्माहै औरनकिव्योमहै जड़होनेसेफिरजड़निया-कनहींहोसक्ताहै कथञ्चित्अवकाशदानसेव्योमभीनामरूपव-निर्वाहकहोसक्ताहै लोकमेंनियन्ताचेतनदेखनेसेफिरअचेत-व्योमनियम्यरीतिकोक्याजानेगा तिससेवुहनियन्ताहोगा औ सुनाहै किआकाशब्रह्मअमृतआत्माहै तिससेनिरंकुशकर्त्ता

है नकिव्योम श्रुति आकाशो।वैनामनामरूपयोर्निर्वहितातेय-
दंतरातद्ब्रह्मतदमृतंसआत्मेत्यादि ब्रह्मवादकेहीचिन्हहैं आका-
शस्तल्लिङ्गादिति इससूत्रसेयहअधिकरणगतार्थहै पृथक्योगव्य-
र्थहै ॥

——*⁀*——

(विज्ञानमयाधिकरण ॥ १४ ॥)

सुषुप्त्युत्क्रांत्योर्भेदेन ॥ ४२ ॥

बृहदारण्यसेसुनाहै किलिङ्गदेहमयस्थूलदेहसेपृथक्है औ-
रनेत्रादिइन्द्रियांयाप्राणादिवायुयाअन्तःकरण इनसेपुरुषभिन्न
सिद्धहै इसटवस्थूलदेहइन्द्रियप्राणवायुअन्तःकरणऔरअन्तःकर
णकीवृत्त्यादिकासाक्षीपुरुषज्योतिकहाहै सोहीलिङ्गदेहकेअध्या
ससेलिङ्गदेहकेसमानइसलोक और परलोकमें फिरताघूमता है
सोक्यासंसारीयाअसंसारीहै फिरयहांविज्ञानमयजीवहै क्योंकि
ज्योतिर्ब्राह्मणमेंऔरशारीरब्राह्मणमेंआदिमध्यअन्तिमेंसंसारही
काविस्तारकहाहै जैसे आदिमेंदोनोंलोकोंमेंफिरनाऔरमध्य-
में संप्रसाद१ स्वप्नान्त२ बुद्धान्त३ इनतीनअवस्थाकाविस्तार
औरअन्तिमेंआत्माब्रह्म विज्ञानमयादिउपाधिसेसंसारीही कहा
है तिससेजीवहै सोनहींहै क्योंकिजीवकहिनेकेयोग्यनहींहै य
हंबुद्धिसिद्धहोनेसे जैसे मैंजीवहूं फिरजीवक्योंगाया सुनो पहि
लेप्राणादिउपाधियोंसेभिन्नकहाहै बीचमेंअवस्थातीनसेरहित-
दिखाया अन्तिमेंजीवकेस्वरूपकाअनुवादकरजीवहीकोब्रह्मक
हाहै ब्रह्मअन्यप्रमाणोंसेनहींजानाजाताहै तिससेइसप्रकरण-
मेंब्रह्मकहानकिजीव श्रुति कतमआत्मेतियोयंविज्ञानमयःप्रा-
णेषुहृद्यन्तर्ज्योतिःपुरुषःससमानःसन्नुभौलोकावनुसंचरतीति प्रा
सङ्गिकहै सर्वज्ञरूपप्रज्ञाकेनित्यअवियोगसेसुषुप्तिमेंजीवप्राज्ञया-

त्माकेसङ्गसेताहै और उत्क्रांतिमें प्राज्ञआत्मापरअन्वारूढनिक रकेजाताहै इसदवजीवकाप्राज्ञसेभेदकहाहै इससे प्राज्ञे नात्म नासंपरिष्वक्तःप्राज्ञे नात्मनान्वारूढउत्सर्जन्यातीति उपक्रममें शारीरलिङ्गसेयोयं विज्ञानमयःप्राणेष्विति उपसंहारमेंभीशारीरलिङ्गसे जैसे सवाएषमहानजआत्मायोयंविज्ञानमयप्राणेष्विति मध्यमेंभीबुद्धान्तावस्थाकेउपन्याससेशारीरहीकाप्रपञ्चहै यहमतकहो परमेश्वरोपदेशकेलियेयहवाक्यहै नशारीरमात्रकेअन्वाख्यानकेलियेहै कैसेसुषुप्तावुत्क्रांतौचशारीरात्भेदेनपरस्यव्यपदेशात्सुषुप्तिमें अयंपुरुषःप्राज्ञे नात्मनःसंपरिष्वक्तोनबाह्यङ्किञ्चनवेदनान्तरमिति उत्क्रान्तिमेंभीजीवसेभिन्नईशकहाहै जैसे अयंशारीरआत्माप्राज्ञे नात्मनान्वारूढउत्सर्जन्यातीतियोरान्गच्छत्युंचन् उपक्रममेंभीसंसारीस्वरूपविवक्षितनहींहै किन्तुसंसारीकाकथनकरब्रह्मकेसङ्गएकताविवक्षितहै इसीसेउत्तरग्रन्थमेंसंसारधर्मकानिरासदेखतेहैं जैसे ध्यायतीवलेलायतीवेति बुद्धौध्यायत्यामात्माध्यायतीवचलत्यांचलतीववस्तुतःसर्वक्रियाशून्यःअवस्थाशून्यअसंसारीहै कैसे जानायदतऊर्ध्वंविमोक्षायैवब्रूहीति कामादिविवेकानंतरमित्यर्थः यत्त्वानन्वागतस्तेनभवति असङ्गोह्ययंपुरुषइति आत्मासुषुप्तिमेंपुण्यपापसे अस्पृष्ट है वोसर्वशोकसेरहितहै तोहृदयमेंहोसबशोकादिहैं पुण्येनानन्वागतंपापेनतीर्णोहितदासर्वाञ्शोकान्हृदयस्यैवभवतीतिच तिसो असंसारीपरवचनहै ॥

पत्यादिशब्देभ्यः ॥ ४३ ॥

यद्यपिजीवब्रह्मकेचिन्हसमहैं तथापिसबकाअधिपतिमहान्आदिशब्दोंसेजीवकहींनहींगायाहै इससेब्रह्महै श्रुति सर्वस्य

वशीसर्वस्य ग्रानःसर्वस्याधिपतिरिति उक्तश्रुतिकेशब्दश्रसंसारी-केबोधकहैं श्रुति सनसाधुनाकर्मणाभूयान्नाएवाश्रसाधुनाकनी यानिति जोशब्दसंसारीनिवृत्तिपरहैं तिनसेत्रसंसारीईश्वरहै ॥

इतिश्रीयुक्तारा चन्द्रवर्मणाकृतेब्रह्मसूत्रभाषाभाष्ये प्रथमाध्यायस्यतृतीयःपादःपूर्णः ॥

चौथापदचिन्तापाद ॥

(अव्यक्ताधिकरण ॥ १ ॥)

आनुमानिकमप्येकेषामितिचेन्नशरीररूपकविन्यस्तगृहीतेर्दर्शयतिच १

काठकमेंजगकेकारणप्रधानआदिशब्दसुनेहैं इस्से परमर्षिकपिलादिनेअपनीस्मृतियोंमेंउनकाग्रहणकराहै तेशब्दाभासजोलौं अन्यपरनकहेजावेंगे तौलौजगकारणकाप्रतिपादनआकुलहोरहेगा काठकवाक्यमहत्वोअव्यक्तकीस्थितिपरनहीहै नवात्रिगुणस्वतन्त्रप्रधानकारणकीयहांप्रत्यभिज्ञाहै अव्यक्तशब्दमात्रकीप्रत्यभिज्ञाहै वुहतोनव्यक्तंअव्यक्तइसव्युत्पत्तिसेयौगिकअन्यदुर्लक्ष्य सूक्ष्ममेंप्रयुक्तहोसक्ताहै औरनकिसीमेंरूढहै प्रधानवादियोंकीरूढितोउनकीपारिभाषिकीहै वहवेदार्थकेविचारमेंकारणताकोनहींपहुंचतीहै अश्वकेठौरगौकोदेखअमूढअश्वनहींजानता है आत्मानंरथिनंविद्धिशरीरंरथमेवतु बुद्धिंतुसारथिंविद्धिमनःप्रग्रहमेवच इन्द्रियाणिहयान्याहुर्विषयांस्तेषुगोचरान् आत्मेंद्रियमनोयुक्तंभोक्तेत्याहुर्मनीषिणइतितैश्चेंद्रियादिभिरसंयतैःसंसारमधिगच्छतिसंयतैस्त्वध्वनःपारन्तद्विष्णोःपरमंपदमाप्नोतीतिमा

गंकेपारविष्णुपदकौनहै इसआकांक्षामेंइन्द्रियादिसेपरेपरमा-
त्माकोपरमपदकहाहै इन्द्रियेभ्यःपराह्यर्थाअर्थेभ्यश्चपरम्मनःमन-
सस्तुपराबुद्धिर्बुद्धेरात्मामहान्परःमहतःपरमव्यक्तमव्यक्तात्पुरुषः-
परःपुरुषान्नपरंकिंचित्साकाष्ठासापरागतिरिति रथकल्पनामेंजो
इन्द्रियादिहयादिभावसेग्रहणकरेथे तेयहांइन्द्रियमनबुद्धिआदि
समानशब्दहैं अर्थभीइन्द्रियहयोंकेगोचरकहेथे तेहीयहांइन्द्रि-
योंसेपरकहेहैं इन्द्रियाणांग्रहत्वंविषयाणामतिग्रहत्वमितिश्रुतेः
पुरुषपशुकोबाधतेहैंतिससेग्रहइन्द्रियांहैं फिरविषयविनाइन्द्रि
यांकुछनहींकरसक्तीहैं तिससेतेविषयअतिग्रहहैं अर्थात्ग्रहसेश्रे
ष्ठहैं यहब्रहदारण्यकाअर्थहै विषयसेपरेमनहै क्योंकिविषयेन्द्रि
यव्यवहारकामूलमनहै भोग्यमात्रबुद्धिपरचढ़भोक्ताकोपहुंचता
है बुद्धिसेपरेरथीमहानात्मा कोजानोंभोक्ता भोगसामग्रीसे पर-
होताहै महान्हैक्योंकिस्वामीहै अथवामनोमहान्मतिर्ब्रह्मा-
पूर्बुद्धिःख्यातिरीश्वरःप्रज्ञासंविच्चितिश्चैवस्मृतिश्चपरिपठ्यत इति
श्रुतिः । योब्रह्माणंविदधातिपूर्वंयोवैवेदांश्चप्रहिणोतितस्मैइति
श्रुतिः मननशक्तिव्यापिनो भावि निश्चय ब्रह्मा है आत्माभो-
गाश्रय तात्कालिकनिश्चयकीर्तिशक्ति नियमनशक्तिचैकालिक
निश्चय सम्वत्अभिव्यंजिकाचिदध्यस्तातीतसर्वार्थग्राहिणीसम-
ष्टिबुद्धिरित्यर्थः यहहिरण्यगर्भकीबुद्धिहै हिरण्यगर्भप्रथमजपुरुष
कानामहै वहीसबबुद्धियोंकोपराप्रतिष्ठाहै वहीमहान्आत्मा-
यहांकहाहै वहीपहिलेबुद्धिकेलेनेसेलेचुकेहैं इससेहिरुक्उसका
ग्रहणनहीं किया है वहभीहमारीबुद्धियोंसेपरहैपूर्वोक्तकहइन्द्रि
यादिमेंशरीरएक शेष है शरीरेन्द्रियमनोबुद्धिविषयवेदनासंयुक्त
अविद्यावाले भोक्ता का देहादि को रथादि रूप कल्पना से संसा
रमुक्तिकहकेप्रत्यगात्मब्रह्म की गति यहां विवक्षित है किन्तु ए

सर्वेषुभूतेषुगूढोत्मानप्रकाशते दृश्यतेत्वग्र्ययाबुध्यासूक्ष्मयासूक्ष्म दर्शिभिरिति इस वैष्णव परम पददुर्बोधहोनेकोसुबोधार्थयोग कोदिखातेहै यच्छेद्वाङ्मनःसीप्राज्ञस्तद्यच्छेज्ज्ञानआत्मनिज्ञा नमानिमहतिनियच्छेत्तद्यच्छेछांतआत्मनीति अर्थ वागादिवहि रोसवइन्द्रियोंकाकर्मछोड़मनमेंमनकोभीविषयोंमेंदोषदेखवुद्धि मेंराखे जैसेसुरूपकुरूपविवाहितस्त्रीमेंरतिरूपवतीवारियोषामें अरतिः बुद्धिकोभीमहान्आत्माभोक्तामेंअथवाअग्र्याबुद्धिमेंसूक्ष्म तासेधरे महान्आत्माकोशांतपरमपुरुषमेंजोपराकाष्ठाहै उस मेंरोके ऐसेआगेपीछेदेखनेसेप्रधानकाअवकाशनहीं शरीरअव्य क्तहै ॥

सूक्ष्मन्तुतदर्हत्वात् ॥ २ ॥

सूक्ष्मसेकारणविवक्षितहै सूक्ष्मअव्यक्तशब्दकेयोग्यहोनेसे यद्यपिस्थूलदेहअव्यक्तशब्दकावाचकनहींहै तथापिस्थूलदेहके- आरम्भकभूतसूक्ष्मशब्दकेयोग्यहैं प्रकृतिपदविकृतिमेंदेखनेसे जै सेगोविकारदूधमेंगोप्रकृतिकाप्रयोगहै तैसेही अव्यक्तकेकहिनेसे व्यक्तयोग्यतासेसमुझागयाहै श्रुति तद्धेदंतर्ह्यव्याकृतमासीदिति अर्थ यहविश्वपहिलेव्याकृतनामरूपसेभिन्नथाफिरव्याकृतनाम- रूपकोछोड़केबीजरूपअव्यक्तशब्दाहथा श्रुति गोभिःश्रीणीतम- त्सरं अर्थ यहांगायसेसोमकोमिलानेमेंतात्पर्यनहींहै किन्तु- गायकीविकृतिदूधमेंहै ॥

तदधीनत्वादर्थवत् ॥ ३ ॥

जोयहजगतअनभिव्यक्तनामरूपवीजात्मकप्रागवस्थाअव्यक्तश

* दैर्घ्यंछान्दसं ॥

व्दाहैंमानेतेवुहीप्रधानकारणवादआया क्योंकिइसजगकीप्रा-
गवस्थाप्रधानतासेमानीहै हमतोजगकीस्वतन्त्रप्रागवस्थाकाको
ईकारणनहींमानतेहैं परन्तुईश्वराधीनजगकीप्रागवस्थामानते
हैं उसकेविनाईशसृष्टिनहींकरसक्ताहै वोशक्तिशून्यकीप्रवृतिअ-
सिद्वहै मुक्तोंकापुनर्बन्धनहींहोता क्योंकिविद्यासेबीजशक्तिजर
नेसे अविद्यारूपाबीजशक्तिअव्यक्तशव्दवाच्यपरमेश्वराश्रयामाया
मयीमहासुषुप्तिहै जिसमेंस्वरूपबोधशून्यजीव सोतेहैं वहीअ-
व्यक्तहै कहींआकाशशव्दसेकहा जैसे एतस्मिन्खल्वक्षरेगार्ग्यां-
काश ओतश्चप्रोतश्चेति कहींअक्षरशव्दसेकहा जैसे अक्षरात्परतः
परइति कहींमायासूचनकरी मायांतुप्रकृतिंविद्यान्मायिनंतुम-
हेश्वरमितिमंत्र वहमायाअव्यक्तअनिर्वचनसेहै जोहिरण्यगर्भ
कीवुद्धिमहान्है जोजीवमहान्है तोभीजीवभाववअव्यक्तकेआ-
धीनहोनेसेमहत्सेपरअव्यक्तयहकहाहै अन्यकहतेहैंकिदेहदोहैं
एकस्थूलदूसरासूक्ष्म स्थूलकाग्रहणनहीं क्योंकिदृष्टउपायोंसेसु
शोध्यहै परसूक्ष्मदुःशोध्यहोनेसेउसकायहांग्रहणहै यहसचनहीं
है क्योंकिशुद्धिकाबोधकआख्यातनहोनेसेविष्णुकापरमपदकौन
है इसविवक्षासेइससेपरेवहउससेपरेवहफिरपुरुषसेपरेकुछनहीं
कहायहपक्षरहोमेराकुछबिगाड़नहींहै आनुमानिककेनिरासमें

ज्ञेयत्वावचनाच्च ॥ ४ ॥

सांख्यनेप्रधानकेज्ञानसेमुक्तिमानीहै गुणपुरुषान्त*रज्ञा-
नात्कैवल्यमिति सोनहींहै क्योंकिवेदमेंमुक्तिऔरऐश्वर्यकेलिये
प्रधानकीउपासनानहींकहीहै कहींअणिमादिकेलियेभींप्रधान

---

* भेद ॥

त्त्वं यह कहा है विभक्तिविशेषप्रतिपत्तये प्रधानं त्त्वं यमिति यहांतीकी बल अव्यक्त शब्द है न ज्ञातव्य व । उपासितव्य कहा है वेदकी बिना बतायें कैसे मुक्तिकेलिये उसका ज्ञान कर सक्ते हैं मेरे मतमें विष्णु नाम पद एक त्त्वं यह है उसके दर्शनार्थ अव्यक्त शब्दसे शरीरका उपन्यास है ॥

वदतीति चेन्न प्राज्ञो हि प्रकरणात् ५

अत्राहुश्च सांख्याः त्त्वं यत्वावचनादितीदमसिद्धं कथं श्रूयते हि उत्तरत्राव्यक्तशब्दोदितस्य प्रधानस्य त्त्वं त्वेवचनं ॥

अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययन्तथारसं नित्यमगन्धवच्चयत् अनाद्यनंतं महतः परं ध्रुवन्निचाय्य तं मृत्युमुखात्प्रमुच्यते इति अर्थ वह मृत्युसे बचता है जो अव्याकृतको उपासना कर्त्ता है निचाय्यपदसे प्रधान वेदमें त्त्वं यह उपास्य कहा है सो नहीं है क्योंकि निचाय्यपदसे प्राज्ञ परमात्मा हीं कहा है प्राज्ञका महाप्रकरण है । नैसे पुरुषान्नपरः किञ्चित्साकाष्ठासापरागति एषसर्वेषुभूतेषुगूढोत्मानप्रकाशते इति इनसे आत्मा हीं दुर्ज्ञेय कहा है न कि प्रधान यह्के हाज्ञनसे प्राज्ञ इससे ईश्वर हीके ज्ञानार्थ संयम विहित है न कि प्रधानार्थ और मृत्युसे बचना यह फल सांख्यको भी प्रधानमात्रको उपासनासे दृष्ट नहीं है किन्तु चेतनात्मविज्ञानसे मृत्युसे बचता है यही सांख्यकी भी दृष्ट है और सब वेदांतोंमें अशब्दादिधर्म प्राज्ञ हीके कहे हैं न कि प्रधानके तिससे प्रधान त्त्वं य और अव्यक्त शब्दवाच्य नहीं है ॥

त्रयाणामेव चैवोपन्यासः प्रश्नश्च ॥ ६ ॥

काठकमें है कि सत्वमग्निं स्वर्ग्यमध्येषि मृत्यो प्रब्रूहितं श्रद्दधानाय मह्यं यह प्रश्न अग्निके बारे में है येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्ये स्तीत्येके नायमस्तीति चैके एतद्विद्यामनुशिष्टस्त्वयाहं वराणामेष वर --

स्तृतीयइति यहजीवकेवारेमेंप्रश्नहै अन्यत्रधर्मादन्यत्राधर्मादन्य
त्रास्मात्कृताकृतात्अन्यत्रभूताच्चभव्याच्चयत्तत्पश्यसितद्वदइत्या
दि यहप्रश्नपरमात्माकेवारेमेंहै प्रतिवचन लोकादिमग्निन्तमु-
वाचतस्मै याइष्टकायावतीर्वायथावेति यहअग्निकेवारेमें हन्तते
इदंप्रवक्ष्यामिगुह्यं ब्रह्मसनातंयथाचमरणंप्राप्यात्माभवतिगौत-
म योनिमन्येप्रपद्यन्तेशरीरत्वायदेहिनःस्थाणुमन्ये तुसंयन्तियथा
कर्मयथाश्रुतमिति जीवकेवारेमें नजायतेम्रियतेवाविपश्चिदिति
ईशकेवारेमेंयहांप्रधानकेवारेमेंनप्रश्ननउत्तरहै वापनेनचिकेत-
नामी बेटे कोमृत्यु केपास भेजाउसनेउसेतीनवरदियेनचिकेतने-
भीप्रथमवरसेवापकोसौमनस्यदूसरेसेअग्निविद्यातीसरेसेआत्म
विद्यामांगी जीवप्राज्ञसेअन्यनहींहै इससेपृष्टव्यकेभेदसेप्रश्नका
भेदनहींहै तत्वमसीति यहांभीअन्यत्रधर्मादित्यादिप्रश्नकाप्रति
वचननजायतेम्रियतेवेतिजननमरणकेनिषेधसेशारीरपरमेश्वर
काअभेददिखायाहै स्वप्नजागरितकोदेखनेवालेजीवकेमहत्ववि
भुत्वविशेषणहैं उसीकाशोकमननसेदूरहोताहै इससेभीप्राज्ञसे
अन्यजीवनहींदिखायाहै यथास्वप्नान्तंजागरितांतंचोभौयेनानुप
श्यतिमहांतंविभुमात्मानंमत्वाधीरोनशोचतीतिकिञ्चजीववोप्रा
ज्ञकेभेददर्शनकाअपवादहै तथाग्रेयदेवेहतदमुत्रयदमुत्रतदन्वि
हमृत्योःसमृत्युमाप्नोतियइहनानेवपश्यतीति जीवहै वानहीं इ-
स प्रश्न के पीछे नचिकेत को पुत्रादि अनेक कामनाओं से मृत्यु-
नेलुभायानचिकेतयदानचलातदाउसकेअर्थमृत्यु नेअभ्युदयनिः
श्रेयसकाविभागविद्याअविद्याकाविभागदिखायातोजानाकिय
हविद्याकामहै नइसकोबहुकामलोलुपकरसक्तेहैं यहकहांफिर
मृत्यु उसकोवोउसकेप्रश्नकीप्रशंसाकरबोला तंदुर्दर्शंगूढमनुप्र
विष्टंगुहाहितंगह्वरेष्ठम्पुराणं अध्यात्मयोगाधिगमेनदेवंमत्वाधी

रोहर्षशोकौजहातीति इससेभीजीवप्राज्ञकाअभेदविवक्षितहै प्रथमदेहादिसेभिन्नआत्माकोअस्तितापूछौफिरउसकोअसंसारितापूछताहै जौलोअविद्यानहींछूटतीहै तौलोधर्मादिविषयक-जीवकोजीवत्वनिवृत्तनहींहै अविद्याकीनिवृत्तिमेंप्राज्ञहोहै त-त्वमसीसि अविद्यामेंवाअविद्याकेदूररहीनेमेंवस्तुकाकुछविशेषन-हींहोताहै जैसे अंधेरेमेंपरीरस्सीकोअहिजानखड़ाहोजावे कांपे भागे वा उसकोअन्यकहेकि यहअहिनहींपररस्सीहै वहयह सुनअहिभयकम्पपलायनछोड़ताहै फिरअहिधीकेआनेजानेकालमेंरस्सीवस्तुकाकुछविशेषनहुआ अगिनजीवब्रह्मकल्पनायुक्तहैं प्रधानकल्पनामेंनवरदाननप्रश्न नप्रतिवचनहै यहवैषम्यहै ॥

महद्वच्च ॥ ७ ॥

जैसेसांख्यनेमहच्छब्दकाअर्थप्रथमजसत्तामात्रकहाहै औरवै-दिकोंनेआत्माकहाहै तैसेहीसांख्यसेअव्यक्तशब्दप्रधानमेंप्रयुक्त-औरवैदिकोंसेअव्याकृतप्रथमजसत्तामात्रमेंप्रयुक्तहै तिससेअव्य-क्तशब्दवाच्यसूक्ष्मवपुःनकिप्रधानहै श्रुति बुद्धेरात्मामहान्परः महांतंविभुरात्मानं वेदाहमेतंपुरुषंमहांतमित्यादि इससेआनु-मानिकप्रधानशब्दनहींहै ॥

———*◡*———

(अजाधिकरण ॥ २ ॥)

चमसवदविशेषात् ॥ ८ ॥

सोमरसपीनेकेलियेयज्ञमेंकाठकापात्रचमसकहाहै अजामेंकां इसमन्त्रमेंरोहित रजः रञ्जनसे शुक्ल सत्व प्रकाशनसे कृ-ष्णतमः आवरणसे इनतीनोंकीसाम्यावस्थाअवयवधर्मोंसेकही

रोहितशुक्लकृष्णा नजन्मवहअजाहै मूलप्रकृतिरविकृतिः इस वचनसेजो अजाशब्दकेरोमें रूढहै हो। वुह रूढिग्रहांमाननयोग्यनहींहै विद्याकेप्रकरणसे वहां अजावहुतमहदादिप्रजासुखदुःखमोहयुक्तकोजन्मती है उसी प्रकृति को एक अज पुरुष प्रीति सेसेवकहो।केअनुसोताहै उसकोअविद्यासेप्राप्तहै।केमैंसुखीदुःखीमूढ़हूं इसअविवेकसेसंसारीहोता है फिरएकअन्यअजपुरुषविवेकज्ञानीकृतभोगापवर्गप्रकृतिकोछोड़ताहै इत्यर्थः तिससेकापिलोकीकल्पना।वेदमूलहैयहमतकहो। मेराकहिनासुनो यहमन्त्रसांख्यवादमेंनहींनइसकीउत्साहहैकि किसीकोस्वतन्त्रवादठहिरावे सर्वत्रकिसीनकिसीकल्पनासे अजादि सम्वाद कीसिद्धिहोनेसेसांख्यवादहीयहांइष्टहै इसमेंकारणकाअभावहै चमसवत् यथाह्यर्वाग्विलश्चमसऊर्ध्वबुध्नः इसमन्त्रमेंस्वतन्त्रतासेयहनामयहचमसहै यहइष्टशक्यनहीं क्योंकिसर्वत्रभीजिसविसीढवसेअर्वाग्विलादिकल्पनासिद्धहोनेसे ऐसेहीइसमेंअजाशब्दमेप्रधाननहींलेसक्तेहैं चमसकानिश्चायकयहवाक्यशेषहैइदन्तच्छिरएषह्यर्वाग्विलश्चमसऊर्ध्वबुध्नइति यहां कौनअजा।जाननेयोग्यहै कहिताहूं ॥

ज्योतिरुपक्रमात्तुतथाह्यधीयतएके ९

तुनाऽवधार्यते ॥

कौनअजाहै इसकाउत्तरवाक्यशेषहै एकेशाखीछान्दोग यदग्ने रित्यादिवेतेजजलअन्नजासेजातेहैं रोहितादिशब्दसामसे रोहितादिशब्दरूपमेंमुख्यऔरगुणाश्रयमेंभाक्तहैं तेजोवन्न* लक्षणाद्व्यरूपाअजालेनाउचितहै नरञ्जनादिसत्वादिगुणयोग

---

* अन्नलय ॥

गुणत्रयलक्षणा जैसेछान्दोग्यशाखामेंप्रधानकाग्रहणनहींहै तैसे-
हीश्वेताश्वतरमेंभीमायाकेप्रकरणसेप्रधानकाग्रहणनहींहै तैसे
यहांब्रह्मवादीकहतेहैं किंकारणंब्रह्मेति इसउत्थानमें तेध्यानयो
गानुगताअपश्यन्देवात्मशक्तिंस्वगुणैर्निगूढामिति इसउपक्रममें
पारमेश्वरीशक्तिजगविधायनीसुनीहैवाक्यशेषमें मायांतुप्रकृतिं
विद्यान्मायिनंतुमहेश्वरमिति अन्यः योयोनिंयोनिमधितिष्ठत्ये-
कइति इनमन्त्रोंमेंईशशक्तिहीकहीहै नस्वतंत्राअजानामी प्र-
करणसेवहीदैवीशक्तिअव्याकृतनामरूपा पहिलेनामरूपकीअव
स्थासेमन्त्रनेकहीहै मायाहीअजाहै कैसे तेजजलअन्नइनतीन-
रूपोंसेअजात्रिरूपाजानसक्तेहैं नतेजोबन्नरूपामेंअजाशब्दरूढहै
नवायौगिकहै इसकाउत्तर ॥

कल्पनोपदेशाच्चमध्वादिवदविरोधः १०

यहअजाशब्दअजाकृतिनिमित्तकनहींनताक्याहै चराचर
कीयोनितेजोबन्नरूपकीकल्पनासेउपदेशहै जैसे लोकमेंयदृच्छा-
सेकोईअजारक्तशुक्लकृष्णावर्णहो बहुबर्करासमानरूपबर्करउस
कोकोईअजसेवेहै कोईउसकोभोगकरछोड़ताहै इसढबभूतों
कीप्रकृतितेजोबन्नलक्षणात्रिवर्णाचराचरजगकोअपनेसमानज-
न्मतीहै अविद्वान्चनजभोगताहै विद्वान्त्यागताहै मध्वादिवत्
जैसे असमधुआदित्यकोमधु वाअधेनुवाणीकोधेनुअनग्निद्युलो
कादिकोअग्निकल्पनाकरीहै तैसे अनजाकोअजाकल्पाहै ति-
ससेतेजोबन्नमंअजाशब्दकाप्रयोगविरुद्धनहींहै यादृच्छिकशब्दहै
अन्नसेयहांपृथिवीलीहै तिससेतेजोबन्नरूपाहीप्रकृतिअजाहै औ
रनसांख्यप्रियप्रधानहै । जनेकागसुतनानारूपा तिमिजलतेज-
धरावहुरूपा ॥

——*◯*——

(पञ्चजनाधिकरण ॥ ३ ॥)

न संख्योपसंग्रहादपि नानाभावादतिरेकाच्च ॥ ११ ॥

बृहदारण्यकके छठे अध्यायमें सुना है कि जिसमें पञ्च पञ्चजन औ-
र व्योम स्थित है तिसही आश्रयको आत्मा अमृत ब्रह्म मानके मैं वि-
द्वान् अमृत जीवा हूं यस्मिन्पञ्च पञ्चजना आकाशश्च प्रतिष्ठितस्त-
मेव मन्य आत्मानं विद्वान्ब्रह्मामृतं मृतम्भवामीति भाषिक नाम
शतपथब्राह्मणस्वरविधायक ग्रन्थमें स्वरितानुदात्तो वेति इस सूत्र-
से जो मन्त्रमें अनुदात्तपर स्वरित था सो ब्राह्मणग्रन्थोंमें उदात्त है यह
अपवाद माना है यहां अन्तोदात्तस्वर पारिभाषिक है ॥

द्वि पञ्चशब्दसे पञ्चसंख्याका विषय परा पञ्चसंख्या सुनी है ते प-
ञ्च पञ्चक वर्गसे पचीस हुये इन पचीस संख्याओंने पचीस संख्येय पदा-
र्थोंको बुला लिया इससे सांख्यमतमें पचीस तत्त्व सिद्ध हुई मूलप्रकृ-
तिरित्यादि अर्थ सांख्यादि संख्या सुन्नसे प्रधानादि वैदिक हैं यह आ-
शा मत करो क्योंकि नानाभावात् पचीस तत्त्व तो नाना हैं पञ्चज्ञा-
नेन्द्रिय पञ्चकर्मेन्द्रिय इन दशमें पञ्चक दो हैं पञ्चतन्मात्रामें पञ्चस्थू-
लप्रकृति हैं तो भी आत्मा आकाश पृथक् कहा है तिससे सत्व रज तम
महत् अहङ्कार पञ्चक कर्तव्य है मन चार भूत जो पञ्च हैं इससे पचीसके
बीच और संख्या नहीं है पर पञ्चशब्द जनशब्दके सङ्ग समस्त है पञ्चज
न इन दोनोंकी समास न मानके पचीसकी संख्या पूरी करी है ब्राह्मणग-
स्वर एकपदका निश्चायक है प्रकटार्थकारने तो पाठक प्रसिद्ध अन्तो-
दात्तस्वर पारिभाषिक कहा है इस व्याख्यानको कल्पतरुकारने दू-
षित करके कहा कि अन्तानुदात्तं हि समाम्नातारः पञ्चजनशब्दमधी-

यतेइति पाठकप्रसिद्धिरसिद्धेति तथाचपञ्चपञ्चजना इतिमात्रि
कांतोदात्तःस्वरःयस्मिन्पंचपञ्चजनाइत्यन्तानुदात्तोब्राह्मणस्वरः
इतिविभाग तैत्तिरीयकप्रयोगसेएकपदस्वरविभक्तिहै आज्यत्वां
त्वापंचानांपंचजनानांदेवविशेषाणांयन्त्रायधर्त्रायगृह्णामीत्या-
ज्यग्रहणमन्त्रशेषःदेवतांकेकर्ममेंयन्त्रवदवस्थितंशरीरन्तदेवधर्त्र-
इहामुत्रभोगाधारंतस्मैतस्याविकल्पार्थमिति योजनोक्तिःसमा-
ससे नआवृत्तिनवीप्साहै वीवीप्साकेनहोनेसेपञ्चकदोकाअ-
सम्भवहै तिससेपचीसकीसंख्याअसिद्धहै अतिरेकाच्च पचीसतत्व
सेअधिकआत्माआकाशदोहैं तोसत्ताईसतत्वहैं आत्माप्रतिष्ठा-
काआधारकहाहै आत्माचेतनजोपचीसमेंसमागयातोवहआ
धारवोआधेयकेयोग्यनहोगापृथक्मानेसेतत्वकीसंख्याअधिक-
होगी वहतुमकोइष्टनहीं तैसे आकाशमेंभोजानो संख्याहोसु
ननेसेवहुतसुनेपचीसमतत्वोंकोकैसेपकड़तेहो जनपदतोउनमेंरू
ढनहींहै दिक्संख्येसंज्ञायां इमसूत्रसेसंज्ञामेंपञ्चशब्दकोजनश-
ब्दकेसङ्गसमासहै तोपञ्चजनशब्दकेचित्पञ्चजननामोंमेंरूढहै ते
केतहैं इससेपञ्चकहैं जेकोईपञ्चजननामहैंतेपञ्चहैं यथासप्तर्षयः
सप्तइति कर्मधारयसमासहै पञ्चतेजनाइति नकिपञ्चपञ्चवीज
कहिनेसेपचीसवीजकीनाईं यहांसमाहार ॥

प्राणादयोवाक्यशेषात् ॥ १२ ॥

वेमंत्रोंप्राणादिपांचवाक्यशेषसेप्रकटहैं प्राण१ चक्षुः२ श्रो-
त्र३ मन४ अन्न५ श्रुति प्राणस्यप्राणमुतचक्षुषश्चक्षुरुतश्रोत्रस्य-
श्रोत्रमुतान्नस्यान्नंमनसोयेमनोविदुरिति यस्मिन् इसमन्त्रसेआ-
गेकेमन्त्रमेंप्राणादिपञ्चब्रह्मस्वरूपनिरूपणाकेअर्थनिर्देशकरेहैं ते-
होपञ्चजनवाक्यशेषसेप्राप्तहैं क्योंकिसमीपहोनेसेफिरकैसेहुआ

प्राणादिमेंपञ्चजनशब्दकाप्रयोगतुमहीकहोतत्वोंमेंकैसेहुआ पञ्चजनशब्दकाप्रयोग हमतोसजातीयश्रुतिसेप्राणादिलेतेहैं नतुम्हारेतौरपरविजातीयस्मृतिसेकल्पिततत्वोंको।जनमसम्बन्धसे प्राणादिभीजनहैं जनवाचीपुरुषप्राणोंमेंकहाहै तेवाएतेपञ्चब्रह्मपुरुषाः इसमेंप्राणोहमातेत्यादिचब्राह्मणं जैसे अश्वकर्णावृत्तमें वाउद्भित्यागमेंरूढहैं तैसे पञ्चजनप्राणादिमेंरूढहैनयौगिकहै प्रसिद्धशब्दकेसङ्गअप्रसिद्धकाअर्थप्रसिद्धकेवारेमेंसमुझाजाताहैयथे।छिदायजेतपशुकामःयूपंछिनत्तिवेदिंकरोति प्रसिद्धार्थप्राणादिशब्दोंकेनिकटप्रयुक्तपञ्चजनशब्दसेप्राणादिकनिश्चितहैं किसीनेदेवपितरगन्धर्वअसुरराक्षसजेपांचकहेहैं अन्यनेचारवर्णनिषादपञ्चमजेकहेहैं क्वचिच्चयत्पांचजन्ययाविशिति अर्थ पांचजन्ययाप्रजयाविशतीतिविट् तयाविशापुरुषरूपयेन्द्रस्याह्वान।थैंघोषाःसृष्टादितियत्तद्युत्तंघोषातिरेकेणेन्द्राह्वानायोगादिति इसश्रुतिकेअनुसारप्रजामात्रकेग्रहणमेंभीकुछविरोधनहींहै ॥

ज्योतिषैकेषामसत्यन्ने ॥ १३ ॥

इससेतद्दे वाज्योतिषांज्योतिरित्यादि देवाउपासतइतिति ससेप्राणादिपञ्चजनशब्दसेकहेहैं औरनकिपचीसतत्वकीसंख्या में होमाध्यन्दिनोंकीशाखामेंपञ्चजनशब्दप्राणादिमें क्योंकिवेअन्नशब्दकोप्राणादिमेंपढ़तेहैं काखशाखामेंतोअन्नशब्दप्राणादिमेंनहींपढ़ाहै फिरकाखकेमतमेंप्राणादिपञ्चपञ्चजनकैसेहोंगे इसकाउत्तरहैकि यस्मिन् इसमन्त्रसेपूर्वकेमन्त्रमेंब्रह्मरूपनिरूपणकेअर्थज्योतिशब्दपढ़तेहैं तद्दे वा इसमन्त्रमें जैसे षोडसीग्रहणाग्रहणकाविकल्पहैइच्छाभेदसे तैसे शाखाभेदसे ज्योतिशब्दकाअन्नशब्दसेविकल्पहै ॥

(कारणत्वाधिकरण ॥ ४ ॥)

कारणत्वेनचाकाशादिषुयथाव्यपदिष्टोक्तेः

॥ १४ ॥

हरएकवचनसेसृष्टिअन्य२कहीहै आत्मनआकाशःसंभूतः इससेआकाशादिसृष्टिकही तत्तेजोसृजतेति इससेतेजआदिकही सप्राणमसृजतप्राणाच्छ्रद्धामिति इससेप्राणादिकोहै सइमान्लोकानसृजताम्भोमरीचिर्म*रमापइति इससेक्रमहीनलोकोंकाजन्मकहा यहक्रमविचित्र है छांदोग्य में असत्पूर्व सृष्टि पढ़ी है असद्वाइदमग्रआसीत्ततोवैसदजायतेति असदेवेदमग्रआसीत्तत्सदासीत्तत्समभवदितिच कहींअसद्वादकादूषणकरसत्पूर्वसृष्टिकीप्रतिज्ञाकी तद्धैकआहुरसदेवेदमग्रआसीदिति यहकहिफिर कहाकिहेप्रियदर्शनयहकैसेहोगा कुतस्तुखलुसोम्यैवंस्यादितिहोवाच कथमसतःसज्जायेतेति सदेवसोम्येदमग्रआसीदिति कहीं स्वयं'कृतिकाजगकीप्रक्रियाकही तद्धेदंतर्ह्यव्याकृतमासीत्तन्नामरूपाभ्यामेवव्याक्रियतइति ऐसेबहुविधविरोधसेऔरवस्तुमेंविकल्पकीअनुपपत्तिसेवेदान्त वचनजगके कारणके निश्चयपर नहीं-योग्यहैं स्मृति और न्याय की प्रसिद्धि से जगकारणप्रधानकाग्रहणन्याय्यहै सोमतश्रोचोसृज्यमानगगनादिमेंविगानहै तोभीस्रष्टामेंकिञ्चिद्विगाननहींहै कैसे यथाव्यपदिष्टोक्तेः सत्यंज्ञानमनन्तंब्रह्मेति तदात्मानंस्वयमकुरुत तस्माद्वाएतस्मादात्मनःआकाशःसंभूतःआकाशाद्वायुःवायोरग्निरग्ने रापअद्भ्यःपृथिवीपृथिव्याओषधयःओषधिभ्योन्नं अन्नाद्रेतारेतसःपुरुषःसवाएषपुरुषोन्न

* मर्त्यलोकइत्यर्थः ॥ ' अकर्तृकासृष्टिः ॥

रसमय: तैतिरीयशाखाकीश्रुतिहै बहुस्यांप्रजायेति अपनेकोब हुतहोनाकहनेसेसृष्टिकासृष्टासेअभेदकहाहै इदंसर्वमसृजतय- दिदंकिञ्चेति यहवाक्यसबजगकीउत्पत्तिकेपहिलेअद्वितीयसृष्टा- कोकहताहै जैसे यहतैतिरीयमेंब्रह्मकारणकहाहै तैसे छान्दो ग्यमेंहै सदेवसोम्येदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीयंतदैक्षतबहुस्यांप्र जायेयेति तत्तेजोऽसृजतेति तथात्मावाइदमेकएवाग्रआसीन्नान्य त्किञ्चनमिषत्सऐक्षतलोकानुसृजाइति यहऐतिरेयब्राह्मणहै।

ऐसेवाक्यकारणनिरूपणपरअविरुद्धार्थहैं तोभीकार्यमेंवि- रोधदेखतेहैं कहींगगनपूर्व कहींतेज:पूर्वसर्गकहाहै तोकार्यके विरोधसेकारणब्रह्मसबवेदांतोमेंअविरुद्धनहींहोसक्ताहै यहन योग्यहै क्योंकिस्वप्नसृष्टिकोप्रतिअहंकोअन्यथाजानकेसोहूं इस प्रत्यभिज्ञासेद्रष्टामेंभीनानात्वपहुंचेगा श्रुतिसृष्टिकोअपनीरी तिसेक्योंकहतीहैं इससेसमुझागयाकिउनकातात्पर्यसृष्टिकह मेंनहींनकोईसृष्टिसेवंधापुरुषार्थदेखतेहैंवासुनतेहैं नकल्पसर्ग हैं उपक्रमवोउपसंहारसेजहां२ब्रह्मविषयवाक्यहैं उनकेसङ्गि लकेकामकरतीहै श्रुतिदिखातीहै किसृष्टिआदिप्रपञ्चब्रह्मबो धार्थहै अन्नेनसोम्य१शुङ्गेनापोमूलमन्विच्छाद्भि:सोम्यशुङ्गेनतेजो मूलमन्विच्छतेजसासोम्यशुङ्गेनसन्मूलमन्विच्छसन्मूला:सोम्येमा प्रजा:यहसामहै अर्थ जैसे घटमृत्तसेभिन्ननहींहै तैसे कार्यकारण सेभिन्ननहींहै यहीजतानेकेअर्थसृष्टिकाप्रपञ्चसुनायाहै ब्रह्मा धाधीनतोफलसुनतेहैं ब्रह्मविदाप्नोतिपरं ॥

समाकर्षात् ॥ १५ ॥

कारणविषयविरोधकानिरोधसुनोअसद्वाइदमिति निर

१ कार्येणलिंगेन ॥ * सव्यापरं ॥

त्मककारणनहीं किससेजाना असन्नेवसभवत्यसद्ब्रह्मेतिवेदचेद स्तिब्रह्मेतिचेद्वेदसन्तमेनन्ततोविदुः इससेअसद्वादकानिषेधकर अस्तिस्वरूपब्रह्मवाद्यअन्नमयादिकोशोंकोपरम्परासेप्रत्यगात्मा-कानिर्धारणकर फिरसोकामयतेतिउसीप्रकृतिकोसमाकर्षणक रफिरसृष्टिकोउसीतेकहकेतसत्यंयह्नीकहीपूराकरफिरउसीप्रकृ तअर्थमें असद्वादूदं जोइसमन्त्रमेंनिरात्मकमानेतोअन्यकेसा माकर्षणमेंअन्यकेउदाहरणसेअसम्बन्धवाक्यहोजावेगातिससेस त्पदव्याकृतनामरूपकाबोधकहै उत्पत्तिकेपहिलेनामरूपप्रकट-नथा नकिनरशृङ्गसमतुच्छथा लोकमेंअसत्मेंकुकजन्मानदेखनेसे इसअपेक्षासेमतहोब्रह्मअसत्केस ानथायहउपचारहै तित्तिरि श्रुतिमेंसूत्रकोजोड़अवछान्दोग्यमेंजोड़तेहैं असदे तत्सदासीदि तिसमाकर्षणसेजोअत्यन्तअभावमानेतोतत्सदासीदिति किस कासमाकर्षकरताहै तद्वैके यहांएकशाखीनहींहै किन्तुअनादि संसारचक्रस्थवेदवाक्यहैं क्योंकि होममेंविकल्पहोताहै नवस्तु मेंअसम्भवसे तिससेश्रुतिग्रहीतसत्पक्षकोदृढ़ताकेलियेमन्दमति योंसेजोकल्पितअसत्पक्षथा उसकाकथनकरनिराकरण कराहै तद्वेदन्त इममेंभीबिनाअध्यक्षकर्त्ताकेजगरचनानहींकहीहै क्यों किसएषइहप्रविष्टआनखाग्रेभ्यः इममेंभीअध्यक्षकाव्याकृतका-र्यमेंअनुप्रवेशकासमाकर्षणहै जोनिरध्यक्षव्याकरणमानेगेतोस इसशब्दसेकार्यमेंअनुप्रवेशीकोनसमाकर्ष कियाजावेगा न कोई सुनतेताहैं चेतनकादेहमेंअनुप्रवेशजोदेहमेंप्रविशहै वहचेतनहै कहां पश्यंश्चक्षुःशृण्वश्श्रोत्रंमन्वानोमनइत्यादि श्रुतिभी साध्य क्षजगकोव्याक्रियादिखातीहै तेनजीवेनात्मनानुप्रविश्यनामरू पेव्याकरवाणीति व्याक्रियते यहकर्मकर्त्तामेंलकारहै ईश्वरव्या कर्त्ताहोनेपरभीसोकर्यकोअपेक्षासेकहाहै जैसे लूयतेकेदारःस्व

यमेवेतियहांकाटनेवालेकेहोनेपरभीकहाकिखितआपही काटता है अथवाकर्ममेंलकारहै तोकर्त्तांकाअर्थसेआक्षेपकरप्रयोगहोता है य-थागम्यतेग्रामः यहांचैत्रकर्त्ताअर्थाक्षिप्तहै ॥

(षोडशकलाधिकरण ॥ ५ ॥)

जगद्वाचित्वात् ॥ १६ ॥

योवैबालाकेएतेषांपुरुषाणांकर्त्तायस्यवै*तत्कर्मसवैवेदित-व्यइति जीव मुख्यप्राण ईश वाक्यशेषमें अथास्मिन्प्राणएकधा भवतीति आदित्ये पुरुषश्चन्द्रमसिपुरुषः इनकाभीप्राणकर्त्ताहै आदित्यादिवाप्राणावस्थाविशेषहैं कतमएकोदेवइतिप्राणइति सब्रह्मत्याचक्षतेइत्यादि यस्यमहिमानःसर्वेदेवाः त्यत्परोक्षशास्त्रैकवेद्यहै जीवकेभीधर्माधर्मलक्षणकर्महैं यस्यवैतत्कर्मेति बालाकिऔरअजातशत्रुदोनोंएकसोतेपुरुषकेपासगयेउसकोराजनेकहाकिहेवृहत्पांडुरवासःसोमराजन्इससम्बोधनसे सम्बोधन कियापरतोभीवहसम्बोधननसमुझातोजानाकिअभोक्ताप्राणादिसम्बोधननजाननेसेअनात्माहैं फिरराजानेयष्टिघातसेउसको उठाकेभोक्ताजीवकाबोधवालाकिकोकराया तिससेलोकमेंउनाजीवलिङ्गहै तद्यथाश्रेष्ठीस्वैर्भुङ्क्तेयथावास्वाःश्रेष्ठिनंभुञ्जन्त्येवमेवैषप्राज्ञात्मैतैरात्मभिर्भुङ्क्तेएवमेवैतआत्मानएनमात्मानंभुञ्जन्तीति अर्थ जैसे गृहीभृत्यादिकाकमायाखाताहै भृत्यादिउसकेउपजीवीहैं तैसे जीवभीभोगोपकरणआदित्यादिप्रकाशसेभोगताहै वेभीहविर्ग्रहणादिसेजीवकेउपजीवीहैं इससेभीजीवकालिङ्गभोक्तृत्वहै प्राणभृत्जीवभीप्राणहीहै अबतोसिद्धहुआकि

* परिस्पन्दकर्महै

ख्यप्राणवोजीवइनदोमेंसेअन्यतरकाग्रहण नईशका यहन ई-
शहै उपक्रमसे सृषावैखलुमासम्बदिष्ठाब्रह्मतेब्रुवाणीति ईशसे
अन्यस्वतन्त्वकर्त्तानहीं इनपुरुषोंकोईशाधीनकर्तृत्वहै चलनवो
अदृष्टवाचकयहांकर्मशब्दनहींहै नउनदोनोंकाप्रकरणहै नशब्द
नेकहेहैं एतत्कर्मइससेपुरुषोंकोनहींकहाहै कर्मशब्दनपुंसकहै
औरएकबचनहै तोबहुतपुरुषोंकोनलेसकेगा तोप्रत्यचजगत्सर्वं
नामएतत्पदसेनिर्देशकराहै एतदेवजगत्कर्मयत्क्रियतइति य-
द्यपिजगत्भीअप्रकृतवोअपठितहै तदापिजगकेएकदेशआदि-
त्यादिपुरुषोंकेकहिनेसेसमस्तजगकायहांग्रहणहै जिनसूर्यादिपु
रुषोंकोबालाकिनेब्रह्मकहाथा उनकोअब्रह्मठहिराकेसबजगक
र्त्तासर्वज्ञईशअविधारितहै ॥

जीवमुख्यप्राणलिङ्गान्नेतिचेत्तद्व्या-
ख्याते ॥ १७ ॥

जैसेस्वामीसेवकोंसेऔरसेवकस्वामीसेमिथोव्यवहरतेहैं तै-
सेहीप्राज्ञआत्माजीवात्माओंसेऔरजीवात्माप्राज्ञात्मासेमिथो-
व्यवहरतेहैं इमठवजीवकेचिन्हसेजीवऔरप्राणकेचिन्हसेप्राणहै
औरनकिईश्वर सोमतकहो क्योंकि ब्रह्मकहिनेकीप्रतिज्ञाकेउप
क्रमसेऔर सब पापोंसेछुटकेसवसेश्रेष्ठस्वाराज्यआधिपत्यकोपा-
ताहै जोऐसाजानताहै इसउपसंहारसेवाक्यब्रह्मबोधकनिश्चि
तहै औरयहोबातउपासात्रैविध्य इससूत्रमेंव्याख्यातहै श्रुति
ब्रह्मतेब्रवाणिमर्वान्याप्मानोपहत्यसर्वेषांभूतानांश्रेष्ठंस्वाराज्य-
माधिपत्यम्पर्येतियएवंवेदेति प्राणएवैकधाभवतीति उपसंहार
भोब्रह्मविषयकहै निरतिशयफलसुनसेसर्वान्याप्मनोपहत्यसर्वं

षांचभूतानांश्रेष्ठंस्वाराज्यमाधिपत्यम्पर्य्येतियएवंवेदेति ॥

प्राणशब्दभीब्रह्मविषयकदेखाहै प्राणबन्धनंहिसोम्यमनः इत्यादि उपक्रमवोउपसंहारमें जीवलिङ्गभीअभेदकीअभिप्रायसे ब्रह्मविषयकहै ॥

अन्यार्थंतुजैमिनिप्रश्नप्रतिवचनाभ्यामपिचैवमेके ॥ १८ ॥

इसवाक्यमेंयहविवादमतकरो किजीवपरवाब्रह्मपरहै जिससे जीवकेपरामर्शकोइसमेंजैमिनि ब्रह्म कोप्रतिपत्त्यर्थ मानताहै किमसे प्रश्नप्रतिवचनाभ्यां प्रश्न क्वैषएतद्बालाकेपुरुषोशयिष्टक्वाएतदभूतकुतएतदगादिति ॥

अर्थ हेबालाके जिससोनेमेंकुछज्ञाननहींरहताहै तैसायहपुरुषकहांसोताहै सोताहुआकिसकेसङ्गएकहोताहै फिरकहांसेनिकलआताहै प्रतिवचन यदासुप्तःस्वप्नंनकञ्चनपश्यत्यथास्मिन्प्राणएवैकधाभवतीत्यादि शयनवोभवनका आधारउठनादिप्राणशब्दवाच्यब्रह्महै ॥

एतस्मादात्मनःप्राणायथायतनंविप्रतिष्ठंतेप्राणेभ्योदेवादेवेभ्योलोकाइति सुषुप्तिमेंपरब्रह्मकेसाथजीवएकताको पहुंचता है फिरजाग्रतमेंपरब्रह्मसेप्राणादिजगजन्मताहै यहवेदांतसीमाहै अपिचैवमेकेएकशाखिवाजसनेयिन इसबालाकिऔरअजातशत्रुकेसम्बादमेंस्पष्टविज्ञानमयशब्दसेजीवकोपढ़केजीवसे भिन्नपरमात्माकोपढ़तेहैं यएषविज्ञानमयःपुरुषःक्वैषतदाभूत्कुतएतदगादिति इसप्रश्नमें प्रतिवचनमेंभी यएषोंतर्हृदयआकाशस्तस्मिन्शेतइति आकाशशब्दपरमात्मामेंप्रयुक्तहै दहरोस्मिन्नन्त-

राकाश इमसे किञ्चसर्वएतआत्मानोव्युच्चरन्तीति इसमेंउपाधि
वालेजीवोंकाअन्यसेनिकारनाकहितेहुये परमात्माकोकारणक-
हतेहैं ॥

(वाक्यान्वयाधिकरण ॥ ६ ॥)

वाक्यान्वयात् ॥ १९ ॥

बृहदारण्यकेचौथेअध्यायमेंयाज्ञवल्क्यनेअपनीमैत्रेयीनामी
भार्याकोआत्मज्ञानकाउपदेशदियाथा ॥

नवाअरेसर्वस्यकामायसर्वंप्रियंभवत्यात्मनस्तुकामायसर्वंप्रि
यंभवति आत्मावाअरेद्रष्टव्य:श्रोतव्योमन्तव्य:निदिध्यासितव्यो-
मैत्रेय्यात्मनोवाअरेदर्शनेन श्रवणेनमत्याविज्ञानेनेदंसर्वविदित-
मितिविज्ञानात्माकिम्वापरमात्मा।प्रिय शब्द से सूचित है जोभो
क्ताआत्माहै उसकेउपक्रमसेविज्ञानात्माजानाजाताहै औरआ
त्मविज्ञानसेसर्वविज्ञानकाउपदेशहै तिससेपरमात्माजानाफिर
पतिस्त्रीपुत्रवित्तादिभोग्यमात्रसवजगआत्मार्थप्रियहै इसउपक्र
ममेंभोक्तात्मासेअन्यनहींकहाहै वोचसेंभोइदंमहत्भूतमनंतमप
रंविज्ञानघनएवएतेभ्योभूतेभ्य:समुत्थायतान्येवानुविनश्यतिन-
प्रेत्यसंज्ञास्तीति इसमेंभीविज्ञानात्माहोद्रष्टव्यदिखातीहै फिर
विज्ञातारमरेकेनविजानीयादिति इसउपसंहारमेंभीउपदिष्ट-
हीविज्ञानात्माकोदिखातीहै अर्थ इदं प्रत्यक् महत् अपरि-
छिन्न भूतं सत्य अनन्तं नित्य अपारं सर्वगविज्ञानघन: चिदेक-
रसएतेभ्य: कार्यकारणरूपजोजायमानभूतहैं तिनसे साम्येनो
त्थायभूतोपाधिकजन्मानुभूयतान्येवभूतानिलीयमानान्यनुल-
यविनश्यतिऔपाधिकमरणानन्तरं विशेषधीर्नास्तीत्यर्थ: यहमत

कहाईशकाउपदेशहैकिससे वाक्यान्वयात् आगेपीछेकेदेखने सेवाक्यईशहीकोकहता है यहबातभीकैसेवनेगीजोयामैत्रेयी- कोकहाहै अमृतत्वस्यतुनाशास्तिवित्तेनेति तबउसनेकहाकिमैं जिसधनसेमुक्तनहूं उसकोलेक्याकरूं येनाहंनामृतास्यांकिमहं तेनकुर्यांयदेवभगवान्वेदतदेवमेंब्रूहीति फिर ब्रह्मतंपरादाद्यो न्यत्रात्मनोब्रह्मवेदेतिजोजगकोआत्मासेअन्यअस्वतन्त्रदेखताहै उसमृषादेखनेवालेकोवुहीजगश्रेयमार्गसेगिरादेताहै इससेभेद दूरकरसबवस्तुकाआत्मासेअभेदकहाहै इदंसर्वंयदयमात्मेति जैसे दुंदुभिशङ्खवीणादिकोध्वनिमेंविशेषउनकेनहींसमुझपरतेहैं शुक्तिमेरूप्यसमसामान्यसेकल्पितहैं औरउनसेभिन्ननहींहै तैसे आत्माकेभानसेभास्यसबआत्ममात्रनिश्चितहै आत्माकेनामरूप कर्मप्रपञ्चकारणकोकहतीश्रुतिआत्माहीकोबोधकरातीहै अस्य महतोभूतस्यनिश्वसितमेवहृग्वेदइत्यादि जैसे सबजलकाएका यनसमुद्रहै तैसे प्रपञ्चकाएकस्थानईशहै एकायनमनन्तरमवा ह्यंकृत्स्नंप्रज्ञाघनंइति तिससेईशकेदर्शनादिकाउपदेशहै ॥

प्रतिज्ञासिद्धेर्लिंगमाश्मरथ्यः ॥ २० ॥

एककेजाननेसेसबजानाजाताहै इसवेदिकीप्रतिज्ञाकीसि द्धिसेविज्ञानात्माऔरपरमात्माकाअभेदकीर्त्तनमें लिङ्ग है जैसे कटकादिभूषणकार्यरूपसेपृथक् औरकारणहेम रूप से एकही है तैसेहीजीवब्रह्मएकहीहैं लिङ्ग अर्थात्जीवब्रह्मैक्यबोधनं इसआ श्मरथ्यकेमतमेंअभेदहै अस्यचप्रतिज्ञा आत्मनिविज्ञातेसर्वमि दंविज्ञातंभवतीति इदंसर्वंयदयमात्मेतिच तस्याःप्रतिज्ञायाः सिद्धिंसूचयत्येतल्लिङ्गं यत्प्रियसंसूचितस्यात्मनोद्रष्टव्यत्वादिसंबी र्तनंयदिहिविज्ञात्मापरमात्मनोन्यः स्यात् ततःपरमात्मविज्ञा

नेपिविज्ञानात्मानविज्ञात:इत्येकेनविज्ञानेनसर्वंविज्ञानंयत्प्रतिज्ञातंतद्धीयेततस्मात्प्रतिज्ञासिध्यर्थंविज्ञानात्मपरमात्मनोरभेदांशेनोपक्रमणमित्याश्मरथ्यआचार्योमन्यते जीवब्रह्मकाभेदाभेद होनेसे अभेदांशकरजीवोपक्रमणप्रतिज्ञासाधकहै ॥

उत्क्रमिष्यतएवंभावादित्यौडुलोमि: २१

जीवदेहादिसे कलुषितऔरज्ञानध्यानोपासनादिसेप्रसन्नना मरूपकोछोड़देहसेनिकरपरमेश्वरकेसङ्गसेएकहोताहै मुक्तिमें अभेदसंसारमेंभेदहैइसऔडुलोमिमतमेंभेदाभेदहै विज्ञानात्मनएवदेहेन्द्रियमनोबुद्धिसंघातोपाधिसंपर्कात्कलुषीभूतस्य ज्ञानध्यानादिसाधनानुष्टानात्संप्रसन्नस्यदेहादिसंघातादुत्क्रमिष्यत:-परमात्मैक्योपपत्तेरिदमभेदेनोपक्रमणमित्यौडुलोमिर्मन्यते संसारदशामेंभेदहै मुक्तिमेंअभेदहै औडुलोमिमतसे इसमेंश्रुतिमानहै एषसंप्रसादोस्माच्छरीरात्समुत्थायपरंज्योतिरुपसंपद्यस्वेनरूपेणाभिनिष्पद्यतइति कहींताजीवहीकेआश्रयनामरूपकहेहैं नदीकेदृष्टान्तमें यथानद्य:स्यन्दमाना:समुद्रेस्तंगच्छन्तिनामरूपेविहायतथाविद्वान्नामरूपाद्विमुक्त:परात्परंपुरुषमुपैतिदिव्यमि---ति ॥

अवस्थितेरितिकाशकृत्स्न: २२

परमात्माहीजीवरूपसेअवस्थितहै जैसेरज्जुकासांपरूपसेवस्थानउसीअवस्थितिसे विज्ञानात्माकोद्रष्टव्यकहाहै यहकाशकृत्स्नकामतहै वस्तुसेजीवब्रह्मकाभेदनहींहोनेसे अस्यैवपरमात्मनोनेनापि विज्ञानात्मभावनावस्थानादुपपन्नमिदमभेदेनोपक्रमणमितिकाशकृत्स्नआचार्योमन्यतेब्राह्मणं अनेनजीवेनात्मनानुप्र

विश्वनामरूपेव्याकरवाणीति ऐसेवाक्यपरमात्माकासाक्षात्‌जी
वभावमेंअवस्थानदिखातेहैं मन्त्रवर्णश्चसर्वाणिरूपाणिविचिन्त्यधी
रोनामानिकृत्वाभिवदन्यदास्तइत्यादि काशकृत्स्नकेमतमेंअवि
कृतपरमेश्वरजीवहैअन्यनहींआश्मरथ्यकेमतमेंयद्यपिजीवकापर
सेऽनन्यत्वअभिप्रेतहैतथापिप्रतिज्ञाकीसिद्धिसापेक्षताकेकथनसे
कार्यकारणभावभीकछुअभिप्रेतहैफिरऔडुलोमिमतमेंभेदाभेद
स्पष्टजानाजाताहै इनमेंकाशकृत्स्नमततोवेदानुसारीहै तत्त्वम
सीत्यादिसे ईशज्ञानसेमुक्तिकीसिद्धिहै जीवकोविकारमानेमेंवि
कारसेप्रकृतिकेसाथलयहोनेमेज्ञानसेमुक्तिनसिद्धिहै।गौणउपाध्या
श्रयनामरूपकाजीवमेंउपचारहैजीवकाजन्मकहींअग्निविस्फुलिं
गन्यायसेसुनाहैवहभीउपाध्याश्रयहै जीवस्थूलभूतोंसेनिकलाश्रु
तिनेदिखाकेजीवहीद्रष्टव्यदिखायाहैइसमेंइनतीनोंसूत्रोंकोजो
ड़नाप्रतिज्ञायहप्रतिज्ञाकीथीकिआत्माकेजाननेसेसबजानाजा
ताहै इदंसर्वंयदयमात्मेति नामरूपकर्मसबप्रपंचकाएकसेप्रसव
औरप्रलयवर्णनकियाथा दुन्दुभिआदिदृष्टांतभीकहे औरकार्य
कारणकाअभेदभीकहाइसीप्रतिज्ञाकीसिद्धिसूचनकरातीहै यह
लिङ्गजोमहत्‌भूतद्रष्टव्यकोभूतोंसेविज्ञानात्माकासमुत्थानकह
था यहआश्मरथ्यकामतहै अभेदमेंभीएकविज्ञानसेसबविज्ञान
कीप्रतिज्ञामानतेहैं उत्क्रमिजबजीवज्ञानध्यानकरदेहसेकूटगात
बस्वच्छहोपरमात्माकेसङ्गएकहोगायहीअभेदऔडुलोमीमानता
है अवस्थि परमात्माहीविज्ञानस्वरूपसेअवस्थितहैयहीअभेदका
शकृत्स्नमानताहैयहतोउच्छेदकाकथनहैअभेदकथनकैसेहोसकता
है एतेभ्योभूतेभ्यःसमुत्थायतान्येवानुविनश्यतिनप्रेत्यसंज्ञास्तीति
यहदोषनहीं क्योंसुनो। विज्ञानात्माऔरपरमात्माकाकछुविशेष
नहींइसीअभिप्रायसेविनाशकाकथनहैऔरआत्माकेउच्छेदको न

भिप्रायसेनहीं है फिरमैत्रेयीनेमुनिकोपूछाकितुममुझकोइसमें
मोहकरातेहोकिज्ञानरूपआत्माकातो ज्ञानकेअभावमेंनाशहो-
जावेगा अत्रैवमांभगवानमूमुहन्नप्रेत्यसंज्ञास्तीति नवाअरेहंमोहं
ब्रवीम्यविनाशीवाअरेयमात्मानुच्छित्तिधर्मामात्रासंसर्गस्त्वस्यभव
तीति अर्थ मुनिनेकहाकिकूटस्थनित्यविज्ञानघनआत्माहैइसका
उच्छेदनहीं है परन्तुभूतवोइन्द्रियोंसेविद्याद्वारा जब असंसर्ग है त-
बसंसर्गसेहुआजोविशेषज्ञानउसकेअभावसेमरेकोसंज्ञानहींरहि
तीयहअर्थकहाथानप्रेत्यसंज्ञास्तीतिइसवाक्यसे विज्ञातारमइत्या
दिजोविज्ञानात्माद्रष्टव्यकर्त्ता वाचककर्त्ता शब्दसेकहाथावहीकाश
कृत्स्नकेमतसेपरिहर्तव्य है फिरयत्रहिद्वैतमिवभवतितदितरइतरं
पश्यति इहांसे अविद्याविषयमें उसीको विशेषज्ञान का प्रपंच कर
फिरयत्रत्वस्यसर्वमात्मैवाभूत्तत्केनकंपश्येदिति इनसेविद्याविष-
यमेंजोदर्शनादिलक्षणविज्ञानकाअभावकहतीहै फिरभीविषया
भावमेंआत्माकोजानेयहशंकाकरकहाकिविज्ञाताकोकिस्से जा
नेतोतोविशेषविज्ञानकेअभावबोधपरवाक्य है नकेवलविज्ञानधा
तुहीसन्कहाहै अबसबकोयहमाननाचाहियेकिजीवब्रह्मकाभेद
अविद्यारचितनामरूपदेहादिउपाधिसेहै नपारमार्थिकहै अ-
न्योसावन्योहमहमस्मीतिनसवेदयथापशुःमृत्योःसमृत्युमाप्नोति
यइहनानेवपश्यतीतिजोभीभेददृष्टिकेभेदकहैं क्षेत्रज्ञपरमात्माऐ
सेनामभेदसेक्षेत्रज्ञपरमात्मासेवोपरमात्माक्षेत्रज्ञसेभिन्न है यही
आत्मभेदमुमुक्षुकोदृढ़ है वहनिरर्थकहोजावेगा क्योंविषयभेदमा
ननेसे एकहीआत्मानाममात्रकेभेदसेबहुधापढ़तेहैं किसाविद्या
तज्ज्ञबुद्धिरूपायांगुहायांस्थितोजीवोभवतितस्यामेवब्रह्मनिहित-
मिति श्रुति सत्यंज्ञानमनन्तं ब्रह्मयोवेदनिहितंगुहायामिति
जीवस्थानसेअन्यगुहानहीं है नहींब्रह्मसे अन्य गुहा में निहित है

क्यों स्रष्टाहीकाघुसनाजीवरूपसे तत्सृष्ट्वातदेवानुप्राविशदिति। ब्रह्मजीवके अत्यन्ताभेदमेंजीवकास्पष्टभानसेब्रह्महीस्पष्टहो इस- सेस्पष्टवो अस्पष्टसेदोनोकाभेदहै यहनहींहै दर्पणमेंप्रतिबिम्बको स्फुटताहैभी परजैसेविम्बमेंस्फुटतानहींहैकल्पितभेदोंसेविरुद्ध- धर्मोंकीव्यवस्थायुक्तहै भेदाभेदवादीज्ञानकर्मसे कृतकंनित्यं य त्क्रियासाध्यं तदनित्यं इससेबाधितहै जेअभेदमेंभीभेदआग्रह सेमानतेहैं तेश्रेयोहारकजोसम्यग्दर्शनहै उसकोबाधतेहैं कृतक मुक्तिकल्पतेहैं न्यायमेंनहींचलतेहैं ॥

——*◯*——

(प्रकृत्यधिकरण ॥ ७ ॥)

प्रकृतिश्चप्रतिज्ञादृष्टांतानुपरोधात् २३

प्रकृतिघटरुचकादिकेमृतहेमादिजैसेकारणहैं वानिमित्त कुलालहेमकारादिजैसेकारणहैं तैसे ब्रह्मको कैसीकारणताहै यहविमर्शहै इच्छापूर्वककर्तृत्वसुननेसेकेवलनिमित्तकारणहै स इच्छांचक्रेसप्राणमसृजतेत्यादि कुलालादिनिमित्तकारणमेंही च्छापूर्वककर्तृत्वदेखाहै लोक में अनेककारकपूर्विकाक्रियाकीफ कीसिद्धिदेखीहैयहांन्यायआदिकर्त्तामेंभीपहुंचानेकेयोग्यहै जै राजावैवस्वतादिईश्वरोंकोकेवलनिमित्तकारणत्वहोहैतैसेपर श्वरकोभीकेवलनिमित्तकारणत्वहोजाननेकेलियेयुक्तहै यद्या इच्छासेकर्तृत्वनिश्चितहै तथापिब्रह्मप्रकृतिनहींकर्त्ताहोनेसेजो जिसकाकर्त्ताहै वहउसकीप्रकृतिनहीं जैसे घटकाकर्त्ताकुला जगकर्त्तासेभिन्नोपादानकहै कार्यसेघटकेसमान ब्रह्मजगका पादाननहीं ईश्वरहोनेसेराजाकेसमान जगब्रह्मप्रकृतिक हीं ब्रह्मसेविलक्षणहै।जैसे जोइसप्रकारसेहै वहतैसाहीकुलाल

विलक्षणघटसमानहै जग सावयव अचेतन अशुद्ध देखते हैं
कारणभीउसकातैसाहीहोनाचाहिये कार्यकारणका समानरूप
देखनेसेब्रह्मतोऐसानहींहैनिष्कलन्निष्क्रियंशांतन्निरवद्यंनि*रञ्ज
नमिति तोअबब्रह्मकारणनहींवनाप्रधानहींठोररहाहै ब्रह्मको
कारणबतातीश्रुतिनिमित्तकारणमें हो सारहीउठबैठोप्रधानबो
धस्मृति तुमतोकहिचुकेअबमेरीसुनो प्रकृतिश्च ब्रह्महीउपादान
वोनिमित्तकारणमानोनहींकेवलनिमित्तकारण क्योंकि प्रति-
ज्ञादृष्टान्तानुपरोधात् ऐसेश्रौतप्रतिज्ञावोदृष्टांत इनकारोकन
होगी प्रतिज्ञा उततमादेशमप्राक्ष्योयेनाश्रुतंश्रुतम्भवत्यमतंमत
मविज्ञातम्विज्ञातमिति दृष्टान्त एककेजानेसेअन्यसबजानाजा
ताहै वहउपादानकारणकेजाननेसेसबकाजाननासम्भवहै क्यों
कि कार्यउपादानेसेभिन्ननहीं लोकमेंनिमित्तकारणकाकार्यसे
भेदहै जैसे तक्षाखाटसेभिन्नहै दृष्टान्तभोउपादानकेविषयमें य
थासोम्यैकेनमृत्पिंडेनसर्वंमृण्मयंविज्ञातंस्याद्वाचारम्भणंविका--
रोनामधेयंमृत्तिकेत्येवसत्यमिति तथैकेनलोहमणिनासर्वंलोह-
मयम्विज्ञातंस्यादेकेननखनिकृन्तनेनसर्वंकार्ष्णायसम्विज्ञातंस्या
दिति तैसेहीमुण्डकमेंभोपढ़ा कस्मिन्नुभगवोविज्ञातेसर्वमिद
म्विज्ञातंभवति यहो प्रतिज्ञा कर यथापृथिव्यामोषधयःसम्भव
न्ति यहोदृष्टान्तहै आत्मनिखल्वरेदृष्टेश्रुतेमतेविज्ञातेइदंसर्वंवि-
दितमिति यहप्रतिज्ञाबृहदारण्यमेंहै सयथादुन्दुभेर्हन्यमानस्य-
नबाह्यान्शब्दान्शक्नुयाद्ग्रहणायदुन्दुभेस्तुग्रहणेनदुन्दुभ्याघात
स्यवाशब्दोगृहीतःयहदृष्टांतहै यतोवाइमानीति इससेभीउपा-
दानहै जनुकर्त्तुःप्रकृतिरिति इसविशेषस्मृतिसे जैसे लोकमेंमृ

* तमःशून्य

त् हेमादिउपादानकारणकुलालहेमकारादिअधिष्ठाताकोंकी अपेक्षाकरकेप्रवर्तेहैं तैसे उपादानसत्ब्रह्मकारणको अन्य अधिष्ठाताअपेक्षितनहीं है उत्पत्तिकेपहिलेएक अद्वितीयथाइसनिश्चयसे अन्य अधिष्ठाताकाअभावभोप्रतिज्ञावोदृष्टांतकेनिरोधसेकहाहुआजानो ॥

अभिध्योपदेशाच्च २४

अभीध्यासर्गसङ्कल्पध्यानचिन्तनहै ॥

चेतनकाकार्यकेसाथअभेदहोनासुनाहै तिससेअचेतनअणुऔरप्रधानविश्वनिदाननहींहैं अभिध्योपदेशश्चात्मनःकर्तृत्व प्रकृतित्वेगमयति ॥

सोकामयतबहुस्यांप्रजायेयेति तदैक्षतबहुस्यांप्रजायेयेतिचवचनमेंसङ्कल्पपूर्वजोस्वतन्त्रप्रवृत्तिहै तिससेकर्त्ताजानाजाताहै यहप्रत्यगात्मविषयसेबहुतहोनेकेसङ्कल्पकाप्रकृतिभीजानाजाताहै ॥

साक्षाच्चोभयाम्नानात् २५

जन्मनाशजेदोब्रह्महीसेसुनेहैं तिससेनिमित्तऔरउपादानब्रह्महीहै अथवाईक्षणसेब्रह्मकोकेवलनिमित्तहीसमुझाथा जैसेकुम्हारमट्टीकाद्रष्टानिमित्तकर्त्ताहै औरजिससेभूतोंकाजन्महै इसपञ्चमीविभक्तिसेउपादानकाअपादाननामधरकेब्रह्मको प्रकटउपादानकहाहै श्रुति आकाशादेवसमुत्पद्यंतेआकाशंप्रत्यस्तंयन्तीति सर्वाणिहवाइमानिभूतानीत्यादि इनमेंसाक्षाद्ब्रह्महीसेउत्पत्तिप्रलयदोनोंवेदनेकहेहैं इतश्चप्रकृतिर्ब्रह्मयत्कारणंसाक्षाद्ब्रह्मैवकारणमुपादायोभौप्रभवप्रलयावाम्नायेते सर्वाणिहवाइमानिभूतान्याकाशादेवसमुत्पद्यन्तेआकाशप्रत्यस्तंयन्तीति

जोजिससेजन्मताहै वोजिसमेंमिलताहै सोहीउसकाउपादान प्रसिद्धहै जैसे व्रीहियवादिकीपृथिवी साचादिति साचादाका शादेवेति श्रुति उपादानांतरकेअभावकोदिखातीहै प्रत्यक्षमय स्वनोपादानादन्यत्रकार्यस्यदृष्टः ॥

आत्मकृतेःपरिणामात् २६

जैसे मृतिकाघटाकारपरिणामतीहै तैसेहीब्रह्मप्रपञ्चाकार-परिणामताहै और ब्रह्महीप्रपञ्चरूपसेकर्म औरस्वरूपसेकर्त्ताहै जैसेरज्जुकीसर्पाकारप्रतीतिहै इतश्चप्रकृतिर्ब्रह्मयत्कारणंब्रह्मप्र क्रियायांतदात्मानंस्वयमकुरुतेत्यात्मनःकर्मत्वंकर्तृत्वंचदर्शयति आत्मानं इससेकर्मवो स्वयमकुरुत इससेकर्त्तादिखातीहै पूर्वसि द्धकर्त्तासोपश्चात्सिद्धकर्मकैसेहोसकेगा परिणामसेकहिताहूं पूर्व सिद्धिसत्आत्माभीविशेषविकारात्मासेआत्माकोपरिणामाताहु आवहीपरिणामीमृदादिविकृतिमेंउपलब्धहै स्वयं इसपदकेग्रह णसेनिमित्तांतरकीनिवृत्तिप्रतीतकरीहै अथवापरिणामादिति पृथक्सूत्रहै उसकायहअर्थहै ब्रह्महीप्रपञ्चरूपविकारात्मासेपरि णामपढ़तेहैं सच्चत्यच्चाभवन्निरुक्तंचानिरुक्तमिति ब्रह्महीकोप्रकृ तित्वहै अर्थश्रुतिकासत्प्रत्यक्षभूततीन त्यत्परोक्षभूतदो निरुक्तं कहिनेकोशक्य कपोतरूपकादिब्रह्महीहुआथा ॥

योनिश्चगीयते २७

वेदांतेषु कर्त्तारमीशंपुरुषंब्रह्मयोनिमिति लोकमेंयोनिशब्द प्रकृतिवाचकप्रसिद्धहै औषधिवनस्पतिआदिकीपृथिवीयोनिहै रक्तादिसेस्त्रीयोनिभीगर्भकाउपादानकारणहै कहींयोनिशब्द स्थानवाचीहै योनिस्तइन्द्रनिषेधिषकारीतिवाक्यशेषात् अर्थ

हि इन्द्रतेरे वैठनेके अर्थस्थानमैंनेक्रियाथा यहांतोप्रकृतिवाचीयो निशब्दकाग्रहणहै यथोर्णनाभिःसृजतेगृह्णतेइति इससेब्रह्मप्रकृतिसिद्धहुआ जैसेईचाकर्तृत्वकुलालादिनिमित्तकारणोंमेंदृष्टहै नउपादानोंमें तैसेलोककेतुल्ययहांनहींहै यहअर्थअनुमानसेप्राप्तनहीं किन्तुशब्दसेहैफिरजैसाशब्दनेकहावैसाहीयहांहोनाचाहिये शब्दतोईचितातईश्वरकोप्रकृतित्वकहताहै यहीहमकहितेहैं याकृतिःसाशरीरजन्येतिव्याप्तिविरोधेननित्यकृतिमत्ताअनुमानासंभवादतःश्रौतमीश्वरं पक्षीकृत्यानुपादानत्वसाधनेभवत्येवोपजीव्ययाप्रकृतित्वबोधकश्रुत्याबाधइत्यर्थः ॥

—*○*—

सर्ववादाधिकरण । ८ ॥

एतेनसर्वेव्याख्याताव्याख्याताः २८

ईचतेइससूत्रसेलेप्रधानकारणवादसूत्रोंसेवारंवारशङ्काकरः दूरकरा प्रधानवादकेसाधककुछलिङ्गाभासवेदान्तमेंभीमन्दम तियोंकोज्ञानपड़तेहैं कार्यकारणकेअभेदसेप्रधानवादवेदांतव दकेनिकटहै और देवलप्रभृतिधर्मसूत्रकारोंनेस्वस्वग्रन्थोंमेंलि खाहै इससेप्रधानवादकेनिषेधमेंयत्नबहुतकियाहै औरअणवा कारणवादोंकेप्रतिषेधमेंनहींकियाफिरवेभीतोब्रह्मकारणवाद प्रतिपक्षीहैंतिससेप्रतिषेद्धव्यहैं उनकेभीसाधकवैदिककुछलिङ्ग न्दोकोथोरेरप्रतिभानहोतेहैंइससेकहाकिबड़ामल्लप्रधानवाद उसकेमर्दनसेसबअणवादिक्षुद्रवादमर्दितहोगयेहैंवेभीप्रधानस अशब्दतासेवाशब्दविरोधितासेनिराकृतहैं व्याख्यातपददोवा अध्यायकीपूर्तिकेअर्थपढ़ाहै छांदोग्यमेंजगकारणकेबोधार्थपि नेपुत्रकोकहाकिइनवटोंकेदानोंमेंसे एककोतोड़उसनेतोड़के

हाकि हेभगवन्तोड़ामैंने फिरबापनेकहाकितूनेइसमेंक्यादेखा है पुत्रनेकहा हेभगवन्कुछनहींदेखाहै फिरबापनेकहा किअगु कोभीतूनेनहींदेखाहै तानकिञ्चनशब्दसेशून्यवादवास्वभाववाद प्रतीतहोतेहैं अगुशब्दसेपरमाणुवादअसत्शब्दसेअसद्वादअणोर णीयानित्यादिलिंगंद्रष्टव्यं । नकिंचनभगवद्रूति नकिंचनवाअ-सत् इनशब्दोंकाअर्थप्रत्यक्षकेअयोग्यवस्तुहै अगुशब्दकाअर्थसू-क्ष्महैजैसबवादप्रधानवादकेतुल्यअश्रौतवोब्रह्मवादश्रुतिसेबाधि तहैं तिससेब्रह्महीपरमकारणहै उसीमेंसबवेदान्तोंका घुसावहै यहीसिद्धहै ॥ इतिश्रियुक्ताराचन्द्रवर्मणाकृतेब्रह्मसूत्रभाषाभा ष्ये प्रथमाध्यायस्यचतुर्थ:पाद:पूर्ण: ॥

अविरोधाध्यायदूसरा २

स्मृतिपादपहिला ॥ १ ॥

स्मृत्यनवकाशाधिकरण ॥ १ ॥

स्मृत्यनवकाशदोषप्रसंगादितिचेन्नान्यस्मृत्यनवकाशदोषप्रसंगात् १

प्रथमअध्यायमेंसर्वज्ञजगजन्मका निदान निश्चित किया था जैसे घटरुचिकादिकामृत्हेमादि दूसरेमेउत्पन्नजगकानियं-तृत्वद्वारास्थितिकानिदाननिश्चितकिया जैसे मायाकामाया-वीरपसारीजगकोफिरअपनेमेंमिलानेकानिदान निश्चित किया जैसे चतुर्विधभूतांकेसमुदायकोपृथिवीवही हम सब का आत्मा है यहवेदांतवाक्योंकेब्रह्ममेंप्रतिपादनसेनिश्चितकिया प्रधाना-

दिकारणवादोंकानिराकरणकिया अवैदिकहै।नेसे अवतोदूस
रेअध्यायकेप्रथमपादसेसांख्यादिकी स्मृति और युक्तियों के साथ
समन्वयकेविरोधकानिरोधकरतेहैं दूसरेपादमेंसांख्यादिकेआ
गमभ्रांतिमूलहै यहीबातअविरोधकेअर्थकहेंगे तीसरेपादमेंप्र-
तिवेदांतसृष्टिविधायकश्रुतिऔरजीवात्मश्रुतिवोव्योमादिमहा-
भूतोंकाजन्मलयक्रमादिकेकहनेसेअविरोधजतावेंगे चौथेपाद
मेंलिङ्गदेहश्रुतियोंकाअविरोधकहेंगे ब्रह्महीजगकाकारणकहा
था सोअयुक्तहै किससे स्मृत्यनवकाशदोषप्रसङ्गादिति स्मृति
तन्त्राख्या परमर्षिप्रणीता शिष्टोंनेग्रहणकीहै जिससेपदार्थकहे
जावेंवहतन्त्रहै कपिलादिकीस्मृतियांनिरर्थकहोजावेगीं उनमें
जगकारणअचेतनकहाहै औरमन्वादिकीस्मृतियांतोअग्निहो-
त्रादिधर्मऔरअठारहव्यवहारकेविधानसेसार्थकहैं अमुकअमु-
ककालमेंउपनयवेदाध्ययनविवाहादिधर्मोंकोकरे कपिलादि-
कीस्मृतियांतोलौकिकव्यवहारमेंसावकाशनहींहैं वेतोकेवल-
मुक्तिहीकेअर्थरचीहैं जोवेमुक्तिकेअर्थभीनआईं तोव्यर्थहीहैं
तिससे ऐसीव्याख्याकरो किवेदान्तसेविरोधनहो कपिलादि-
केस्वतन्त्रप्रज्ञअतीन्द्रियार्थज्ञानीथे जनता प्रायः परतंत्र प्रज्ञ है
स्वतन्त्रतासेश्रुत्यर्थनहीं निश्चयकरसक्ते हैं स्मृतियोंकोपकड़केश्रु
तिका अर्थ करते हैं क्योंकिहमारेकरेअर्थमेंलोगविश्वासनकरेंगे
श्रुतिमेकपलादिकाआर्षज्ञाननिर्दोषकहाहै श्रुतिः ऋषिम्प्रसूत
कपिलंयस्तमग्रेज्ञानैर्बिभर्त्तिजायमानञ्चपश्येदिति तिससेइनका
मतझूठाअसम्भवनहींकरासक्तेहैं अर्थजिसनेआदिमेंजायमानक
पिलकोजन्माया वो प्रसूतऋषिकाभरणकिया ज्ञानोंकरकेतुम
उसपरमेश्वरकोदेखोइतियोजना तर्कसेभीवेअपने अर्थकोस
करतेहैं तिससेस्मृतिबलसेवेदान्तव्याखेयहैं इसआक्षेपकासम

धानहैनान्यस्मृत्यनवकाशदोषप्रसङ्गादिति जोस्मृत्यनवकाशदो
षसेईश्वरकारणवादपराक्षेपकरतेहोतोअन्यभीईश्वरवादिनीस्
मृतिअनवकाशितहोजावेगी जैसे आपस्तंबनेपढ़ाहै तस्मात्का
याःप्रभवन्तिसर्वेसमूलंशाश्वतिकःसनित्यइतिअर्थजिससेब्रह्मादि
जन्मेंहैंवहीउपादानहै अपरिणामीकूटस्थऐसेअनेकस्मृतियोंमें-
ईश्वरकारणवोपादानप्रकाशितकिया है जोस्मृतिकेवलसेबो-
लताथा उसकोस्मृतिसेहीउत्तरयोग्यथा इसलिये अन्यस्मृत्यन
वकाशदोषकाउपन्यासहै परस्परश्रुतियोंकेविरोधमेंश्रुतिसेनि
र्णयहै स्मृतियोंकेपरस्परविरोधमेंकॢप्तश्रुतिमूल स्मृति प्रमाण है
इतरकल्प्यश्रुतिमूलस्मृतिप्रमाणनहींहै विरोधेत्वनपेक्षंस्यादस
तिह्यनुमानमिति इसजैमिनिप्रमाणलक्षणसे जैसेस्मृतिकेविनअ
तीन्द्रियार्थकोकोईलभताहै यहसम्भावनाशक्यनहींहै निमित्त
केअभावसे सच्चज्ञानसेकपिलादिसिद्धोंनेस्मृतिरचीहैं इससेप्र-
माणहैं यहभीसच्चनहींहै क्योंकिसिद्धिभीधर्मकेअनुष्ठानकीअपे-
क्षाकरतीहै वहधर्मचोदनालक्षणहै औरचोदनापूर्वसिद्धहै अर्थ
पश्चिमसिद्धहै पुरुषकेबचनाधीनसेश्रुतिकामुख्यार्थछाड़गौणार्थ
कीशङ्काभीनहींकरसक्तेहैं अनीश्वरस्यस्वतःसिद्धोमानाभावाच्च-
जोसिद्धोंकेवाक्यपरस्परविरुद्धहो तोमनुसेनिर्णयकरे सिद्धोक्ति
होतत्वनिर्णयमेंकारणनहीं सगरकेपुत्रोंकाजलानेवालाकपिल
वासुदेवनामसेस्मृतहै नामतोश्रौतवोपौराणिकदोनोंमेंसमा-
नहै तिससेश्रौतकपिलमतमानो पौराणिककपिलमतछाड़ो
द्वैतवादीथा तिससेसर्वज्ञनथा वासुदेवांशमुनिलोकोंनेभ्रांति-
सेश्रौतकपिलवोसांख्यकर्त्तामानाहै मनुमाहात्म्यमेश्रुति यद्वैकि
ञ्चनमनुरवदत्तद्भेषजमिति मनुस्मृतिभी सर्वात्मत्वदर्शनकीप्रशं-
सासेकपिलमतकीनिन्दाकरतीहै आत्मभेदकोमानताहै कपि-

ल एकात्मबोधिका श्रुति यस्मिन्सर्वाणिभूतान्यात्मैवाभूद्विजा-
नतः तत्रकोमोहःकःशोकएकत्वमनुपश्यतइत्यादि आत्माकेभे-
दकीकल्पनासे बोवेदानुसारिमनुबचनकेबिरोधसेकपिलतन्त्र-
वेदकेविरुद्धसिद्धिहुआ वेदस्वार्थमेंनिरपेक्षस्वतःप्रमाणहै जैसे र
विरूपोंमें स्मृतितोमूलान्तरकोअपेक्षाकर्त्तौबोवक्ताकेस्मरणसे-
व्यवहितहै यहोविप्रकर्षपरतःप्रामाण्यहै तोझटितिनिश्चायकवे
दवाक्यसेविप्रकर्षनिश्चायकस्मृतिकाबाधउचितहै यहभावार्थहै
तिससेवेदकेविरुद्धविषयमेंस्मृतिकाव्यर्थहोनादोषनहींहै सांख्य
मूलप्रकृतिरविकृतिरित्यादि मनु तस्माद्व्यक्तमुत्पन्नमित्यादि ॥

इतरेषांचानुपलब्धेः ॥२॥

लोकवेदमेंइन्द्रियांभौतिकहैं भौतऔषधिसेफिरनैरोग्यदे-
खनेसेऔरमहदहंकारादिलोकवेदमेंप्रसिद्धनहींहैं जैसेछठीइन्द्रि-
यकाअर्थफिरस्मृतिकल्पनहींसक्तीहै सांख्यस्मृतिजैसेमहदादि
मेंप्रमाणनहींतैसे प्रधानमेंभीनहींहै कार्यस्मृतिकेअप्रामाण्यसे
कारणस्मृतिअप्रमाणहै यहअभिप्रायहै महतःपरमव्यक्त यहश्रु
तिब्रह्मपरहैनकिसांख्यसंमतमहत्तत्त्वपरहै तिससेकापिलमत
श्रौतनहींहै ॥

(योगप्रत्याख्यानाधिकरण ॥ २ ॥)

एतेनयोगःप्रत्युक्तः ३

अतिदेशसेयोगकानिरासकर्त्ताहै मुक्तिकाउपायवेदमेंयोग
कहाहै श्रोतव्योमंतव्योनिदिध्यासितव्यइत्यादि त्रिरुन्नतंस्थाप्य
समंशरीरमित्यादि अर्थ निदिध्यासनयोगहै तीनिउरशिरग्रीव
इनकोदेहमेंऊंचाराखे युंजीतेतिशेषःत्र्युन्नतमितिवक्तव्येत्रिरुन्न

मितिपाठश्छांदस: आसनादिबहुतबातेंयोगविधिकीश्वेताश्वत
रोपनिषद्मेंदेखतेहैं सहस्रोंयोगकेजतानेवालेअर्थ वाद लिङ्ग हैं
तांयोगमितिमन्यन्तेस्थिरामिन्द्रियधारणामिति विद्यामेतांयोग
विधिञ्चकृत्स्नमित्यादि तांधारणां योगीयोगकीपरमतपमानतेहैं
उक्ताब्रह्मविद्याकेध्यानकाप्रकारनचिकेतामृत्युकेप्रसादसेपाकेब्र
ह्मप्राप्तहुआ।यहीसम्बन्धहैअलगअर्थैकदेशमेंसम्प्रतिपत्तिऔरअर्थै
कदेशमेंविप्रतिपत्तिहैलोकमेसांख्ययोगमुक्तिकेसाधनशिष्टोंनेग्रह
णकरेहैं वोउनकेसाधकवेदभीहैं इससेउनहीकाखण्डनउचित
है नवौद्धादिस्मृतियोंकावेतोकिसीरपशुप्रायपुरुषनेग्रहणकीहै
श्रुति: तत्कारणंसांख्ययोगाभिपन्नंज्ञात्वादेवंमुच्यतेसर्वपाशैरिति
अर्थकामनाकाकारणविवेकवोध्यानसेकरकेप्रत्यक्षसेप्राप्तदेवको
जानअविद्यासेबचताहै वेद के बिना केवल सांख्य वो योग मार्ग
सेमुक्तिनहींमिलसक्तीहै श्रुतितमेवेति सांख्ययोगदोनोंहैतोहैं जो
आत्माकोएकनहींदेखसक्तेहैं सांख्ययोगमिति इससेवैदिकज्ञा-
नध्यानलेनासांख्ययोगपदोंसे इनकीस्मृतिजोवेदविरुद्धनहींवह
मान्यहै असङ्गोह्ययंपुरुषःइत्यादि इनमेंपुरुषकीशुद्धतासांख्य-
नेनिर्गुणपुरुषकेनिरूपणसेमानीहै अथपरिव्राट्विवर्णवासामुंडो
ऽपरिग्रह: इनश्रुतियोंमेनिवृत्तिनिष्ठायोगीमानतेहैं द्योतकादि-
सबतर्ककोइसीरीतिसेव्यवस्थाहै जितनाअंशश्रुतिविरुद्धहै वही
सर्वत्रहेयहै औरसबउपादेयहै जोकणभुगादिमततत्ववोधोपयो
गीहै तोहोपरन्तुवहतोवेदहीसेहै नावेदविन्मनुतेतंबृहन्तं त
त्वौपनिषदंपुरुषंपृच्छामीति तान्यपितर्कोपपत्तिभ्यांतत्वज्ञाना-
योपकुर्वंतीति ॥

(तर्काभासाधिकरण ॥ ३)

नविलक्षणत्वादस्यतथात्वञ्चशब्दात् ॥ ४ ॥

ब्रह्मकारणमेंजोस्मार्तआक्षेपथा वहनिवारणकियाअवतोतर्क निमित्तआक्षेपकोनिवारणकरतेहैं धर्मकेवलवेदहीसेजानाजाताहैक्योंकिअनुष्ठेयहोनेसेब्रह्मतोनिष्पन्नरूपहैतिससेप्रमाणान्तरकाभीउसमेंअवकाशहैजैसेपृथिवीआदिमें जैसेपरस्परश्रुतिविरोधमेंप्रबलश्रुतिसेदुर्बलश्रुतिकाबाधवोसावकाशश्रुतिनिरवकाशश्रुतिसेबाधितहैतैसेजोश्रुतिप्रमाणान्तरसेविरुद्धहैवहप्रमाणान्तरकेद्वारायुक्तहै युक्तिअनुभवकेपासहै क्योंदृष्टसाक्षात्अर्थकेसमान अदृष्टअर्थकोदिखानेसेफिरश्रुतितोपरोक्षरीतिसेपरोक्षमात्रसेस्वार्थको दिखातीहैतिससेदूरहै अविद्याकानिवर्तकमोक्षकासाधकअनुभवावसानब्रह्मज्ञानदृष्टफलकदृष्टहै श्रुतिभीश्रवणसेमननकोकहतीतर्ककाआदरदिखातीहै श्रोतव्योमतंव्य इससेनैषातर्केणत्यर्थवाद: फिरआक्षेपतर्कनिमित्तसेपहुंचा नविलक्षणत्वादस्येति। जोतुमनेचेतनब्रह्मजगकाकारणवोप्रकृतिकहाथा वहनहींहोसकताहै कैसे यहविकारकेविलक्षणहोनेसे प्रकृतिभीब्रह्मनहींहैजगअचेतनवोअशुद्धदेखनेसे फिरब्रह्मभीजगसेविलक्षणहै चेतनवोशुद्धसुननेसे फिरविलक्षणमेंप्रकृतिविकृतिभावनहींदेखाहै जैसेरुचकादिविकारोंकामट्टीआदिप्रकृतिवोघटादिविकारोंकाहेमदिप्रकृतिमट्टीकेमट्टीसेहेमकेहेमसेविकारकियेजातेहैं तैसेयहजगअचेतनसुखदु:खमोहसेयुक्तहैअचेतनसुखदु:खमोहरूपकारणवार्यहोनेकोयोग्यहैयहजगप्रीतितापविषादादिहेतुयोंसेवोस्वर्गनरकादिवड़ेवोछोटेप्रपंचसेअशुद्धहै फिरअचेतनजगचेतनकेर्थकार्यकारणभावसेउपकरणहै समानमेंउपकार्यवोउपकारकनही

जैसेएकदीपदूसरेदीपका चेतनभीकार्यकारणभोक्ताकाउपकार करेगा जैसेस्वामीकासेवककरताहै स्वामीवोभृत्यमेंभीदेहअचेत नांशहीचैतनकाउपकारीहै जोएकचेतनकाबुध्यादिअचेतनभा गसेहीअन्यचेतनकाउपकारवोअपकारकर्ताहैऔरआपचेतनचे तनांतरकाउपकारवोअपकारनहींकर्ताहै निरतिशयाह्यकर्तार श्चेतनाइतिसांख्यमन्यन्ते चेतनोकोबड़ाईछुटाईनहींहैतिससेमि थोउपकारकनहींहैं काष्ठलोष्टादिचेतनहैंइसमेंकुछप्रमाणनहीं। लोकमेंचेतनवोअचेतनकाविभागप्रसिद्धहैतिससेब्रह्मसेविलक्षण जगहैतोब्रह्मउसकाप्रकृतिनहींहै एकदेशीमानताहैकिश्रुतिजग- तकोचेतनप्रकृतिककहतीहैतोसबजगचेतनहै—

प्रकृतिकाविकृतिमेंसबचिन्हदेखनेसे चैतन्यकाअभानपरिणा मविशेषसेहोगा जैसे स्पष्टचैतन्यजीवोंकोस्वापमूर्छादिदशामेंचै तन्यकाअभावहै ऐसेहीकाठमाटीआदिकोभीचैतन्यकाअभाव होगा सांतःकरणमेंचैतन्यप्रकटहै निरन्तःकरणमेंनहींहै भावः विभावनावोअविभावनाकेविशेषसेरूपादिकेभाववोअभावकर- केकार्यकारणआत्मावोअनात्मामेंचेतनताकीसमानतामेंभीवि- षशेषोप्रातिस्वकरूपविशेषसेगौणमुख्यकाविरोधनहोगा जैसे प लसूपभक्तादिसमानपार्थिवपदार्थहैं तोभीहरएककेप्रतिकिसी- नकिसीविशेषसेपरस्परउपकारीहैंऐसेहीयहांभीहोगा चेतनवो- अचेतनकेविभागमेभीविरोधनहोगा चैतन्यकीअभीव्यक्तिवोअ- नभिव्यक्तिसेफिरएकदेशीकेमतकोमानसांख्यनेकहाकि उक्तक- ल्पनासेतुमनेविलक्षणतावारणकिया तोभीशुध्यशुद्धिकावारण नहुआ इससेकहाकितथात्वश्चशब्दात् लोकमेंयहप्रकटनहींकि सबवस्तुचेतनहै केवल*शब्दभक्तोंनेजगचेतनप्रकृतिकसुननेसेउ

* वेदशरण ॥

त्मे चाकरीहै सोतोशब्दहीसेविरुद्धहै शब्दहीप्रकृतिसेविलचणाक हताहै विज्ञानञ्चाविज्ञानञ्चेति किसीअंशकोअचेतनसुनाकेचे तनब्रह्मसेविलचणअचेतनजगसुनाताहै तथात्वं प्रकृतिविलच णाशब्दहीकहितहै ॥

अभिमानिव्यपदेशस्तुविशेषानुगतिभ्यां ५

मृदब्रवीदापोब्रुवन् तत्तेजऐचत ताआपऐचन्तजेश्रुतिभूतों कोचेतनकहितीहैं तेहेमेप्राणाअहंश्रेयसेविवदमानाब्रह्म जग्मुः ते हवाचमूचुस्त्वंनःउद्गायेतिजेइन्द्रियोंकोचेतनउसका अर्थ अभि- मानी उक्तवाक्योंसेभूतवोइन्द्रियोंकोचेतनताकीशङ्कामतकरे। क्योंकि मृदादि वो वागादि केअभिमानीदेवताचेतनकहिनासुन नादिचेतनकेयोग्यव्यवहारोंमेंव्यपदेशकियेहैंनकेवलभूतवोइन्द्रि यांचेतनहैं लोकवेदमेविभागप्रसिद्धकेबोधसेफिरसबकोचेतनमा नेसेविभागनबनेगायहकैसेजाना विशेषानुगतिभ्यांभोक्ताचेतन वोभूतवोइन्द्रियांअचेतनयहविभागपलिलेकहिचुकेयहविशेष फिरकोपौषीकिप्राणकेसम्वादमेंकरणमात्रकोभीचेतनकीशङ्का दूर करनेकेअर्थअधिष्ठाताचेतनदेवताशब्दसेविशेषणकरतेहैं एता वैदेवताअहंश्रेयसेविवदमानाइति तावाएताःसर्वादेवताःप्राणे निःश्रेयसंविदित्वेतिच मन्त्रअर्थवादादिसेसर्वत्रचेतनदेवता नुगतहै अग्निर्वाग्भूत्वामुखंप्राविशदिति यहश्रुतिकरणोंमें नुग्रहाहिकादेवताकोअनुगतदिखातीहै तेहप्राणाःप्रजापतिं तरमेत्योचुरिति तस्मैबलिहरणमिति प्राणसम्वादमेहै किप्राण दिसबइन्द्रियांअपनीरश्रेष्ठनिर्णयकेअर्थप्रजापतिकेपासगई उ कहाकिहममेकौनश्रेष्ठहै उसनेकहाकितुमएकएकनिकलोफि त्रवैसाहीकियापरप्राणकाकुछनबिगड़ाप्राणकेजाने से सब म

यों इनसेप्राणकीश्रेष्ठतानउनकेआधीनहोरहीं इसकथासेफल-
यहनिकलाकिहमारेव्यवहारकेसमानउनकाभीव्यवहार अभि-
मानीकेव्यपदेशकोदृढ़कर्त्ताहै औरतेजकाअधिष्ठाताजोपरदेव-
ताहै सोहीअपनीविकारमेंअनुगतहुआकर्त्ताहै तिससेसिद्धहुआ
किचित्यादिब्रह्मसेविलक्षणाहैं वोविलक्षणहैं।सेसेब्रह्मचेतनप्रकृ-
तिकभीनहीं हैं इसआक्षेपकोसमाधिकर्त्ताहै ॥

दृश्यतेतु ६

तुशब्दपूर्वपक्षकोनिवृत्त्यर्थहै एतस्मादात्मनआकाशःसंभूतः
इसमेंचेतनसेजड़जन्महै विज्ञानघनएतेभ्योभूतेभ्यःसमुत्थायेति इ
समेंजड़सेचेतनकाजन्महै लोकमेंचेतनोंसेविलक्षणकेशनखादि
काजन्मऔरअचेतनगोमयादिसेचेतनवृश्चिकादिकाजन्म देखते
हैं ननु अचेतनहीदेहअचेतनकेशादिकाकारणवोअचेतनवृश्चि
कादिदेहअचेतनगोमयादिकाकार्यहै इससेभीकुछअचेतनचेतन
काआयतनभावकोपहुंचावोककुनहींयहीवैलक्षण्यहैयहवड़ापा
रिणामिकस्वभावकाविप्रकर्षहै पुरुषादिकावोकेशादिका क्यों-
किस्वरूपभेदसेतैसेगोमयादिकावोवृश्चिकादिकाहै अत्यन्तसा-
रूप्यमेंप्रकृतिविकृतिभावनहींहोसक्ताहै जोपार्थिवादिस्वभावपु
रुषादिकाकेशादिमेंवोगोमयादिवृश्चिकादिमेंअनुवर्तीहै तोब्रह्म
काभीसत्तालक्षणस्वभावआकाशादिमेंभीअनुवर्त्तमानदेखते हैं
फिरब्रह्मवादीसेयहनहींकहिसक्तेहो किजोचैतन्यसेयुक्तनहीं है
सोअब्रह्मप्रकृतिकदेखाहै वहतोसबवस्तुकोब्रह्मप्रकृतिकमानता
है निष्पन्नब्रह्ममेंरूपादिकेअभावसेप्रत्यक्षादिप्रमाणवोलिङ्गादि
केअभावसेअनुमानादिकाअसम्भवहै ब्रह्मभीधर्मकेसमानकेवल

वेदहीसेजानाजाताहैनैषातर्केणमतिरापनेयाप्रोक्तान्येनैवसुइ
नायप्रेष्ठेति कोद्धावेदकइहप्रवोचत्कुतआजाता कुतइयंविसृ
अर्वाग्देवाअस्यविसर्जनेनाथाकोवेदयतआबभूवेति इयंविसृ
यंतआबभूवयदिवादधेयदिनयोअस्याध्यक्ष:परमेव्योमन्सोअ
वेदयदिवानवेदेत्यादि ऐसेमन्त्रजातवेदकहतेहैं किहमनेस
काबहुतरविचारकियातौभीठीकरनहींजानाकि सृष्टिकैसे इ
थी परहैअङ्गजोइसकाअध्यक्षहै सोचाहैजानताहो चाहेनजा
ताहोश्रुतिनिजसिद्धईश्वरोंकोभीजगकारणकादुर्बोधदिखाती
वहीतर्कप्रमाणहै जोश्रुतिवोअनुभवसेमिलीहै यहएकमतहै
सरेमेंश्रुतिप्रमाणजोतर्कअनुभवसेमिलीहै तीसरेमेंतीनोस्वत
अपनेरप्रमेयकेसाधकहैं सोतेजगतमेंइतरेतरव्यभिचारसेसुइ
मेंसत्केसंगएकहोताहै ब्रह्मअसंस्पृष्टहै विज्ञानंचाविज्ञानंचा
वदितिअद्वितीयत्वब्रह्मकोअयुक्तहैदेहादिप्रपंचसेयुक्तअवस्था
लेजीवकोनिष्प्रपञ्चब्रह्मकेसङ्गऐक्यसंभवनहींवोहैतग्राहोप्रमा
केसङ्गविरोधसेजैसेचेतनअचेतननहींहोसक्ताविलक्षणतासे
अचेतनचेतननहींहोसक्ताविलक्षणतासेविलक्षणतातोखंडन
रो परश्रुतिमेंजैसेचेतनकारणकहासोहीग्रहीतव्यहै चेतनश
ब्दादिहीनब्रह्मउलटाकार्यहैशब्दादिमत् ॥

असदितिचेन्नप्रतिषेधमात्रत्वात् ७

असद्वादीकहताकिउत्पत्तिकेपूर्वकार्यअसत्था सोसह
कोअनिष्टहै यहदोषनहीं क्योंकि प्रतिषेधमात्रत्वात् सत्व
तिषेधनिरर्थकहै इसप्रतिषेधकाप्रतिषेध्यनहोनेसेयहउत्पत्ति
हिलेकार्यकेसत्वकोदूरनहींकरसक्ताहै कैसे जैसे अबकार्य
णरूपसेसत्है ऐसेहीउत्पत्तिकेपूर्वथा अबभीकार्यकारणके

स्वतन्त्रनहींहैतैसेहीपूर्वथा श्रुति सर्वंतंपरादाद्योन्यत्रात्मनःसर्वं वेदेतिकार्यसत्यत्वकेअभावमेंश्रुतिहै ॥

शङ्कासूत्र

अपीतौतद्वत्प्रसंगादसमंजसं ८

स्थूलसावयवपरिच्छिन्नअचेतनशब्दादिमत्अशुध्यादिधर्मवाले कार्यकाब्रह्मकोकारणमानोगेतोप्रलयमेंसृज्यमानकार्यकारणकेसाथएकहोगयाफिरवहकारणकोअपनेधर्मोंसेदूषणकरेगा जैसे पानीकोनीवकटुकरताहै ऐसेहीप्रलयमेंकारणब्रह्मकोकार्यकेसमानअशुद्धादिरूपहोनेसेब्रह्मसर्वजगत्काकारणयहउपनिषदोंकामतसंदिग्धहैऔरभीजो सबजुदा२थावहएकहोगयातोफिरउत्पत्तिमेंनियमकेनहोनेसेयहभोक्तायहभोग्यहैइसविभागसेउत्पत्तिनहोगी इससेभीविरुद्धहैऔरभीप्रलयमेंकर्माधीनपुनर्जन्महोगातैसेमुक्तोंकाभीपुनर्जन्महोगा अथवाअपीतिमेंभीजगत्कार्यकारणब्रह्मसेविभक्तरहातोअपीतिनहुईऔरकारणसेअव्यतिरिक्तकार्यभीनहींसंभवहै इससेऔपनिषद्दर्शनअच्छानहींहै ॥

नतुदृष्टांताभावात् ९

तुएवार्थकहै पूर्वशंकितंनैव हमारेदर्शनमेंकिञ्चित्असामंजस्यनहींहै क्युं दृष्टान्तोंसेजैसेदीपादिजवमट्टीसेअलगछोटेबड़े मध्यमधर्मवालेहोकेफिरजबउसमेंमिलतेहैं तबअपनेधर्मउसमेंकुछभीनहींमिलातेहैंरुचकादिकभीहेममेमिलनेसे अपनेधर्मोंकोउसमेंनहींमिलातेहैं पृथिवीकाविकारचतुर्विधभूतग्रामपृथिवीमेंमिलनेसेउसकोअपनेधर्मोंसेनहींमिलातेहैंतुमारेपक्षकाकोईदृष्टांतनहींहै तोअपीतिकाभीसंभवनहोगा जोकारणमेंकार्यकार्य

धर्मसरहेगा।लवणवत् यहतो।तुमनेबहुतछोटीबातकही।किप्रलय
मेंकार्यअपनेधर्मोंसेकारणमेंमिलेगा।यहस्थितिमेंभीहै कार्यकार
णोंकाअनन्यमाननेसेइदंसर्वंयदयमात्मा आत्मैवेदंसर्वंब्रह्मैवेदं-
सर्वममृतंपुरस्तात्सर्वंखल्विदंब्रह्मेति तीनोंकालोंमेंअविद्यासेआ
रोपितकार्यवोकार्यकेधर्महैंइससेवेकारणमेंनहींमिलतेहैंजैसेमा
यावीअपनीफैलाईमायासेतीनकालमेंलिप्तनहींहोताहै क्योंअ
वस्तुसेऐसेहीपरमात्मा।संसारकीमायासेस्पृष्टनहींहोताहै जैसे
एकस्वप्नद्रष्टास्वप्नमेंदेखीनानामायाओंसेस्पर्शनहींकरताहै जाग्रत्
सुषुप्तिमेंस्वप्नसेआत्माकास्पर्शनहींस्वप्नकालमेंभीस्पर्शनहींहै ती
नोंअवस्थाकाएकसाक्षीअव्यभिचारीहैसोअव्यभिचारीतीनोंसेकैसे
स्पृष्टहोगा परमात्माकाअव*स्थातीनसेभासनमात्रहीहैजैसेर
ज्जुकासर्पादिभावसे संप्रदायवचनअनादिमाययासुप्तोयदाजी
वःप्रबुध्यतेऽजमनिद्रमस्वप्नमद्वैतंबुध्यतेतदेति सुषुप्तिसमाध्यादि
मेंस्वाभाविकीअविभागप्राप्तिहोतीहै तोभीमृषाज्ञानकेदूरनहो
नेसेपहिलेकेसमानफिरजगे परविभागहोताहै ऐसेहीयहांभी
होजावेगा इमाःसर्वाःप्रजाःसतिसंपद्यनविदुःसतिसंपद्यामहइ
ति तइहव्याघ्रोवासिंहोवावृकोवावराहोवाकीटोवापतङ्गोवादं
शोवामशकोवायद्यद्भवन्तीति जैसेअविभागईशमेंमिथ्याज्ञानसे
बद्धविभागव्यवहारस्वप्नवत्स्थितिमेंदेखतेहैं तैसेप्रलयमेंभीमि
थ्याज्ञानसेबद्धही विभागशक्तिकाअनुमानहोगा मुक्तोंकाफिर
जन्मभीनहोगा। सम्यक्ज्ञानसेमिथ्याज्ञानकेबारणसे प्रलयमेंब्र
ह्मसेभिन्नजगरहताहै यहपक्षनमाननेसेप्रतिषिद्धहै तिससेसमंज
सऔपनिषद्दर्शनहै ॥

* जगज्जन्मस्थितिविलया ॥

स्वपक्षदोषाच्च १०

प्रधानप्रकृतिकजगमानेपरभीदोषहै शब्दादिहीनप्रधानसे शब्दादिमत्जगकी उत्पत्तिस्वीकारसेविलक्षणकार्यकी उत्पत्तिमानेमेंपहिलेउत्पत्तिकेअसत्कार्यवादकाईानासमानहै अपीतिसूत्रमेंदोषचारकहेथेवेयहांपरभीहै जैसेकार्यरूपादिमत्है तैसेकारणप्रधानभीरूपादिमत्हो जैकर्मादिकूमकेउपादानवोइसकाभोग्यनहोयहअनियमसमानहै विनाकारणकेनियममेंकारणाभावकोसमताससमुक्तोंकोभीफिरबन्धहे।ग। अथवाप्रलयमेंकुछविभागसेवीकुछअविभागसेरहतेहैं तोजेप्रधानमेंनमिलेतेप्रधानकाकार्यनहोंहैं जेदोषहमकोतुमकोसाधारणहैं तोतुममेरेहीपक्षमेंइनकोक्योंफेंकतेहो। हमतोवेदकेवलसेकथाकरतेहैं इससेउसकानानातानटूटैगा॥

तर्काप्रतिष्ठानादप्यन्यथानुमेयमितिचे देवमप्यविमोक्षप्रसङ्गः ११

वेदवोध्यअर्थमेंकेवलतर्कसेनझिगड़नाचाहिये वेपुरुषकीबुद्धिसेउत्प्रेक्षाकरीगईहैं तिससेअप्रतिष्ठितहैं क्योंकि उत्प्रेक्षानिरङ्कुशअर्थात्बुद्धिकेआधीनहै किसीनेतर्कयत्नसेउत्प्रेक्षाकरीदूसरेनेउसकोतर्काभासकहाहैफिरअन्यनेउसेभी तर्काभास कहा इससेतर्कध्रुवमानानेयोग्यनहींहै मतिकेवैरूप्यसेसर्वतीर्थंकरकपिलयोतकादिकापरस्परविरोध देखनेसेहमव्याप्तिवालीतर्कको ध्रुव कहेंगेतिससेअप्रतिष्ठितदोषनहोगा कोईप्रतिष्ठिततर्कनहीं है यहनहींकहिसक्तेहोतर्ककोअप्रतिष्ठिततातर्कसेहीप्रतिष्ठितहै एकतर्ककोअप्रतिष्ठितदेखनेसेअन्यकीभी अप्रतिष्ठत्वकल्पनासेसर्वत

र्क को अप्रतिष्ठा माननेसे लोकव्यवहार नष्ट होगा भूत वो वर्त्तमान मा
र्ग के समान अनागत मार्ग में भी सुख की प्राप्ति वो दुःख की निवृत्ति की
अर्थ प्रवर्त्तमान लोक को देखते हैं श्रुत्यर्थ के विरोध में भी अर्थाभास को
दूर कर सम्यगर्थ का निर्धारण तर्क ही से करते हैं मनु प्रत्यक्षमनुमानं-
चेत्यादि मधर्म वेदसे त्यन्त तर्क का अलङ्कार अप्रतिष्ठितत्व ही प्रसिद्ध है
सावद्य तर्क को छोड़ो निरवद्य तर्क को पकड़ो वा पमूढ था तो हम भी
मूढ होना चाहिये यह कुछ भी प्रमाण नहीं है तिससे तर्क अप्रतिष्ठान
दोष नहीं है अविमोक्षप्रसङ्गः यह मानसे भी अविमोक्ष का प्रसङ्ग है
यद्यपि कहीं तर्क प्रतिष्ठित हो तथापि जगत्कारण के विषय में तर्क स्व
तन्त्र नहीं है यह अति गम्भीर परमानन्द मुक्ति निबन्धन वेद के बिना अ
न्य प्रमाणों से जानने को शक्य नहीं है यह अर्थ रूपादि के अभाव से प्रत्य
क्षादि प्रमाणों का विषय वो लिङ्गादि के अभाव से अनुमानादि का भी
गोचर नहीं है सम्यग् ज्ञान से मुक्ति सब मुक्तिवादी मानते हैं सम्यग् ज्ञा
न स्वरूप है वस्तुतन्त्र होने से जो अर्थ एकरूप है वही लोक में परमा-
र्थ वो उसका ज्ञान सम्यग्ज्ञान कहाता है जैसे अग्निः उष्ण इस सम्य
ग्ज्ञान में विरुद्ध भाव गायुक्त नहीं है तर्क ज्ञान परस्पर विरुद्ध हैं तिस
से विप्रतिपन्न हैं एक तार्किक ने एक ज्ञान को सम्यक् कहा अन्य ने उस
से उठादिया फिर अन्य ने उससे उठादिया तो कैसे अनवस्थित तर्क ज
न्य ज्ञान सम्यक्ज्ञान हो यह भी नहीं कि सब तार्किकों ने एक ता-
र्किक को मुख्य माना हो जिससे उसका मत हम सम्यग् ज्ञान जाने
फिर भूत वर्तमान भविष्यत् सब तार्किक मिलके एक देश काल में तर्क-
ज्ञान मुक्ति हेतु निश्चय करने को शक्य नहीं हैं तो एकार्थ वोधिका उन
को मति सम्यग्ज्ञान कैसे हो वेद नित्य सम्यग्ज्ञान का हेतु होने से उ-
सका अर्थ व्यवस्थित है फिर वैदिक ज्ञान को सम्यक्ता तीन काल के ता
र्किकों से दूर करने को शक्य नहीं है इससे सिद्ध हुआ कि औपनिषद ज्ञा

नसम्यग्ज्ञानहै इससे अन्य असम्यग्ज्ञान न होने से संसार से मुक्ति न होगी तिससे वेदवो वेदानुसारी तर्क के वश से चेतन जगकारण वो प्रकृतिस्थित है ॥

———*◯*———

(शिष्टापरिग्रहाधिकरण ॥ ४ ॥)

एतेनशिष्टापरिग्रहाअपिव्याख्याताः १२

प्रधानकारणवादनिरासेन मन्वादिशिष्टास्वीकृताअणवादिवादानिराकृताद्रष्टव्याइत्यतिदेशार्थः तिससे कोई मत ब्रह्म वादकाबाधकनहींहै वेदानुसारी मनुदेवलादिसे वैदिकदर्शनगुरुतर तर्कयुक्तका उपयोगी सत्कार्यवाद आत्मासङ्गादि अंशोमे गृहीत है उससे जो दोषवेदान्तमें दियेथे उनकावारणकिया गौतमादिने अणवादिवादसे वेदान्तपर आक्षेपकराहै उसकावारणकरतेहैं तुल्यतायहकि अतिगम्भीरजगकाकारणतर्क से अयाज्य है वो तर्क की प्रतिष्ठा नहीं अन्यथानुमाने अपि वि सोचवेदविरोध इत्यादि दूषणगौतमादिके अणवादिवादनिराकरणकारणमेंहैं ॥

———*◯*———

(समन्वयबाधाधिकरण ॥ ५ ॥)

भोक्त्रापत्तेरविभागश्चेत्स्याल्लोकवत् १३

फिरभीतर्कबलसेब्रह्मकारणवादपरआक्षेपहै जोभी श्रुति अपने अर्थबोधमेंप्रमाणहै तोभीप्रमाणांतरसे उसकागौणार्थहै जैसे मन्त्रार्थवादोंका आदित्यायूप इत्यादि तर्कभी अपने अर्थसे अन्य अप्रतिष्ठित नहो जैसे धर्माधर्ममें तर्कादिप्रमाणहोने से श्रुतिहै तर्कानहीं मिटासक्ती अद्वैतको मिटासक्ती है फिर कैसे प्रमाणांतरसे प्रसिद्धार्थ

कोश्रुतिबाधतीहै लोकमेंभोक्ताभोग्यकाविभागप्रसिद्धहै भोक्ता। चे
तनजीवहै भोग्यशब्दादिहैं जैसे भोक्तामेंअभोज्यरोटी दोनोंकी
एकब्रह्मके अभेदसुन्नेसेएकत्वकल्पनाहोनेसेएकसेअभिन्नोंके भेद
सेएककोभीभेदहोनाचाहियेतिससेभेदबाधितहै इससेप्रसिद्धभेद
काबाधयुक्तनहींहै जैसे अबभोक्ता भोग्यकाभेददिखाया तैसे
भतवोभाविमेंजानो तिससेभोक्ताभोग्यकेविभागकीप्रसिद्धिको अ
भावसेब्रह्मकारणताकानिश्चय युक्तहै इसीयुक्तिजालकोकोई वे
दांतीपरकेकताहै तोवहआगेदृष्टांतदिखाताहै किस्याल्लोकवदि
ति विभागमेरेहीपक्षमेबनताहै देखोपानीसे अनन्यहोनेसेपरभी पा
नीको विकारवीचीतरङ्गबुद्बुदादिकाइतरेतरविभागवोरतरेतर
संज्ञआदिव्यवहारलभताहै इतरेतरभावकीआपत्तिहोनेसेवय। वे
अन्यहोतेहैं नहींतो भूतभाविकालोंभोक्त्रादिविभागाश्रयोंका
त्वाद्वर्तमानकालवदितिविभागोअनादमन्तः उनको क्या इतरेत
रभावकीअनापत्तिमेंभीपानीसे अन्यत्वहै नहींहैएकपानीसेवि
कारोंकामिथोभेदवो उनकेभेदमेभी एकसे अभिन्न कैसेहोंगेइस
मेंअनुपपत्तिनहींहै ऐसेभोक्ताभोग्यकामिथो भेदवोब्रह्माभेदहै भो
क्ताभोग्यकोइतरेतरभावकीआपत्तिनहींहैवोब्रह्मसेअन्यभीनहीं
है यद्यपिजोभीभोक्ताब्रह्मकाविकारनहीं क्योंकिअविकृतस्वरू
होकार्यकोरचउसमेंघुसगयावुही भोक्तासुना है तत्सृष्ट्वातदेवानु
प्राविशदिति तोभीकार्यमेंजोघुसाहै उसका औपाधिकविभाग
जैसे कालकादिनमासादिउपाधिसे औपाधिकविभागहै ब्रह्म
न अन्यत्वमेंभीभोक्ताभोग्यकाविभागसिद्धहुआ समुद्र तरङ्गा। दि
न्यायसेयहतात्मैंकहिचुका लौकिकविभाग का वारण किया प
मार्थसेविभागनहींहै एकरस्सीमेदंडस्रग्सर्पादिद्वैतदर्शनसेमुख
वारणाहै ॥

(आरम्भणाधिकरण ॥ ६ ॥

तदनन्यत्वमारम्भणशब्दादिभ्यः १४

कार्यकारणके अनन्यत्वसे कार्य व्योमादि कारणब्रह्म परमार्थसे कार्यकारण अलग नहीं क्यों आरम्भण वह यह है कि एकके जानेसे सब जाननेकी प्रतिज्ञा करी तो दृष्टांतकी आशा हुई तो कहा कि हे प्रियदर्शन यथा सोम्यैकेन मृत्पिंडेन सर्वं मृण्मयं विज्ञातं स्याद्वाचारंभणं विकारो नामधेयं मृत्तिकेत्येव सत्यमिति जब एक मट्टीका पिंड परमार्थसे मट्टी जाना तो सब उदञ्चनादि मट्टी ही के जाने गये फिर वे केवल वाणीसे ही हैं वस्तुसे विकार कछु नहीं है नाम झूठे हैं मट्टी ही सच्ची है यही ब्रह्मका दृष्टांत पढ़ा है इसी वाचारंभणशब्दसे व्योमादि दार्ष्टान्तिकमें भी ब्रह्मसे भिन्न कार्यजातका अभाव है ॥

फिर तेजजलक्षितिको ब्रह्मका कार्य कहि कै उनको तेजजलक्षितिसे पृथग् अभाव कहते हैं अपागादग्नेरग्नित्वम्वाचारम्भणम्विकारो नामधेयन्त्रीणिरूपाणीत्येव सत्यमिति भावार्थ हे अग्ने तेरा अग्नित्व अपगत है कारणमात्रसे तेजजलक्षितिके रूप तन्मात्रात्मक सत्य हैं वे भी सन्मात्र होनेसे सत् ही शेष रहा आदिशब्दसे वे उदाहर्तव्य हैं जे आत्माको एकत्व कहते हैं जैसे एकविज्ञानसे सर्वविज्ञान होनेकी कोई और रीति नहीं है ऐतदात्म्यमिदं सर्वं तत्सत्यं स आत्मा तत्त्वमसि इदं सर्वं यदयमात्मा ब्रह्मैवेदं सर्वं आत्मैवेदं सर्वं नेह नानास्ति किञ्चनेत्यादि प्रतिज्ञाके बलसे जैसे घटकरकादिके व्योमको महाव्योमसे अनन्यत्व जैसे मृगतृष्णाके पानीको ऊषरादिसे अनन्यत्व है दृष्टनष्टस्वरूप जो है सो अनुपाख्य है जो सत्तास्फूर्तिशून्य है सो अनन्य है प्रातीतिक अनित्य है ऐसे ही भोक्ताभोग्यादि प्रपञ्चमात्रका अभाव ब्रह्मसे पृथक् द्रष्टव्य है शुद्धाद्वैत कहा अ

वभेदाभेदसुनो इससेमृदादिदृष्टांतअनुरूपहोंगे एकात्मब्रह्महै
जैसे वृचअनेकशाखहै ऐसेब्रह्मभीनानाशक्तिवोपरिणामसेयुक्त
है इससेएकत्ववोनानात्वदोनोसचहैं जैसे वृचएकवोशाखाना
ना जैसे समुद्रस्वरूपसेएकवोफेनतरङ्गादिरूपसेनाना जैसे म-
ट्टीएकवोघटादिरूपसेनाना एकत्वज्ञानसेमोक्षहोगी नानात्व-
ज्ञानसेकर्मकांडवोलौकिकव्यवहारहोंगे इसढवसेभेदाभेदमत
मेसवव्यवस्थावनेगी वोअत्यन्ताभेदमेद्वैतभानवाधहै तुमहाराव
हाठीकनहीं क्युं मृत्तिकेत्येवसत्यमिति इसपदसेप्रकृतिमात्र-
कोदृष्टांतमेसत्यत्वकेनिश्चयसे वाचारंभणशब्दसेविकारमात्रको
मिथ्याकहाहै दार्ष्टांतिकमेभीकहांकारणकोसत्यकहाहै ऐतदा
त्म्यमिदंसर्वंतत्सत्यमिति फिरजीवकोब्रह्मभावउपदेशहै जैसे स
आत्मातत्वमसिश्वेतकेतोइत्यादि ज्ञानकर्मसमुच्चयकेअर्थएक
त्वनहि किन्तु स्वाभाविक स्वभाव अविद्या है तिससे जीवत्व क
बाधकब्रह्मभावहै जैसे रज्वादिवुद्धिसर्पादि बुद्धि की वाधिका
जीवकेवाधसेजीवाश्रितसवस्वाभाविकव्यवहारवाधितहैं व्यवह
रकोप्रसिद्धिकेअर्थब्रह्मकेअपरनानाअंशकल्पतेहो ब्रह्मदर्शीको
वक्रियाकारक फलादि व्यवहारकाअभावदिखातीहै ॥

यत्रत्वस्यसर्वमात्मैवाभूत्तत्केनकम्पश्येदिति सत्यसंसारमे
जीवकोब्रह्मत्वनहो क्युं भेदाभेदएकत्रएकदाविरोधसेनरहिस
गे इससेअसंसारीब्रह्माभेदसदासेहै तोसंसारमिथ्याहीहै त-
त्वमसोसेब्रह्मात्मभावकीअवस्थाविशेषनहींहै जैसे लोकमेचो
रजानशपथलोझूठाहुआ तोजरावोवंधा तैसे नानात्ववादी
धा हैजोमत्यसन्धहैतोनजरावोकूटिगया तैसे एकदर्शीमुक्तहो
है इसदृष्टांतसेएकत्वसत्यनानात्वमिथ्याहै जोदोनोसचहैं
नानात्ववादीकेसेझूठाकहाहै नानात्वकोनिन्दासेएकत्वको

करतीहै मृत्योःसमृत्युमिति भेदाभेदमतमेंजीवकाब्रह्मभेदज्ञा
नसेभेदज्ञानकीनिवृत्तितिससेमुक्तिइष्टहै वहनयुक्तहै भेदज्ञान
कोभ्रमनमाननेसेप्रमाकाप्रमासेवाधनहींहै अविरोधसे तोकैसे-
एकत्वज्ञानसेनानात्वज्ञानकावाधहै केवलएकत्वहीमाननेसेप्रत्य-
क्षादिप्रमाणनहोंगेनिर्विषयसे जैसेस्याख्यादिमेंपुरुषादिज्ञानहै
फिरविधिनिषेधभीभेदापेक्ष है भेदकेअभावसेउसकाभीअभावहो
फिरमोक्षशास्त्रभीशिष्यशाशिचादिकेभेदाधीनहै तोभेदकेअभा
वसेउसकाभीअभावहो फिरकैसेझूठेमोक्षशास्त्रकेकहिनेसे आ
त्मैकत्वसत्य है जैसे किसी ने कहीं धूलिको धूममानवह्निकाअनु
मानकरातहांप्रमेयवाधितहै तिससेभेदाभेदवोभेद पर वेदांता-
दिप्रमाणहैं उत्तर ब्रह्मात्मताविज्ञानसेपूर्वसबव्यवरसचहै जैसे
जगनेसेपूर्वस्वप्नकाव्यवहारसचहै जोलोएकआत्माकोसत्यनहीं
जानताहै तोलोप्रमाणप्रमेयफलादिविकारोंसेझूठीबुद्धिकिसी
कोनहींहोतीहै सबजन्तुविकारोंकोही अहम्मम इसअविद्यासे
अपनाजानतेहैं स्वाभाविकब्रह्मत्वछोड़केब्रह्मत्वबोधसेपूर्वजीव
कोसबलौकिकवैदिकव्यवहारसिद्धहैं जैसे स्वप्नमेंप्राकृतजनछो-
टेबडेनानाविधपदार्थोंकोदेखताजगनेसेपूर्वप्रत्यक्षसमसमुझता
है उसकोउसकालमेंप्रत्यक्षाभासनहींजानपड़ताहै तैसे ब्रह्म
ज्ञानसेपूर्वविश्वहै एकहीस्वप्नासबकेसेदेखतेहैं जैसे सबसूर्यको
हस्तमितदेखतेहैं कैसे असत्यवेदान्तवाक्यसेसत्यब्रह्मात्मत्वका
बोधहो नहींरज्जुकेसांपसेकाटामरतावोनहींमृगतृष्णाकेपानी
सेपीनादिअर्थसिद्धहोतेहैं यहदोषनहीं शङ्काविषादिसेभीमरना
दिहैं यहवेद्यकसेहैंसोतेमेंअसत्यसांपपानीआदिसेदंशस्नानादि
कार्यदेखतेहैं सोकार्यझूठहै तोसुनोयद्यपिस्वप्नकेद्रष्टाकोस्नाना
दिकार्यझूठेहैं तथापिजगतेकोघटादिकेसमानप्रातिभासिकवो

स्वप्न दृष्टवस्तु का फ*ल सत्य है अबाध्यमानता से कोई सोके उठा स्व
प्न में देखे स्न नादि कार्यों को झूठा मानता है तो भी उसके ज्ञान को
झूठा नहीं मानता है जो देह हो के आत्मा जानता है वही देहात्मवा
दी कहिलाता है यदि स्वप्न के ज्ञान को स्वप्न देह के धर्म मानोगे
तो जो सो के जगा है सो ही कहता कि मैंने ऐसा स्वप्न देखा है यह अ-
बाधित ज्ञान न हो इससे देह भेद में भी अनुसन्धान देखने से देह से
अन्य अनुसन्धाता है झूठे स्वप्न में सत्य फल को श्रुति कहिती है य
दा कर्मसु काम्येषु स्त्रियंस्वप्नेषु पश्यति समृद्धिन्तत्रजानीयात्तस्मि
न् स्वप्ननिदर्शने इत्यादि विषय बिना विषयी ज्ञान झूठा है सत्य में मि
थ्या भेदानुगत चैतन्य से ज्ञान सम्भव से अन्वय व्यतिरेक में कुशलों ने
इस स्वप्न से अच्छा वो इससे बुरा फल सूचन किया है ऐसे चरकादि मे
अरिष्ट मरण सूचक बहुत हैं फिर रेखा में अकारादिकों भ्रांति से सत्य
कारादि का बोध देखा है असत्य से सत्य का जन्म कहने से यह सुगत नि
यम भङ्ग हुआ कि यद्यं क्रियाकारितत्सत्यमिति अनृत से सत्य का ज
न कहिने से यह व्याप्तिभङ्ग हुई य. नृतङ्करणागम्यन्तद्बाध्यं कूटलिङ्गा
नुमितवन्हिवदिति फिर कल्पित वेदांत भी सत्य ब्रह्म बोधक हैं इ
से तात्विक प्रामाण्य है फिर आत्मैकत्व का बाधक अन्य प्रमाण वे
त है इससे परे कछु न चाहिये जैसे यजेत यह कहने से किं केन क
यह कांक्षा है तत्वमसि अहंब्रह्मास्मि इम कहिने से कछु कांक्ष्य नहीं
सर्वात्मैकत्व को अवगति से यह अवगति नहीं हो सक्ती यह नहीं
हिसक्ते हो क्योंकि अवगति के साधन श्रवणादि वेदानुवचन
के विधान से तद्यास्य विजज्ञावित्यादि से इस अवगति को भ्रांति
अनर्थिका नहीं कहि सक्ते हो अविद्यानिवृत्ति फल देखने से वोबा

* अवगतिर्[illegible]त्तिः वस्तुनः फलं चैतन्यस्याभिव्यक्तं ॥

ज्ञानकेअभावसेएकात्मावगतिकेपूर्वसबसच्चाझूठालौकिकवैदिक
व्यवहारअबाधितहै जबश्रुतिसेएकात्मतासुनीतबसबप्राचीनभे
दव्यवहारबाधितहो तैसे अनेकरूपब्रह्मकीकल्पनाकारणकाअ
वकाशनहींहै ननु मृदादिदृष्टांतोसेपरिणामिब्रह्मश्रुतिकोइष्ट
जानाजाताहै लोकमेंमृदादिअर्थपरिणामीदेखनेसेसोनहींप्रिय
सर्वविकारसेरहितब्रह्मनिरवयवकूटस्थ श्रुति कोइष्ट है सवाएष-
महानजआत्माअजरोअमरोअमृतोअभयइत्यादि स्थितिगतिके
समानएकहो ब्रह्मपरिणामिवोपरिणामशून्यक्योंनहो कूटस्थ
कादृष्टिमेपरिणामविलयमेंअपरिणामनहोगा जैसे ब्रह्मैकदर्श
नमुक्तिसाधनहै तैसे जगदाकारपरिणामित्वकादर्शनस्वतन्त्रकि
सीकोवाब्रह्मप्राप्तिफलार्थहो तंयथायथोपासतेतदेवभवतीतिश्रुति
प्रमाणनहींहै कूटस्थब्रह्मज्ञानसेमुक्तिसुननेसे सएषनेतिनेतिय
हकहिफिरकहाकिअभयंवैजनकप्राप्तोसीति ब्रह्मप्रकरणमेंसबवि
शेषधर्मसेरहितब्रह्मकेदर्शनहीसेफलसिद्धिहै जेवाक्यअफलसुने
हैं तेब्रह्म दर्शन के उपाय हैं ब्रह्मकोजगदाकारपरिणामित्वादि
फलवत्सन्निधावफलन्तदङ्गमिति वेस्वतन्त्रफलार्थनहींहैं नित्यमो
क्षफलछोड़अनित्यपरिणामिफलमाननाअनुचितहै ब्रह्मविदा
प्नोतिपरमिति श्रुति कूटस्थब्रह्मवादीएकांतसेएकब्रह्ममानताहै
फिरईशितावाईशितव्यकेअभावसेईश्वरकारणकीप्रतिज्ञाका
विरोधहै अबअनन्यत्वकहिनेसे चेतनाविद्यात्मकनामरूपबी
जकेव्याकरणकीअपेक्षासेनित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वरूपसर्वज्ञसर्व शक्ति
ईश्वरसेजगज्जनि स्थिति लय हैं तस्माद्वाएतस्मादात्मनइत्यादि
नअचेतनप्रधानसेवाअ*न्यकिसीसेउक्तप्रतिज्ञासे विरुद्ध नहीं क

*अणवादि ॥

Dhuman Ram

हाहै कैसेनहींकहा आत्माकाअत्यंतएकत्वअद्वैतत्वताकहाहै
सुनो जैसे नहींकहाहै नामरूपहोवीजअविद्यात्मांचदात्मामे-
लीनथेफिरवीजकाव्याकरणस्थूलासृष्टिहै सृष्टिकीअपेक्षासेईश्व
रत्वादिसेविरोधनहींहै नामरूपकोईश्वरनहींकहिसक्तेहो ज-
ड़तासेईश्वरसेअन्यभीनहींकहिसक्तेहो कल्पितकोपृथक्सत्ता
वास्फूर्त्तिकेअभावसे तिससेआविद्यकनामरूपअनिरुक्तसंसार
केवीजहैं सर्वज्ञकेआत्मभूतसेहैं मायाशक्तिप्रकृतिश्रुतिमेंकहेहै
नामरूपईशकेआत्मभूतहैंतोवहजड़होगा यहनहींइनसेअन्यस
र्वज्ञहै आकाशोवैनामनामरूपयोर्निर्वहितातेयदन्तरातद्ब्रह्मेति
श्रुति नामरूपेव्याकरवाणिसर्वाणिरूपाणिविचिन्त्यधीरोनामा
निकृत्वाभिवदन्यदास्तेएकंवीजम्बहुधायःकरोतीति अविद्यासे
करेनामरूपोंकीउपाध्यनुरोधीश्वरहै घटाद्युपाध्यनुरोधीव्योम
केतुल्य वहीस्वात्मभूतघटव्योमस्थानीयअविद्यासेकरेनामरूप-
कार्यकरणसमूहके अनुरोधीजीवनामविज्ञानात्माकोदृष्टहै भा
ष्यमेंनानाजीवनहींकहेहैं बुध्यादिसंघातभेदसेजीवोंकाभेद क
हाहै अविद्यासेविंवस्थानईश्वरअविद्यासेप्रतिविंवस्थानजीवए-
कहीहै व्यवहारमेंअविद्योपाधिपरिच्छेदापेक्षईश्वरकाईश्वरत्वस
र्वज्ञत्वसर्वशक्तित्वहै परमार्थमेंविद्यासेसवउपाधिसेछुटेआत्मा
मेईशिताईशितव्यसर्वज्ञादिव्यवहारनहींसिद्धहै यत्रनान्यत्पश्य
तिनान्यच्छृणोतिनान्यद्विजानातिसभूमेति यत्रत्वस्यसर्वमात्मै-
वाभत्तत्केनकंपश्येदिति परमार्थमुक्तिमेंसवकेअभावकोवेदांतक
हितेहैं श्रुतिमेभीईश्वरादिव्यवहारकहाहै एषसर्वेश्वरएषसर्वभू
ताधिपतिरेषभूतपालएषसेतुर्विधारणएषांलोकानामसम्भेदाये
ति सूत्रकारनेपरमार्थकोअभिप्रायसेअनन्यत्वकहा वोव्यहार
कोअभिप्रायहैमहासमुद्रकेतुल्यसेब्रह्मकहाकार्यका अनराकार-

णकरकेस्याल्लोकवदिति तदनन्यत्वमितिउपामनार्थंपरिणाम काआश्रयकियाहै प्रत्यक्षादिविरोधदूरकर अनुमान विरोध दूर करतेहैं ॥

भावेचोपलब्धेः १५

कारणकेहोनेपरकार्यलभताहै नकारणकेअभावमेइससेभीकारणकार्यं अनन्यहैं जैसेमट्टीहोनेसेघटहोताहै वोतन्तुहोनेसेपटनियमसेअन्यहोनेपरअन्यकीप्राप्तिनहींदेखीहै जैसे घोड़ागोसेअन्यगोकाकारणनहींहै ऐसेमृद्घटअन्यनहींहैं कुलाल कारणहोनेसेभीघटनहींलभताहैहोनेपरभीनिमित्तनैमित्तकभावकेअन्यहोनेसेअन्यकेहोनेसेअन्यकीप्राप्तिनियतदेखीहै जैसे अग्निकेहोनेसेधूमकोउद्घापितअग्निहोनेमेभीगोपघटिकादिमे धूमदेखनेसे यहनहींमेराकहासुनोअविछिन्नमूल अभ्रलिहदीर्घरूपावस्थधूमकेविनाअग्निकाज्ञाननहींहै तोभीकुछदोषनहीं कार्यकारणकोसत्तासेसहकृतबुद्धिकार्यकारणकेअनन्यत्वमेहेतु हम कहतेहैं अथवासामानाधिकरण्यबुद्धिग्राह्यहेतुहै क्योंकि मृद्घटइससामानाधिकरण्यबुद्धिकेदेखनेसेअग्निधूमयहांनदेखनेसे एकपटयहप्रत्यक्षतन्तुसेपटकोपृथक्सत्तामेंप्रमाणनहीं है क्योंकि तन्तुकेविनापटनामकुछनहींलभताहै प्रत्यक्षसेतन्तुहीआतानवितानसंयोगीपट इसप्रत्यक्षसेअनन्यत्वलभतेहैं औरभीतन्तुमें अंशुअंशुमेअवयवहैं जोप्रत्यक्षनहींहैंउनकायहअनुमानहैकार्यंविमतंकारणादभिन्नंकार्यत्वात्पटवदिति तत्तत्कार्यमेंकारणहीशेष रहताहै इसप्रत्यक्षलाभसेलोहितशुक्लकृष्णातीनिरूपफिरवायुमात्रआकाशमात्रअनुमेयहैं फिरपरब्रह्मएकअद्वितीयमेसबप्रमाणहैं नप्रधानादिमें ॥

सत्वाच्चावरस्य १६

घटादिमट्टीमेथिते मट्टी मे लभे सामान्यसे व्यतिरेकसे जो जहांनहीं वहवहांमेनहींलभता जैसे सिकतासेतेल तिमसे उत्पत्तिकेपूर्वअनन्यया तोउत्पन्नभीअनन्यहीकारणसेकार्यजाना जाताहै जैसे कारणब्रह्मतीनोकालमेंसत्वसेपृथक्नहींऐसेहीकार्यजगतीनकालमेसत्वकोनहीं छाड़ताहै फिरसर्वानुस्यूतचिन्मात्रसत्वएकहैतादात्म्यसेघटपटका इससेकार्यकाकारणसेअनन्यत है भेदहै एकसत्ताहोनेपरभी ॥

असद्व्यपदेशान्नेतिचेन्नधर्मांतरेणवाक्यशेषात् १७

श्रुतिक्वचित्उत्पत्तिकेपूर्वकार्यकाअसत्वकथनसेउसको असत्कहतीहै असदेवेदमग्रआसीदिति असद्वाइदमग्रआसीदिति च सुनो उत्पत्तिकेपूर्वकार्यकोअत्यन्तासत्वकोअभिप्रायसेअसत् नहींकहती तोक्याकहतीहै व्याकृतनामरूपधर्मोंसे अव्याकृतनामरूपधर्मान्तरकोकहतीहै उसीधर्मसेउत्पत्तिकेपूर्वसत्कार्यकाजो कारणमेंअन्यनथा उसकोअसत्व्यपदेशहै यहवाक्यशेषसे जाना है यहांजोउपक्रममेअसत्पदसेकहासोहिफिरतत्पदसेपरामर्शअसत्केसङ्गमिलायाअसदव्याकृतनशून्यहै जैसे तत्सदासीदिति असत्कापूर्वपरकालमेंअसम्बन्धसेआसीत्पदभीअयुक्तहोनेसे असद्वाइदमिति यहांभीवाक्यशेषसेअत्यन्तासत्वनहींकहाहै किन्तु नामरूपरहित तदात्मानंस्वयमकुरुतेति इससे ॥

युक्तेःशब्दान्तराच्च १८

युक्तियोंसेभीउत्पत्तिकेपूर्वकार्यकासत्वौअनन्यत्वकारण

जानाजाताहै वेजैहैं दधिघटरुचकादिकेचाहनेवालेदूधमाटीसो
नादिप्रतिनियतकारणोंकोहीलेतेदेखेहैं यहनहींकिदहीकाअ-
र्थीमाटीवोघटकाअर्थीदूधलेताहै यहतो असत्कार्यवादसे होस
काहै जन्मकेपूर्वसबकासर्वत्रअसत्वसमानहै तोक्युंदूधहीसेदही
जन्मताहै नमट्टीसे मट्टीसेहीघटजन्मतानदूधसे पूर्वअसत्वतोअ
विशिष्टहै तोभीदूधहीमेंदहीकाकछुअतिशयहै नमट्टीमेंवोमट्टी
मेंकछुघटकाअतिशयहैनदूधमें इसकहनेपरभीप्रागवस्थातिशय
वालीठहिरी तोभीअसत्कार्यवादकीहानि वो सत्कार्य वाद की
सिद्धिहुई फिरकारणकीशक्तिकार्यकेलियेकल्पमाननहींअन्यवा
असतीकार्यकोकरतीहै असत्ववोअन्यत्वकाविशेषनहींहै तिससे
कारणमेंलीनकाअकार्यहीअभिव्यक्तशक्तिहै कारणात्मभूतशक्ति
शक्तिकाआत्मभूतकार्यहै फिरभीकार्यकारणकावादद्रव्यगुणादि-
काघोड़ाहाथीकि तुल्यभेदनभासनसेतादात्म्यसम्बन्धजानो सम
वायअनवस्थासेदूषितहै समवायनमाननेसेविशिष्टधीकाविछेदहो
सोनमट्टीघड़ेकास्वरूपसम्बन्धबनाहीहैतोसमवायकीअसिद्धिहैद्र
व्यगुणविशिष्टयहबुद्धिनहोगीसमवायनमानेसे जैसेसमवायसम्ब
न्धान्तरकोनहींचाहता तैसे संयोगभीनहींचाहताहै द्रव्यगुणों
काबाधतादात्म्यसेहै तोउसकीकल्पनाअनर्थकहै किन्तु निष्पा
द्यत्वादयोगुणाइति श्रुतिस्मृत्यादिषुव्यवहारात्इष्टधर्मीगुणाइ
ति परिभाषा जातिविशेषोगुणत्वमिति परिभाषा कैसे अवय
विद्रव्यकार्यकारणअवयवोंमेंवर्तेहै सोक्यासबमेंवाएकएकमेंरह
ताहै प्रथममेंअनवस्थादूसरेमेंएकमेंव्यापारहोनेसेअन्यत्रव्यापार
नहो जिसदिनचैत्रमथुरामेंथा उसीदिनकाशीमेंहै युगपत्अने
कहोनेसेअनेकताहीहै।गौ गोत्ववत्नहींहोसक्ताहै प्रत्यक्षनहोने
से जोसबअवयवोंमेंअवयवीएकहीघुसाहैवोकार्यकेसङ्गसम्बन्धहै

तोशींगसेचुचौकाक्कातोसेपीठिकाकामहोसोनहींदिखतेहैंतो
सेचैत्रघरवनमेंरोटीआदिकार्योंकोकर्त्ताहै तैसे गोअवयवीअप
कार्यदूधादिशींगादिसेकरो त्वन्यनिरूपणसेकार्यअनिर्वाच्यहै
से घटचलताहै यहांआश्रयरूपकर्त्ताचलनक्रियाका घट है तै
पटजन्म।है यहांजनिक्रियाकेकर्तृत्वकाअनुभवहै दूससेजनि
कर्त्ताकाजनिकेपूर्वसत्वकहोअसत्वकहनेसेक्रियाभीअसत्वहो
उत्पत्तिप्रसिद्धहै वहसकर्तृकाहोनेयोग्यहै गत्यादिवत् क्रिया
वोअकर्तृकाहो यहीविरुद्धहै घटकीउत्पत्ति का घट कर्त्ता न
किन्तु अन्यकर्त्ताकल्पनाकरो तैसे कपालादिकोंकीउत्पत्ति
अन्यकर्त्ताकल्पनकरो अन्यकर्तृकाउत्पत्तिमाने से घट जन्म
ऐसेकहिनेसेकुलालादिकारणजन्मेंहैं यहीकहाहै। ऐसातो
कमेंभाननहींहै औरजन्मकाभानभीनहीं भावकीप्रथमवि
कानामउत्पत्तिहै कार्यकी उत्पत्तिकारणमेंमिलीहै स्वस्मिन्सं
समवायोवेतितांकिंकाबद्न्तिजोजन्मानहींउसकासम्बन्धकै
होगे दोनोंविद्यमानोंकासम्बन्धसम्भवहै नसत्असत्का वा
तोंका नरशृङ्गसमसर्वदासर्वत्रकार्यअसत्नहीं किन्तु जन्मके
वोध्वंसकेपीछेअसत्है बीचमेंसत्है असत्काकालसेसम्बन्ध
है तोआगेपीछेकीमर्यादायुक्तनहींहै क्युं अभावनिरुपाख्य
से सत्हीघरखेतोंकीमर्यादालोकमेंदेखीहै अभावकीनहीं
सूर्यवर्माकेअभिषेकसेवन्ध्यापुत्रराजाथा ऐसीमर्यादाकरने
रूपाख्यवन्ध्यापुत्रराजाहुआथा वोहै वोहोगानहीं जोवन्
त्रकर्त्ताकेयत्नसेपीछेहोगा तोकार्यभीजन्मेगा। कार्यकाअभा
कर्त्ताकेयत्नसेपीछेहोगा ॥

सत्कार्यवादीकहताहैकिमेंवन्ध्यापुत्रवोकार्याभावइन
अभावमेंविशेषनहींदेखताहूं क्यों जैसे कर्त्ताकेयत्नसेपीछे

पुत्रनहींहोगा तैसे कार्याभावभीकर्त्ताकेयत्नसेपीछेनहोगा जो असत्सेसत्नहींहोताहै तोकर्त्ताकायत्ननिरर्थकहो जैसे कोई कर्त्ताप्राग्सिद्धकारणकेस्वरूपसिद्धिके अर्थ यत्न नहीं कर्त्ता है तैसे प्राग्सिद्धवोकारणसेअनन्यकार्यकोस्वरूपसिध्यर्थनकोईयत्नवान् हो कर्त्तासार्थयत्नकेअर्थव्यापारकरताहै इसीसेमैंअसत्उत्पत्ति केपूर्वकार्यकाअभावमानताहूं सोनदोषकर्त्ताकायत्नकारणको कार्यरूपव्यवस्थापनकरनेसेसार्थहै कार्यरूपभीकारणकाआत्मा होहै अनात्माकाआरम्भनहींहै यहकहिचुके भावार्थ सत्कार्य वादमेंकर्त्ताकासार्थयत्नकेअर्थकार्यकीअभिव्यक्तिमात्रहै अद्वैत-वादमेंमायासेस्वप्नवत्सबकार्यहै विवेकसेसबअयोग्यहै योग्यहो नेसेद्वैतहीहोगा यही मुख्यसमाधानहै अन्य समाधाननहींहै कारणसेभिन्नअसत्कार्यजन्मताहैयहसमाधाननहींअसत्पक्षमेंदो षकहाथा मट्टीमेंपृथुबुध्नादिअवस्थाविशेषनहींदेखा फिरवुहघट मेंदेखा तिससे घटमट्टीसेभिन्नहै विशेषावस्थाहोनेसेद्वैतकेसम यहमतकहो विशेषदेखेहीसेवस्तुअन्यनहींहै संकोचितहाथपा-ववोप्रसारितहाथपावविशेषदेखनेसेवैअवस्तुअन्यनहींहै सोही कहाहैप्रत्यभिज्ञानसेफिरवापआदिकेदेहकीअवस्थाकेभेदमेंभी-अभेदहै मेरावापमेरीमामेराबेटाइसप्रत्यभिज्ञासे दार्ष्टान्तिकमें शरादिकेनाशसेघटादिजन्मतेहैं तोजन्मनाशरूपविरुद्धहोने-सेकार्यकारणकाअभेदयुक्तनहींहैदहीघड़ाआदिदूधमट्टीसेयुक्तप्र त्यक्षहैंतिससेनाशअसिद्धहैवटबीजादिसमानअवयवोंसेउपचित अङ्कुररूपगीवरजन्मनामलभतेहैंफिरतेहीअवयवोंकेअपचयदेख नेसेनाशनामपातेहैंअङ्कुरादिमेंबीजादिकेअवयवोंकेअन्वयसेअ नाशनहींहैउपचयापचयलिङ्गसेवस्तुभेदकाअनुमानहोनेसेतो असत्सेसत्ववोसत्वसेअसत्वहो तोगर्भवासीवोउत्तानशायीका-

भेदहो फिरवाल्ययौवनस्थाविरोंमेंभीभेदहो पित्रादिव्यवहारभी
लोपहो कारणकाकार्यमेंअन्वयकहनेसेक्षणभङ्गवादभीखण्डित
किया जोउत्पत्तिकेपूर्वअसत्कार्यमानताहै उसकेक*र्त्ताकायत्न-
निर्विषयहो अभावकाविषयनहोनेसे जैसे खड्गादिसेव्योमका
हनननिष्प्रयोजनहै समवायिकारणविषयकर्त्ताकायत्नहै यहन-
हींहै अन्यविषयकर्त्ताकेयत्नसेअन्यकीसिद्धिहोगी यहअतिप्रसङ्ग
दोषसमवायिकारणसेकार्यकेभिन्नपक्षमेंहै फिरसमवायिकारण
घोआत्मातिशयकार्यहैतोसत्कार्यहो।है तिससेघोरादिद्रव्यहोट
ध्यादिरूपमेंतिष्ठज्ञानकार्यनामसेकहेजातेहैंतोअवसौवर्णमेंभीका
रणसेअन्यकार्यकानिश्चयशक्य नहीं है अब मूल कारणही अन्य
कार्यसेतिमरकार्याकारसेनटसमसबव्यवहारकाठौरहै उत्पत्ति
केपूर्वकार्यकाकारणसेसत्ववोअनन्यत्वयुक्तिसेजानकहिचुके (श
ब्दान्तराच्च) सदेवसोम्येदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीयंइति तद्धैक
आहुरसदेवेदमग्रआसीदिति इसअसत्पक्षका।उपक्षेपकरकाहा-
क्षिकैसेअसत्सेसत्जन्माहै कथमसतःसज्जायेतेति यहआक्षेपक
रनिश्चयकराहै सत्त्वेवसोम्येदमग्रआसीदिति यहांइदंपदसेकार्य
काउत्पत्तिसेपूर्वसत्पदकारणसेसामानाधिकरण्यसुननेसेसत्ववो
अनन्यत्वप्रसिद्धहैयदिउत्पत्तिसेपूर्वअसत्कार्यहोपीछेसेउत्पद्यमा
नकारणमेंसमवायिहो तदाकारणसेअन्यहो तोवेदप्रतिज्ञास
रोगहोसत्ववोअनन्यत्वकोअवगतिसेवुहोप्रतिज्ञानीरोगहै येना
श्रुतंश्रुतम्भवतीति ॥

पटवस्त्र १९॥

जैसेवन्ध्यावस्त्रअस्पष्टजा।नाजाताहैकिवस्त्रहै वोकुछऔरवस्

---

* कारकव्यापार ॥

है यामृदादिसेबस्वजानलीतौभी अर्णादिभेदनहीं जान सकींगे वहीप्रसारितवस्त्रअस्पष्ट वस्त्रही जाना जाता है जैसे वंधनका-लमेंवस्त्रतोजानापरलम्बाचौड़ानजाना वहीप्रसारणकालमेंचौ ड़ाजानापरवेष्टितसेयहअन्यभिन्नवस्त्रहै ऐसनहींजानताहै जैसे मशिसेशश तन्वादिमेंवस्त्रादिकार्यअस्पष्टहै तुरीवेमकुविन्दादि कर्ताकेयत्नोसेस्पष्टजानाजाताहै इसीसंवेष्टितप्रसारितपटन्या येसेहीकार्यकारणसेअनन्यहै ॥

यथाचप्राणादि २०

जैसे लोकमेजबतकप्राणपवनहृदयमेंहीरहिताहै तबतक उससेजीवनमात्रहीसिद्धहै अन्यप्राणभेदोंसेप्रसारणादिकार्यभी सिद्धहोतेहैं परन्तुवेमबप्राणादिभेदपवनस्वभावहीहैं नकिपवन सेभिन्नहैं ऐसेविश्वरूपकार्यकारणब्रह्मसेभिन्ननहींहै तिससेस वविश्वब्रह्मकाकार्यऔरब्रह्मसेअनन्यहै यहश्रोतीप्रतिज्ञासिद्ध-हुईहै येनाश्रुतंश्रुतंभवत्यमतंमतमविज्ञातंविज्ञातमिति ॥

हिताकरणाधिकरण ॥ ७ ॥

इतरव्यपदेशाद्धिताकरणादिदोषप्रसक्तिः २१

स्वानिष्टं निरयादिकंनजनयेत्स्वतन्त्रचेतनत्वादितिन्यायः। चेतनहीजगकर्ताहै तोहिताकरणादिदोषउसमेंहोंगे क्युं जीव कोब्रह्मकहाहैश्रुतिने सआत्मातत्त्वमसिश्वेतकेतो अथवाअवि-कृतपरमात्माकार्यमेंघुसाजीवकहाहै तत्सृष्ट्वातदेवानुप्राविशदि

ति फिरपरादेवताजीवकोआत्मशब्दसेकहतीहै वोनहिंब्रह्मसे-
भिन्नजीवकोदिखातीहै अनेन जीवेनात्मनानुप्रविश्यनामरूपे-
व्याकरवाणीति तिससेजोब्रह्मकाकर्तृत्वहैसोजीवहीकाहै इस
सेस्वतन्त्रकर्ताहुआतोअपनेकोजोमनोहरहै वुहीकरेगानजन्मम
रणजरानरकरोगादिअनेकअनर्थजालोंकोकोईस्वतन्त्रअपनेअर्थ
बन्धनकाघरबनाकेफिरउसमेंघुमकेबद्धहोयहनहींदिखाहैफिरन-
आपअत्यन्तनिर्मलहुआअत्यन्तमलिनदेहकोआपहीग्रहणाकरेग्र-
हणाकरीभीदेहकथञ्चित्दुःखदाईहैतोइच्छासेत्यागे वोसुखदाई
कोलेविस्मरणाभीहोकिमैंनेयहजगविचित्ररचाहै सबलोगअपने२
करेकार्यकास्पष्टस्मरणाकरतेहैंकियहकार्यमेराहीकराहैफिरजैसे
मायावीअपनीफैलाईमायाकोविनाश्रमइच्छासेसमेटताहैऐसेही
जीवभीइसफैलीसृष्टिकोसमेटो जीवअपनेदेहकोभीविनाश्रमसे
नहींगिरासक्ताहै ऐसेहितकर्मादिकेअदर्शनसेजगत्कीप्रक्रिया
चेतनसेमाननाअन्याय्यहै ॥

अधिकन्तु भेदनिर्देशात् २२

जीववोईश्वरके अभेदसेजीवगतदोषईशमेपहुंचे वोईशकेसृष्टि
स्थितिसंहारशक्तिसर्वस्मृतित्वादिगुणाजीवमेपहुंचेयहलोटपोटदृष्ट
नहीं हैक्युंजीवकोसंहारशक्तिअपनेदेहमेरहतपरभीनहींदिखते हैं
सिद्धान्तसेलोकमेंविम्बप्रतिविम्बकेतुल्य कल्पितभेद कोमानेसे-
सबधर्मव्यवस्थितहैं अहिताकरणादिदोषब्रह्ममेंनहीं क्युं नित्य
मुक्तस्वभावसेनकुछकर्त्तव्यनपरिहर्तव्यहै वहसर्वज्ञसर्वशक्तहैतो
सबजानकरसक्ताहैजीवऐसानहींहै तोउसमेहिताकरणादिदोष
भीहैंहमतोजीवकोजगकर्त्तानहींकहितेहैं तोदोषकैसेआवेंगेका
हेसेभेदकहिनेसे भेदनिर्देशात् आत्मावाअरेद्रष्टव्यःश्रोतव्योमन्त

व्यो निदिध्यासितव्यः सोन्वेष्टव्यः सविजिज्ञासितव्यः सतासोम्यत-दासंपन्नोभवतिशारीरआत्माप्राज्ञेनात्मनान्वारूढ़इति यहांक त्तांवोकर्मादिका भेदकथनजीवसे अधिकब्रह्मकोदिखाताहै अच्छा अभेदभीकहाहै तत्वमसि तोकैसेविरुद्धभेदाभेदकासम्भवहोगा तुमतोसुधिभूलादो आकाशवोघटाकाशन्यायसेदोनोंकासम्भव वार२स्थापनकरतेआयेहैं फिरयदा अभेद अभेदसे आगेपीछेकेनि र्देशसेअभेदवोधितहै तदाजीवकासंसारित्वअपगतहै फिरब्रह्म का स्रष्टृत्वभी अपगतहै सबभेदव्यवहारमिथ्याज्ञानसेरचितसम्य क्ज्ञान सेवाधितहै फिरकहांसृष्टिकहांवाहिताकरणादिदोषहैं अविद्यासेप्रत्युपस्थापितनामरूपकृतकार्यकारणसंघातोपाधि से अविवेकहै तिससेभ्रांति जैसे कर्तृत्वादिबुद्धिकेधर्मोंकाध्यास-आत्मामेहै तैसे देहकेधर्मोंका अध्यासहैवहयहकिजन्ममरणउच्छे दनभेदनादिकाअभिमानहै हिताकरणादिसंसारहै परमार्थन हींहै यह तो वार२ समुझा चुके ज्ञान से आगे स्रष्टृत्वादि धर्मों के वाध से प्राग् कल्पित भेद से सब व्यवस्था की सिद्धि से कुछ भी दोषनहींहै ॥

अश्मादिवच्चतदनुपपत्तिः २३

जैसे एकभूमिसेवड़े मोलकेमणिवज्रवैदूर्यादि मध्यमवीर्य सूर्यकांतादिहीनवीर्यकुत्ताकव्वाउड़ानेके अर्थवटरादि जैसे एक भूमिमेंवोयेनानाबीजोंसेवहुविधपत्रपुष्पफलगन्धरसादिकोवैचि त्र्य चन्दन किम्पाकादि में देखते हैं जैसे एकअन्नरस के रक्तादि केशलोमादिविचित्रकार्यहोतेहैं ऐसेएकहीब्रह्मकेजीवप्राज्ञपृथ-क्वोकार्यपृथक्युक्तहैं विकारका वाचारम्भण मात्र से स्वप्न दृश्य भाववैचित्र्यसमहैं इनदृष्टांतोंसेअखण्डमेंजीवईश्वकोवैचित्र्यवो

ईशके कार्यों को वैचित्र्यसिद्धि की है तदनुपपत्तिः इस से अन्य के कहे हिताकरणादि दोष का प्रसङ्ग नहीं है ॥

(सृष्टिक्रमाधिकरण ॥ ८ ॥)

उपसंहारदर्शनान्नेतिचेन्नक्षीरवद्धि २४

उपादानमृदादि निमित्तदण्डादि असमवायि संयोगादि के सन्निपात से कार्य देखते हैं जैसे लोक में कुलालादि घटादि के संग्रही तसाधन कर्त्ता मृत् दण्ड चक्र सूत्रादि बहुत कारकों के मेल से घटादि कार्य करते देखे हैं फिर असहाय ब्रह्म तुम को इष्ट है उस के पास साधनान्तर कुछ भी नहीं है तो स्रष्टा कैसे हो सक्ता है उपाधियों से विभक्त ब्रह्म का प्रेरकादि भी सहकारी नहीं है नाना ईश के न होने से तिस से ब्रह्म जगत्कारण नहीं है यह दोष नहीं है जैसे लोक में क्षीर जल आप ही दधि हिम रूप से बदलते हैं बाह्य साधन को नहीं चाहते हैं तैसे शुद्ध ब्रह्म कारण नहीं शबल ईश्वर का सहाय माया ही है यद्यपि क्षीरादि भी दध्यादि होने में बाह्य औष्ण्यादि चाहते हैं तो कैसे कहिते हो कि बाह्य साधन नहीं चाहते हैं यह भी दोष नहीं क्षीर आप ही जितनी परिणाममात्रा होने चाहे उतनी ही औष्ण्यादि से शीघ्र कराया गया है यदि क्षीर आप दधिशील न होता तदा औष्ण्यादि से भी केवल दधि न होता नहीं देखे वायु वा व्योम औष्ण्यादि केवल से दधि होते सहाय नहीं होता भी कुछ विकार क्षीर को होता फिर आतञ्चन वा औष्ण्यादि साधनों से उत्तम दधिभाव की सामर्थ्य प्रकट करी है शक्तिव्यञ्जक सहाय भी ब्रह्म को नहीं चाहता है परिपूर्ण है इस से मायाश

क्तिकीअपेक्षानहींहै श्रुति नतस्यकार्यंकरणंचविद्यतेनतत्समश्चा
भ्यधिकश्चदृश्यतेपरास्यशक्तिर्विविधैवश्रूयतेस्वाभावि की ज्ञानव-
लक्रियाचेतितोअवएकहीब्रह्मकीविचित्रशक्तियोंकेयोगसेक्षीरा
दिवत्विचित्रपरिणामउपपन्नहै ॥

देवादिवदपिलोके २५

क्षीरादिअचेतनबाह्यसामग्रीकेविनादध्यादिहैं। चेतनकुला
लादितोसामग्रीसहितहीकार्यकरतेदेखतेहैं फिरकैसेचेतनब्रह्म
सहायकेबिनावर्ततताहै सुनो देवादिवदिति जैसे लोकमेंदेवपि
तरऋषिबड़ेप्रतापीचेतनविनासामग्रीकेऐश्वर्ययोगद्वारासङ्कल्प
ध्यानहीसेजोपूर्वनहींथेदेहघररथादि उनकोरचतेदेखे हैं यहीम
न्त्रोअर्थवादइतिहासव्यवहारोंसेप्रकटहै फिरमकरीभीआपहीडोरों
कोसृजतिहै बगुलीभीशुक्रकेबिनामेघकीगर्जसेगर्भकोधर्त्तीहै
पद्मिनीभीगमनकेसाधनविनाएकतालसे दूसरेतालमेंजमतीहै
ऐसेही चेतनभीब्रह्मबाह्यसामग्रीकेविनाआपहीजगसृजताहै य
दिकहो कि देवादि दृष्टान्त दार्ष्टान्तिक ब्रह्म के समाननहीहैं क्युं
देवसेमकरीलोदेहअचेतनहैं फिरवहदेहांतरआदिकीविभूति
केजन्मानेमेंउपादानहै चेतननहींहै मकरीकोलारछोटेजीवों
केखानेसेकड़ीहुईडोराहोतीहै बगुलीकागर्भमेघशब्दसेरहता
है फिरपद्मिनीचेतनकेलेजानेसेतालसेतालकोअचेतनदेहही
सेजातीहै जैसे लतापेड़पर पद्मिनीचेतननहींहै जोतालसेता
लकोजानेकेअर्थव्यापारकर्त्तीतिससेजोदृष्टान्तब्रह्मकेअर्थअच्छेन-
हींहैं तिससेकहोकियहवैषम्यदोषभीनहींहै हमकोकुलालादि-
दृष्टान्तोंसेवैलक्षण्यहीविवक्षितहै जैसे कुलालादिकोदेवादिस-
मानचेतनहैं तोभीकुलालादिकार्यारम्भमेंबाह्यसाधनकोचाहते

हैं नदेवादि तैसेब्रह्मचेतनभीवाह्यसाधननहींचाहताहै यहहीदे वादिदृष्टान्तोंसेदृष्टहै कुलालसेविलक्षणदेवहैं घटादिकार्यकेकर ने में अपने सेअधिकसामग्रीनचाहनेसेदेवसेविलक्षण ब्रह्महै दे हकोभीनचाहनेसे तिससेयहएकांतनहींहैकि जैसे एककीश- क्तिदेखी तैसे सबकोहोनेकेयोग्यहै यहअभिप्रायहै ॥

——*⌒*——

(परिणामभङ्गाधिकरण ॥ ६ ॥

कृत्स्नप्रसक्तिर्निरवयवत्वशब्दकोपोवा २६

ब्रह्मचीरवत्देवादिवत्वाह्यसाधन के विनापरिणममानज गकारणठहिराथाककुयुक्तिशेषरहीथी उसकाउत्तर (कृत्स्न) परि णामनहींहैविवर्तहै यदिब्रह्मपृथिव्यादिकेसमानसावयवहोगा तोब्रह्मकाएकदेशपरिणमेगा एकदेशस्थिरहोगा फिरनिरवय- वसर्वविशेषप्रतिषेधिनोश्रुतिसेसुनाहै निष्कलन्निष्क्रियंशांतंनि रवद्यंनिरञ्जनंदिव्योह्यमूर्त्तःपुरुषःसवाह्याभ्यन्तरोह्यजःदृटंमह द्भूतमनन्तमपारंविज्ञानघनएवसएषनेतिनेत्यात्माअस्थूलमन- णिवति इससेएकदेशकापरिणामसम्भवनहींहै जोकहोकिसबब्र ह्मपरिणतहुआतोब्रह्महीनरहा तिससेद्रष्टव्यउपदेशव्यर्थशून्यहै आत्मावाअरेद्रष्टव्यइतिश्रुतिअयत्नसेदृष्टसेदेखाकार्यकावोकार्य सेभिन्नब्रह्मकोसंभवसेश्रुतिविरोधभीहै अजोमरइति अथवाउ क्तदोषोंकोनिवृत्तिकेअर्थसावयवहीब्रह्मजानोतोभीजेनिरवयव केबोधकशब्दकहेहैं तिनसेविरोधहो फिरसावयवहोगा तोअनि त्यहोगा सर्वथायहपक्षयुक्तनहींहै ॥

श्रुतेस्तु शब्दमूलत्वात् २७

मेरेपक्षमेंसबब्रह्मकार्यनहींहोताहै कैसेश्रुतिसे जैसे ब्रह्मसेज

जन्मसुनाहै तैसे कार्यसेपृथक्ब्रह्मकाअवस्थानभीसुनाहै प्रकृतिवोविकृतिकेभेदसेउपदेशहै श्रुति सेयंदेवतैक्षतहन्ताहमिमास्तिस्रोदेवताअनेनजीवेनात्मनानुप्रविश्यनामरूपेव्याकरवाणीति एतावानस्यमहिमाततोज्यायांश्चपूरुषःपादोस्यसर्वाभूतानित्रिपादस्यामृतंदिवीति फिर ईश का स्थान हृदयकहाहै सवाएषआत्माहृदीति इस्यसेपृथक्ब्रह्महै यदिसबब्रह्मकार्यही हो तदासुषुप्तिकाविशेषणभ्रष्टहो सतासोम्यतदासम्पन्नोभवतीति फिरविकृतिब्रह्मसेनित्यसुषुप्तिमेमिलेगी अविकृतब्रह्मकेनरहनेसे पृथिव्यादिविकारइन्द्रियोंकागोचरहै नब्रह्मकानचक्षुषागृह्यतइति फिरब्रह्मवोविकारदोनोइन्द्रियगोचरहो तिससेब्रह्मअविकृतहै निरवयवशब्दकाविरोधनहीं श्रुतिसेनिरवयवजानेसेब्रह्मकार्यरूपवोपृथक्है तोसावयवत्वदुर्वारहै एकनिरवयवद्विधासत्नहींहोसक्ताहै इससेद्विधासावयवहीहै यहशङ्काविवर्त्तविनाजानेसेहैब्रह्ममेशब्दहीमूलहैफिरजैसाशब्दकहै तैसा जानो फिरब्रह्ममेंशब्दहीप्रमाणहै नइन्द्रियादि फिरशब्दब्रह्मकोकार्यरूपवोनिरवयवदोनोकहताहै प्रत्यक्षसेमणिमन्त्रऔषधिआदिकी देशकालनिमित्तकेवशसेशक्तिविरुद्धबहुतकार्यकेकरनेवालीदेखतेहैं तोभीउसकीउपदेशकेविनाकेवलतर्कसेनहींजानसक्तेहैं इसवस्तुकीशक्तिकायहसहाययहविषययहप्रयोजनवोइतनीशक्ति है यहनहींजानसक्तेहैं तोअचिन्त्यस्वभावब्रह्मकारूपविनाशब्दसेकैसेजानेवाशब्दभीकैसेविरुद्धअर्थकोकहसक्ताहै ब्रह्मनिरवयवपरिणमेहैपरसबनहींपरिणमताहैयदिनिरवयवहोतदानपरिणमेवोएकदेशसेपरिणमेसबपरिणमे अथवाकिसीरूपसेपरिणमेकिसीरूपसेस्थिरहैइसरूपमेदकल्पनासेभीसावयवहीहोजहांकर्ममे भीविरोधहै तहांविकल्पमानेसेविरोधबारणहै चतिराचेबाड

शिनंगच्छतीति इसका अनुष्ठानपुरुषके आधीनहै यहांतोविक
ल्पमानेसेभीविरोधवारणनहींसम्भवहैक्योंकिवस्तुपुरुषकेअाधी
ननहोनेसेतिससेउक्तदोषदुर्घटहैक्युंनिरवयवमेंब्रह्मकोजगको
कृतिकहितीश्रुतिसेसावयवमेंनिरवयवशब्दसेविरोधवस्तुमेंवि
ल्पअयुक्तहै प्रकारांतरकीप्राप्तिनहींहै तोश्रुतिकीप्रामाण्यदुर्घ
टहै यहदोषनहींहै अविद्यासेकल्पितनामरूपादिभेदहै जैसे
तिमिरीपुरुषएकचन्द्रकोअनेकदेखता है तोचन्द्रअनेकनहीं
अविद्यासेरचेनामरूपकर वोप्रकटवोअप्रकटरूपकरवोतत्त्व
न्यादिसे अनिर्वचनीयसेपरिणामादिसबव्यवहारोंकाठौर ब्रह्म
होहै पारमार्थिकरूपसे अपरिणतसबव्यवहारोंसेकुटास्थिरहै अ
विद्याकल्पितनामरूपकाभेदवाचारम्भणश्रुतिसेहै इससेनिरव
यवताकाब्रह्मकेसङ्गकोपनहींहै वाचारम्भणश्रुतिपरिणामप
नहींहै परिणामकेकहिनेमेफलकाअभावहैनिष्प्रपञ्चब्रह्मरूपि
अनुवादसेकहाहै ब्रह्मज्ञानसेमुक्तिफलहै सएषनेतिनेत्यात्मे
त्यभयंवैजनकप्राप्तोसीति इससेविवर्त्तवादमेकुछभीदो
नहींहै ॥

आत्मनिचैवम्विचित्राचहि २८

परिणामपूर्वकोअवस्थाकानाशअवस्थान्तरकाजन्महै जैसे
दूधकादहीपूर्वरूपकेनाशविनाअवस्थान्तरविर्ततहै जैसे शुक्ति
कारजतहोना स्वरूपनाशकेविनाएकमेअनेकविधसृष्टिकैसे हो
गायहविवादनकरनाचाहिये एकहीस्वप्नदेखनेवालोंमेंस्वरूपना
शकेविनाअनेकविधसृष्टिपढ़तेहैं नतत्ररथानरथयोगाद्रत्या
दीकमेभीमायावीमे देवादिमेंस्वरूपनाशकेविनाविचित्रहाथी
घोड़ाआदिकीसृष्टिदेखतेहैं तैसे एकमेंस्वरूपनाशकेविनाअने
कविधसृष्टिहोगी यहीमायावादहै ॥

स्वपक्षदोषाच्च २९

प्रधानवादीकापक्षयहांस्वपक्षशब्दसेइष्टहै किनिरवयवअप रिच्छिन्नशब्दादिहीनप्रधानसावयवपरिच्छिन्न शब्दादिमान्कार्यका कारणहैतोनिरवयवतासेसबप्रधानहोकार्यहोफिरनिरवयवमान नाविरुद्धहैवेप्रधानकोनिरवयवनहींमानतेहैं सत्वरजतमतीनो गुणनित्यहैं इनकीसाम्यावस्थाप्रधानहै तीनोंगुणअवयवहैं तिनसेसावयवहैगुणोंकीसाम्यावस्थाक्याहैविकारवोसमुदायहैपहिलेमेवहप्रकृतिनहोगीविकारसे समुदायमेंप्रपञ्चकाअभावहै समुदायतोवस्तुनहींहै तिससेमूलकाअभावहै अथवानिरवयवगुणनानापरिणामोंकोप्रकृतिहैं यहकहैपरभीसबगुणकार्यहुआतो मूलनाशदुर्वारहै ऐसीसावयवतासेउक्तदोषकावारणदुर्घटहैसांख्यकोभीजिससेसत्वरजतममेसेएकएककोनिरवयवत्वसमानहै फिरइनमेसेएकएकदोके सहाय से अपने२प्रपञ्चका उपादान हैं फिरतुम्हारेपक्षमेंभीदोषसमानहैतोमुझहीकोक्योंपर्य्यनुयोगकरतेहो फिरनिरवयवसाधकतर्ककोआभाससे वोगुणोंकोसावयवमानसेमट्टीकेसमानएकदेशपरिणामसेसबगुणकार्यनहोगातो भीअनित्यादिदोषहोंगे अथकार्यकीविचित्रतासेसूचितशक्तिअवयवहैवहशक्तिब्रह्मवादीकोभीमायिकशक्तिसेसावयवत्वब्रह्मको- तुल्यहैसांख्यकेतुल्यअणुवादीकोभीदोषसमानहैनिरवयवपरमाणुदोकासंयोगव्याप्यवृत्तिवाअव्याप्य वृत्तिहै प्रथमपक्षमेंपरमाणुकाकार्यद्व्यणुकएकपरमाणुमात्रहोमुटाईलम्बाईचौड़ाईनहोअणुकाअणुकेसंगसेऊपरनीचेवोचारोंओरकेघरमें अणुसेअधिकद्रव्यकासंभवनहींहै दूसरेमेंएकदेशकेसंयोगसेनिरवयवकाविरोध है निरवयवसेसबकार्यमेंघुसगया इससेस्वपक्षमेंदोषसमानहैतो परपक्षमेंफेकनयोग्यनहींहैमायावादमेंस्वप्नसदृशसबसामंजस्यहै

इससेअपनेपक्षमेंदोषनहींहै कादरबचनईश्वरहै किसीनेकिसीसेकहा।कितूचोरजारहैउसनेभीलौटकेकहा।कितूभीचोर जार है इससेसांख्यव्यासदोनोंसमानहैं अशरीरस्यनमार्येति इसन्याय सेविरोनहींहैसमन्वयका ॥

सर्वोपेताचतद्दर्शनात् ३०

एकमायाशक्तिमत्ब्रह्म सेविचित्रप्रपञ्चकहाथा।फिरविचित्र शक्तिमत्परब्रह्मकैसेजानतेहो श्रुतिकेकहिनेसे सर्वकर्मासर्वकामःसर्वगन्धःसर्वरसःसर्वमिदमभ्यात्तोऽवाक्यनादरःसत्यकामःसत्य संकल्पायःसर्वज्ञःसर्वविदेतस्यवाअक्षरस्यप्रशासनेगार्गिसूर्याचन्द्रमसौविधृतौतिष्ठतइति अभ्यात्तः सबओरसेपूर्ण अवाकी वागिन्द्रियसेरहित अनादरःनिष्काम ॥

विकरणत्वान्नेतिचेत्तदुक्तं ३१

शक्तचेतनदेवादिआध्यात्मिककार्यकरणसंयुक्तदेहाभिमान सेकर्तादेखेहैं देहादिकेअभावसेसुषुप्तिमेंनहींदेखेहैं इससेब्रह्म शक्तहैतोभीदेहादिकेअभावसेकर्तानहींसंभवहै वोअदेहकोशक्ति काभीसंभवनहींहै परादेवता।को वेद इन्द्रियादि से रहित कहताहै अचक्षुष्कमश्रोत्रमवागमनइति फिरकैसेसर्वशक्तियुक्तकार्य करणकोप्रभुहै फिरकैसेप्रतिषिद्धहै सबविशेषजिससेहैंऐसेब्रह्म कोसर्वशक्तिकायोगसंभवहोगा नेतिनेति सुनो।जोयहांकहिनेहै सोपीछेकहिचुकेविकरणजोबकर्त्तानहींहोसक्ताहैईश्वरकोसंभव है देवादिवदिति अतिगम्भीरब्रह्मश्रुतिसेजानाजाताहैनतर्कसेसर्वशक्तियोगभीअविद्यासंकल्पितनामरूपादि भेदोंकेकहिनेसेकहाहै अपाणिपादोजवनोग्रहीतापश्यत्यचक्षुःसशृणोत्यकर्णः इ

ति यहवेदअकरणब्रह्मकोसब शक्तिकायोगदिखाताहै कल्पि
तशरीरीकोमायाअयत्वके अयोगीसेनिर्विशेषचिन्मात्रहीमाया-
काअधिष्ठानहै कोईकहतेहैंकियहअद्भुतरसकावर्णनहै ॥

नप्रयोजनवत्वात् ३२

जोअभ्रांतचेतनहैसोनिष्फलवस्तुनहींरचताहै यहन्यायहैफि
रअन्यरीतिसेचेतनकर्तापरआक्षेपहै लोकमेंबुद्धिपूर्वकारीपुरुषप्र
वर्तमानदेखाहैवोनिष्फलवाअपनेप्रयोजनसेरहितप्रवृत्तिकरते
नहींदेखाहैतोईश्वरक्योंऐसेबड़ प्रपञ्चमेंनिरर्थप्रवृत्तिकरताहैलो
कमेंयहीप्रसिद्धहै किबुद्धिमान्कीप्रवृत्तिअपनेफलकेअर्थहैइसीको
अनुवादिनीश्रुतिसुनो नवाअरेसर्वस्यकामायसर्वंप्रियंभवत्यात्म
नस्तुकामायसर्वंप्रियंभवतीति दयालुकीप्रवृत्तिभीपरदुःखदेख-
नेसेस्वचित्तमेंजन्मीव्याकुलताकीनिवृत्यर्थहै फिरइसकेटिबड़ ज
गद्बिंबकेरचेकाफलभीकुछकहो यदिचेतनप्रभुकीप्रवृत्तिस्वार्थके-
अर्थकल्पोतोतृप्तप्रभुसुनाहैसोबाधितहोवोप्रयोजनकेअभावसेप्र
वृत्तिकाभीअभावहो अथचेतनभीउन्मत्तविवेकाभावसेस्वार्थकेवि
नाप्रवर्तमानदेखाहै तैसेप्रभुभीप्रवर्तेगायहीकहोतोईशकोजोस
र्वज्ञतासुनीहैसोबाधितहोदयासेभीसृष्टिनहींकहिसक्तेहो क्यों
सृष्टिकेपूर्वजीवोंकेनहोनेसे तिससेचेतनमेंसृष्टिअश्लिष्टहै ॥

———*———

(लीलाकैवल्याधिकरण ॥ ९ ॥)

लोकवत्तुलीलाकैवल्यं ३३

स्वबुद्धिमनुरुध्यतुनाक्षेपोनिरस्यते ॥

जैसेतृप्तैषणाराजाकोअधिकप्रयोजनकेविनाकेवलखेलकेअ
र्थप्रवृत्तिरम्यदेशोंमेंहोतीहैऔरजैसेबाह्यप्रयोजनकेविनानीचेऊ

परकोश्वासस्वभावसेनिकलतीहै तैसेप्रभुकोस्वभावहीसेप्रयोजन केविनालीलारूपाप्रवृत्तिहोगीतर्कवोश्रुतिसेप्रभुकोप्रयोजनांतर सूक्ष्मकाभीसंभवनहींहैवोप्रभुकास्वभाव कालकर्मसहितमःया- हैप्रभुकोसृष्टिसेकछुफलनहींपूर्णकामत्वकीहानिसेप्रभुऐसीसृष्टि क्युंरचताकिजिससेअपनेकोकुछफलनहींहैवोऔरोंकोदुःखदाई है इससेवैठरहनाहीअच्छाहै स्वभावरुकिनहींसक्ताहै जबकाल धर्मादिसामानहोतेहैं तबसृष्टिनहींरुकिसक्तीहै यद्यपिहमेयहज गविस्वरचनादुर्घटजानीजातीहैतथापिप्रभुकोकेवललीलाहीहै अपरिमितशक्तिहोनेसे यदिराजादिकीअल्पप्रवृत्तिकासुखोल्ला सादिकछुफलकल्पोतथापिप्रभुप्रवृत्तिकाकछुप्रयोजननहींकल्पस सक्तेहोआत्मकामश्रुतिसेअव्यवस्थासुनोसृष्टिश्रुतिकीप्रवृत्तिका निरोधनहींवोसर्वज्ञत्वश्रुतिकोउन्मत्ततानहींहै स्वप्नसृष्टिकेस- मानयहभीसृष्टिमायामात्रहै तिससेफलकीअपेक्षानहींहै फिर निष्फलसृष्टिश्रुतिव्यर्थनहींहै सफलब्रह्मबुद्धिकेशेषसेअर्थवती है यहमतभूलोस्वप्नकीउपाधिरातिछोटीहै तिससेवहथोरीदेर ठहिरताहै औरसृष्टि की उपाधि माया अनन्त है तिससे सृष्टि अनन्तहै ॥

—————*—————

(वैषम्यनैर्घृण्याधिकरण ॥ १० ॥)

वैषम्यनैर्घृण्येनसापेक्षत्वात्तथाहिद- र्शयति ३४

फिरभी जैसे हलारकेगाड़ेसेखूंटाहढ़गड़ताहै तैसे ईशपरजग जन्मादिकेहेतुआक्षेपप्रतिज्ञाकेदृढ़ार्थहै कर्मादिसापेक्षईशकोस ष्टियुक्तनहींहै अनीशतासे फिरकर्मनिरपेक्षविषमसृष्टिरचनेसे

पृथग्जनकेसमानरागद्वेषीहै फिरश्रुतिसेईशकास्वकृत्वादिस्व-
भावसुनाहै उसकाभीलोपहो निरवद्यंनिरञ्जनमिति जनभी
निर्घृणत्वक्रूरत्वकोनिन्दाकरतेहैं वेहीईशमेंदुःखयोगरचनेसे
वोसवप्रजाकेनाशसेहैंतिससेईशकारणनहींहै सुनो सापेक्षता
सेरचताहै तिससे वेदोषनहीं है जोनिरपेक्षहो ईश सृष्टि रच
ता तोवेदोषहोतेविषमकानिरपेक्षनिर्मातानहींहै सापेक्षहीवि
षमसृष्टिनिर्माताहै क्याअपेक्षितहै धर्माधर्मकहिताहूं जिनको
रचेगा उनकेधर्माधर्मकेअनुसारविषमसृष्टिरचेगा इससेईशको
यहदोषनहींहै जैसे राजासेवाकोदेखफलदेताहै तोभीउसका
ईश्वरत्वनहींजाताहै केवलधर्माधर्मविचित्रसृष्टिनहींकरसक्ताहै
ईशकोपर्जन्यकेसमानदेखो जैसेव्रीहियवादिकीसृष्टिमेंमेहसाध
रणकारणहै उनकीवैषम्यकेअर्थउनकेबीजमेंअसाधारणशक्तिका
रणहै ऐसेहीदेवादिसृष्टिमेंईशकारणहै देवनरपश्वादिकीवैषम्य
मेंअनेकजीवोंसेप्राप्तअसाधारणकर्महीकारणहै ऐसेईशसापेक्ष
है तोभीउनसेदूषितनहींहै भावार्थ साधारणहेतुअसाधारणहे
तुकेविनाकार्यकाकर्त्तानहीं जैसे जलबीजकेविना इससेईशव्य
र्थनहींयहनमानोतोजलभीव्यर्थहो यहकैसेजानो किसापेक्षहीई
शछोटेवड़े मध्यमसंसारकानिर्माताहै (तथाहिदर्शयतिश्रुतिः)
एषह्येवसाधुकर्मकारयतितंयमेभ्योलोकेभ्यउन्निनीषतएषउएवा
साधुकर्मकारयतितंयमेभ्योलोकेभ्योधोनिनीषतइति पुण्योवैपु-
ण्येनकर्मणाभवति पापःपापेनेतिच स्वभावशुभाशुभसेअनेक-
कर्ममेंजनप्रवृत्तहै ॥

नकर्माविभागादितिचेन्नानादित्वात् ३५

सदेवसोम्येदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीयंब्रह्मेति इससेसृष्टि

कीपूर्व अविभागकेनिश्चयसे कर्म नहीं है जिस कर्म की अपेक्षा से विषमसृष्टिहो पीछे सृष्टिकेदेहादिकेविभागकीअपेक्षासे कर्म वो कर्मकीअपेक्षासेदेहादिकाविभागयहइतरेतराश्रयदोषहुआ इससेविभागसेआगेकर्मापेक्षईशप्रवृत्तहो फिरविभागसेपूर्वतोवैचित्र्यहेतुकर्मोंकेनहोनेसेआदिसृष्टिकेतुल्यहीहै आदिमेंसृष्टिएकहीपरन्तुबीचसेविषमकर्मोंकीउत्पत्तिमेंहेतु केअभावसेउत्तरसृष्टिकीभीतुल्यतादुर्वारहै सोनहीं है संसारअनादिहै तिससेयह दोषनहींहै जोसादिसंसारहोतातोयहदोषहोता अनादिसंसारमेंबीजवोअङ्कुरकेसमानबीज हेतुवोअङ्कुर हेतु मत्है इसभावसेकर्मकोवोसृष्टिकीवैषम्यप्रवृत्तिविरुद्धनहींहै ॥

उपपद्यतेचाप्युपलभ्यतेच ३६

प्रथमसर्गनहींहै इससेक्याप्रमाणहै उत्तर युक्तिवोश्रुतिप्रमाणहै (उपप, संसारकोअनादितासयुक्तिकहै हेतुकेविनासमानसेंज्ञानकर्मदानोव्यर्थहो आदिमान्संसारकाअकस्मात्होनेसेमुक्तोंकाफिरजन्महो अकृतकीप्राप्तिहो सुखदुःखादिकीवैषम्यकाकुछनिमित्तनहो ईशभीवैषम्यकाहेतुनहीं निर्दयात्वादिदोषसे अविद्याभीकेवल वैषम्यकाहेतुनहीं एक रूप होनेसे फिरकहोवैषम्यकाहेतुक्याहैसुनो रागद्वेषमोहक्लेशहैं तिनकी इच्छाओंसेकरायेकर्महैं वेधर्माधर्मसेमिश्रहैं फिरधर्माधर्मकीअपेक्षाकर्त्ताअविद्यासुखादिकीवैषम्यकरीहो अविद्याकेसहायक्लेशकर्मोंकाअनादिप्रवाहमानो कर्मकेविनादेहवोदेहकेविनकर्मकासम्भवनहींहै इससेइतरेतराश्रयदोषहै अनादिमेंबीजाङ्कुरन्यायसेकुछदोषनहींहै (उपल) श्रुतिसेअनादिसंसारप्राप्तसृष्टिकीआदिमेंशरीरआत्माकोजीवशब्दप्राणधारणकेनिमि

कहिनेसे संसार अनादि दिखाती है सादिमेंपूर्वप्रत्यगात्माप्राण धारणनहींहै तौसृष्ट्यादिमेंप्राणधारणकेनिमित्तजीवशब्दसेश्रुतिकहैगी प्राग्प्रत्यगात्माप्राणनहीं धरे था फिर यह भी नहीं है अनेनजीवेनात्मनेति भावीप्राणधारणनिमित्तसेकहाहै भावी सम्बन्धसेभूतसम्बन्धवलीहै सिद्धहोनेसे भावीसाध्यहै तिससेदुर्वलहै सूर्याचन्द्रमसौधातायथापूर्वमकल्पयदिति यहसम्लभीपूर्वकल्पकोदिखाताहै ॥

(ब्रह्मप्रकृत्यधिकरण ॥ १२ ॥)

सर्वधर्मोपपत्तेश्च ३७

यन्निर्गुणत्वन्नोपादानंयथारूपमिति ॥

चेतनब्रह्मजगत्काकारणवोप्रकृतिहै इसवेदार्थकेनिश्चयमे परपरविलक्षणत्वादिदोषोंकोफेंकतेहैं आचार्यनेउनसेउसकोवचाया अत्रपरपक्षकानिषेधवोस्वपक्ष में गृहीत प्रकरण का उपसंहारकर्ताहैजिससेकारणब्रह्ममेंउक्तरीतिसेसबकारणधर्मयोग्यहैं सर्वज्ञ सर्वशक्ति महामायब्रह्म है तिससेऔपनिषददर्शनशङ्काई नहींहैविवर्त्त काउपादाननिर्गुणहै अज्ञानकोभ्रमकेअधिष्ठानका प्रयोजकहोनेसे सगुणअव्यापकहै शब्दादिगुणोंमेंनित्यत्वादिभ्रम देखनेसे जैसे कांचकोमलिनदेखकेकहे कितूनीचहै ऐसेभ्रांत व्यवहारसेनिर्गुणभीप्रकृतिहै ॥

इतिश्रीयुक्तताराचन्द्रवर्मणाकृतब्रह्मसूत्रभाषाभाष्ये द्वितीयाऽध्यायस्यप्रथमःपादःपूर्णः ॥ १ ॥

तर्कपाद दूसरा २

रचनानुपपत्त्यधिकरण १

रचनानुपपत्तेश्चनानुमानं १

यद्यपिवेदवाक्यब्रह्मकोकहतेहैं इससेवेदान्तरचाथानतर्क
वत्केवलयुक्तिसेकिसीसिद्धांतकोसाधनवोदूषणकोरचाथा तद्य
पिवेदांतवाक्यकेव्याख्याताकोचाहियेकि सम्यग्दर्शनके विरोधी
जोदर्शनहैंउनकानिराकरणकरै इसहेतुसेतर्कपादरचाहै प्रथम
स्वपक्षस्थापन वेदवाक्यकेनिर्णयसेकराथावहीपरपक्षकेखण्डनसे
पूर्वउचितथायदिमुमुक्षुको मोक्षकासाधनसम्यग्दर्शनविचारा
स्वपक्षस्थापनहोकरनेकोयोग्यथा क्यापरपक्षकेखण्डनसे वोप
द्वषकरनेसेफलहैयहसचहै तोसम्यग्दर्शनकेव्याजसेग्रन्थोंनेस
ख्यादिकेतन्त्रोंकोमानाहैउनसेउनकोश्रद्धादूरकरनेकेलियेयत
ऐसारीतिसबमतवादियोंमेंजानोंकिसीमूर्खको सांख्यादिदर्श
सम्यग्दर्शनकेअर्थउपदेशकरदियायहीअपेक्षाहै तैसेसर्वज्ञनेक
हैंइ सबड़ीयुक्तिसेश्रद्धाहैइससेउन्मेअसारतादिखानेकेअर्थयत
ईनांतेसूत्रसेसर्वधर्मोंयहांलोंसांख्यादिमतोंकाखण्डनकराथा
रकरिकेकरनेसेकुक्रफलनहींहैक्युंकिवेवेदवाक्योंकाअर्थस्वमत
दृढ़ताकेअर्थस्वपक्षकेअनुकूलकर्तेहैं वहउनकाअर्थअर्थाभास
चनहींहैयहीपूर्वकरायाअबतोकेवलउनकोयुक्तियोंकाहीखण्ड
हैयहीविशेषहै द्वषवहांहैजहांपरपक्षहोके निरासकोबुद्धिहै
निर्णयकीइच्छासेपरपक्षनिरासद्वषनहींहैजोविकारजिससे
तहैं तेउसप्रकृतिकहैं इसव्याप्तिसे जैसे घटादिभेदमाटी
टोसेयुक्तदेखेहैं तैसे सबबाह्यवोआध्यात्मिकभेदसुखदुःख
युक्त सुखदुःखमोहवालेसेरचेहैं यहांउपेक्षाहीमोहहै सुख

त्ये इसधातुसे उपेक्षणीयमेंचित्तवृत्तिकेअनुदयसे फिरजोसु
खदुःखमोहमयरूपजातिहै वहत्रिगुणप्रधानअचेतनमट्टीकेसमा
नहै चेतनपुरुषकीमुक्तिके अर्थ विचित्रवोविकाररूपस्वभावसेप्र
वृत्तेंहै नकिसीचेतनकीप्रेरणासेभ्रमिसेमट्टीलेघटहोताहैफिरम-
ट्टीमेंघटवोमट्टीक्षितिमेंक्षितिजलमें जलतेजमेंलीनहोताहैयही-
विभागा विभाग इस वैश्वरूप्य का देखा है इन का जहां विश्रा
महैवहीप्रधानहै अवसुनो मैभीअचेतनअनादित्रिगुणीमायामा
नताहूंजगहेतुफिरलोकमेंअचेतनचेतनके विनास्वतन्त्रकिसीका
र्यकोकर्तेनहींदेखताहूंघरादिसववस्तुबुद्धिमान्शिल्पिसेकालानु
कूलसुखकीप्राप्तिवोदुःखकीनिवृत्तिकेयोग्यरचेदेखताहूंतैसेपृथि
व्यादिसववाह्यभोग्यनानाकर्मोंकाफलवो आध्यात्मिकदेहादि-
नानाजातिसेयुक्तवोनानाभांतिकेअङ्गोंकेयोग्यस्थानोंमेंलगा
केरचनावोनानाकर्मोंकेफलभोगकाठौर वोदृश्यमानइनकोव-
डाहीबुद्धिमान्शिल्पिभीमनसेदेखनेकोशक्यनहींहैताकेसेजड़र
चेगा लोकमेंविनाचेतनकीप्रेरणासेडोमपत्थरादिकार्यकर्तेनहीं
देखेहैंमृदादिकुलालादिकेसङ्गसेघटादिरूपमेंरचेदेखेहैंतैसेप्रधा
नभीचेतनसेमिलकेकार्यकरो मृदादिकेस्वरूपकोहीउपादानसे
मूलकारणकानिश्चयहै नवाह्यकुलालादिकेसङ्गसेयहनियमनहीं
हैभावार्थमृदादिकेदृष्टान्तमेंदोहैंअचेतनता वोचेतनतायोगफि
रपरिणामअचेतनहीकानियतहै क्युंमृदादिस्वरूपसे अन्तरङ्गहै
चेतन योग नहीं क्युं वाह्य कुलालादि की अपेक्षा से वहिरङ्ग है
तैसे परिणाममेंभीमूलप्रकृतिका अचेतन से योग है न चेतन के
सङ्ग से पर्वतो वन्हिमान् महानसवत् इस अनुमान से महानस
मेंभी अन्तरङ्गमहानसकोधूमके सङ्ग योग नहीं किन्तु वहिरङ्गव
न्हिकेसङ्गहैइससेअन्तरङ्गनियमकासाधकनहींहैइससेकछुविरोध

नहींपरश्रुतिभीभलामानेगोचेतन कारणवक्की भीतरबाहरकेभे
दोंमेंसुखदुःखमोहका अन्वयनहींहै सुखादिभीतरहीप्रतीतहैंबा
हिरशब्दादिसुखादिरूपसेप्रतीतनहींहैं यदि घड़े मेंमट्टीकेसमा
नसुखादिशब्दादिमें अन्वितहोतातबकोसमानसुखादिप्राप्तहो-
सोनहींहै एकहीवस्तुपुरुषोंकोवासनाकेभेदसेकिसीकोसुखवो-
किसीकोदुःखवोकिसीकोमोहरूपदेखतेहैं इससेवस्तुसुखादिरू-
पनहींहै तैसेपरिमाणादिभेदमूलांकुरआदिकासंसर्गपूर्वदेखभी
तरबाहरकेभेदोंकोभीपरिमितहेतुसेसंसर्ग पूर्वक सत्वा सत्वादि
भीपरिमितहेतुसेसंसर्गपूर्वसिद्धिहोंगे बुध्यादिकोपरिमितहेतुसे
संसर्गपूर्वसिद्धिमेअनेकसंसृष्ट सत्वादि सिद्धि होंगे एकमेंसंसर्गके
अभावसेब्रह्म सिद्धि न होगीयही सांख्य का भाव है परिमित देश
सेनहीं आकाश का अभाव नहोनेसेकालसेपरिमितनहीं सांख्य
काल को नहीं मानते हैं वस्तुसे न परिमित हैफिर कार्य कारण
काविभागजहांसमाप्त हैवहीप्रधानहैयहनहीं यहांतोमायामेंस-
माप्तिकासंभवहोनेसेयुक्तिःविभागचेतनसेअसंसक्तअचेतनमें मि
लताहै यहव्याप्तिनहींहैसर्वत्रअचेतनमेंचेतनही अधिष्ठातादेखा
है जोपरिमितहैसो अव्यक्तप्रकृतिकहै परिमितगणोमेंव्यभिचार
से महदंशोंकाप्रकृतिविकृतिभावकेदेखनेसेअचेतनविकारकाअचे
तनहीप्रकृतिहैकार्यकीशक्तिसेकारणकीशक्तिकाअनुमानअन्यथा
सिद्ध हैचेतनकेआधीनकारणकीशक्तिसेकार्यकीप्रवृत्तिकेसंभवसे
सर्वङ्कार्यंसुखदुःखमोहात्मकम्वस्तुप्रकृतिकंतदन्वितत्वात्घटवदि
ति सर्वंकार्यंचेतनाधिष्ठिताचेतनप्रकृतिकंकार्यत्वाद्गेहवत् ॥

प्रवृत्तेश्च२

रचनाजो है सोहो रचनाकीसिध्यर्थप्रवृत्तिक्याहै गुणोंकी

साम्यावस्थातत्वोंकालयहै उसकालमेंकछुकार्यनहींहै क्योंजो
कार्यहै तोप्रलयकहांहै फिरआदि मे समता विगड़के विषमता
फिरगुणकोईछोटावोकोईवड़ाएकदूसरेकासहायीहोताहै फि
रमहदादिकार्यहोतेहैं यहीप्रवृतिहै इससेनानाकार्यरचनाहै य
हरचनावोप्रवृत्तिकाभेदहै प्रवृत्तिस्वतन्त्रअचेतनप्रधानकोनहीं
युक्तहै रथादिमृदादि अचेतनचेतनघोड़ कुलालादिकेविनाका
र्यमेंप्रवृत्त न देखने से तुमतोअनुमानहीको अपनागढ़वनारहे
हो दृष्टाच्चादृष्टसिद्धिः तोदृष्टान्तकेविनाअदृष्टार्थकोसिद्धिनहोगी
प्रधानकीप्रवृत्तितोखण्डितहुई भलातुमतोकहो कि एक चेतन
कीप्रवृत्तिसृष्टिमेंकहांदेखीहै यहतोसच्चहैकिशुद्धचेतनकीप्रवृत्ती
नहींतोकेवलअचेतनकीभीप्रवृत्तिनहीं फिरसृष्टिदेखनेसेचेतना
चेतनकेसम्बन्धसेसृष्टिमेप्रवृत्तिदेखीहै जैसे हयादिचेतनसेयुक्तर
थादिअचेतनकीप्रवृत्तिजड़कीप्रवृत्तिनदेखनेसेअ चेतनयुक्त चेत
नकीप्रवृत्तिनहींदेखीहै सवप्रवृत्तिअचेतनकेआधीनदेखीकहींन
हींअचेतनकेसम्बन्धसेभीचेतनकीप्रवृत्तिदेखी तिससेचेतनसेसृ
ष्टिनहींहै दोनोमतोंकोसुनिमध्यस्थने पूछा कि यहां क्या युक्त है
जिसअचेतनरथादिमेंप्रवृत्तिदेखी उसीकीवुहप्रवृत्तिहै वहांचेत
नहेतुनहींहै यहसांख्यमतअच्छाहै उत जिनचेतनहयादिके
संयोगसेअचेतनकीप्रवृत्तिहै वुहप्रवृत्तिचेतनकीकराईहै यहवे-
दान्तमतअच्छाहै मध्यस्थवाक्यसुनिसांख्यनेकहा कि जिसमेंप्र-
वृत्तिदेखतेहैं वुहउसीकोहै क्योंकि प्रवृत्तिवोप्रवृत्तिकाआश्रयर
थादिदोनोप्रत्यक्षहैं दृष्टाश्रयरथादिहीसेप्रवृत्तिकोसिद्धिहै तोअ-
दृष्टचेतनकीप्रेरणाकोमतकल्पो जैसे प्रवृत्तिकाआश्रयरथादि-
प्रत्यक्षहैं तैसे प्रवृत्तिकाआश्रयकेवलचेतनप्रत्यक्षनहींहै जोआ-
त्माकाप्रत्यक्षनहीं तोउसकीसिद्धकैसे सुनो जीवोदेहरथादिसेवि

लक्षणहै प्राणादिमान्‌दृष्टलिङ्गोंसे इसमेंचेतनकेसद्भावकीसिद्धि
है प्रवर्त्तकत्वनहीं (जीवद्देहःसात्मकःप्राणादिमत्वात्‌व्यतिरेके
णरथादिवदित्यात्मसिद्धिः) आत्माप्रत्यक्षनहींयहींचार्वाकोंका-
भमलिङ्गहै जोदेहसेअन्यात्माप्रत्यक्षहोतातोभ्रमकासम्भवनहो
ता देहहीचेतनहोप्रवृत्तिहै क्योंकि प्रत्यक्षदेहसेप्रवृत्तिहोचैतन्य
देखनेसेअप्रत्यक्षदेहमेंनदेखनेसे तिससेअचेतनहीकी प्रवृत्ति है
प्रवृतिकाआश्रयअचेतनहीहै परन्तुचेतनप्रयोजकहै मैंनहींक-
हताहूं किजिसअचेतनमेंप्रवृत्तिदेखतेहैं वुहउसकीनहींहै हो-
वुहउसीकीपरप्रवृत्तिचेतनसेहै यहीकहताहूं चेतनकेहोनेसेप्र-
वृत्तिदेखनेसेचेतनकेनहोनेसेप्रवृत्तिकाअभावदेखनेसे जैसे के-
वलआगमेंदाहप्रकाशादिविकारकाठआदिकेआश्रयसेहैं फिर-
आगसेहैं तोआगकेसंयोगसेदाहादिदेखतेहैं उसकेवियोगमेंन-
हींदेखतेहैं तद्वत्‌ चार्वाककेमतमेभीचेतनदेहअचेतनरथादिका
प्रवर्तकदेखाहै इससेचेतनप्रवर्तकमेंविरोधनहींहै ननु वेदांती
कोदेहादिसंयुक्तआत्माकाभीविज्ञानस्वरूपमात्रकेभेद से विना
प्रवृत्तिनहीं तोप्रवर्तककहांहै यदियहकहोसोनहीं जैसे अय
स्कान्तआपप्रवृत्तिशून्यहै तोभीलोहकाप्रवर्तकहै जैसे रूपादि
विषयआपप्रवृतिसेशून्यभीहैं तोभीचक्षुरादिकेप्रवर्तकहैं तैसे
प्रवृत्तिसेशून्यभीईशसर्वज्ञसर्वगतसर्वात्मासर्वशक्तिहुआ सबका
प्रवर्तकहै यदिएकहीहै तोप्रवर्त्यकेअभावसेप्रवर्तकनहोगा नहीं
अविद्यासेकल्पितनामरूपप्रपञ्चहै उसीअविद्यारूपमायासेचि
दात्माकाकल्पितसम्बन्धहै सम्बन्धकीसामर्थ्यसेईशकोअन्तर्या
मित्वादिधर्महैं वस्तुसेएकहै कल्पितद्वैतप्रवर्त्य है तिससेसर्वके
कारणमेंप्रवृत्तिसम्भवहै नअचेतनकारणमे ॥

पयोंबुवच्चेत्तत्रापि ३

जैसे अचेतनदूधस्वभावहीसेवछरेकीवृध्यर्थप्रवर्तताहै और अचेतनजलस्वभावहीसेलोककेहितार्थस्यन्दताहै तैसे जड़प्रधानस्वभावहीसेपुरुषार्थकी सिद्धिकेअर्थप्रवर्तेगा यहअच्छानहींकहाहै जिससेमैंदूधजलकीप्रवृत्तिचेतनसेप्रेरितअनुमान कर्त्ताहूं वादीप्रतिवादीकोप्रसिद्धहै किकेवलजड़रथादिमेंप्रवृत्तिनदेखनेसे श्रुति सबलोककास्यन्दितईश्वरसेप्रेरितसुनातीहै (पयोंबुवद्दिति) यहमेरेपक्षमेदृष्टान्तथा तुमनेअपनेपक्षमेजोड़ाहै तिससेव्यभिचारनहीं चेतनगौस्नेहसेदूधकाप्रवर्तकहै वछराचूषिकेदूधकोनिकालताहै जलभीनीचेकीअपेक्षासे स्यन्दता है इससे सापेक्षहै युक्तिवोश्रुतिसेचेतनकीअपेक्षासर्वत्रदिखाईहै लोकदृष्टिसेक्षीरवत् शास्त्रदृष्टिसेसर्वत्रईश्वरकीअपेक्षाहै ॥

व्यतिरेकानवस्थितेश्चानपेक्षत्वात् ४

बराबरतीनोंगुणोंकाठहिरनाप्रधानहै गुणोंकेबिना प्रधानका प्रवर्तकवो निवर्तकवाह्यकर्मनहींहै फिर पुरुष उदासीन है तोकभीसृष्टिकीप्रवृत्तिवोकभीप्रलयकीयहयुक्तनहींहै सर्वशक्तिमहामायईश्वरमेप्रवृत्तिवोनिवृत्तिविरुद्धनहींहैं कर्मभीप्रधानरूप अचेतनसेवोसदासत्वसेकभी २ प्रवृत्तिकानियामकनहींहै ॥

अन्यत्राभावाच्चनतृणादिवत् ५

जैसे घासजलादिनिमित्तनिरपेक्षस्वभावहीसेदूधरूपपरिणमतेहैं औरअनन्तवीजपृथिवीमेगिरेयागिरायेस्वभावहीसेनीचेकोजड़औरशाखाऊपरकोअंकुरजमतेहैं ॥

तैसे महत्तत्व आदि रूप से प्रधान भी परीणामेगी कैसे जानाकिदूसरेनिमित्तके विना घासादि दूध होते हैं दूसरानिमित्त नपानेसे यदिकछुनिमित्तमिलतातोयथैक्षघासआदिलेकेउसी निमित्तसेदूधवनालेतेफिरनहींवनासक्तेहैंतिससेस्वाभाविकघासआदिकापरिणामहै तैसे प्रधानकाभीहो यहांमेगीबातसुनेहोघासादिकेसमानप्रधानकाभीस्वाभाविकपरिणामजोघासादिकाभीस्वाभाविकपरिणाममानाहो फिरनहींमानाहै क्युं दूसरानिमित्तमिलनेसे कैसे दूसरानिमित्तमिलाहै (अन्यत्रा. धेनुकोखाईघासादिदूधहै वर्द्धादिकोखाईघासादिवीर्यादिकतीहैतिससेदूधनहींहैयदिनिर्निमित्तहोघाससेदूधहोताधेनुमावड़ मेभीघासादिदूधहो मनुष्यअपनीइच्छासेदूधनहीं वना सक्ता है इससेनिर्निमित्तनहींहै यहभीहै किकोईकाम मनुष्य के करनेकाहै कोईदैवकेकरनेकाहै मनुष्यभीअपनेयोग्यउद्यमसेघासादिहाराटूधकरसक्ताहै जोवहुतदूधचाहताहै वहवहुतघासदानादिधेनुकोखवाकेवहुतदूधलभताहै तिससेतृणादिवत्स्वाभाविकप्रधानकापरिणामनहींहै ॥

अभ्युपगमेप्यर्थाभावात् ६

स्वाभाविकीप्रधानकीप्रवृतिनहींहै यहठीककियातोभीमैं आपहीकीश्रद्धाकेअनुकूलप्रधानकीस्वाभाविकी प्रवृत्ति मानंगतोभीदोषहो क्युं अर्थाभावात् यदिप्रवृत्तिस्वाभाविकीदूसरेकी अपेक्षासेनहींहै तो जैसाकछुसहकारीनहींचाहती तैसा प्रयोजनभीकुछनचाहो इससेप्रधानपुरुषकोअर्थ के सिध्यर्थप्रवृत्ति है यहप्रतिज्ञाकीहानिहो यदियहकहो कि केवलसहकारीकोहीं चाहहैं प्रयोजनकोतोचाहहै तोभीप्रधानकीप्रवृत्तिकाप्रयो

जनपृथक्करो भोग वाअपवर्गबादोनोंहैं यदिभोगहै तो कैसा है कूटस्थसुखरूपपुरुषमेकछुअतिशयनहींधरसक्तेहो अध्यास भी नहींमानतेहोतो भोगयुक्तनहींहै फिरप्रधानकीप्रवृत्तिभोगकेअर्थहै तोमोक्षकाहेतुविवेकख्यातिकेनहोनेसेअपवर्गनहो मुक्तिकेअर्थभीप्रवृत्तिनहीं क्युं स्वरूपमें अवस्थानरूपमुक्तिस्वत:सिद्धहै तिससेप्रवृत्तिनिरर्थहै फिरशब्दादिभोगभोनहींहै भोगवो मुक्तिइनदोनोंकेअर्थप्रवृत्तिमानेसेप्रधानकीमात्रायर्थात् भोग्य अनन्तहैं तिससेमुक्तिनहोगी जैसे लोगइच्छाकीनिवृत्तिकेअर्थ कर्ममेंप्रवर्ततेहैं तैसे प्रधानपुरुषकीमुक्त्यर्थप्रवर्तताहै यहझूठ है औत्सुक्यइत्यादि अर्थात्इच्छा केवलजडवाचेतनमेंयुक्तनहीं है जड़वोनिष्फलकी हानिसे यदिपुरुषकोदृग्शक्तिहै चिद्रूपसे प्रधानकोसर्गशक्तिहै त्रिगुणसे इनदोशक्तियोंकोसामर्थ्यदृश्यदृष्टिकेविनानिरर्थहै तिससे प्रधानकोसृष्टिमेंप्रवृत्तिहै तो जैसा दृग्शक्तिकानाशनहीं तैसा सर्गशक्तिकानाशनहींहो फिरसंसारकाभोनाशनहींफिरमुक्तिभोनहींहै क्युंकि दोनोशक्तिनित्यहैं तोसृष्टिभीनित्यहो तिससेप्रधानकीमोक्षार्थप्रवृत्तिअयुक्तहै ॥

पुरुषाश्मवदितिचेत्तथापि ७

जैसे सूभता वोलंगड़ाचलतेवो अन्धपुरुषपरचढ़केअन्धकी प्रवृत्तिकराताहै और जैसे चुंमकआपनहींप्रवृत्तहोतापरलोहेकोप्रवृत्तिकराताहै तैसे पुरुषप्रधान की प्रवृत्तिकराताहै फिरसांख्यइसीदृष्टांतसेवाग्युद्धमें खडाहुआहै सुनो दृष्टांतदियेपरभी दोषोंसेछुट्टीनहीहैप्रथमतुमने मानाथाकिप्रधानकीस्वतन्त्रप्रवृत्ति वोपुरुषकाअप्रवर्तकत्वजेदोनोंगयेयहदोषहैकैसे उदासीनप्रधानकोप्रवृत्तकरायेपरिस्पंदप्रयत्नगुणनहोनेसे पंगुभीअन्धकोवचना-

दिसेप्रवृत्तकराताहै पुरुषकेपासप्रवर्तनकायत्ननहींहै निष्क्रिय वोनिर्गुणसे चुंमककेसमानसन्निधिसेप्रवृत्तिनहीं संनिधिनित्य सेप्रवृत्तिनित्यहो प्रधानपुरुषदोनोंव्यापकवोनित्यहैं तिससेस-न्निधिनित्यहोचुंमककोअनित्यसन्निधिसे सुधारखनाआदिअनि-त्यसन्निधिरूपयत्नहैतिससेमसदृष्टान्तनहींहै पुरुषार्थअदितिफिर प्रधानजड़वोपुरुषउदासीनतौसराप्रधानपुरुषका सम्बन्धकरानेवालानहींतोसम्बन्धअसिद्धहै द्रष्टदृश्यभी सम्बन्ध चित्जड़योग्य-तारूपसम्बन्धकोनित्यतासेमुक्तिनहोगी सांख्यमतमेंप्रधानपुरु-षदोनोंसत्यहैं तिससेविरोधहै वेदान्तिमतसेंपुरुषस्वरूपसेउदा-सीनवोमायाश्रितप्रवर्तकहै मायाकल्पितहै पुरुषकूटस्थहै इस सेदोनोंकाविरोधनहींयहोअतिशयहै ॥

अंगित्वानुपपत्तेश्च ८

सत्वरजतमगुणवोमुख्यरूपको छोड़साम्यरूपसेस्थितप्रधान है इस दशामेंअङ्गाङ्गिभावसे साम्यरूपकानाशहोतिससेकौटस्थ्य कानाशहै इसडरसेअङ्गाङ्गिभावनहींहैतोसृष्टिकीसिद्धिभीनहीं हैबहुतकालसेसमरहेहैफिरउनकोवैषम्यकानिमित्तनहीं तोमह-दादिसर्गभीनहो वाद्यचोभयिताकेअभावसे ॥

अन्यथानुमितौचज्ञशक्तिवियोगात् ९

गुणोंकाअनपेक्षस्वभावकोछोड़सापेक्षस्वभावका अनुमान करोगे तोअङ्गाङ्गिभावसिद्धहोगा मैसांख्यने गुणकूटस्थप्रमाणसेनहींसा धेपरकार्यकेवशसे गुणोंकास्वभावसाधाहै जैसेर स्वभावसेका र्यसिद्धहै तैसार स्वभावगुणोंकामानाहै चलगुणसत्त्वगुणहैं ति ससेसाम्यदशामेभीवैषम्यकेयोग्यगुणरहतेहैं ऐसेमानेपरभीप्र

धानको ज्ञशक्तिके वियोगसे रचनानुपपत्ति आदि दोष बने रहे हैं कार्यके अर्थ प्रधानको ज्ञानशक्तिकी कल्पनामें ब्रह्मवाद हो ब्रह्मवादीने भी एक चेतन अनेक प्रपञ्चका उपादान माना है फिर निमित्तके अभावसे वैषम्यके योग्य गुणभी साम्यदशामें वैषम्यभागी न हो जो हो तो निमित्तके अभावकी समतासे सर्वदाही वैषम्यभागी हो यह और दोष हुआ ॥

विप्रतिषेधाच्चासमञ्जसं १०

सांख्यसिद्धांत कभी कुछ वो कभी कुछ कहनेसे विरुद्ध है त्वचा एक ही ज्ञानेन्द्रिय अनेक शब्दादिकोंका कारण है त्वचा कर्मेन्द्रियां पांच मन जो सात हैं ज्ञानेन्द्रिय पांच कर्मेन्द्रिय पांच एक मन जो ग्यारह इन्द्रियां हैं बुद्धि अहंकार मन जो तीन हैं एक बुद्धि ही वा अन्तःकरण है तैसे कहीं महत्तत्वसे तन्मात्र सर्ग कहा कहीं अहंकारसे यही ईशनकारणव दिनी श्रुतिसे विरोध है तिससे सांख्यदर्शन सत्य नहीं है फिर सांख्यने कहा कि औपनिषद भी सत्य नहीं है तप्यतापक* का भेद न माननेसे तु मतो लोकप्रसिद्ध तप्यतापकका नाश करते हो एक ही ब्रह्म सर्वात्मक विश्वका कारण मानते हो उसीके विशेष तप्यतापक कहते हो न उससे और हैं तप्यतापक यदि एक ही चेतनके हैं तो तप्यतापक विशेष हैं तो वह उनसे मुक्त नहीं है फिर तापकी शांतिके अर्थ सम्यग्दर्शनका उपदेशी शास्त्र निरर्थ हो जैसे वह्नि औष्ण्य व प्रकाशसे निर्मोच नहीं है फिर भी बुद्बुदादि एक ही जलके आविर्भाव तिरोभावसे नित्य हैं तो बुद्बुदादिसे जलका अनिर्मोच समान है लोकमें तप्यतापकका भेद प्रसिद्ध है अर्थ जलाभादिसे अर्थीको तपाता है तिससे अर्थ तापक अर्थी तप्य है जो अर्थीसे अन्य अर्थ न हो जिस अर्थीका जिस विषयका अर्थित्व वह उसका अर्थ नित्य सिद्ध है तो न उसका उस विषयका अर्थि

* तप्य जीव तापक संसार

त्यहै।जैसेप्रकाशितदियाकाप्रकाशनामार्थनित्यसिद्धहै तौदिया
काप्रकाशविषयकर्त्र्यर्थत्वनहींहैअप्राप्तअर्थमें अर्थी कौअर्थितारै
तैसे अर्थसे अन्यअर्थकेअभावसेअर्थका अभावहोजै।हातौस्वार्थहो
सोनहींहै अर्थीअर्थदोनोसंबन्धिपदहैंदोसंबन्धिकासंबन्धहो।नए-
ककातिससेअर्थीवोअर्थभिन्नहैंतैसेअनर्थवो अनर्थीभीहैंअर्थीको
अनुकूलअर्थवो।प्रतिकूलअनर्थहैफिरकाल२मेंअर्थानर्थसेएकहोसं
बन्धितहैफिरअर्थथोराअनर्थबहुतहै तिमसेदोनोअनर्थहीहैंवही
अनर्थतापकहैतप्यपुरुषएकदोनोकेमद्धसंबन्धीहै फिरयदिवैतप्य
तापकएकहोंहैं तौमोक्षकी सिद्धिनहींहै तप्यबुद्धिकरपुरुषकास्व
स्वामिभावसंबन्धहै संबन्धकाहेतु अनादिअविवेकहै अविवेककी
निवृत्तिकाउपायविवेकहै तिसमें नित्यमुक्तपुरुषकीभी किसीढब
उपचारसेमोक्षकीसिद्धिहैएकहोपरमार्थहै तिससेतप्यतापकभा
वकीअसिद्धीनहींहै यहदोषतौहो जोएकात्मामें तप्यविषयवो
तापकविषयीहो सोनहींहै एकहीहै जैसेएकहीआगअपनेकोज
लातीवोप्रकाशतीनहींऔष्ण्यप्रकाशादिधर्मोंकेभेदमेंवोपरिणा
ममेंजलानाप्रकाशनाकरतीहै फिरकूटस्थब्रह्ममेंकहांतप्यतापक
भावकासंभवहैफिरकहांहैतप्यतापकभावसुनो क्युंनहींदेखतेहो
कर्मभूतजीवोदेहतप्यहैतापकसूर्यहैननुतप्तितादुःखहैवहचेतयि
ताकाधर्महैनजड़देहकाजोदेहतप्तितोदेहकेनाशमेंबहुआपनष्टहै
फिरउसकेनाशार्थसाधननढढनाचाहियेकहिताहूं देहकेअभाव
मेकेवलचेतनकौतप्तिनहींदेखीतुमको भीतप्तिविकारकेवलचेत
यितामेंइष्टनहींनदेहवोचेतनकेमेलमेंतप्तिहैअशुध्यादिदोषयुमि
लानेसेऔरतप्तिकाभीतप्तिनहींमानताहोतौकहोतुमकोहीतप्य
तापकभावकैसेहैयदिसत्वतप्यवो तापकरजकहोतौउनसेचेतन
केसंबन्धकीअसिद्धिहै सत्वकेअनुरोधसेचेतनभीतप्तहुवहै तौपर

मार्थसेनहींतप्ताहैयहीप्राप्तहुआ इवशब्दकहनेसेतबतोजैसेजल
चन्द्रकाचलनाझूठाहैतैसेतप्तिभीझूठीहै वस्तुसेपुरुषतप्तिसेरहितहै
इवशब्दझूठीतप्तिपरहैतिससेदोषनहींहैयहमतकहो ऐसासांप-
साहैयहकहनेसेऐसामविषनहींहोताहै वोसांपऐसासाहै यहक
हिनेसेसांपनिर्विषनहींहोताहै इससे अविद्यासेकरातप्यतापकभा
वहैनपारमार्थिकहैयहीमानोतोमुझकोभीयहीइष्टहैअङ्ग अथवास
त्यतप्यत्वपुरुषकोमानोतोकूटस्थको हानिसेअनिर्मोक्षहोफिरता
पकरजको नित्यमानेसेदुःखानित्यहै। सत्व वो पुरुषतप्यशक्ति है
तापकशक्तिरजहै वोनिमित्तअविवेकरूपतमहै फिरतमसहित-
सनिमित्तसंयोगस्वामित्व रूपगुणपुरुषकाहै फिर संयोगकीअपे
क्षासेतप्तिहैफिरसंयोगकानिमित्ततमउसकीनिवृत्तिसेसंयोगकी
निवृत्तिहैतिससेआत्यन्तिकमोक्षयुक्तहै यहनहीं तमकोनित्यमा-
नेसेगुणोंकाहोनाजानाविठिकानाहैतिससेसंयोगकादूरहोनाअ
नियतहैफिरवियोगभीनहोगा तोसांख्यमतमेंअनिर्मोक्षहो औप
निषदमतमेंएकहीहैतोबन्धहीनहींहै फिरमुक्तिकेअभावकीशङ्का
काअवसरकहांहै व्यवहारमेंभेदमानेसेतप्यतापकभावबन्धहैउ
सोकोतत्वज्ञानसेनिवृत्तिसिद्धहै इससेकुछचोद्यका अवसरनहीं
है क्रियाप्रधानवादनिरासअवअणुवाद निरासकरताहूं कणाद
कासिद्धांन्तहैकिजोगुणकारणद्रव्यमेंहैं तेहीअपनेसमानकार्यद्रव्य
मेंगुणान्तरकोकरतेहैं विसदृशके जन्ममेंदृष्टान्तहैयानहींहै नहीं
जैसेशुक्लतन्तुसेशुक्लपटकाजन्महै औरशुक्लसेकालापटनहींदेखा
हैतिससेचेतनकोजगकारणमाननेसे कार्यजगमेंभीचैतन्यहोवह
नहींदेखतेहैं तिससे जगकारणहोनेकेयोगचेतननहींहै यहक
णादसिद्धान्तकणादकीरीतिसेहीव्यभिचारीदिखाताहै ॥

सांख्यनेकहाकिजिससविगानसेमेरा मतबुराकहतेहोवेदांतीसो

होतुमकाविगानहै जैसे शतायुर्वैपुरुषःशतेन्द्रियःशतवीर्यः इस मेंसोइन्द्रियकहनेसेवाअथर्वमेंनवप्राणकहनेसे जैसे नवप्राणान्नवभिःसंमिमीत इत्यादि ॥

(वैशेषिकप्रक्रियाधिकरण ॥ २ ॥)

महद्दीर्घवद्वाह्रस्वपरिमण्डलाभ्यां ११

रीतिपरमाणुकुछकालकार्यनहींकरतेजैसेप्रलयमें रूपादिमान्निश्चलअसंयुक्तरहतेतैसेसर्गमेंअदृष्टसेउनमेंकर्महोकेजुड़तेहैंवहीमर्गहै यदादोअणुद्व्यणुककोबनातेहैंतदाअणुकेरूपादिद्व्यणुकके रूपादिकोबनातेहैं परमाणुअर्थात्परिमण्डलउसकापरिमाणपारिमाण्डल्यकहाताहै वहद्व्यणुकमेंपारिमाण्डल्यनहींबनाताहै यहीव्यभिचारहै अणुत्ववाह्रस्वत्वदोनोद्व्यणुकके परिमाणकहते हैफिरचारद्व्यणुकसे चतुरणुकबनताहै वादोद्व्यणुकोंसेवड़ाचतुरणुकनहींबनताहै कारणमेंबहुत्व महत्वनहींतोकार्यमेंबहुत्व महत्वकहांहै यहीमानोयदाबहुतअणुबहुत द्व्यणुककोवाद्व्यणुककेमहितपरमाणुकार्यबनताहै तदपिद्व्यणुककेह्रस्वअणुपरिमाणआरम्भकनहींहै यहीव्यभिचारहै प्रकटार्थकारास्तु यद्वाभ्यांद्व्यणुकाभ्यामारब्धं कार्ये महत्वं दृश्यतेतस्यहेतुः प्रचयोनामप्रशिथिलावयवसंयोगइतिरावणप्रणीतेभाष्ये दृश्यते इति चिरन्तनवैशेषिकदृष्टेरदंभाष्यमित्याहुः कार्यकापरिमाणकारणकेपरिमाणसे नहींहै किन्तुकारणकीसंख्यासेहै जैसे परमाणुपरिमण्डलसेअरह्रस्वद्व्यणुकहै महत्वादीर्घत्र्यणुकादिहोतेहैं परिमण्डलनहीं होताहै जैसेअणुह्रस्वद्व्यणुकमें अणुद्रव्यनहींजन्मताहै ह्रस्वभी नहींजन्मताहै यहीव्यभिचारहै महत्दीर्घत्र्यणुकजन्मताहै ऐसे

चेतनसेअचेतनजगजन्मेगा इससे तुम्हारा क्यागया द्व्यणुकादि
कार्यविरोधिपरिमाणांतरसेघिरा है इससे कारणकेपारिमाण्ड-
ल्यादिआरम्भकनहीं हैं यहमानते हैं चेतनाकेविरोधिगुणसेज
गआक्रांतनहीं है जिससेकारणकीचेतनाकार्यमेंचेतनाकोनज-
न्मे अचेतनोंकोअचेतनाविरोधीकोई अगुणनहीं है केवलचेत-
नाहीकाप्रतिषेधहै तिससेपारिमाण्डल्यादिदृष्टांतसमनहीं है इ-
ससेचेतनाकोआरम्भकताकीप्राप्तिहै यहमतमानो जैसे का-
रणमेंविद्यमानपारिमाण्डल्यादिआरम्भकनहीं हैं तैसे चैतन्य-
अंशआरम्भकनहीं है उत्पन्नपरिमाणांतरविरोधी है परिमाणां-
तरकीउत्पत्तिकेपूर्वविरोधनहीं हैफिरद्व्यणुकमेंपारिमाण्डल्यआ
रम्भकक्युंनहो कार्यगुणकेआरम्भसेपूर्वक्षणभरअगुणरहताहै ऐ
सामानेसे पारिमांडल्यादिअणुत्वादिकेआरम्भमेंव्यग्रहोनेसे-
अपनेसमगुणांतरकाआरंभनहींकरताहै परिमाणांतरअन्यहेतु
सेहै द्व्यणुककीवहुततासेत्र्यणुकमेंमहत्वमट्टीकीवहुततासेघड़े
मेंमहत्वहै दोसेरमईसेचारसेरमईकाअतिस्थूलप्रचयनाममह-
त्वहै अवयवसंयोगविशेषमहत्सेउलटाअणुहै किसीसन्निधिसे
कारणकेवहुत्वादिआरम्भकहैं नपारिमांडल्यादियहनहीं द्रव्य
वोगुणकेआरम्भमेंकारणकेगुणकेमेथोरेगयेवोथोरेरहिगये एक-
हीठिकानेतोथे तिससेपारिमांडल्यादिस्वभावसेअनारम्भकहैं
तैसे चेतनाभीस्वभावसेअनारम्भकदेखो द्रव्यादिविलक्षणोंका
संयोगसेजन्मदेखाहै समजातीयकाव्यभिचारहै बिलक्षणका-
र्यकारीद्रव्यदृष्टांतयोग्यहै संयोगगुणकादृष्टांतउचितनहीहै य-
हमतकहो दृष्टांतसेविलक्षणमात्रहीविवक्षितहै द्रव्यकाद्रव्यगुण
कागुणदृष्टांतकेनियममेंहेतुनहीं है कणाद ने भी अनियम कहा
जैसे चितिप्रत्यक्षव्योमअप्रत्यक्षदोनोंकेमेलमे संयोग अप्रत्यक्षहै

तैसे प्रत्यक्षाप्रत्यक्षपांचभूतोंकेमेलमेंदेहअप्रत्यक्षहै। फिरदेहप्रत्यक्षहैतिससेपांचभूतोंकाकार्यनहींहै गुणसंयोगवोद्रव्यदेहविलक्षणहैं यहापूर्वसांख्यसेकहा। अबवैशेषिकसेकहताहूं वैशेषिककीप्रक्रियाकेभङ्गार्थयहप्रपञ्चहै ॥

अणुवादभङ्गाधिकरण ॥ २ ॥

उभयथापिनकर्मातस्तदभावः १२

लोकमेंपटादिसावयवतंतुसंयोगसेबनतेहैं उनहींकेसमान क्षित्यादिभीअपने२संयोगोंद्रव्योंसेबनेहैं जिससे अवयवावयविविभागछुटाहै वुहीपरमाणुहै फिरवुद्धिसेविभागकार्यकारीनहींहै सबजगसावयवहै तिससेआद्यन्तवत्है ननित्यहै अकारणसेकार्यनहींहोताहै तिससे जगकारणपरमाणुहैं क्षितिजलतेजपवनजेचारसावयवलभतेहैं तिससेचतुर्विधपरमाणुकल्पतेहैं अवयवकेनाशसेअवयवीकानाशहै तोक्षित्यादिकानाशपरमाणुलोविभागहोकेहोगा फिरपरमाणुनिरवयवहै तिससेनविभक्तननष्टहै यहीप्रलयहै नकिपरमाणुकानाशप्रलयहै सर्गमेंवायुकेपरमाणुमेअदृष्टकेआधीनकर्महोताहै वुहीकर्मजिसअणुमेहै उसकोऔरअणुसेजोड़ताहै फिरद्व्यणुकादिसेवायुजन्मताहै ऐसेअग्निजलक्षितिहोतेहैं देहइन्द्रियादिसबजगअणुसेहै अणुकेरूपादिसेद्व्यणुकादिमेंरूपादिहैं जैसे तन्तुरूपपटमेंयहीकाणादमानतेहैं प्रलयमेंविभक्तअणुकासंयोगकर्मापेक्षकहो सकर्मतन्तुकासंयोगदेखनेसे फिरकर्मभीकार्यहै तोकार्यकाकछुनिमित्तभीकहो निमित्तनमानेसेअणुमेंआद्यकर्मनहोगा फिरनिमित्तप्रय

तथाअभिघातादि जैसे प्रयत्नसेदेहमेचेष्टा वायुकेघातसेपेड़आ
दिकाहिलनाहै तैसे अणुकर्मकेलियेकोईदृष्टनिमित्तहै यानहीं
दृष्टनिमित्तकासम्भवनहीं तोअणुमेंआदिकर्मभीनहींहै प्रलय-
मेआत्माकागुणप्रयत्नभीनहींहै देहकेअभावसेमनदेहमेघुमाआ
त्मासेमिलआत्मामेगुणप्रयत्न को जनता है सबअभिघातादिदृ-
ष्टनिमित्तसर्गकेपीछेहोंगे वेआद्यकर्मकेनिमित्तनहोंगेनहीं बेटा
बापकानिमित्तदेखाहै तिससेआद्यकर्मकासंभवनहींहै अथवा
आद्यकर्मकानिमित्तअदृष्टकहो तोवहआत्मामेंवाअणुमेंहैदोनो
ठवसेअणुमेंकर्मनहींकरसक्तेहो अदृष्टअचेतनहोनेसेअचेतनचेत
नकेसहायविनास्वतन्त्रनप्रवर्त्तताबो नप्रवृत्तिकरताहैयहसांख्य
सेकहिचुकेप्रलयमेंजीवोंकाचैतन्यनहींजन्मातिससे अचेतनआ
द्यकर्मकानिमित्तनहींहैआत्मसमवायिअदृष्टभीकर्मकाहेतुनहीं
असंबद्धसे यदिकहोकिअदृष्टवान्पुरुषके सङ्गअणुकासंबन्धहैतो
विभुकासंबन्धनित्यहैतोप्रलयभीनहोकादाचित्की प्रवृत्तिकानि
यामकईश्वरहोवहभीनहींक्यों जोज्ञानहै सोदेहजन्यहै तिससे
नित्यज्ञाननहींतोनित्यगुणोईश्वरभीनहींहै जोहैतोसदाहोनेसे
नियामकनहींहैसदाहोसृष्टिहोनेसे तिससे कर्मकाहेतुनियतन
होनेसेअणुमेंआद्यकर्मनहोफिरकर्मकेनहोनेसेकर्मसेबन्धासंयो
गनहोफिरसंयोगकेनहोनेसेसंयोगसेबन्धा द्व्यणुकादिकार्यभीन
हो अणुकाअणुके साथसंयोगसवरूपसेवाथोरेसेहै जोसवरूप से
हैतोएकमेंदूसराघुसगयाफूलानहीं तिससे कार्यमोटानहोअणु
हीऐसादेखतेनहींहैं किअसांशमेंसंयोगका एकांशघुसनादेखाहै
कहदिशाकेभेदसेएकअंशसेअणुकासंयोगकल्पितहैतोकार्यनहो
होतोमिथ्याहोतिससेअणुके कल्पितअंशनहीं कहिसक्तेहो अव
स्तुसंयोगवस्तुकाअसमवायिनहोनेसे द्व्यणुकादिकार्यनहो जैसे

सर्गमेंअणुकेसंयोगकाहेतुकर्मकासंभवनहींतैसे लयमेंविभागके
अर्थअणुमेंकर्मकासम्भवनहो प्रलयमें नियतअभिघातादिदृष्टवो
धर्माधर्म अदृष्टविभागकेहेतुनहोनेसे, क्यों सुखदुःखार्थधर्माधर्मअ
दृष्टहैंसुखदुःखशून्यप्रलयकेजनकनहींहैंइस्से अदृष्टभीविभागमेंहे
तुनहींहै अणुकेसंयोगविभागकाहेतुकर्मनहोनेसेसंयोगविभाग
काअभावहै फिरउनकेआधीनसर्गप्रलयका अभावहोतिससेअ
युक्तअणुकारणवादहै दृष्टवोअदृष्टकर्मके निमित्तदोनोंपक्षोंमेंक
र्मकाअभावहैतिससेसर्गप्रलयकाभीअभावहैयहसूत्रार्थहै ॥

समवायाभ्युपगमाच्चसाम्यादनवस्थितेः १३

दोअणुसेजन्यद्व्यणुकदोनोंअणुसे भिन्नदोनोंअणुमें समवा
यसेहैइससेभीअणुकारणनहींहैंक्युं साम्यादनवस्थितेः जैसेदो-
अणुसेभिन्नद्व्यणुकअन्यसमवायसंबन्धसेदोअणुमेंसंबद्धहै तैसे स
मवायभीसमवायिसेभिन्नहुआ अन्यसमवायसंबन्धसे समवायि
केसाथसंबद्धहो द्व्यणुकवासमवायकाअणुभिन्नत्वकीसाम्यसे फि
रसमवायकेअर्थऔरसमवायफिरउसके अर्थऔरयहीअनवस्था
हो यदिइनतन्तुमेंपटहैइसतन्तुसहित पटबुद्धिकानियामक सम
वायनित्यसंबन्धहैनअसंबद्धहैनअन्यसंबन्धकोचाहताहैइससेअन
वस्थानहींयहकहोसोनहींसंयोगभी संयोगियोंसेनित्यसंबद्धहैस
मवायकेतुल्यअन्यसंबन्धकोनहींचाहताहै अथार्थान्तरसेसंयोग
अन्यसंबन्धकोचाहेतासमवायभीअर्थान्तरसेअन्यसंबन्धचाहै सं
योगगुणहैतिससेअन्यसंबन्धकोचाहैहै समवायअगुणहैतिससेअ
न्यसंबन्धनहींचाहताहै यहभीनहींकहिनेकोशक्यहै अपेक्षाहेतु
तुल्यहैतिससेमूलनाशिनीअनवस्थादुर्वारहै संयोगगुणहै यहसं-
केततुम्हारातुमहीकोहै फिरअनवस्थासेसमवायनहींतादोअ

गुणेद्व्यगुणकभीसमवायसेनहींहै तिससेत्रगुणवादअयुक्तहै ॥

नित्यमेवचभावात् १४

जोत्रगुकाप्रवृत्तिस्वभावहै तौनित्यप्रवृतिसेप्रलयनहोगा १
जोनिवृत्तिस्वभावहै तौनित्यनिवृत्तिसेसर्गनहोगा २ उभयस्व-
भावविरोधसेएककाहोताहीनहींहै ३ ॥

अनुभयस्वभावमेंनिमित्तसेप्रवृत्तिकहो वुहकालअदृष्टादि
हैं फिरवेनित्यसन्निहितहैं तौप्रवृत्तिनित्यहो जोकालादिनिमि
त्तनहों तौनित्यप्रवृत्तिनहीं४ इनचारप्रकारसेअधिकस्वभावअ
णुमेमाननेकोगतिनहींहै तिससेअणुवाद अयुक्त है याअवघटा
दिहो अवनष्टहो अवठहिरो ऐसीईश्वरेच्छानरेच्छासोहै तौइसमे
नित्यचवांहठवोभक्तिवोसाहससेहै नयुक्तिसे ॥

रूपादिमत्वाच्चविपर्ययोदर्शनात् १५

घटादिफूटकेसूक्ष्मरजहो जिसकाफिरविभागनसम्भवहै वु
होचारप्रकाररूपादिमान्अणुरूपादिमान्भूतभौतिकचारप्रका
रकेआरम्भकनित्यहैं यहकाणादकामानना वैठिकानाहै अणुरू-
पादिमान्हैं तिससेअणुत्ववोनित्यत्वकाउलटाहो परमकारण
कीअपेक्षासेस्थूलत्ववोअनित्यत्वकाण दोंकोइष्टथावुहउलटाहु
आ यहकैसे लोकमेदेखनेसेरूपादिमान्वस्तुअपनेकारणकोअ-
पेक्षासेस्थूलवोअनित्यहै जैसे तन्तुकोअपेक्षासेपटस्थूलवोअनि
त्यहै तैसे अणुरूपादिमान्काणादमानतेहैं तिससेअणुभीकार
णवान्हैं तौकारणकोअपेक्षासेस्थूलवोअनित्यहैं फिरजो यहउ-
न्हं कहाथा किसत्अकारणवस्नित्यहै अणुतौउक्तरीतिसेसका
रणहै अनित्यविशेषसेनिषेधकाअभावहै इससेअणुनित्यनहीं-

सिद्ध होता है जो कछु नित्य वस्तु नहीं तो नित्य शब्द के सङ्ग नञ का स
ङ्ग न हो फिर अणु की नित्यता की अपेक्षा नहीं है नित्य परम कारण ब्र
ह्म है शब्दार्थ के व्यवहार ही से किसी अर्थ की सिद्धि नहीं है शब्द वो अ
र्थ का व्यवहार प्रमाणमूल है तीसरा कारण अविद्या कहा था अणु वो
द्व्यणु स्थूल कार्य का प्रत्यक्ष से कारण का अज्ञान अविद्या है यह कहो
तो द्व्यणुक ही नित्य हो अप्रत्यक्ष कारण नित्य में हेतु कहने से तन्तु के वि-
भाग वो नाश से पट का नाश है तीसरा नाश का हेतु नहीं है फिर जो-
दो निरवयव अणु में नहीं हैं तिस से अणु नित्य है विनश्यद्वस्तु दो हेतु
को नहीं चाहतो है परिणाम संयोग से द्रव्य की जन्म में यह है आरम्भ
में यह नियम नहीं है संयुक्त तन्तु से अन्य पट की न देखने से तन्तु ही पट
हैं यही मानो अनुभव से तब तो अविद्या परिणाम रूप अणु का का-
लादि के हेतु से मूर्त्तावस्था का तिरोभाव है जैसे घी का आगि के सङ्ग
से नासीद्रजो नो व्योमेत्यादि मन्त्रों से अणु का नाश सिद्ध है घी परि
णामी एक है तिस से विभाग का सम्भव नहीं है अणु का काठिन्य नाश
में विभाग सम्भव है तिस से अणु को रूपादि माने से इष्ट उलटा है
तो अणुवाद अयुक्त है ॥

उभयथा च दोषात् १६

गन्धरसरूपस्पर्शगुणवती स्थूल पृथिवी है रूपरसस्पर्शगुणवान्
सूक्ष्म जल है रूप स्पर्श गुणी सूक्ष्मतर तेज है स्पर्श गुणी सूक्ष्म
तम वायु है जैसे चार भूत बहुत वो थोरे गुणवान् स्थूल सूक्ष्म सूक्ष्मतर
सूक्ष्मतम तारतम्य से युक्त देखते तैसे अणु की भी थोरे बहुत गुण क-
ल्पते हो या नहीं जो अणु के बहुत थोरे गुण मानो तो अणुत्व गया ब-
हुत से स्थूल होने से स्थूल न हो पर गुण बहुत हो यह नहीं कहि सको
हो कार्य में गुणों की बढ़ती से स्थौल्य का कारण देखने से अणु के सा

स्पार्शवहुतथोरेगुणनमानोसबएकएकगुणयुक्त मानो। तो तेज मे स्पर्शनहो जलमेंरूपस्पर्शनहो। पृथिवीमेंरसरूपस्पर्शनहो क्युंकारणकेगुणकार्यमेंहोनेसे यासबचारगुणवालेमानोतोजलमेंगन्धहो तेजमेंगन्धरसहो। वायुमेंगन्धरूपरसहोसे।नहींदिखतेहैं तिससेअयुक्तअणुवादहै ॥

अपरिग्रहाच्चात्यन्तमनपेक्षा १७

यौतकारुह पदार्थ मानते हैं जैसे द्रव्य गुण कर्म सामान्य-विशेष समवाय जोउनकेनामहैं लक्षणवोस्वरूपसेभिन्न२हैं जैसे नर हय गज फिरभेदसेविरुद्धजो।धर्मधर्मीभावमानतेहैं सोनहीं क्युं जैसे शशकुशकाशादिभिन्नोंमेएकदूसरेकाआधीनहै तैसे-द्रव्यादिभिन्नहोनेसेगुणादिद्रव्यकेआधीनहोनेकेयोग्यनहींहैं अथवागुणादिद्रव्यकेआधीनहैं तो।द्रव्यकेहोनेमेंहैं नहोनेमेनहीहैं फिरद्रव्यहीसंस्थानादिकेभेदसेअनेकशब्दोंसेकहाहै जैसेएकचैत्र अवस्थासेबालवृद्धयुवाशिशुकहाताहै तैसेंद्रव्यहैकल्पितभेदसे-अत्यन्ताभेदमेधर्मधर्मीकाप्रयोगहै असत्यभेदकेसमान गुणादिका द्रव्यमेंतादात्म्यमानोतो स्वमतछोड़सांख्यमतपकड़ाहै यदिकहोकिआगसेअन्यधूमहै तोआगकेआधीनहै सचहै तादात्म्यधूम आगकाहेतुहै भेदज्ञानसेआगधूमका।भेदनिश्चितहै कालाकम्बललालधेनुदूममेंद्रव्यहीतिस२विशेषसेजाना।गयाहै अग्निधूमकेसमानद्रव्यगुणकाभेदनहींजानपड़ताहै तिससें गुणद्रव्यरूप है जैसे गुणद्रव्यरूपहैं तैसे कर्मसामान्यविशेषसमवायभोद्रव्य रूपहोहैं जोगुणोंकीद्रव्यसेभेदमेंभो अयुत सिद्धता से तादात्म्य कीप्रतीतिहै यहकहो तो अयुत सिद्ध क्या है जोअपृथग्देशहै तोपटवोशुक्लअपृथग्देशमेंनहोनेसेशुक्लपटहै यहप्रतीतिनहोय

थअपृथक्कालअयुतसिद्धकहोतेवामदक्षिणशृंगचतुर्थोंकोभी अयु-
तसिद्धिहो अथअपृथग्स्वरूपअयुतसिद्धकहो तो द्रव्यगुणकाआत्म
भेदहै अर्थात्अभेदफिरगुणद्रव्यमेंतादात्म्यसंबोधितहै यहभी
कणादसिद्धांतव्यर्थहै ॥

कियुतसिद्धोंकासंबन्धसंयोगवोअयुत सिद्धोंकासमवायहै कैसे
कारणकार्यकेपूर्वहै तो अयुतसिद्धनहीं अथकारणपृथग्सिद्धहै
तोभीकार्यअपृथक्असिद्धहै एककीअपेक्षासेअयुतसिद्धकार्यकार
णमेंसङ्गसमवायहै तोभीपूर्वअसिद्धकार्यकाकारणकेसङ्गसमवा
ययुक्तनहीं सम्बन्धदोसेहोताहै अप्राप्तोंकीप्राप्तिसंयोगकहो तो
तन्तुपटकाभीसंयोगहो कारणकेसङ्गसेपूर्वकार्यसिद्धमानेसेअयुत
सिद्धकेअभावसेकार्यकारणकासंयोगविभागनहोजैसेउत्पन्नअक्रि
यकार्यकाव्योमादिविभुकेसंगसंयोगमानानसमवायमानाहै तैसे
कारणसेभीसम्बन्धसंयोगहोनसमवायहो संयोगवासमवायसं
बन्धिकोछोड़केनरहिनेमेंकछुप्रमाणनहींहै किसमसम्बन्धकासम्ब
न्धमानेसे अनवस्थानमानेसे असंबद्धकाकोईनियामकनहींतोसं
बन्धदुर्वचहै संयोगसमवायदोनोकाज्ञानविनासंबन्धिकेहै ति
ससे दोनोंहैं यहमतकहो एकहीमें अपेक्षासे अनेकज्ञानहोतेहैं
जैसे एकहीचैत्रस्वरूपवोसंबन्धिकीअपेक्षासे अनेकहै नरराजा
पितापुत्र जैसे एकहीरेखास्थानके भेदसे दशशतादिभेदज्ञानों
कोजनतीहै तैसे संबन्धिहीसंबन्धिज्ञानकेविनासंयोगसमवाय
ज्ञानयोग्यहै भिन्नवस्तुनहींहैं संबन्धशब्दसे विलक्षण उपलब्धि
ज्ञानद्वारासंयोगसमवायादिजानेजातेहैं फिर संबन्धिकेविना
उनकाअनुपलब्धिसे अभावनिश्चितहै दोअङ्गुलीनिरन्तरमें भि-
न्नसंयोगप्राप्तनहींहै समवायकिसीकेअनुभवमेंनहींचढ़ाहै भा
वार्थसंबन्धकासंबन्धिसे भेदनहींतोसंबन्धिसदाहै फिरसदास

स्वभ ज्ञानहोयहनहींक्योंस्वरूपबोसंबन्धिकोअपेक्षासं भेदकहा
था परापेक्षासेनिरन्तरदशामेंअङ्गुलियोंकासंयोगवोरूपरूपियों
का समवायहै नखतयही अर्थ अणुकेसंयोगखण्डनसे द्व्यणुकादि
सृष्टिकाखण्डनकरा अबअदृष्टआत्ममनकासंयोगखण्डनकरते
हैं जैसे अणुकासंयोगसम्भवनहुआ तैसे निरवयवआत्ममन
काभीसंयोगसम्भवनहींहै क्युं सावयवकेसङ्गसावयवकासंयोग
देखनेसे आत्माओमनकेकल्पितअवयवमानोगेतोअसत्कीक-
ल्पनासेंसबअर्थंकीसिद्धिहो कल्पनास्वाधीनहै तोनिरवधिप्रभू-
तअर्थंकल्पोमानवा इतनाअविद्यमानअर्थविरुद्धवाइतनाअविरु
द्धकल्पनोवहै इसनियममेंकुछहेतुनहींहै वैशेषिककल्पितछह-
पदार्थोंसेअन्यशतवासहस्रअर्थंनहींकल्पनीयहैं यहबाधकहेतु-
नहींहै तिससेजो२जिसकोरुचाहै सो२सिद्धकियाहै कोईद्या
पालुप्राणिकोबहुदुःखदायीसंसारनहो यहकल्पताहै औरव्यस-
नोमुक्तोंकाजन्मकल्पताहै इनदोनोंकावारककौनहोइससेसंयो
गदुष्टहै किञ्चदोनिरवयवअणुसे सावयवद्व्यणुकव्योमइवसंश्लिष्ट
नहीं जैसे एककेखेंचनेसेदूसराखिंचताहै तिसकीसिद्धिनहीं
है भाव जैसे लाखसेदोकाठकासंश्लेषहै तैसे व्योमचित्यादिकान
हींहै कार्यंकारणका आश्रिताश्रयभावनहोगा इससेसमवायक
ल्पनायहनहींहै वेदान्तोकीप्रकृतिविकृतिकेअभेदसेआश्रयाश्रि-
यिभावकानहोनाइष्टहै कार्यंकारणकेभेदकीसिद्धिमेंआश्रिता-
श्रयभावकीसिद्धिफिरआश्रिताश्रयभावकीसिद्धिमें कार्यंकारण
केभेदकीसिद्धिहै तोकुण्डोमेंबेरकेतुल्यइतरेतराश्रयहोवेदान्ती-
कार्यंकारणकाभेदवाआश्रिताश्रयभावनहींमानताहै कार्यको-
कारणहीकासंस्थानमात्रमानताहै कल्पितभेदसे किञ्च परि-
च्छिन्नअणुका जितनीछहदिशाहैं तिनकेसङ्गतितनेअवयवोंसेसा

अवयवहै। तिससेअनित्यहै। नित्यहोनिरवयवकारणअसतो जिस-
अवयवकी दिग्भेदका व्यवहार तुम कल्पतेहो वुहीअणुहै य
हमतकहो जोसर्वथाविभागकेअयोग्यहै सोअणुहै तोब्रह्महीका
अणुनामधराहै ब्रह्मसेअल्पकोदिग्विभागकीयोग्यतासेअवयव
विभागअवश्यहै परमकारणसेस्थूलादिकेनाशकीसिद्धिसे जै-
से द्व्यणुकादिसेलेकेवस्तुस्थूलतमनाशहोतीहै फिरसूक्ष्मसू-
क्ष्मतरक्षितिजातीयकअणुनाशीहै फिरद्व्यणुकभीनाशीहै तैसे
अणुभीनाशीहै क्षितिजातीयकहोनेसे और क्षितिकाअंशहो
नेसेसावयवकाअवयवोंकेविभागसेनाशहै निरवयवकानहींआ
त्मवत् यहमतकहो जैसे घीसोनादिकोअवयवोंकेविभागविना
आगिकेसङ्गसेपतलेहोकेकठिनताकानाशहै तैसे अणुभीपरम
कारणहोकेमूर्त्तादिकानाशकहोगा मायाकाब्रह्ममेअवयवकेवि
भागसेअणुहोनेमेंकुछप्रमाणनहीं तिससे भ्रांतिमूलअणुवादसे
वेदांतकाअविरोधहै ॥

(बौद्धाधिकरण ॥ ४ ॥)

समुदायउभयहेतुकेपितदप्राप्तिः १८

वैशेषिकआधावैनाशिकहै परिमाणकेभेदसेदेहादिकोशी-
घ्रतरनाशीमानेसेअयोग्यकहाअबसर्व वैनाशिककामतकहिता
है सुगतनेएकतत्त्वकहायाउसकाशिष्योंनेअवस्थाकेभेदसेबुद्धिभे
दद्वारावामन्दमध्यमउत्तमबुद्धिवालेशिष्योंकेभेदसेभेदकियाहैवे
चारहैं सौत्रांतिक वैभाषिक योगाचार माध्यमिक प्रथमसेदो
कोबाह्यार्थकेप्रत्यक्षवापरोक्षसेअस्तित्वसम्मतहै सर्वास्तित्ववादी वि-
ज्ञानास्तित्ववादी सर्वशून्यत्ववादी बाह्यवोआंतरकोअवस्तु मानता

है भूतभौतिकचित्तचैत्यदोपदार्थहैं भूतक्षितिधातुआदिभौतिकरूपादिनेत्रादिक्षिति आदिकेअणु चारप्रकारकेहैं समुदायसे अवयवीनहींहै खरस्नेहउष्णईरणस्वभाववाले अणु क्रमसेपृथ्व्यादिरूपसेइकट्ठेहोतेहैं यहबाह्यसंघातहै ॥

रूप विज्ञान वेदना संज्ञा संस्कार येपञ्चस्कन्धहैं विषयबाह्यहैं तोभीदेहस्थइन्द्रियोंसेग्राह्यहैं तिससेअध्यात्महैं सबव्यवहारकेस्थानहैं विज्ञानस्कन्धचित्तआत्मा कहाताहै अन्यचारस्कन्धचैत्यहैं इनकासंघातआध्यात्मिक सबव्यवहारकानिर्वाहक है फिरअवयवसे अधिकअवयवी अनुपलब्धिसेनहींहै वेभीसत्हैं तिससेक्षणिक हैं जैसे बिजुली यहांसुनो बौद्धको दोषकारका संघातदुष्टहै भूतभौतिकसंघातअणुहेतुक १ पञ्चस्कन्धरूपस्कन्धहेतुक है २ इनदोमें समुदायकी प्राप्तिनहींहै क्युं सर्गादिमेंअणुवोस्कन्धोंकासंघातसम्भवनहींहै अचेतनसे चिताकेउज्वलनअर्थात् विज्ञानभीसंघातकाहेतुनहीं संघातदेहाकारहोनेसेविज्ञानवा विज्ञानहोनेसेसंघातइनइतरेतराश्रयमें तुमनेक्षणिकविज्ञानसे अन्यचेतनजीवकोईभीनहींमानाजोसंघातकाकर्ताहोअणुवोस्कन्धकर्ताकेविनाआपसंघातकेअर्थप्रवृत्तहैंयहमतकहोअनिर्मोक्षसे रागादिजिसमेंहैंवहआशयअर्थात्सन्तानहै इसकोआलयविज्ञान सन्तानभीकहतेहैंसन्तानसन्तानिविज्ञानसेअन्यवाअनन्यहैअन्य हैतोस्थिरवाक्षणिकहैस्थिरहैतोआत्मवादमेंतुमपहुंचे क्षणिकका जन्मसेअधिकव्यापारनहींतो अणुआदिकेमेलकेअर्थप्रवृत्तिनहीं है क्षणिकताकेनाशसेसन्तानअनन्यहै यहपक्षखण्डितहै क्षणिक केअकर्त्ताहोनेसे तिससेसंहतताकेअभावसेसंघातनहीहै फिरसंघातकीअसिद्धिसेसंघाताधीनलोककी यात्रालोपहो ॥

इतरेतरप्रत्ययत्वादितिचेन्नोत्पत्तिमा त्रनिमित्तत्वात् १९

यद्यपिभोक्ताशासितासंहताऽस्थिरचेतनसुगतमतसेनहीं त
थापिअविद्यादिसेकारणकार्यकोकहतेहैं तिससे लोकयात्रासि
द्धहै अबअविद्यासिद्धहै तबअन्यकोअपेक्षानहींहै क्षणिकमेंस्थि
रबुद्धिअविद्याहै१ तिससे रागद्वेषमोहसंस्कारहैं२ संस्कारोंसे
गर्भमेंआलयविज्ञानहोताहै३ फिर आलयविज्ञानसेपृथिव्यादि
चारनामकेआश्रयसेनामहै४ फिररूपश्वेतकाला शुक्ररक्त होता
है५ गर्भस्थकीकललबुद्बुदअवस्थाकोनामरूपकहतेहैं विज्ञानको
पृथिव्यादिचारकोरूपकोकहेजिसइन्द्रियमात्रकेआयतनहैंसोषडा
यतनहैनामरूपइन्द्रियोंकापरस्परसंयोगस्पर्शहैतिससेसुखादिवे
दनाफिरवेदनासेविषयतृष्णातृष्णासेप्रवृत्ति उपादानउपादानसे
जन्महोताहैजिससेसोभव अर्थात्धर्माधर्मादितिससेजातिअर्थाद्दे
हजन्मसंघस्कन्धसमुदायजातस्कन्धोंकापरिपाकजरास्कन्धनाश
मरणहैम्रियमाणकोपुत्रादिकेस्नेहसेअन्तर्दाहशोकहै शोकसेहापु
त्रऐसाप्रलापपरिदेवनाहैअनिष्टकाअनुभवदुःखदुःखसेदुर्मनस्ता
अर्थात्मानसीव्यथामानअपमानआदिकोंभीअविद्यादिइतरेतर
हेतुकसौगतमतमेंकहींसंक्षिप्तकहींप्रपञ्चितकहेहैंतेसबकोसम्मत
हैंअविद्यादिहेतुसेजन्मादिजन्मादिहेतुसेअविद्यादिपरस्परहेतु-
हेतुमान्घटीयन्त्रकेतुल्यनित्यआवर्त्तमानहैंतोअर्थसेसंघातसिद्ध
हैयहमतकहो किससेवेउत्पत्तिहीकेनिमित्तहैं सङ्घातयुक्तताहो
जोसंघातकाहेतुहोसोनहींहै इतरेतरकारणसेअविद्यादिपूर्व२
उत्तर२कीउत्पत्तिमात्रकेहेतुहैं सङ्घातकीउत्पत्तिमेंकछुभीहेतु
नहींहैं अविद्यादिसङ्घातकेबिनानहोंगे तोसङ्घातकाहेतुकोय

दावैशेषिकमतमेनित्यअणुसङ्घातहैफिरमहत्पृष्टा* अथकर्त्ताभोक्ता कीमाने पर भी सङ्घात हेतु का सम्भव नहीं तदाहै मित्र फिर अ-णुक्षणिकभोक्तासे रहितसङ्घातकर्त्तासेरहितउपकार्योपकारसेरहितकासङ्घातकैसेसम्भवहो ज्ञानकेअभावसेयदाअनादिसंसार मेनिरन्तरसङ्घातहोतेजातेहैं सङ्घातके आधीन अविद्यादि हैं तदासङ्घातसेसङ्घातजन्मानियमसेसदृशजन्मोयाअनियम सेसदृश याविसदृशजन्मो नियममानेमेमनुष्यपुद्गलअर्थात्देह का देवबियंक्नारकादिकीप्राप्तिनहो अनियममानेमेभीमनुष्यपुद्गलकभी क्षणमेंहाथीहोकेदेवव। फिरमनुष्यहोनियमानियमदोसिद्धांतविरुद्धहै जिसकेभोगार्थसङ्घातहोसोस्थिरभोक्ता तुम्हारेमतमेनहीं है सोभोगभोगार्थहीहै सोअन्यसेप्रार्थनीयनहींऔरमोक्षभोक्तार्थहोतोअन्यमुमुक्षुनहो यदिदोनोअन्यसेप्रार्थितहैं तोभोगमोक्षकाल मे भोक्ता स्थिर हो फिर भोक्ता स्थिर माने से क्षणिकत्व गया तिससे अविद्यादिइतरेतरजन्मकेहेतुयदिहोतोहोफिरसङ्घातकीसिद्धिनहोभोक्ताकेअभावसेभोगवोमोक्ष। द्विव्यवहारदुर्घटहो जोजिसकीइच्छाकर्त्ताहै सोभोगइच्छाकालमेनहींतोइच्छाव्यर्थ है यदिहै तोक्षणिकत्वगया कार्यकाजन्मसुगतकोद्विविधइष्टहै हेत्वधीनकारणसमुदायाधीन अविद्यासेसंस्कारसंस्कारसेविज्ञानयहहेत्वधीनकार्यकाजन्महै पृथिव्यादिकेसमुदायसेकार्ययहदूसराहै तिससेभोक्ताकेअभावसेसङ्घातसिद्धनहीहै ॥

उत्तरोत्पादेचपूर्वनिरोधात् २०

अविद्यादिउत्तर२केजन्ममात्रमेहेतुनसंघातकेहेतुकहेथेअब वेजन्ममात्रकेभीहेतुनहींहैं क्युं सुनो क्षणभङ्गवादीमतहै किउ-

* सहाय ॥

त्तरक्षणअर्थके जन्ममेंपूर्वक्षणअर्थनिरुद्ध है इससे पूर्व क्षण हेतु वो
उत्तरक्षणफल यह नहीं कहिसक्ते हो निरु*ध्यमानवो निरुद्ध पू
र्वक्षणके अभावसेउत्तरक्षणका हेतुनहोगा अथ सद्रूपसिद्धपूर्वक्षण
उत्तरक्षणका हेतुयहभीनहींहैसद्रूपका फिरव्यापारकीकल्पनामें
क्षणान्तरका सम्बन्धहो अथउत्पत्तिसद्रूपका व्यापारहै सोभीनहीं
नष्टहेतुहीउपादानमहो तैसेघटादिकेकालमें मृदादिकेनहोनेसे
घटादिका जन्मनहीं होतो क्षणिकत्वकीहानिहै हेतुस्वभावसे जो
फलउपरक्तनहींहै तोजन्मकहांहै स्वभावकोउपरागम। जैसें हेतु
स्वभावफलके कालमें है तो क्षणभङ्गगया स्वभावोपरागके विनाही
हेतुफलमानो तोसर्वत्र हेतुफलको प्र। प्तिसे अतिप्रसङ्गहै किञ्च ज
न्मनाशवस्तुका स्वरूपही होया अवस्थान्तर याअवस्थान्तरयादर्शनाद
र्शनहो जेपक्षसबनहीं जो जन्मनाशवस्तुका स्वरूपहै तोवस्तुशब्द
वोजन्मनाशशब्दपर्यायहो यदिअवविशेषमानोकि जन्मन। शशब्दों
सेमध्यवर्तीवस्तुको आद्यन्तअवस्थाकहीहैं इससेभीक्षणिकत्वगया
क्युं आदिअन्तमध्यइनतीनक्षणका वस्तुसेसम्बन्धहोने से अथवस्तु
सेजन्मनाशअत्यन्तभिन्नहैंतोवस्तुजन्मन। शसेकुटीशाश्वतहो यदि
वस्तुकाजन्मदर्शनवोनाशअदर्शनहोतो जेद्रष्टाकेधर्महैं नवस्तुके इ
ससेभीवस्तुशाश्वतहो तिससेसौगतमतअच्छानहीं ॥

असतिप्रतिज्ञोपरोधोयौगपद्यमन्यथावा २१

क्षणभङ्गमेंनष्टपूर्वक्षणउत्तरक्षणकाहेतुनहीं यहकहाथा अब
हेतुकेविनाफलका जन्म नहोतोप्रतिज्ञाका नाशहो वहविषयकार
णसहकारिसंस्कारइनचारकोपाके चित्तरूपादिविज्ञानहै जैसा
चित्तरूपसुखादिजन्मतेहैं यहप्रतिज्ञार्थहै जैसे नीलविज्ञानका

* विनाशक ॥

नीलादस्त्वालम्बनज्ञानविषयहै नेत्रकारणहै अधिपतिप्रत्यय सह
कारिप्रत्ययआलोकहै समनन्तरपूर्वप्रत्ययसंस्कारहै यहचारोंका
भेदहै यहप्रतिज्ञाकानिर्दोषपुरुषमेंहै फिरजन्मनिर्हेतुमानोअनि
यमसेसबसबमेंजन्मों अथपूर्वक्षणजौलौ रहताहै तौलौउत्तरक्ष
णका जन्महोवै यहकहोतोभीहेतुफलयुगपत् होतोभीप्रतिज्ञाग
ई क्षणिका:सर्वेसंस्कारा:आद्यन्तवतोभावाइत्यर्थ:वस्तुदोषकहा

प्रतिसंख्याऽप्रतिसंख्यानिरोधाप्राप्तिरवि-
च्छेदात् २२

वैनाशिककीऊहासुनो बुद्धिबोध्यंत्रयादन्यत्संस्कृतंक्षणिकं
चेति अर्थसंस्कृतं उत्पाद्यं बुद्धिबोध्यम् प्रमेयमात्रं त्रयात् तुछ-
रूपसेअन्यहैं तीनजोहैं प्रतिसंख्याऽप्रतिसंख्यानिरोधावाकाशंचे
तित्रयमपिचैतद्वस्त्वभावमात्रंनिरुपाख्यमिति अर्थनिरुपाख्य-
निरन्वयि विनाशमात्र नि:स्वरूप फिरकछुविन्हनहींहै सबवस्तु
व्योममेपाइप्रत्यभिज्ञावत्है बुद्धिपूर्वक:क्षिणविनाशोभावानांप्र
तिसंख्यानिरोधोनामभाष्यते तद्विपरीतोअप्रतिसंख्यानिरोधआ
वरणाभावमात्रमाकाशमिति अर्थमेंप्रतीपाप्रतिकूलासत्भावअ
र्थको असत् अभावअनर्थकोकरतीहूं इसरूपसेसंख्याअर्थात्बुद्धि
प्रतिसंख्याहै इसबुद्धिसेकिसीभावकानाशहै सोप्रतिसंख्यानि-
रोधहैजैसेदण्डसेघड़ाकोफोड़ना आपहीसेविनाशीघटादिका
अबुद्धिसेजोनाशहैवहअप्रतिसंख्यानिरोधहैजैसेघड़ाकपड़ाधरा
धरागलिजाताहै यहसुगतप्रक्रियाहै आकाशकाआगेकहेंगे दो
नाशकाअबखण्डनसुनोभावार्थ सन्तानोंहैं सन्तान भावोंकाहे
तुफलद्वाराप्रवाहहै इसप्रवाहरूपसन्तानमेचरमक्षणक्षणांतरको
कर्त्तानहींकर्त्ताहै तोचरमरहनहीं सन्तानकेअनाशसे नहींक

सोतोचरमअसत्हैफिरतुमनेजोकहासत्मानाजोअर्थक्रियाकारी है फिरजोचरमसत्नहींतोपूर्वभीअसत्है।अर्थक्रियाशून्यसेसबसंतानोंमेंसन्तानियोंकाअविनाशीहेतुफलसेसन्तानकेविनाशकासम्भवनहीं उसकेभी नाश सन्तानि मे भी नहीं घट कपाल चूर्णादि दशामेंभीवुद्धीमट्टीहै इसप्रत्यभिज्ञासेमट्टीकेअन्वयकाअत्यन्तनाशनहीं बीजकाअङ्कुरादि मेंस्पष्टप्रत्यभि ज्ञान नहीं है तोअन्वयोकानाशहै यहमतकहो दृष्टअन्वयीकेअविनाशसेवहांभीअन्वयीकाअनुमानहै जैसे अङ्कुरादिअन्वयियुक्तहैं कार्यहोनेसेघटादिकेतुल्यतिससे दोनोंनिरोधोंकीअसिद्धिहै ॥

उभयथाचदोषात् २३

जोअविद्यादिकानिरोध प्रतिसंख्याऽप्रतिसंख्यानिरोध के भीतरहै वहसपरिकरसम्यग्ज्ञानसेवास्वयमेवहो पूर्वविकल्पमें निर्हेतुनाशकीहानिहो दूसरेमेंबुद्धकाउपदेशव्यर्थहो (यमनियमादयःपरिकराःसर्वंदुःखमक्षणिकमितिभावनोपदेशः) इनदोपक्षोंमेंदोषसेयहदर्शनअसमञ्जसहै ॥

आकाशेचाविशेषात् २४

बुद्धमतमेंदोनिरोधऔरआकाशयेतीननिरूपाख्यहैं तिनमेंसे दोकाखण्डनकियाअवनिरूपाख्यआकाशकाखण्डनसुनो व्यर्थ आकाशकोनिरूपाख्यमानाहै जैसे दोनिरोधवस्तुहैं तैसे आकाशभीवस्तुहै वेदप्रमासेआकाशवस्तुहै आत्मनआकाशःसम्भूतइति वेदनमानोतोअनुमानसुनोशब्दकिसीवस्तुमेंहै गुणहोनेसेगन्धादिकेतुल्यपृथिव्यादिद्रव्यकेगुणकाननहींसुनेजातेहैंतोआकाशनामद्रव्यउनसेउसगुणकाआधारसिद्धहै किञ्च जोरोकनस

कीवही आकाशनहींहै एकपक्षीकेउड़नेसेरोकहैतोअन्यपक्षीकेउड़नेकाठौरनहो जैसे एकघटकेहोनेमेंघटसामान्याभावनहीं तैसेएकपक्षीकेहोनेमेंभीमूर्तद्रव्यकासामान्याभावरूपआकाशनहींहै जिसदेशमेंआवरणाभावहै वहीआकाशहै उसमेंपक्षीचलेगायहमतकहो क्यूंकि जोदेशआवरणसेरहितहै वहदेशआकाशवस्तुहै अभावनहींहै किन्तु जोआवरणाभावमात्रआकाशमानोतो सुगतसेविरोधहो जैसे शिष्यनेपूछाकिभगवन्पृथिवीकाआश्रयकौनहै तोउत्तर किपृथिव्यादिकेअन्तमेंवायुहै फिरवायुकाआश्रयक्याइसप्रश्नकाउत्तर किवायुकाआश्रयआकाशहै फिरआकाशकोअवस्तुमानेसेवायुकाआकाशमें ठहिरना सत्यन होगा प्रश्नपृथिवीभगवन्किंसन्निश्रयापृथिव्यादीनामन्तेवायुःकिंसन्निश्रयः उत्तर वायुराकाशसन्निश्रयइति किंसम्यक्निश्रयआश्रयोस्याइति किंसन्निश्रयाअवस्तुनःशशशृङ्गस्याश्रयत्वादर्शनादितिभावः यहसुगतग्रन्थयापरब्राह्मणकोंसोइसकीरचनायो लोगोंनेदोषसेखोदियाहै किन्तुदोनिरोधवोआकाशजेतीनोंअवस्तुनिरुपाख्य नित्य हैं यह विरुद्ध है नित्यत्व अनित्यत्व वस्तु के धर्म हैं तोअवस्तुउनकाआश्रयनहींहै धर्मधर्मिव्यवहारधर्मधर्मिकेहोनेसेहोताहै घटादिवत्वस्तुहोन निरुपाख्य हो ध्वंसाप्रतियोगित्वाख्यधर्मनित्यत्वहै वह असत् मेंसम्भवनहींहैधर्मीकोअसत्वकेनाशसे ॥

अनुस्मृतेश्च २५

वैनाशिक जैसे सबवस्तुक्षणिकमानताहै तैसे उपलब्धाकोभीक्षणिकमानता अनुस्मृतिदेखनेसेउपलब्धाकीक्षणिकतासम्भवनहींअनुभव उपलब्धिएकार्थहैं अनुस्मृतितोसम्भवहो जोअनुभवऔरस्मृतिकाएकउपलब्धाहो एकदेखेऔरदूसरास्मरणकरे

ऐसा नहीं देखा है, जो मैं देखता था वही मैं अब देखता हूं यह ज्ञान आ
गे पीछे की एक द्रष्टा के बिना कैसे होता तुम्हारा उपलब्धा क्षणिक है ति
ससे ज्ञान द्वय का सन्धान नहो इस को तो एक आत्मा में दो होते हैं जो
दर्शन स्मरण का कर्त्ता भिन्न हो तो मैं स्मरण कर्त्ता हूं देखा अन्य ने या-
ऐसा हो सो ऐसा किसी को नहीं है और का देखा मैं स्मरण कर्त्ता हूं ज
हां २ ऐसा ज्ञान है तहां २ लोग भिन्न कर्त्ता को देखते हैं इस में मुझे कु-
छ भी गाड़ा नहीं है जैसे मैं स्मरण कर्त्ता हूं वह पहिले देखता था मै
ने पूर्व देखा था यह दर्शन स्मरणों का एक ही आत्मा को कर्त्ता वैनाशि
क भी जानता है तैसे मैं नहीं देखा था इस निर्वृत्त आत्मा के पूर्व दर्शन को
नहीं छिपा सक्ता है जैसे अग्नि की उष्णता वा प्रकाश को नहीं बाधस
क्ता है फिर एक ही को दर्शन स्मरण के सम्बन्ध में क्षणिकत्व कुटपरा वै-
नाशिक के करसे तैसे वर्त्तमान दशा से लेमरण पर्यन्त अपनी एक-
कर्तृ का उत्तर २ प्रतिपत्ति को जानता फिर आजन्म से वर्त्तमान द-
शा लो अतीत ज्ञान का कर्त्ता आप को सन्धानता है तो क्षणभङ्ग कहि
ये क्युं नहीं जाता है यदि कहो तुम कि सादृश्य से उक्त ज्ञान होगा उस
से कहो कि यह सदृश नहीं है सादृश्य दोसें है फिर क्षणभङ्गवादी दो
सदृश वस्तु के एक ग्राहक के अभाव से सादृश्य से सन्धान कहिता भू-
ठा है यदि आगे पीछे के क्षणों को सादृश्य का ग्राहक एक होतदा एक-
को दो क्षण में रहने से क्षणत्व उड़गया सादृश्य ज्ञान आगे पीछे को दो व
स्तु के ज्ञान से जन्य नहीं है तिससे दोकों सादृश्य का ग्राहक होक्या है
क कुविकल्प आकार को ही वा स्वरूप से प्रकाशता अन्य क्षण से अस्प
र्शी इससे स्थिर द्रष्टा को अपेक्षा नहीं है यह मत कहो सादृश्य ज्ञान-
में तीन भासते हैं जैसे
तिसके यह सदृश है ३ नहीं भासते तो स्वानुभव विरुद्ध है किञ्च जो ती-
नो पदों का अर्थ भिन्न नहीं तो उनका प्रयोग व्यर्थ है सादृश्य इतना-
हि कहि ना वस है अथ वस्तु तो तीन भासते हैं फिर ज्ञान से अभिन्न वा

ध्यनहींहैं यहकहीमतजोतौनोकाएकअभेदज्ञानहै तोपरस्परम भेदहो जोविज्ञानवादी हूमकोइष्टमानोतोदोषहै यदातीनवस्तु-ज्ञेयसादृश्यज्ञानसे भिन्नलोकमेंप्रसिद्धहैं फिरश्वावीदृष्टाकेदृढ़से उनेनमानेगा तदातत्तदाकारक्षणविज्ञानमियोजड़एकधर्मिसे-विरुद्धअनेकज्ञानकेअसम्भवसेस्वपक्षसिद्धिपरपक्षदोषपरीक्षको अपनोबुद्धिमेंठहिरेंगे इससे यथानुभवज्ञानज्ञेयभिन्नभानवाह्यार्थोंकोसादृश्यज्ञानताआत्मास्थिरमानो ॥

वाह्यार्थं क्षणिकस्वलक्षणनिर्विकल्पकग्राह्यहै फिरसविकल्पकअव्यवसेयस्थायित्वसादृश्यादिवाह्यकल्पितभासतेहैं इससे विप्रतिपत्त्यादिव्यवहारहैं यहबाह्यार्थवादहै जोअर्थनिश्चितहै सोहीकहोउससेअन्यकहौतोअपनेकोवहुप्रलापीजतातेहो विज्ञसोदोतौनक्षणहै तोदृष्टांतकाअभावहै क्ष*णिकअनुमान स्थिर अनुमाताकेविनासम्भवनहींहैसोहंऐसाकहिताहैमतेनाहंसदृशदूससेसोहंयहप्रत्यभिज्ञाभ्रमनहींहै कभीवाह्यजड़मेंसोहीयहहोवा उसकेसदृशहोयहांऊहवाधकोइच्छासेहै उपलब्धामेंकभीसन्देह भीनहींहैजैसेसोहूंवाउसकेसदृशहूंजोहीमैंपूर्वदिन में देखताथा सोहीमैंइसदिनमेंस्मरणकर्त्ताहूंइस असन्दिग्ध अविपर्यस्तनिश्चित प्रत्यभिज्ञासेउपलब्धास्थिरहै तिससे अयुक्तवैनाशिकमतहै ॥

नासतोऽदृष्टत्वात् २६

अभावशशशृङ्गतुल्यअत्यन्तअसत्है फिरस्थिरअनुयायिकारणनहीं किन्तु अभावसेभावजन्मताहै नानुपमृद्यप्रादुर्भावादिति जैसे नष्टबीजसेअङ्कुरजन्मताहै तैसे नष्टदूधसेदधिवोनष्टमट्टीकेपिण्डसेघड़ाजन्मताहै यदिकूटस्थकारणसेकार्यकाजन्महो तोनिरतिशयकार्यमेंसक्तहोनेसेसबकार्यएकक्षणमेंहो उत्तरक्षण

* यस्मात् तत्क्षणिकमित्यादि ॥

मेंकार्यकेअभावसेअसत्‌हो जोअतिशयकार्यकेक्रमकेअर्थसहका
रीचाहैतोअनवस्थाहो अनपेक्षामेंकार्यकोभीअतिशयकीअपेक्षा
नहीं तिससे सहकारीव्यर्थहै तिससे स्थिरवस्तुकार्यकाजनकन
हीहै सुनो (नास) यदिअभावसेभावहो तोसर्वत्रसदहो अभाव
कीसमतासेकारणविशेषकाग्रहणव्यर्थहो मर्दितबीजोंकाअभाव
वोतिससेअभावशशशृङ्गादिकेअभावमेंकछुविशेषनहींहै जिससे
बीजसेअङ्कुरदूधसेदहीयहविशेषरकारणोंकाखोकारलोका।यति
कोंकासार्थहो जोअभावसमानहै तोशशशृङ्गादिसेअङ्कुरादिहो
सोनहींदेखतेहैं तिससेअभावहेतुनहींहै यदिअभावकाकछुवि-
शेषहो जैसे उत्पलादिकेनीलादितद्वाविशेषसेअभावकोभाव-
त्वहो जैसे नीलसेउत्पलको जैसे शशशृङ्गवस्तुकेजन्मकाहेतुन-
हीं तैसे अभावभीकिसीकेजन्मकाहेतुनहींहै अभावसेभावकी
जन्ममेअभावान्वितहीसबकार्यहो सोनहींदेखतेहैं सबवस्तुको-
भावरूपसेप्राप्तिहै मृदन्वितघटादिकोतन्त्वादिकाविकारकोईन
हींकहिताहैमट्टीकोविकारमट्टीहीसेयुक्तजानतेहैंरूपबिनावट्टी
कूटस्थसेकार्यनहोगातोअभावसेभावकाजन्महै यहनहींकहस-
केहोस्थिररूपसेनाहिकुंडलादिकेकारणदेखनेसे फिरजिनबीजों
मेंरूपनाशदेखतेहैं तिनमेभीनष्टपूर्वावस्थाउत्तरावस्थाकाकारण
नहींहै जैसे जन्मेअङ्कुरादिमेंगयेबीजादिकेअङ्गतेकारणहैं सार
असत्‌शशशृङ्गादिसेसत्काजन्मनदेखनेसेसत्सोनादिसे सत्काज-
न्मदेखनेसेअयुक्तहै अभावसेभावकाजन्म और चारसेचित्तचैत्त
काजन्मकहतेवोअणुसेभूतभौतिकसमुदायकहतेहैं फिरसमुदाय
होछाड़अभावसेभावकाजन्मकल्पतेहैं इससेसबलोगवैनाशिको
मेंव्याकुलकियेहैं ॥

उदासीनानामपिचैवंसिद्धिः २७

यदिप्रभावसेभावहो तदायनीहमानकोभीदृष्टसिद्धिशेष-भावसुलभसे जैसे किसानखेतनकरे और अन्नहोवेकुलालमट्टी आदिनजोड़े वैवासनहोवें कोरीतन्तुनतनेपरवस्त्रमिले स्वर्गसु क्तिनचाहेपरमिलजावें यहनयुक्तहै नकोईमानताहै तिससेअयु क्तहै अभावसेभावजन्महांबीजतन्तुमृदादिशियिलविपर्ययरूपहो तेहैं यहतोहमभीमानतेहैं ॥ ————

विज्ञानवादाधिकरण ५

नाभावउपलब्धेः २८

अखण्डनिर्विशेषब्रह्मविज्ञानरूपबाह्यार्थोपादान यहवेदांत-है भिन्नसाकारक्षणिकविज्ञानहै तिससेअन्यअर्थहै यहयोगाचा रमतहै यहविज्ञानवादीकहताहै किकोई मन्दभीबाह्यवस्तुको-पियारकरताथा उसकेअर्थबाह्यार्थप्रक्रियाकहीहै सुगतकोतोवि ज्ञानस्कन्धहीइष्टहैइससेश्रेष्ठहैधर्मकीर्तिबाकहै किदेशनालोकना थानांसत्वाशयवशानुगाइति इससेविज्ञानहीकल्पितनीलपीत रूपसेप्रमेयहै फिरभासात्मासे मानफलफिरशक्त्यात्मासेमानश क्तिकेआश्रयाकारसेप्रमाताहै बाह्यार्थहोनेपरभीबुद्धिमें विनाच ढ़ेप्रमाणादिव्यवहारनहींउतरताहै कैसेजाना सवव्यवहारअंत स्थहै विज्ञानसेभिन्नबाह्यार्थनहींहै तिससेज्ञ यज्ञानविनानरशृ ङ्गतुल्यहै बाह्यार्थक्याअणुवाअणुपुंजस्तंभादिहै अणुस्तंभादिज्ञा नकेपरिच्छेद्यनहींक्युं अणुभासज्ञानकोअसिद्धिसे स्तंभादिअणुसे अन्यवाअनन्यकहनेकोदुर्वचहैं जोस्तंभअणुपुंजहैतो एकस्थूलस्तं भयहज्ञाननहोपुञ्जतोअसत्हैअवयवीनहींपरजातिगुणकर्मभीन हींजात्यादिधर्मिसे अभिन्नवा अत्यन्तभिन्नहैं तोधर्मिकेतुल्यवी-धर्म्यन्तरकेतुल्यधर्मधर्मिभावनहींहै भेदाभेदविरुद्धहैं स्तम्भज्ञान कुड्यज्ञानयहप्रतिविषयपक्षपातअनुभवसेजायमानज्ञानकेविशे

षविनानहींहैतिससेज्ञानरूपविषयमानो फिरविषयाकारज्ञा-
नहोसेदकाहै तोवाह्यार्थमाननाव्यर्थहैकिञ्चसहोपलंभज्ञानोप-
लम्भलक्षणमेंनियमसेविषयकाउपलम्भहै तिससेभीज्ञानज्ञेयका-
अभेदहै हमयहनहींकिएककेअनुपलंभमें दूसरेकाउपलम्भहै
क्षणिकज्ञानकाअर्थकेसाथसम्बन्धनहीं तो ग्राह्यग्राहक भी नहीं
तिससेअर्थनहीं जैसे स्वप्नमाया मरीचिदकगन्धर्वनगरादिकी-
प्राप्तिवाह्यार्थबिनाही ग्राह्यग्राहकरूपहै तैसे जागरितगोचर-
भीस्तम्भादिज्ञानहैं ज्ञानाविशेषसे कैसेवाह्यार्थकेबिनाज्ञानकी
विचित्रताहै वासनाकीवैचित्र्यसे यहकहाथा सुगतनेअनादि
सन्तानांतर्गतपूर्वज्ञानवासनाहै जैसे विनौरेरङ्गमे भिजाकेबोने
सेकपास रङ्गाहोताहै अनादि संसारमेबीजांकुरकेतुल्यविज्ञान-
वावासनाकावैचित्र्यपरस्परनिमित्त नैमित्तिकभावसेनिषिद्धन-
हींहै किञ्च अन्वयव्यतिरेकसेजानाकिज्ञानकी वैचित्र्यकानिमि
त्तवासनाहैं स्वप्नादिमेअर्थकेविनातुमहमबेवासनाहेतुसेज्ञान-
विचित्रमानतेहैं फिरविनावासनाकेअर्थहेतुकज्ञानविचित्रमैंन
हींमानताहूं तिससे वाह्यार्थकाअभावहैफिरक्षणिकविज्ञानवादी
कामतसुनिनित्य विज्ञानवादीने सूत्ररचाकि नाभाववाह्यार्थ
काअभावनिश्चितनहींकरसक्तेहो किससे हरएकज्ञानसे वाह्या
र्थप्राप्तहै जैसेस्तम्भकुड्यजोप्राप्तहैउसकाअभावयोग्यनहीहै जैसे
कोईभुंजानभोजनसे तृप्तिमेकहेकि मैभोजनमें तृप्तनहीं तैसे इ
न्द्रियकेद्वाराप्राप्तवाह्यार्थकोकहे किमैनेनपायानसोहैतोउसका
वचनकैसे ग्राह्यहो मैयहनहींकहताकिमैनेकुछअर्थनपाया कि
न्तुप्राप्तसे भिन्ननपायाकहोऐसाहीनिरङ्कुशहोनेसे तुम्हारेमुह
कोपरयुक्तियुक्तनकहातुमनेउपलब्धिकाभेदभीउपलब्धिकेही व
लसे अर्थकामानोकोईउपलब्धिकोस्तम्भकुड्यनहींजानताहै ज्ञा
नकाअर्थस्तम्भादिसबजानतेहैं लोकतुम्हारेवचनसे भीवाह्या

र्थज्ञानसे भिन्न जानसकैहैंयदन्तर्ज्ञेयं रूपं तद्बहिर्वद्वभासतेइतिवा-
हिरर्थहै तोबहिर्वत्कहतेहो अन्यथाकिससे वाहिरयहकहीय
हकोईनहींकहता किमित्रवन्ध्यापुत्रवत्भासताहै तिससे जोच
वाधितभेदकाअनुभवहोता तो बहिरेवभासताहै यह युक्तथान
किवहिर्वत् एवकारयुक्तहै नचत्कारयदिवाह्यार्थकेअसम्भवसे व
हिर्वत्भासताहै यहनिश्चितहै तोयहअच्छानिश्चयनहीं प्रमाणा
धीनसम्भवअर्थात्सत्तानिश्चयहै प्रमाणकेअभावाधीनअसम्भव-
अर्थात्असत्ता।निश्चयहै फिरसम्भवपूर्विकाप्रमाणप्रवृत्तिवोअसम्भ
वपूर्विका।प्रमाणप्रवृत्तिहैजोप्रत्यक्षादिमेंसे किसीसे जानाजाता
हैसोसम्भवहै जोकिसीसे नजानाजावेसोअसम्भवहैलोकमेंसवप्र-
माणोंसेवाह्यार्थसिद्धहैबुद्धमतमेंअस्थूलएकविज्ञानस्थूलअनेकस-
मूहालम्बनकाअर्थसे अभेदयुक्तनहींहै स्थूलअनेकहोनेसे समू-
हालम्बनकेनाशमेंविज्ञानमिथोवार्त्तानभिन्नहोनेसे अर्थहित्वा
दिव्यवहारलोपहो ज्ञानअर्थकेसदृशहै तिससे अर्थनहींयहमत-
कहो क्युं अर्थनहींतोअर्थकेसदृशअसिद्धहै औरअर्थवाहिरहै ज्ञा
नार्थकासहोपलंभउपायोपियहेतुकहै ननुअभेदहेतुकयहमानो-
जैसे रूपोद्रव्यआलोकसेप्राप्तहै परआलोकसे अभेदनहींहै तै-
से अर्थकाज्ञानसेअभेदनहींहै भेदमेंभीग्राह्यग्राहकनियमसेसि
द्धिहै किञ्च घटज्ञानपटज्ञानइनमेंघटपटविशेषणोंकाभेदहै न
विशेष्यज्ञानका जैसे शुक्लगौकृष्णगौशुक्लकृष्णकाहीभेदहै नगो
त्वकाऔरदोसेएककाभेदसिद्धहै औरएकसेदोका।तिससेअर्थज्ञा
नकाभेदहै यहीघटादिसेचैतन्यकाभेदहै तैसे घटदर्शनघटस्मर-
ण यहां भी विशेष्य दर्शन स्मरण का भेद है न विशेषण घट का
जैसे क्षीरगन्ध क्षीररस यहां विशेष्य गन्धरस का भेद है न विशे-
षणक्षीरकातैसे अर्थज्ञानकाभेदहै यहइत्तिज्ञानसेघटादिकाभे

दहै किसुदोक्तमिकस्वप्रकाशक्षणिकज्ञानोंकोमिथोग्राह्यग्राहक-
स्वरूपनहींहै तोविज्ञानोंकेभेदकीप्रतिज्ञायुक्तनहीं धर्मिप्रतियो
गियोंकामिथोवाग्रौरसेअग्रहणमेभेदग्रहकायोगनहीं फिरधर्मि
प्रतियोगिकेभेदकाग्राहकस्थिरआत्मादोनोंसे मानो ऐसेहो पक्ष
साध्य हेतु दृष्टान्तइनकेभेदकेअभावसेक्षणिकअसत्है यहप्रति
ज्ञाभीनयुक्त है स्वलक्षण अर्थ सबसे भिन्न व्यक्ति मात्र सामान्य
अर्थअनेकमेंघुसासामान्यहैअतद्व्यावृत्तिरूपजोप्रयोगयुक्तनहींहैंस
बअनेकार्थज्ञानमात्रहैंतोमिथःवाअन्यसेउनकादुर्ज्ञानहैआगेका
नीलज्ञानवास्यहै पूर्वका नीलज्ञान वासकहै यह प्रयोगनयुक्त
हैवास्यवासकसेभिन्नज्ञाताकेनहोनेसेअविद्योपप्लव अविद्यासेस
म्बन्धतिससेनीलइसकानामसत्धर्महैनरशृङ्गयहअसत्धर्महैअमू
र्त्तयहसदसत्धर्महै सत्विज्ञानकोवाअसत्नरशृङ्गकोअमूर्त्तत्वा
दिप्रतिज्ञादुर्लभहैअनेकार्थज्ञानकेसाध्यसेअज्ञानसेवन्धउसकोहै
ज्ञानसेउसकामोक्षहैयहप्रयोगवह्वर्थज्ञानसेसाध्यहैसामान्यसेइष्ट
ग्राह्यहैअनिष्टत्याज्यहैफिरशिष्यकोहितोपदेशअनेकज्ञानसाध्यक
हाहैतिससेप्रतिज्ञातअर्थकीसिद्धिकेलियेग्राह्य ग्राहक भेद माना
किसुयहतोकहोकिविज्ञानरहूसअनुभवसेविज्ञानमानावोस्तम्भ
कुड्यइसअनुभवसेबाह्यार्थक्युंनहींमानतेहोजोविज्ञानकाअनुभव
हैतोबाह्यार्थकाभोअनुभवयुक्तहै अथयदिविज्ञानस्वसम्वेदनसेदी
पवत्स्वयंहीअनुभूतहै तैसे बाह्यार्थनहींहै यहकहोतोहेसुगतसु
ततुमनेअप्रसिद्धअत्यन्तविरुद्धस्वात्मामें क्रिया मानी जैसे अग्नि
अपनेकोदहतीहै इसकेतुल्यलोकमेंविज्ञानसे भिन्नबाह्यार्थका
अनुभवप्रसिद्धछोड़के अपनेमेंप्रौढ्यादिदिखाईहै यहमतकहो-
अर्थसेभिन्नविज्ञानस्वानुभवनहींएकहीकर्मवोकर्त्ताके विरोध से
यहभीमतकहोकिविज्ञानअर्थऔरअर्थीआपहो है अभेदमेअर्था-

र्थिकासम्भवनहोनेसे जोविज्ञानअपनेस्वरूपसेग्राह्यनहींतोअन-
वस्था है किन्तुदीपकेतुल्यभासकता सेजोज्ञान का ज्ञानांतरभा
सककल्पोतासमतासेभास्यभासकभावयुक्तनहींफिरकल्पनाव्य-
र्थहै अनवस्थावोसमताझूठहै अनित्यज्ञानजड़है जन्मादिमा-
नतासेघटकेतुल्ययहज्ञानआपसेअपने जन्मादिकाग्राहकअयो-
गसेनहीं इससेग्राहककीचाहनाहै वुहसाक्षिहै फिरसाक्षिको
होनासत्तावोज्ञानस्फूर्तिमेनिरपेक्षहोनेसेअनवस्थानहीं फिरस
मताभीनहींचित्वोजड़कीविषमता से कही कहां साक्षी स्वयं-
सिद्धहै निरपेक्षसाक्षिकेनहोने मेंक्षणिकविज्ञानकेभेदकीअसि-
द्धिसेसोमानो किन्तु जैसे दीपदीपांतरकीअपेक्षानहींकर्त्ता तै-
से विज्ञानविज्ञानांतरकी अपेक्षा नहींकर्त्तायहवक्ताविज्ञानको
अप्रमाणगम्यकहता है स्वयंप्रकाशयहवक्ताज्ञातृशून्यकहताहै-
तैसे ज्ञाताज्ञानअविषयसेपहाड़मेंसोदियोंकीज्योतिकेतुल्यअ-
सत्हीविज्ञानहो तिमसे साक्षीमानो फिर शाक्य ने कहा कि वि
ज्ञानकाविज्ञानसेअन्यज्ञातानहींहै यह मुझे शाक्य का पियारा
बेटाथा वहीतूवेदांतिनेअपनीगोदलेलिया फिरवेदांतीनेकहा
किसोनहींकिहताहूं किन्तु अन्यअवगन्ताकेनेत्रकासाधनदीपा
दिदेखनेसेविज्ञानविज्ञानसेभिन्नवेद्यहै वेद्यहोनेसेदेहवत् इसे
विज्ञानभास्यहै तोअन्यअवगन्तामेउसकाप्रथनदीपकेतुल्यमान
ताहूं शाक्यशङ्काअवगन्तासाक्षीकीस्वयंसिद्धतातुमनेउठादी वि
ज्ञानस्वयंप्रकाश यहमेरापक्षतुमनेयुक्त्यान्तरसेलेलिया औरभिन्न
साक्षीपरवेद्यवास्ववेद्यहै पूर्वमेंअनवस्थादूसरेमेंविज्ञानवादही
भग्यन्तरसे कहायहमतकहो तुमनेविज्ञान जन्मनाशवाला कहा
ज्ञानज्ञानसेभिन्नवेद्यहै रूपवत् इससे मैनेकार्यकोजड़त्वकेनि-
यमसे विज्ञानसे भिन्नवेद्यत्वकहाकूटस्थको ग्राहककीअनपेक्षा-

से अनवस्थानहींयहीहमारातुमाराबड़ाभेदहै ॥

वैधर्म्याच्चनस्वप्नादिवत् २९

जैसे स्वप्नकेज्ञानअर्थशून्यहैं तैसे जागरितस्तम्भादिकेज्ञान-
बाह्यअर्थशून्यहो ज्ञानकीसाम्यसेजोऐसाकहताहै उसे कहोकि
स्वप्नज्ञानकेतुल्यजागरितज्ञानहोनेकेयोग्यनहींहै किससे वैध-
र्म्यात् स्वप्नकेअर्थबाधितजागरितकेअर्थअबाधितइसवैधर्म्यसे जै-
से स्वप्नमेंहाथीपरचढ़ाजागेमेंकहिताकि झूठाहीहाथीपरचढ़ाथा
नहींथी मुझकोहाथीकीचढ़ाईकारणकेदोषोंसे हुआ मनग्लानउ
सीसे भ्रांतिचढ़ाईकी हुईथी करोमायादिवादोंमेंभीऐसीबाधक-
ल्पनाजगतकेस्तम्भादिकिसीदशामेंबाधितनहींहैंकिञ्चस्वप्नादिख
नादेखिसुनेआदिअर्थोंकीस्मृतिहै वोजगतमेंस्तम्भादिकादेखना-
ज्ञानहै स्मृतिज्ञानकाभेदप्रत्यक्षहै जोअर्थअसम्बद्धवोअवर्तमान-
हो सोस्मृतिकाविषयहो इससेस्मृतिकभी२निरालम्बनभीहो सं-
प्रयुक्त वर्तमानअर्थकाग्राहीज्ञान है यहकभीनिरालम्बननहीं है
अबतोतुमकोजाग्रत्स्वप्नकाभेदअनुभूतहुआ तोनहींकहिसतेकि
जाग्रत्केस्तम्भादिज्ञानज्ञानकीसाम्यसेस्वप्नज्ञानकेतुल्यहैं बुद्धि-
मान्कोअपनाअनुभवछोड़नायुक्तनहींहै यदिस्तंभादिकाअनुभ-
वनिरालम्बहो तदादृष्टांतकेहठसेक्याहै प्रत्यक्षहीसेकहसतेहो
आगकीउष्णतादृष्टांतहीसेनहींकहीजातीहै यदिजोजिसकास्व-
तःधर्मनहींहै तदाक्यादृष्टांतोंसेहै बाधितसहस्रदृष्टांतोंसेसाध्य-
नहोगा जैसे अग्निउष्णअनुभूयमानहै फिरक्यापानीकेसाधर्म्य-
सेशीतहोगी तिससेनिरालम्बनअनुमानसेअप्रमाणजन्यउपाधि
है मध्यस्थवाकजोवैधर्म्यसेबुद्धकानिरासहै तोउसीसेवेदांतीभी
निरस्तहै मायादिवादी ॥

नभावोऽनुपलब्धेः ३०

उत्पत्तिः सत्तावा ॥

विनाअर्थकेज्ञानविचित्रहै वासनाकोवैचित्र्यसेयहमतक-हो वासनाकाजन्मसम्भवनहीं तुम्हारेपक्षमें वाह्यार्थकीअप्राप्तिसेअर्थप्राप्तिहेतुप्रत्ययनानावासनाहैं अप्राप्तअर्थमें कसहेतुसे विचित्रवासनाहो अनादिसंसारमेंवाह्यार्थके बिनापूर्व२वासनाकेवलसेउत्तर२विज्ञानवैचित्र्यहै बीजांकुरके तुल्य यह नहीं क्युं अनादिअन्धपरम्परासेअप्रतिष्ठाअनवस्थाव्यवहारलोपिनी-हो फिरअदृष्टमेंकार्यकारणकीकल्पनायुक्तहैयहांतोअर्थकेविना वासनाकेजन्मकोआदिमेंकल्पनेसेअनादिकल्पनानिर्मूलहै दू-ससेदृष्टविज्ञानवैचित्र्यकीसिद्धिनहींहै किन्तु वासनाहेतुकज्ञान है नअर्थहेतुकदूसअन्वयव्यतिरेकसे विनाअर्थज्ञानकेवासनानहींहै किन्तु विनावासनाकेअर्थप्राप्तहै विनाअर्थकेवासनाकाजन्मनहींअर्थकाहोनाहीअन्वयव्यतिरेककोस्थापनकर्त्ताहैकिन्तुवासनासंस्कारविशेषहै संस्कारआश्रयकेविनानहींकल्पतेहैं जैसे लोकमेंवेगादि तुमकोप्रमाणसेवासनाकाआश्रयनहींहै क्युं आश्रयकीअनुपलब्धसेविज्ञानसंस्कारोंकाजन्मनहींहै ॥

क्षणिकत्वाच्च ३१

जोआलयविज्ञानवासनाकाआश्रयकल्पाथा अर्थात्सदावस्तुकाज्ञान जैसेघट२है सोभीसङ्जन्मोदहिमेंवायेंशींगकेतुल्यहै दूससेउसमेंआश्रयाश्रयीकाअयोगहै याजागेपीछेमेंआधेयवक्षणमात्रक्षणकोआधारकाअयोगहै जोयोगहै तोक्षणिककानाशहै दूससेक्षणिकअस्थिरआलयविज्ञानप्रवृत्तिविज्ञानअर्थात्नीलादिकेतुल्यवासनाकाआधारनहींहै क्षणिकमानेसेयदिसर्वकारवा

कूटस्थस्थिरआत्मानहींतदासन्तानवस्तुनहोनेसेदेशकालादिकी अपेक्षासेजीवासनोंकानिक्षेपवास्मृतिवाप्रत्यभिज्ञाप्रतिसन्धाना दिसवव्यवहारसम्भवनहींहै यदिस्थिरआत्मामानातोआलयवि ज्ञानगया वाह्यार्थवादवोविज्ञानवादखण्डनकिया शून्यवादख ण्डनकेअर्थपृथक्सूत्रनहींकिया उक्तसूत्रोंसेहोताहै रीतिज्ञान-वोअर्थकाअभावनहींप्रमाणसेउपलब्धहै जाग्रत्स्वप्नज्ञानवोअर्थ सेशून्यहै अवस्थाहोनेसेसुषुप्तिकेतुल्य इससेपढ़ाकि वैधर्म्यात्स्व प्नआदिजिमकेवहस्वप्नादिहै अर्थात्सुषुप्ति फिरसुषुप्तिकेतुल्यजा ग्रत्स्वप्नअर्थशून्यनहींहै जाग्रत्मेंअर्थप्राप्तिवैधर्म्यहै स्वप्नमेंअप्रा-प्तिवैधर्म्यहै फिरसुषुप्तिमेंभीआत्मज्ञानहै तिससेसुषुप्तिअर्थशून्यन हैतोशून्यसाधकअनुमानभीनहींहै किन्तु निर्मूलनिषेधअयोग्य है तिससेकुछमूलकहो वुहतुम्हारेमतमेंसत्नहीं क्युं मानसे नुपलब्धहै इससेसूत्रपढ़ा (नभाव) योभासताहै सोअसत्न-हीं इमउत्सर्गसेप्रपञ्चशून्यनहींहै वाधकेअभावसे यहआशयभी नहींकिसत्वाअसत्विचारकेयोग्यनहींहै तोअसत्है मिथ्यात्व-केसम्भवसे (क्षणिका:) अर्थशून्यकेविरुद्धक्षणिकशिष्योंकोउपदे शकरतासुगतप्रलापीहैशून्यतास्वभावाहिस्वभूतेपञ्चस्कन्धा:कथं हिशून्यतास्वभावाद्धहास्वभूतेवोधिसत्वेनमहासत्वेनप्रज्ञापार मितायांचरतारूपंशून्यमितिप्रत्यवेक्षितंएवंविज्ञानवेदनासंज्ञा-संस्कारा:शून्यमितिप्रत्यवेक्षितव्यमित्यादिसौगताम्नाययोस्तीति

सर्वथानुपपत्तेश्च ३२

अवकहांलोकहुंजैसारवैनाशिकमत सिद्धि केलिये परीक्षा जाताहै तैसारवारु केकूआलोगिराजाताहै इसतत्वकाव्यहार अयुक्तहै किम्वाह्यार्थवादविज्ञानवादशून्यवादस्वलक्षणवादा-

दिमिथी। विरुद्धउपदेशितासुगतअपनेको अस्सम्बद्धप्रलापी दिखाताहै प्रजामेंसुगतकाद्वेषथा इससेउनकेमोहार्थविरुद्धमार्गदिखायेयहसंकरकाकहिनावेदिकविरुद्धमार्गोंकोउठाताहै प्रपञ्चापलापमेंसुगतवेदान्तिदोनोंसमानहैं क्षणिकविज्ञानसुगतमतहै नित्यविज्ञानवेदान्तीमतहै यहविशेषहै मुक्तकर्त्तोंकामतखण्डनकिया।तिससेमुक्तांवरोंकाबुद्धिमेंउत्तरआयाइससेकहाकि॥

———*———

अर्हताधिकरण ॥ ६ ॥

नैकस्मिन्नसंभवात् ३३

जीव१ अजीवअर्थात्भोक्ताभोग्यसंक्षेपसेदोपदार्थहैं२ विषयोंमेंइन्द्रियोंकोप्रवृत्तिआस्रवहै३ प्रवृत्तिकानिवारकसम्बरयमनियमादिहैं४ पापोंकानाशकनिर्जरतपहै बन्धकर्महै मोक्षकर्मफांसीकेनाशसेअलोकाकाशमेंप्रविशिष्टका नित्य२ऊपरकोजानाहै जैसे जलपरतुम्बीकाउतरानाहै संक्षेपसेदोजीववोअजीवहैं औरोंकोयथायोगउक्तदोमेंघुसादियाहै फिरइनदोकायहप्रपञ्चहै कि पंचास्तिकायनाम जीवास्तिकाय१ अस्तिकायशब्दपदार्थवाचीजिनसंकेतसेहै जीवहीअस्तिकायहै यहसमासहै१ पुद्गलास्तिकाय पूर्णगलितहोनेसे परमाणुसंघकायहै२ धर्मास्तिकाय३ सम्यक्प्रवृत्तिसेअनुमेयधर्महै३ अधर्मास्तिकाय४ ऊपरकोजानेवालेजीवकाजोदेहमेंस्थितिकाहेतुहै सोअधर्महै४ आकाशास्तिकाय५ आवरणाभावआकाशहै अर्थात्जिसमेंचलेउड़ेअद्धाअर्थात्कालजोछ:द्रव्यहैं उनकेतत्वोंमेंइनकेभेद बहुत हैं जीवास्ति कायतीनतरहपरहै कोईजीवनित्यसिद्धहै जैसेअर्हन्मुख्य१ कुछअवमुक्तवोकुछबद्धहैं पुद्गलास्तिकायछहहैं पृथिवी जल तेजवायुजी

चारभूत स्थावरजङ्गमजेहो प्रवृत्तिलिङ्गधर्म स्थितिलिङ्गअधर्मजे
होकहिचुकेआकाशास्तिकाय दोतरहपरहै लोकाकाश संसारी
कहाहै अलोकाकाशमुक्तोंकाघरहै बन्धनामकर्मआठहैं चार-
घातीचारअघातीहैं तत्वज्ञानसेमुक्तिनहींयहज्ञानज्ञानावरणी
यकर्महै१ आर्हततत्वकेश्रवणसेमुक्तिनहींयहदर्शनावरणीयकर्म
है बहुततीर्थंकरोंसेदिखायेमुक्तिकेपन्थोमेंनिश्चयनहीं किससेमु
क्तिहोयहमोहनीयकर्महै३ मुक्तिकेपन्थमेप्रवृत्तिकाविघ्नकरनेवा
लाअांतर्यकर्महै जोअच्छेकोनाशतेहैं तिससेघातिकर्महैं मुझको
तत्वज्ञाननयोग्यहै यहअभिमानवेदनीयकर्महै यहनाममैंहूं य
हअभिमाननामिककर्महै मैंभगवान्अर्हन्देशिककेशिष्यवंशमेंघु
साहूं यहअभिमानगोत्रिककर्महै देहकीस्थितिकेअर्थजोकर्महै
सोआयुष्कहै अथवाशुक्ररक्तमिलाआयुष्कहै इसकातत्वज्ञानके
अनुकूलदेहकेपरिणामशक्तिगोत्रिकउसीशक्तकाद्रवअवस्थाकलि
लावस्थाबुद्बुदावस्थाआरम्भकक्रियाकाविशेषनामिकहैसक्रियबीज
कापेटकोआगवोवायुसेथोराकठाहोनावेदनीयहैजोतत्वकेवेदन
कोअनुकूलतासेतत्ववेदकशुक्लपुद्गलार्थतासेअघातीहैं जोआठ-
कर्मजन्मादिकेअर्थहैं इससेवन्धहैआस्रवआदिकेद्वारायहआर्हती
प्रक्रियाहै सबवस्तुमेंसप्तभङ्गीन्यायकोलगातेहैं सातभङ्गीकाएक
वस्तुमेंइकट्ठाहोनासप्तभङ्गीहै जैसे घटादिकामवआत्मासेसत्ए-
करूपमेप्राप्यात्मासेमोघटादिहै इससेघटकोप्राप्तिकेअर्थयत्नहो
इससेघटत्वादिरूपसेकथञ्चित्है प्राप्तत्वादिरूपसेकथञ्चित्नहीहै
इनदोअस्तित्वनास्तित्वविरुद्धधर्मोंसेवस्तुमात्र अनेकरूप माना है
स्यादस्ति यहप्रथमभङ्गहै स्यात्यहअव्ययहै अस्धातुकेसमानरू
पहै इसकाअर्थकथञ्चित्है फिरतोस्यादस्तिइसकाअर्थकथञ्चिद-
स्तियहहै ऐसेओरोंमेजानोजववस्तुहै यहकहिनेकोइच्छाहै तव

स्यादस्तियहप्रथमभङ्गकहाजाताहै अववस्तुनहींहै यहकहनेकी इच्छाहै तवस्यान्नास्ति इसदूसरेभङ्गसेकहाजाताहै फिरक्रमसे जहांवस्तुकाहोनानाजानाकहनेकीइच्छाहै तहांस्यादस्तिचनास्ति च इसतीसरेभङ्गसेकहाजाताहै फिरएकहीवारजहांवस्तुकाहोना-नाजानाकहनेकीइच्छाहै तहांअस्तिनास्तिजेदोशब्दएकवारक-हिनेकोअशक्यहोनेसे स्यादवक्तव्य इसचौथेभङ्गसे कहा जाता है फिरजहांपहिलावोचौथाभङ्गकहनेकी इच्छा हो तहांस्यादस्ति-चावक्तव्यश्च इसपञ्चमभंगसेकहाजाताहै दूसरेवोचौथेभंगसेज-हांकहनेकीइच्छाहै तहांस्यान्नास्तिचावक्तव्यश्च इसछठेभंगसेक-हाजाताहै फिरजहांतीसरेचौथेभंगसेकहनेकीइच्छाहै तहांस्या-दस्तिनास्तिचावक्तव्यश्चइससातमेभंगसेकहाजाताहैयहविभागहै एकवोअनेकइनदोधर्मोंकोलो स्यादेक स्यादनेक स्यादेकवोअने-क स्यादवक्तव्य स्यादेकअवक्तव्य स्यादनेकअवक्तव्यस्यादेकअने-कअवक्तव्य७ तैसे स्यान्नित्य स्यादनित्यस्यात्सत् स्यादसत् ऐसेऔ-रकल्पोऐसेअनेकांतवस्तुमेंप्राप्तित्यागादिव्यवहारोंकासम्भवहै ए-कांतवस्तुमेसवसवठौरसवकालमेंहैं तोउक्तव्यवहार का वाध हो तिससेसवअनेकांतहैं तोएकरूपब्रह्मवादकावाधहै यहमतकहो जोहैसोसर्वत्रसर्वदाहै जैसे ब्रह्मात्मा यदिकहोकिसोहै तोउसी कोप्राप्तिकेअर्थयत्ननकरोसोभीनहींअप्राप्तिकीभ्रांतिसेयत्न का स-म्भवहैफिरजोनहींसोनहींहैजैसेशशशृङ्गादिप्रपञ्चतोहैवोनअवस्तु विलक्षणहै इससेएकांतवादयुक्तहै फिरअनेकांतवादमेंक्याजि-सरूपसेवस्तुकासत्वहै तिसीरूपसेअसत्वहै उतरूपांतरसे जोदू-सरेसेरूपांतरवस्तुकाअसत्हैतोवस्तुसत्एकरूपहीहैयहनहींकिदू-रपरग्रामहै तोउसकीप्राप्तिनहींहैतिससेसोअसत्है प्राप्यकेनहो-नेसेप्राप्तिकायत्नअयुक्तहै इससेप्रपञ्चएकरूपमानो अनेकांत सि-

डांतछाड़ो क्युं नैकस्मिन् एकधर्मिमेएकबारविरुद्धसत्असदादि-
धर्मोंकाप्रवेशसम्भवनहींहै जैसे शीततप्तकाविमतमनेकात्मकंव
स्तुत्वान्नारसिंहवत् इदानींघटोस्तीत्यनुभववाधात् जीवादिसा
तकासंख्याबीजीवादिरूपनियतवीअनियतहैं जोकहोकिनियत
अनियतहैं तोयहांनिश्चितरूपज्ञानसंशयज्ञानकेतुल्यप्रमाणनहो
अनेकांतनिरङ्कुशसर्वत्रहै तोअनेकांतनिश्चयप्रमाणमेघुसकेउस-
कोभीअनेकांतकरेगा क्युं निश्चयभीवस्तुहीहोनेसे ऐसेहीनिश्च-
ताकोवोनिश्चयप्रमाणादिफलकोपक्षमेस्यादस्तिवो पक्षमे स्यान्ना
स्तिइसकहनेसेकैसेप्रामाणिकतीर्थंकरप्रमाणप्रमेयप्रमितिप्रमाता
काउपदेशकरनेकोशक्तहोवानिष्कंपप्रवृत्तिहो उतकैसेशिष्यजन
अनिश्चितअनेकांतीकेकहेअर्थमैघुसेंगेसवजनऐकांतिकप्रामाणि
कावस्तुकेअनुष्ठानमेअनाकुलघुसतेहैंनअनैकांतिकमे इसीसेजिस
शास्त्रकाअर्थअनिश्चितहै उस केरचनेसेरचककावचन मत्तोन्म
त्तवचनकेतुल्यपकड़नेयोगनहो तैसे अस्तिकायादिकोपक्षीपांच
संख्याहै यानहींइसविकल्पमेंअस्तिपक्षमेंहै नास्तिपक्षमेन्यून-
वाअधिकहो फिरउक्तपदार्थोंकोअवक्तव्यताकासम्भवनहीं जोअ
वक्तव्यहीतोकहो क्युंहोकहितेहोवोअवक्तव्यकहितेहो यहविरुद्ध
है जोजैसे कहेहैं तैसे निश्चितहैंयानहीं तैसे पदार्थोंकाप्रमाण
सम्यग्दर्शनहै यानहींऐसेहोसम्यग्दर्शनसेभिन्नअसम्यग् दर्शनहै
यानहींऐसाकहिताअर्हन्झूठेपक्षमेंघुसाहै सत्यपक्षमेनहींघुसा
है स्वर्गमुक्तिभीपक्षमेहोपक्षसेनहो तैसे पक्षमेनित्यतापक्षमेअनि
त्यताअनिश्चयमेप्रवृत्तिनहीं फिरअनादिसिद्धअर्हन्मुनिअसङ्गअनु
ष्ठानसेमुक्तहै अननुष्ठानसेअन्यवद्धहैं आर्हततत्वसेनिश्चिततीन
तरहकेस्वभाववालेजीवोंकानियमभीनहो ऐसेहीजीवादिएकध
र्मीमेंसत्असत्दोविरुद्धधर्मोंकेअसम्भवसेसत्एकधर्महै तोउसमेअ

सत्‌धर्मकासम्भवनहींअसत्‌एकधर्ममें सत्‌ का असम्भव है तिससे आर्हतमत असङ्गत है एकअनेकनित्यअनित्यव्यतिरिक्तअव्यतिरिक्तादिसिद्धान्तखण्डितहैं सत्‌असत्‌काएकमेखण्डनसेजोदिगम्बरकल्पतेहैं कि पुद्गलनामअणुसेपृथिव्यादिसंघातकासंभवहै सो अणुवादखण्डनसेखण्डितहै इससेपृथक्‌सूचनरचा ॥

सातभांतिकेपृच्छकहैं इससेसातभागहैं पहिलेचार सद्वादी १ असद्वादी २ सदसद्वादी ३ अनिर्वचनीयवादी ४ औरतीनअनिर्वचनीयमतकेसहितहैंजैसेसदनिर्वचनीयवादी ५ असदनिर्वचनीयवादी ६ सदसदनिर्वचनीयवादी ७ फिरइनपृच्छकोंकोक्रमसे वक्ता सात उत्तर देताहै जैसे सद्वादीनेजैनसेपूछाकितुमारेमतमेमुक्तिहै उसनेपृच्छककोउत्तरदियाकिकथंचित्‌है औरअसद्वादीश्रावकसेकहाकिकथञ्चित्‌नहींहै ऐसेहीअणुसेमहत्‌पर्यन्तसबवस्तु-स्वद्रव्यक्षेत्रकालभावादिसेहै औरपरद्रव्यादिसेनहींहै जैसेदेवादिस्वद्रव्यादिसेहैं औरपशुनरद्रव्यादिसेनहींहै ॥

एवंचात्माकात्स्न्यँ ३४

आर्हतदेहमितजीव मानते हैं उनके मत मे अकार्त्स्न्य दोष है जोदेहबराबरआत्माकापरिमाणहोतो अकृत्स्नअसर्वगतपरिच्छिन्नआत्माहोनेसेघटादिकेतुल्यअनित्यहो फिरदेहोंकापरिमाणध्रुवनहीं कभीनरजीवनरदेहकेबराबरहोके फिरकिसीकर्मके फलसेहाथीकादेहपायातोहाथीदेहका एकदेश सजीवदूसरानिर्जीवहो फिरमाखीकीदेहपायीतोकछुजीवउसकीदेहमेवोकुछबाहिरलंगूरकीसीपूंछकढिताफिरेगा फिरबालदेहकाजीवयुवदेहमे कहींहोगासबदेहसजीवनहोगीयहमतकहो जैसेदीपकेअवयवोंकाघड़ मेंसंकोचघरमेंविकाशहै तैसेजीवोंके अनन्तअवय

वोंकाअल्पदेहमेंसंकोचवड़ीमेंविकाशहै फिर जीवोंकेअनन्तअवयवसमानदेशकेप्रतिघातहैं वानहींसोकहो प्रतिघातमें अनन्तअवयवपरिच्छिन्नदेशमेंनघुसेंगे फिरअप्रतिघातमेंएकावयवदेशसिद्धहै सबअवयवमोटेनहींतोजीवभीअणुहो किन्तु देहमात्रसेघिरेजीवावयवोंकोआनन्त्यनहीं कल्पसक्तेहोक्युं अवयवनित्यनहींअल्पहोनेसेदीपांशकेतुल्यजीवावयव नित्य हैं यहमत हेहमान सेखण्डनकिया अवजीवकेकुछकूटस्थवोकुछआगमापायीहैं ॥

नचपर्यायादप्यविरोधोविकारादिभ्यः ३५

वृहत्वोतनुकायकी प्राप्तिमें जीवके अवयवआगमापायिसे मानेहैं विकारचादिदोषों से जीव के अवयव बड़ी देह में बढ़ते वोछोटीमेघटतेहैं यहअविरोधनहींकहिसक्तेहो सदाअवयवोंके आनेसेपूर्णवोजानेसेहीनजीवहो तो विकारीअवश्यहैफिरविकारीचर्मकेतुल्य अनित्यहोतिससे बन्धमोक्षका सिद्धान्तभी बाधहो जैसेकर्माष्टकसेलिपटाजीवसंसारसागरमें डूबाबन्धनके नाशसे तुंबाकेतुल्यऊर्ध्वगामीमुक्तहै किन्तुजीवकेकुछअवयवआयेवोकुछ गयेतोआगमवोअपगमधर्मोंसेदेहकेतुल्यअनात्मा।अवयवहैं फिरकौनसेकूटस्थवोकौनसे आने जानेवालेहैं इसकाज्ञानदुर्घटहै तोआत्मज्ञानकेअभावसेमुक्तिनहींहै फिरस्थिरअवयवआत्मानहीपृथक्करसक्तेहो जैसेदीपकेअवयवोंकाआकारतेजहै तैसेआत्माकेअवयवोंकेआकारकेहेतुकेअभावसे आनाजानायुक्तनहींहै किन्तुकहांजीवावयवकहांसे आते हैं कहांकोजातेहैं फिरकहां घुसिजातेहैं नभूतोंसेआतेनभूतोंमेघुसतेहैं जीवअभौतिकहोनेसेसवजीवकासाधारणवाप्रतिजीवकाअसाधारणजीवोंकेअवयवकाआधारनहींवतासक्तेहोप्रमाणकेअभावसेअवयवोंकेआनेजाने

सेअवयवोंकापरिमाणनियतनहींहै तिससे आत्माभीनिश्चितस्व रूपनहींहै अवयवोंसेजुड़ाअवयवी जीवयनित्यहो अवयवसमूह आत्माअसत्हो जोआत्मासबअवयवोंमेंघुसाहै तो कुछअवयवके अपायमेंशीघ्रदेहअचेतन हो जो गोत्व के तुल्य प्रत्येक अवयव मे आत्मासमाप्तहै तोएकहीदेहमेंनानाआत्माहोइससेआत्मानदेह केबराबरवोनसावयवहै अथवादेहमान आत्माकोघटनेबढ़नेसे देहांतरकेज्ञानमें असर्वगतसे अनित्यकहाफिरपर्यायद्वारा परि माणकेअनिश्चयमें स्रोत:सन्ताननित्यता न्यायसेआत्मानित्यहो जैसेरक्तपटोंकाविज्ञानअनवस्थितहै तोभी विज्ञानसन्ताननित्य है तैसेविसिर्वोंकोपर्यायअर्थात्सन्तानसे आत्मनित्यताकाअवि रोधहै (न च) किससेविकारादिसेजोअवस्तुसन्तानकोआत्माकहो तोशून्यनैरात्म्यवादहोगा जोसन्तानको वस्तुकहोवासन्तानीको भिन्नकहोतोकूटस्थात्मवादहोगा जो सन्तानीअभिन्नकहो तोज न्मादिविकारनाशमुक्तिहानिदूनदोषोंसेसन्तानपक्षअशुभहै यह सूत्रार्थहै ॥

अंत्यावस्थितेश्चोभयनित्यत्वादविशेषः ३६

जैसेछोटीबड़ीदेहकोजीवपकड़ताहैउसीदेहकेबराबरहोताहै इसनियमकाखण्डनसुनोजैसेअन्त्यअर्थात्मोक्षावस्थाकेजीवका परिमाणजैनकोनित्यहीइष्टहै तैसे जीवकेआद्यमध्यपरिमाणनि त्यहैं परिमाणकेनाशमेंआत्माकाभीनाशहोनेसे अन्त्यपरिमाण भीनित्यनहोगा परिमाणतीनकीसमताकाफलएकदेहकी परि णामताहोनआनेजानेसेदेहांतरकोप्राप्तिअन्त्यदेह के समान पूर्व देहहो विषमदेहकोप्राप्तिमें आत्मादेहसमानहै तोतीनपरिमा णोंकासमानअनुमानसे विरोधहो अथवाजीवकाअन्त्यपरिमाण

ध्रुवहै तोपूर्वकेआदिमध्यभीध्रुवहैं फिरध्रुवपरिमाणजीवहोफिर साम्यसेतीनोकालमेंअणुवोमहत्जीवमानोनदेहबराबर तिससे भ्रांतप्रमोदार्थआर्हतमतहै मध्यस्थवाक्यअनेकांतकांतसर्वज्ञजि-नकोइष्टहै तोजननीभगिनीस्नुषादिसेकभीदारादिकावर्तावहो कभीजनन्यादिकहो मायादिअनिर्वक्तव्यतोअवैदिकपाशुपता-दिमतोंमैभीहैं इससेकहीं२दोनोंसमानहैं ॥

———*———

(तटस्थेश्वराधिकरण ७ ॥)

पत्युरसामंजस्यात् ३७

लुंचितकेशोंकामतखण्डाजटिलमतखण्डताहै केवलईश-कारणअधिष्ठाताहै इसकाखण्डनहै नसामान्यसे ईश्वरकाकैसे जाना प्रकृतिवोअधिष्ठाताइनदोस्वभाववालाईश व्यासनेमाना है तिससेकेवलनिमित्तेश्वरकानिषेधहै फिरजोयहांईश्वरकार णवादमात्रहीकानिषेधकरोतोआगेपीछेकेविरोधसेझूठाहोसूत्र कार अद्वैतब्रह्मजगकोप्रकृतिकहाथा यहमुनिशैवादिबोलउठे किकर्ताहीईश्वरहैनप्रकृतिनिमित्तकारणअधिष्ठाता केवलइस पक्षकाखण्डनहै यहकल्पनावेदबाह्य अनेकविधहै सेश्वरसांख्य माहेश्वरचारहैं शैव१पाशुपत२कारुणिकसिद्धांती३कापिल४उ क्तसबमहेश्वरकेकहेआगमपथमेचलतेहैं तिससेमाहेश्वरहैं प्र-धानपुरुषोंकाअधिष्ठाताकेवलनिमित्तकारणईश्वरहै फिरप्रधा नवोपुरुषवोईश्वरजेतीनमिथोविलक्षणहैं यहसांख्यवोयोगीमा नतेहैं माहेश्वरमतमेंकार्य१ कारण२ योग३ विधि४ दुःखान्त५ जेपांचपदार्थपशुपतिईश्वरनेपशुकीफांसीकुटानेकेअर्थकहेहैं प

शुपतिईश्वरनिमित्तकारणहै यहसिखातेहैं चेलोंको कार्य मह
दादि कारण प्रधान ईश्वर योगसमाधि विधितीनकालमेंन-
हाना दुखान्तमोक्ष पशु जीव पाश बन्ध बन्धकानाशमुक्ति पा-
शुपतकेआगमकोप्रमाण्यसेपशुपतिनिमित्तकहाअबआनुमानि
केश्वरमतसुनो विमतप्रपञ्चसकर्तृकहैकार्यसेघटकेतुल्यइससेवै
शेषिकादिअपनी२बुद्धिकेअनुकूल ईश्वरकोकर्त्तानिमित्तकारण
साधतेहैं जैसे कर्मफलसपरिकराभिज्ञदातासेहैं कालांतरभा-
विफलसेसेवाकेफलतुल्ययह गौतमदिगम्बरसाधतेहैं ज्ञानैश्व-
र्योत्कर्षकहींविश्रांतहै सातिशयसेपरिमाणकेतुल्ययहसांख्यसौ
गतपातञ्जलसाधतेहैं इससेउत्तरहै पत्यु: ईश्वरकोप्रधानवोपु-
रुषोंकाअधिष्ठातासेजगकाकारणत्वयुक्तनहींकिससेअसामञ्जस्य
सेवुइयहकिहीनमध्यश्रेष्ठरूपसेप्राणिभेदोंकोरचनेमेंईश्वरकोरा
गद्वेषादिदोषोंसे मेरेवोतुम्हारेवोउनकेतुल्यअनीश्वरताहो आ
गमादि से निर्दोष ईश्वर सिद्धि नहीं है अपने२ आगम से ईश्व-
र का निर्णय नहीं है निर्मूलता सेआगम प्रमाण नहीं है सर्वज्ञ
मूल मे मान नहीं है सर्वज्ञही मे मान नहीं है सर्वज्ञमेआगमभी
माननहीं जबआगममानकेनिश्चयसेमूलनिश्चयहै फिरमूलनि
श्चयसेआगमनिश्चयहै यहअन्योन्याश्रयदोषहै पुरुषवचनस्वत:-
माननहींमिथोविरोधसेतत्वकानिश्चयनहीं अनुमानसेभीईश्व-
रसर्वज्ञकर्त्ताहीहै यहनिर्णयनहीं अनुमानतोदेखेकेअनुसारहै
तोदेखेसेविरुद्धार्थकोनसाधसकेगा लोकमे जैसे रागद्वेषादिवा
लेकर्त्तादेखतेहैं तैसे जगकर्त्तारागद्वेषादिवालासिद्धहो यदिलो
कमेंविचित्रघरादिकेअनेककर्त्तादेखनेसेजगकर्त्ता मेलाघवसेए-
कत्वनित्यज्ञाननिर्दोषकल्पोतोद्रव्यकाउपादानभीकल्पोकर्त्ता-
हीकोउपादानमानेमेलाघवहै फिरस्वतन्त्रप्रधानपरमाणुआदि

कोउपादानकल्पनामेगौरवहै वोअदृष्टहै यदिकर्त्ताकोद्रव्योपा-
दानत्वकोअसिद्धिहै तोएकत्वनित्यत्वसर्वज्ञत्वादिभी न सिद्ध हो
मैमैतोअपौरुषेयश्रुतिकेपेटसेजन्यलौकिककर्त्ता से विपरीतअहै
तब्रह्मकर्त्तावोउपादानसर्वज्ञादिदिखाया श्रुतिकेबाधसेरागादि
उसमेंनहींकहसक्तेहैं यहीआनुमानिकेश्वरसेवैषम्यहै यदिकर्त्ता
उपादाननहींदेखतेहैं तिससेकर्त्ताकोउपादानत्वनहींकल्पतेहैं
तर्हिनिर्दोषत्वादिभीनहींदेखतेहो सोभीमतकल्पो जोविषम-
कारीहै सोदोषवान्है इसव्याप्तिकेदेखनेसेजगकाकर्त्तादोषीहो
फिरकर्त्ताकेसाधकअनुमानकाबाधनहींहै कार्यलिङ्गकर्त्तामात्र
कासाधकहै फिरनिर्दोषादिकेसाधनमेउदासीनहै यदिविषम
सर्गप्राणिकर्माधीनहै तिससेईशमेवैषम्यादिदोषनहींहै जड़क-
र्मकोप्रेरकताकायोगनहींहै ईशप्रेरितकर्मईशकाप्रेरकयहभीमत
कहो कर्मप्रवर्त्यईशप्रवर्तयिताजोमानोतो इतरेतराश्रय दोष है
भूतोंकेकर्मसेप्रेरितईशवर्तमानकर्मवाकर्मफलके अर्थप्रेरताहै य
हीअनादिप्रेर्यप्रेरकभावहै सोनहीं वर्त्तमानकालकेतुल्यभूतका
लमेंभीइतरेतराश्रयदोषसमवोअन्धपरम्पराहै भूतकर्मजड़हैति
ससेईशकाप्रेरकनहींकर्मभीईशसेप्रेरितईशकोप्रेरताहैसोनहींइ
तरेतरहैजैसेभूतकर्मोंनेप्रेराईशफिरईशप्रेराकर्मईशकोवर्तमान
कर्मफलदेनेकेअर्थप्रेरताहैयहमतकहोमानहोनामूलक्षयवहाअन
वस्थासेइससेकर्मकेअनधीनईशविषमस्रष्टाहैयहअसामंजस्यदुर्वा
रहै फलदानमेईशकर्मनिमित्तमात्रहै नप्रेरकइससेउक्तदोषनहीं
सोनविषमकर्मकरवानेसेईशदोषीहै श्रुतिमूलपूर्वकर्माधीनमेरे
कल्पनमेवैषम्यहै किञ्च प्रवर्तनालक्षणदोषहैं यहन्यायमतहैको
ईअदोषप्रयुक्तस्वार्थवापरार्थमेप्रवर्तमानदेखते नहींस्वार्थमेप्रयुक्त
सवजनपरार्थमेप्रवर्ततहै ईश्वरस्वार्थमेरागादिमान्है प्रवर्तक-

तासेसम्मतवत् ईशपुरुषविशेषहै यहयोगसिद्धांतअसामञ्जस्यहै क्यं प्रवर्तकवोउदासानईश्वरवोपुरुषकहाहै इसविरुद्धतासे ॥

पशुपाशविमोक्षार्थमथपाशुपतम्मतं व्याख्यास्यामीत्युपक्रम्यम हादेवेननिर्मितं १ पञ्चाध्यायात्मकन्तद्विक्रमाद्द्वैतशास्त्रगम् । कार्याध्याय:प्रथमतोद्वितीय:कारणाभिध: २ योगाध्यायस्तृतीयोत्रविध्यध्यायश्चतुर्थक: दु:खान्ताख्य:पञ्चम:स्यात्कार्योजीव:सवैपशु: ३ पशूनांबन्धहर्त्तायःकारणंसमहेश्वर: । जीवानामीश्वरेचित्तधारणंयोगउच्यते ४ त्रिस्नानंचत्रिपुण्ड्रञ्चविधिभस्मादिधारणं अध्यायार्था:क्रमादेवंदु:खांतोमोक्षउच्यते ५ सर्वंशिवपरश्चाचज्ञेयंलिङ्गादिधारणं इत्यादि ॥

जीवकोफांसीछुटानेकेअर्थपाशुपतमतमहादेवनेरचाथापा चअध्यायमें उसमेंअद्वैतकावर्णनबहुतहै पहिलाकार्याध्याय दूसराकारण अध्याय है२ तीसरा योगाध्याय३ चौथा विध्यध्याय४ दु:खान्तपंचमाध्यायहै५ कार्यजीवपशुजेपर्यायशब्दहैं जीवोंकाबन्धनछुटानेवालामहेश्वरहै कारणमहेशादिशब्दपर्यायहैं जीवमहेश्वरमेंजोचित्तधरतेहैं सोयोगहैतीनकालमेंनहाना त्रिपुण्ड्रमाथेपरतिलकरचनाभस्मादिसेदु:खांतमुक्तिहै सबशिवके लिङ्गदेहमेधरतेहैं यहगृहीपाशुपतोंकाधर्महै संन्यासीतोशिखामुड़ातेभस्मभालमेमलते कानगलेमेरुद्राक्षपहिरते यज्ञोपवीतउतारतेकमंडलुलेतेकषायवस्त्रपहिरते शिव२रटतेमठोंमेंबसतेहैं दण्डकोनारायणादिनामसेसेवतेतप्तलिङ्गसेबाहैंजरातेहैं यामुखमेलिङ्गधरतेहैंइसमतकोप्रामाण्यकेसाधकबहुतउपनिषद नयेरचेगयेहैं अथर्वादिवेदोंमेंप्रगटहैं इससेउपनिषदों को नहीं लिखताहूं अववैदिकऔरपाशुपतकेसन्यासियोंकेलिङ्गमिलादिये हैं पद्धतिकारोंनेइससेभेदस्पष्टनहींहैमूढ़को ॥

सम्बन्धानुपपत्तेश्च ३८

राजादिवत् ईश्वरप्रधानवोपुरुष कासम्बन्धकेविनाप्रेरकन होगाफिरसंयोगकाअसम्भवहैप्रधानवोपुरुषवोईशसर्वगतवो निरवयवहोनेसेसमवायभीनहींआश्रयाश्रयिकेअनिरूपणसे कायकेवलसेप्रेरणायोगत्वनामकोईअन्यसम्बन्धभीनहींकल्पासक्तेहो क्युं ईशसेप्रेरितप्रधानउसकाकार्यजगसिद्धहोतोसम्बन्धकीकल्पना-होसोउनकाकार्यकारणभावअसिद्धहैमायाब्रह्मकाअनिर्वाच्यतादात्म्यसम्बन्धब्रह्मवादमेंयुक्तहैदेवात्मशक्तिमितिश्रुतेः किञ्चब्रह्मवादीवेदकेवलसेकारणादिस्वरूपवताताहै तिससेउसकोलोकमेंदृष्टसवमृत्कुलालसम्बन्धअवश्यअनुसर्तव्यनहींहैं क्युं वेदअपूर्वार्थकोकहताहै आनुमानिकतोदृष्टान्तवलसे कारणादिस्वरूपदिखाताहै तिससेउसकोलोकदृष्टसवमाननाचाहिये यह विशेष है यदिपरकोभीसर्वज्ञकेकहैतन्लोसेतन्त्रवलतुल्यहै तर्हिइतरेतराश्रयदोषसेअनुमानसेसर्वज्ञसिद्धनहींहै दृष्टान्तकेअभावसे स्वस्वामिभावसम्बन्धनहींहै स्वशब्दसेयदि कार्यलोतदा कार्य नहींथा फिरवुहसम्बन्धकहांयदिकार्यकेपीछेसम्बन्धकहो तदाकार्यअसम्बन्धहुआहै जिसकेमननहींउसकोज्ञानकासम्भवनहींज्ञानमनसेजन्यहै इसव्याप्तिकेविरोधसेनित्यज्ञानकीकल्पनाकाअनवकाशहै परमाणुयोंकोभीनिरवयवेश्वरसेसंयोगादि के अभाव से प्रेर्यत्वकाअयोगहै जोईश्वरप्रेरकहै तोसदोषहै ऐसेअन्यवेदवाह्यईश्वरकल्पनामेंयथासम्भवअसामञ्जस्यकोजोड़ो तिससेअयुक्त सांख्ययोगवादियोंकोईश्वरकल्पनाहै ॥

अधिष्ठानानुपपत्तेश्च ३९

तार्किककल्पाईश्वरकुम्भकारइवमृदादिको अधिष्ठानकार

केप्रवर्तेगा सोयुक्तनहींहै अप्रत्यक्षरूपादिहीनप्रधानवोपरमाणु चेतनकेअधिष्ठेयसम्भवनहींहैं मृदादिवैलक्षण्यसे इससेईश्वरअ खादिकाप्रेरकनहींहै ॥

करणवच्चेन्नभोगादिभ्यः ४०

करणानिसन्त्यस्मिन्नितिकरणवत्कलेवरम् ॥

जैसे करणग्राम नेत्रादिअप्रत्यक्षवोरूपादिहीनोंकापुरुषअ धिष्ठाताहै तैसेईश्वरभीप्रधानाखादिकाअधिष्ठाताहोगा सो भीयुक्तनहीं पुरुषकरणग्रामकाअधिष्ठाताहै भोगादिकेदेखनेसे ईश्वरकोभोगादि नहीं देखते हैं प्रधानाखादि मे अतीन्द्रियत्व रूपअप्रत्यक्षत्वहै यहअभिप्रायहै फिरकरणग्रामसाम्यमेंसंसारी केवराबरईशकोभीभोगादिहो फिरजीवमेंकरणकेकरेभोगादिदे खतेहैं ईश्वरसेप्रधानादिकेकरेभोगादिनहींदेखतेहैं यहअक्षरा र्थहै जोप्रधानाखादिप्रेर्यहैं तोप्रेरककेभोगहेतुभीहोंगेअतीन्द्रि यप्रेर्यकोभोगहेतुकानियमहै लोकमेसाधिष्ठानसदेहराजादेश- काईशदेखतेहैंनिरधिष्ठाननहींदेखतेहैंइसीदृष्टांतकेवशसेअदृष्ट- ईशकोकल्पनेकोइच्छाजोकरतेहो तोईशकाभीकुछदेहइन्द्रियों कास्थानकहोसोनहींकहसक्तेहो क्युं देहसृष्टिकेपीछेहुईहैसृष्टि- केपूर्वदेहयुक्तनहींहै ॥

सृष्टिकेपूर्वनित्यदेहकाअसम्भवहै क्यों देहभौतिकके नियमसेनि रधिष्ठानईश्वरप्रवर्तकनहींहोताहै ऐसाहीलोकमेंदेखतेहैं (कार णवत्) जीवहीकोदेहभौतिकहै ईश्वरकोदेहसेच्छासेबनीसदार हतोहैयहमतकहोइच्छामयदेहकीकल्पनाझूठीहैप्रमाणकेअभा वसेभौतिकदेहकेनियमकेसाथविरोधसे ॥

अन्तवत्त्वमसर्वज्ञतावा४१

सर्ववादिसंमतईश्वरकीकल्पनामेंआक्षेपहै ईश्वरसर्वज्ञसब
नेमानाहै औरअनन्तपुरुषवोपरमाणुमिथोभिन्नमानेहैं इनमेंसे
सर्वज्ञईशप्रधानपुरुषऔर परमाणुऔरईशअपनी इयत्ताकोजा
नताहैवानहीं दोनोपक्षोंमेंदोषहै कैसे जो इयत्ताजानताहै तो
प्रधानपुरुषईश्वरअणुआदिसबअन्तवालेअवश्यहैं परिछिन्नतासे
घटकेतुल्यअनित्यहैं जोलोकमेंवस्तुघटादिइयत्तासे परिछिन्नहै
सोअन्तवत्देखोहै तैसे प्रधानपुरुषईश जितीनोइयत्तापरिछिन्न
तासेअन्तवत्हो जोसंख्यावापरिमाणप्रधानपुरुषईश्वरतीनोका
परिछिन्नहै तोस्वरूपपरिमाणभीतीनोका ईश्वरसेअपरिछिन्नहो
प्रधानादि निश्चितपरिमाणहैं वस्तुसेभिन्नतासेघटकेतुल्य फिर
प्रधानपुरुषईशजितेमजानेपरभीईश्वरने जीवोंकोभीगिन्तीकर
लीयानकरलीतोसर्वज्ञनहींगिनेजीवोंमेंसे जेसंसारसेमुक्तहैं उ-
नकासंसारअन्तवान्फिरउनकासंसारित्वअन्तवत्है ऐसेहीक्रम
२सेमुक्तोंमेंसंसारवासंसारीदोनोकोअन्तवत्वहो कुछजीवोंकासं
घवोउनकेबन्धकानाशहैतोमाषराशिके तुल्यसर्वको मुक्तिसेअब
जगशून्यहोनित्यकेशेषनरहनेसे ईशभीशेषनहींचेतनभीभिन्नता
सेअन्तवत्है घटवत् प्रधानसविकारपुरुषार्थंअधिष्ठेयईशकासं
सारीसेअभिमतहैफिरप्रधाननहींतोईशकिसकाअधिष्ठाताहोवा
किसविषयमेंसर्वज्ञतावोईशताहोप्रधानपुरुषईशकोइसअन्तवत्ता
मेंसादिमत्ताहोफिरआद्यंतवत्तामेशून्यवादहोअथवाप्रधानपुरुष
अणुईशकीनइयत्ताहैननिश्चयहै इससेशून्यनहोगायहमतकहोप्र
धानादिसंख्यापरिमाणवालेहैं द्रव्यतासेमाषादिवत् इसअनुमा
नसेउनकोइयत्ताहै फिरउनकीसंख्यावोपरिमाणकेअज्ञानमेईश
कोअसर्वज्ञताहोइयत्तानेअन्तवत्ताहोअथवाईश्वरअपनीइयत्तासं
ख्यापरिमाणादिकोजानतायानहींपहिलेमेसान्तहै दूसरेमे अस

वंद्य है नहीं इयत्ता ईश का स्वरूप मात्र है गुण और द्रव्य की हानि से इयत्ता संख्या या परिमाणादि हैं तिससे अयुक्त है ईश्वर कारणवाद ॥

———*———

पांचरात्राधिकरण ८

उत्पत्त्यसंभवात् ४२

पञ्चपदार्थवाद माहेश्वर मत खंड्या चतुर्व्यूहवाद का खण्डन करता है पूर्व के मत में ईश अप्रकृति अधिष्ठाता केवल निमित्त कारण था चतुर्व्यूहवाद में प्रकृति अधिष्ठाता उभयात्मक कारण ईश है इसका खण्डन सुनो अधिष्ठाता वो प्रकृति ईश है इन अंशों का खण्डन नहीं परन्तु जो बेद विरुद्ध है उसस्मार्त मत का खण्डन है भगवान् एक वासुदेव निरञ्जन ज्ञानरूप परमार्थ तत्त्व है सो हि अपनी चार मूर्ति से विभक्त रहिता है वासुदेवव्यूह १ संकर्षणव्यूह २ प्रद्युम्नव्यूह ३ अनिरुद्धव्यूह ४ व्यूह अर्थात् मूर्ति वासुदेव परमात्मा संकर्षण जीव प्रद्युम्न मन अनिरुद्ध अहंकार है संकर्षणादि तीनकी पराप्रकृति वासुदेव है संकर्षणादि तीन उसके कार्य हैं उक्त व्यूह वाले सबकी प्रकृति ईश्वर को वचन मन देह के समाधान से देवता के घर में जाना पूजाकी सामग्री लेके पूजा करना अष्टाक्षरादि मन्त्र जपना यही स्वाध्याय है न वेदादिका पढ़ना ध्यान ही योग है ऐसे सौ बर्ष १०० पूजे तो क्षीण अभगक्के बन्त ही को प्राप्त है फिर यो सौ नारायण: परोव्यक्तात्प्रसिद्ध: परमात्मा सर्वात्मा स आत्मना आत्मानमनेकधा व्यूह्य व्यवस्थित: इसका खण्डन नहीं है स एकधा भवति त्रिधा भवति इस श्रुति में भी परमात्मा का हि अनेकरूप होना कहा है जो भगवान् का ज्ञान ध्यान नित्य सुचित्त से करमै को कहा उसका भी खण्डन नहीं श्रुति में ईश्वर ध्यान कहा है समाहित: श्रद्धावित्तो भूत्वेति तं यथा यथोपास

तइत्यादि फिरजोकहाकिवासुदेवसेसंकर्षणसंकर्षणसेप्रद्युम्न प्रद्युम्नसेअनिरुद्धजन्माहै यहपांचरात्रागममतश्रुतिसेविरुद्धअप्रमाणहैअज आत्मेतिश्रुतिसेवासुदेवप्रभुसेसंकर्षणनामजीवके जन्मकाअसंभवहै अनित्यतादिदोषोंसेउनसेअनित्यजीवकोभगवत्प्राप्तिमुक्तिभीनहोकारणमेंकार्यकीप्राप्तिकार्यकानाशहैतिससेझूठीहै जीवकेजन्मकीकल्पनापांचरात्रोंकोजीवकाजन्म बारन कर-जीवसेमनकाजन्मवारणकरताहै ॥

नकर्त्तुःकरणं ४३

लोकमेकर्त्ताचैत्रादिसेकरणकुठारादिजन्मेंनहींदेखतेहैं फिरभागवतकर्त्ताजीव सङ्कर्षणनामसेकरणमनप्रद्युम्ननामजन्माकह-तेहैंफिरमनसेअनिरुद्धनामअहंकारजन्माकहतेहैं हमतोयहबा-तबिनादेखेनमानेगे नइसबातकीबतानेवाली श्रुति मिलती हैसिद्धकरणोंसेकार्यकर्त्ताकर्त्ताप्रसिद्धहै लोकमेलेखकलेखनीकोबनाकेतिससेवर्णोंकोलिखतादेखाहै यहसत्यहै लेखककेहाथआ-दिकरणांतरविद्यमानहोनेसेलेखनीकाकर्त्तृत्वयुक्तहै जीवकोकरणांतरकेअभावसेमनकोकर्त्तृतायुक्तनहींहै जोकरणकेविना-होकर्त्तृताहै तोमनव्यर्थहै ॥

विज्ञानादिभावेवातदप्रतिषेधः ४४

सङ्कर्षणादिजीवादिरूपइष्टनहींकिन्तुईश्वरहैं क्युं ज्ञानऐश्वर्यंशक्तिबलवीर्यतेजइनईश्वरकेधर्मोंसेयुक्तइष्टहैं पांचरात्रोक्तिःवासुदेवाएवैतेसर्वेनिर्दोषानिरधिष्ठानानिरवद्याश्चेतिईश्वरहोनेसेजन्मकाअभावगुणहैनदोषहै चारईश्वरोंमेंविज्ञानशक्त्यादिकेहोनेसेभी(तदप्र)उत्पत्तिकेअसम्भवकाअप्रतिषेधप्राप्तहै इसीसेजन्मकाअसम्भवदोषहै रीतिस्वतन्त्रभिन्नवासुदेवादि चारईश्वरतु

ल्यधर्मवालेहैं औरएककेविकारअभिन्ननहींहैं फिरअनेकईश्वरों कीकल्पनाव्यर्थहै एकहीईश्वरसेईश्वरके कार्यकी सिद्धिहोनेसे फिरतुमारासिद्धान्तगया जोमानाथाकि भगवानेवैको वासुदेवः परमार्थतत्वमिति अथवातुमारीयह अभिप्रायहोकि एकहीभग वान्केजेचारव्यूहतुल्यधर्मीहैं तोभीजन्मकाअसम्भवदोषबनाही रहा वासुदेवसेसंकर्षणका संकर्षणसेप्रद्युम्नकाप्रद्युम्नसेअनिरुद्ध काजन्मसंभवनहींहै अतिशयकेअभावसे कार्यकारणका कछुअ तिशयहोनाहीचाहिये जैसेमट्टीघड़ेकाजो अतिशयनहींतोकार्य कारणक्युंकल्पतेहोपञ्चरात्रके सिद्धांतियोंने वासुदेवादिमेंसेएक २मेंवास्तवमेंज्ञान ऐश्वर्यादि के तारतम्यका कुछभेदनहींमानाहै परन्तुनिर्विशेषसबव्यूहवासुदेवहीमानेहैं फिर येचारभगवतके व्यूहनियमसेचारसंख्यामेंनहींरहसक्तेहैं ब्रह्मादिसेस्तम्बलोसब जगभगवतकाहीव्यूहहैफिरमूर्तिवोयहखण्डनकीक्याआवश्य कताहहै ॥

विप्रतिषेधाच्च ४५

पञ्चरात्रमेविरुद्धभाषणहै एकहीकोगुण और गुणी माने से ज्ञानैश्वर्यशक्तिबलवीर्यतेजांसिगुणाआत्मान एवैतेभगवन्तोवा सुदेवाइत्यादिदर्शनसेतन्त्रकेएकवर्णकापाठकचारवेदकेपाठकसे श्रेष्ठहै चतुर्षुवेदेषुपरंश्रेयोअलब्ध्वाशांडिल्यइदंशास्त्रमधिगतवा नित्यादिवेदकीनिन्दादेखनेसेवेदविरुद्धहै तिससेजीवजन्मादियु क्तनहींहैं ॥

इतिश्रीयुक्ताराचन्द्रवर्मणाकृते ब्रह्मसूत्रभाषाभाष्ये द्वितीया ध्यायस्यद्वितीयःपादःपूर्णः ॥

———*———

तीसराभूतपाद ३

वियदधिकरण १

नवियदश्रुतेः १

नव्योमानाम्नायात् ॥

जैसेविप्रतिषेधसेदूसरेपादमेंपरपक्षोंकी उपेक्षाकी तैसेहीस्व पक्षभीसृष्टिआदिके विप्रतिषेधसे उपेक्षणीयहै इससेसृष्टिश्रुत्यर्थ कीनिर्मलताकेअर्थतीसरेपादकाआरंभहै तैत्तिरीयकव्योमवायु काजन्मकहतेहैं औरनछन्दोग औरवाजीजीवऔरप्राणोंकाज- न्मकहतेहैं और आथर्वणिकप्राणकाजन्मकहतेहैं अन्यनहींकह तेहैंकहींपहिलेव्योमकाजन्मकहाकहींपहिलेतेजकायहक्रमविरो धहै कहींकुछक्रमहीनहींकहाकहींसातप्राणऔरकहींआठप्राण कहेहैं यहसंख्याविरोधहैमध्यस्थप्रश्नव्योमकाजन्महैवानहींएकदे शीकाउत्तर व्योमनहींजन्मताहै सृष्टिप्रकरणमेंउसकाजन्मनसुन्ने से छांदोग्यमेंपांचमहाभूतोंकेबीचतेजजलपृथिवीइनतीनकाज- न्मसुनाहै फिरहमकोतोअतीन्द्रियार्थकेज्ञानमेंवेदहीप्रमाणहै व्योमकाजन्मबतानेवालीश्रुतिमुख्यार्थपरनहींहैयहगूढ़ाभिसंधि है और व्योमकाजन्मविधायकश्रुतिनहींहै तिससेव्योमअजहै ॥ सर्वएतआत्मानोव्युच्चरंतीति एतस्माज्जायतेप्राणः सइमाल्लो कानसृजतेत्यक्रमः सदेवसोम्येदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीयमिति सच्छब्दवाच्यंब्रह्मप्रकृत्यतदैक्षततत्तेजोसृजतेति ॥

अस्तितु २

तुशब्दव्योमकीअनुत्पत्तिवारणार्थहै छांदोग्यमेंव्योमकाजन्म नहींपरतैत्तिरीयमेंहै जैसे सत्यंज्ञानमनन्तंब्रह्मेति प्रकृत्यतस्मा

द्वाएतस्मादात्मनः आकाशःसंभूतइति तिससेदोश्रुतिविप्रतिषि द्धहैं इनकोएकवाक्यतायुक्तहै परअवगमनहीहोसक्ताहै क्युं ए कस्रष्टाकादोस्रष्टव्यकेसाथसंबन्धअयोग्यहै जैसेतत्तेजोसृजततदा काशमसृजतेति लोकमें एककर्त्ताकादोकर्तव्यकेसाथसंबन्धदेख तेहैं जैसेमैंचटालिरांधिकेभातरांधताहै तैसेवहव्योमकोरचिके तेजकोरचताथा उक्तक्रमयोग्यनहींहैक्युंकिदोनोंकोप्राथम्यकेभङ्ग से एकचनासेदोदलके तुल्यभीवस्तुदोकाप्राथम्यसंभवनहींहैति ससेएकअपादानकाओरसंभवनकाव्योमतेजकेसाथयुगपत्संब- न्धअयोग्यहै किञ्चछान्दोग्यमें तेजकाउपादानसत्आत्मासुनाहै औरतैत्तिरीयमेंतेजकाउपादानवायुपढ़ाहै जैसे वायोरग्निरि- तिपृथगाम्नानात् तिस्सेएकवाक्यताकासंभवनहींहैव्योमाजवा दीस्वमतसेप्रामाण्यकहताहै ॥

गौणयसंभवात् ३

व्योमकाजन्मनहींहै क्युं जन्मश्रुतिमेंनसुननेसेऔरजोव्योम काजन्मवादिनीश्रुतिहैसोगौणार्थपरहै क्युंअसंभवात्श्रीमत्कण भुग्मतानुसारियोंकेजोतेपरव्योमकाजन्मसंभवनहींकरासक्तेहो वेसमवायीअसमवायीनिमित्त इनतीनकारणोंसेसबकाजन्ममा नतेहैंफिरकारणसामग्रीकेअसंभवसेव्योमकाजन्मवारणकरते हैं द्रव्यकेएकजातीयबहुतद्रव्यसमवायिकारणहैं फिरएक जातीय बहुतद्रव्यव्योमकाआरंभकनहींहैव्योमनोत्पद्यतेसामग्रीशून्यत्वा दात्मवत् प्रागभावशून्यत्वाच्चात्मवद्व्योमनजन्यते फिरउसकेअस मवायिकारणादिहैं होनेसेउनकेसंयोगमेंव्योमजन्मेगा संयोगद्र व्यकाहैजोसमवायिवोअसमवायिनहींतोउनकोअनुग्रहसेप्रवृत्त- निमित्तकारणकाभीव्योमजन्ममेंसंभवनहींहैफिरअविद्यावोब्रह्म

व्योमजन्मकेकारणनहींहैं विजातीयतासेऔरअसंयुक्ततासेआर
म्भकनहींतेजआदिजन्मकेप्रमथऔरउत्तरकालमेंविशेषकासंभव
है किजन्मसेपूर्व प्रकाश तमोध्वंसदाहपाकादि कार्य न था पीछे
सेहुआहै फिरव्योमकापूर्वापरकालमेंविशेषसंभवकरानेकोशक्य
नहींहै क्याव्योमजन्मकेपूर्वअनवकाशवोअसुषिरवोअछिद्रथायह
निश्चयकरनेकोशक्यहैजोस्थूलाश्रयहैवहअवकाशजोसूक्ष्माश्रयहै
वहछिद्रहैजोअखाश्रयहैवहसुषिरहैपृथिव्यादिकेवैधर्म्यसेविभुत्वा
दिसेअस्पर्शद्रव्यत्वादिसेव्योमअजसिद्धहै उक्ततर्ककेवलसेश्रुतिगौ
णीहैजैसेव्योमकोकरोव्योमजातायहवचनगौणहैऔरजैसेघटव्यो
मकरकव्योमसद्मव्योमयहएकहीव्योमकीभेदोक्तिगौणीहैऔरवे
दमेभीवनकेपशुवोंकाआलम्भव्योमोंमेंविधानहै जैसे आरण्या-
नाकाशेष्वालभेरन्निति भेदोक्तिगौणी ऐसेहीव्योमजन्मवादिनी
श्रुतिभीगौणीदेखो व्योमकेआगेङित्वादिविभक्तिभीसाधुत्वसूचि
काहैं नभेदार्थिकाहैं ॥

शब्दाच्च ४

श्रुतिभीव्योमकोअजकहतीहै यदाह वायुश्चांतरिक्षंचैतदमृ
तमिति अर्थ अमृतकाजन्मयुक्तनहींहै औरव्योमके साथब्रह्मको
सर्वगतत्वऔरनित्यत्वधर्मोंसे उपमिमानवेदव्योमके भीवेदोधर्म
सूचनकराताहै जैसे आकाशवत्सर्वगतश्चनित्यइति व्योमउपमा
नब्रह्मउपमेय वेद उपमिमानहै किञ्च सयथाऽनंतोयमाकाशएव
मनन्तआत्माविदितव्यइति आकाशशरीरं ब्रह्मआकाशआत्मेति
च जन्यव्योमवोब्रह्मकाविशेषसंभवनहींहै जैसे उत्पलकानीलसे
तिससेनित्यव्योमसेहीसाधारणब्रह्मजानाहै ॥

स्याच्चैकस्यब्रह्मशब्दवत् ५

सङ्काकाउत्तरसूत्र ॥

फिरकैसेएकहीसम्भूतशब्द तेजआदिमेंगयातोमुख्यऔरव्यो
ममेंगयातोगौणहै इसकाउत्तरसंस्कृतमाश्रित्यस्याच्चैकस्यापिसंभू
तशब्दस्यविषयविशेषवशाद्गौणोमुख्यश्चप्रयोगोब्रह्मशब्दवत् यथैक-
स्यापिब्रह्मशब्दस्यतपसाब्रह्मविजिज्ञासस्वतपोब्रह्मेत्यस्मिन्नधिका
रेऽन्नादिषुगौणःप्रयोगःआनन्देचमुख्यःयथाचतपसिब्रह्म विज्ञान
साधनेब्रह्मशब्दोभक्त्याप्रयुज्यतेअञ्जसातुविज्ञेयेब्रह्मणितद्वदिति
तस्माद्वाएतस्मादाकाशःसंभूत इसप्रकरणमें अन्नंब्रह्म आनन्दो
ब्रह्मेति फिरजोव्योमअजन्यहै तोएकअद्वितीयब्रह्मकीप्रतिज्ञा
कैसेसमर्थहोगी दूसरेव्योमसेब्रह्मसद्वितीयप्राप्तहै फिरकैसेएकब्र
ह्मकेजानेसेसबजानाजावेगा उत्तर जैसे कोईकुलालकेघरमेंए
कदिनमृत्दण्ड चक्रादिदेखिदूसरेदिननानाविधकैलेपात्रोंकोदे
खकेकहेकिमृत्होएकउसदिनथी वुहउसीनिश्चयसेकहेगाकिमृ
त्काउसदिनकोईघटादिकार्यनथा औरनकिदण्डचक्रादिनथेतै
से अद्वैतश्रुतिब्रह्मसेअन्यअधिष्ठाताकावारणकर्त्तीहै जैसे पात्रों
कीप्रकृतिमृत्औरकुलालअधिष्ठातादेखतेहैं तैसेजगकीप्रकृति
औरअधिष्ठाताब्रह्मसेअन्यनहींहै लक्षणकेभेदसेनानात्वहै सर्ग-
जन्मसेपूर्वब्रह्मव्योमकालक्षणभिन्ननहींथाक्षीरनीरकेतुल्यदोनोंसं
सृष्टथे व्यापित्वऔरअमूर्तत्वादिधर्मोंकीसमतासेफिरसर्गमेंजग
जन्मानेकेअर्थब्रह्मयततहै औरव्योमस्तिमितठहिरताहै तिससे
व्योमब्रह्मकेभेदकानिश्चयहै ब्रह्मव्योमकेअभेदोपचारबोधिकाश्रु
तिहैं आकाशशरीरंब्रह्मेतिफिरब्रह्मव्योमकेअभेदोपचारसेब्रह्मके
विज्ञानसेसर्वविज्ञानकीसिद्धिहै किसबकार्यव्योमसेभिन्नदेश-
कालमेंनहींहोतेहैं औरब्रह्मसेदेशकालव्योमअव्यतिरिक्तहै इस
सेब्रह्मवोब्रह्मकार्यवोउनदोनोंके विज्ञानकेसाथहीव्योमजाना-

जाताहै जैसे क्षीरमेंनीरक्षीरकेग्रहणहीसेनीरगृहीतहै यहनहीं कि क्षीरकेग्रहणसेनीरघटमेंरहिजावे तैसे ब्रह्मऔरब्रह्मकेकार्य सेअव्यतिरिक्तदेशकालसेब्रह्मकेग्रहणसेव्योमभीगृहीतहै तोश्रु, तिसेव्योमजन्मकासुननाभाक्तहै एकदेशीसिद्धान्तीनेअजन्यव्यो मभानसवश्रुतिविरोधवारणकिया मुख्यसिद्धांतीदूषताहै ॥

प्रतिज्ञाऽहानिरव्यतिरेकाच्छब्देभ्यः ६

येनाश्रुतंश्रुतंभवतीतिसामहै आत्मनिखल्वरेदृष्टेश्रुतेमतेवि ज्ञातइदंसर्वंविदितमिति यजुःहै नकाचनमहद्विधाविद्यास्तीति अथर्वहै आत्मभिन्नं ज्ञेयंनास्तीत्यर्थःउक्तसबवेदोंकीप्रतिज्ञा की सिद्धितोहोजोब्रह्मसेसबवस्तुकाअव्यतिरेकहोसोअव्य तिरेक तो होजोसबवस्तुब्रह्म सेजन्य हो संक्षतमधिकृत्य वेदप्रतिज्ञायाए वमहानिरनुपरोधःस्यात्यद्यव्यतिरेकःकृत्स्नस्यवस्तुजातस्यविज्ञे यात्ब्रह्मणःस्यात्व्यतिरेकेहिसतिएकविज्ञानेनसर्वंविज्ञायतइती यंप्रतिज्ञाहीयेतसचाव्यतिरेकएवमुपपद्यतेयदि कृत्स्नंवस्तुजातमे कस्माद्ब्रह्मणउत्पद्येत शब्देभ्यश्चप्रकृतिविकाराव्यतिरेकन्यायेनै वप्रतिज्ञासिद्धिरवगम्यते भाव अजन्यव्योमका जीववत्कल्पितभे दसेभीप्रतिज्ञासिद्धिनहीं अज्ञानसे सबजड़द्रव्यकार्यहो तोअव्य तिरेकहोजोव्योमअकार्यहोतोप्रधान [नित्यद्रव्याणिस्वतन्त्राणि भिन्नान्यनाश्रितानीतिन्यायविदः] वत्स्वतन्त्रहो तिससे अव्यति रेकनहो जिसकेसुननेसेअसुनासुनाहोताहै यहप्रतिज्ञाकार्यकार णकेअभेदवर्णनसेमृदादिकेदृष्टान्तोंसेसमर्थकीहै औरइसकेसाध नार्थआगेके शब्द हैं जैसे सदेवसोम्येदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीयं तदैक्षततत्तेजोसृजत भाव श्रुतियांकार्यजातको ब्रह्मसेदिखावी फिरअव्यतिरेकदिखातीहैं जैसे ऐतदात्म्यमिदंसर्वं यहांसे प्रपा

ठककोसमाप्तिलो फिरयद्विव्योमब्रह्मकाकार्यनहोतोब्रह्मजानेसे
व्योमनजानाहो तिससेप्रतिज्ञाहानिहो फिरप्रतिज्ञाकीहानिसे
वेदकोअप्रामाण्यकरनेयोग्यनहींहै सोदेखोकिवेदमेंनानाशब्द-
नानादृष्टांतोंसेउक्तप्रतिज्ञाकोस्थापतेहैं जैसे यजुर्वेदमेंदुंदुभ्यादि
दृष्टान्तोंसेअथर्वणमेंऊर्णनाभ्यादिदृष्टान्तोंसे फिरयजुर्मेंउसकेसा
धक इदंसर्वंयदयमात्माजेशब्दहैं आथर्वणमेंब्रह्मैवेदममृतंपुर-
स्तादित्यादिजेशब्दहैं तिससेअग्न्यादिवत्व्योमभीजन्यहैवस्तुमें-
विकल्प के असंभव से व्योम तेज का प्राथम्य शाखा के भेद सेव्य-
वस्थित नहीं है द्विदलांकुरवत्समुच्चय से जन्म का प्राथम्य दो
नोंकानहींहै; वायोरग्निरिति इस क्रम के बाध से शाखाभेद से
प्रथमतेजयाव्योमजन्मायहव्यवस्थाभीअयोग्य है तिससेएकवाक्य
ताभीनहींहैइसकोसिद्धान्तीदूषताहै तैत्तिरीयमेंतेजकाजन्मती
सरासुनाहै जैसे तस्माद्वाएतस्मादात्मनआकाशःसंभूतः आका
शाद्वायुर्वायोरग्निरिति बलवतीतैत्तिरीय श्रुतिहै प्रकृतिपञ्चमी
विभक्तिसेछांदोग्यश्रुतिदुर्बलहै तेजका प्राथम्यनहींहै तेजकाज
न्मप्रथमसुनाहै वहतीसराहै यह एकवाक्यताहै इससेअप्रमाणव
तीयश्रुतिनहीं जैसेतदाकाशंवायुंचसृष्ट्वातत्तेजोऽसृजतेतितेजका
जन्मकहतीछांदोग्यकीश्रुतिव्योमकाजन्मकहती तैत्तिरीयश्रुति
कोनहींवारशक्तीहै एकवाक्यदोव्यापारनहींकरशक्ताहै कि तेज
काजन्मविधानकरे औरव्योमकेजन्मकोवारणकरे क्रमसेएकही
स्रष्टाअनेकस्रष्टव्यसृजो इसकल्पनासेएकवाक्यकेसंभवमेंविरुद्धा
र्थश्रुतिहातव्यनहींहै इसकोएकवारसुनास्रष्टाकासम्बन्धदोस्रष्ट
व्यकेसाथइष्टनहींहै अन्य श्रुतिसेअन्यस्रष्टव्यकाग्रहणकरतेहैं य
था सर्वंखल्विदंब्रह्मतज्जलानितियहां सबवस्तुब्रह्मसेजन्यश्रुतहै
वहप्रदेशांतरमें विधानकरातेजआदिके जन्मका क्रमकोवारता

नहींहै तैसेतेजभीब्रह्मसेजन्यश्रुतहै वहश्रुत्यन्तरमेविधानकरा
व्योमादिकेजन्मक्रमकेवारणमेयोग्यनहींहै तज्जलानिति शांत
उपासीतेति उक्तवाक्यशमकेलियेहैं नसृष्टिकेलियेतिससेप्रसिद्ध
क्रमकाअनुरोधयोग्यनहींहै और तत्तेजोऽसृजत इससृष्टिवाक्य
सेक्रमगृहीतव्यहै मैंनहींकहताहूं कितेजकेप्राथम्यकेअनुरोध
सेश्रुतिमें प्रसिद्धव्योमहातव्यहै क्रमपदार्थकाधर्महै किञ्च तत्ते
जोऽसृजत इसमेंक्रमकावाचककोईशब्दनहींहैआर्थिकक्रमजाना
है फिरसोक्रम वायोरग्नि इसश्रुतिकेक्रमनेवारणकियाहै व्यो
मवातेजकेप्रथमजन्ममेंविकल्पऔरसमुच्चय असंभववोअस्वीकार
सेवारितहै तिससेउनमेंविप्रतिषेधनहीं किन्तुसौहार्दहै छांदोग्य
मेंप्रतिज्ञाकेवलसेअपठितव्योमका जन्मउपसंख्यातव्यहै तोहैय
ह फिरतैत्तिरीयमेंपठितकाक्युंनसंग्रहकरोजोकहाथाकिव्योमकि
सीदेशकालसेपृथक्नहींहै ब्रह्मवोब्रह्मके कार्योंके साथविदितहै
तिससेप्रतिज्ञाकीक्षतिनहींहै और एकमेवाद्वितीयं इसकोकोप
भीनहींहै औरनीरवत्व्योमब्रह्मकेअव्यतिरेकसे सोऽसत्है और
नीरन्यायसेएककेविज्ञानसेसबकाविज्ञानप्राप्तव्यनहींहै मृदादि
केदृष्टान्तोंसेप्रकृतिविकारन्यायसिद्धसबकाविज्ञानप्राप्तव्यहै औ
रनीरन्यायसेकल्प्यमानजो सबविज्ञान सोसमीचीन विज्ञानहो
औरकेज्ञानसेग्रहणकियानीरकासमीचीनज्ञाननहींहै वेदकोपु
रुषोंकेतुल्यमायालीक विप्रलिप्सा प्रमादकरणापाटववचनोंसे
अर्थकाअवधारणउपपन्ननहीं है एकमेवाद्वितीयं यह सर्वद्वैतके
निषेधपराऔरनीरन्यायसेअर्थंकरणमें पीडितहो दोनोकोगौण
मानिसेअद्भुतवत्उपन्यासहो जैसे श्वेतकेतोयन्नुसोम्येदंमहामना
अनूचानमानीस्तब्धोऽस्युततमादेशमप्राक्ष्योयेनाश्रुतंश्रुतंभवतीति
तिससेब्रह्मकेकार्यकीअपेक्षासेसबवस्तुकेविज्ञानका उपन्यास है

फिरजोकहाथाकिग्रसंभवसेव्योमजन्मश्रुतिगौणीहै उत्तरउसका है ॥

यावद्विकारंतुविभागोलोकवत् ७

तुशब्दग्रसम्भवकीशङ्काव्यावृत्त्यर्थहै व्योमजन्यनहींहैसामग्री शून्यतासेइसकाणभुगादिकेग्रनुमानकासत्प्रतिपक्षहै किव्योमविक्षत्‌है विभक्ततासेघटादिवत् फिरजोविभक्तहै सोविकारहै यहीग्रन्वयव्याप्तिहै जोग्रविकारहै सोविभक्तनहींहै जैसेग्रात्माविभक्ततासेदिक्कालमनपरमाणवादिकार्यहैं ननुव्योमादिसेग्रात्माभीविभक्तहैफिरग्रात्माभीघटादिवत्कार्यहोनहिग्रात्मनग्राकाश:संभूत: इसश्रुतिसेयहसमाधिवेदशरणोंकोहै नकिग्रनुमानशरणोंकोयदिग्रात्माविकारहो विभक्ततासेयावस्तुतासेघटवत् तोग्रात्मासेपरग्रन्यनहींसुननेसेसबव्योमादिकार्य निरात्मक हो ग्रात्माकोकार्यत्वहोनेमें फिरशून्यवादहोफिरग्रात्माकिसीकारणकाकार्यनहींहै स्वयंसिद्धतासेग्रौरग्रात्माप्रमाणकी ग्रपेक्षाग्रात्मसिद्धिमेंनहींचाहताहै ग्रात्माके प्रत्यक्षादिप्रमाण ग्रसिद्धप्रमेयकीसिद्धिकेग्रर्थगृहीतहैं कोई प्रमाणकेविनाव्योमादिस्वयंसिद्धनहींलभताहै तिससेप्रमाणव्यर्थनहींहैं निश्चितसत्ताका ज्ञानप्रमेयसत्ताकानिश्चायकहै घरमेंघटदेखावानहीं यहज्ञान संशयसेदेखाइग्रव्यतिरेककेनिश्चयमेंग्रर्थस्वरूपके ग्रनिश्चयसेज्ञानसत्तानिश्चयस्वत:नहींहै कार्यकोस्वप्रकाशताकायोगनहींहै नग्रन्यज्ञानसेग्रनवस्थासेइससेसाक्षीज्ञानसत्ताकानिश्चायकहैयदिसाक्षीकोज्ञानाधीनसत्तानिश्चयहै तोग्रन्योन्याश्रयहै इससे सर्वसाधकत्वसेग्रात्मास्वत:सिद्धहै जडपराधीनप्रकाशसेवाधयोग्यहैस्वप्रकाश सर्ववाधसाक्षिरूपकानिराकर्त्रन्तरनहीं ग्रापग्रापके निराकर्तृत्व

काअयोगहै अतिनिपुणभीस्वाभावदेखनेकोशक्यनहींहैजैसेअप
नासिरकटाआपनहींदेखताहै फिरआत्माप्रमाणादिसेपूर्वहीसि
द्धहैप्रमाणादिकेआश्रयसेभलाऐसेकावारणकैसेसंभवहैआगन्तुक
वस्तुकावारणहै नस्वरूपकाजोहिनिराकर्ताहै सोहीउसकास्वरू
पहै नहींदेखीकिअग्निकीउष्णताअग्निकोनिराकरणकर्तीसत्ता
वास्फूर्तिरात्माहै पुरुषःस्वयंज्योतिस्तस्यभासासर्वमिदं विभाती
तिचकहामैनेस्वतःस्फूर्तिसेआत्मावाध्यनहींकहताहूंस्वतःसत्ता
कर्तासेभीवाध्यनहींजैसेमैअववर्तमानवस्तुजानताहूं औरभूतवो
भूततरवस्तुजानताथावोअनागतअनागततरवस्तुजानूंगा इससे
ज्ञानज्ञेयकीसत्ताका व्यभिचारमे भीज्ञाताके सदाएकरूपसेस
त्ताकाव्यभिचारनहींहै देहकेभस्मादिसे आत्मका उच्छेदनहीहै
वर्तमानस्वभावसेअन्यथास्वभाववामिथ्यात्व संभवनहींकरासतो
होमैहूंइससत्स्वभावका बाधकनहींहै अप्रत्याख्येयस्वभावसेआ
त्माअकार्यऔरव्योमकार्यहै जोतुमने कहाथाकि समानजातीय
नानाद्रव्यव्योमारम्भकनहींहैं सोभीझूठहै प्रथमतोयहनियमही
नहींकिसमानजातीयहीआरम्भकहै नविजातीय तन्तुवोतन्तुसं
योगसमानजातीयनहींहै द्रव्यत्ववो गुणत्वके स्वीकारसे औरतु
रीवेमादिनिमित्तकारणोमेंभीसमानजातीयतानहींहै होसमवा
यिकारणमेंउक्तनियमनकारणान्तरमे यहभीअनैकान्तिकहैसूत्र
लोमादिनानाजातियोंसेएकरस्सीवनीदेखतेहैं तैसेसूत्रवोऊर्णा
दि से विचित्र कम्बल तनुते देखते हैं किञ्च सत्व द्रव्यत्वादि की
अपेक्षासेसाजात्यकल्पोतोनियमव्यर्थहो सबकीसबकेसाथसाजत्य
तासेयहभीनियमनहींकिअनेकहीआरभताहै नएकअणुवामन-
मेंआद्यकर्मकेआरम्भकेस्वीकारसेपरमाणुवोमनएकहीएकआद्य
कर्मकोआरभताहै नअन्यद्रव्यसेमिलकेयहीतुम्हारास्वीकारहै

यदिकहो कि द्रव्यके आरम्भमें अनेकारम्भकत्वका नियम है सो भी न
हीं परिणामके स्वीकारसे होय यह नियम तुम्हारा यदि संयोग सहा
य द्रव्य द्रव्यांतरका आरम्भक हो द्रव्य ही अवस्थाविशेषको पहुंचा का
र्यनाम से पुकारा जाता है फिर द्रव्य ही कहीं अनेकाकार परिणमता
है जैसे मृत्‌वा वीज घटादि अङ्कुरादि भावसे कहीं एकही जैसे
क्षीरादि दध्यादि रूपसे अनेकही कारण कार्यको जनते हैं यह ईश्व-
रशासन नहीं है द्रव्यगुणोंका सङ्केत पुरुषोंसे है तिससे वुह श्रुत्यर्थ नि-
र्णयमें हेतु नहीं है यह भावार्थ है श्रुतिप्रमाणसे एकही ब्रह्म व्योमादि
महाभूतोंके जन्म क्रमसे जगकारण निश्चित है और जो तुमने कहा-
था कि व्योम जन्ममें पूर्वापरकालका विशेष असम्भव है सो असत् है
जिस शब्दाश्रयत्व विशेषद्वारा पृथिव्यादिसे व्यतिरिच्यमान व्योम स्व
रूपवत् अवनिश्चित है वुह शब्दादिमान् विशेष प्रलयमें नहीं था शब्दा
दिमत् व्योम प्रलयमें न था नासीद्रजो नो व्योमेत्यादि यदि कहो कि व्यो
म न होतो काठिन्य हो तुम अक्षासिखा है नैयायिकके वचे व्योम-
का अभाव वा व्योमके धर्मकाठिन्य नहीं है किन्तु मूर्तद्रव्य विशेषया
मूर्तद्रव्यका संयोग विशेष काठिन्य है फिर वुह प्रलयमें नहीं है यह भा
वार्थ है जैसे ब्रह्म स्थूलादि पृथिव्यादि स्वभावसे स्वभाववत् नहीं है
अस्थूलमनणिवत्यादिसे तैसे व्योमस्वभावसे भी स्वभाववत् नहीं है
अनाकाशमिति श्रुतेः तिससे जन्मके पूर्व अनाकाश था आकाशशरी
रं ब्रह्मेति विभुतासे व्योमसम ब्रह्म है यह श्रुत्यर्थ है और जो तुमने क
हाथा कि पृथिव्यादिको वैधर्म्यसे व्योम अज है सो भी असत् है श्रुतिके
विरोधमें जन्मासम्भवानुमान अनुमानाभास है व्योम अनित्य है अ
नित्य गुणोंके आश्रयसे घटादिवत् निर्गुण आत्मामें अनैकांतिकता
नहीं गुणके अभावसे व्योमजन्यवादीको विभुत्वादि असिद्ध हैं ति
ससे स्वरूपासिद्ध है सर्व मूर्त द्रव्य संयोग वा परिणाम विशेष वा स्वरू-

पोपचयरूपवाविभुत्वनिर्गुणमेंनहींहै ज्यायानाकाशादितिश्रुतिः व्योममेंअमृतत्वश्रुतिअमृतादिवौकसइतिवत्गौणीदेखो जन्मल यवर्णनसेआकाशवत्सर्वगतश्चनित्यः यहभीप्रसिद्धमहत्वव्योमसेउ पमानकियाहै निरतिशयमहत्वकेअर्थवोनव्योमकोसाम्यकेअर्थ जैसे इषुकेतुल्यसूर्यदौड़ताहै यहक्षिप्रगमनसेकहाहै नइषुतुल्य गमनकेअर्थकहाहै तद्वत् सयथाऽनन्तोयमाकाशएवमनन्तआ- त्मेति व्योमकार्यहै तिससेअनित्यहै यहश्रुतिआपेक्षिकआनन्त्य केद्वारामुख्यानन्त्यकाबोधकरातीहै यहभावार्थहै ज्यायानाका- शादिति यहब्रह्मसेव्योमकोऊनपरिमाणकहतीहै नतस्यप्रति- मास्तियस्यनाममहद्यशःहिरण्यगर्भइत्येषमामाहिंसीदित्येषयस्मा न्नजातइत्येषःउक्तश्रुतिब्रह्मकोअनुपमानतादिखातीहै व्योमउप मानमात्रसेनित्यनहींयहभावहैमूर्तिपूजाझूठीहैयासुखार्थअग्नि होत्रादिझूठेहैंईश्वरकोमूर्तिनहोनेसेअतोन्यदार्तमितियहभीब्र- ह्मसेव्योमादिकोअनित्यतासेअसत्वकहतीहैजोतुमनेकहाथाकि जैसे तपमेंब्रह्मशब्दगौणहै तैसे व्योमजन्मश्रुतिगौणीहै सोभी- व्योमजन्मश्रुतिवोअनुमानसेपरिहृतहै बलवतीतित्तिरीयश्रुति केसाथदुर्वलछन्दोग्यश्रुतिकीएकवाक्यताहै समानार्थकनानाश्रु तियोंकीएकवाक्यतामेंकुछश्रमनहींहै परविरुद्धनानार्थश्रुतियों कीएकवाक्यताकेअर्थबुद्धिमान्‌काश्रमयुक्तहै तोसवश्रुतिकासम न्वयब्रह्ममेहै तिससेव्योमब्रह्मकाकार्यसिद्धहै ॥

———*———

(मातरिश्वाधिकरण ॥ २ ॥)

एतेनमातरिश्वाव्याख्यातः ८

संस्कृतेनसङ्कलनं एतेनव्योमव्याख्यानेनमातरिश्वापिव्यो

माश्रयीवायुर्व्याख्यातः वायुनहींजन्मताहै छन्दोगोंकिसृष्टिप्रक
रणमेंनढ़नेसेश्रौरतैत्तिरीयकोनेवायुकाजन्मपढ़ाहैआकाशाद्वायु
रितिफिरश्रुतियोंकेविप्रतिषेधमेंवायुजन्मश्रुतिगौणीहै असम्भव
से फिरअसम्भवयहकि सैषानस्तमितादेवतायद्वायुरितिअस्तम-
यकेप्रतिषेधसेश्रौरअमृतत्वादिकेसुन्नेसे प्रतिज्ञासिद्धिसेजोविभ
क्तहैसोजन्यहै तिससेवायुजन्यहै यह सिद्धांत है अग्न्यादिकेतु
ल्यवायुकाअस्तमयनहींहै यहीअमृत्वादिहै ननुवायुव्योमकातु
ल्यजन्मकेप्रकरणमेसुन्नावाअसुन्नाहै तोएकहीअधिकरणयुक्तथा
फिरक्युंविशेषकेविनाअतिदेशकियाहै सुनोयहतोसत्यहै तोभीम
न्दबुद्धियोंकोशब्दमात्रकीशङ्कानिवृत्त्यर्थयहअतिदेशकियाहैकिसं
सम्बर्गविद्यादिमेउपास्यतासेवायुकामहाभागत्वसुनाहै श्रौरअ
स्तमयप्रतिषेधादिसेकिसीकोनित्यत्वकीशङ्काथी उसकेवारणार्थ
भिन्नाधिकरणहै कर्मकांडमतमेभीवायुकाऐश्वर्यस्तावकसुनाहै वा
यव्यंश्वेतमालभेतभूतिकामःजोधनचाहैसोवायुकायज्ञकरेइसको
लोगोंमेफैलानेकेअर्थस्तुतिकहीहै जैसे वायुर्वैक्षेपिष्ठादेवतास्वे
नभागधेयेनैनंभूतिंगमयतीति अर्थ वायुएकबहुतशीघ्रचलनेवा
ला देवताहै जोउसकोपूजेगावहउसेशीघ्रधनदेगा सैषायहजा
न्माभावमेलिङ्गहै वायुंदिशांवत्सं वेदवायुकोदिशोंकावछराजानै
यहरूपकालङ्कारहै वायुश्चांतरिक्षं चैतदमृतमिति यहअभ्यास
मेंलिङ्गहै वायुरेवव्यष्टिःसमष्टिश्चेति सर्वात्मामेंलिङ्ग संवर्गविद्या
में वायुर्ह्येवैतान्सर्वानग्न्यादीन्संहरतीतिअर्थात्संवर्गकेशब्दमा
त्रहीऐश्वर्यकासुन्नालिङ्गहैनार्थइनसेवायुअनादिमन्तजानीजाती
हैतिससेवायुजन्मश्रुतिगौणीहै इससेश्रुतिमेंविरोधनहींहै सि
द्धांती प्रतिज्ञाश्रुतिसे वायुजन्मकेसाधकवाक्योंसेविभक्तत्वादि
लिङ्गोंसेवायुकाजन्ममुख्यहीहै फिरआकाशंवायुंचसृष्ट्वातेजोसृज

त इनदोश्रु तिकीएकवाक्यतासेब्रह्ममेंसमन्वयहै उपास्य वायुकी स्तावकलिङ्गआपेक्षिकहैं यहमुख्यसिद्धांतहै ॥

———*———

ब्रह्मजन्मासंभवाधिकरण ३

असंभवस्तुसतोनुपपत्तेः ९

अनाद्यनन्तंमहतःपरंध्रुवंनचास्यकश्चिज्जनितेति यहब्रह्मको अनाद्यनन्तकहतीहै त्वञ्जातोभवति विश्वतोमुखइति यह ब्रह्म काजन्मकहतीहै फिरकिसीकीमतिहैकि असंभाव्यमानजन्मवा युव्योमउनकाजन्मसुनकेब्रह्मकाभीजन्मकिसीसेहो फिरब्रह्मकि सीकारणतासेजन्यहैव्योमवत् इसअनुमानकेसहायसे अजन्मश्रु तिबलीयसीहै वीजांकुरवत् अनादिसेअनवस्थाभीनहीहै दीपसे दीपवत्ब्रह्मसेब्रह्मजन्मनेमें जन्मश्रुतिअनादिश्रुतिसेमिलअनाद्य नन्तब्रह्मकीअसिद्धिबोधिकाहै यहकिसीकीशङ्कादूरकरनेकेअर्थ सूत्रहुआथा ब्रह्मजन्यनहीहै कारणशून्यसेनरशृङ्गवत् व्यतिरेक सेघटवत् जोकोईअनादिनहोतोअकारणवादहो ब्रह्मकेजन्मका कारणलिङ्गकेबाधसेजन्मश्रुतिकाअर्थकार्यके साथअभेदहै इससे ब्रह्म अनाद्यनन्तसिद्धसिद्धांतकाफलहै नखलुब्रह्मणःसदात्मकस्य कुतश्चिदन्यतःसंभवउत्पत्तिराशङ्कितव्याकस्मात्अनुपपत्तेःसन्मा त्रंहिब्रह्म नतस्यसन्मात्रादेवोत्पत्तिः सम्भवत्यसत्यतिशयेप्रकृतिवि कारभावानुपपत्ते र्नापि सद्विशेषात् दृष्टविपर्ययात् सामान्याद्धि विशेषाउत्पद्यमानादृश्यन्ते मृदादेर्घटादयो नतु विशेषेभ्यःसामा न्यंनाप्यसतोनिरात्मकत्वात्कथमसतःसज्जायेतेतिचाक्षेपश्रवणा त्उक्ततीनकारणनहीहैंब्रह्म जन्ममे श्रुतिभीब्रह्म के जन्मकोवार तीहै जैसेसकारणं करणाधिपाधिपोनचास्य कश्चिज्जनितानचा

धिपद्धति दीपदीपकजलानेमेंनिमित्तहै तिससेदृष्टांतनहींहै वायुव्योमकाजन्मविभक्तसेहै औरब्रह्मकाजन्मअविभक्तसेनहींहै यहीवैषम्यहै विकारसेविकारकाजन्म देखब्रह्मकाभीविकारहोनायोग्यनहींहै मूलप्रकृतिकेनमाननेमेंअनवस्थाहै फिर कारणनमानेसेयदृच्छावादहो अनादिकारणमानेमेंब्रह्मवादहोप्रधानागुआदिकेनिराससे फिरजोतुममूलप्रकृतिमानोगे वहीहमाराब्रह्महै तिससेअविरोधहै ॥

(तेजोधिकरण ॥ ४ ॥)

तेजोतस्तथाह्याह १०

छांदोग्यमेसत्तेजकामूल तैत्तिरीयमे वायुमूलसुनाहै तत्तेजोसृजत वायोरग्निरिति तेजके जन्ममेश्रुतिविप्रतिपन्नहैं एकदेशिमतमेंब्रह्मयोनिकतेजहै सदेव इस उपक्रमसे तत्तेजोसृजत इसउपदेशसेऔरसबकेज्ञानकी प्रतिज्ञाकासंभवतोहो जोसबब्रह्मसेजन्यहो तज्जलानितियहसमतसेसबकाजन्मब्रह्मसेदिखातोहै एतस्माज्जायतेप्राणइति यह उपक्रमकरश्रुत्यन्तरमेंसबब्रह्मजन्यअविशेषसेकहाहैऔरतैत्तिरीयमेंकहाकिजोकछुजन्यहैसोसबब्रह्मनेदेखकेरचाहै जैसे सतपस्तप्त्वाइदंसर्वमसृजतइति तिससेवायुकेपीछेअग्निरचीइसक्रमसेकहाहै वायोरग्निरिति इसक्रमकीव्यवस्थापरकहिताहूं कितेजवायुसेजन्मताहै कैसे जानातैत्तिरीयश्रुतिकेकहिनेसे वायोरग्निरिति जो समीपसेतेजकोब्रह्मजन्यकहोऔरवायुकोजनककहोतो वायोरग्निः यह बाधितार्थहोहमनेतैत्तिरीयश्रुतिकोनहींकहाहैतस्माद्वाएतस्मादात्मनआकाशःसंभूतः इसमेप्रथमसबकाअपादानपञ्चमीविभक्तिसेआत्मा

कहाहै ननुपञ्चमीश्रुतिसे वायुतेजकाजन्मनिश्चितहै सोनहींक ल्पितकोउपादानकेअसंभवसेफिरअधिष्ठानकेअसंभवमेभीसदा दिवत्परिणामिताकासंभवहै छांदोग्यमेब्रह्मसे सृष्टिमात्रसुनीहै उपादाननहींसुनाहै एकोऽहंबहुस्याम् अर्थः कार्यकेसाथअभेदकेदे खनेमेलिङ्गहै तिससेभीब्रह्म उपादाननहीहै लिङ्गसे श्रुतिबली यसीहै जहांश्रुतिसे विरोधनहींवहांलिङ्गपहुंचताहै वायुब्रह्मसे अन्य नहींहै तोवायुजतेजभी ब्रह्मप्रकृतिकहै यह सिद्धांताशयहै जैसेपृथिवीसेओषधितैसे वायुसेअग्नियहअपादानहै औरवायुसे आगेअग्निकासंभवहै यहउपपदार्थका योगकल्पितहै औरवायु से अग्निकासम्भवहै यह कारकार्थयोगक्लृप्तहै कल्प्यात्क्लृप्तमेंक्लृप्त वलिष्ठहै तिससे तेजकाजनकवायुहै ननुछांदोग्यश्रुतितेजकोब्र ह्मयोनिकहतीहै तत्ते जोऽसृजतेति फिर यदिव्योमवायुकोरचवा युरूपब्रह्म तेजकोरचताहै यहकल्पोतोभीतेजब्रह्म जहैइसमेंकुछ विरोधनहींहै जैसे तस्यैशृतंतस्यैदधितस्यै आमिक्षेत्यादिश्रुति से गौकाक्षीरसाक्षात्कार्यहैऔरदध्यादिपारंपर्यजहैं ब्रह्मविकार रूपसे स्थितश्रुतिदिखातीहै तदात्मानंस्वयमकुरुतेति यद्यपि बु ध्यादिअन्तःकरणादिसेजन्यप्रत्यक्षदेखतेहैंतथापिसबभावसाक्षा त्वाप्रणाडीसेईश्वरकावंश्यहै तज्जलानिति यहअक्रमवादिनी श्रुतिसर्वथासार्थाहै साक्षात्वाप्रणाडीसेसबब्रह्मजहोनेसेऔरक्र मसृष्टिवादिनीकोअन्यथासार्थकतानहींहै औरप्रतिज्ञाभीब्रह्मके वंश्यमात्रकोचाहतीहै नकिब्रह्मसेअव्यवहितजन्यत्वको यहअवि रोधहैअक्रमश्रुतियोंकोबलीयसीक्रमश्रुतिकेअनुसारएकवाक्यता से व्योमवायुकेद्वारासेतेजकाकारणब्रह्ममेसमन्वयसिद्धहै ॥

(अबधिकरण ॥ ५ ॥)

आपः ११

अतस्तथाह्याहेत्यनुवर्ततेचापोतस्तेजसो जायन्तेकस्मात् (तथाह्याह तदपोसृजतेति अग्ने रापइतिच सतिवचनेनास्तिसंशयः तेजसस्सृष्टिंव्याख्यायपृथिव्याव्याख्यास्यन्नपींतरीयामीत्यापइतिसूत्रयांबभूव। भाषा अतिदेश सूत्र है अथर्वकाजोमुण्डकग्रन्थहै उसकेमन्त्रमें सुना कि जल ब्रह्मज है जैसे एतस्माज्जायतेप्राणोमनःसर्वेन्द्रियाणिचखंवायुर्ज्योतिरापःपृथिवीविश्वस्यधारिणीति फिरतैत्तिरीयमेंअग्निसेजलकाजन्मसुनाहैजैसे अग्नेरापइति प्रत्यक्षमेंअग्निजलकादाहकहै तोकैसेअग्निसेजलजन्माहोगा जैसे सर्पिणीवच्चोंकोजनतीवोखातीहै त्रिवृत्कृतअर्थात्स्थूलमेंविरोधहै औरसूक्ष्ममेंविरोधनहींहै केवलश्रुतिकेअविरोधार्थसूत्रनहींहै किन्तुपञ्चभूतोंकेजन्मक्रमकेनिर्णयार्थहै तिससेतेजोरूपब्रह्मसेश्रुतिसमन्वयहै ॥

———*———

(पृथिव्यधिकरण ॥ ६ ॥)

पृथिव्यधिकाररूपशब्दांतरेभ्यः १२

ताआपऐक्षन्तवह्व्यःस्यामप्रजायेमहीति ताअन्नमसृजन्तेति जलअन्नकोरचताहै इससुननेसेसंशयहुआकिअन्नशब्दसेव्रीहियवादिवाखाद्यरोटीआदिवापृथिवीकहतेहैं लोकप्रसिद्धिसेव्रीहियवादिरोटीआदिग्रहीतव्यहैं वाक्यशेषभीउक्तार्थकोकहिताहै जैसा तस्माद्यत्रक्वचवर्षतितदेवभूयिष्ठमन्नंभवतीति अर्थ वर्षनेसेव्रीहि

यवादिवत् हुतहोतेहैंनपृथिवी ऐसोप्राप्तिसेकहिताहूं किपृथिवीहि जलसेजन्यविवक्षितहै क्युं अधिकारवोरूपवोशब्दांतरसे अधिकार तेजसर्गकाऔरजलसर्गकाहै जैसे तत्तेजोऐक्षततदपोऽसृजत इतिफिरक्रमसेप्राप्तमहाभूतपृथ्वीकासर्गछोड़अकस्मात्व्रीह्यादिकाग्रहन्याय्यनहींहै और रूपभीवाक्यशेषमेंपृथिवीकासर्गदिखाताहै जैसे यत्कृष्णन्तदन्नस्येति अन्नादिमांसादिखाद्यकृष्णाहैं यहनियमनहींहै ननुपृथिवीहिकृष्णाहै यहभीनियमनहींचोरवत्श्वेतवोअङ्गारवत्रोहितहैमवत्पीतादिचित्रोंकेदेखनेसेयहदोष नहींहै बहुततोपृथिवीकृष्णाहीहैनतैसीश्वेतरक्तहै छायाभीचन्द्रमेउसकोकालोहोपड़तीहैतिससेवहकृष्णाभासाहै जलसेपोछेपृथिवीकाख्यानश्रुतिमेंसिद्धहै जैसे अद्भ्य:पृथिवीति तिससेअन्नहोपृथिवीहै किञ्च तयदपांशरआसीत्तत्समहन्यतसापृथिव्यभवदिति अर्थ सृष्टिकालमेंजोमाडके तुल्यघनीभावथा सोहीकठिनसंघातहुआथा वहीजलोंका कठिनपरिणामपृथिवीहुईथी और पृथिवीसेव्रीह्यादिकासर्गश्रुति दिखातीहै जैसे पृथिव्याओषधयओषधीभ्योन्नमितिचदूसरीतिसेपृथिवीकेबोधकप्रकरणहोनेमेव्रीह्यादिकाबोधदूरगया वाक्यशेषभीअन्नकोवृष्टिजन्यकथनद्वारापृथिवीकाजलत्वसूचनकरातातहैपृथिवीअन्नहैपृथिवीत्वसेअन्नवत् यहअनुमानभीहैऔर तित्तिरीयश्रुतिकेअनुसारसे छांदोग्यश्रुतिकाअर्थमानेसेभूतोंकेसर्गबोधकश्रुतियोंका समन्वयब्रह्ममेअविरुद्धसिद्धहै तिससेअन्नशब्दकाअर्थपृथिवीहै ॥

———*———

(तदभिध्यानाधिकरण ॥ ७॥)

तदभिध्यानादेवतुतल्लिङ्गात्सः १३

क्याव्योमादिभूतआपहीअपनेविकारोंकोसृजतेहैं आहोस्वि
त् ईश्वरहीतिस२रूपसेतिष्ठमानअभिध्यानसे तिस२विकारको
सृजताहै इससंदेहमेपहिलेप्राप्तहै कि वेआपहीसृजतेहैं किससे
जानाआकाशाद्वायुर्वायोरग्निरग्ने रापअद्भ्य: पृथिवीति इससे
इनकोस्वातन्त्र्यसुन्नेसे ननुस्वतन्त्रअचेतनो कोप्रवृत्तिकानिषेधक
राथा तोवेस्वतन्त्रतासे उपादानवोकर्तानहींहोसक्तेहैं उक्तदोषन
हींहै तत्तेजऐक्षत ताआपऐक्षन्तेति इनमे भूताभिमानीदेवता
केद्वाराभूतोंकोभीचेतनसुन्नेसेजैसेमनुष्यादिशब्दोंसेतिस२देहके
अभिमानीजीवकहातेहैं तोवेअपनी२कार्यकेजन्मानेमेनिरपेक्षहैं
एवंतदात्मानंस्वयमकुरुत इस्में ब्रह्मभीनिरपेक्षसबकाकर्तासुना
है फिरभूतकर्तृश्रुतिवोईश्वरकर्तृश्रु,तिपरस्परविरुद्धहैंजैसेव्योमा
दिरूपब्रह्मसबकाउपादानहै तैसेव्योमादिअभिमानीदेवताजीव
रूपब्रह्मकोकर्तृत्वहै इसपरम्परासेईशकर्तृश्रु,तिसेविरोधनहींहै
स्वयंयहविशेषणईश्वरांतरकेनिरासार्थहै न जीवभावकीअपेक्षा
केनिरासार्थयहएकदेशिसिद्धान्तहै उत्तरइसकासुनो ईश्वरतिस
२रूपमेस्थिततिस२विकारकोअभिध्याहीसे सृजताहै कुत: तल्लि
ङ्गात् व्योमादिशब्दोंसे देवताकोलक्षणानहींहै मुख्यार्थमेबाधक
केअभावसे तिससे जड़भूतकर्तानहींहैंतोईश्वरानपेक्षकर्ताकैसे
होंगे यद्यपिदेवताकर्ताहोसक्ते हैंतथापिवेईश्वराधीनसुनेहैं तो
जोचेतनस्वतन्त्रनहींतोजड़कीक्याचर्चाहै तिस२जड़ात्मासेस्थि
तब्रह्मउपादानहै औरजीवकेबिनाईशसबकाकर्ताहै नकिजीव
द्वाराईश्वरसबकाकर्ताहै ईशकासर्वनियंतृत्व लिङ्गसे औरप्रकर
णसेभीईशसाक्षात् सबकाकर्ताहै तथाहिवेद: य:पृथिव्यांतिष्ठन्
पृथिव्या अन्तरोयंपृथिवीनवेदयस्यपृथिवीशरीरंय:पृथिवीमन्तरोय
मयतीति यहईश्वरद्वाराभूतोंकोप्रवृत्तिदिखाताहै औरभीईश्वर

कोसर्वात्मतादिखाता है सोकामयतबहुस्यांप्रजायेयेतिप्रस्तुत्यस च्चत्यच्चाभवत् तदात्मानंस्वयमकुरुतेति औरजोजलतेजकाईक्षण सुनाहै सोईश्वरकेअन्तर्यामिभावकेसम्बन्धसे है औरसम्बन्धिईक्ष णहीसेउनकोचेतनतावोस्वतन्त्रतानहीं है तत्तेजऐक्षत इसमेंसु नाईक्षितापरहीहै क्युं दर्शनप्रकरणमे अन्य ईक्षिताकेनिषेधसे जैसेनान्योतो स्तिद्रष्टेति तदैक्षतबहुस्यांप्रजायेय इसमेसत्ईक्षि ताहीप्रकृत है तिससेईश्वरपदार्थनाशकेडरसेईश्वरसेअन्यस्वत न्त्रनहीं है तोईश्वरकर्तृत्वश्रुतिकाभूतकर्तृत्वश्रुतिसेविरोधनहीं है यहनिष्कृष्टहै सूत्रयोजनाकोरीति स ईश्वरस्तत्तदात्मनावस्थितो पिसात्वादेवसर्वंकर्तातस्यांतर्यामित्वलिङ्गाज्जीवत्व द्वाराकर्तृत्वं नामजीवस्यैतत्कर्तृत्वमित्यन्तर्यामिणः कर्तृत्वासिद्धेर न्तर्यामित्वा योगात्तदभिध्यानादीश्वरेचणादेवभूतेषुश्रु तेच्चणोपपत्तेश्चेति ॥

———*○*———

(विपर्य्ययाधिकरण ॥ ८ ॥)

विपर्ययेणतुक्रमोतउपपद्यतेच १४

भूतोंकेजन्मक्रमकोचिन्ताकोअबअप्ययक्रमचिन्ततेहैं संस्क्र- तेनसङ्कलनं विपर्ययेणतुप्रलयक्रमोऽतउत्पत्तिक्रमाद्भवितुमर्हति- तथाहिलोकेदृश्यतेयेनक्रमेणसोपानमारूढस्ततोऽन्यविपरीतेनक्रमे णावरोहतीति मृदजाःघटहिमादयोऽप्ययकालेमृदब्भावमपियं तीति अतश्चोपपद्यतएततृयब्भ्यथिव्यदृभ्योजातासतीस्थितिकाल व्यतिक्रांतावपोपीयात्दपश्चतेजसोजाताःसत्यस्तेजोपीयुः क्याअ- नियतक्रमसेअप्यय उत जन्मक्रमसेउतजन्मक्रमसेविपरीतक्रम- हैजन्मस्थितिलयजेतीनोभीभूतोंकेब्रह्माधीनसुनेहैं जैसे यतोवा इमानीतिइनश्रुतियोंसेअप्ययकानियमनहीं है अविशेषसेयहप्रा

म है अथवा जन्मक्रमसुन्नेसे अप्ययभी क्रमको चाहता है तिससे जन्म क्रम हो इस प्राप्तिसे कहिता हूं किजन्मक्रमसे विपर्ययद्वारा अप्यय क्रमहोने कोयोग्य है तैसाही लोकमें देखतू जिससे तूनिराकांक्ष हो जावे जिसक्रमसे सीढ़ीपर चढ़ता है तिससे उलटेक्रमसे उतरता है औरभी देखतू किमट्टीसे जन्मे घटशरवादि अप्ययकालमें मट्टीही हो तेहैं औरपानीसे जन्मे हिमकरकापानीही होतेहैं इससेयह भीयु क्त है किपृथिवीजलसेजन्मी स्थितिकालके व्यतिक्रममें जलहीहो औ रतेजसेजन्मा जल जलहीमें अप्ययहो ऐसे क्रमसे सूक्ष्मवो सूक्ष्मतर अ नन्तर २ अप्यय हो सबकार्यका परमकारण सूक्ष्मब्रह्ममें अप्यय जा- नो अपने कारणको उल्लंघ्य के कारणोंकि कारणमें कार्यों का अप्यय- व्याय्य नहीं है घटनाशमें मट्टीकी उपलब्धिसे औरजन्मक्रम जन्मही में सुननेसे अप्ययमें होने को योग्य नहीं है जन्मक्रम अयोग्यतासे अप्य यमें नहीं जासक्ता है कार्य की स्थिति में कारणका अप्यययुक्त नहीं है कारणके अप्ययमें कार्यकी स्थिति नहीं होसक्ती है औरकार्यके अप्यय में कारणकी स्थितियुक्त है ऐसाही मृदादिमें देखिये भावार्थ:जन्मक्र मतुल्य लयक्रम भी बुद्धिमें पड़ा तिससे उसका विचार करा जन्मक्रमके विपरीतक्रमके निर्णयसे सिद्धांत में भूतों का प्रति लोमसे लयध्यानपूर्वक प्रत्यक्ब्रह्म में मन का समाधान फल है और पूर्वपक्ष में कारणनाश से कार्यनाश है तो सबके लय का आधार ब्रह्म भी असिद्ध है तिससे उक्त समाधिकी असि- द्धि है किसीके मतमें महाभूतोंका नाश नहीं तो क्रमचिन्ताभी नहीं है किसीके मतमें जन्मसुननेसे उनकानाशभी उचित है औरकि सीमतमें ब्रह्मवत् वेभी अजन्मा हैं तिससे क्रमचिन्ता है लोकमें देखतू कारणके होतेपर कार्य नाश होता है शीतजन्मक्रम नाशमें गृहीतन हीं किन्तु लौकिकश्रुतिका अर्थ लोकमें देखी वस्तुके बोधके आधीन है

तोश्रोतसेलौकिकअन्तरङ्गवोयोग्यता।सेग्राह्यहै कारणहीकार्यरू-पसेश्रावितकिगाथा तदनन्यत्वन्यायसे खरूपनाशसेकार्यकौचण भरभोस्थितियुक्तनहींहैकार्यकेनाशमेंकारणकाठहिरना।हैजैसेघ टनाशसेमाटीश्रोरकारणकेनाशसेकार्यनहींठहिरता जैसे मा-टोकेनाशसेघट तिससेजन्मक्रमअयोग्यहै लयमेंलौकिककेअनु-रोधसेफिरचाहनानहींहै सारप्रगाढ।सेसबलयकाआधारब्रह्महै नसाचात् घटफूटैपरमट्टीमेंमिलनेसे ॥

—*—

(सृष्टिक्रमभङ्गाधिकरण ॥ ६ ॥)

अन्तराविज्ञानमनसीक्रमेणतल्लिङ्गा· दितिचेन्नाविशेषात् १५

भूतोंकाजन्मनाश अनुलोमप्रतिलोमक्रमसेकहाया वोजन्म आत्मादिलयआत्मान्तभोकहाया सुनोकरणाभाववादिन्इन्द्रियम नबुद्धि इनका होनाश्रुतिमेंप्रसिद्धहै जसे बुद्धिन्तुसारथिंविद्धिम नःप्रग्रहमेवच इनलिङ्गोंसेइनकाभी किसीकेबोचमेंजन्मनाशक्रम ग्राह्य हैसबवस्तुब्रह्मजकेखाकारसे औरभीआथर्वणमेंभूतवा आ त्मा केबोचजन्मप्रकरणमेंकरणोंकोपढ़ाहै जैसेएतस्माज्जायतेप्रा णोमनस्सर्वेन्द्रियाणिच खम्वायुर्ज्योतिरापःपृथिवीविश्वस्यधारि णीतिइसमेंसेन्द्रियबुद्धिवोमनपठितहै तोकरणक्रमसेपूर्वक्रमका भङ्गहैयहशङ्कासूत्रकाअंशार्थहैकरणभूतोंकेअनन्तरहैं भौतिकता सेयहमतकहोभौतिकमेंभानाभावसेतोश्रात्मासेपूर्वव्योमजन्मा-पोछेवायुइसक्रमकाआत्मासेकरणजन्मफिरभूतजन्मेंइस क्रम से तित्तिरीबोअथर्वणकेविरोधसेब्रह्ममेंसमन्वयनहींहै यहपूर्वपच्च काफलहै सिद्धांत आत्मनआकाश इसतित्तिरिश्रुतिमेंकार्यका रणद्वाराअर्थसेक्रमकाभानहै उसकाआथर्वणसेबाधनहींहै अर्थ

क्रमकाविरोधिक्रमविच्छिन्नहुई से और अथर्वका पाठ मात्र अर्थक्रा
मका शेष है उसके श्रेणी का बाधक नहीं अयोग्यता से इससे अर्थक्रम-
के अविरोध से पाठ जानों जैसे भूतों के पीछे करण जन्मे हैं किन्तु य-
दि करण भूतज हैं तदा भूतजन्मनाश से भी उनका जन्मनाश है औ-
र जन्मनाश का क्रमान्तर ग्रहण नहीं है करणों का भूतज में लिङ्ग है
जैसे अन्नमयं हि सोम्य मनः आपोमयः प्राणः तेजोमयी वागिति अ-
र्थ प्राणादिकार्य नहीं यह मत कहो करण विभक्तता से कार्य है फिर
करण को चाहना से अन्नमय कहा है जैसे अन्न के खाने से वाक् प्राण मन
की वृद्धि है तेजो वै घृतं इस श्रुति से घी तेज है इनके अभाव से उनका
नाश है यह लोक वेद सिद्ध है तो विवाद का अवसर नहीं है अथवा-
प्राण इन्द्रिय मन भूतज हैं स्थूल भूतों के आधीन वृद्धिमत्ता से देहवत्
आथर्वण में भूतों का वा करणों का पृथक् जन्म कहना विप्रभिन्न न्या-
य से है अथवा करण अभौतिक हैं तो भी भूत जन्मक्रम करणों से नहीं
मिलता है प्रथम करण जन्मे पीछे भूत वा प्रथम भूत जन्मे
पीछे करण आथर्वण में भूत वा करणों का पाठ क्रम मात्र है न ज-
न्म क्रम है तैसे ही अन्यत्र भी भूतक्रम से करण क्रम पृथग् ही पढ़ा है प्रजा
पतिर्वा इदमग्र आसीत् स आत्मानमैक्षत स मनोऽसृजत तन्मन एवा-
सीत्तदात्मानमैक्षत तद्वाचमसृजतेत्यादि तिससे भूत जन्मक्रम का
भङ्ग नहीं है स्थूल जन्म से प्राक् प्रजापतिः सूत्रात्मा था सूक्ष्मभूतरू
प प्रजापति सर्ग प्रथम है फिर मन आदि सर्ग भूत सर्ग में हुआ है इस क्रम
का भान है ऐसे भूत वा करण जन्म श्रुति के अविरोध से ब्रह्म में समन्व
य सिद्धि सिद्धान्त का फल है ॥

जीवजन्मादिभङ्गाधिकरण ॥ १० ॥

चराचरव्यपाश्रयस्तु स्यात्तद्व्यपदेशो भाक्तस्तद्भावभावित्वात् १६

तत् कारणकेनिर्णयार्थभूतश्रुतिविरोधदूरकरणवजीवश्रुतिविरो
धपादपूर्त्तिलोत्वं अर्थात् जीवकीशुध्यर्थजीवश्रुतिविरोधदूरकरते
हैंजीवकाभीजन्मनाशजन्माचैनमराचैन ऐसे लोगोंकेकहिनेसे
वाऔरजातकर्मादिसंस्कारोंके विधानसेहोऐसाकिसीकाभ्रमउ-
सकोहमकुटातेहैंजीवकाजन्मनाशनहींहैशास्त्रफलसम्बन्धकोसि
द्धिसे जोजीवदेहकेनाशसे नष्टहै देहांतरमेंप्राप्तइष्टकीप्राप्तिवाअ
निष्टकेवारणार्थविधिवाप्रतिषेधव्यर्थहोश्रुतिसेसुनतेभीहैं किजीव
सेत्यागोदेहमरताहैजैसेजीवापेतं वावकिलेदंम्रियतेनजीवोम्रिय
तइतिननुतुमनेलौकिकजननमरणकी कथाजीवकीदिखायीथी
सचहैदिखायीथीपरगौणीहै फिरकहोकिकिसकेआश्रयवहमुख्य
हैकहिताहूंस्थावरजङ्गमजन्मतेमरतेहैंइससेउनकेजननमरणमेंज
ननमरणशब्दमुख्यहैंउनदेहोंमे स्थितजोजीवात्माउसमेंगौणहैदे
हकेप्रादुर्भाववातिरोभावमेजननमरणशब्दकहेजातेहैं नउनकेप्र
भावसेदेहसेऔरठौरजीवजावेताक्तकिसीनेनदेखाहै श्रुतिभी
देहकेसंयोगनिमित्तजननशब्दवादेहकेवियोगनिमित्तसेमरण श
ब्दकोदिखातीहै जैसेसवाअयं पुरुषोजायमानःशरीरमभिसंपद्य
मानःसउत्क्रामन्म्रियमाण इति चजातेष्टिश्राद्धादिविधानभीज
न्मोपाधिसेहैंनकिजीवकेसाक्षातनिकसेजीवसेजन्माजीवकाज
न्मपरसेव्योमादिइवहैवानहींयह अगिलेसूत्रमेंकहेंगेऔरजीवके
देहाश्रयस्थूलजन्ममरणनहींहैयहइससूत्रसेकहाथामारजीवोन-
जायतेम्रियते इस जीवाजत्ववादिनीकाजातेष्ट्यादिसे विरोध है
पूर्वपक्षमेजीववाब्रह्मकोऐक्यअसिद्धहै सिद्धान्तमेंऐक्यसिद्धहै तो
जीवानाद्यनन्तत्वश्रुतिकाविरोधनहींहैयहांभीसमुझोकिजीवेश्वा
दिसबव्यवहारसृष्टिकेपीछेविचाराहै ॥

—— ❁ ——

कृतनाशाकृतागमभङ्गाधिकरण ॥ ११ ॥

नात्माऽश्रुतेर्नित्यत्वाच्चताभ्यः १७

कर्मफलसम्बन्धिशुकसादेहेंद्रियपिंजराकाश्रध्यक्षआत्माजीवनामहैं सोक्याव्योमादिवत् ब्रह्मसे जन्मताहै आहोस्वित्ब्रह्मवत्नहींजन्मताहै यहश्रुतियोंकोविप्रतिपत्तिहै किसीमें अग्निविस्फुलिङ्गादिकेदृष्टांतोंसेजीवात्माकापरब्रह्मसेजन्मपढ़ाहैऔरकिसीमेंअविकृतब्रह्मकाकार्यमेप्रवेशसे जीवभावका ज्ञानजतायाहै जन्मनहींपढ़ाहै इससंशयसेप्रथमप्राप्तहुआ किजीवजन्मताहै किससे एककेबोधसेसबबोधितहैं यहप्रतिज्ञातोसच्चीहोजोसबवस्तुजातब्रह्मजहो जीवको तत्वान्तरमानेमेइसकीहानिहो जीववोपरकेलक्षणभेदसेअविकृतपरात्माजीवनहींकहिसक्ताहो अपहतपाप्मत्वादिधर्मोंपरहै औरपाप्मत्वादिधर्मीजीवहै औरविभागसेजीवविकारहै जैसेव्योमादिविभक्तहैंतेतेसबविकारहैं जीववोव्योमादिका जन्मज्ञातहै जीवभीपुण्यअपुण्यकर्मोंहै सुखदुःखयुक्प्रतिदेहमेविभक्तहै तिसकाभीप्रपञ्चजन्मकेसमयमेजन्महोनेकोयोग्यहै अपिचयथाग्नेःक्षुद्राविस्फुलिङ्गाव्युच्चरंत्येवमेवास्मादात्मनःसर्वेप्राणाइतिइससेप्राणादिभोग्यजातकासर्गकोसृजकेभोक्ताआत्माओंकापृथक्सर्गकहाहै जैसेसर्वएतआत्मानोव्युच्चरंतीतिऔरजीवोंकाजन्मनाशकहाहैजैसे यथासुदीप्तात्पावकाद्विस्फुलिङ्गाः सहस्रशःप्रभवन्तेसरूपास्तथाऽक्षराद्विविधाःसोम्यभावाःप्रजायन्तेतत्रचैवापियन्तीति अर्थ भावाअर्थात्जीवचेतन्ययोगसेजीवपरसरूपहैं आत्मनआकाशःसंभूतः इसमेअश्रुतजीवजन्मअन्यत्रश्रुतको वारणनहीं करसक्ताहै अधिकवोअविरुद्धअर्थश्रुत्यन्तरसेभीसर्वत्रउपसंहर्तव्यहै विकारप्रपञ्चरूप से स्वात्माकोकरताथा ऐसेहीविकारजीवरूपसेप्रवेशहै यहप्रवेशश्रुत्यर्थहै जीवकल्पकेबीचनहींजन्मताहै यह अजत्वादिश्रुत्यर्थहै त-

त्वमसीतिकाअर्थमृद्घटकीतुल्यअभेदहै तिससेमतहोदेहकेजन्म
नाशसेजीवकाजन्मनाशदेहान्तरभोग्यस्वर्गादिहेतुविधि के असं-
भवसे कल्पके आद्यन्तमेंव्योमवजीवकेविक्युंनहोउनकेसम्भवसेजी
वजन्यहै सिद्धांत जीवनहींजन्मताहै किसमें बहुतठौरमेंजन्म
प्रकरणमेंजीवकेजन्मकाश्रवणनहींहै ननुकहींनसुनाहुआजन्यनसुने
कावारणनहींकर्ताहै यहतुमनेकहाथा सत्यकहातोथा फिरज-
न्महीजीवकासम्भवनहींहै यहकहिताहूं किससेनित्यअजअवि-
कारीब्रह्मकोजीवरूपसेअवस्थानऔरब्रह्मरूपसेहै ऐसेकाजन्मयु
क्तनहींहै श्रुतिगण सुनो नजीवोम्रियतेसवाएषमहानजआत्मा
ऽजरोऽमृतोऽभयोब्रह्मअजोनित्यःशाश्वतोयंपुराणः अनेनजीवे-
नात्मनानुप्रविश्यनामरूपेव्याकरवाणिसएष इहप्रविष्टआनखा
ग्रेभ्यःतत्त्वमसि अहंब्रह्मास्मि अयमात्माब्रह्मसर्वानुभूरिति जोनि-
त्यतावादिनीजीवकेजन्मकोवारतीहैं ननुतुमनेबिभक्ततासेबि-
कारऔरविकारसेजन्मकहायासत्य है सुनो जीव का बिभाग स्व-
तःनहींहै बुध्यादिउपाधिकेनिमित्तसेहैजैसेव्योमकाघटादिकेसं
बन्धनिमित्तसेएकोदेवःसर्वभूतेषुगूढःसर्वव्यापीसर्वभूतान्तरात्मा
औरवेदहै सवाअयमात्माब्रह्मविज्ञानमयोमनोमयः प्राणमयश्च
क्षुर्मयःश्रोत्रमयइतियहअविकृतसत्एकब्रह्मकोअनेकबुध्यादिमय
त्वादिदिखाताहै जीवस्वरूपकेअज्ञानसेबोबुध्यादिकेआधीनसेभे
दकर्तृत्वादिकीगौणतासेप्राचुर्यार्थमयट्हैनविकारार्थजैसे स्त्रीम
योजाल्मइसकहिनेसेस्त्रीवशप्रतीतहैनस्त्रीकीविकार उपाधिके
जन्म नाश से औरके वेसुनतेहैं प्रज्ञानघनएवैतेभ्योभूतेभ्यःसमु
त्थायतान्येवानुविनश्यतिनप्रेत्यसंज्ञास्तीति अर्थदेहाकारपरिण
तभूतोंसेजन्मिकेतिनहीमेंलीनहो पीछेसे नष्टहोता है औपाधि
कमृत्युकेआगेसंज्ञानहींरहता है उपाधिनाशसेविशेषज्ञानकाअ

भावहीसंज्ञाकाअभावहै और आत्मरूपविज्ञानकाअभावनहींहै
विज्ञानघनमेंमरेपीछेसंज्ञानहींरहतीहै इसकहिनेसेमुझकोमो
हभ्रांतिकोतुमनेकहातुमारेकहे कोमैं नहींसमुझाहूं अपनेवचन
काअर्थतुमकहोयहमैत्रेयीकोप्रश्नथीमैंमोहकरवाक्यनहींकहिता
हूं जीवपरिणामीवोविनाशीनहींअविनाशीहै फिरकैसे कहाकि
मरेपीछेसंज्ञानहींरहतीहैसुनोविषयोंसे असङ्गरहिनेसे संज्ञाका
अभावकहाथाजीवब्रह्मकालक्षणभेदउपाधिनिमित्तसेहै अतऊ
र्ध्वंविमोक्षायैवब्रूहीतिच इसने विज्ञानमयहांकोसवसंसारधर्मों
केनिराससेपरमात्मभावकहा।हैविम्बप्रतिविम्बके तुल्यविरुद्धधर्म
भेदअध्याससेहैजीवविकारहैमुक्तिके योग्यनहींतिससे तत्त्वमसि
अखण्डार्थपरहैजन्मादिकाअध्याससे अनुवादकर्ताहै फलवलसे
जीवनित्यत्ववादिनीवलीयसीहै इस अविरोधसेआत्माकाजन्म
नाशनहींहै ॥

सुषुप्तिसाक्षिसिध्यधिकरण १२

ज्ञोतएव १८

आत्मास्वप्रकाशवोअनित्यज्ञानवान्कहिती श्रुतियोंका
विरोधनिरासार्थहै जैसेआत्मैवास्यज्योतिःपश्यंश्चक्षुःशृण्वन्श्रोत्रं
इसश्लोककाचक्षुर्द्रष्टावोश्रोत्रश्रोताहै अर्थ क्या जीवकणभुजमत
केनाईआगन्तुकचेतनवोस्वतोअचेतन याहोस्वित्सांख्यमतकेना
ईनित्यचेतनस्वरूपहै ऐसेवादियोंकेविवादसे संशयहै आत्माका
आत्ममनः संयोगजआगन्तुकचैतन्यहै वह्निघटसंयोगजरोहिता
दिगुणवत्नित्यचैतन्य मे सुप्तमूर्छितअपस्मारितकोभीचैतन्यहो
इनकोपूछेसेकहितेहैं किहमकोकुछचेतनथाफिरस्वस्थचेतदेखते
हैंइसकादाचित्कचैतन्यसे आगन्तुकचैतन्यआत्माहै अनुमान
साधनाधीनज्ञानहोनेसेनहींस्वप्रकाशजीवहै व्यतिरेकदृष्टांतमई

श्वरवत् इसनिश्चयकाबाधसुनो ह्नः नित्यचैतन्यजीवहै अतएव जिससेजन्मतानहींहै अविकृतपरब्रह्महीउपाधिकेसङ्गसेजीवरू पमेस्थितहै औरब्रह्मकाचैतन्यस्वरूपपढ़ाहै श्रुतिमें विज्ञानमा नन्दंब्रह्म सत्यंज्ञानमनन्तं ब्रह्म अनन्तरोऽवाह्यःकृत्स्नःप्रज्ञानघ- नएवेति फिरब्रह्महीजीवहै तिससेजीवभीनित्यचैतन्यस्वरूपहै अग्नौष्णाज्योतिर्वत् केवलब्रह्मजीवकेअभेदसेस्वप्रकाशमतसमु भोकिन्तुयोयंविज्ञानमयइसप्रकरणमें श्रुतिभीहैं असुप्तःसुप्तान- भिचाकशीतिअत्रायंपुरुषःस्वयंज्योतिर्भवतीति नहि विज्ञातुर्वि ज्ञातेर्विपरिलोपोविद्यतइति अर्थ असुप्तःस्वयंभासमानआत्माही सुप्तान् नष्टव्यापारवागादिइन्द्रियोंकोदेखअभिचाकशीति स्वप्न केअर्थकोदेखताहैयहांस्वप्नमेंबुद्धिकेसाक्षिकाविनाशनहींहैअययो वेदेदंजिघ्राणीतिसआत्मेतिच सवइन्द्रियोंसेजन्यगन्धादिज्ञान- केअनुसन्धानसिध्यर्थआत्माज्ञानरूपहै यदिकहोकिनित्यचैतन्य रूपमेघ्राणादिव्यर्थहैं सोनहीं गन्धार्थअन्तःकरणकीवृत्तिइष्टहै- सोकहाश्रुति मे गन्धायघ्राणमित्यादिसुप्तादिदशामेंआत्माकेहो नेपरभीचैतन्यकेअभावसे आत्माचिद्रूपनहींहै इसकानिरासश्रु तिनेहीकहाहै सुषुप्तिकेप्रकरणमें यद्वैतन्नपश्यतिपश्यन्वैतन्नपश्य ति नहिद्रष्टुर्दृष्टेर्विपरिलोपोविद्यतेऽविनाशित्वात् नतुतद्द्वितो यमस्तिततोन्यद्विभक्तंयत्पश्येदित्यादि सुषुप्तिमेअचेतयमानताबि षयोंकेअभावसेहै नचैतन्यकेअभावसे जैसे व्योमाश्रयप्रकाशका प्रकाश्यकेअभावसेअनभिव्यक्तिहै नस्वरूपाभावसे तद्वदेदं आ- त्मानज्ञानंद्रव्यत्वात् यहतर्कश्रुतिविरोधमेआभासहै शृखन्श्रो त्रमित्यादि इनअनित्यज्ञानवादिनोकाअर्थवृत्तिविषयज्ञानपर- है सार निरवयवात्माअनित्यगुणोनहींमनसेसंयोगायोगसे न- स्वसमवेतज्ञानवेद्यहै समवायकेअभावसेऔरकर्मकर्त्ताकेविरोध

सेकिञ्चआत्माहीज्ञानहै ज्ञानकीएकदृत्तिमेलाघवसे औरवृत्ति-
मनकेपरिणामसेजड़है इससेहमकोज्ञानदीकागौरवनहीहै वै-
शेषिकादिकीतर्कश्रुतिविरोधसेआभासहै नकितर्कसे तिससे
हमनिश्चयकर्तेहैं किनित्यचैतन्यस्वरूपहीआत्माहै ॥

जीवविभुत्त्वाधिकरण १३

उत्क्रांतिगत्यागतीनां १९

उत्क्रांतिगत्यागतिश्रवणानितुजीवस्यपरिच्छेदंप्रापयन्ति क्या
स्वप्रकाशसेकुछुवहिछपरिमाणभीतर वाहिरजीवकाहै वानहींय
हचिन्ताहै क्याअणुउतमध्यम आहोस्वित्महत्है ननु तुमने क
हायाकिजीवब्रह्मनित्यचेतनअनन्तहै फिर कैसेजीवकेपरिमाण
कीचिन्ताकाअवतारहै सञ्चयहीहै फिरकहिताहूं सोसुनो देह
सेनिकलनावीजानाआनासुन्नाजीवकोपरिच्छिन्नजनाताहैनकि-
वलइनहीसेपरिच्छिन्नहै किन्तुअणुभीश्रुतिनेपढ़ाहै जैसे एषोणु
रात्मेति इससबकोअनाकुलताकोसिद्धयर्थइसअधिकरणकाप्रार
म्भहै पूर्व उत्क्रान्तिगतिआगतिइनकेसुन्नेसे जीवअणुहै सयदा-
स्माच्छरारादुत्क्रामतिसहै वैतैसवैरुत्क्रामतीति येवैकेचास्मात्लो-
कात्प्रयन्तिचन्द्रमसमेवतेसर्वंगच्छन्तीतितस्माल्लोकात्पुनरेत्यस्मैलो-
कायकर्मणइति इनसेजीवपरिच्छिन्नहीप्राप्तहै बिभुकाचलनन-
हींकसक्तेहैं फिरदेहसमआत्माआर्हतपरीक्षामेनिरासकरा-
या मुमूर्षुजीवबुध्यादिसंयुक्तचन्द्रलोकसेइसलोककी लौटि आ-
ताहै कामकरनेकोप्रेहिरपूर्वेभिःपथिभिरित्यादिमन्त्रोंसेभीजीवप
रिच्छिन्नहीहै तिससेजीवअणुप्राप्तहै ॥

स्वात्मनाचोत्तरयोः २०

उत्क्रांतिरुत्तरयोर्गत्यागत्योःस्वात्मना कर्त्रासम्बन्धादणुत्वमिति
सूत्रयोजना ॥

उत्क्रान्तिअचलनकोभीग्रामस्वाम्यनिवृत्तिकेतुल्य देहस्वाम्य-
निवृत्तिहै कर्मक्षयसेऔरनदेहसेनिर्गमयहकिसी की कल्पना है
अचलकोगत्यागतिकासम्भवनहींहै गमनकर्त्ताकेआश्रितलोकमें
प्रसिद्धहै कर्त्तामें संयोगविभागरूपअतिशयकेहेतुसे अमध्यमप-
रिमाणसन्तेजीवअणुहै गतिमत्तासेपरमाणुवत् स्वाम्यनिवृत्ति-
मात्रवुहनहींकिन्तुदेहसेअपसर्पिप्रतीतहै जोदेहसेनिर्गतहै उस
कोगत्यागतिभीनहो देहकेजिनप्रदेशोंसेनिकलताहै तेभीअव-
धिसुने है जैसे चक्षुषोवामूर्ध्नोवान्येभ्योवाशरीरदेशेभ्य इति अ-
र्थ मुखादिसेयहजीवजाताहै सएतास्तेजोमात्राःसमभ्याददानो
हृदयमेवान्ववक्रामति शुक्रमादायपुनरेतिस्थानमिति अर्थ जी
वस्वापादिमेइन्द्रियोंकोलेकेहृदयमेजाता है फिरशुक्रप्रकाशइ-
न्द्रियवर्गकोलेकेजागरितस्थानमेआताहै इसनेआंतरदेहमेदेही
केवेकहेहैं तिससेजीवअणुहै ॥

नाणुरतच्छ्रुतेरितिचेन्नेतराधिकारात् २१

संस्कृतेनसङ्कलनं यथापिस्यान्नाणुरयमात्मा कस्मात् अतच्छ्रु-
तेःअणुत्वविपरीतपरिमाणत्वश्रवणादित्यर्थः सत्यंज्ञानमनन्तंब्र-
ह्मेत्येवंजातीयकाहिश्रुतिरात्मनोऽणुत्वविप्रतिषिध्येतेतिचेन्नैषदो
षःकस्मात्इतराधिकारात् ब्रह्मप्रकरणात् भाषा जीवअणुनहीं-
महान्सुननेसे जैसे सवाएषमहानजआत्मा योयम्विज्ञानमयः-
प्राणेषु आकाशवत्सर्वगतश्चनित्यः इति महत्त्वश्रुतिब्रह्मप्रकरण-
मेहै क्युं वेदान्त में प्रधान ब्रह्महो प्रकृतहोने से और विरजः
परआकाशादिति इसविधानसेतहां२विशेषाधिकारब्रह्महीका-
है ननुयोयम्विज्ञानमयःप्राणेषुइसमें जीवहीमहान्कहिनेसेवि-
ज्ञानमयश्रुतिनेब्रह्मप्रकरणकाबाधकिया सोनहींअणुजीवकाब्र-
ह्मसेभेदाभेदमानअभेददृष्टिसेमहान्कहाहै जैसे बामदेवकोस-

वरूपकहाहै ऐसाहीदेखो तिससेप्राज्ञकेअर्थमहान्परिमाणका अणुजीवसेविरोधनहींहै ॥

स्वशब्दोन्मानाभ्यांच २२

इतश्चाणुरात्मा यतःसाचादेवास्याणुत्ववाचीशब्दःश्रूयते त थोन्मानमपिजीवस्याणिमानङ्गमयति ॥

प्राणसम्बन्धसेसाचात्जीवअणुसुनते हैं एषोणुरात्माचेतसा वेदितव्योयस्मिन्प्राणःपञ्चधासम्विवेशेति और अत्यन्तअल्पमा- नसेभोअणुहै वालाग्रशतभागस्यशतधाकल्पितस्यचभागोजीवः सविज्ञेयःसचानंत्यायकल्पतेइतिआराग्रमात्रोह्यवरोपिदृष्टइति ननुअणुजीवदेहकेएकप्रदेशमेंपड़ाहोनेसेसबदेहमेंउपलब्धिविरु द्धहो देखतेहैंगङ्गानहानेवालेकेसबअङ्गोंमे शैत्योपलब्धि निदाघ मेंचलनेवालेकेसबदेहमेतापोपलब्धि इसकाउत्तरपढ़ताहै सूत्र कार॥

अविरोधश्चन्दनवत् २३

जैसे देहमेंएकठौरलगाचन्दनबिन्दुसबदेहकोठण्ढ देता है तैसेजीवएकठौरठहिरासबदेहमेंज्ञानकरेगा सबदेहव्यापित्वचा कात्मासेसम्बन्धहै तिससेकूनेसेज्ञानकरणकीमहिमासेजीव- भीव्यापिकार्यकर्त्ताहै सम्बन्धत्वगवयविमेंहै औरअवयवीएकहै तिससेआत्मसंयोगसबत्वचामेंहै ॥

अवस्थितिवैशेष्यादितिचेन्नाभ्युपगमा द्धृदिहि २४

जोचन्दनविन्दुवत्अविरोधकहाथा सोअयुक्तहै दृष्टांतओ रदार्ष्टान्तिककीअतुल्यतासे देहकेएकठौरमेंजोजीवसिद्धहो तो- चन्दनदृष्टान्तहो यहप्रत्यक्षदेखतेहैं किवुहदेहमेंएकठौरलगास-

वकोसुखदेताहै फिरजीवकासबमेंउपलब्धिमात्र है और नएक-
ठौरठहिरना वुहअनु*मेयहै फिरउसकासम्भवनहींहै व्यभिचा-

* आत्माल्पःव्यापिकार्यकारित्वाच्चन्दनविन्दुवत् ॥

रसे क्या जीवकोसबदेहकीवेदनात्वचाकेतुल्य सबदेहमें व्यापि-
सेहै या क्या विभुसेव्योमकेतुल्य है अथोस्वित् चन्दनविन्दुकेतु-
ल्यएकदेशस्थअणुसेहै यह संशयहै परिहारकहिताहूं यह दोष
नहीं किससे वेदान्तमेंदेहकेएकदेशहृदयमेंजीवपढ़ाहै हृदिह्येष
आत्मा सवाएषआत्माहृदिकृतमआत्मेतियोयम्विज्ञानमयःप्रा
णेषुहृद्यन्तर्ज्योतिःपुरुषःइति तिससेदृष्टांतदार्ष्टान्तिककोअवैष-
म्यसेयुक्तहै अविरोधश्चन्दनवत् ॥

गुणाद्वालोकवत् २५

जैसे दीपादि एकठौर धरे सब घरकोप्रकाशतेहैं तैसेहीअ
णुजीवकाचैतन्यगुणसबदेहमेंकामकर्ताहै यहमतांतरहै होक-
दाचित्सबदेहमेंसुखसावयवचन्दनकेसूक्ष्मअवयवोंकेफैलनेसेफि
रअणुजीवकेतोअवयवहीनहीं तो कैसेसबदेहमेंफैलेंगे इसशङ्का
सेकहाथा किगुणाद्वालोकवत् ज्ञानगुणिव्यतिरिक्तदेशव्यापि
गुणत्वाद्रूपवत् फिरकैसेगुणगुणीकोछाड़औरठौरठहिरेगा पट-
काशुक्लगुणपटकोछाड़घटमेंनहींदेखतेहैं यदिकहोतुमकिदीपप्र
भावत्हो सोभीनहीं प्रभाभीद्रव्यहै निविडावयवतेजदीपहै औ
रविरलावयवतेजप्रभाहै इससेउत्तरपढ़ताहै ॥

व्यतिरेकोगन्धवत् २६

जैसे गन्धगुणअपनेआश्रयगन्धद्रव्यकोछोड़केबर्तताहै कुसु-
मादिकोअप्राप्तिमेंकुसुमगन्धकी उपलब्धिसे तैसे अणुभीजीवके
चैतन्यगुणकाजीवसेविश्लेषहोगा गन्धगुणकाआश्रयसेविश्लेषदे-
खनेसे रूपवत्आश्रयसे चैतन्यगुणकाविश्लेषनहींहै यहहेतुअनै

कान्तिकहै यदिकहोकिगन्धभीसूक्ष्मद्रव्यपरचढ़केदौड़तीहै सो भीनहींजिसमूलद्रव्यसे विश्लेषहै तिसकेक्षयप्रसङ्गसे औरअक्षीय मानहीद्रव्यपूर्वावस्थासे प्राप्तहै अन्यथाप्रथमकीगुरुत्वादिसेहीन हो होयहांगन्धकेआश्रयविश्लिष्टअवयवअल्पहीअवयवांतरकाप्रवे शतिससे उनकाविश्लेषहीप्रवेशहैभीसोभीनहींज्ञातहै तिससे गु- रुत्वकाक्षय नहीं है विसतमविश्लिष्टावयवंपूर्वावस्थातोगुरुत्वाद्य पचयहोनत्वात्सम्मतवदितिभावः यदि कहो कि सूक्ष्म गन्धपर माणुसवठौरफैलेनाकमेंआके गन्धबुद्धिजनतेहैं सोनहींपरमाणु कोअतीन्द्रियतासेजोत्रसरेणुगन्धकहो तोस्फुटनहो औरस्फुट गन्धनागकेसरादिमेंहैलोकमेयहप्रतीतिनहीं कि मैनेगन्धवत्द्र व्यसूंघाहै फिरगन्धहीसूंघाहै यही लोकोंमेंप्रतीतहै इससेपुष्पा दिस्थगन्धकाहीगुणिसेव्यतिरेककहो यदि कहोकि गन्धोनगुणि विश्लिष्टःगुणत्वाद्रूपवत्सोनहींगन्धप्रत्यक्षहै तिससेअनुमानकोप्र वृत्तिनहींजिससेजैसालोकमें दृष्टहैसोतैसाहीअनुमातव्यहै निरू पकोंसेअन्यथानहींयहनियमकरनेकोशक्यनहीं किरसगुणजीभ सेज्ञातहै तोरूपादिभीगुणजीभहीसेज्ञातहों ॥

तथाचदर्शयति २७

हृदयायतनत्वमणुपरिमाणत्वञ्चात्मनोभिधायतस्यैव आ- लोमभ्यआनखाग्रेभ्यइतिचैतन्येनगुणेनसमस्तशरीरव्यापित्वन्द र्शयति आत्माचैतन्यसेसबदेहमेंव्याप्तहै सूत्रश्रुतिदोनोंकाअर्थहै

पृथगुपदेशात् २८

प्रज्ञयाशरीरंसमारुह्येतिचात्मप्रज्ञयोःकर्तृकरणभावेनपृथगु पदेशाच्चैतन्यगुणेनैवास्यशरीरव्यापितागम्यते तदेषांप्राणानां- विज्ञानेनविज्ञानमादायेतिचकर्त्तुः शरीरात्पृथग्विज्ञानस्योपदे शः अत्यन्तरार्थ सूत्रपृथग्है अर्थ विज्ञानं इन्द्रियोंकी ज्ञानश-

क्ति विज्ञानेन चैतन्यगुणसे ग्रहणकरसोताहै इत्यर्थं ॥

तद्गुणसारत्वात्तु तद्व्यपदेशःप्राज्ञवत् २९

एतमेवाभिप्रायमुपोद्बलयति तस्मादणुरात्मेति अणुत्वश्रुतिजीवपरवोविभुत्वश्रुतिईश्वरपरइमएकदेशिमतनिरासार्थसिद्धांतसूत्रहै तद्गुण तुपूर्वपक्षकेनिरासार्थहै ॥

आत्माअणुनहींजन्मनसुननेसेवोब्रह्महीजीवरूपमेप्रविष्टसुननेसेऔरतादात्म्यकेकहनेसेब्रह्महीजीवकहाथा ब्रह्माभिन्नत्वाद्विभुर्जीवःब्रह्मवत् फिरयदिब्रह्महीजीवहै तौ जितनाब्रह्महैउतना जीवहोनेकोयोग्यहै फिरब्रह्मविभुपढ़ाहै तिससे जीवभीविभुहै सवाएषमहानजआत्मा योयंविज्ञानमयःप्राणेष्विति अणुत्वश्रुतिऔपाधिकअणुत्वपरहैप्रधानविभुत्वकेविरोधसे भाव श्रैत्यकी असिद्धिसे अध्यस्ताणुत्वपर वा कथञ्चिदर्थवाद है औरअणुजीवकोसबदेहमेंवेदनासिद्धिनहींहै यदिकहोकित्वचाकेसम्बन्धसेहोसोभीनहीं कांटालगेमेभीसबदेहमेवेदनाहो त्वचाकांटाकासंयोगसबत्वचामेवर्त्तताहै औरत्वचासबदेहमेंव्याप्तहैऔरकण्टकतुन्नपावतलेमेहीवेदनालभताहै जो कहाथाकिगुणकाभीगुणीसेविश्लेष है गन्धवत् गन्धोनाश्रयाद्विश्लिष्टःगुणत्वाद्रूपवत्गुणकागुणिदेशहै गुणिकेअनाश्रितगुणकागुणत्वहीहोनहो गन्धभीगुणत्वसेसाश्रयहीसञ्चारीहै अन्यथागुणहानिहो सोकहाहैपायननेउपलभ्याप्सुचेद्गन्धंकेचिद्ब्रूयुरनैपुणाःपृथिव्यामेवतंविद्यादपोवायुंच संश्रितं यदिजीवकाचैतन्यसबदेहमेंव्याप्तहोतोजीवअणुनहोजीवकास्वरूप चैतन्यही है जैसे अग्निकाऔष्ण्यज्योतिः फिरइसमे गुणगुणिकाविभागविद्यमाननहींहै बड़ाअनुद्भूतस्पर्शउद्भूतगन्धत्रसरेणुकेसहज्ञातहै अवयवांतरप्रवेशसे सहसा मूलद्रव्यकाभी क्षयनहींहै भावहैदेहमितमानखण्डितहै फिरपरिशेषसेजीवऽवि

भुहै फिरकैसे अणुकहा तद्गुण बुद्धिकेगुणइच्छाद्वेषसुखदुःखादि-
सेआत्मासंसारीहै केवलनहींहै फिर बुद्धिउपाधिकेधर्माध्यास-
सेकर्त्ताभोक्ताआदिलक्षणवान्‌संसारीहै औरनित्यमुक्तसन् अक
र्त्ताअभोक्ताआत्माहै फिर जीवका परिमाणबुद्धिकेपरिमाणसे
कहाहैफिरबुद्धिकेउत्क्रांत्यादिसे जीवकी उत्क्रांत्यादिकहैनस्व
तः वालाग्र इति इस वेदमेंजीवकोअणुकहिफिरउसकोहीअन
न्तकहाहै बुद्ध्युक्तऐसाहो कि औपचारिक अणुत्वकोपारमार्थि
कआनन्त्यजीवको हो एकमेअणुत्वानन्त्यमुख्यनहींकल्पसक्तेहो
औरआनंत्यऔपचारिकभीनहीं कहि सक्तेहो सोयमितिवत्अ
खण्डाभेदार्थत्वादानंत्यं सत्यमणुत्वमध्यस्तंसबवेदमें जीवकोब्रह्म
हीकहनेसे और बुद्धिकेगुणोंकेनिमित्तसे आत्मामे अध्यस्तगुणहैं
फिर उन अध्यस्तआत्मगुणोंसेही आराग्रपरिमाणजीवदेखाऔर
स्वतःअनन्तहै ॥

नचक्षुषागृह्यतेनापिवाचानान्यैर्देवैस्तपसाकर्मणावाज्ञानप्र-
सादेनविशुद्धसत्वस्ततस्तुतंपश्यतेनिष्कलंध्यायमानः यहकहिफि
रकहाकि एषोणुरात्मेति इससेभीजीवअणुइष्टनहींहै पूर्वपरा-
त्माहोनेआदिसेअग्राह्यत्वोज्ञानकेप्रसादसेग्राह्य कहने से परहो-
जानो जैसेजीवअध्यस्ततैसेअणुत्वभीअध्यस्तहै तिससेजीवमुख्य
अणुनहींसिद्धहै फिर अणूक्ति दोप्रकारसे है दुर्ज्ञानकेअभिप्रा-
यसेवाउपाधिकेअभिप्रायसे औरभेदोपदेशोंसेंभीउपाधिभूतबु-
द्धिसेहीजीवशरीरपरचढ़केजाताहै प्रज्ञयाशरीरमारुह्येति बुद्धि
प्रज्ञायहभेदशिलापुत्रककेशरीरकीनाईहैनिर्गुणसेगुणगुणिकाभे
दनहींहैहृदयबुद्धिकाघरहैऔरबुद्धिजीवकाघरहैफिरबुद्ध्युपाधिसे
हृदयायतनहै औरउत्क्रांत्यादिभी बुद्ध्युपाधिसेवेददिखाताहै क
स्मिन्न्वहमुत्क्रान्तउत्क्रांतो भविष्यामिकस्मिन्वाप्रतिष्ठितेप्रतिष्ठा
स्यामीतिसप्राणमसृजततिफिरजोउत्क्रान्तिहीनहींतोगतिकोआ

गतिकहांदेहसेविनानिकले उनका सम्भवहीनहोऐसेबुद्धाद्युपाधिसेजीवकोअणुत्वादिकहाप्राज्ञवत् जैसेसगुणउपासनोंमेंप्राज्ञ परात्माकोउपाधिगुणोंसेअणीयस्त्वादि कहाहै तैसे औरोंसेजानो अणीयान्व्रीहेर्वायवाद्वामनोमयःप्राणशरीरः सर्वगन्धःसर्वरसःसत्यकामःसत्यसङ्कल्पइति यहतुमृहारा कहातोहोयदिबुद्धिगुणोंसे आत्मासंसारी कल्पाहो फिरबुद्धिवोआत्माकेसंयोगकावियोगअवश्यहोगा फिरबुद्धिकेबियोगमेंविभक्तआत्मालक्ष्यनहोनेसेअसत्वासंसारीहो इसशङ्काकाउत्तरपढ़ताहैसूत्रकार ॥

यावदात्मभावित्वाच्चनदोषस्तद्दर्शनात् ३०

पीछेकादोषनहींहै किससे यावत् जौलौ संसारीहै तौलौ जीवकोसम्यग्दर्शनसेसंसारित्वनहींछूटैगा तौ लौबुध्यादिकासंयोगजीवसेनछूटैगा तोहीलौजीवकाजीवत्ववो संसारित्व है जौलौउसकोबुध्युपाधिकासम्बन्धहै औरपरमार्थसेबुद्धिहीउपाधिकेसम्बन्धसेकल्पितस्वरूपसेभिन्नजीवप्रसिद्धनहीहै नित्यमुक्तस्वरूपसर्वज्ञईश्वरसेअन्यदूसराचेतनधातु वेदकेअर्थविचारमेंमेंनहींलभताहै कहांबुहच्छिपाहै तुमकर्मोपासनमेंभटकेहो इससेनहींलखोउसको कैसे जानाकियावदात्मभावीबुद्धिसंयोगहै तद्दर्शनादित्याह वेद दिखाताहै योयंविज्ञानमयःप्राणेषुहृद्यन्तर्ज्योतिःपुरुषःससमानःसन्नुभौलोकावनुसंचरतिध्यायतीवलेलायतीवेत्यादि इसमेंविज्ञानमयशब्दसेबुद्धिमयकहाहै और विज्ञानमयोमनोमयःप्राणमयश्चक्षुर्मयःश्रोत्रमयइति इसमेंविज्ञानमयकोमनआदिकेसङ्गपढ़नेसेबुद्धिमयबुद्धिके गुणोंसेइष्टहै जैसेलोकमेंस्त्रीमयकहनेसेस्त्रीसेरागादिप्रधानकहा है तद्वत् ससमानलोकांतरकेजानमें बुद्धिकाअवियोगदिखाताहै किसकेसमान सन्निधानसेबुद्धिकरकेजाताजानागयाहै वुहीदिखायाहै ध्याय-

तौव इनसे स्वतोनध्यातानचलताहै ध्यायतीबुद्धिमें ध्यातासा-
वोचलतीसेचलतामाहै औरसुनोमिथ्याज्ञानसेआत्माकाबुद्ध्या
दिमेंसम्बन्धहै औरमिथ्याज्ञानकीसम्यग्ज्ञानसेअन्यच निवृत्ति
नहीं इस्से जोलोब्रह्मात्मताकाबोध नहींहै तोलो बुध्युपाधिस-
म्बन्धकाशमभीनहींहै औरइसअर्थको ऋग्वेदकामन्त्रदिखाताहै
वेदाहमेतंपुरुषम्महान्तमादित्यव*र्णं तमस:प?रस्तात् तमेवव‍ि
दित्वातिमृत्युमेतिनान्य:पन्थाविद्यतेऽयनायेति ॥

पुंस्त्वादिवत्त्वस्यसतोऽभिव्यक्तियोगात् ३१

सुषुप्तिमेंबुद्धिहै तोब्रह्मसम्पत्तिनहो औरप्रलयमेबुद्धिहोने
सेप्रलयनहो फिरइनमेआत्माकेसाथबुद्धि सम्बन्ध अयुक्त है वेद:
सतासोम्यतदासम्पन्नोभवतिस्वमपीतोभवतीति और सबविका
रकाप्रलयमानाहै तोकैसे जौलोआत्मातोलोबुद्धिसम्बन्धहै इस
काउत्तर पुं० जैसेलोकमेबीजादिस्थूलसूक्ष्मरूपसेविद्यमानहो-
बाल्यादिमेंअप्राप्तवोअविद्यमानवत्रहितेहैं यौवनमे प्रकटहोते
हैं जोअविद्यमानजन्मतेहों तो षण्ढादिमेभीजन्मोसूत्रमेआदि-
शब्दसेदाढ़ीचुचीसींगआदिकायहणाहै ऐसेहीबुद्धिसम्बन्धशक्तआ-
त्मासेविद्यमानहो सुषुप्तिप्रलयमेंफिरजागरनवोसर्गमेप्रकटहो-
ताहै यहीव्यवस्थायुक्तहै किसीका जन्मआकस्मिकसम्भवनहीं-
अतिप्रसङ्गसेवेददिखाताहै सुषुप्तिमे अविद्यारूपबीजकेसद्भानसे
कारायेउत्थानकीसतिसम्पद्यनविदु: अविद्यारूपबीजकासद्भावका
हासतिसम्पद्यामह इति तइहव्याघ्रोवासिंहोवेतिइस्से उनकीअ
भिव्यक्तिकहीहैतिस्से सिद्धहैयावदात्मभावीबुध्युपाधिसम्बन्ध: ॥

नित्योपलब्ध्यनुपलब्धिप्रसङ्गोऽन्यतरनियमोवान्यथा ३२

* स्वप्रकाशं ॥ ३३ ? अज्ञानास्पृष्टं इत्यर्थ: ॥

बुद्धिकेहोनेमेंमानकहासूत्रकारने बुद्धिद्रंव्यआत्माकाउपा
धिभूतअन्त:करणमनबुद्धिविज्ञानचित्तमनसाह्येव पश्यतिबुद्धिस्व
नविचेष्टति विज्ञानंयज्ञन्तनुतेचेतसावेदितव्य: चित्तञ्चचेतयित
व्यमिति इसअन्त:करणको अवश्यमानो आशयप्रत्यक्षवोश्रुतिमें
विवदमानकेअर्थव्यासङ्गकोअसिद्धिसेअन्त:करणसिद्धहै मनकेवि
नापांचइन्द्रियोंकोपांचअर्थकेसम्बन्धमेंयुगपत्पांचज्ञानहो मनसे
भिन्नसामग्रीकेनहोनेसेयदि सामग्रीकेहोनेमें ज्ञानका अभावहै
तोसदाहीज्ञाननहो इस्से जोकभीज्ञानहोता कभी नहींइसका
नियामकमनहै इतिभाव ननु काराग्निकेसंयोगमेंकभीदाहहो
ताहै जैसे तैसेकभीज्ञानहोफिरमनकाक्याकामहैसामग्रीसेनि
त्यज्ञानवाआत्माकावा इन्द्रियोंका कारणकी शक्तिकाप्रतिबन्ध
अङ्गीकारकरोजैसेमणिसेअग्निशक्तिप्रतिबद्धहै फिर आत्मशक्ति
काप्रतिबन्धनहीहै अविकारसे इन्द्रियकोपूर्वापरक्षणमेंशक्तिथी
फिरकैसेदूरहोप्रतिबन्धकके अभावसेदृष्टछाड़अदृष्टकल्पनअयुक्त
है अतिप्रसङ्गसेऔरव्यासङ्गकाप्रतिबन्धकनहींहै मनके अभावमे
उसकाभाअसम्भवहै जैसे रसादि कायुगपत्ज्ञानकीप्राप्तिमेंरस
बुभुक्षारूपव्यासङ्गरूपज्ञानका प्रतिबन्धक कहो बुहगुणसेगुणा
श्रयहै रूपवत् फिरआत्मानिर्गुणहै कोईगुणोकेअयोगसेमनहो
गुणीमानो इसव्यासङ्गको असिद्धिसे मनकीसिद्धिहै अनिच्छुको
भीदुर्गन्धकेज्ञानसे बुभुत्साज्ञानकी नियामिका नहींहै यहमत
कहो बहुत विषय के सन्निधानमे कहीं उसकोनियामकमाना
है औरजिसमतमेंइच्छादिआत्माकेधर्महैं तिसमेंमनंदुर्लभहै इ
च्छादिधर्मीआत्मासेव्यासङ्गसिद्धहै अन्यत्रमनाअभूवन्नादर्शमन्य
त्रमनाअभूवन्नाश्रोषमिति मनसाह्येवपश्यतिमनसाशृणोतीति
इस्से व्यासङ्गमनमेंहै कामादिभीमनकीवृत्तिहैं काम:सङ्कल्पो-

विचिकित्साश्रद्धाश्रद्धाधृतिरधृतिर्ह्रीर्धीर्भीरित्येतत्सर्वं मन एवेति तस्माद्युक्तमेतत्तद्गुणेति बहुधा पढ़ा है जैसे संशयादिवृत्तिकमन है

जीवकर्तृत्वाधिकरण ॥ १४ ॥

कर्त्ता शास्त्रार्थवत्वात् ३३

संस्कृतेनसङ्कलनं कर्त्ता चायञ्जीवः स्यात्कस्माच्छास्त्रार्थवत्त्वात् एवञ्च यजेत जुहुयाद्दद्यादित्येवम्विधम्विधिशास्त्रमर्थवद्भवति अन्यथा तदनर्थकं स्यात् तद्धिकर्तुः सतः कर्तव्यविशेषमुपदिशति नचासति कर्तृत्वे तदुपपद्येत तथेदमपि शास्त्रमर्थवद्भवत्येष हि द्रष्टा स्प्रष्टा श्रोता मन्ता बोद्धा कर्त्ता विज्ञानात्मा पुरुष इति ॥

भाषा असङ्गवो विध्यादिवेदों के विरोध से संशय में बुद्धि को कर्त्ता माने से ही विध्यादिशास्त्र की सिद्धि से अकर्त्ता आत्मा इस सांख्यपक्ष के निरासार्थ आत्मा में कर्त्तृत्व का अध्यारूह है अथवा पूर्वपक्ष में सम्बन्ध के अभाव से शास्त्र व्यर्थ है सिद्धांत में कर्त्तृत्वादि सम्बन्ध के होने से शास्त्रार्थवत् है यह भेद है मुझे यह कर्त्तव्य है इस बोध में जो समर्थ चेतन है वुही कर्त्ता है न जड़ बुद्धि और भोक्ता आत्मा को ही कर्त्ता कही शास्त्रफलंप्रयोक्तरीतिन्यायसे ॥

विहारोपदेशात् ३४

संस्कृतेनसङ्कलनं इतश्च जीवस्य कर्त्तृत्वं यञ्जीवप्रक्रियायां संध्ये*स्थाने विहारमुपदिशति सईयतेऽमृतो यत्र कामम् इति स्वेशरीरे यथा कामम्परिवर्तत इति च इससे भी आत्मा कर्त्ता है कि स्वप्न में अमृत आत्मा यथेष्ट चलता है यद्यपि स्वप्न में यथेष्ट वर्तना हो सक्ता है न कि जागरण में जैसे एक पांव से चलना ॥

उपादानात् ३५

*स्वप्ने

तदेषांप्राणानांविज्ञानेनविज्ञानमादायेति प्राणान्गृहीत्वे तिच अर्थ प्राणोंकेबीचबुद्धिसे विज्ञानसमर्थइन्द्रियोंको लेकेसोताहै औरप्राणोंकोग्रहणकरवर्ततहै इसमें आत्मा सोपादान कर्त्ताहैकुविन्दसाजोकर्त्तानहींतोउपादानभीसिद्धनहीं भाव ॥

व्यपदेशाच्चक्रियायांनचेन्निर्देशविपर्ययः ३६

यदिविनाशब्दजीवकानिर्देशनहींतदाप्रथमानिर्देशसे विपर्ययहोवुहयहकिकरणद्योतिकातृतीयाकानिर्देशहोइसमेंतनुतेइस कर्तृवाचीआख्यातसे विज्ञानशब्दकी समानाधिकरण के निर्देश से लौकिकीवैदिकीप्रक्रियामेंआत्माकर्त्तासूचनकराहै यहसूचार्थहै ननुविज्ञानशब्दबुद्धिवाचकहै तो कैसे जीवकोकर्त्ताकहैगा- मैनहींकहिताहूं किजीवहीकहाहै नकि बुद्धियहकहिताहूं कियदिजीवकानिर्देशनहोतातोतीसरीविभक्ति होती जैसे अन्यत्रहै विज्ञानंयज्ञन्तनुतेकर्माणितनुतेपिचेतितदेषांप्राणानांविज्ञानेन विज्ञानमादायेति यहांविज्ञानंयज्ञंतनुत इति कर्तृसामानाधिकरण्यकेकहिनेसे बुद्धिव्यतिरिक्तआत्माकोकर्तृत्वसूचनसे दोषहै यदिबुद्धिसे भिन्नजीवकर्त्ताहो तदास्वतन्त्रकर्त्ताअपनेकोनियमसे हीप्रियहितसम्पादनकरे।फिरविपरीतभी सम्पादनकर्त्तालभता है स्वतन्त्रकेअनियमसे प्रवृत्तियुक्तनहीं सुनोइसकाउत्तरपढ़ासूचकारने ॥

उपलब्धिवदनियमः ३७

जैसे आत्माउपलब्धिकेप्रतिस्वतन्त्रहोअनियमसे इष्टअनिष्ट लभताहैऐसे अनियमसेहीइष्टअनिष्टका संग्रहकरेगा यदि कहो किउपलब्धिमें अस्वतन्त्रहै उपलब्धिके हेतूपादानोंकेग्रहणसे सो

नहींउपलब्धिकेहेतुनेत्रादिकोबिषयकेसाथसम्बन्धकरनाहैप्रयोजनहै औरउपलब्धिमेआत्माअन्यकीअपेक्षानहींकर्त्ताहै चैतन्ययोगसेऔरभीअर्थक्रियामेआत्माअत्यन्तस्वतंत्रनहींहै देशकालादिनिमित्तविशेषसहायकीअपेक्षासेकर्त्ताकीकर्तृत्वटूरनहींहोतीहै ईश्वरभीशक्तिकेवशरचनामेंहै तन्तुवायभीतन्तुतुरीवेमादिसापेक्षकर्त्ताहै औरसहकारीकीवैचित्र्यसे दृष्टकी भांतिसे अनिष्टअर्थके करने मेंअनियमसे प्रवृत्तिवोस्वातन्त्र्यआत्माकोबिरुद्धनहींहै ॥

शक्तिविपर्ययात् ३८

इससे भीबुद्धिसे भिन्नजीवकर्त्ताहै यदिबुद्धिहीकर्त्ताहोती शक्तिविपर्ययहो बुद्धिकोकरणशक्तिजायेऔरकर्तृशक्ति आये औरबुद्धिकोकर्तृशक्तिमेबुद्धिहीकोअहंप्रत्ययकाबिषयमानों फिर सर्वत्रप्रवृत्तिअहङ्करणपूर्वादेखनेसे मैआयामैगयामैनेखाया।मैनेपियाऔरकर्तृशक्तिमतीबुद्धिकोसर्वार्थकारिकरणअन्यकल्पो फिर अत्यन्तशक्तकर्त्ताभीकरणकोहीग्रहणकरिकर्ममेवर्तमानदेखतेहैंइतिससेनाममात्रमेंबिबादहोनवस्तुभेदकुछहै करणसे भिन्नकर्त्तामानेसेजोअहम्बौगम्यहैसोहीकर्त्तावोजीवहै फिरजोउसकीअपेक्षितकरणहै सोहीमनहै इससे जीवकर्त्तासिद्धहै ॥

समाध्यभावाच्च ३९

आत्मावाअरेद्रष्टव्यःश्रोतव्योमंतव्योनिदिध्यासितव्यःसोन्वेष्टव्यःसविजिज्ञासितव्यःओमित्येवन्ध्यायथआत्मानमित्येवंलक्षणःसोप्यसत्यात्मनःकर्तृत्वेनोपपद्यत भाषा मुक्तिफल के भोक्ता हीकोमुक्तिकेयत्नसमाधिमेंकर्तृत्वयुक्तहै फिर आत्माकोकर्त्तानमानेसेअभोक्ताबुद्धिकोभीकर्तृत्वके अयोगसेसमाध्यभावकाप्रसङ्ग है

आरोपितकर्तृत्वाधिकरण ॥ १५ ॥

यथाचतत्त्वोभयथा ४०

बढ़ई ॥

सांख्यादिमतनिरासकरजीवकर्त्तासाधाफिरउसकोबाधकेअभावसेकर्तृत्वसत्ययहमीमांसकपक्षप्राप्तहै और असङ्गात्मबोधकवेदसेबाधनहींअहङ्कर्त्ताइस अनुभवके सहायसेकर्तृवेदबली है तिससेअसङ्गवेदस्तावकहै इस्से चलाहै कि आत्माकोस्वाभाविककर्तृत्वकासम्भवहै यानहींहै अनिर्मोक्षप्रसङ्गसे जैसे अग्निकोउष्णतासे जोकर्तृत्वसे नहींछुटाउउनकोमुक्तिकी सिद्धि नहीं है कर्तृत्वदुःखरूपसे यदि मुक्तिमेंस्थिरकर्तृशक्तिसे कार्यशक्यकेअभावसे पुरुषार्थसिद्धहोगा जैसे दाहशक्तियुक्तअग्निकाठआदिकेवियोगसे दाहकार्यनहींकर्तीहै तद्वत् संशयनिमित्तोंकोभी शक्तिसे शक्यकेसार्थसनिमित्तकार्यकाशक्तिसे शक्यकेसाथ सम्बन्धसेनिमित्तोंकोभीपरम्परासेशक्तिसम्बन्धत्वकहा था सोमानोसम्बन्धसेवो सम्बन्धिसे ननु जैसे नरकर्मसे देवताहोताहै तैसे मोक्षकेसाधनज्ञानादिसेमोक्षसिद्धिहोगीयदिज्ञानसे अकर्तृरूपमोक्षहोतो कर्तृत्वआविद्यकहो कर्मादिसाधनाधीनमोक्षअनित्यहै तिस्से आत्मास्वाभाविककर्त्तानहीं अनिर्मोक्षसे और भी नित्यशुद्धबुद्धमुक्तात्मबोधसे मोक्षसिद्धिकहै है ऐसाआत्मास्वाभाविककर्तृत्वमें नमानसकोगेआत्मासत्य मिथ्या उदासीनकर्तृत्वका अवगाहीहैतिस्से उसकोउपाधिधर्मोंके अध्याससे कर्तृत्वऔपाधिकहै ध्यायतीवलेलायतीवेति आत्मेन्द्रियमनोयुक्तंभोक्तेत्याहुर्मनीषिणइति जीउपाधियुक्तआत्माकोभोक्तादिखातीहैं विवेकिकेमतमे परसेअन्यजीवकर्त्ताभोक्ताप्रसिद्धनहींनान्योतोस्तिद्रष्टाइसवेदसे तर्हिपरहीकर्त्ताभोक्ताहो यदिपरमे अन्यचेतनजीवबुध्यादिसङ्घातसे भिन्नकर्त्तानहो मैशुद्धचिद्धातुकोबन्धनहींकहिताहूं किंतुअविद्यासे

बुध्यादिमें प्रतिबिम्बितजीवकोबन्धमोक्षकहिताहूं लोकमेंकल्पि
तभेदभीबिम्बप्रतिबिम्बोंमेधर्मोंकाव्यत्यस्थापकदेखाहै वेद यत्र-
हिद्वैतमिवभवतितदितरइतरंपश्यतीति इमवेदनेअविद्यामेक-
र्तृत्वभोक्तृत्वदिखाकेविद्यामेउनकाबारणकराहै जैसे यत्रत्वस्य
सर्वमात्मैवाभूत्तत्केनकंपश्येदिति जैसे व्योममेंउड़तश्येनको-
श्रमहै उपाधिसम्पर्कजतैसे प्राज्ञात्माकेसाथसोनेपरआत्माको
सोतेजगतेमेंश्रमसुनाकेफिरसुषुप्तिमेंउसकाअभाव सुनाया है त
द्वाअस्यैतदाप्तकाममात्मकाममकामंरूपंशोकांतरं इहां मे लि
एषास्यपरमागतिरेषास्यपरमासंपदेषोस्यपरमोलोकएषोस्यपर-
मआनन्द यहांलो अर्थ आत्महीकामइष्टहै आनन्दरूपसेइसी-
आत्मकामहै रूपंस्वरूप अपनेसेपृथगिच्छानहींतिसी अकामहै
आत्मकामवोअकामसे आप्तकामहै शोकान्तरंदुःखनहींकुसत्ता
है इसीसोतेआत्माकोपरमपुरुषार्थकहिताहै वेद एषागतिःप्रा
प्य संपत् ऐश्वर्य लोक भोग्य सुखचैतन्यसे औरनहींहै उक्तार्थ
मेसूत्रकीयोजनाहै कि अग्निकीउष्णताकेतुल्यस्वाभाविकआत्-
माकर्त्तामतमानो जैसे लोकमेंबसूलादिकरणहाथमेलियेबढ़ई
दुःखीहै सोहीघरमेंबसूलादिधरकेस्वस्थनिर्व्यापारसुखीहै तैसे
अविद्यासे प्राप्तद्वैतसम्बन्ध जिसकोमोआत्मास्वप्नमे जगत मे क-
र्त्तादुःखीहै सोश्रमदूरकरणार्थअपनेरूपपरब्रह्ममेघुसफिरकार्य-
करणसामग्रीछोड़अकर्त्तासुखीहै फिरजैसासुषुप्तिमेतैसामुक्ति-
मेहै अविद्याध्वान्तकोविद्यादीपसे दूरकरआत्माहीकेवलसुखी
है बढ़ईकेदृष्टांतकासारसुनोबढ़ईगढ़नेमेबसूलादि की अपेक्षा-
हीसे कर्त्ताहै वोदहसे अकर्त्ताहै ऐसे ही आत्मासबकामोंमेमन-
आदिकीअपेक्षाहीसे कर्त्ताहै स्वात्मासे कर्त्तानहींहै औरबढ़ई
केतुल्यआत्माकेहाथआदिनहींहै फिरजिनसे मनआदिकोधरे

उठावे जैसे वढ़ईवसूलादिकोऔरजोतुमनेकहाथाकिविधिको सार्थतामें आत्माखाभाविककर्त्ताहै सोनहीं विधितोप्राप्तकर्त्तृ-त्वकोलेकर्तव्यकोउपदेशकरताहै आत्माकोकर्तृत्वनहीं विधान करतीहैहमतोकहिचुकेकोआत्मासत्यकर्त्तानहींहैब्रह्मात्मत्वके उपदेशसे तिसमें आविद्यककर्तृत्वलेकेविधिप्रवर्तहोगीकर्त्ताविज्ञा नात्मापुरुषइतियहशास्त्रलोकसिद्धकाअनुवादकआविद्यककर्तृ त्वकाअनुवादकरेगा विहारवो उपादानभीअनुवादसे खण्डित है ननुसन्ध्यस्थानेप्रसुप्तेषुकरणेषुस्वेशरीरेयथाकाममपरिवर्त्तते इ तियहविहारकेवलात्माकोकर्त्ताकहताहै तदेषांप्राणानांविज्ञा नेनविज्ञानमादायेति इसउपादानमेंभीकर्मकरणदोविभक्तियां केवलात्माकोकर्त्ताकहतीहैं यहांपरमेरोभीसुनो सन्ध्येस्थानमें-आत्माकेकरणोंकाअत्यन्तबिरामनहींहै सन्ध्यस्थानमेंभीधीसम्ब न्धसुनेसे जैसे सधीस्वप्नोभूत्वेमंलोकमतिक्रामतीति कामादय समनसोवृत्तयइतिश्रुतिः वृत्तिस्वप्नमेंदेखतेहैं तिसमें समनहींस्व प्नमेंविहरेहैस्वप्नकाबिहारभीमिथ्याहैफिरउसमेंकर्त्तृत्वभीमिथ्या है औरश्रुतिइसकारसे युक्तस्वप्नकेव्यापारकोबर्णतीहै ॥

उतेवस्त्रीभिःसहमोदमानोजक्ष*इतेवापिभयानिपश्यन्निति कोकिकभीकहतेहैं किस्वप्नमेंगिरपरचढ़केनाईवनकोदेखतेथेकि नाईउपादानमेंभीकरणोंकेबीचकर्मवोकरणदोविभक्तीहैं उपाधि संयुक्तकर्त्ताहै केवलमेंउसकाअसम्भवकहिचुकेलोकमेंबहुधा कह नाहै योधालड़तेहैं वोराजायोधोंकरलड़ताहै औरभीउपादान मेंकरणकेव्यापारकीनिवृत्तिमात्रबिवक्षितहै औरनअबुद्धिपूर्वकी स्वातन्त्र्यास्वापमेंकरणके व्यापारकीनिवृत्ति देखनेसे विज्ञानंयच्छ न्तनुतइति यहबुद्धिकोकर्त्ताकहिताहै विज्ञानशब्दकोबुद्धिमेंप्रसि

* भुञ्जानइव ॥

द्धिमें वोमनसे आगेपढ़नेसे और विज्ञानमयआत्माकेश्रद्धादिच ह्मकहनेसे जैसे तस्यश्रद्धैवशिरइति औरश्रद्धादिबुद्धिकेधर्मोंकी प्रसिद्धिसे विज्ञानंदेवा:सर्वेब्रह्मज्येष्ठमुपासतइति ज्येष्ठ प्रथमज कोबुद्धिमें प्रसिद्धिसे सएषवाचश्चित्तस्योत्तरोत्तरक्रमोयद्यज्ञइति इसमेंयज्ञबुद्धिसाध्यकहा है इन्द्रियोंसे उपास्यमानज्येष्ठब्रह्मविज्ञा नबुद्धिहै महद्यचं प्रथमजं इसमेंहिरण्यगर्भब्रह्मात्मकबुद्धिकोज्ये ष्ठत्वकहिनेसे यद्य: पूज्यं चित्तेनध्यात्वावाचामन्त्रोक्तायज्ञो- जायतेचित्तवोवाणीकापूर्वोत्तरभावहीयज्ञहै करणकोकर्त्तामाने मेबुद्धिकीशक्तिकाविपर्ययनहींहैजैसेच।उरपचतेहैं काष्ठेजलतेहैं कुठियाभरतीहैइनमेंसबकारकोंको अपने२काममेंकर्त्तृत्वकेस्वी कारसे जैसेकाठअपनेव्यापारमेंकर्त्तावोपाककीअपेक्षासेकरण है तैसेबुध्यादिकोनिश्चयादिमेंकर्तृत्ववोउपलब्धिकीअपेक्षासे क रणत्वहै उपलब्धिआत्माकीहै उसमेंआत्माकर्त्तानहींहै नित्य- उपलब्धिस्वरूपसे अहङ्कारसे भीउपलब्धाकर्त्तानहीं अहङ्कार उप- लभ्यमानहै जड़बुद्धिकोकरणमानेमेंकरणांतरहमेनचाहिये अध्या ससे तिस्से जैसे स्फटिकमेंरक्तिमाकुसुमादिउपाधि से है तैसे- आत्मामेंबुध्याद्युपाधिसे कर्तृत्वहै ॥

ईश्वरप्रवर्त्तकत्वाधिकरण ॥ १६ ॥

परात्तु तच्छ्रुतेः ४१

जीवकारकईश्वरकारयिताहैफिरकर्ताईश्वरकेसापेक्षवानि रपेक्षहै यहविचारहै कर्ममीमांसकमतसे पूर्वपक्षहै अत्रैषह्येवेति इनकाविध्यादिश्रुतिसे विरोधहै ईश्वरकी अपेक्षा जीवकर्तृत्वमें नहींकर्त्ताहै किस्से प्रयोजनके अभावसे रागद्वेषादि दोषयुक्तजीव हीबुध्यादिकारकसामग्रीसे सम्पन्न कर्ताहोनेकोसक्तहैफिरईश्वर-

उसकोक्याकरावेगा यहभीलोकमेंप्रसिद्धनहींहैकि जैसे खेतीके
काममेंवर्षादिअपेक्षितहैंतैसेईश्वरअपेक्षणीयहैजीवके धर्माधर्म
से जगतकाविषमरचनादोषनहीं अबईश्वरकेआधीनजीवकोकर्तृ
त्वसिद्धिमेंधर्माधर्मसिद्धिफिरधर्माधर्मसापेक्षकारयितृत्वसिद्धि है
फिरईश्वरकोकरानेकीसिद्धिमेंजीवकोकर्तृत्वसिद्धि इसचक्रिका-
दोषसेईश्वरकोअपेक्षानहींहै तिससेजीवस्वत: कर्ताहै धर्मीको
दुःखवोअधर्मीकोसुखमिलेअनपेक्षकोप्रवर्तकमानेमेंकारुणिकमे
सबएकरूपसुखीहो फिरजगवैचित्र्यवोविधिनहोफिरउनकीसा-
र्थकताकेअर्थजीवस्वत:कर्ताहै कारयितृत्वश्रुतिस्तावकाहै इसश-
ङ्काकीनिवृत्ति अविद्यातिमिरांधजीवको चेतकरानेवालेईश्वर
कीअनुज्ञासेकर्ताभोक्तासिद्धहै औरउसकीअनुग्रहकाहेतुविज्ञा
नसेमोक्षसिद्धिहोनेकोयोग्यहै इस श्रुति से एषह्येवसाधुकर्मका
रयतितंयमेभ्योलोकेभ्यउन्निनीषतएषउएवासाधुकर्मकारयतिय
मधोनिनीषतइति यआत्मनितिष्ठन्आत्मानमन्तरोयमयती-
ति अर्थ सबप्रवृत्तिमेंईश्वरहेतुकर्ताहैकुत:तच्छ्रुते:ईश्वरस्यैवहेतु
कर्तृत्वश्रुते: ॥

कृतप्रयत्नापेक्षस्तु विहितप्रतिषिद्धावै-
यर्थ्यादिभ्य: ४२

कारयिताईश्वरकोवैषम्यनैर्घृण्यहोऔरकर्ताजीवकोअकृत
प्राप्तिहो इनकीनिवृत्त्यर्थतुशब्दहै ईश्वरजीवकेकरेधर्माधर्मकीवै
षम्यसेउनकेफलोंकोविषमविभागकर्ताहै जलके तुल्य निमित्त-
मात्रसे जैसे असाधारणनानाबीजजन्यवृक्षादिकासाधारणनि
मित्तजलहैपानीनहोतीरसफूलफलपत्ताशादिमेंवैषम्यविभागन
होऔरजोनानाबीजनहोतोभीवैषम्यनहो ऐसे हीजीवयत्नकर्ता-

हैतोईश्वर उसके अनुसार उनको शुभाशुभ विधान कर्ता है यद्यपि जीवको कर्तृत्व पराधीन है तथापि जीव कर्ता ही है कर्नेवाले को ईश्वर करवाता है जैसे पाठकके आधीन शिष्यको अध्ययनकर्तृत्व मुख्य देखते हैं भाव: और भी अब पूर्वकेप्रयत्नकी अपेक्षा करकर-वाता है और पूर्वतरप्रयत्नकी अपेक्षा कर पूर्व करवाता था इसरीतिमें संसार अनादि है स्वर्गकामो यजेत मा हिंस्यात्सर्वाभूतानीति जो ईश्वरकृतप्रयत्नापेक्ष है तो उक्त विधिनिषेधको वैयर्थ्य नहीं है जो सापेक्ष ईश्वर नहीं है तो वेदो अनर्थ कहो विधिनिषेधमें ईश्वर ही लगाता है उनको वुद्धीकर्ता है जीव तो अत्यन्त पराधीन है तैसे ही शुभकर्ताको अनर्थ वो अशुभको अर्थ मंत्रको तिसी वेद भी प्रमाण न हो फिर जो ईश्वरको अत्यन्त अनपेक्षा है तो लौकिक भी पुरुषकार अर्थात् प्रयत्नको वैयर्थ्य है तैसे देशकालनिमित्त अकृतप्राप्तिआदि दोषसूत्रमें आदिपदसे दिखाता है ॥

जीवांशाधिकरण ॥ १७ ॥

अंशोनानाव्यपदेशादन्यथाचापिदाशकितवादित्वमधीयतएके ४३

जीव ईश्वरका अंश ऐसा है जैसा महाव्योमका घड़ाघरमें अंश है न महापटलोहादिका अंशहाथसे रआदि है जीव उपकार्य ईश्वर उपकारक कहाथा फिर लोकमें सम्बन्ध से देखा जैसे स्वामी वो भृत्यका वो अग्नि वो विस्फुलिङ्गका फिर क्या जीव ईश्वरका स्वामी वो भृत्यवत्सम्बंध है आहो स्वित् अग्निविस्फुलिङ्गवत्सम्बन्ध है इससंशयमें अनियम है अथवा ईशित ईशितव्यभावसम्बन्ध है जैसे स्वामि भृत्यका यही प्राप्त है पूर्वसिद्धान्त है कि जीव ईश्वरका अंश होने को यो

ग्यहै जैसे अग्निकेविस्फुलिङ्गनिरवयवका मुख्यअंशसम्भवनहींहै इसमें अंशसदृशहै फिर निरवयवसे ईश्वरही क्युंनहो नानाव्यप देशात्सोन्वेष्टव्य:सविजिज्ञासितव्यएतमेव विदित्वामुनिर्भवतिय आत्मनितिष्ठन्नात्मानमन्तरोयमयतीति इसमें जोभेद दिखाया सोभेदकेविनायुक्तनहींहै भेदहांमें स्वामिभृत्यपनयुक्तहै नअंशा-शिभावमेंऔरकेवलनानाव्यपदेशसेअंशका बोधनहींहै तोक्याहै अनानात्वकाबोधकव्यपदेशहै जैसे आथर्वणिकब्रह्मसूक्तमेंब्रह्म कोदाशकितवादिकहतेहैंब्रह्मदाशाब्रह्मैवेमेकीतवाइति दाशा: धीमर दासा: गुलाम कितव: जुआरी जो नीचब्रह्महीहैं इस-दृष्टांतसेसबजीवब्रह्महैं ऐसेहीअन्यईश्वरकीप्रक्रियामेंजानोभेदा भेदसेअंशबोधहैजीवोब्रह्मैवचेतनत्वात्ब्रह्मवत् ॥

मंत्रवर्णाच्च ४४

मन्त्रप्रामाण्यंसाधयन्नाहमहामुनि: ॥

तावानस्यमहिमाततोज्यायांश्चपूरुष: पादोस्यसर्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतंदिवीति इसमेंभूतशब्दसेस्थावरजङ्गमजीवकहाहै जीवमेभूतशब्दकाप्रयोगदेखनेसे अहिंसन्सर्वभूतान्यन्यत्रतीर्थे भ्यइति अंशपादभागजेएकार्थवाचीहैं अस्य सहस्रशीर्षपुरुषका तावान् प्रपञ्च महिमा विभूति तिस्से प्रपञ्चसे पुरुषज्यायान् महत्तर भूतानिजीवा: तीर्थानिविधिविहितकर्माणि तेभ्योन्यत्र सर्वप्राणिहिंसामकुर्वन्ब्रह्मलोकमाप्नोतीत्यर्थ: जैसे इसमेंभूतप-दप्राणिमेंप्रयुक्तहै तैसे मन्त्रमेंभीहै भाव: ॥

अपिचस्मरन्ति ४५

ईश्वरगीतामें ममैवांशो इत्यादि तिस्से ईशांशजीवहै य-

हांईश्वरईशिताअँशीवोजीवईशितव्यअंशहै शास्त्रसेनिरतिशयोपाधिसम्पन्नईश्वरहीनोपाधिसम्पन्नजीवोंशासनकर्ताहै तिससे कछुविरुद्धनहींहै कोईकहितेहैं कियहकेवलभावनोपदेशहैन कियस्तुगतिहै ॥

प्रकाशादिवन्नैवम्परः ४६

जैसा जीवदुःखत्वादिगुणीहै ऐसापरः परमात्मा नहीं है किसकीनाई जीवकेगुणोंकाअभावईश्वरमेंहै इससे पढ़ाकिप्रकाशादिवत् जैसे सौरादिप्रकाशअङ्गुल्यादिदेशमेंहीसूधाटेढ़ादिखाताहै आदिशब्दमें घटादिप्रदेश व्योमहीधूमादिमान्है और नकिप्रकाशदेशयाव्योमदेशऋज्वादिमान्याधूमादिमान्है तैसेहीजीवकेदुःखादिगुणईश्वरमें नहींहै अन्तःकरणावच्छिन्नोजीवः प्रतिबिम्बोवा ॥

जैसे चैत्रकेकरपादादिअङ्गोंकेदुःखसे चैत्रअङ्गीदुःखीहै तैसे ईश्वरांशजीवोंकेदुःखोंमें अंशीईश्वरदुःखीहो ईश्वरकोजोप्राप्तहैसोमहत्तरदुःखप्राप्तहोक्युंईशमसमष्टिहोनेसे ईश्वरःस्वांशदुःखैर्दुःखीअंशित्वान्मैत्रवत् ज्ञानसेईश्वरभयेपरसबदुःखोंकी प्राप्तिसेसंसारश्रेष्ठहै क्युं संसारमेंअपनेहीदुःखमात्र का अनुभव है इससेसम्यग्दर्शनअनर्थकहो इसशङ्काकाउत्तरसूत्रसुनो जैसे जीवदुःखभोक्ताहै तैसे ईश्वरनहींभोक्ताहै यहप्रतिज्ञाहै जीवअविद्याकेवशसेदेहहीहुआ देहकेदुःखोंसेदुःखीजानताहै देहाभिमानसेफिरईश्वरकोनदेहादिमेंआत्मभाव है न दुःखकाअभिमान है जीवकेतुल्यऔरजीवकोभीअविद्याकृतनामरूपदेह इन्द्रियादिउपाधिकेअज्ञानसेभ्रमनिमित्तहीदुःखकाअभिमानहै पारमार्थिकनहींहै जैसे अपनीदेहकेदाहछेदपीड़ादि सेदुःखकीदुःखकी

अभिमानकेभ्रमसेउसेअनुभवताहै किपुत्रमित्रादिकादुःखउनमे अभिमानभ्रांतिसेअनुभवताहै कहोतोकैसा अभिमानकाभ्रमगा तेहोसुनो जैसे मैहोंपुत्रहूं वोमैहोंमित्रहूंऐसेहोंपुत्रमित्रादिमेप्री तिकेवशसेघुसादुःखसहताहै तोअवनिश्चयहुआ किमिथ्याभिमा नकाभ्रमहोंदुःखकानिमित्तहै अन्वयदृष्टांतदुःखसे कहा अवदुःख केअभावमेंव्यतिरेकदृष्टांत देखोजहांबहुतपुत्रमित्रादिवन्तबैठेहैं वोउनकेसम्बन्धके अभिमानीऔरहैं वोअन्यअभिमानशून्यहैंफि रउनकेवीचमेंकिसीनेकहा किपुत्रमरामित्रमरायहसुनिजिनको पुत्रमित्रादिमत्ताकाअभिमान था उसकोहीउनके मरणनिमित्त दुःखहै नअभिमानमेंछुटेपुरुषको इससेदेखोकिलोकिकपुरुषको भीसम्यग्दर्शनसार्थहै फिरक्याकहियेविषयशून्यआत्मासेअन्यव- स्तुकोनदेखनेवालेकोवुहनित्यचैतन्यमात्रस्वरूपद्रष्टाहै तिससेस म्यग्दर्शनव्यर्थनहींहै प्रकाशादिवत् जैसे चांद्रसौरप्रकाशव्योम- मेफैलास्थित अङ्गल्यादिउपाधिके सम्बन्धसेउनमेऋजुवक्रादिहो नेसेऋजुवक्रकेतुल्यदिखातेहैं नसच्चेऋजुवक्रहैं औरजैसे व्योम घटकेले चलनेमेचलतासाज्ञानपड़ताहै नपरमार्थ से व्योम चल ताहै औरजैसे थारी मेपानीकेकांपनेसेपानीमेपड़ासूर्यप्रतिबि म्बकांपताहै परसूर्यनहीं कांपताहै तैसे अविद्यासेप्रापितबुध्या दिमेंउपहितजीवनामअंशमेंदुःखहै नअंशीश्वर मे कह चुके हम किजीवकोदुःखप्राप्तिअविद्यानिमित्तहै औरवेदांतजीवभावछुटा केजीवकोब्रह्मभावकहतेहैं तत्वमसीति तिससे जीवके दुःखसेई श्वरदुःखीनहींहै जोईश्वरमेभीदुःखहै तो जीवकोईश्वरकहनेसे काकुलाभनहोतिससे जीवदुःखसेईशदुःखीनहींहै

स्मरन्तिच ४७

स्मृत्यप्रामाण्यवादिनन्निरस्यन्नाहर्षिः ॥

तयोरन्यः पिप्पलंस्वाद्वत्त्यनश्नन्न्योऽभिचाकशीतीतिएकस्तथास र्वभूतांतरात्मानलिप्यतेलोकदु.खेनवाह्यइतिचइसमें कहिते। है कियदिएकहीसवभूतोंकाआत्माहै तदालौकिकवैदिकविधिनि षेधकैसेहो सेभेदकौन्दृगृङ्गवदसत्नहींकहताहूं किन्तुम्हषायदि- कहोईश्वरकेअंशजीवकेभेदसेवहोजीवमें हैं नदीमेंमिश्रहैं फिर- क्यायहांशङ्का।है कहिताहूं किजोवअंशनहींपरन्तुअभेदवादिनी श्रुतिजीवकोअनंश कहिती है तत्सृष्ट्वातदेवानुप्राविशतइत्यादि ननुतुमनेभेदाभेदसेअंशकहाथा अंशतोहोजोभेदाभेदद्वानोंइष्ट- हों यहांतोअभेदहीइष्टहै ब्रह्मात्माकीप्रतिपत्तिमेंपुरुषार्थकीसि द्धिसे औरलोकस्वभावसेप्राप्तभेदकाअनुवादहैनिरवयवब्रह्म का- मुख्यांशजीवसम्भवनहींहै यहमतभूलो तिससेपरहीएकसवभूतों काअन्तरात्माजीवरूपसेस्थितहै इस शङ्कासेकहोविधिनिषेधको सिद्धि उसकोकहिताहूं आम्नायसमुच्चयार्थस्थः दशइन्द्रियांपांच प्राणमनबुद्धिलिङ्गदेह इससेयुक्तदुःखीहैनकिईश ॥

अनुज्ञापरिहारौदेहसंबंधाज्ज्योतिरादिवत् ४८

ऋतौभार्यामुपेयात् अर्थ ऋतुसेविषमदिनकीरातिमेरति- करो यहविधिहै परपत्नींनोपगच्छेत् परनारासे कभी भोग नक रो यहनिषेधहै तथाग्नीषोमीयंपशुंसंज्ञपयेदितिमाहिंस्यात्सर्वाभू तानीति लोकमेभीहै किमित्रको सेवो शत्रुकोत्यागो जैसेएका त्माके।देहकेसम्बन्धसेहों कौनहै देहसम्बन्ध देहादिमेंआत्मज्ञा- नमैंहाहूं यहआत्मामेंविपरीतबोधदेखाहै सो वहप्राणियोंकोहै

जैसा मैंजाताहूं मैंआताहूं इत्यादि फिरइसबोधकासम्यग्दर्शनसेअन्यकोईभीनाशकनहींहै सम्यग्दर्शनकेप्राक्सबजन्तुमेंयहभ्रमफैलाहै ऐसेएकात्मामानिमेंभीअनुज्ञापरिहारवनिसक्तेहैंदेहादिउपाधिकाजोअविद्यानिमित्तहै उसकेसम्बन्धविशेषसेतोहैं सम्यग्दर्शीकोविधिनिषेधव्यर्थहै ओम् हां नियोगके विषयहैतकेअभावसेआत्मासाध्यनहींहै तोउसमेंनियोगअसङ्गतहै तिससे ब्रह्मवित्नियोज्यनहींहै हेयवोग्राह्यमेंनियोज्यजोड़ाछुटायाजाताहै ब्रह्मवित्तोआत्मासेभिन्नहेयवोग्राह्यवस्तुकोनहींदेखताहै फिरकैसेनियोज्यहो औरआत्माआत्माकानियोज्यनहो जिसको देहसेभिन्नआत्माकाज्ञानहै सोहीपरलोककेफलार्थकर्ममें अधिकारी है तो ब्रह्मवित् भी नियोज्यहै देहसे भिन्नआत्माकेज्ञानसेसो नहीं कर्मठ को देहाभेद का भ्रम है भ्रम उपाधिसेहै सचहै अयेबचे तोभी जैसे व्योमदेहसेभिन्नहै तैसे मैंदेहसेभिन्नहूं ऐसेजोभ्रांतनहींदेखताहै सोहीनियोज्यहै देहसेभिन्नकिसीआत्मदर्शीकोनियोगनहींदेखाहै फिरक्याकहाचाहिये उसको जोएकहीआत्मादेखताहै नियोगकेअभावमेंसम्यग्दर्शीजोचाहै सोकरैसोनहीं सर्वत्रअभिमानहीप्रवर्तकहै फिरसम्यग्दर्शीकोअभिमानहोनहींहै विषयमेंप्रवर्तकरागकेअभावसेप्रवृत्तिनहीहै सार तथाचब्रह्मविन्नियोज्यःविवेकित्वात्कर्माधिकारिवत् ब्रह्मविन्ननियोज्योऽभ्रांतत्वात्सुषुप्तवत् संहतदर्शनशून्यभेदभ्रांतिशून्य सुषुप्तदेहसेभिन्नदर्शीहै अज्ञकोभीभ्रांतिकेअभावकाल में नियोज्यत्वनहींदेखातोआत्मवित्काक्याकहो जिसनेविषयकोविरसजानकछाड़ाहै फिरकैसेउससेसंसटैगा ज्योति ॥

जैसे एकहीअग्निहै तोभी क्रव्यादको नहींलेतेहैं अन्यको लेतेहैं और जैसे एकहीसूर्यकाप्रकाशअमेध्यठौरमेंत्याज्यहै न-

सेध्यठौरमेंफैलातैसेएकमाटीकीवस्तुवज्रवैदूर्यादिलेतेहैंशुचिता वोप्रयोजनसेनकिनरखरादिकेहाड़ तैसे एक पानीमाटीकेमूत्र पुरीषादिगोकेपवित्रमानकेलेतेहैं नशूकरकुत्तादिकेअपवित्रता से तैसे एकहीकोउपाधिभेदसेविधिनिषेधयुक्तजानों ॥ कायस्पर्शादिवत्त्रिविधिनिषेधोभोमसादिवत् ॥

असन्ततेश्चाव्यतिकरः ४९

असङ्कर ॥

स्यातांतावन्नामानुज्ञापरिहारावेकस्याप्यात्मनोदेहविशेष-योगात् यस्त्वयं कर्मफलसम्बन्धःसचैकात्म्याभ्युपगमेव्यतिकरोयें-तस्वाम्येकत्वादितिचेन्नैतदेवं असन्ततेःनहिकर्तुर्भोक्तुश्चात्मनः-सन्ततःसर्वैःशरीरैःसम्बन्धोस्तिउपाधितंत्रोहिजीवइत्युक्तंउपाध्य-सन्तानाच्चनास्तिजीवसन्तानः ततश्चकर्मव्यतिकरःफलव्यतिक-रोवानभविष्यतीति अर्थ यद्यपि स्थूलदेह के सम्बन्ध से ग्रहण त्यागहैं तथापिश्रौरकेकरेकर्मकाफलश्रौरहीभोग करो यहकर्म फलोंकेभेदकासङ्करहोकिदेहसहितकोस्वर्गादिकेभोग के अयोग-सेअदेहएकहीआत्माकेभोक्तासे तिससे स्वर्गीनर्कीइसव्यवस्था कीसिध्यर्थआत्माकास्वरूपभेदकहोयहशङ्कार्थ है उक्तसांकर्य तो होजोअनुपहितहीआत्माभोक्ताहो सोतोनहींहै मोक्षमेंभीबुध्यु-पहितकोकर्तृत्वसाधनसेतवतोबुद्धिकापरदेहमें असम्बन्ध सेबुद्धि उपहितजीवकापरदेहमेंसम्बन्धनहींहै फिरबुद्धिभेदकरकेभोक्ता केभेदसेफलकर्मादिकासाङ्कर्य नहीं है यह समाध्यर्थहै ॥

आभासएवच ५०

जीवसाक्षात्परात्माहै श्रौरनपरात्मासेभिन्नहै किन्तुपरा-त्माकाआभासअर्थात्विद्या वोअविद्याकाकार्यबुध्यादिमेंप्रतिबि

स्वजीवहै औरनअंशहै औरनपरिछिन्नहै इससेजैसे एकजलसू र्यकेकांपनेसे जलसूर्यकांतर नहीं कांपता है तैसे एकजीवमें- जिसकर्मफलकासम्बन्धहै सोजीवांतरकोनहींहै इस रीति से क र्मवाकर्मफलकासङ्करनहींहै औरआभासकुविद्याकाकराहै औ रआभासकेआश्रयसंसारकीभी अविद्याके कार्यकीसिद्धिहै इस सेअविद्याकेनिराससेपारमार्थिकब्रह्मात्मभावका उपदेशउपपन्न है भास्करनेकहाकिप्रतिविम्बउपाधिसंस्पृष्टतासे कल्पित नहीं- किन्तुस्वरूपसेहै तोतोकल्पितप्रतिविम्बकोमुक्तिमें स्थिति के अ- योगसेजीवत्वनहींहै इससिद्धांतकेअज्ञानसेहै यदि दर्पणमेंमुह- सिपीमेंचांदीकेतुल्यकल्पितहो तदायहचांदीनहींहै इसस्वरूप बाधकेतुल्ययहमुहनहींहै यहबाधहोइससेदर्पण में मुख नहीं है संसर्गमात्रकेबाधसेमेराहीयहमुहहै इस अबाधकमुहकेअभेद- केअनुभवसेसंस्पृष्टताहीसे कल्पित है रूपंरूपम्प्रतिरूपोबभूवेति इसऋग्वेदकेमन्त्रने प्रतिबिम्बभावका प्रवेशकहा है इससेस्वरूप कीकल्पनानहींहै औरसांख्यवोकणादकेमतमे बहुत आत्मा हैं इससेउनकोव्यतिकरहैकैसे बहुतविभु चैतन्यमात्रस्वरूपनिर्गुण निरतिशयआत्माहैं उनकेअर्थसाधारणप्रधानहै औरउनकोभो गवोमुक्तिकीसिद्धिप्रधानकेनिमित्तसेहै इससांख्यमतमेंसबआ- त्मोंकोचैतन्यस्वरूपसेवोसमीपादिअर्थात्औदासिन्य केअभेदसे- एककेसुखदुःखमेंसबकोसुखदुःखप्राप्तहै उक्तसङ्करताहोतीजोप्र धानकीप्रवृत्तिपुरुषकीकैवल्यार्थनहोती सोनहीं सबपुरुषोंकाप्र कृतिसेसमीपादिमेविशेषनहींहै तोभीप्रकृतिहीहरएकपुरुषको नियमसेभोगमुक्तिकेअर्थप्रवर्ततीहै फिरजिसकोउद्देशकरप्रधान कीप्रवृत्तिसेभोगमुक्तिकानियमहै जोअनियतप्रवृत्तिप्रधानकीमा नोगे तोउसनेअपनीमहिमाजतानेकेअर्थप्रवृत्तिकी फिरपुरुषको

मुक्तिनहुई विघातहुआ यहसारनहींकिदृष्टसिद्धिसेव्यवस्थाजतासकोकिसीयुक्तिसेव्यवस्थाकहो फिरयुक्तिकेबिनादृष्टपुरुषकेवल्यमतहो फिरव्यवस्थाकेहेतुकेअभावसेव्यतिकरप्राप्तहै भावप्रधानकोजड़तासेज्ञाननहींकिकिसेछुटाऊं किसकोनहींअनागतऔरअचेतनजोपुरुषार्थहैसोकहोकैसेनियामकहै मानवोयुक्ति बिनाकहनेसेव्यवस्थावधूधवहीनलखिसे ॥

बहुतविभुघटकुड्यादिकेसमानद्रव्यभाअस्वरूपआपअचेतन आत्माहैं उनकीसामग्रीअणुमनआदिअचेतनहैं इनमेआत्ममनकेसंयोगसेबुद्धिसुखदुःखेच्छाद्वेषप्रयत्नधर्माधर्मभावनाजेनौ आत्माकेविशेषगुणजन्मतेहैं वेअव्यतिकरसेहरएकआत्मासेसमवायसम्बन्धसेरहितेहैंसोसंसारहै उननौकाअत्यन्तअनुत्पादमोक्षहै इसकाणादमतमे यदा एकात्मासेमनसंयुक्तहै तदाआत्मांतरसेभीनांतरीयकसंयोगहो संनिधानादिकेअविशेषसे तिससेमनकेसंयोगकेअविशेषसेवोसुखादिफलके अविशेषसेएकात्माकेसुखादिमेंसर्वात्माकोभीसमानसुखादिकाप्रसङ्गहै इसढबभोगादिका सांकर्यहै ॥

अदृष्टानियमात् ५१

अपूर्वसाधारण्यान्नव्यवस्था ॥

बहुतव्योमवत्सर्वअफेलेआत्मोंमेहरएकदेहमेंबाहिरभीतरसेमिलेमनबचनदेहसेधर्माधर्मलक्षणअदृष्टजन्मताहै सांख्यमतमेंजड़प्रधानमेबर्तताहै औरप्रधानसाधारणहै तिससे हर एककोदुःखकेभोगकाकोईनियामकसिद्धनहीं है और काणादों कोभीमनकेसंयोगकेतुल्यआत्ममनका संयोगसाधारणसेसिद्धअदृष्ट है तोइसीआत्माकायहअदृष्टहै इसनियममेकोईहेतुनहींहै तिससेअदृष्टनिमित्तनियमनहींहै ॥

अभिसन्ध्यादिष्वपिचैवम् ५२

मैनेइसफलकोलियावोमैनेइसफलकोछाड़ा ऐसे यतताहूं ऐसे कर्ताहूं इसरीतिकाअभिसन्ध्यादिहरएकात्मामेंपृथक् २ प्रवर्तमानहीं अदृष्टवोआत्माके स्वस्वामिभावके नियामकहोंगेसोभी नहींकहिताहै अभिप्रायज्ञानहै आदिपदसेइच्छादिलेतेहैं क्रियमान ॥

अभिसन्ध्यादिभीसाधारणआत्ममनकेसंयोगसेसबआत्मों को सन्निधिमेंनियमकेहेतुनहींहैं तोअव्यवस्थादोषज्युंकात्युंवनाहै ॥

प्रदेशादितिचेन्नान्तर्भावात् ५३

यदिकहोकिविभुआत्माकाभीदेहमेघुसामनकासंयोगउसी देहमेहोगानपरदेहमेंइससेअभिसंध्यादिवोअदृष्टवो सुखादि को व्यवस्थाप्रदेशसेहोगी सोभीनहींयुक्तहै किससेसबआत्माकासबदेहमेअन्तर्भावसेवोविभुत्वकेअविशेषसे सबआत्माओंकोसन्निधिमेकिसीकाप्रदेशकल्पनेकोशक्यनहींहै कल्पनाकानियामकनहोनेसेभलानिष्प्रदेशआत्माका कल्प्यमानप्रदेश काल्पनिक होनेसेपारमार्थिकअभिसन्ध्यादिकोंका नियमनकरनेकोसक्त नहीं-है देहभीसबआत्माकोसन्निधिमेजन्माजिसआत्माकादेहहैउसीआत्माकोउसीदेहमेभोगहोनऔर को यह नियमनहींकर सक्ते-हो जिसआत्माकेप्रदेशमेंअदृष्टजन्माहै वुह क्याचलवास्थिरहैनाद्यः अचलअंशोकेअंशकाचलनवो बिभागअसम्भवसेवोअणुवादप्रसङ्गसेदूसरेमेंस्थिरप्रदेशमेंऔरकोभोग देखनेसेअदृष्ट है इसलिएकदेहसेभोदोआत्माकेभोगकाप्रसङ्ग हो और सावयवात्म वाद-काप्रसङ्गहो यहांजन्माअदृष्टजहांकहींभोगकाहेतुहोने से स्वर्गा-दिभोगसिद्धिसोभीनहींभोगदेहसेदूरस्थाहृष्टमेमानके न होने से

किसीनेकहाकिमनएकवीआत्मोंकेभेदसेसंयोगकीव्यक्तिकेभेदक रकिसीसंयोगकोव्यक्तिसेकिसीआत्मामेअदृष्टादिहैं तिससेसङ्क- रनहींसोभीनहींहै संयोगव्यक्तिमे वैजात्यनहोनेसे सबव्यक्तिको एकदेहांत को सब आत्मामे अदृष्टका हेतु हो फिर सबआत्मा कोएकदेहमेभोक्तृत्वहुवारहै चैत्रजिसप्रदेशमेसुखादिकाअनुभव- कर्त्ताथा तिससेनिकलउसीदेहमेवामैत्रदेहमेउसीप्रदेशमेप्राप्तहै तोउसकोभीऔरकेसमानसुखादिका अनुभवदेखतेहैं सोनहोय दिचैत्रमैत्रकासमानप्रदेशमेंअदृष्टनहो औरप्रदेशवादीके मत मे स्वर्गादिकाभोगनहो प्रदेश यहांदेहमेअदृष्टजन्मताहै औरस्वर्गा दिकाभोगप्रदेशांतरवर्तीहोनेसे मैयहांहोहूं इस अल्पानुभव से वोमानाभावसेकर्त्ताविभुनहींहै और बहुतआत्माओंको दृष्टांत- केअभावसेपहिलेतुमकहो कौनबहुतसमान प्रदेशहैंयदि रूपादि कहैंतहांवेभीनहींहैजैसे रूपरसादि एकघटमेस्थितहैंयहदृष्टांतह मकोइष्टनहींहैरूपतेजकोआचार सजलमात्र गन्ध पृथिवीमात्रहै जोजिसकागुणहैसो अपनेधर्मीअंशकेसाथअभेदसेतेजआदिधर्मी सेभिन्नघटनहीहै लक्षणके अभेदसेभी बहुत आत्मानहींहैं जैसे मैत्रात्माचैत्रात्मासे भिन्ननहींआत्मतासे चैत्रात्मवत् इसमेवैशे षिककोशङ्काहै कि नित्यद्रव्यकोपृथक् २ करनेवालेविशेषपदार्थहैं वे औरोंकोपृथक्करतेहैं न औरकीअपनेपृथग्करने मेअपेक्षाकर- तेहैं इसहेतुसेवेअन्त्यकहातेहैं इस विशेषरूपलक्षणकेभेद से आ- त्मभेदहै सोभीनहीं आत्माका अनात्मासेभेदज्ञानार्थविशेषक- ल्पनायुक्तनहीं आत्मत्वसेहीअनात्मभेदकी सिद्धिहै आत्माओं- कामिथोभेदज्ञानार्थभीविशेषकोमाननाउचितनहींहैअन्यलोआ त्मभेदकी असिद्धिसे और आत्मभेदके ज्ञानमेआत्माओंसेंविशेषभे दकोसिद्धिहै औरविशेषभेदसिद्धिमें आत्मभेदका ज्ञानहै इसअ-

न्योन्याश्रयदोषसेविशेषभेदकल्पनासेआत्मभेदकल्पनायुक्तनहीं है व्योमादिक्कालादिदृष्टांतवहुतविभुमें दियेहैंवेभोसम्मतनहीं व्योमदिकार्यंतन्नविभु लाघवसे एकही विभुहै इससेनविभुभेदहै जैसे एकव्योममेंभेरीवीणादिकेभेदसेतारमन्दादिशब्दोंकीव्यवस्थाहै ऐसेहीएकआत्मामेबुध्युपाधिकेभेदसेसुखादिव्यवस्था की सिद्धिसेआत्मभेदकल्पनामुधाहै ऐसेभूतभोक्तृश्रुतिकाविरोधनिरासकरअद्वयमेसमन्वयकियाहै तिससेआत्मैकत्वपक्षमे सब दोषोंकाअभावसिद्धहै ॥

इतिश्रीयुक्ताराचन्द्रवर्मणाकृतेब्रह्मसूत्रभाषाभाष्येद्वितीयाध्यायस्यतृतीयःपादःपूर्णः ॥

लिङ्गश्रुत्यविरोधपाद ४

इन्द्रियजन्माधिकरण ॥ १ ॥

तथाप्राणाः १

तीसरेपादसेव्योमादिमेश्रुतिविरोधकावारणकरअबचौथेसे प्राणमेविरोधवारतेहैं तेजव्योमादिकेजन्माधिकारमेप्राणों काजन्मनहींपढ़ाहै प्राणावावऋषयः इससेउनकासद्भावसुनाहै कहींजन्मसुनाहै जैसे अग्निसेछोटे२विस्फुलिङ्गभरतेहैं तैसे आत्मासेप्राणजन्मतेहैं ॥

इसश्रुतिविरोधसेऔर अन्यतरनिर्धारणके हेतुनहोनेसेनिश्चयनहींहै अथवा जन्मकेपूर्वसद्भावसुननेसे प्राणजन्मश्रुतिगौणीहै इसशङ्काकाउत्तरसूत्रहै सदृशमेतथाशब्दकहाजाता है जैसेयथासिंहहै तथाबलदेवहै जैसे अदृष्टसबआत्माके समीप जन्मा-अनियतहै तैसे प्राणहैं सोभीदेहकेअनियमसेपुनरुक्तहै सिद्धां-

तविरोधसे जीवकेसाथभीप्राणोंकीउपमानहींहै इससेतथापदस म्बद्धनहींहै यहांप्राणजन्मवाक्यजातउदाहरणहैं जैसे एतस्मा-दात्मनःसर्वेप्राणाःसर्वेलोकाःसर्वेदेवाःसर्वाणिभूतानिव्युच्चरन्ती-त्यादि जैसे लोकादिसबपरसेजन्मेहैं तैसे प्राणभीजन्मेहैं यही श्रुतिवोसूत्रकाअर्थहै जैसेपूर्वमीमांसासेयज्ञमेवारुणीइष्टिहै औ रसोमवमनमेदोषहै तिससे व्यवहितउपमानमानाहै तैसेहीतो सरेपादकाकहायहांलेनातथाशब्दसे कहाहै कहीं प्राणकाजन्म नहींसुना।सोअयुक्तहै कहींसुन्नेसे नहीं फिर सुन्नेसेव्योमादिवत् प्राणभीजन्यहै ॥

गौण्यसम्भवात् २

प्राणजन्मश्रुतिगौणीसंभवनहींहै क्युं प्रतिज्ञानहानसे क स्मिन्नुभगवोविज्ञातेसर्वमिदमित्यादि इसकाउपसंहारहैकि ब्रह्मै वेदंविश्वंवरिष्ठमित्यादिमेभीऐसीप्रतिज्ञाकी योजना करलोको ईप्रतिज्ञाकोछ।ड़केव्योमाधिकरणके अनुकूलइससूत्रकीव्याख्या करतेहैं प्राणावावऋषयइति ऋषयोवावतदग्रेसदासीदिति इस सेप्राणअजसुनाहै ॥

तत्प्राक्श्रुतेश्च ३

जायतेयहएकपदउत्तरश्रुतव्योमादिमेमुख्यऔरप्राक्श्रुतप्रा णोंमेगौणनहींकहिसक्तेहैं वैरूप्यसे जैसेसप्राणमसृजतप्राणाच्छ्रद्धा मिति यहां प्राणश्रुतसृजतिशब्द अन्यजन्यश्रद्धादिमे अनुसञ्जितहैं जैसेसर्वाणिभूता।निव्युच्चरन्तीत्यादि इसमें अन्तिमपढ़ाव्युच्चरन्तिश ब्दपूर्वपढ़ेप्राणादिसेसम्बद्धहै ॥

तत्पूर्वकत्वाद्वाचः ४

यद्यपितेजसृष्टिकेअधिकारमे प्राणजन्मनहींसुनाहै तेजोवन्न

इनतीनकाजन्मसुने सेतथापि जेतीन ब्रह्मप्रकृतिहोनेसेवाक्प्राणमनब्रह्मप्रकृतिकसिद्धहैं औरठौरमे भी तेजजलअन्नपूर्वकवाक्प्राणमनपढ़ेहैं अन्नमयंहिसोम्यमनःआपोमयः प्राणस्तेजोमयीवागितिजोजेमुख्यअन्नादिमयहैं तोब्रह्मप्रभवहैं अथभाक्तहैं तोभी ब्रह्मकीकरीनामरूपव्याक्रियामे सुनेसे ब्रह्मकर्तृत्वके प्रपञ्चार्थअन्नादिमयःत्वमनआदिकोकहाहै तिससेप्राणभीब्रह्मकाविकार्यहै

इन्द्रियसंख्याधिकरण २

सप्तगतेर्विशेषितत्वाच्च ५

पूर्वपक्षसूत्रहै

दूरक्रियाप्राणोंकेजन्ममेश्रुतिविरोधअबसंख्यामेविरोधदूरकर्तेहैं कहींसातहैं जैसेसप्तप्राणाभवन्तीति कहींआठग्रहरूपसेकहेहैं जैसे अष्टौग्रहाअष्टावतिग्रहाइति कहींनौ सप्तवैशीर्षण्याःप्राणाद्वावर्वाञ्चाविति क्वचिद्दशनववैपुरुषेप्राणानाभिर्दशमीति क्वचिदेकादशदशेमेपुरुषेप्राणाआत्मैकादशइति क्वचिद्द्वादशसर्वेषांस्पर्शानांत्वगेकायनं क्वचित्त्रयोदशचक्षुश्चद्रष्टव्यं ऐसे श्रुतिलड़तीहैं मिथःप्राणसंख्यामेफिरसातहीप्राणहैं यहप्राप्तहै कैसे गतेःश्रुतिसे सातनिश्चितहैं ननुगुहाशयानिहितासप्तसप्तेति इसमेंतोवारसातसातकानामवीप्साहै वहसातसेअधिककोदिखातीहै सोदोषनहींहै हरएकपुरुषमेसातसातप्राणहैं नकि सातसातअन्यअन्यप्राणहैं विरोधसे लोकसंख्याकाअनुरोधहै औरवृत्तिभेदसेसातसेअधिकसंख्याकासुनाहै यह निश्चयएकमतसेहै दूसरेमतमेहीनअधिकजहांसंख्याप्राप्तहोवहांअधिकलेवेहीनउसमेअन्तर्गतहोसक्तीहै नकिहीनमेअधिक इसयुक्तिसे ग्यारहप्राणहैं आत्मैकादश इसमेआत्मशब्दसे अन्तःकरणलेतेहैं करणकेअधिकारसे यद्यपिबारहतेरहभीकहेहैं तथापिग्यारहकेकार्यहैं नकिअ

धिककोजिससेअधिककारण कल्पोगे शब्दस्पर्शरूपरसगन्ध जेपांच विषयबुद्धिकेभेदहैं इनकेअर्थपांच बुद्धीन्द्रियांहैं औरवचनआदा नविहरणउत्सर्गआनन्दजेपांचकर्मभेदहैं इनकेअर्थपांचकर्मेन्द्रि यांहैं सर्वार्थविषयऔरत्रैकालिकवर्तिमन एकअनेकवृत्तिहै ऐसे होवृत्तिभेदसेकहींभिन्नवत्कहाहै जैसेमनबुद्धिअहंकारचित्तादि जोसातमानताउसकेहाथआरहीलगेस्थानभेदसेदोकान१दोनेत्र२ दोनाक३एकवाक्४औरनकि वृत्तिभेदसातहैं हाथादिवृत्तिअत्य न्तविजातीयहोजेसे तैसेनौदशभीदेहकेछिद्रोंकोअभिप्रायसेकहे हैं नकिप्राणतत्त्वाभिप्रायसे जाभिकोई प्राणप्रसिद्धनहींहै मुख्य प्राणकाविशेषएकायनहै कहींउपासनार्थगनेहैं कहींप्रदर्शनार्थ हैं फिरइसविचित्रविगानमेंक्याकिंपरहै यहविवेक्तव्यहै कार्यवश सेग्यारहकाआम्नानप्रमाणहै श्रुति हस्तौवैग्रहादूत्यादि ॥

हस्तादयस्तुस्थितेतोनैवं ६

सिद्धान्तसूत्रहै तुशब्दसातसेव्यतिरेककोकहताहै ॥ दोसूत्रों कोअपरयोजनाहै किसातकोगतिसुननेसेसातहैं श्रुति तमुत्क्राम न्तंप्राणोनूत्क्रामतिप्राणमनूत्क्रामन्तं सर्वेप्राणाअनूत्क्रामन्तीतिइ समेत्वगन्तनेवादिसातविशेषहैं जैसे कहेकिसबगावेंलाओ तो- जोप्रकृतहैं वोहीसबपदसेलीजावेंगी अन्यथाप्रलापहो ननुवि- ज्ञानअठमानिकरासुनाहै फिरसातहीकैसेनिकरेहैं यहदोषन- हींहै मनविज्ञानकातत्वाभेदसेवृत्तिभेदसेभीसातसिद्धहैं इससे- कहाकिहाथादिअपरहैंहस्तौवैग्रहादूत्यादिमें अर्थ हेचज्ञजिससे बंधताहै इससेग्रहअर्थात्बंधनहैं आथर्वणमें हस्तौचादातव्यमि त्यादिऔरचक्षुश्चद्रष्टव्यमित्यादि इनकातुल्यवत्पाठहै औरग्या रहकेनिकरनेमें श्रुति दशेमेपुरुषेप्राणाआत्मैकादशस्तेयदास्मा च्छरीरान्मर्त्यादुत्क्रामंत्यथरोदयन्तीति अवसर्वशब्दकासङ्कोचन-

हीं है उससेअविशेषकाग्रहहै प्रदर्शनार्थं सातका निकरनाकहाहै फिरशब्दसे औरकार्यसे ग्यारह सिद्ध हैं जगपश्चिकालेसी १००इन्द्रियांहैं शतायुर्वैपुरुषः शतइन्द्रियःशतवीर्यंइति ॥

विशेषितत्वाच्च ७

अबप्राणोंकेस्वभावान्तरकाअभ्युच्चयहै अणुसूक्ष्महैंनकिपरमाणुकेतुल्यहैं सबदेहमेंव्यापककार्यकीअसिद्धिसेजोस्थूलहोतेतोमरणकालमेंदेहसेंनिकरतेपरबिलसेसांपकेतुल्यउपलभतेजिसमाणकेढिगबैठेको परिच्छिन्नहैंनविभुहैं गत्यादिसे यदिसर्वगतकालाभदेहप्रदेशमेंकहो सोभीनहींहै वृत्तिमात्रकोकारणकीसिद्धिसे जोउपलब्धिसाधनहै सोवृत्तिहै जोअन्यहै सोहीहमकोकारणहै फिरतोनाममात्रमें झगड़ाहै इससे करणव्यापकमानना निरर्थकहै तिससेसूक्ष्मपरिच्छिन्नप्राणहैं यह मेरानिश्चयहै ॥

इन्द्रियपरिमाणाधिकरण ३

अणवश्च ८

मुख्यप्राणब्रह्मविकारहैइतरप्राणवत् यहअतिदेश है इससे सबप्राणब्रह्मविकार हैं श्रुतिएतस्माज्जायतेप्राणइत्यादिफिरकिस लियेअतिदेशहै अधिकशङ्कानिरासार्थ नासदासीदिति इसब्रह्म सूक्तमेंमन्त्रवर्णहै नमृत्युरासीदमृतन्नतर्हिंनरात्र्याअन्हआसीत्प्रकेतः आनीदवातंस्वधयातदेकंतस्माद्धान्यन्नपरःकिञ्चनासेति अर्थ आनीत्इसपदसेप्राणकर्मोपादानसेजन्मके पूर्वविद्यमानसीप्राणसूचनाहै इससेप्राणअजहै यहकिसीकीमतिहै इसकोअतिदेशसेदूरकर्त्ताहै आनीत्पदजन्मसे पूर्वप्राणसद्भावसूचक नहीं है अवात इस विशेषण से अप्राणो इसश्रुतिसेमूलप्रकृतिप्राणादिशून्यदिखाईहै तिससेकारणसद्भावसूचक आनीत्पद है ॥

प्राणजन्माधिकरण ॥ ४ ॥

श्रेष्ठश्च ९

प्राणोवावज्येष्ठश्चश्रेष्ठश्च इसमेंज्येष्ठप्राणशुक्रदानकालसेलेकेगर्भं तक है अन्यथायोनिमेंनिषिक्तपूयहो औरश्रोत्रादिकानकेछिद्रादि स्थानकेविभागसेलब्धवृत्तिहोनेसे ज्येष्ठनहीं है ज्येष्ठगुणाधिक्यसे है श्रुति नवैशक्ष्यामस्त्वदृतेजीवितुमिति अर्थ प्राण हीनहमनहीं जीसक्ते हैं ॥

प्राणतत्वान्तराधिकरण ५

नवायुक्रियेपृथगुपदेशात् १०

अबजिज्ञासा है

किमुख्यप्राणकाक्यास्वरूपहै श्रुति यःप्राणःसवायुःसएषवायुःपञ्चधाभवतिप्राणोपानोव्यानउदानःसमानइति या सांख्यमतसेसमस्तकरणवृत्तिप्राणहैं जैसे सामान्यकरणवृत्तिप्राणाद्यावायवःपंचेत्यादिसोनहींनवायुप्राणहै नकरणव्यापारहैकैसेवायुप्राणसेभिन्नहै प्राणएवब्रह्मणश्चतुर्थःपादःसवायुनाज्योतिषाभातिच तपतिचेति इसमेंवायुसेवायुकाभेदनहींहै तैसे करणवृत्तिकाभेदनहींहैवृत्तिवृत्तिमत्के अभेदसेकरणवृत्तिकरणसेभिन्ननहीं हैएतस्माज्जायतेप्राणइसमेंकरणसेप्राणऔरवायुकाभेदपढ़ा है सब करणोंकीवृत्तिएकमम्भवनहीं है जैसे एकपिञ्जरमेंबहुतपक्षीहर एकअपनीरवृत्तियुक्तहैं तोभी मिलकेएकपिञ्जरकोचलातेहैं तैसे एकदेहमेंग्यारहप्राणहरएकनियतवृत्तिहोनेपरभीमिलके एकप्राणनामीवृत्तिलभतेहैं यहअच्छानकहातुमने पिञ्जराचलानेमेंहरएकबीचकीवृत्तिसे पिञ्जरचालनरूपसे युक्तपक्षीपिञ्जरको चलातेहैंऐसाहीदेखनेसेयहांश्रवणादिहभियुक्तप्राणमिलकेप्राणननहींकर्त्तेहैं यहयुक्तहैप्रमाणकेअभावसेश्रवणादिसे प्राणनचलन्तविजातीयसे तिससेवायुऔरक्रियासेप्राणभिन्नहैं यःप्राणः

सवायुरिति इसकाअर्थहैकिवायुअध्यात्मापन्नऔरपञ्चव्यूहऔर विशेषात्मासेअवतिष्ठमानहै सोहीप्राणकहानकितत्वांतरऔर-नकिवायुमात्र इससेदोनोंभेदाभेदश्रुतिबिरुद्धनहींहैं यहरहो॥

चक्षुरादिवत्तुतत्सहशिष्ट्यादिभ्यः ११

प्राणभीदेहमेंजीववत्स्वतन्त्रहै श्रेष्ठसेऔरवागादिसबउससे गौणहैं प्राणकीविभूतिकोबहुतश्रुतियां सुनातीहैं जैसे सुप्तेषु-वागादिषु प्राण एकोहिजागर्ति प्राणएकोमृत्युनाअनाप्तःप्राणः सम्वर्गोवागादीन्संवृङ्क्तेप्राणइतरान्प्राणान्रक्षतिमातेवपुत्रानि ति इससेस्वातंत्र्यवारणार्थसूत्रहै चक्षुरादीतिजैसे नेत्रादिराज-प्रकृतिके तुल्यजीवकोकर्तृत्वभोक्तृत्वकेअर्थउपकरणहैं नकिस्वत न्त्रहैं तैसेमुख्यभीप्राणराजमन्त्रिकेतुल्यजीवकेसर्वार्थककरने से-उपकरणहै नकिस्वतन्त्रहै कैसे तत्सहशिष्ट्यादिभ्यः प्राणसम्बा-दादिमेनेत्रादिकेसाथउसकाशासनहै सहशासनसमानधर्मोंका युक्तहै बृहद्रथन्तरादिवत् सूत्रकारआदिशब्दसेसंहतऔरअचेत नादिहेतुओंकोप्राणकीस्वातंत्र्यनिराकरनमेदिखाताहै॥

अकरणत्वाच्चनदोषस्तथाहिदर्शयति १२

रहोकहा सो यदिनेत्रादिवत्प्राणजीवार्थकरणमानोगेतदा रूपादिवत्प्राणकाबिषयभीहो रूपालोचनादिग्यारहकार्यसेग्या रहप्राणगनेथे नकिबारहऔर अबअन्यकार्यप्राप्तहै उसकेलिये-बारहमाप्राणप्रतिज्ञातहै इसशङ्काकाउत्तरपढ़ताहै अकरणत्वात् प्राणअकरणहै इससे विषयांतरकीप्राप्तिनहींहै नेत्रादिवत् वि-षयकेपरिछेदसेप्राणकरणनहींहै औरनकिप्राणकेकार्यअभावहै कैसे तथाहि श्रुति प्राणांतरमेंसम्भववैशेषिक कार्य प्राणकादि-खातीहै प्राणसम्बादमें अथहप्राणाअहंश्रेयसिव्यूदिरे इस आ-रम्भसे यस्मिन्वउत्क्रांतइदंशरीरंपापिष्ठतरमिवदृश्येतसवःश्रेष्ठइ

ति अर्थ प्रत्येकवागादिकेनिकरने सेवागादिकीवृत्तिमात्रअर्थात् मूकादि रहा जैसा पहिले जीताथा तैसाही जीता रहा और प्राणकोउच्चिक्रमिषामेवागादि शिथिलऔरदेहपातश्रुतिदिखातीहै इससेप्राणकेबशदेहइन्द्रियकाठहरनाहै फिरदेहादिसेबरिष्टप्राणनेकहाकितुमअशोकमतकरोमैंअपनेको पांच विधकरदेहकोधामकेधारणकरेहूं श्रुति मामोहमापद्यथाहमेवैतत्पञ्चधात्मानं प्रविभज्यै तद्बाणमवष्टभ्यविधारयामीति प्राणेन रक्षन्नवरं कुलायमिति सुप्तनेत्रादिमेंदेहरक्षकप्राणहै जिसकिसीअङ्गसे प्राणनि करता है सोसूखताहैजोखातापीताहै तिस्से इतरप्राणोकीरक्षाहै इस्से प्राणाधीनदेहेन्द्रियोंकी पुष्टि है प्राणाधीनजीवकाजीना मरणाहै श्रुति कस्मिन्न्वहमुत्क्रान्तउत्क्रान्तोभविष्यामिकस्मिन्वाप्रतिष्ठितेप्रतिष्ठास्यामीतिसप्राणमसृजतेति ॥

पञ्चवृत्तिर्मनोवद्व्यपदिश्यते १३

इससेभीमुख्यप्राणकावैशेषिककार्यहै जिससेउसकी पांचवृत्ति श्रुति मे कही हैं श्रुति प्राणोपानोव्यानउदान:समानइति सोयहभेदकार्यकीअपेक्षासेहै इनकी उच्छ्वासनिश्वासप्राणअपानकाकर्महै इनदोकी सन्धिमेवर्तमानवीर्यवत्कर्महेतुव्यान है उदानऊर्ध्ववृत्तिउत्क्रान्त्यादिकाहेतुहै सबअङ्गोंमेजोअन्नरस कोपहुंचाताहै सोसमानहैमनोवत् जैसेमनकीपांच वृत्तिहैं तैसे प्राणकीहैं मनकीश्रोत्रादिविषय शब्दादि पांच हैं नकिकाम:सङ्कल्प: आदिवेदमेपढ़ीवृत्तियांग्राह्यहैं पांचसेअधिकहोनेसे याउनकापांचमेअन्तर्भावहै ननुयहांभीश्रोत्रादिकीअपेक्षाबिनाहीभूतभावीआदिमनकीअन्यवृत्तिहैं इससेसंख्याअधिकरही इससे जोपरमतनिषिद्धनहींहै सोसम्मतहै इसन्यायसेयोगशास्त्र मे प्रसिद्धमनकीपांचवृत्तिलेतेहैं योग सूत्र प्रमाणविपर्ययविकल्पनिद्रा-

स्मृतयः इति इसका अर्थ मैंने योगसूत्रभाष्य में लिखा है भावार्थ य यथायथ कुतद्दत्तिमात्रसे प्राणका निदर्शन मन है प्राणजीव का उपकार उपष्टम्भवृत्तिमात्रसे है मनोवत् यह सूत्रयोजना है इसप्रकरण में ह शिवब्द का अर्थ अवस्था है इससे प्राणवायु के भेदाभेद श्रुतियों का अ विरोध सिद्ध है ॥

प्राणेन्द्रियसमताधिकरण ॥ ६ ॥

अणुश्च १४

अणु सूक्ष्मपरिच्छिन्न है उत्क्रान्त्यादिसे ननु विभु भी प्राण पढ़ा है समः प्लुषिणा समो मशकेन समो नागेन सम एभिस्त्रिभिर्लोकैः समो ऽनेन सर्वेणेति अर्थ आधिदैविक समष्टिव्यष्टि रूप जो है हिरण्य-गर्भ प्राणात्मा यो सो विभु कहा है न कि आध्यात्मिक प्राण विभु कहा है और समः प्लुषिणेत्यादि समान वचन से प्रतिप्राणिवर्ति प्राणपरिच्छिन्न ही कहा है तिससे दोष नहीं है ॥

देवतापरतन्त्रेन्द्रियाधिकरण ॥ ७ ॥

ज्योतिराद्यधिष्ठानंतुतदामननात् १५

क्या प्राण अपनी महिमा से कार्य करते हैं या देवाधिष्ठित स्वमहिमा से कार्य करते हैं और देवाधिष्ठान से देव भी भोक्ता हो और शरीर भोक्ता न हो इससे प्राण स्वशक्ति से कार्य करते हैं सो नहीं ज्योतिरातु श ब्द पूर्वपक्ष का वारक है अग्न्यादि के अभिमानी देवों से अधिष्ठित वागादिकरणजात स्वकार्य में प्रवर्तते हैं तदामननात् ऐसा ही पढ़ने से अग्निर्वाग्भूत्वा मुखं प्राविशदित्यादि अग्नि का वाक् होना और मुख में घुसना देवात्मा को अधिष्ठाता मान के कहा है देव सम्बन्ध का ड़ अग्नि का वाणी मुख में विशेष सम्बन्ध नहीं दीखते हैं अन्यथा मुह जरो ऐसी-अन्य श्रुतियों में जोड़ लो जैसी शकटादि वर्द्धादि से अधिष्ठित प्रवर्त-

? विराट् देह ॥ * सूत्रात्मा ॥

सानदेखेहैं शकटादिवइंयुक्तप्रवृत्तभौरधीरादिदृष्यादिमेंअनधिष्ठितप्रवृत्तदेखनेसेदोनोंयुक्तहैं तोभीआगमसेदेवाधिष्ठित कारणवर्गमानलो देवकीभोगवारताहै प्राण ॥

प्राणवताशब्दात् १६

हैप्राणाधिष्ठातादेवताभीशारीरकार्यकरणसङ्घातका स्वामीउससेप्राणोंकासम्बन्ध श्रुतिसेश्रुतहै अथयत्रैतदाकाशमनुविषण्णंचक्षुः सचाक्षुषःपुरुषोदर्शनायचक्षुरथयोवेदेदञ्जिघ्राणीति स आत्मागन्धायघ्राणमित्यादिअपिचकरणोंकेअधिष्ठातादेवअनेक होनेसेएकदेहमेंवेभोक्तानहींकल्पासक्तेहोतिससेदेहमेंएक शारीरभोक्ताहै प्रतिसन्धानादिकेसम्भवसे ॥

तस्यचनित्यत्वात् १७

शारीरशरीरमेंभोक्तासेनित्यहै पुण्यपापकेलगनेसेदुःख सुखभोगसेनकिदेवनित्यहैं देहमेंदेवसारथिवत्हैं जैसे दीपादिक रथकेउपकारीकरणपक्षमेंघुसेहैं तैसे करणकेउपकारीहैं नकिभोक्ताहैं जीवरथप्रभुवत्भोक्ताहै ऐसेजीवकरकेदेव अन्यथासिद्धनहींहैं श्रुतिपुण्यमेवामुङ्गच्छतिनहवैदेवान्पापङ्गच्छतीति यह श्रुतिदेवोंकोदेहमेंअधिष्ठानसेभोगकेअनुमानकी वाधिकाहै तिससेशारीरभोक्ताहै औरदेवकरणपक्षकेहैं नकिभोक्तृपक्षके ॥

प्राणविलक्षणेन्द्रियाधिकरण ॥ ८ ॥

तइन्द्रियाणितद्व्यपदेशादन्यत्रश्रेष्ठात् १८

मुख्यएकअन्यग्यारहइसमेंयहसन्देहहै किक्यामुख्यकाअन्य वृत्तिभेदहैं यावस्त्वन्तरहैं यहप्रथमहैमुख्यकेअन्यवृत्तिभेदहैं कैसे श्रुतिसे हन्तास्यैवसर्वेरूपमसामेतितएतस्यैवसर्वेरूपमभवन्निति अर्थ वागादिनेसङ्कल्पकियाकिहमसवमुख्यप्राणस्वरूपहोवें फिर

वैसेहीहोगयेयहभभेदश्रुतिकाअर्थहै एकप्राणशब्दसेऐक्यनिश्चित
है अन्यथाअनेकार्थप्राणशब्दअन्याय्यहोऔरएकठौरमुख्यअन्यठौ
रलाक्षणिकहोतिससे जैसेएकप्राणकीप्राणादिपांच वृत्तिहैं ऐसे
हीवागादिग्यारहवृत्तिहैंसोनहीं वागादिप्राणतेतत्वान्तरहैं कै-
से व्यपदेशभेदात् एतस्माज्जायतेप्राणोमनःसर्वेन्द्रियाणिचेत्या-
दिइसमेप्राणऔरइन्द्रियांपृथक्२पढ़ीहैं प्राणवत्मनकाभीइन्द्रि
योंसेभेदहोयहसचहैतोभीस्मृतिकेअनुसारमनइन्द्रियहै नकिप्रा
णतत्वभेदपक्षमेंव्यपदेशभेदउपपद्यमानहै औरतत्वैक्य मे एकही
प्राणइन्द्रियव्यपदेशकोलभेयानलभेयहनिषिद्धहै तिससेतत्वांत
रअन्यमुख्यसेहैं ॥

भेदश्रुतेश्च १९

वागादिसेप्राणभिन्नसुनाहै तेहवाचमूचुरिति यहां सेलेके-
उपन्यस्योपसंहृत्य यहवागादिप्रकरणहै अथ हेममासन्यंप्राणमू
चुरिति तथामनोवाचंप्राणान्तान्यात्मनेहुतेत्यादिभेदश्रुति हैंय
हअसुरपदभूठकावाचकहैवाचादिभूटसेपापिष्ठहोतेहैं फिरअथ-
शब्दसेमुख्यप्राणभेदकहाहै इसप्रकरणभेदसे अन्यतत्वांतरहैं मु-
ख्यसे मुख्यसेअन्यविलक्षणहैं सुप्तवागादिमें मुख्य एक जगता है
सोएकमृत्युसेअनाप्तहै अन्यआप्तहैं मुख्यस्थितिउत्क्रांति से देह-
धारणपतनकाहेतुहै नकिइन्द्रियोंकोइतरथा हीन इन्द्रिय मरी
विषयोंकोइन्द्रियांदेखतीहैं नकिप्राणकोतिससेवागादितत्वान्त
रहैं अभेदश्रुतिमेंभीपूर्वापरकेदेखनेसेभेदप्रतीतहै श्रमरूपमृत्य,
सेवागादिग्रसितहैं नकिमध्यमप्राण अयस्वैनःश्रेष्ठः इससे मुख्य
है तिससेअविरोधाथवागादिमेंपरिस्पन्दकालाभप्राणाधीनऔ
रप्राणरूपहोनाउनकामानोनकिप्राणकेसाथवागादि की तादा-
त्म्यहै इससेप्राणशब्दइन्द्रियोंमेलाक्षणिकहै इसमेश्रुति तएत-

ह्येवसर्वरूपमभवंस्तस्मादेतएतेनाख्यायन्तेप्राणाइति तिससे इ-न्द्रियांतत्वांतरहैं प्राणसे ॥

वैलक्षण्याच्च २०

सोनेमेसबइन्द्रियांअपने२कारणकेसङ्गसोतीहैं और प्राण-जागताहै इसविलक्षणतासे प्राणऔरइन्द्रियोंकाभेदहै प्राणाग्न-यएवैतस्मिन्जाग्रतीति और प्रात्यक्षिककार्यप्राण और इन्द्रि-योंकाविलक्षणहै जैसा कि इन्द्रियां अपने२विषयकोदेखतीअर्थात् ताहैं औरप्राणइन्द्रियऔरदेहदोनोंकानेताहैअनेवाग्ने चादिसे भी कर्मेन्द्रियऔरज्ञानेन्द्रियकेभेदकासमुच्चयकिया है इसवहुवै लक्षण्यसेप्राणसे इन्द्रियांतत्वांतरहैं ॥

जगत्कर्तृत्वाधिकरण ॥ ६ ॥

संज्ञामूर्त्तिक्लृप्तिस्तुत्रिवृत्कुर्वतउपदे-शात् २१

सत्प्रकरणमेतेजजलपृथिवीकीसृष्टिकहिकेफिरकहा कि सेयं देवतैक्षतहंताहमिमास्तिस्रोदेवताअनेनजीवेनात्मनानुप्रविश्य नामरूपेव्याकरवाणीति तासांत्रिवृतन्त्रिवृतमेकैकांकरवाणीति इसमें क्याजीवहैं नामरूपकाव्याकर्त्तायापरमेश्वर है फिर जीव-नामरूपकाव्याकर्त्ताहै कैसे अनेनजीवेनात्मनेति इस विशेषण-से जैसे लोकमेंचारमेंमैंपरसेनामेघुसिके उसकी संख्यादिजानूं गा ऐसेकहिनेमेचारकेदेखेभेदकोहेतुकर्त्ताहोनेसेराजा अपने में आरोपकर्त्ताहै मैनेदेखाहै ऐसेजीवकृतनामरूपकोहेतुकर्त्तासे-देवताआत्मामेआरोपताहै व्याकरवाणीति इसउत्तमपुरुषयोग से कित्थ डित्थडवित्थादिनामोंमें और घटशरावादिरूपोंमेंजीव-हीकर्त्तादेखाहै तिससेनामरूपव्याकर्त्ताजीवहीहै इसका उत्तर

हैकि संज्ञामूर्तिक्लृप्तिः तुपरपक्षवारक है नामरूपव्याक्रियात्रि-
वृत्कुर्वत परमेश्वरकोदिखाती है त्रिवृत्करणमेवुहनिरपवादक-
र्त्ताहैसंज्ञाक्लृप्तिअग्निसूर्यचन्द्रादिकुशकाशयवादिपशुनरमृगादि
इनमेप्रत्याकृतिप्रतिव्यक्तिअनेकधाहै सोउसीपरमेश्वरकीकृतिहै
जिसनेतेजजल पृथिवी रची है कैसे उपदेशात् व्याकरवाणीति
इसउत्तमपुरुषकेकहिनेसेनामरूपकाकर्त्ताब्रह्म उपदिष्ट है और
जीवेन इसकासम्बन्ध अनुप्रविश्य इसपदकेसाथहै नकिव्याकर
वाणीति इसपदसेहै आनन्तर्यसे व्याकरवाणीति इससम्बन्धमे
देवताविषयउत्तमपुरुषप्रयोग औपचारिककल्पोऔरगिरनदी-
समुद्रसूर्यादिनानादेशोंमेनामरूपकरनेकोअनीश्वरजीव समर्थ
नहींहै अग्नियहरूपकाव्याकरणहैफिरविषयकेभानसेअग्नियह-
नामधराहै ऐसेहीसूर्यादिमेजानो ॥

मांसादिभौमंयथाशब्दमितरयोश्च २२

पुरुषसेउपभुक्तत्रिवृत्कृतभूमिसेमांसादियथाशब्दहोतेहैं श्रु
ति अन्नमशितंत्रेधाविधीयतेतस्ययःस्थविष्ठोधातुस्तत्पुरीषम्भवति
योमध्यमस्तन्मांसंयोऽणिष्ठस्तन्मनःइतित्रिवृत्करीभूमियवादिअन्न
रूपखातेहैं यहअभिप्रायहै उसकास्थूलांशपुरीषहै और अध्या-
त्ममांसकोबढ़ाताहै औरअतिअणुमनको औरजलतेजकायथा
शब्दकार्यजानो मूतलोहूप्राणजलकाकार्यहैं हाड़मज्जावाणी-
तेजकाकार्यहै ॥

वैशेष्यात्तुतद्वादस्तद्वादः २३

जोसबभूतभौतिकत्रिवृत्कृतअविशेषश्रुतिसेहैं तो यहविशेषकहि
ना कैसेहै यहतेजयहजलयहपृथिवीहैइससेपढ़ाकि वैशेष्यात्तु
तुसेउक्तशङ्कावारणकीहै वैशेष्यभूयस्त्वहै यद्यपित्रिवृत्करणहै त

यापिकहींकिसीभूतधातुकाभूयस्त्वलभताहै जैसे अग्नितेजोभू-
यान्है जलजलभूयःहै पृथिवीअन्नभूयसीहै प्रयोजन व्यवहारप्र
सिध्यर्थचिवृत्करणहै औरव्यवहारत्रिवृत्कृतरूपोंसाऐक्यकी प्रा-
प्तिमेलोकोंकोभेदसेतीनभूतविषयकनप्रसिद्धहो तिससेत्रिवृत्क-
रणमेभीआधिक्यसेतेजजलपृथिवी यह विशेषकहिनाभूतभौति-
कविषयमेउपपद्यमानहै तद्वादस्तद्वादइति यह पदाभ्यासअध्या
यपूर्तिसूचकहै इति ॥

इतिश्रीयुक्ताराचन्द्रवर्मणाकृतेब्रह्मसूत्रभाषाभाष्येद्वितीया
ध्यायस्यचतुर्थःपादःपूर्णः २ ॥

तीसरासाधनाध्यायः ॥

वैराग्यपाद ॥ १ ॥

परलोकगमनाधिकरण ॥ १ ॥

तदन्तरप्रतिपत्तौरंहतिसंपरिष्वक्तः-प्रश्ननिरूपणाभ्यां १

दूसरेअध्यायसेवेदवेद्यब्रह्मकेदर्शनमेश्रुतिस्मृतिन्यायका वि
रोधदूरकराथा औरपरपक्षोंकीअनपेक्षाकहीथी औरजीवसेभि
न्नतत्वजीवकेउपकरणब्रह्मजन्यकहेथे अवउपकरणों से उपहित-
जीवकोसंसारगतिकाप्रकारऔर जीवकेअवस्थांतरऔरब्रह्मसत
त्वऔरविद्याभेदाभेदऔरगुणोपसंहारअनुपसंहारऔरसम्यग्द-
र्शनसेपुमर्थसिद्धिऔरसम्यग्दर्शनकेउपायोंकोविधिभेदऔर मुक्ति
फलकाअनियमजोइसमेचिन्ताकियेजातेहैं प्रसङ्गसेऔरभीजानो
प्रथमपादमेंपञ्चाग्निविद्यासेसंसारकोगतिकेभेददिखातेहैं वैरा-

ग्यार्थ तस्माज्ज्, गुप्सेतेति अर्थ अन्तिमेसुना किसंसारदशादेख-
घिनकरे बुरेकर्मोंसेजीवमुख्य प्राण सचिवसेंद्रियसमनस्कविद्या-
कर्मपूर्वप्रज्ञापरिग्रहपहिलो देह छाड़ देहांतरको पकड़ताहै य
हनिश्चितहै अथैनमेतेप्राणाअभिसमायन्तीति यहांसेअन्यन्नवतरं
कल्याणतरंरूपंकुरुतइति यहांतक अर्थ मरणकालमेप्राणहृदय
मेंजीवकेसाथएकहोतेहैं रूपंदेहआगेकीदेहकेपरिणामीभूत सू-
क्ष्महैं जीवक्यादेहकेसूक्ष्मबीजोंसेअलपटायालपटाजाताहै यह
संशीतिहै अलपिटाजाताहै कैसे करणोपादानवत्भूतोंका उ-
पादाननसुन्नेसे श्रुति सएतास्तेजोमात्राःसमभ्याददानइतिपश्य
तिजिघ्रतीति इस वाक्यसेकेवलभूतमात्राकाउपादाननहींहैकि
न्तुनेत्रादिका भीहै भूतमात्रासर्वत्रसुलभहोनेसेजहांदेहबनेगी-
वहांवेहैं फिरउनकानयननिष्प्रयोजनहै तिससेबिनालपटाजा
ताहै इससेकहाकितदन्तरइति देहांतरकीप्राप्तिमेजीवदेहबीज
सूक्ष्मोंसे लपटा जाता है कैसे प्रश्न इससे पानीमे घुसा जीव-
जाताहै जैसे तृणजलायुकाअन्यतिनुकाकोपकड़केफिरपहिले-
पकड़ेकोछाड़तीहै तैसे जीव अन्यदेहको पकड़पूर्वदेहको छा
ड़ताहै यहश्रुतिकलहहै तद्यथातृणजलायुकेति इसमेदोघींभा
वमात्रजलूकासेउपमितहै इससे कलह नहीं है कहिचुकेश्रोती
कल्पना अब पुरुषकल्पनासुनो सांख्यमानतेहैं किव्यापककरण
औरआत्मादोनोदेहांतरकीप्राप्तिमेंकर्मवशसे जहांजन्मतावहांवृ
त्तिलभताहैसुगतकल्पनाहै किनिर्विकल्पकज्ञानसन्तानरूपआ
त्माकादेहांतरमेशब्दादिसविकल्पकज्ञाननामवृत्तिका लाभहैज
हां २ जन्मेगावहां २ नई २ इन्द्रियांहोंगी कणादकल्पना भोगस्था
नमेमनोमात्रजाताहै इन्द्रियांनईजन्मती हैं दिगम्बर कल्पना-
जीवदेहसेकूददेहांतरमेपहुंचताहै शुकसाबृक्षसे वृक्षान्तरको श्रु-

तिभक्तिसे जो अनादरणीय हैं प्रश्नश्रुति वेत्थयथापञ्चम्या। हुतावापः पुरुषवचसोभवन्तीति उत्तरश्रुति द्युपर्जन्यपृथिवीपुरुषयोषित्सु- पञ्चस्वग्निषुश्रद्धासोमवृष्टयन्नरेतोरूपापञ्चाहुतीरिति ॥

तुशब्दनोदितशङ्कावारकहै ननुकेवलपानीमेजातासुना। फिरभूतसामान्यमेजाना कैसे कहाउसकाउत्तर ॥

त्र्यात्मकत्वात्तुभूयस्त्वात् २

त्रिवृत्कृतजलकेआरम्भसे तेजपृथिवीभीआरम्भक हैं देहमे तीनोकेकार्यकीउपलब्धिसे औरदूसरे भीत्र्यात्मकदेहहै किवात पित्तश्लेष्मसे केवलजलसे देहनहींबनसक्ताहै तिससेप्रश्नप्रति बा- क्यमेजलशब्दबहुतकीअभिप्रायसे है नकिकेवलजलाभिप्रायसे सबदेहोंमेंरसलोहितादिद्रवबहुतदेखतेहैं ॥

देहमेधरतीबहुतदेखतेहैं सोनहीं तेजधरतीसे जलबहुत है देखासेमेतुमनेकिदेहबीजशुक्ररक्तमेद्रवबहुतहै औरअग्निहोत्रा दिकर्मओरसोमाज्यपयआदिद्रवद्रव्यहैं औरकर्मसमवायिजलहै जैसे जबलोकडानहोगागर्भतबलोजलबहुतरहेगा इससे केव- लजलकहाहै तिससे जलबहुतप्रसिद्धहै औरबहुतसे सबसूक्ष्म- भूतदेहबीजोंकाग्रहणजलशब्दसे है यहनिरवद्यहै ॥

प्राणगतेश्च ३

जोप्राणकाजानासुनाहै सोनिराश्रयसम्भव नहीं है तिससे प्राणाधारसूक्ष्मभूतसजलप्राणकेसङ्गजातेहैं नहींनिराश्रयप्राण- जातेठहिरतेहैं कहींजीवतकेनदेखनेसे श्रुति तमुत्क्रामन्तम्प्रा णोनुक्रामतीतिसएतास्तेजोमात्राइत्यादिश्रुतिकासमुच्चयचसेहै॥

अग्न्यादिगतिश्रुतेरितिचेन्नभाक्तत्वात् ४

रहो प्राणमरणकालमेंजीवकेसाथनहींजातेकिन्तु अग्न्यादि को यत्रास्यपुरुषस्यमृतस्याग्निम्वागप्येति वातम्प्राण इत्यादि इतिचेन्न अर्थ यहमतकहो कैसे भाक्तत्वात् वागादिकोअग्न्या दिमेंगतिबोधिकाश्रुतिगौणीहै क्योंकिलोमऔषधिकोऔरके- शवनस्पतिकोजावे सोअसम्भवहै नहींलोमकेशकूदकेऔषधिव नस्पतिकोपहुंचिसक्तेहैं श्रुति औषधीर्लोमानिवनस्पतीन्केशा इत्यादि औरनजीवकाजानाप्राणोपाधिकेनिरासमेंकहिसक्तेहो औरनप्राणकेबिनादेहांतरमेंभोगयुक्तहै औरवागादिकेअधिष्ठा ताअग्न्यादिदेववागादिकेउपकारीहैं मरणकालमेंउपकारनि- वृत्तिमात्रकीअपेक्षासेकहाकिवागादिअग्न्यादिमें जाते हैं यह- उपचारहै जैसे भृत्यघरमेंबैठरहा तोप्रभुकेऊपरसेउसका उप- कारमात्रहोदूरहुआहै ॥

प्रथमेऽश्रवणादितिचेन्नताएवह्युपपत्तेः ५

औरकैसेजलपञ्चमहोममेंमनुष्य निर्धारसक्ते होनहींप्रथमा ग्निमेंजलश्रुतहै द्यु आदिपांचअग्निपांचहोमोंकाआधारअधीत हैं उनके पहिले यह लोक अग्निकहा फिर उसी अग्निमे देव श्रद्धाको होमते हैं तो श्रद्धा होम्य है नकि जलहोम्य सुना है यदि पर्जन्यादि अगिले चारमें होम्य कल्पो तो कल्पिलो हो तव्यमेंहोमादिजलभूरिहैं और प्रथमाग्निमेंश्रुतश्रद्धाकाछोड़अश्रुत- जलकल्पनसाहसहै प्रसिद्धिमेंश्रद्धाज्ञानभेदहै तिसे पञ्चमहोम मेंजलकानरहोनाअनहोनाहै इतिचेन्न यहदोषनहींहै ताःआ- पःवहांभीप्रथमाग्निमेंश्रद्धाशब्दसेजल दृष्ट है कैसे उपपत्तेः आ- दिमध्यअन्त्यमेंएकार्थसे एकवाक्यहै इतरथाजोपञ्चमहोममेंजल कोपुरुषहोनेकाढवपूछाथा औरउत्तरमेंप्रथमहोमकेठौरअजल- होम्यश्रद्धाकहोतोअन्यप्रश्नवोअन्यउत्तरसे एकवाक्यनहींहोगाश्र

हाकार्यसोमवृष्ट्यादिजललक्षितहै कारणसाकार्य होता है और मुख्यश्रद्धाकाहोमसम्भवनहींहै श्रद्धानामज्ञानमनवाजीवकाधर्म है धर्मिसेनिकारहोमार्थनहींलेसक्तेहोजैसे पश्वादिसे होमार्थहृद यादिग्यारहदेहभागलेतेहोइससे जलश्रद्धाशब्दहै वैदिकप्रयोगदे खनेसे श्रद्धाशब्दजलमेयुक्तहै श्रद्धावाआपइतितनुश्रद्धासरूपजल हैदेहबीजइससे श्रद्धाजलहै जैसेसिंहपराक्रमसे नरसिंहशब्दहैश्र द्धापूर्वकवर्मकेसम्बन्धसेजलमेश्रद्धाशब्दयुक्तहै पुरुषमेमञ्चशब्दसा श्यहेतुसेश्रद्धाशब्दजलमेहै आपोहास्मैश्रद्धां सन्नमन्तेपुण्यायक र्मणेइत्यादि अर्थ यजमानकेनहानेकोश्रद्धाजलकोजनताहै॥

अश्रुतत्वादितिचेन्नेष्टादिकारिणांप्रतीतेः ६

अथपञ्चमहोममेंजलनराकारहो नकिजलमेघुसाजीव जाताहै अश्रुतत्वात् जलसाजीवकाकहिनेवालाशब्दनहीं है इस्से घुसनाजानाअयुक्तहै इतिचेत् यदियहदोषकहोसोनहींहै कैसे इष्टादिकारिणांप्रतीतेः अथयइमे ग्रामइष्टापूर्त्तेदत्तमित्युपासतेते- धूममभिसम्भवन्तीतिइसउपक्रममेइष्टादिकारीकोपितृयानपथसे चन्द्रलोकप्राप्तिकहीहै आकाशाच्चन्द्रमसमेष सोमोराजेति जे- होइसमेजानेहैं तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौदेवाःश्रद्धांजुह्वतितस्याआहु- तेःसोमोराजासम्भवतीति इसश्रुतिसाम्यसे उनकोअग्निहोत्रा दिकेसाधनदधिदूधादिहैं द्रवभूरिसे प्रत्यक्षजलहै सोआहवनी यमेंहुतसूक्ष्मअपूर्वरूपहोमइष्टादिकारीकोपहुंचताहै उनअग्नि- होत्रियोंकोदेहनैधनविधिसे अन्त्यअग्निमेऋत्विजहोमते हैं मन्त्र असौस्वर्गायलोकायस्वाहेति अर्थ यहयजमानस्वर्गकोजावे ति- ससेइष्टादिकारीजीवोंकोपरलोकमेजलअपनेमेघुसा के फलार्थ लेजातेहैं यहश्रद्धांजुह्वतीति इसने कहाहै औरअग्निहोत्रप्रकार

णमेजनकनेयाज्ञवल्क्यसेछहप्रश्नकेउत्तररूपवाक्यसेभी परलोक
मेफलार्थंजलकोलोकांतरमेंप्राप्तिदिखाईहै सांझ सवेरेकेअग्नि-
होत्रमें तेवाएते इत्यादि छहप्रश्न त्वमुत्क्रांतिन्नगतिन्नप्रतिष्ठांन-
तृप्तिन्नपुनरावृत्तिंनलोकम्प्रत्युत्थायिनंवेत्थेति तिससेजीव होम-
मयजलमेंघुसास्वकर्मफलभोगार्थंजाताहै यहश्लिष्टहै रंहति ग-
च्छति सम्परिष्वक्तः सम्मिश्रः ॥

भाक्तम्वानात्मवित्त्वात्तथाहिदर्शयति ७

कैसेस्वकर्मफलभोगार्थंरंहणकोप्रतिज्ञाहै धूमप्रतीकपथसे
चन्द्रलोकमेंपहुंचाअन्न सुनाहै एषसोमोराजातद्देवानामन्नंतन्दे-
वाभक्षयन्तीति जैसे देवोंसे खायासोमघटताबढ़ता है तैसे ही
जीवचन्द्रमेहै श्रुति यथासोमंराजानमाप्यायस्वापक्षीयस्वेत्यादि
अर्थं जैसे यज्ञमेंचमसस्थसोमको भरभरपीतेहैं ऋत्विज बारबार
खालीकरकर तैसे ही अन्नरूप इष्टादिकारीको देवखातेहैं आप्या
यस्व यहक्रियावृत्तिमेलोटहै ॥ और जब कि वृकादिसे देवभक्षित
कोभोगसम्भवहै इसकाउत्तरपढ़ताहै किभाक्तम्वा चोदितशङ्का
वारकवाशब्दहै ॥

स्वर्गकामोयजेत यहअधिकारश्रुतिअनर्थकानहोवे इसलि
येजीवगौणअन्नहै नकिमुख्य जोइष्टादिकारीको चांद्रमेंभोगनमि
लातोकिसलियेअधिकारीबहुश्रमधनव्ययसाध्यइष्टादिको करे-
गा भोगसाधनसाम्यसे अन्नशब्दअनन्नमेदेखाहै जैसे प्रजाराजा
काअन्नहै औरप्रजाकाअन्नपशु हैं जैसे गृहीइष्टकोपुत्रमित्रभृ-
त्यादिगौणोंसे विहरताहै तैसे देवइष्टादिकारीसे विहरतेहैं य
हीदेवभक्ष्यइष्टादिकारीइष्ट है नकिषड्विधभक्ष्यवत् चबनाऔर
लीलनाहै जैसे चनादूधआदिका नहवैदेवाअश्नन्तिनपिबन्त्येत
देवामृतंदृष्ट्वातृप्यन्तीति अर्थं देवकुछखातेपीतेनहीहैं इससे उन

कोपशुगुड़ादिदेनाब्यर्थहै जैसे राजाउपजीविपरिजनोंकाभो-
क्ताहै तैसे देवगुणभावसेप्राप्तइष्टादिकारीकेभोक्ता हैं अनात्म
वेदीदेवकाभोग्यहै अन्नसेपशुवत् श्रुति अथयोअन्यांदेवतामुपा
स्तेयोसावन्योहमस्मीति नसवेदयथापशुरेवंसदेवानामिति भा
वार्थ जैसे यहां इष्टादिसे तृप्तदेवोंपरपशुवत्हितहै परलोकमे-
भीइष्टादिसे उपजीवीदेवनेदिये फलकोभोक्तापशुवत्देवोंकाहि
तहैअनात्मबित्वादित्यादिइसकाअन्यार्थसुनो केवलअग्निहोत्रा
दिकर्मकर्त्तायाइष्टापूर्तआदिकर्त्तानकिज्ञानकर्मसमुच्चयकर्त्ताउ
पचारसे पञ्चाग्निविद्याआत्मविद्याहै प्रकरणसे औरपञ्चाग्निज्ञा
नहोनसे इष्टादिकारीकोगुणवादसे अन्नकहाहै पञ्चाग्नि ज्ञान
कीप्रशंसार्थ एकश्रुतिचन्द्रमेभोगदिखातीहै ससोमलोकेविभू-
तिमनुभूयपुनरावर्ततइति किञ्च अथयेशतम्पितॄणांजितलोका
नामानन्दाःसएकःकर्मदेवानामानंदोयेकर्मणादेवत्वमभिसम्प-
द्यन्तइति अर्थ इष्टादिकारीदेवोंके साथवसकेऔरउनकासाभो
गकर्तेहैं इससे अन्नहोनायहवाक्यभाक्तहोनेसे इष्टादिकारीजी
वचांद्रमेजाताहै यहीप्रतीतहै तिससे जोकहाथाकि रंहतिसम्प
रिष्वक्तसोयुक्तउक्तथाहो ऐसीगतिदेखकोननअग्निहोत्रेष्टादिसे
हाथधोयबैठेगाहोचुकीगति अबआगतिसुनो ॥

इहलोकागमनाधिकरण ॥ २ ॥

कृतात्ययेनुशयवान्दृष्टस्मृतिभ्यांयथेत मनेवञ्च ८

चन्द्रसेभोगकरलौटेजीवोंकीदशासुनो इष्ट श्रुति
तस्मिन्यावत्सम्पातमुषित्वाथैतमेवाध्वानंपुनर्निवर्तन्ते यथेतमि
ति यहांसे तद्यइहरमणीयचरणाअभ्याशोह यत्तेरमणीयांयोनि
मापद्येरन् ब्राह्मणयोनिम्वाक्षत्रिययोनिम्वावैश्ययोनिम्वा ★★

यद्दूहकपूयचरणाअभ्याशोह यत्तेकपूयांयोनिमापद्येरन् श्वयोनिम्वासूकरयोनिम्वाचण्डालयोनिम्वा अभ्याशोहयत्यद्दअव्ययशीघ्रयाअवश्यअर्थमेहै रमणीयचरणा अच्छे चालचलनवाले कपूयचरणा बुरेचालचलनवाले स्मृति श्वसूकरखरोष्ट्राणांगोजाविमृगपक्षिणां चण्डापुल्कसानाञ्चब्रह्महायोनिमृच्छतीति ॥ क्यासवकर्मोंका भोक्ता निरनुशयलौटाया सानुशयनिरनुशयलौटाकैसे यावत्सम्पातं इसविशेषणसे यहांसम्पातशब्दकर्माशयवाचीहै यहांसे परलोकमेपतताहै फलभोगार्थ इससे सम्पातहै यावत्सम्पातमुषित्वेति जोयहांकर्मकराहै उससबकाभोग वहीं होताहै यहभीनहींकल्पसक्तेहो किजीवहांभोक्तव्य थे वे वहां भोगेक्युंकिकृत्स्नयहांकेकरेकर्मवहांहो उनकाफललेफिरयहांकर्मार्थआताहै कर्मकेअभावमेंश्रुतिकहीअवयुक्ति सुनो मरणसे अभिव्यक्तसबकर्मपरलोकभोगकेअवश्यहोनेसे कर्मका अभाव है साधारणनिमित्तमेनैमित्तिकअसाधारणहोनेयोग्यनहीं है अविशिष्टदीपकोसन्निधिमेघटव्यक्तहै नकिपटयहयुक्तनहींहै ॥

तिससे निरनुशयजीवअवरोहताहै सोनहीं क्युंसुनो कृतात्ययेनुशयवानिति जिसकर्मकदम्बसेचन्द्रमेआरूढ़थे फलभोगार्थ वुहजबभोगलियातबउनकाजोजलमयदेहथा भोगार्थचन्द्रमेबनाथा सोभोगदृष्टशोकाग्निकेसम्पर्कसे पिघल गया जैसे सूर्यकिरणकेसम्पर्कसेहिमकरकादि जैसे धनञ्जयार्चिसम्बन्धसेघृतलाचादिकाठिन्यइससेआगेकृतात्ययेइष्टादिकर्मकाफल भोग सेक्षयमेसानुशयहोजीव यहांको लौटता है किसहेतुसे दृष्टस्मृतिभ्यां श्रुति तद्य इत्यादि चरणशब्द से अनुशय सूचित है जोसबप्राणीमेउच्चावचरूपभोगजन्मसेहैसोकर्मजन्यहैस्वर्गभोगवत् अन्यथाआकस्मिकहोअसम्भवहोसोनहीं किन्तुअनुशयसद्भावसूचनाहै जोअनुशयबहुतबारगायासोक्याहै कोई कहितेहैं किभु-

क्तफलस्वर्गार्थकर्मकाशेषअनुशयहै जैसे स्नेहकापात्रस्नेहनिका-
रनेसेभीस्नेहसे रिक्तनहींहोताहै पात्रानुसारकुछस्नेहशेषरहि-
ताहै तैसे अनुशयहै अन्यजलाग्निमें शीततापकाशेषदृष्टान्तहैं
सोनहीं स्वर्गकामोयजेत इसविधिसे स्वर्गार्थकर्मचोदितहैं उस-
काशेषमर्त्यालयमेंभोगहेतुन्याय्यनहींहै यहदोष नहीं यह प्रति-
ज्ञानहींहै किकर्मकाफलसबस्वर्गहीमेंभुक्तहै ननु निःशेषकर्मफ-
लभोगार्थचांद्रकोचढ़ाथा बाढ़ तथापियोरेकर्मशेषसेस्वर्गमेंनहीं
स्थानलभताहै जैसे कोईसेवकसबसेवाकेउपकरणोंसेयुक्तराज
गृहमेंपहुंचा फिरचिरप्रवाससे चौणबहुतउपकरणऔरछत्रशेष
राजगृहमेंनहींठहिरसक्ताहै ऐसेहीअनुशयमात्रसेचांद्रमेंनहींठ
हिरसक्ताहै यहबातयुक्तसोनहींहै स्वर्गार्थशेषकीअनुवृत्तिउपप-
द्यमाननहींहै कार्यबिरोधसे यहभीअयुक्तहै किस्वर्गार्थकर्म स्व-
र्गस्थायीकोसबस्वर्गफलजनताहै औरस्वर्गच्युतकोफललेशजन-
ताहै शब्दप्रमाणकऐसानहींकल्पासक्ताहै औरस्नेहपात्रमेंस्नेह
लेपकीअनुवृत्तिदृष्टसेयुक्तहै औरसेवककेउपकरणकी लेशानुवृ-
त्तिदृष्टसेयुक्तहै औरस्वर्गफलकर्मकीलेशानुवृत्तिदृष्टनहींहै नक-
ल्पासक्तेहो स्वर्गफलशासनकेबिरोधसे औरयहांयहअवश्य ऐसे
जानोकिनहींइष्टादिस्वर्गफलकर्मकापात्रानुसारीस्नेहवत्एकदे
शअनुवर्तमानअनुशयहै यदि जिससुकृतइष्टादिसेस्वर्गलभाथा-
उसीकाएकदेशअनुशयमानोतदारम*णीयहीएकअनुशय हो न
किक?पूयहो औरयहांसुखदुःखदोनोंसबप्राणियोंकोदेखतेहैं सो
विरुद्धहो और अनुशयबिभाजिकाश्रुति बिरुद्ध हो तद्यइहरम-
णीयेत्यादि दूसरेमतमेंअनुशयहै कि आमुष्मिकफलार्थकर्ममात्र
वहींभुक्तहै औरऐहिकफलार्थकर्मान्तरमात्रशेषअनुशयहै इसत्र

* भला ॥ ? बुरा ॥

नुशयसेभराउतरताहै निरनुशयकाअवरोहयुक्तनहींहै अनुशयकेसद्भावसे जोकुछपरलोकार्थकरासोवहींभोगचुकाहै औरयहविभागभीसम्भवनहींहै किअविशेषसेमरणअनारब्धफलसबकर्मकाअभिव्यञ्जकहै किसीकर्मसेपरत्रफलऔरकिसीसेइसमेफल आरभताहै औरदुर्बलकीवृत्तिकाअनुद्भवऔरप्रबलकीवृत्तिकाउद्भवशाब्दयाजन्मदेखनेसेअनुमेयहैबिरुद्धफलकअनेककर्मसेयुगपत्फलकाआरम्भअसम्भवहैनियतफलकेविरोधसेमरणमेऔरकिसीकामरणमेउच्छेदकिसीकोअभिव्यक्तिनहीं कहिसक्तेहोऐकांतिकफलकेबिरोधसे प्रायश्चित्तादिके विना कर्मकाउच्छेद सम्भव नहींहै सबकर्मोंकाएक देवादिजन्ममेभोगद्वाराक्षयसेजन्मान्तरन हो औरज्ञानाभावसेमुक्तिनहो यहअन्नदेवादिकी कष्ट दशा हो औरदृष्टफलकारीर्यादिकामरणअभिव्यञ्जकसम्भव नहीं है इससे मरणअभिव्यञ्जकहै यहकल्पनाअव्यापिकाहै दीपदृष्टांतभीकर्मकेवलाबलसेउठादिया दीपस्थूलकाव्यञ्जकऔरसूक्ष्मका अनभिव्यञ्जकहै इससे मरणसेसबकर्मकीअभिव्यक्तिअसिद्धहै तिससे सबकर्मकीअभिव्यक्तिकास्वीकारअश्लिष्टहै शेषकर्महोनेमेअनिर्मोक्ष हो यहअयोग्यभ्रमहै सम्यग्दर्शनसेसबकर्मका क्षयश्रुतहै तिससेयहध्रुवहै किअनुशयवन्तअवरोहतेहैं ॥

चरणादितिचेन्नोपलक्षणार्थेतिकार्ष्णाजिनिः ९

चरणात्शीलात् तद्यइहरमणीयचरणाइति इसमेकेवलचरणसेहीजन्महैऔरनकिअनुशयसेयदियहकहोसोनहींहै जिससेचरणश्रुतिअनुशयकेउपलक्षणार्थहै यहकार्ष्णाजिनिआचार्यकामतहैकर्मशेषऔरआचरणदोनोंसेमिलकेजन्महोताहै यहभावार्थहै तद्यइहरमणीयचरणा यहश्रुति अनुशय सद्भाव कहितोशी

सोहीचरणसे योनिकोदिखातीहै और अनुशयसे अन्यचरणन-हींहै औरन अन्य अनुशयहै चरणचारित्रआचारशीलजे शब्द एकार्थबाचीहैं औरभुक्तफलकर्मसेअनुशयभिन्नकर्मइष्टहै यथाकारीयथाचारीतथाभवतीतिकर्मऔर चरणकाभेददिखातीहैश्रुतियान्यनवद्यानिकर्माणितानिसे वितव्यानिनोइतराणियान्यस्माकंसुचरितानितानित्वयोपास्यानीतिच इनसे जानाकिचरणसे योन्यापत्तिहैइससेअनुशयसिद्धिनहींहै यदियहदोषकहोतोनहीं है जिससेअनुशयकेउपलक्षणार्थहीचरणश्रुतिहै यह कार्ष्णाजिनिकामतहै ॥

आनर्थक्यमितिचेन्नतदपेक्षत्वात् १०

तदपेक्षत्वात् तिसचरणशब्दकाश्रौतशीलार्थछाड़औरलाक्षणिकार्थ अनुशयकेस्वीकारमेशीलप्रयोजनशून्यहोगायहयदिकहोसोनहींहै शीलकोकर्मकी अपेक्षा से आचारहीनन्नपुनन्तिवेदा: इसस्मृतिनेसुकृतदुष्कृतआचारकोचाहनाउपासनार्थदिखाईहै उत्तरहो फिरकिससेचरणशब्दसेश्रौतशीलकोछाड़लाक्षणिकअनुशयलेतेहैं ननुविहितप्रतिषिद्धश्रौतशीलसाधुअसाधुरूपसे शुभाशुभयोन्यापत्तिरूपफलहोगा अवश्यहीशीलकाकुछफलमानो अन्यथाशीलव्यर्थहो यदियहदोषकहोसोनहींहै कैसे तदपेक्षत्वादिति इष्टादिकर्ममात्रचरणापेक्षहैं सदाचारहीनकर्म मे-अधिकारीनहींहै पुनर्थमेभीआचारव्यर्थनहींहै फलको आरभमाणकर्ममात्रइष्टादिमेकर्मापेक्षआचारहै कर्ममे कुछअतिशयजनताहै कर्मसर्वार्थकारीलोकवेदमेप्रकटहै तिससेकर्महीशीलोपलक्षितअनुशयरूपयोन्यापत्तिमेहेतुहै यहकार्ष्णाजिनिमतहै कर्मकेसम्भवमेशीलसेयोन्यापत्तियुक्तनहींहै जोपावोंसेभागसक्ताहै सोजानुसेचलनेयोग्यनहींहै ॥

सुकृतदुष्कृते एवेति तु बादरिः ११

बादरिचरणशब्दका अर्थ सुकृतदुष्कृतही मानता है तु लक्षणा वारणार्थ है और केवलवचोभङ्गी है न कि अर्थभेद है जैसे कहो तुमको गोवलीवर्द्द लाओ तो गोकहिने से बलीवर्द्द का ज्ञान होचुका था फिर बलीवर्द्द क्युं कहा बादरिचरणशब्द से सुकृतदुष्कृत लेता है चरण अनुष्ठान कर्म जे अनर्थान्तर पद हैं कर्ममात्र मे चरति प्रयुज्यमान- देखा है अविशेष से जैसा कि जो इष्टादिकर्त्ता है उसको लौकिक कहिते हैं कि यह महात्मा धर्मचारी है आचार भी धर्मविशेष ही है औ रभेदोक्ति कर्मचरण की चत्र सूत्र न्याय से है तिससे रमणीयचरण पक्के कार्यकर्त्ता कपूयचरण बुरे कार्यकर्त्ता हैं यह निर्णय है ॥

स्वर्गगत्ययोग्याधिकरण ॥ ३ ॥

अनिष्टादिकारिणामपि च श्रुतं १२

जे कूपवाटिकादि से भिन्न कार्यों मे धन उठाके मरते हैं ते अनिष्टादिकारी चन्द्रलोक को जाते हैं यह श्रुति से श्रुत है येके चास्मात्प्र यन्ति चन्द्रमसमेव ते सर्वे गच्छन्तीति और पञ्चमहोम की सिध्यर्थ स्वर्ग मे जाते हैं चयोंकि कप्रदर्शनार्थ है उक्त सूत्र पूर्व पक्ष मे है कहि चुके कि इष्टादिकारी चन्द्र मे जाते हैं और अनिष्टादिकारी क्या चन्द्र को जाते या नहीं जाते हैं यह चिन्ता है इष्टादिकारी ही चन्द्र को जाते- सो नहीं किन्तु जिसमे अनिष्टादिकारी भी चन्द्र को जाते सुने हैं कौ- षीतकि श्रुति से येवैके चास्माल्लोकात्प्रयन्ति चन्द्रमसमेव ते सर्वे गच्छन्तीति फिर जन्मों का देहारम्भ भी चन्द्रप्राप्ति के बिना नहीं कल्पना सक्ते हो पञ्चमहोम की संख्या के नियम से तिस्से सब चन्द्र मे सीदते हैं इष्टादिकारी और अनिष्टादिकारी की समानगति युक्त नहीं है यदि यह कहो सो नहीं है अनिष्टादिकारी को चन्द्र मे भोग के अभाव से ॥

संयमनेत्वनुभूयेतरेषामारोहावरो-
हौतद्गतिदर्शनात् १३

तुअनिष्टादिकारियोंकोचन्द्रगतिकावारकहै सब चन्द्रको-नहींजातेहैं किसठबसेजिससेभोगार्थहीचन्द्रारोहणहै नकिनिष्प्रयोजनऔरनहींचन्द्रसे प्रत्यवरोहणार्थहै जैसे कोई पेड़परपुष्पफलादिकेलियेचढ़ताहै नकिनिष्प्रयोजनवोनकिगिरनेकोऔरभोगभीअनिष्टादिकारियोंकोचन्द्रमेनहींकहाहै तिससेइष्टादिकारीचन्द्रारोहीहैं नकि इतर तैसे संयमनेयमायतनमेअवगाहनकरअपनेबुरेकर्मानुरूपयामीयातनाका अनुभवकरफिरयहां प्रत्यवरोहतेहैं ऐसेउनके आरोहावरोह हैं कैसे तद्गतिदर्शनात् यमवाक्यसरूपश्रुतिअनिष्टादिकारी मरेकोयमाधीनदिखातीहै नसांपराय:प्रतिभातिवालं प्रमाद्यंतम्वित्तमोहेनमूढं अयंलोको नास्तिपरइतिमानीपुन:पुनर्वशमापद्यन्तेमइति वैवस्वतंसङ्गमनञ्जनानामित्यादि ऐसेयमवशहोनेमेबहुत लिङ्ग हैं

स्मरन्तिच १४

व्यासादियमपुरमेयमाधीनकपूयकर्मकाविपाकस्मरण कर्ते हैं नाचिकेतकथादिमे ॥

अपिचसप्त १५

नरकसातहैं नाम रौरव१ महारौरव२ तामिस्र३ अन्धतामिस्र४ वह्नि५ वैतरणी६ कुम्भीपाक७ जोकहीं पुराणादिमेंअधिकश्रुतहैं उनकाभीइनहीमेंअन्तरभावहैं अनिष्टादिकारी इनमेपड़तेहैं नकिचन्द्रकोपहुंचतेहैं यहअभिप्रायहै ॥

तत्रापिचतद्व्यापारादविरोधः १६

तत्रापि महारौरवादिमेंभीयमकाआज्ञारूपव्यापारचित्रगु

प्तादिपरहोनेसेयमकेहीग्राधीननरकहैं इससेयमका चित्रगुप्ता-
दिसेकुछभीविरोधनहींहै शङ्कामेंमतिमन्दसूचनार्थचहै ॥

विद्याकर्मणोरितितुप्रकृतत्वात् १७

पञ्चाग्निविद्यासेप्रश्नकेउत्तरमेंसुनाकिविद्याग्रौरकर्मजेदो-
मार्गहैं प्रकृतहोनेसे विद्यादेवयानग्रौरकर्मपितृयाण हैं तद्यइ
त्थंविदुःइसविद्यासेप्रतिपत्तव्यदेवयानहैइष्टापूर्तेदत्तं यहकर्महै
इससेप्रतिपत्तव्यपितृयाणपथकहाहै इनदोकी प्रक्रियामेंश्रुतहै
कि अथैतयोःपथोर्नकतरेणचनेति अर्थ जोनरदोमार्गोंमेंसेकिसी
केसाधनयुक्तनहींहैं तेजन्ममरणकीग्रावृत्तिरूपतीसरेमार्गस्थभू-
तहोतेहैं जिसविद्याकेसाधनसेदेवयानमें अधिकृतहैं नकि कर्म
सेपितृयाणमेंउनकोक्षुद्रजन्तुरूपग्रसकृदावर्तीतीसरामार्ग है ति
ससेग्रनिष्टादिकारीचन्द्रकोनहींपहुंचतेहैं यहभीनहींहै किचन्द्र
मेंहोकेफिरक्षुद्रजन्तु होंगे ग्रारोहग्रनर्थकहोनेसे किञ्च जो सब-
मरकेचन्द्रमेंगये तोचन्द्रलोकपूर्णहो इसप्रश्नकेविरुद्धउत्तरही वु
होउत्तरदेनेथा कि जिससे चन्द्रलोक पूर्ण नहोवे ग्रवरोहमान
सेग्रसम्पूर्णसिद्धहै सोभीनहींहै नसुन्नेसे सचहै तुम्हारा कहि-
ना किग्रवरोहसेसम्पूर्णनहोगा परन्तुश्रुतितीसरेस्थानकेकहि-
नेसेग्रसम्पूर्णदिखातीहै एतत्तृतीयंस्थानंतेनासौलोकोनसम्पू-
र्यतइति इस ग्रनारोहसे ग्रसम्पूर्ण चन्द्रलोकहै यहयुक्त है जो-
ग्रवरोहकाइष्टादिकारीमेंविशेषनहींहै तोतोसरास्थानकहिना
व्यर्थहै तुशब्दकोपीतकिसेप्राप्तसबकेगमनकीशङ्काकेउच्छेदार्थ है
शाखांतरीयमेंग्रधिकतापिच्चसर्वशब्दसाधुहै येवैकेचाधिकृताग्र-
स्माल्लोकात्प्रयन्तिचन्द्रमसमेवतेसर्वेगच्छन्तीति प्रश्नवेत्थयथासौलो
कोनसम्पूर्यतइति उत्तर ग्रथैतयोःपथोर्नकतरेणचनतानीमानि
क्षुद्राण्यसकृदावर्त्तीनिभूतानिभवन्ति जायस्वम्रियस्वेत्येतत्तृती

यस्थानंतेनासौलोकोनसम्पूर्यतइति ॥

नतृतीयेतथोपलब्धेः १८

देहार्थमवचंद्रकोजातेहैं होमसंख्याकेनियमसे उसकाउत्तरहै नततीये तीसरेस्थानमेदेहलाभार्थहोमकोपांचसंख्याकानियमनहींआदर्तव्यहै कैसे तयोपलब्धेः होमसंख्याके नियम बिनाहोवर्णांतरीतिसेतीसरेस्थानमेजन्मप्राप्तहै जायस्वम्रियस्वेति यहतीसरास्थानहै स्थानशब्दमार्गलक्षकहै होमसंख्यानियमनरदेहमेहै नकिकीटपतङ्गादिकोदेहमे पुरुषशब्दनरजातिवाचकसे किन्तु पञ्चमहोममेजलनराकारकहाहै नकिअपञ्चमहोमसेनराकारकानिषेधहै वाक्यमेंदोअर्थकेदोषसे जिनकोआरोहावरोहकासम्भवहै उनकोपञ्चमहोमसेदेहउद्भवहोगो अन्यको विनाहीहोमसंख्याकेभूतांतरसेमिलाजलहीदेहकाआरम्भकहै ॥

स्मर्यतेपिचलोके १९

पुराणे ॥

आहुतिकानियममनुष्योंमेभीनहींहै द्रोणसीतादिकाजन्मयोनिकेबिनाहीपुराणादिमेपढ़नेसे जैसे इनमेसंख्याकाअनादररहै तैसे अन्यत्रभीहोगा वलाका विनायोनिमेबीजपड़े गर्भधरतीहै यहलोकरूढ़िहै

दर्शनाच्च २०

स्वेदजऔरउद्भिज्जकाजन्म मैथुनकेबिनाहीदेखाहै इससे होमकाअनादरहै चनेआहुतिकेनियमकाभङ्ग समुच्चय किया है चारविधियोनिमेश्रुति अण्डजानिचजारुजानिचस्वेदजानिचोद्भिज्जानिचेति ॥ ननुभूतोंकेतीन बीज हैं आंडजञ्जीवजमुद्भिज्जमिति इसश्रुतिनेत्रिविधभूतग्रामकहाहै फिर तुमनेचतुर्विधक्युं

कहाथा इसकाउत्तरहै कि ॥

तृतीयशब्दावरोधःसंशोकजस्य २१

आंडजजीवजमुद्भिज्जमिति इसमेतीसरेउद्भिज्जशब्दसेस्वेद जकासंग्रहकियाहै स्वेदजउद्भिज्जभूमिजलकेउद्भेदसेजन्मतुल्यहै औरस्थावरकेउद्भेदसेबिलचणजङ्गमउद्भेदहै तोभी इसमेस्वेदज-उद्भिज्जमेभेदवादहै इससेअविरोधहै ॥

धूमादिभावापत्त्यधिकरण ॥ ४ ॥

साभाव्यापत्तिरूपपत्तेः २२

अथैतमेवाध्वानंपुनर्निवर्तन्तेयथैतमाकाशमाकाशाद्वायुंवायु र्भूत्वाधूमोभवतिधूमोभूत्वाऽभ्रम्भवत्यभ्रम्भूत्वा मेघो भवतिमेघोभू त्वाप्रवर्षतीति समानोभावःसाभाव्यंव्योमादिभिःसाम्यमितिसो ऽर्थः इष्टादिकर्त्ताचंद्रमेपहुंचिजोलोसम्पात तोलोवहां बसके फिरसानुशयवहांसेउतरतेहैं यह कहिचुके अवअवरोहकेप्रकार कीपरीचाहै इसअवरोहश्रुतिमेसंशयहैकियाआकाशादिस्वरू पहीअवरोहनकहेहैं याआकाशादिसमानफिरआकाशादिस्वरू पउतरतेकहेहैं कैसे श्रुति ने व्योमादिस्वरूपउतरतेकहेहैं व्योमा दिसमानउतरनेमे लचणाहो औरश्रुतिलचणाकेबीचश्रुतिलेना उचितहै नकि लचणा मानना इससे वायुर्भूत्वाधूमोभवतीति इसकेअचर वायु आदिस्वरूपकी सिद्धिमेंआंजस्यसेसमर्थहोतेहैंति ससेव्योमादिरूपजन्मतेहैं यहपूर्वपचहैव्योमादिसमानकहेहैंचंद्र बिम्बमेजोजलमयदेहभोगार्थबनाथा उसके भोगकेचयमेलीनसू च्म व्योमसमानहोताहै तिससेवायुवशमेपड़ताहैतिससेधूमादि मेसम्पर्कहोताहै

सोयहकहाकियथैतमाकाशमाकाशाद्वायुमित्यादि सोकैसे

उपपत्तेः जैसे मैनेकहाकिव्योमसमानउतरताहै और व्योमस्व-रूपउतरनेमे अन्यका अन्यहोनामुख्य अनहोनाहै यहीउपपद्यमा नहै औरव्योमादिस्वरूपउतरनेमेवायुआदिक्रममे अवरोहयुक्तन हींहै विभुव्योमसेनित्यसम्बन्धहै तिससेव्योमादिसदृशनउतरेगा व्योमऔर अनुशयीका अन्य सम्बन्धनहींबनताहैश्रुतिकी असम्भवमे लक्षणान्याय्यहै इससेव्योमादितुल्यतापत्तिहीयहांव्योमादिभा वउपचर्यमरणहै ॥

व्रीह्यादिभावापत्त्यधिकरण ॥ ५ ॥

नातिचिरेणविशेषात् २३

व्योमादिकोप्राप्तिमेपहिलेव्रीह्यादिप्राप्तिसेविशयहै क्या दीर्घदीर्घकालपहिलेकेसदृशठहिरकेफिरउत्तरकेसदृशहोते हैंया अल्पर काल यहांनियमनहींहै नियामकशास्त्रकेअभावसे इससेकहा-कि नातिचिरेण अल्प अल्पकालव्योमादिभावमेठहिरवर्षधारा केसाथभूमिमेगिरताहै यहकैसेजाना विशेषदर्शनात् व्रीह्यादि होनेकेपीछेविशेषहै अतोवैखलुदुर्निष्प्रपतरमिति अर्थ एकतका रकांदसप्रक्रियामेलुप्तमानो तिससेदुर्निष्प्रपततरशब्दहै दुर्निष् क्रमतरदुःखतरव्रीह्यादिमेसेनिःसरणहै यहांदुःखनिष्प्रपतनको दिखाकेपहिलेमे सुखनिष्प्रपतनको दिखातीहै प्रपतनका सु-खदुःखयोरेबहुतकालकरकेहै उसकालमे देहकीअसिद्धिसेभो-गकाअसम्भवहै तिससेव्रीह्यादिभावहोनेसेबड़े कालकरके अव-रोहहै ॥

संश्लेषमात्राधिकरण ॥ ६ ॥

अन्याधिष्ठितेपूर्ववदभिलापात् २४

अवरोहमे वर्षानन्तरपढ़ाहै कि तेइहव्रीहियवाओषधिवन-स्पतयस्तिलमाषाइतिजायन्तेइति इसमे संशयहै किइसकाल

में स्थावरजातिमें जन्मेंस्थावरसुखदुःखभागीअनुशयी होंगे या-
चेचन्द्रांतरसेअधिष्ठितस्थावरदेहोंमें संश्लेषमात्रकोपहुंचेहैं पूर्व-
पक्ष स्थावरमें घुसेअनुशयीस्थावरसुखादिभागीहैं यहकैसेजा-
ना जनधातुकेमुख्यार्थकीसिद्धिसेश्रुतिस्मृति मे स्थावर भोगस्था
नप्रसिद्धहै पशुहिंसासोमादिउच्छिष्टभक्षणसुरा ग्रह आदि केयो
गसेइष्टादिकर्म जातसेअनिष्टफलसिद्धहै इससेमुख्यअनुशयियों
काव्रीह्यादिजन्मश्वादिजन्मवत् जैसे श्वादियोनिमें अनुशयि-
योंकाजन्ममुख्यहै श्वादिजन्मऔरश्वादिसुखदुःखयुक्तभी हैं ऐ-
सेहीव्रीह्यादिमेंजन्मव्रीह्यादिसुखदुःखयुक्तहै यह उचितनहींहै
कैसेसुनोअन्यजीवसेअधिष्ठितव्रीह्यादिमें अनुशयिकासंसर्गमा-
त्रकहाहै नकिव्रीह्यादिकेसुखदुःखभागी है पूर्ववत् जैसे वाय्वा
दिभावअनुशयीकोवाय्वादिसेसंश्लेषमात्रथा ऐसेहीव्रीह्यादिभाव
स्थावरसेसंश्लेषमात्रहै यहकैसेजाना अभिलापात् जैसे वर्षा कें
अन्तव्योमादिमेंकर्मव्यापारनहींपरामृष्टहै ऐसेहीव्रीह्यादिजन्म
मेहै तिससेअनुशयीसुखदुःखभागीनहींहै जहांसुखदुःखभागी
अभिप्रेतहै तहांकर्मव्यापारपरामृष्टहै जैसेरमणीयकपूयचरणा
दिमे अपिच अनुशयिकाव्रीह्यादिमें मुख्यजन्मसेव्रीह्यादिलुने कू
टेरांधेखायेपरउनकाअभिमानीअनुशयीप्रवासीहो जोजीवजि-
सदेहकाअभिमन्ताहै सोउसदेहकेपीड़नसेप्रवसताहै यहप्रसिद्ध
है जहांव्रीह्यादिभावकहाथा वहांअनुशयीकोरेतःसिग्भाव न-
हींअभिलाप्यहै इससेसंसर्गमात्रअनुशयीकोअन्याधिष्ठितव्रीह्या
दिमेहै इससेव्रीह्यादिमेंजनिधातुमुख्यार्थपरनहींहै भोगस्थान-
स्थावरहोनाहै हमनहींभोगस्थानस्थावरकोनिन्दाकरतेहैं होअ
पुण्यसामर्थ्यसेजेअन्यजन्तुस्थावरहुएहैं उनकेभोग स्थान स्थावर
परचंद्रसेउतरेअनुशयीस्थावरभावकोनहींभोगतेहैंयहीकहिताहूं

अशुद्धमितिचेन्नशब्दात् २५

जोकहाथाकिपशुहिंसादिकेयोगसेआध्वरिक कर्म अशुद्ध है उसकाअनिष्टफलहै इसे अनुशयीकाव्रीह्यादिमेजन्ममुख्यहो उसमेगौणकल्पनाअनर्थकहैउसकानिरासहैयहधर्महैयहअधर्म है इसविज्ञानमेशास्त्रनिदानहै वेदोनो अतिक्रांत इन्द्रिय हैं और जिसदेशमेजिसकालमेजिसनिमित्तमेजोधर्मअनुष्ठेयहै सोहीदेश कालनिमित्तांतरमेअधर्महै इससेजानाकिशास्त्रकेबिनाधर्माधर्मविषयकविज्ञानकिसीकोनहींहै सोशास्त्रवेदहै न कि उससेअन्यनरकल्पितग्रन्थकदम्बहैं और शास्त्रहीसेहिंसाद्यादिरूपज्योतिष्टोमधर्मअवधारितहै सोअशुद्धकैसेकहिसक्तेहो भूतोंका वधअधर्मवेदकहिता है जैसे माहिंस्यात्सर्वाभूतानीति बाढ़ यह उत्सर्गहै अग्नीषोमीयम्पशुमालभेतयहअपवादहैव्यवस्थाकास्यमेरागसेकारणांशमेप्रवृत्तिहै अङ्गमेविधिसेनिषिद्धश्येनादिमेप्रवलरागसेप्रवृत्तिहो क्रत्वङ्गहिंसादिमेविधिसेप्रवृत्तिकहो यदिविधि उत्सर्गप्राप्तअनर्थहेतुकोनबाधेतोप्रवर्तकनहो प्रवर्तकमे विधिअनर्थार्थहो इससेनिरवकाशविधिसावकाशउत्सर्गको अविहित हिंसादिमेबैठावेगाअहिंसाशास्त्ररागप्राप्तहिंसापरहै वैधहिंसामेउसकोप्रवृत्तिनहींहै फिरअशुद्धशङ्काकाअवसरनहींहै तिससेवैदिककर्मशुद्धहै शिष्टानुष्ठानसेऔरअनिन्द्यसे इससेस्थावरदुःखरूपफलनहींहै श्वादिजन्मवत् व्रीह्यादिजन्महोनेकोयोग्यनहीं है जन्मकपूयचरणोंकेअधिकारमेकहाहै यहांकोई वैशेषिक अधिकारनहींहै इससेजेअनुशयोचंद्रसे गिरेउनकाव्रीह्यादिमेसंश्लेषमात्रहै उपचारसेव्रीह्यादिभावकहाहै ॥

रेतःसिग्योगोथ २६

इससेभीव्रीह्यादिमेसंश्लेषमात्रहै जिसकारणसेव्रीह्यादिभावकेपीछेअनुशयीकोरेत:सिग्भावपढ़ाहै श्रुति योयोह्यन्नमत्तियोरेत:सिञ्चतितद्भूयएवभवतीति व्रीह्यादिमेमुख्यबीजदान सम्भवनहीहै चिरजातऔरयुवारेत:सिक्होताहै नकि अन्न स्यायीकोरेत:सिक्योगसम्भवहै किसप्रकारसेअनुपचरितसा है अद्यमानवस्तुसेअनुगतअनुशयीप्रतिपद्यमाननहीं है अवश्य रेत:सिग्योयहीरेत:सिग्भाव मानो उपक्रमवत् व्रीह्यादिभावभीव्रीह्यादियोगहीहै इससेअविरोधहै ॥

योनेश्शरीरम् २७

रेत:सिग्भावकेआगेयोनिमेसिञ्चेबीजसे योनि के अधिदेह अनुशयियोंकोअनुशयफलभोगार्थजन्मताहै श्रुति तद्यइहरमणीयचरणाइत्यादि तिस्से जानाकिव्रीह्यादिभावकेकालमे अवरोहहोनेपरव्रीह्यादिदेहसुखदु:खादिअन्वितनहीहै सूत्रार्थहैकि देहयोनिकोसुनोहै इससेव्रीह्यादिदेहअनुशयियोंकोनहींहै तिससेव्रीह्यादिमे संश्लेषमात्रअनुशयियोंका जन्मसिद्धहै वैराग्यस्वरूपहैकिवैदिककर्मठकोआनाजानारूपसंसारदुर्वारहै इसअनुसन्धानसेकर्मसेविरक्तहोईश्वरध्यानमेलगे यद्यपियहांकिसीआश्रमकेचिन्होंकाउपदेशनहीहै तथापि गृहाश्रमश्रेष्ठसे लेते हैं उद्यमकरेऔरईश्वरध्यावेनकिनटसासुआंगधरधरमुक्तिपन्थमाने

इतिश्रीयुक्ताराचंद्रवर्मणाकृतब्रह्मसूत्रभाषाभाष्येतृतीयाध्यायस्यप्रथम:पाद:पूर्ण: ॥

तत्त्वम्पदार्थविवेकपाद ॥ २ ॥

सन्ध्यसृष्ट्याधिकरण ॥ १ ॥

संध्येसृष्टिराहहि १

अतिक्रांतपादमेपञ्चाग्निविद्याकोउदाहरणकरजीवकोसंसारगतिकेभेदप्रपञ्चकियेथे अबउसीकेअवस्थाभेदप्रपंच्यमान हैं श्रुति सयत्रप्रस्वपिति इसउपक्रमसे नतत्ररथानरथयोगानपन्थानोभवन्त्यथरथान्रथयोगान्पथःसृजतइत्यादिइसमें संशयहैकिप्रबोधसीस्वप्नमेंभीपारमार्थिकीसृष्टिहैयामायामयीहै फिरसन्ध्यमे तथ्यरूपसृष्टिप्राप्तहै सन्ध्यस्वप्नस्थानहै वेदमेदेखने से सन्ध्यंतृतीयंस्वप्नस्थानमिति देवनरदोलोक याजाग्रतसुषुप्तिइन दो सन्धिमेहै सोसन्ध्यहैइससन्ध्यमेजोसृष्टिहै सोतथ्याईहै कैसे जिसमानश्रुतिनेकहाहै सोहिकर्त्ताहै इसउपसंहारसे भीतथ्यसृष्टिहै ॥

निर्मातारंचैकेपुत्रादयश्च २

एकशाखीनेसन्ध्यमेकामोंकानिर्माताआत्मापढ़ाहै यएषसुप्तेषुजागर्तिकामङ्कामम्पुरुषोनिर्मिमाणइति कामपुत्रादिहैं ननुकामशब्दसे इच्छाविशेष कहो नशतायुषःपुत्रपौत्रान्वृणीष्वेति इसप्रकरणकेअन्ति मे कामानांत्वाकामभाजङ्करोमीति यहांप्रकृतपुत्रादिमेकामशब्दपढ़ाहै प्रकरणऔरवाक्यशेषसे प्राज्ञ निर्माताप्रतीत है प्रकरण अन्यत्रधर्मादन्यत्राधर्मादित्यादि वाक्यशेष तदेवशुक्रन्तद्ब्रह्मेत्यादि अर्थ जोनिर्व्यापारकरणोंमेजगताहै सोहीशुक्रस्वयंज्योतिहै जैसे जागरितसृष्टिप्राज्ञकर्तृकहोनेसे तथ्यरूपहै तैसे स्वप्नसृष्टि तथ्य है व्योमवत् श्रुति अथोखल्वाहुर्जागरितदेशएवास्यैषइति यानिह्येवजाग्रत्पश्यतितानिसुप्तइति श्रुति सोतेजगतेकेअर्थोंकोसमानदिखाती है तिससेस्वप्नार्थसत्यहैं इससे सिद्धान्तपढ़ाकि माया इति ॥

मायामात्रंतुकार्त्स्न्येनानभिव्यक्तस्वरूप त्वात् ३

तुशब्दपक्षकावारकहै जोतुमनेकहाथाकिसन्ध्यकीसृष्टितथ्यहै सोनहींहै मायाहीसन्ध्यमेसृष्टिहै नकिसत्यार्थकीगन्धभीहै किस्से कार्त्स्न्येनानभिव्यक्तस्वरूपत्वात् नहींवस्तुधर्मसेस्वप्न अभिव्यक्तहै कार्त्स्न्यक्यायहांदृष्टहै देशकालनिमित्तसम्पत्तिअवाधदर्नका स्वप्नमेसम्भवनहींकरासक्तेहो नहींसंवृत्तदेहदेशमेरथादिअवकाशलभतेहैं अनुमान देहसे बाहिरनिकरस्वप्नकोदेखेगा देशांतरितद्रव्यके ग्रहण से श्रुति वहिःकुलायादमृतश्चरित्वायईयतेऽमृतोयत्रकाममिति अर्थ देहसे बाहिरसाआत्माचरके यथेक्षविरहताहै गतिस्थितिप्रत्यय भेदअनिष्क्रांतजन्तुमेनहींघटतेहैंमैयहनहींकहताहूंनहींसुप्तजन्तुकी क्षणमात्रसेयोजनशतादिदूरदेशोंमेजानेआनेकीसामर्थ्यसम्भवकरासक्तेहो कहीं आनेसे रहितस्वप्नसुनाताहै कुरुष्वहमथशयानोनिद्रयाभिप्लुतः स्वप्नेपांचालानभिगतश्चास्मिन्प्रतिबुद्धश्चेति जोकुरुमेसोयासोपांचालमेनहींजगताहै जिसदेहसेदेशांतरकोभोगतामानताहैउसकेपासकेशयनदेशमेहीदेखतेहैं देशांतरवस्तुजैसी देखता है वहतैसी नहींहै यदिदौड़तादेखेजाग्रद्वत् उद्भूतअर्थको जाने श्रुति अन्तरेवदेहेस्वप्नमिति यहांसे स्वेशरीरेयथाकामम्परिवर्ततइति। यहांतक स्वदेहमेस्वप्नकावर्त्तावदिखाताहै श्रुतियुक्तिबिरोधसे कुलायश्रुतिगौणीहै जोदेहमेरहितादेहसे प्रयोजन नहींकर्त्ता है सोदेहसे बाहिरसाहै स्थितिगतिप्रत्ययभेदजेभ्रमसे हैं स्वप्नमे कालकाबिसम्वादहैजैसे रातिमेकेतुमालवर्षमेसोतावासर भारतवर्षमेमानताहै औरमुहूर्तमात्रकेस्वप्नमेवर्षपूगोंको कहता है

स्वप्नमेनिमित्तभीनवुध्यर्थनकर्मार्थउचितहैं रुद्रशक्तिकरणरथादि ग्रहणार्थनहींहै स्वप्नमे जागरितमेनिमेषमात्रसेरथादिवनानेमे-कहांसेसामर्थ्यऔरकाठआगया प्रबोधमेस्वप्नदृष्टरथादिबाधित-है तोस्वप्नमेभीउनकाबाधसुलभहै आदिअन्तमेव्यभिचारदेखने से बाभीस्वप्नमेरथदेखाफिरक्षणमेमनुष्यसम्पन्नहुआ जब मनुष्य-निर्धारितहै फिरक्षणमेहृत्तहुआ स्पष्टरथादिकाअभाववेदसुना-ताहै नतत्ररथाइत्यादि तिससेस्वप्नदर्शनमायामात्रहै मात्र पद सेप्रमाताओरव्यवहारकानिरासकियाहै ॥

सूचकश्चहिश्रुतेराचक्षतेचतद्विदः ४

मायामात्रसेस्वप्नमेसत्यार्थकीगन्धभीनहींहै मैयहनहींकहि ताहूं स्वप्नमेअर्थहैकिन्तुस्वप्नभावीसाधुअसाधुकासूचकहै मन्त्रदे-वऔषधिद्रव्यविशेषकेनिमित्तसे कुछस्वप्नसार्थहैं इनमेभी सूच्य मानवस्तुसत्यहोसूचकस्त्रीदर्शनादिव्यर्थहैंबाध्यमानसे जैसे हल कोगवादिकोवहताहै हलगवादिकेजीवनकानिमित्तहै नकिप्र-त्यक्षहलगवादिजीवनहै नकि जैसे कुलालघट का साक्षात्कर्त्ता है तैसे स्वप्नकर्त्ताहै मोदत्रासादिदेखनेसेरथादिकाभाननिमि-त्तहै नकिप्रत्यक्षरथादिकोरचताहै शुक्तिरूप्यसत्यहर्षकाहेतुहै प रसत्यनहींहै अपिचजगतमेविषयेंद्रियसंयोगसेओरसूर्यादि ज्योति-तिकेसङ्करसेआत्मास्वयंज्योतिःदुर्विवेचनहै उसकेविवेकार्थ स्वप्न कहाथा यदिरथादिसृष्टिवाक्यश्रुतिनेनिर्णय किया तोस्वयंज्यो-तिःनहींनिर्णीतहो तिससेरथादिकेअभाववाक्यश्रुतिसेरथादिसृ ष्टिवाक्यभाक्तहैं औरनिर्माणश्रवणभीभाक्तहै जोप्राज्ञ निर्माता कहासोअसत् स्वयंविहत्यस्वयंनिर्मायेत्यादि अर्थ आपजगत्देह कोचेष्टाशून्यकरओरवासनादेहवनाताहै इसनेजीवकाव्यापा-रकहाहै तिससेजीवकामोंकानिर्माताहैइमस्वप्नमेप्राज्ञव्यापार

वारणनहींकर्तेहैं क्युंकिसर्वेश्वरहै तिससेसबअवस्थाकाअधिष्ठाताहै सांध्यसर्गपारमार्थिकनहींहै व्योमादिसर्गवत् इससेसन्ध्यसर्गवैशेषिकमायामात्रकहाहै ॥

पराभिध्यानात्तु तिरोहितन्ततोह्यस्य बन्धविपर्ययौ ५

परकाअंशजीवहै जैसे अग्निकेविस्फुलिङ्गहैं इससे जैसे अग्निविस्फुलिङ्गदोनोंदहनप्रकाशनशक्तियुक्तहैं तैसे जीवेश्वर मेंभीज्ञानैश्वर्यशक्तिहै तिससेजीवकेऐश्वर्याधीनसांकल्पिकरथादिसर्गस्वप्नमेंहोगा सोमतकहो हैभीजीवेशकाअंशांशिभाव तोभीप्रत्यक्षजीवकाईशसेविपरीतधर्महै फिरक्याजीवकाईश्वरसमानधर्मनहींहै नहींहैसोनहींहैकिन्तुहै विद्यमानभीधर्मढकाहै तत्तिरोहितं अविद्यादिव्यवधानसेफिरजन्तुईश्वरध्यानीयतमानविधूतध्वान्तकीदृक्शक्तितिमिरतिरस्कृतासोऔषधिवीर्यसेईश्वरप्रसादसेकिसीसिद्धकोआविर्भावहोतीहै नकिस्वभावसेसब जन्तुओंकोनकिकिसीआश्रमकेबाह्यचिन्होंसेकैसे ततोहि ईश्वरहेतुसे अस्य जीवकोबन्धमोक्षहै ईश्वरज्ञानबिनाबन्धऔर ईश्वरज्ञानसेमोक्षहै ज्ञानोपाय सत्यमृदुभाषणसर्वदेशियोंसेप्रसचोरचोरोहिंसापरस्त्रीत्यागशिल्पादिविद्यासेवनादिहैं तुउपायांतरकाबारकहैहिहेतुमेंहैज्ञात्वादेवंसर्वपाशापहानिरित्यादिश्रुति

देहयोगाद्वासोपि ६

फिरकिसी जीवईशांशहुआऔरतिरस्कृतज्ञानैश्वर्यहैहोनाचाहियेज्ञानैश्वर्यजेसेविस्फुलिङ्गमेदहनप्रकाशनहैं कहिताहूं यहसत्यहै देहयोगात् जीवकेज्ञानैश्वर्यकाढकनादेह इन्द्रियमनबुद्धिविषयवेदनादिकेयोगसेहै सोपितिरोभावहै उपमा यहां जैसे

अग्निदहनप्रकाशनयुक्तभीअरणिमेवेढकेहैं औरजैसेभस्मसेढकी अग्निमेवेनहींहैं तैसे नामरूपदेहादिकेयोगसेवे नहीं जीव से हैं वाशब्दजीवईशकेभेदकावारकहै अनुमान जीवईश्वरसेअन्य है तिरस्कृतज्ञानैश्वर्यसेयाभिन्नज्ञानैश्वर्यसे फिरदेहादियोगकी कल्पनाव्यर्थहै जीवईश्वरसेअन्यनहींहै बहुतश्रुतियोंमेऐक्यकहिनेसे तत्त्वमसित्यात्मेत्यादि ऐक्यसेस्वप्नमेरथादिसर्गजीवकेसङ्कल्पसेहै साङ्कल्पिकसर्गहैतोक्युंअनिष्टस्वप्नमेदेखताहै कोई अनिष्टनहींसङ्कल्पताहै जगत्कीवासनास्वप्नमेनहींहै स्वप्नमेस्वशिरकटादेखनेसे तिससेस्वप्नमायामात्रहै ॥

सुषुप्त्यधिकरण ॥ २ ॥

तदभावोनाड़ीषुतच्छ्रुतेरात्मनिच ७

तस्यस्वप्नस्याभावस्तदभावःसुषुप्तिः ॥

कीस्वप्नपरीक्षाअबसुषुप्तिपरीक्षाकर्त्ताहै सुषुप्तमेश्रुति तद्यत्रैतत्सुप्तःसमस्तःसम्प्रसन्नःस्वप्नन्नविजानात्यासुतदानाडीषुसृप्तोभवतीति अन्यमेनाड़ीसेनिकासुनाहै नाभिःप्रत्यवसृप्यपुरीततिशेतेइति अन्यत्रनाड़ीकाअनुक्रमहै तासुतदाभवतियदासुप्तःस्वप्नंनकञ्चनपश्यत्यथास्मिन्प्राणएवैकधाभवतीति अन्यत्र यएषोन्तर्हृदयआकाशस्तस्मिन्शेतेइति अन्यत्र सतासोम्यतदासम्पन्नोभवतिस्वमपीतोभवतीति प्राज्ञेनात्मनासम्परिष्वक्तोनवाह्यंकिञ्चनवेदनान्तरमिति इसमे संशय है किनाड़ीआदिमिथोनरपेक्षभिन्नसुषुप्तिस्थानहै यामिथोपेक्षएकसुषुप्तिस्थानहै भिन्न हैं एकार्थसेव्रीहियववत् नाड़ीआदिसबसुषुप्तिकेअर्थहैं सर्वत्रविशेषज्ञानाभावसुषुप्तहै नकिविशेषहै तिससेएकार्थनाड़ीआदि हैं विकल्पसेकभीकिसीस्थानमेस्वापार्थजाता है सो नहीं तदभावः स्वप्नकाअभावसुषुप्तहै नाड़ियोंमेऔरआत्मामेसमुच्चयसे नाड़ी

आदिखापार्थंजातीहैं नकिविकल्पसे कैसे तच्छ्रुतेः सब नाड़ि-
योंका सुषुप्तिस्थानसुनाहै सोसमुच्चयमेघटताहै नकिविकल्पमे
पक्षमेबाधसे एकविभक्तिसेएकार्थंऔरविकल्पनहींहोसक्ताहै ना
नार्थऔरसमुच्चयमे भीएकविभक्तिहै जैसे घरमेसोताखाटमेसो
ताहै तैसेयहांभीनाड़ीमेपुरीतत्मेब्रह्ममेसमुच्चययुक्तहै जोगङ्गा
सेसागरजातासोगङ्गामेहै जैसेतैसेहीनाड़ीसेब्रह्ममेगयानाड़ीमे
गयाहै पुरीतत्हृदयवेष्टनहै उसकेभीतरहृदयाकाशमेसोता पु
रीतत्मेसोताकहाहै प्राकारसेघिरेपुरमेवर्तमानप्राकारमेरहि-
ताकहाताहै श्रुतियोंमेतीनिसुप्तिस्थान हैं नाड़ी१ पुरीतत्२
ब्रह्म३ पहिलेदोद्वारेहैं ब्रह्महीएकसुप्तिस्थानहै नाड़ी यापुरीत
त्जीवकीउपाधिकाआधारहै वहांकरणहैं उपाधिबिनास्वतः-
जीवकाकोईआधारसम्भवनहींहै नाड़ी पुरीतत्केज्ञानसेफल-
नहींहै औरब्रह्मसुप्तिस्थानसेप्रयोजनहै किजीवकोब्रह्मावधार
णऔरस्वप्नजागरितकेव्यवहारसे बिमुक्ततावधारण है तिससे-
आत्माहीसुप्तिस्थानहै ॥

अतःप्रबोधोस्मात् ८

जिससेआत्मासुषुप्तिस्थानहै उसीकारणसे अस्मात् अर्था-
त्आत्मासेजगनाहै यहकैसे अगादिति इसकेउत्तरमेजैसेअग्नि
सेविस्फुलिङ्गझरतेहैंतैसेआत्मासेसबप्राणझरतेहैंसत आगम्यनवि
दुःसतआगछामहइतिइनमेसुप्तिस्थानविकल्पितहैजैसे कभीना
ड़ीसेकभीपुरीततसेकभीआत्मासेप्रबोधशासनकियाथा फिरतो
नोकासमुच्चयहै नकिविकल्पहै तिससेआत्माहिसुप्तिस्थानहै ॥

सुषुप्त्याख्यानाधिकरण ॥ ३ ॥

सएवतुकर्मानुस्मृतिशब्दविधिभ्यः ९

जोसत्सम्पत्तिसेप्रबुध्यमानहैसोक्याजोसत्सम्पन्नथा सोहीज

गायासोहीयाअन्नहै यहचिन्ताहै अनियमहै कैसे जबजलराशि मेजलबिंदुफेंकदियासोजलराशितबहै फिर उठानेमेसोहीजल बिंदुहै यहदु:सम्पादहै जैसे सुप्तपरकेसाथऐक्यापन्न सम्प्रसन्न है नहींसोहीफिरउठनेकेयोग्यहै तिससेसोहीईश्वरयाअन्ययाजी- वजगताहै इससेकहाकि सएवतु सुप्तस्वस्थजीवफिरउठता है नकिअन्य किससे कर्मानुस्मृतिशब्दविधिभ्य: इनहेतुयों कोवि- भागकरदिखाऊंगा कर्म जोजिसकामकोकुछकरसोया सोही- जगिकेउसकोकर्त्ताहैनकिअन्यहै यहनियमवैदिकज्योतिष्टोमादि मेहै नकिलौकिककृष्यादिमे अनुजोसोयाथासोहोहूं यहप्रत्यभि ज्ञाअन्यकेउठेमेनबनेगी स्मृति जोमैनेद्योदिनमेदेखाथा सोअ- द्यदेखताहूं यहस्मृतिअन्यकेउठेमेनहींबनतीहै अन्यकोअन्य के- अनुभवकाबिरोधहोनेसे शब्द पुन:प्रतिन्यायंप्रतियोन्याद्रवति बुद्धांतायै अर्थ अयनं गमनं आय: योनि जिस२इन्द्रियकाजो- जोस्थाननियतहै तहां२जाताहै जागरणार्थ ऐसेअनेकशब्दस्वा पप्रबोधप्रकरणमेपढ़े हैं वेअन्यसोयाऔर अन्यजगा इस्से सार्थ नहोंगे कर्मविद्याविधिइनसेज्ञातहै किजोसोया सोही जगा है अन्यथावेव्यर्थहो अन्योत्थानपक्षमेसुप्तमात्रमुक्तहैयह विपत्ति हो फिरयहतोकहोकिजिसकर्मयाविद्याकाकालांतरमेफलहै उनके करनेसेक्याहुआ अपिचअन्योत्थानपक्षमेयदिदेहांतरमे व्यवहा- रीजीवउठातोउसदेहकाव्यवहारलोपहो जिससेउठआया है अ न्यदेहमेसोताअन्यमेउठाकल्पनाव्यर्थहै जोजिसदेहमे सोया सो उसीमे उठताहै अन्यमे सोयाअन्यमे उठा इस कल्पना में कौन- लाभहै मुक्तउठाहै तोमुक्तिअन्तवतीहो निवृत्ताविद्यपुरुषका- फिरउठनाअयुक्तहै औरजोईश्वरका उठनाकहाथा सो भी नहीं है सदाअज्ञानशून्यसे तिस्से जोसोयासोहीउठा नकि अन्य ज- लसेजलबिन्दुनहींउठासक्तेहैं बिवेक हेतुकेअभावसे यहां बिवेक

हेतुविद्यमानहै कर्मऔरअविद्या यहवैषम्यहै इससरीसेदुर्विबेचोंकाबिबेचनप्राणिविशेषमेदेखाहै जैसे फूलोंसे मधुकाबिबेचनमक्षिकामे जबलोएकोपाधिगतबन्धानुवृत्तिहै तबलोएक जीवहै औरउपाध्यन्तरगतबंधानुवृत्तिमें अनेकजीव हैं उपाधि वुद्धिहै स्थूलसूक्ष्मरूपसे एकउपाधिस्वापप्रबोधमें दूसरे सोही-जीवजगताहै यहयुक्तहै ॥

मूर्छावस्थाधिकरण ॥ ४ ॥

मुग्धेर्द्धसम्पत्तिःपरिशेषात् १०

लौकिकमुग्धमूर्छितकोकहितेहैं देहस्थजीवकोजागरितस्व प्नसुषुप्तिजीतीनदशाप्रकटहैं चौथीदेहसे उत्क्रान्तिहै परन्तु कोईजीवकोअवस्थाश्रुतिमेप्रकटनहींहै तिससेचारमें कोईमूर्छा अवस्था है मुग्धजागरितावस्थायोगनहीं है इन्द्रियोंसे विषयोंको नदेखनेसे जैसे जगताभीइषुकारइषुलग्नमनसे दूषुसे अन्य विषयकोनहींदेखताहै ऐसे मुग्धभीयष्टिघातजनितदुःखानुभवसे व्यग्रमनजगताभीअन्यकोनहींदेखताहै नकिअचेतयमानसे इषुसे मनहटाइषुकारकहिताहै किइतनेकाललोइषुकोउपलभमानथा मुग्धजबलब्धसंज्ञहोताहै तबकहिताकिइतनेकालअन्धतममेपड़ाथा मुजिको कुछचेतनथा जगतविषयसक्तचितकोदेहउठीबैठीलेटीरहितीहै मुग्धकीदेहधरतीमें गिरतीहै तिससे नजगतानस्वप्नदेखताहै निःसंज्ञमे नकिमरा प्राणऔरऊष्माकेही नेसे मुग्धजन्तुमेंमरायानहींमरा इससंशयसेऊष्माहै यानहीं है इससे हृदयछूतेहैंसंशयाननिश्चयार्थकिप्राणहै यानहीं हैनाककी आगेहाथतूलरखतेहैं यदिप्राणऊष्मानहींजानेतिससेमराऐसाअध्यवसायकरदहनार्थवनकोलेजातेहैं जोप्राणऊष्मालभेतोनहींमरा ऐसाअध्यवसायकरसंज्ञालाभार्थभेषजकर्तेहैं फिरउठनेसे न-

हींदिष्टङ्गतथाअर्थात्मरण नकियमराष्ट्रसे लौटा है तोहीसुषुप्त-
नि:संज्ञसे अमृतसे सुषुप्तिमूर्छाएकनहीं हैं वैलक्षण्यसे मुग्ध क-
भीवहुतदेरसांसनहींलेताहैदेहकांपतीहै मुहभयानकनेत्रफटेहो
तेहैं सुषुप्तप्रसन्नमुहवारबारसांसलेता नेत्रमिचेहोतेहैंनदेहकांप
तीहै पाणिपेषणमात्रसे सुप्तकोउठालेतेहैंनकिमुग्धकोमुद्गरघात
से भीउठासक्तेहैं मोहस्वापकालक्षणभेदहोचुकानिमित्तभेदसुनो
मूसरऔषधिआदिसे मोहहोताहै श्रमादिसे स्वापहोताहैलोकमे
भीप्रसिद्धिनहीं है किमुग्धसुप्तहै फिरपरिशेषसे अर्द्धसम्पत्ति मु-
ग्धता है नि:संज्ञसे मृतधर्मसम्पन्नहै मृतधर्मवैलक्षण्यसे अस-
म्पन्नहै सूत्रमे जीवकीब्रह्मसे आधीसम्पत्तिकहीहै सोनहींहैकि
न्तुसबसम्पत्तिहै सतासोम्यतदासम्पन्नोभवतीति सुखदु:ख ज्ञा
नसुप्तसे नहींहै जैसे तैसे मुग्धमे भीवेनहींहैं तिस्से उपाधिके
उपशयसे मुग्धमे भीसुषुप्तवत् कृत्स्नसम्पत्तिहै नकि अर्द्ध सम्प-
त्ति सोनहींसुनो हमनहींकहितेहैं किमुग्धमे जीव की ब्रह्म से
आधीसम्पत्तिहै किन्तु सुप्तकेआधेनि:संज्ञासे सम्पन्न मुग्ध है
औरमरणकेआधेकम्पादिसे मुग्धसम्पन्नहै इसकानामअर्द्धसम्प
त्तिकहिताहूं मूर्छामृत्युकाद्वाराहै यदाकर्मसावशेषहै तदामन
वाणीफिरलौटतेहैंयदानिरवशेषकर्महै तदाप्राणऔरऊष्मानहीं
रहितेहैंतिस्से ब्रह्मवेदीइसकोअर्द्धसम्पत्तिमानतेहैंजोकहाकिचा
रसे पंचमीदशानहींहै सोदोषनहींहै यहकादाचित्की अवस्था
है इस्से प्रसिद्धनहींहै लोकऔरआयुर्वेदमेमूर्छाप्रसिद्ध है उसी
कानामअर्द्धसम्पत्तिमानाहै नकिपंचमीगिनीहै आयुर्वेदमेमूर्छा
संन्यासअभिन्यासादिअन्यदशाभीप्रकटहैं ॥

नीरूपब्रह्माधिकरण ॥ ५

नस्थानतोपिपरस्योभयलिङ्गंसर्वत्रहि ११

जीवजिसब्रह्मकेसाथसुषुप्तादिमेंउपाधिकेउपशमसेघुसतामि लताएकहोताहै अबतिसब्रह्मकास्वरूपश्रौतनिर्धारणकराताहूं उभयलिङ्गश्रुतिब्रह्मविषयहैं सर्वकर्मासर्वकाम:सर्वगन्ध:सर्वरस: इत्यादिजेसविशेषब्रह्मबोधकहैं अस्थूलमनण्वह्रस्वमदीर्घमित्या दि निर्विशेषब्रह्मबोधकहैं क्याइनमें उभयरूपब्रह्मजानना चा- हियेंयाएकरूपदोमेंसे एकरूपमें क्या सविशेष या निर्विशेष लेवें दोलिङ्गश्रुतिसेदोनोंलिङ्गब्रह्महै अन्यथाएक बुरा मानेगो सुनो स्वत:ब्रह्मउभयलिङ्गनहींहै एकही वस्तुस्वत:रूपीऔरअरूपीवि- रोधसेनहींनिश्चयकरासक्तेहो स्थानत: पृथिव्याद्युपाधियोगसेन सोभीयुक्तनहींहै नहींउपाधियोगसे अन्यवस्तुकाअन्यस्वभावस- म्भवहै नहीं स्फटिकरक्तादिकेयोगसे रक्तहोताहै भ्रममात्रसेर- क्तिमाकाअभिनिवेशहै उपाधिअविद्यासे प्रत्युपस्थापित है इस सेअन्यतरलिङ्गमानेमें सर्वविशेषशून्यब्रह्मनिर्विकल्पजानोन कि सविशेष स्वरूप अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययमित्यादि ॥

नभेदादितिचेन्नप्रत्येकमतद्वचनात् १२

एकचिन्हब्रह्महै नकिस्थानसेयास्वत:दो चिन्ह है सो नहीं क्युंकिप्रतिविद्यामें ब्रह्मके भिन्न२ आकारकहेहैं चतुष्पात्ब्रह्म षो डशकलंब्रह्म वामनीत्यादि त्रैलोक्यशरीरवैश्वानरशब्दोदित ब्र- ह्महै तिससेसविशेषब्रह्ममानो दोचिन्हविरुद्धनहींहैं आकारभे दउपाधिसेहै अन्यथाभेदवेदनिर्विषयहो इतिचेत् यदि यह क- होसोनहींकहिताहूं न किससेप्रत्येकमतद्वचनात् प्रत्युपाधि भेद कोऔरब्रह्मसे अभेदकोवेदसुनाताहै यश्चायमस्यांपृथिव्यांतेजोम यइत्यादि सयोयमात्मेत्यादि इससेयहकहिसक्तेहैं कि भिन्नाका रयोगब्रह्मकावैदिकनहींहै ॥

अपिचवमेके १३

भेदकीनिन्दासहितअभेदकोएकशाखीपढ़तेहैं मनसैवेदमा प्तव्यंनेहनानास्तिकिञ्चन मृत्योःसमृत्युमाप्नोतियइहनानेवपश्य तीति अन्य भोक्ताभोग्यंप्रेरितारञ्चमत्वासर्वंप्रोक्तन्त्रिविधंब्रह्म-मेतदिति अर्थ जीवअन्नईश्वरत्रिविधब्रह्ममैनेकहासोतूजान ले मे मम ॥

अरूपवदेवहितत्प्रधानत्वात् १४

कहीजोसाकारनिराकारबोधिनीसेनिराकारपकड़ान कि-साकारसो कैसे उत्तर अरूपीहै नकिरूपादिमत् कैसे तत्प्रधा-नत्वात् दिव्योह्यमूर्तःपुरुषइत्यादि वेदनिराकारब्रह्ममेप्रधान है नकिसाकारमेसाकारवेदनहींनिराकारमेप्रधानहैंकिन्तुउपासन विधिमेप्रधानहैविरोधमेतत्परअतत्परसेवलिष्ठहै जिससेदोनोसे अनाकारब्रह्मनिश्चितहै नकिसाकार आकारभीविश्वसेअन्यन-हींदिखासक्तेहो ॥

प्रकाशवच्चावैयर्थ्यात् १५

जैसे सौरादिप्रकाशसबव्योममेफैलाअंगुरीआदिउपाधि की सम्बन्धसेसूधाटेढ़ाआदिरूपसेदिखाता है सूर्यादि तैसेहीदिखा तेहैं ऐसेब्रह्मभीपृथिव्याद्युपाधिसम्बन्धसे भी पृथिव्याकारसाभा सताहैसोउपासनार्थआकारोपदेशविरुद्धनहींहै इस्से सब वेद प्र माण हैजोउपाधिसेहै सोवस्तुधर्मनहींहै ॥

आहचतन्मात्रम् १६

आहचश्रुतिश्चैतन्यमात्रंब्रह्मणोरूपं सयथासैंधवघनोनन्तरो ऽवाह्यःकृत्स्नोरसघनएवैवम्वाअरेयमात्मानन्तरोऽवाह्यः कृत्स्नः प्रज्ञानघनएवेति नआत्माकाभीतरबाहिरचैतन्यसे अन्य रूप है निरन्तररूपचैतन्यहै जैसे सेंधीकेढेलेमेनिरन्तरनोनरसहै नकि

Bhuman Ram

मधुरादि तैसा आत्मा है ॥

दर्शयति चाथो अपि च स्मर्यते १७

पररूपका प्रतिषेध करके श्रुति ने निर्विशेष ब्रह्म दिखाया है अथात आदेशो नेति नेतीत्यादि वाष्कलि ने वाध्व से ब्रह्म पूछा वुह चुप रहा दूसरे जाना कि चुप चाप बैठि रहिना ही ब्रह्म है सहोवाचाधीहि भो इति तूष्णीं बभूव तं हद्वितीये वा तृतीये वा वचन उवाच ब्रूमः खलु त्वन्तु न विजानासि उपशांतोयमात्मेति उपशांत पद से वैदिक-लौकिक क्रूर कर्म से ब्रह्म नहीं जाना जाता है क्युंकि वुह शांत है ऐसे अर्थ को स्मृति गीतादि मे है न सत्तन्नासदुच्यत इति ॥

अत एव चोपमा सूर्यकादिवत् १८

जिस्से आत्मा वाङ्मनसातीत है अत एव तिस्से इसकी औपाधिको अपारमार्थिको सविशेषता जानके सूर्यकादिवत् यह उपमा मोक्षशास्त्र मे दी है सूर्यक अर्थात् सूर्य का आभास सूचक यथा ह्ययं-ज्योतिरात्मा विवस्वानपो भिन्ना बहुधैकानुगच्छन् उपाधिना क्रियते भेदरूपो देवः क्षेत्रेष्वेवमजोयमात्मेत्यादि ॥

अम्बुवदग्रहणात्तु न तथात्वम् १९

अपने मत को हान देखके बोला कि जल सूर्यकादि तुल्य यहां युक्त नहीं है अम्बुवदग्रहणात् मूर्त सूर्यादि से पृथक् दूर देश मे मूर्त जल का ग्रहण युक्त है जल मे सूर्यादि का प्रतिबिम्ब युक्त है और न आत्मा मूर्त है न आत्मा से पृथक् दूर देश और उपाधियां हैं आत्मा सर्वगत होने से और सब से अनन्य होने से तिस्से दृष्टांत युक्त नहीं है ॥

वृद्धिह्रासभाक्त्वमन्तर्भावादुभयसामंजस्यादेवं २०

जितनाअंशइष्टहै उतनेमेंसम्भवहै नहींदृष्टांतऔरदार्ष्टान्ति ककाकहीं इष्टांशकोछोड़सबअंशमेंसारूप्यकौनदिखासक्ताहै स बसारूप्यमेंदोनोंकानाशहो यहदृष्टांतश्रुतहै नकिस्वधीकल्पित- है शास्त्रनीतदृष्टांतकेप्रयोजनमात्रकाउपन्यासहै जोसारूप्य य- हांइष्टहै सोकहिताहै वृद्धिह्रासभाक्त्वं जलगतसूर्यप्रतिबिम्बज- लवृद्धिमेंबढ़ताजलह्रासमेंघटताजलचलनेमेंचलता जल भेद से भिन्नजलधर्मकाअनुसारीहै नकिपरमार्थसेसूर्यतैसातैसाहै ऐसे अविकारी आत्मा देहाद्युपाधिसेउपाधिधर्मवृद्धिह्रासादिकोसे वतासाहै इसदृढवदृष्टांतदार्ष्टान्तिकदोनोंसमञ्जसहोनेसेविरोधन हींहै जोथोरेजलमेंअतिदूरव्योमकाप्रतिबिम्बदिखाताहै तोसब सच्चहै नहींतोनहींहै आत्माप्रतिबिम्बशून्यःनीरूपद्रव्यत्वात् वा युवत् ॥

दर्शनाद्य २१

श्रुतिब्रह्मकादेहादिमेंभीतरप्रवेशदिखातीहै तैत्तिरीयकश्रु तिसईश्वरपक्षीलिङ्गदेहीहोकेदेहोंमेंघुसाथा औरसोघुसाभीपूर्ण है पुरश्चक्रेद्विपदःपुरश्चक्रेचतुष्पदः पुरस्सपक्षीभूत्वापुरःपुरुषआ- विशदिति तिससेनिर्विकल्पैकलिङ्गब्रह्महै नकिउभयलिङ्ग नकि विपरीतलिङ्गहै कोई इसअधिकरणमेंदोअधिकरणकरते हैं री तिनिःप्रपञ्चब्रह्मक्याएकाकारयाप्रपञ्चवत्अनेकाकारहैइससंशय सेप्रकाशवच्च इससेइसराधिकरणहै इसे नसद्रूपहै किन्तुप्रकाश वच्चिद्रूपहै कैसे अवैय्यर्थ्यसे सत्यंज्ञानंसदेवेति जेदोश्रुतिदोरूप ब्रह्ममेंअर्थवतीहैं इसकासिद्धान्तहैकिआहचतन्मात्रं अर्थ सन्मा त्रब्रह्महै ज्ञानकासत्तासेभेदनहींहै यहदूसराधिकरण है एका- धिकरणवादीकहिताहै कि सद्रूपयाबोधरूपयाउभयरूपब्रह्म इ ष्टहै जिसलियेअधिकरणपृथक् करते हो सोनिरर्थहै जिससे मैं

कहिताहूं जोअनेकरूपब्रह्मनिरस्तहै। तोएतावड़ाश्रमक्युंकरते-
हो नस्थानतोपीति इसीअधिकरणसे निरस्तहैप्रकाशवच्चयह पृ
थक्‌अधिकरणव्यर्थहे सद्रूपहैनकिबोधरूपहै यहनहीं कहिसक्ते
हो विज्ञानघन इसकेव्यर्थहोनेसे ॥

कैसे निरस्तचैतन्यब्रह्मचेतनजीवकाआत्माकहाहै और न
किबोधरूपहै नसद्रूपहै यहकहिसक्तेहो अस्तीत्येवोपलब्धव्यः इ
सकेव्यर्थहोनेसे औरकैसेनिस्सत्ताकतुकबोधमानोगे नउभयरूप
ब्रह्मकहिसक्तेहो पूर्वस्वीकारकेविरोधसे जैसे सत्ताभिन्नबोध से
औरबोधभिन्नसत्तासेउपेतब्रह्म जाननेवालेकोपूर्वाधिकरणमे प्र-
तिपिद्दसप्रपञ्चआपहुंचा उभयरूपश्रुतिबलसेदोषनहींहै सो न-
हींहै एकअनेकस्वभावनहीं हो सक्ता है भेकसद्वत् यदि कहो
किसत्ताहीबोधऔरबोधहीसत्ताहै इनकामिथो भेद नहीं है तो
भीक्यासद्रूपब्रह्महै याबोधरूपयाउभयरूपहै यहविकल्पनिराश्र
यहै औरभीसाकारनिराकारबोधनमें श्रुतिभगड़तीहैंफिरनिरा
कारस्वीकारमेसाकारोंकीगतिअवश्यकहो इसलियेप्रकाश वच्चे
त्यादिसूत्रसार्थवत्तरहैं अद्वैतमतमे आकारश्रुतिकल्पिताकारपर
हैं विश्वत्रयवादीकहिताहै किआकारवादिनीश्रुतिविश्वत्रय द्वा
राअनाकारप्रतिपत्यर्थहीहै नउनकाभिन्नार्थहै प्रतिपत्तिज्ञान-
याउपासनहै मनोमयइत्यादिआकारश्रुतिहै जेइतराकारबि-
लयपरहै मनोमयमनोतिरिक्तोपाधिशून्ययहअर्थहै ऐसेही प्राण
शरीरपदसेप्राणातिरिक्तउपाधिकेनिषेधसेमनभीनहींहै ऐसेस-
बशब्दअनाकारब्रह्मपरहैं यहमतअच्छानहींहै कैसे यथायुक्ताह्य
स्यहरयःशतादशेत्ययंवैहरयोयं वैदशचसहस्राणिवह्नीनिचानन्ता-
निचेत्यादि जेब्रह्मविद्याकेअधिकारमेपढ़े हैं तेविलयार्थहैं तदे
तद्ब्रह्मापूर्वमित्यादि उपसंहारसेऔरजेउपासनविधानकेअधि-

कारमेपढ़ेहैंजैसेमनोमयःप्राणशरीरोभारूपइत्यादि इनकाविल
यन्याय्यनहींहै सक्रतुङ्कुर्वीतेत्यादि इस उपासनविधिसे मनोम
यादिकासम्बन्धहै श्रुतिनेजोगुणउसासनार्थकहेहैं फिरकैसेलच
णासेविलयार्थकहसक्तेहो मनोमयादिकाफलकहींपापक्षयकहीं
ऐश्वर्यलाभकहींक्रममुक्तिहैइससे उपासनवाक्यऔरब्रह्मवाक्यपृथ
क्पृथक्युक्तहैंनकिएकवाक्यता उनकीएकवाक्यताएकनियोगसे
प्रयाजदर्शादिवाक्यवत्हैयदिकहोसोनहीं कहोकिसविषयक नि
नियोगयहांइष्टहै नियुज्यमाननरकरो इसअपनेव्यापारमे लग-
ताहै ननुहोगानियोगविषयद्वैतविलयनहींहै ब्रह्मबोधद्वैतप्रपञ्च
केविनाबिलापितमे इस्से ब्रह्मबोधबिरोधीद्वैतप्रपञ्च बिलाप्य है
जैसे स्वर्गकामकोयागअनुष्ठेयहैऐसेअपवर्गकामकोप्रपञ्चप्रबिल-
यहै जैसे अंधेरेमे धरेघटादिकेदर्शनबिरोधीअंधेरेकोदूरकरतेहैं
ऐसाहीब्रह्मबोधबिरोधीप्रपञ्चदूरकर्तव्यहै ब्रह्मबोधार्थीसे ब्रह्म-
स्वभावप्रपञ्चहै नकिप्रपञ्चस्वभावब्रह्महै तिससेनामरूपप्रपञ्चके
प्रविलापनसेब्रह्मबोधहै पूंछताहूं किप्रपञ्चबिलापनकाक्या अर्थ
है क्याऐसाप्रपञ्चकाविलयकर्तव्यहै जैसे अग्नितापसेघी काप-
गिलना याऐसाकि जैसे एकचन्द्रमेतिमिरसेअनेकचन्द्र प्रपञ्च-
है तैसे अविद्याकृतब्रह्ममे नाम रूप प्रपञ्चविद्यासे बिलापयित
व्यहै देहादिरूपआध्यात्मिक और वाह्यधरादिरूपविद्यमान प्र-
पञ्चविलापयितव्यकहोयदि सोपुरुषमात्रसेविलापनकोशक्यन-
हींहै फिरउसकेबिलयकाउपदेशअशक्यविषयहो यदिकिसी मु-
क्तसेधरादिविलयकियाहोतातो अबधरादिशून्यविश्व होता यदि
अविद्याध्यस्तप्रपञ्चएकब्रह्ममे विद्यासेविलाप्यकहो तोब्रह्महीअ
विद्याध्यस्तप्रपञ्चकेनिराससेनिवेदनकियाहैएकमेवाद्वितीयंब्रह्मे
त्यादिसेनिवेदितब्रह्ममेस्वयंविद्याजन्मतीहै सोअविद्याकोबाधेहै

तिससेअविद्याध्यस्तसवप्रपञ्चस्वप्नप्रपञ्चवत्विलय होताहै अनिवे दितब्रह्ममेब्रह्मज्ञानकोकरऔरप्रपञ्चविलयकरऐसेसीवारकहिने सेभीनब्रह्मज्ञाननप्रपञ्चविलयहोगाजीव नियोज्यप्रपञ्चदशामेज्ञा ताहै सोप्रपञ्चसाहीहै याब्रह्मसाहै प्रथममेनिःप्रपञ्चब्रह्मकहिने सेधरादितुल्यजीवभीबिलापितहै फिरप्रपञ्चविलयमेनियोगकि सकेलियेकहोगे किसकोनियोगनिष्ठासेमुक्तिकहोगे दूसरेमेब्रह्म हीअनियोज्यस्वभावजीवकास्वरूपहै औरजीवअविद्याकृत है ऐ सेब्रह्ममेनियोज्यकेअभावसेनियोगकाअभावहै औरपरविद्याधि कारमेपढ़े द्रव्यादिविधिशब्दतत्वकेसन्मुखकरतेहैं नकितत्व बो धकोविधिकेबोधकहैंलोकमेभीयहदेखयहसुनऐसेकहिनेसेप्राणि धानमात्रकरयहीकहाहै नकिसाचात्ज्ञानकोकर ज्ञेयकेसन्मु- खकोभीकभीज्ञानहोताकभीनहींहोताहै तिससे ज्ञानार्थीको- ज्ञानकाविषयदिखानाचाहियेजतानेवालेसेविषयदिखानेसेषा पहीज्ञान जैसी विषय जैसा प्रमाणहै तैसा जन्मताहै नहींप्र- माणांतरसेअन्यथासिद्धार्थमेनियुक्तको अन्यथाज्ञानजन्मताहै य दिनियुक्तहूं मैअन्यथाज्ञानकरोसोज्ञाननहींहै तोक्या है मान- सीक्रियाहै जोआपही अन्यथाजन्माज्ञानहोतोभ्रमहो ज्ञान प्र- माणजन्यजैसीविषयहै वैसाहोगा नकिनियोगसेबैकरासक्तेहो नकिनिषेधसेसेवारसक्तेहो जैसे नीलकोयेलेकोसेशिल्पीभीश्वे तनहींकरसक्तेहैं इससेनियोगवेदान्तबाक्योंमेनहींहै जोकहोकि आम्नायनियोगार्थहीहै इससे जीवकोअनियोज्यब्रह्मत्वअप्रमाण- कहै शास्त्रही अनियोज्य ब्रह्मात्मत्व को कहिता है ब्रह्म बोधा र्थपुरुषको नियुक्तकर्त्ता है तिस्से एक ब्रह्मशास्त्रको दोअर्थता- औरविरुद्धार्थपरताहो नियोगपरमेश्रुतहानअश्रुतकल्पना कर्म फलवत्मोक्षकाअदृष्टफलऔरअनित्यादिदोषनहींवारसक्तेहोति

ससेअवगतिनिष्ठब्रह्मवाक्यहै नकिनियोगनिष्ठहै इससेएक नि-योगकेस्थानसेएकवाक्यताकहोथी ब्रह्मवाक्यमेनियोगमाने पर-भीएकब्रह्मनिःप्रपञ्चसप्रपञ्चउपदेशोंमेअसिद्धहै शब्दान्तरप्रमाणसेनियोगभेदमेसर्वंचएकनियोगशक्यनहींहै जैसे यजतिजुहोतिमेभेदहै तैसेहीवेदोपासीतयहशब्दभेदहै वेद जान उपासीत उपास्तिकर औरप्रयाजदर्शादिमेस्वर्गफलार्थीअङ्गमुख्यसेएकवाक्यताहै सगुणनिर्गुणचोदनामेएकाधिकारअंशनहींहै नहीं भा रू-पादिगुणप्रपञ्चविलयकेउपकारीहैं नकिप्रपञ्चविलयभारूपादि-काउपकारीहै मिथोविरोधिसेनहींसवप्रपञ्चकाविलापनऔर प्रपञ्चकेएकदेशकाअपेक्षणएकधर्मिमेघुसानेकोयुक्तहै तिससेमेराकराविभागसाकारनिराकारउपदेशोंकायुक्ततर है ॥

निषेधावधिब्रह्माधिकरण ॥ ६ ॥

प्रकृतैतावत्त्वंहिप्रतिषेधतिततोब्रवीति चभूयः २२

द्वेवावब्रह्मणोरूपेमूर्तंचैवामूर्तंचेति इसउपक्रमसेपांच म-हाभूतोंकी दोराशिविभक्तकी हैं धराजलतेजमूर्तहैं व्योम वायुअमूर्तहैं अमूर्तकासारकरणात्माहिरण्यगर्भहै उसीके पुरुषशब्दसेमहारजनपांडुाविकद्रून्द्रगोपादिरूपदिखाकेफिरपढ़ा कि अ-थातआदेशोनेतिनेतिनह्येतस्मादितिनेत्यन्यत्परमस्तीति हमा-रीयहजिज्ञासाहै किइसनिषेधकाविषयक्याहै इसमेइदन्तत् ऐसाविशेषितकुछप्रतिषेध्यलब्धनहींहै इतिपदकिसीप्रतिषेध्य कोकहिताहै नेतिनेति इसमेनञ्इति परहै इतिपदपासकाबोधकऐसा लोक मे देखा है इतिपाठकने कहा था प्रकरणसामर्थ्यसे सप्रपञ्चरूपद्वयब्रह्मके पासहैं और सोही ब्रह्म है जिसके जे

दोरूपहैं इसी मे हमको संशय जन्मा है क्या यह निषेधदोरूप
का है या रूपवत्ब्रह्मका है इन दोका निषेध है या एकका
है यदाएकका है तदाक्या ब्रह्मकानिषेध कर्त्ता है दोरूपपरिशे
षकरता है यादोरूपकानिषेधकरता है ब्रह्मकोपरिशेषरखता है
हमयहशङ्काकरते हैं किप्रकृतकोसमतासेदोनोंकानिषेध है और
दोनिषेद हैं दोनञ्कहिनेसे एकनेब्रह्मकासप्रपञ्चरूपनिषेधकि-
या है दूसरेनेरूपवत्ब्रह्मनिषेधकिया है यहीमति है अथवासर्वनि
षेधयुक्तनहीं इससेरूपवत्ब्रह्महीनिषिद्ध है क्योंकि वाङ्मनसाती-
त है इससेअसम्भाव्यमानसद्भाव है इस्से निषेधार्ह है नकिरूपीप्रप
ञ्चनिषेधार्ह है प्रत्यक्षादिगोचरसे दोनकाअभ्यासदृढ़ार्थ है सोन-
हीं है उभयनिषेधयुक्तनहीं है शून्यवादप्रसङ्गसे कुछपरमार्थपक-
ड़केअपरमार्थकोनिषिद्धकरते हैं जैसे रस्सीआदिमेंसांपआदिनि
षेधभावमेंसार्थ है औरदोनोंकेनिषेधमेंकौन अन्यभावशेषरहेगा
जोअन्यशेषनहीं है तोउनमेंइतरनिषेधका आरम्भनहीं है सत्वके
विनानिषेधशक्यनहीं है जोशक्य है तोसोहीप्रपञ्चपरमार्थहोति-
ससेनिषेधकीअसिद्धि है नकिब्रह्मकानिषेधयुक्त है ब्रह्मतेब्रवाणी
त्यादिकहिनेसेवाङ्मनसातीतअभावसेनहींकहा है सत्यंज्ञानमि
त्यादि इनमेंवड़ेप्रबन्धसेब्रह्मकहाफिरउसीकाअभावनहीं कहे-
गा नहींबुद्धिमान्कालाकरफिर धोता है वाङ्मनसातीत अवि-
षयांत:पातिब्रह्म है तिस्से ब्रह्मकारूपप्रपञ्चकानिषेध है शेष ब्रह्म
है यहीमानो सोहीकहा है प्रकृतैतावत्वं इयत्तापरिछिन्नमूर्त्तामू
र्तरूपब्रह्मकोशब्दनिषेधता है अमूर्तरस चक्षुर्ग्राह्यनहीं है ब्रह्म के
दोरूपकहे अवरूपीकेस्वरूपजिज्ञासामेंयहवाक्य है अथातआदेशो
नेतिनेतीति कल्पितरूपकेनिषेधसेब्रह्मकास्वरूपकहा है प्रधान-
सेब्रह्मकानिषेधनहीं है राजाकाभृत्यनहीं हैइससेराजाका निषे-

धहोनेसेलोकप्रसिद्धरूपद्वयब्रह्ममेकल्पितकापरामर्शहै नकि नि
र्दिष्टकानिषेधहै शुद्धब्रह्मबोधार्थ मूर्त्तामूर्त्तकेनिषेधार्थदोनञ् हैं
नकिरूपरूपिक्रियापूर्वनञ्भूतराशिकोउत्तरनञ्वासनाराशि को
निषेधताहै यानदोवीप्सामेहैं किजोकुछउत्प्रेक्षाकरतेहोसोन-
हींहैंगणेनिषेधमेयहब्रह्मनहीं अन्यब्रह्मयहजिज्ञासाहोवीप्सामे
जिज्ञासानहींहै सबविषयकेनिषेधसे तिससेकल्पितप्रपञ्चकाब्र
ह्ममेनिषेधऔरब्रह्मशेषहै यह निर्णय है ततोब्रवीतिचभूयः प्र-
तिषेधसेआगेकहाकि अन्यत्परमस्तीति अभावकेअन्तमे क्या अ-
न्यपरहै यहकहोयहांऐसीअक्षरयोजनाहै कि जोब्रह्मनेतिनेति-
सेनिर्देशकियाथा फिरउसनिर्देशकोकहिताहै कि नेतिनेति इ-
सकाक्याअर्थहै नहींब्रह्मसेभिन्नहै इससेनेतिनेतिकहाहै नकि
स्वयंनहींहै अन्यत्परं निषिद्धब्रह्महै याऐसीवर्णयोजनाहै कि न
हींइससेनेति नहिप्रपञ्चनिषेधरूपनिर्देशसेअन्य निर्देशब्रह्मका है
तबतोततोब्रवीतिचभूयः इससूत्रांशकेनामपरमानो अथनाम-
धेयंसत्यस्यसत्यमितिप्राणावैसत्यंतेषामेषसत्यमिति यहकहिताहै
यहतबबनेजबनिषेधब्रह्मसेहटे औरअभावावसानअर्थात्अन्तिमे
अभावरहा तोकौनसत्यकासत्यकहोगे तिससेऐसाहै किनिषेधब्र
ह्मावमानहैनकिअभावावसानऔरकोईकहितेहैं किश्रुतिउपल
क्षणहै सूक्ष्मपांचभूतअमूर्तहैं औरपञ्चीकृतस्थूलमूर्तहैं तिससेअ
मूर्तरसकहिमेकरकेकरणपांचभौतिकसिद्धहैं औरसत्पदात्मकप्र
पञ्चकहेपीछेकहेआरोपकेनिषेधार्थसेनेतिनेतिनिषेधकरकेउपदे
शकियाहै ॥

तदव्यक्तमाहहि २३

यदिनिषिद्धप्रपञ्चसेअन्यपरब्रह्महै तदासोक्युंनहीं गृह्यमान
है नेत्रादिसेसुनो तदव्यक्तं अनिन्द्रियग्राह्यहै सर्वद्दश्यकासाक्षी

होनेसे याहहिस्मृतिने ऐसाहीकहा है नचक्षुषागृह्यतेनापिवा-चानान्यैर्देवै स्तपसाकर्मणावासएषनेतिनेत्यात्माअगृह्योनहिगृ ह्यतेइत्यादि ॥

अपिसंराधनेप्रत्यक्षानुमानाभ्यां २४

सबप्रपञ्चसेछुटाआत्माअप्रकटकोसंराधनकालमेयोगीदेख तेहैं संराधन भक्ति ध्यान प्रणिधान अनुष्ठानादिहै कैसे जाना किसंराधनकालमेदेखतेहैं प्रत्यक्षानुमानाभ्यां श्रुति परांचिखा निव्यतृणत्स्वयंभूस्तस्मात्पराङ् पश्यतिनांतरात्मन् कश्चिद्धीरःप्र-त्यगात्मानमैक्षदावृत्तचक्षुरमृतत्वमिच्छन्इत्यादि अर्थ स्वयम्भू ईश्वर खानि इन्द्रियां परांचि अनात्मग्राहक कृत्वेतिशेषः व्य-तृणत् नाशितवान् यहीइनकानाशहै जोअसत्अर्थका ग्रहण है तिससेइनकोतैसाहुआजिससेसबलोगवहिराअर्थहीदेखताहै न किअपनेआत्माको कश्चित् कोई धीरः धीमान् आवृत्तचक्षुः रु द्धेन्द्रियवर्गः शुद्ध चित्तमेप्रत्यगात्माको अमृतत्वं मोक्ष इच्छन् चा हताहुआदेखताहै मोक्षार्थी स्मृति यंविनिद्राजितश्वासासन्तु ष्टाःसंयतेन्द्रियाः ज्योतिःपश्यन्तियुंजानास्तस्मैयोगात्मनेनमः ॥

प्रकाशादिवच्चावैशेष्यम्प्रकाशश्चकर्मण्य भ्यासात् २५

संराध्यसंराधकरीतिपरचलनेमेवक्षेपरजीवकाभेदकहांकु-टा यहमतकहोकहिताहूं प्र० जैसेप्रकाशव्योमसूर्यादिअंगुली-पात्रजलादिकर्मउपाधिमेभिन्नसेभासतेहैं नकि स्वाभाविकअवि शेषरूपकोछाड़तेहैं ऐसाहीध्यानादिउपाधिमेआत्मभेद है स्वतः अवैशेष्यंएकरसहैतैसाही तत्वमसीति इसअभ्याससेजीव प्राज्ञ काअभेदवार२कहाहै ॥

अतोनन्तेनतथाहिलिङ्गम् २६

अत: जिससेअभेदस्वाभाविकहै औरभेदअविद्याकृतहै ति ससेविद्यासेअविद्याकोछुटाकेजीव अनन्तेन परप्राज्ञकेसाथ ऐ- क्यपाताहै तथाहिलिङ्गं तैसाहिश्रुतिनेकहाहै सयोहवैतत्पर- मंब्रह्मवेदब्रह्मैवभवति ब्रह्मैसन्ब्रह्माप्येतीत्यादि ॥

उभयव्यपदेशात्त्वहिकुण्डलवत् २७

संराध्यसंराधकभावमेभेदाभेदमतकान्यासस्वमतशुध्यर्थ है कहींजीवप्राज्ञकाभेदकहाहै ततस्तुतंपश्यतेनिष्कलन्ध्यायमान इति ध्याताधेयकाभेदहै द्रष्टा द्रष्टव्यका परात्परंपुरुषमुपैतिदि व्यमिति गन्तागन्तव्यका यःसर्वाणिभूतान्यन्तरोयमयतीति नि- यन्तानियन्तव्यका कहींउनकाअभेदकहा है तत्वमसि एषआ- त्मासर्वान्तरइत्यादि ऐसेउभयउपदेशमेयदिअभेदएकांतसेमानो तोभेदोपदेशनिरालम्बनहो फिरइसउभयउपदेशसे अहि कुण्ड लवत् तत्वहोनाहैहै जैसे सांपयहउपदेशअभेदमेहै औरकुण्ड लीभुग्नीप्रांशुलम्बवित्तत्वाद्यादिकाभेदमेउपदेशहै ऐसाहीजीव प्राज्ञकीदशाहै ॥

प्रकाशाश्रयवद्वातेजस्त्वात् २८

जैसे सौरप्रकाश औरप्रकाशकाआश्रयसूर्य अत्यन्तदोनोभि- न्ननहींहैं तेजस्त्वात् दोनोतेजसमानहैं औरभेदतोलोकसिद्ध है ऐसाहीजीवप्राज्ञमेहै ॥

पूर्ववद्वा २९

जैसे पूर्वमेप्रकाशादिवच्चेति इसमें कहाथा तैसाहीरही अ- विद्यासे बन्धविद्यासे मोक्षहै यदिपरमार्थसे बद्धकोईआत्मा अ- हिकुण्डलरीतिसे परात्माकासंस्थानहै औरप्रकाशाश्रयरीतिमे

एकदेशमानोगेतबतो पारमार्थिकबन्धछाड़नेको अशक्यहै इससे मोक्षशास्त्रव्यर्थहो नकिभेदाभेदद्दोनोश्रुतिनेतुल्यवत्कहे हैं अभेदकोदिखातीहै पूर्वप्रसिद्धभेदका अनुवादकर्त्ती है अर्थान्तरकोविवक्षासे तिससे प्रकाशादिवच्चेतियह अद्वैतसिद्धान्त है बाभेद भेदवारकहै ॥

प्रतिषेधाच्च ३०

परात्मासे अन्यचेतनकानिषेधशास्त्रकर्त्ताहै नान्यतोस्तिद्रष्टेत्यादि तदेतद्ब्रह्मापूर्वमनपरमनन्तरमबाह्यमित्यादि इसनेब्रह्मसे अन्यप्रपञ्चकानिषेधसुनायाहै तिससे ब्रह्ममात्रशेषसिद्धान्तजानपड़ताहै ॥

अद्वयब्रह्माधिकरण ॥ ७ ॥

परमतःसेतून्मानसम्बन्धभेदव्यपदेशेभ्यः ३१

जोप्रपञ्चशून्यब्रह्मनिर्धाराथा उससे परअन्यतत्त्वहै यानहीं यहसंशयश्रुतिविवादसे है कोईवाक्यब्रह्मसे परअन्यतत्वको कहितेहैं उसकेव्याख्यार्थयहउपक्रम है परं अन्यतत्त्व अतः ब्रह्मसे होनेकोयोग्यहै सूत्रमेकहेचारहेतुयों सेसेतु अथयआत्मास सेतुर्विधृतिरिति इसमे आत्मशब्दसे जीवब्रह्मकहाथा सोहीसेतुकहाहै लोकमेमट्टीकाठादिसे जलसन्तानभेदार्थजलमेबनाई वस्तुसेतुहै जोश्रुतिनेसेतु शब्दआत्मासे कहा है सोलौकिकसेतुसाआत्मासेतुसे अन्यवस्तुकाहोनाकहिताहै औरसेतुन्तीर्त्वा इसतरतिशब्दसे जैसे लौकिकसेतुसेउतरजांगलभसे तुम पहुंचाहै ऐसे आत्मसेतुकोउतरअनात्मअसेतुमे पहुंचा यहीप्राप्तहै उन्मान तदेतद्ब्रह्मचतुष्पादष्टाशफंषोडशकलमिति

अर्थ चारदिशाचारकलाहैं औरप्रकाशवान्पादहै पृथिवीअन्त रिक्षद्युसमुद्रयहअनन्तवान्पाद है२ अग्निसूर्यचन्द्रविद्युतयह- ज्योतिष्मान्पादहै ३ चक्षुःश्रोत्रमनवाणीयहआयतनवान्पाद ४ ऐसाचतुष्पाद्ब्रह्म है पादोंकेआधिआठशफखुरसे फटे हैं जिसकै- सोअष्टाशफब्रह्महै चारपादमें चार२कलाहैं इससे षोडशकल है जैसे सोरह मासे तुला सोना सोरह मासे कहाता है तै- सेहीसहयब्रह्महै सोरहमेंमितहोनेसेतुलीवस्तुपरिच्छिन्नवाटसे अ न्यहै तैसे ब्रह्मकेउन्मानकहिनेसेअन्यवस्तुहोनीचाहिये सम्बन्ध शारीरआत्माप्राज्ञेनात्मनासम्परिष्वक्तइतिदेखा हैसम्बन्धमितों कामितकेसाथ जैसे नरोंकानगरसे सुषुप्तिमेंजीवोंकाब्रह्मसे स- म्बन्धकहाहै इससेब्रह्मसेपरअन्यवस्तुअमितजानपड़ताहै भेदई- श्वरकासूर्यआधारकहाहै अथयएषोन्तरादित्येहिरण्मयःपुरुषो- दृश्यतइति फिरभेदसेनेत्रआधारईश्वरकाकहाहै अथयएषोन्त- रक्षिणिपुरुषोदृश्यतेइति नेत्रस्थईशकासूर्यस्थईशसेरूपादिसमा नकहेहैंतस्यैतस्य तदेवरूपंयदमुष्यरूपंयावमुष्यगेष्णौतौगेष्णौय- न्नामतन्नामेति नेत्रऔरसूर्यइनमेकेदोनोंईश्वरसावधिककहेहैंये चामुष्मात्परांचोलोकास्तेषांचेष्टेदेवकामानांचेत्येकस्ययेचैतस्माद् वांचोलोकास्तेषांचेष्टेमनुष्यकामानांचेत्येकस्य जैसे यहमथुराका राज्यहै औरयहकुरुकाराज्यहै ॥

सामान्यात्तु ३२

उक्तहेतुओंसेब्रह्मसेअन्यप्राप्तहैइसकानिरोधकरताहैकि उक्त प्राप्तिकारोधकहैब्रह्मसेअन्यकुछवस्तुहोनहारनहीहै मानकेअभा वसेब्रह्मसेअन्यकीअस्तिमेंप्रमाणनहींदेखतेहैं सबवस्तुजातजनि मत्काब्रह्मसेजन्मादिनिर्धारितहैकार्यकाकारणसेअनन्यत्वहैजो सेत्वादिव्यपदेशब्रह्मसेभिन्नतत्वकासूचककहाथासोनहीं सेतुक

हिनेसेब्रह्मसेबाह्यवस्तुकासद्भावनहींकहसक्ताहैआत्मासेतुकहाथा जोब्रह्मयाप्रपञ्चसेअन्यकल्पोसो हठहैअप्रसिद्धकल्पनासेआत्मासे तुइस्से कहा किजैसासेतुधारकपारकहै तैसाही आत्माजगऔर जगसीमोंकाधारकपारकहै सेतुमासेतुकहाहैतरतिप्राप्तार्थमेहै नकिअतिक्रमसेअसंभवसेजैसेगणिततीर्णकहिनेसेप्राप्तगणितजा नाजाताहै नकिउल्लंघितगणितहै तैसेसेतुंतीर्त्वेतिइसमेप्राप्तसे तुहैआत्मा ॥

वुध्यर्थःपादवत् ३३

उन्मानभीब्रह्मसेअन्यवस्तुकोअस्तिपरनहींहै फिरकिसलियेहैबु ध्यर्थः उपासनार्थहै चारपांवआठखुरसोरहकला ऐसीफैलीबुद्धि ब्रह्ममेकैसेठहिरेगीइसलिये विकारद्वाराब्रह्मकाउन्मानकहाहैस वनरअविकारअनन्तमेबुद्धिनहींठहिरासक्तीहैं नरोंकीबुद्धिमन्दम ध्यश्रेष्ठहोनेसे पादवत् अध्यात्ममनके वाणीप्राण नेत्रकर्णपादहैं औरआधिदैवव्योमकेअग्निवायुसूर्यदिशापादमानेहैं ध्यानार्थतैसे ब्रह्मकेहैं अथवाजैसेमासेसोनेकाव्यवहारार्थपादविभागहै नकि सबमासेसेसर्वदासर्वत्रसर्वजनव्यवहारकरसक्तेहैंलेनेवेचनेकेपरि माणकेअनियमसेतैसाईशमेजानो ॥

स्थानविशेषात्प्रकाशादिवत् ३४

स्थानमिवस्थानंतस्यविशेषोबुध्याद्युपाधिशून्यत्वंसुषुप्ताव स्थायांनतुपरिमितत्वेनसत्संपत्तिरतोनसंबन्धकृतदूषणमस्तीति सुषुप्तिरूपब्रह्मस्थानमेसत्संपत्तिरूपसम्बन्धकहाहै जैसे स्त्रीकोले केसोयाहै इसअभेदपक्षमेभीसम्बन्धसेदोषनहींहै और भेदपक्षमे सूर्यमण्डलस्थानमेनेत्रकेनाईविशेषहै तिस्से स्वाभाविकभेदनहीं है प्रकाशादिवत् यहउपमाकाउपादानहै जैसे एकसूर्यकाप्रका शजैसी२उपाधिकेसाथयोगसेभेदभागीकहाताहै और उपाधियो

गसेसम्बन्धकाकथनहोताहै आदिशब्दसेजैसेसूचीपाशादिमेंउपाधिकीअपेक्षासेहीसूचीपासजेदोसम्बन्धऔरभेदहैं तैसेहीसम्बन्ध औरभेददोनोऔपाधिकईश्वरमेंहैं ॥

इससूत्रसेसम्बन्धऔरभेदइनदोंशब्दों कानिरासाभिधानहै जोसम्बन्धऔरभेदसेपरब्रह्मसेअन्यतत्त्वहै सोझूठहै जिसमें एकमें स्थानविशेषकीअपेक्षासेसम्बन्धऔरभेदयुक्तहैं ॥

उपपत्तेश्च ३५

भेदमृषात्वादियुक्तेश्च

स्वमपीतोभवतीतिइससेस्वरूपसम्बन्धयुक्तहैनकिअन्यसम्बन्ध स्वरूपसम्बन्धअनपायोहोनेसेनकिनगरनरयुक्तिसे सम्बन्धघटता है औपाधिकस्वरूपकेछिपनेसेस्वरूप सम्बन्ध है बहुत श्रुतियों में एकईश्वरकहाहै इससेभेदऔपाधिकहै व्योमवत् योयंवहिर्धापुरुषादाकाशोयोयमन्तःपुरुषइत्यादि ॥

तथान्यप्रतिषेधात् ३६

सेत्वादिपरपक्षहेतुकोदूरकरस्वपक्षमेंहेतुकहिताहै अन्यके निषेधसेजानाकिब्रह्मसेपरअन्यवस्तुनहींहै सएवाधस्तादित्यादि इनसेजानाकिआत्मासेअन्यअन्तरआत्मानहींहै ॥

अनेनसर्वगतत्वमायामशब्दादिभ्यः ३७

अनेन परिछिन्नसेत्वादिकेनिरासकेऔरअन्यप्रपञ्चमात्र के-प्रतिषेधसे सर्वगतत्वं तीनपरिच्छेदोंसेरहितब्रह्महै यह अर्थ तर्कमात्रसेनहींहै किन्तुश्रौतहै आयामशब्दव्याप्तिवाचकहै शब्दयावान्वाआकाशस्तावानेषोन्तर्हृदयआकाशइति आदिशब्दसेनित्यशब्दअर्थकास्वीकारहै ॥

ईश्वरफलदातृत्वाधिकरण ॥ ८ ॥

फलमतउपपत्ते: ३८

व्यावहारिकोईशिताईशितव्यअवस्थामेब्रह्मकाएकअन्य स्वभावकहाहै जोकिइष्टअनिष्टमिश्रकर्मफलत्रिविधिजन्तुयोंको प्रसिद्ध हैं इसका दाता ईश्वर है या कर्म है फलमतईश्वराद्भवितुमर्हतिकुतउपपत्ते: ईश्वरसर्वाध्यक्षसृष्टिस्थितिलयादिविचित्र-काविधाताहै औरदेशकालविशेषोंकाज्ञाता है इससे कर्मियों-कोकर्मानुरूपफलदेताहै सेवाफलवत् क्षणिककर्म से कालांतरभाविफलअयुक्तहै भावसेभावयुक्तनहींहै विनश्यत्कर्मस्वकालमेस्वानुरूपफलकोअर्जनकरनष्टहोताहै सोहीफलकालान्तरमे कर्त्ताभोगताहै सोअच्छानहींहै भोक्ताकेसम्बन्धसेपाहिलेफलअसिद्धहै जिसकालमेआत्मासुखादिभोगताहै उसीकोलोकमेफलकहितेहैं सुखादिआत्मासेअसम्बद्धफललौकिकनहीं जानतेहैं मतहोकर्मकेपीछेफलकाजन्मकर्मकेकार्यअपूर्वसेफलजन्मेगा सो-भीनहीं अपूर्वअचेतनकाठडीमसमचेतनसेअप्रवर्तितकीप्रवृत्तिअयुक्तहै अपूर्वहै इसमेप्रमाणनहींहै चिरभावीफलअपूर्वकेबिनाक्षणिककर्मसेनहींहोगा इससेअपूर्वमानाहै इसअर्थापत्ति प्रमाणसेअपूर्वहै सोनहींहै ईश्वरफलदातासिद्धहै इससेअर्थापत्तिक्षीणहै कर्त्ता जोस्वतन्त्रसुखदुःखदेताहैतोविषमहैजोकर्मानुसारदेताहै तोकर्माधीनहै कारयिता जोकर्मकाहेतुहै तोभीवुही स्व-तन्त्रकर्मकरवानेवालाठहिरा फिरउसीकाफलदाताठहिरा इ-ससेस्वतन्त्रपक्षकादोषनहींगया जो जीवस्वतन्त्रकर्मकर्त्ताउनकाफलवुहदेताहै तोभीपरकर्माधीनसेपराधीनहै फलदेनेमें अनादिकर्मोंकाफलदेताहै जैसा ढकीआगकोउघारकेकामसेमनुष्यलाताहै तैसाहीईश्वरअनादिकर्मफलकादाताहै डांठीकहै तोभीपकड़ागया मिमियातेबकरेकासागला क्युंकि स्वाधीन परा-

धीनदोषनक्छूटनेसे इससेदोनोपचऐसेहैं जैसे छेरीकेगलेकीदो नोचुचीहैं दूधमूतसेरहित ॥

श्रुतत्वाच्च ३९

हमकेवलयुक्तिसेफलहेतुईश्वरकोनहींकल्पतेहैं किन्तु सुन्ने सेईश्वरकोफलहेतुमानते हैं सवाएषमहानजआत्मान्नादोवसु- दानइत्यादि ॥

धर्मंजैमिनिरतएव ४०

जैमिनिधर्मकोफलदातामानताहै अतएव श्रुतिसेयुक्ति से स्वर्गकामोयजेतेत्यादि इससेयागहीस्वर्गकाजनकसुनाहै अन्य- थाविनाअनुष्ठाताकायागहो औरअनुष्ठाताविनाउपदेशव्यर्थहो अन्वक्षणविनाशीकर्मसे फलयुक्तनहींहै यहपक्षछोड़ा है अपूर्व- कोविनाजन्माकेविनाशीकर्मकालांतरमेफलदेनेकोशक्तनहीं है इससेकर्मयाकर्मकीसूक्ष्मउत्तरअवस्थाफलकीपूर्वावस्थाअपूर्वत कहतेहैं इससेफलसिद्धहैनकिईश्वरफलदाताहैएकरसकारणसेव हुरसकार्यासिद्धिसेवैषम्यनैघृंख्यसेअनुष्ठानव्यर्थहोनेसेधर्म फल- दाताहै जैसे हाथकासंस्कारवेष्टनहाथकर्मसे है तैसे कर्मापूर्व- सेफलहै फिरईश्वरकाकुछकामनहीं ॥

पूर्वंतुबादरायणोहेतुव्यपदेशात् ४१

पूर्वोक्तईश्वरकोफलहेतुबादरायणमानताहै केवल कर्मसेयाके वलअपूर्वसेफलहै इसपक्षकावारकतुशब्दहै कर्मापेक्षासेयाअपू र्वापेक्षासेजैसाहै तैसा रहो परन्तुफलसापेक्षईश्वरसेहै यहसि- द्धान्तहै कैसे हेतुव्यपदेशात् धर्माधर्मकाकारयिताईश्वरहेतुक हाहै औरफलकादाताईश्वरहेतुहै ध्यानोपासनादिसेतुष्टहोके राजवत्सेवानुसारपापपुञ्जकोक्षयकर्त्ताऔर अपनाधामादिदेता

है इस्से कर्मकेमिषसेआपहीफलदाताहै इस अधिकरणकाता-
त्पर्यहै किअग्निहोत्रादिहयसेधांतकर्मोंकोछाड़ईश्वरहीध्येय है
आज्ञाकेछाड़नेसेदण्डकेडरसेयथेष्टाचरणकी निवृत्ति समुझ लो
श्रुति एषह्येवसाधुकर्मकारयतितंयमेभ्यो लोकेभ्यउन्निनीषते ए
षउएवासाधुकर्मकारयतितंयमधोनिनीषतइति यहीश्रुतिधर्मा-
धर्मकेफलोंकादाताऔरउनकाकारयिताईश्वरकोहीकहतीहै
इस्से सुजिकोइष्टनहींहैकिधर्माधर्मव्यर्थहैं औरदृष्टसम्पत्तिचन्दन
कण्टकादिसेसुखदुःखहोतेहैं ऐसेचारअधिकरणसेतत्पदार्थबि-
चारहै प्रथममेंब्रह्मनीरूपदूसरेमेंनिषेधकाबिषयब्रह्मनहींतीसरे
मेंअद्वितीयब्रह्म चौथेमेंकर्मफलदाताव्यवहारदशामेंहै शाखाग्र
चन्द्रन्यायसेब्रह्मकाबोधकरायाहै जोकुछचिन्हकहेसो सब ब्रह्म-
मेंउपलक्षणाहैं जैसे कोईकिसीसेकहेकिवुहघरमेराहै जिसपर-
कौवाबैठाहै तोवहकौवाउड़जानेसेघरकीपहिचानकाउपलक्ष-
णथा नकिस्वरूपलक्षणयाविशेषणथा तैसेहीसबब्रह्मकेचिन्हउप
लक्षणसमुझरहो इसपादमेंतत्त्वन्दोपदार्थविवेकसेसिद्धहुयेहैं ॥
इतिश्रीयुक्ताराचन्द्रवर्मणाकृतेब्रह्मसूत्रभाषाभाष्येतृतीया
ध्यायस्यद्वितीयःपादःपूर्णः ॥

गुणोपसंहारतीसरापाद ३

सर्ववेदान्तप्रत्ययाधिकरण ॥ १ ॥

सर्ववेदान्तप्रत्ययञ्चोदनाद्यविशेषात् १

सर्वैर्वेदांतैःप्रतीयन्तइतिसर्ववेदांतप्रत्ययंतेनविहितंइत्यर्थः ॥
कहिचुकेज्ञेयईश्वरकातत्व अवप्रतिवेदांतमेंविज्ञानभेद है
यानहींहै यहविचारताहूं ननुविज्ञानैकरसनिर्द्धारितमें, कैसेबि

ज्ञानभेदाभेदचिन्ताउठीहैनहींबहुबहुरूपकर्मसाब्रह्मभीप्रतिपि पादयिषितकहिसक्तेहोएकरूपसे नकिएकरूपमेअनेकरूपविज्ञा नसम्भवहै नहीं अन्यथा अर्थअन्यथाज्ञान अभ्रांतहै फिरजोएक मे बहुतविज्ञानवेदान्तमेइष्टहै तोएक अभ्रांतहोअन्यभ्रांत हो दूस-से अविश्वास हो वेदांत मे तिस्से प्रतिवेदांत मे ब्रह्मविज्ञान भेदशक्यशङ्काहैनहीं है चोदनाद्यविशेषात् अचोदनारूपब्रह्म विज्ञानकाअभेदनहींहै चोदनादिके अभेदसे ज्ञानका अभेदहै यह किसीका मतहै फिर नवेद्यभेद न धर्म भेद नचोदनाभेद तो कैसे भेदाभेदचिन्ताका अवसर है सुनो सगुणब्रह्मविषय और प्राणादिविषयके विज्ञानभेदाभेदचिन्ता है कर्मवत्उपा सना दृष्टफलार्थ अदृष्टफलार्थ क्रममुक्तिफलार्थ हैं दूससे इनमे चिन्ताहै क्याप्रतिवेदांतमेविज्ञानभेदहै यानहींहै नामरूपधर्म विशेषपुनरुक्तिनिन्दा अ*शक्ति १समाप्ति वचनप्रायश्चितान्यार्थद र्शनाच्छाखांतरेकर्मभेदःस्यादिति यहजैमिनिसूत्रनामादिसे मे दकहिताहैअथैषज्योतिरित्यादिमेनामभेदहैवेदांतांतरमेअन्य२

* सबशाखाकर्मकरनेजाननेकोशक्यनहींहै ॥

१ किसीशाखाककिसीकोर्ममेपूर्तिहै नकिएकरूपहै ॥

नामहैं जैसे तैत्तिरीयकं वाजसनेयक२ कौथुमक शाट्यायन-कआदि औररूपभेदसेकर्मभेदहै जैसे तप्तदूधमेदधिडालेसेदो भागहोतेहैं गाढ़ाआमिचाविश्वेदेवार्थहै द्रववाजीवाजिदेवार्थ है पञ्चाग्निविद्यामेवाजीछह अग्निकहतेछन्दोगपांचकहितेहैं प्रा णसम्वादादिमेरेतकोछाड़वागादिकांदोग्यमे और रेतःसहितवा जियोंनेप्राणविद्याभेदपढ़ाहैकारीरिकेपढ़नेमेतैत्तिरीयकधरती मेभोजनधरकेखातेहैंनकिअन्यकोई अग्निकेपढ़नेमेउपाध्यायार्थ पानीभरतेहैं नकिअन्य अश्वमेधकेपढ़नेमेघोड़ेकोघासकीलख

वानाकिसीकाधर्महै नकिसबकायहांभीआथर्वणिकोंकाधर्मशि रोव्रतहै मूड़परअङ्गारभरकेपात्रधरनाशिरोव्रतहै तिससेप्रति वेदांतमेविज्ञानभेदहै सोनहीं सर्ववेदांतप्रत्ययं विज्ञान तिसरवेदांतमेसोहीसोहीहोनेयोग्यहै कैसे चोदनाद्यविशेषात् आदिश ब्दसेशाखांतराधिकरणकेसिद्धांतसूचकेकहेअभेदहेतुलेना सूत्र एकंवासंयोगरूपचोदनाख्याविशेषादिति जैसे एकधातुके अर्थ- होममेयजतेक्यवत्उपास्तियतेक्यहै ऐसेहीज्येष्ठश्रेष्ठवेदनमेवाजि- छन्दोगोंकीचोदना प्रयोजनसंयोगसमानहै ज्येष्ठश्चश्रेष्ठश्चस्वानां भवतीति जैसे द्रव्यदेवयागकारूपहैं ऐसाहीविज्ञेयरूपविज्ञान- काहै समाख्यायौगिकशब्दप्राणविद्याहै तिससेसर्ववेदांत प्रत्यय विज्ञानहै ऐसेपञ्चाग्निविद्यावैश्वानरविद्याशांडिल्यविद्यादिमे जोड़लो भेदकेहेत्वाभासनामादिप्रथमकांडमेनिरासकियेहैंना नाम्नातंस्यादचोदनाभिधानत्वादित्यादिसे ॥

भेदान्नेतिचेन्नैकस्यामपि २

वाजसनेयीछहऔरछन्दोग्यपांचअग्नियुढ़तेहैं जिसमेजो गुणहै याजिसमेगुणनहींहै वेदोएकविद्यानहींहोसक्ती हैं पञ्च संख्याविरोधसेगुणोपसंहारशक्यनहींहै प्राणसम्बादमेश्रे ष्ठसेअन्य चारप्राणवाक्नेत्रकानमनछन्दोगगातेहैं वाजीपचमापढ़तेहैं रेतोवैप्रजापतिरित्यादि कहीं कुछसंख्याडालीकहींकुछनिकारीइ सभेदसे वेद्यभेदहैदूसे विद्याभेदहैद्रव्यदेवताभेदादिवत् यागका भेदहै यह दोषनहींहै जिससेएकविद्यामेगुणभेदयुक्तहै जो छठी अग्निकालेनायुक्तनहींहैं तोभीद्युआदिपांचअग्निदोनोठौर प्रत्य भिज्ञायमान्होनेसेविद्याभेदयोग्यनहींहै नहींषोडशीकेग्रहणग्र ग्रहणसेअतिरात्रभिन्नहैपञ्चाग्निमेनित्यानुवादहै जोउपासनार्थ वादहै सगुणछन्दोगलेसक्तेहैंपञ्चसंख्यासांपादिकाग्निकेअभिप्रा

यसे हैसोनित्यानुवादहैनकिविधिसमवायिनीइससे दोषनहींहै ऐसे प्रागसम्वादमेश्रधिकगुणरेतकालेनावाजिसे विरुद्धनहींहैछ न्दोगोंकीथोराडारनैनिकारनेसे वेद्यभेद और विद्याभेदशङ्कान हीं हैकिस्मे वेद्यांशकेआवापोद्वापमेबड़ी वेद्यराशिकेअभेदबोधसे तिस्मे एकविद्याहै ॥

स्वाध्यायस्यतथात्वेनहिसमाचारेधि-कारात्सववच्चतन्नियमः ३

शिरोव्रतभेदसे विद्याभेदनहींहै शिरोव्रतादिआथर्वणिकोंको पढ़नेकेधर्महैंनविद्याकेकैसेयहजानातथात्वेनहिजिससेपाठकेध र्मोसेसमाचारेआथर्वणिकवेदव्रतोपदेशग्रन्थमेशिरोव्रतभीवेद व्रत मेव्याख्यातकहितेहैं नैतदचीर्णव्रतोधीतइति अधिकृतवाचीएत-च्छब्दसे औरअध्ययनशब्दसेमुण्डकादिअथर्वउपनिषत् पढ़नेका-धर्महै ननुएतामित्यादि इनसे व्रह्मविद्याकासंयोगसुननेसे सर्व अव्रह्मविद्याएकहै तिससे शिरोव्रतधर्मकासङ्करहो सोनहीं एत च्छब्दप्रकृतव्रह्मविद्यासे ग्रन्थविशेषापेक्षहै तिससे ग्रन्थविशेषसं योगीशिरोव्रतधर्महै सववच्चतन्नियमः तिसशिरोव्रतका मुण्डक केपढ़नेमेनियमहै सव होम जैसे सातसौर्यादिसोओदनतकवे दांतरोंमेपढ़े त्रेताग्निकेअसम्वन्धसे औरआथर्वणोदितएकअग्नि केसम्वन्धसे आथर्वणोंकोनियतहैं तैसे स्वाध्यायकेसम्वन्धसे आ-थर्वणोंकोशिरोव्रतकानियमहै तिससे विद्यैक्यहै एकोग्निरे क-र्षिसंज्ञयाप्रसिद्धः ॥

दर्शयतिच ४

सर्ववेदायत्पदमामनन्तीत्यादि तथैतंह्येववह्वृचामहत्युक्थे-मीमांसतएतमग्नावध्वर्यवएतमहाव्रते छन्दोगाइति चवेदसववे

दान्तोंमेएकविद्यादिखाताहै एकवेद्यकेउपदेशसे तिससे उक्था दिविद्याएकहै ब्रह्मविद्यावत् कौथुमकाठकादिशाखाओंकाना ममेदवैदिकनहींहै किन्तुऋषियोंनेथोरे२वेदमेअभ्यासकरअपने अपनेनामसेशाखाप्रसिद्धकीहैं ॥

गुणोपसंहाराधिकरण ॥ २ ॥

उपसंहारोर्थाभेदाद्विधिशेषवत्समानेच ५

नोस्वशाखाकेगुणोंसे दृष्टिसिद्धिहोजावेतोपरशाखाकेगुणों कालेनानिष्फलहै सोनहींकर्मबहुतसेफलबहुतहोताहै इसयु क्तिसे जैसे स्वशाखाकेगुणउपकारीहैं तैसे परशाखाके भी गु- णोपकारीहैं तिससे गुणोपसंहारकर्त्तव्यहै ॥

अन्यत्रकहेसबविज्ञानोकाऔरविज्ञानगुणों का अन्यत्र स- मानेअर्थात्समानविज्ञानमे उपसंहार: भवति लेनाचाहिये कै से अर्थाभेदात् जोगुणोकाएकत्रअर्थविशिष्टविज्ञानोपकारहैसो हीअन्यत्रऔरउभयत्रहै वुहएकविज्ञानहै तिससेलेना विधिशे- षवत् जैसे विधिशेषअग्निहोत्रादिधर्मोंकाएकअग्निहोत्रादिक- र्मसर्वत्रार्थाभेदसेलियाहै ऐसेयहांभी यदिविज्ञानभेदहो तदा- विज्ञानांतरसेबद्धगुणोंका प्रकृतिविकृतिभावकेनहोनेसेलेनान- हो औरविज्ञानैक्यमेगुणोंकालेनायुक्तहै इसीप्रयोजनसेसूत्रका प्रपञ्चसर्वाभेदादिति यहांसेलेकेहोगा ॥

उपसंहारवाधाधिकरण ॥ ३ ॥

अन्यथात्वंशब्दादितिचेन्नाविशेषात् ६

वाजसनेयकमे तेहदेवाइत्यादि देवासुरयुद्धकेप्रक्रममे देव- सात्विकवृत्तिऔरअसुर राजसतामसवृत्तिप्राण मिथो कहिते थे किउद्गीथउद्गात्रकर्मसेरजतमरूपअसुरोंकोजीतदेवहुयेहैं ऐसेअ सुरप्राणकीनिन्दाकरमुखस्थकाग्रहण किया है अथहेममासन्य-

मित्यादि ऐसीगाथाछांदोग्यमेहै तद्वदेवाउद्गीथमित्यादि मुखस्य केग्रहणमेअथहयएवायंमुख्य:प्राणइत्यादि इनदोनोंमेप्राण प्रशंसासेप्राणविद्याविधिअध्यवसितहै इसमेसंशयहैकिक्याविद्याभेदहैयाविद्यैक्यहैपूर्वन्यायसेविद्यैक्यहैनकिसोयुक्तहै प्रक्रमभेदसेत्वंनउद्गायेति अर्थ वाजसनेयीउद्गीथकर्त्ताप्राणकोकहितेहैं उद्गीथत्वेनतमुद्गीथमित्यादि अर्थ छन्दोगउद्गीथांगओंकोप्राणदृष्टिसेउपासतेहैं सोकर्महै फिरकैसेकर्मकर्त्ताकेभेदसेविद्यैक्य होगी नसोमतकहो अविशेषात् इसविशेषसेविद्यैक्यनिवृत्तिनहीं है अविशेषबहुतसे जैसे देवासुरयुद्ध असुरात्यय उद्गीथकथा वागादिस्तवउनकोनिन्दासेमुख्यप्राणकाग्रहणप्राणवीर्यसेअसुरक्षय अश्मलोष्टनिदर्शनसेऐसेबहुतअर्थउभयत्रअविशिष्टज्ञातहैं जैसे वाजसनेयिकमेप्राणउद्गीथकर्त्ताहै तैसे छांदोग्यमे भी लक्षणासेउद्गीथकर्त्ताहै तिससे विद्यैक्यहै ॥

नवाप्रकरणभेदात्परोवरीयस्त्वादिवत् ७

जोतुमनेविद्यैक्यकहाथा सोन्याय्यनहीं है कैसे प्रकरणात् प्रक्रमकेभेदसे जैसे ओमित्येतदक्षरमुद्गीथमुपासीतेति इसमेउद्गीथांगओंउपास्यकहाहै औररसतमादिगुणकहेहैं यद्दिउद्गीथशब्दसेसकलभक्तिदृष्टहै उसकाकर्त्ताउद्गाताहै तवतोक्रमका रोध औरलक्षणाकाप्रसङ्गहो उपक्रमके अनुरोधसेएकवाक्यमेउपसंहारहो तिस्से उद्गीथांग ओंमेप्राणदृष्टिकहीहै वाजसनेयकमेउद्गीथशब्दसेसकलभक्तिदृष्टहै इसकाकर्त्ताउद्गाताहै प्राणसे कहा इससेप्रस्थानांतरहै जैसे उद्गीथभावउपासनार्थहै तैसे उद्गातृभावहै इससेप्राणउद्गाताहै अभ्यु*दयवाक्यमेपशुकामवाक्यमेत्रेधा

* चन्द्राभ्युदय ॥

तन्दुलविभागसमानकहातोभीउपक्रमभेदसेअभ्युदयवाक्यमे दे-

वताकोअपनयदृष्टहै औरपशुकामवाक्यमेयागविधिदृष्ट है तैसे यहांउपक्रमभेदसेविद्याभेदहै परोवरीयस्त्वादिवत् सएषपरोवरीयानुद्गीथइत्यादि परोवरीयस्त्वगुणयुक्त उद्गीथोपासन भिन्न है नेत्रसूर्यगतहिरण्यश्मश्रुआदिगुणयुक्तउद्गीथोपासनासे एकशाखाकागुणदूसरीमेलेनागुणोपसंहारनहींहै जैसे एकशाखामेगुणोपसंहारहै तैसे शाखान्तरस्थगुणकाउपसंहारहै उपासनामे

संज्ञातश्चेत्तदुक्तमस्तितुतदपि ८

उद्गीथविद्यायहएकसंज्ञाउभयत्रहै इस्से एकविद्यान्याय्य है सोनहींहै उपास्यभेदसे विद्याभेदश्रुत्यक्षरानुगतहै औरसंज्ञैक्यश्रुत्यक्षरोसेबाह्यहै इससे दुर्बलहै लौकिकव्यवहारीउद्गीथमात्रकोउपचारताहै अस्तितुपरोवरीयस्त्वादिउपासनोंकेभेदसेउद्गीथविद्यायहसंज्ञैक्यहै जिनका भेदप्रकटहै जैसे अग्निहोत्रदर्शादिऔरकाठकएकग्रन्थमेपढ़ उनकीकाठकसंज्ञैक्यदेखते हैं तैसे उद्गीथमेहोगीजहांकोईभेदहेतुनहींहै तहांसंज्ञैक्यसेविद्यैक्य हो जैसे सम्वर्गविद्यापञ्चाग्निविद्यासबशाखोंमेएकहैसंज्ञैक्यसे ॥

तुमकोयदियहचोद्यहै किनामकेअभेदसे विद्याकाभीअभेद है जैसा किप्राणविद्यायहसंज्ञाहै तदुक्तं सोहमनेनिराकृतकियाथा नवाप्रकरणभेदात् इससूत्रमे तदपि संज्ञाकोऐक्यभी प्रसिद्धभेदोंमेहैजैसेपरोवरीयस्त्वादिउद्गीथमेऔर अग्निहोत्रदर्शपूर्णमासादिकाठकहैंअस्तितुअस्थैव वेद्यभेदकेअनिवारणसेउद्गीथविद्याभिन्नहीहै ॥

उद्गीथाधिकरण ॥ ४ ॥

व्याप्तेश्चसमञ्जसं ९

ओमित्येतदक्षरमुद्गीथमुपासीतेति अक्षरऔरउद्गीथकोसामानाधिकरण्यमेअध्यासअपवादऐक्यविशेषणजीचारपक्ष हैं इन

मेंसे कौनसायुक्तहै यहविचारहै दोवस्तुकीबुद्धिमेंअनिवर्तितए-
कबुद्धिमेंअन्यबुद्धिअध्यस्यमानहै जिसमें इतरबुद्धि अध्यस्यमान
अनुवर्तमानहै उसमेंसोबुद्धिअध्यस्तेतरबुद्धिमेंयहअध्यासहै जैसे
नाममेंब्रह्मबुद्धिअध्यस्यमानानामेंअनुवर्तमानहै नामबुद्धिनकिब्र-
ह्मबुद्धिसे निवर्तमानहै जैसे प्रतिमादिमें विष्णवादिकीबुद्धिका
अध्यासहै ऐसे ही अक्षरमें उद्गीथबुद्धियाउद्गीथमें अक्षर बुद्धि अ-
ध्यस्यमानहै किसीवस्तुमेंपहिलेघुसीझूठीबुद्धि है उससे पीछे से
निश्चितसच्चीबुद्धिकाजन्मपहिलीबुद्धिकानिवर्तकहैजैसे देहादि
मेंआत्मबुद्धि जैसे दिग्भ्रमदिग्यथार्थबुद्धिसे छुटताहै ऐसे यहां
अक्षरबुद्धिसे उद्गीथबुद्धिऔरउद्गीथबुद्धिसे अक्षरबुद्धिनिवर्त्यमान-
है उद्गीथऔर अक्षरकावास्तवाभेदऐक्यहै जैसे राजाभूपति स
र्ववेदमेंव्यापीओंअक्षरकीप्राप्तिऔद्गात्र विशेषक समर्पणहै जैसे
जोनीलहै सोउत्पलहै उसकोला ऐसायहांहै किजोउद्गीथहैसो
ओंहै उसकीउपास्तिकर ऐसे चारकीप्राप्तिमेंकहाकि व्याप्तेः च
शब्दतुशब्दाभिधेकोहै तीनपक्षकीनिवृत्त्यर्थहै सावद्यहोनेसे नि
रवद्यविशेषणपक्षलेतेहैं अध्यासमेंजोबुद्धिइतरअआरोपितहै सो
लक्षणाहै उसकाफलकल्पाहै सोनहींश्रुतहै आपयिताहवैका
मानामिति यहमतकहोयहफलआप्त्यादिदृष्टिकाहै नकिउद्गीथ
केअध्यासकाफलहै अपवादमेंभीफलनहींहै मिथ्याज्ञाननिवृ-
त्तिफलनहींहै पुमर्थायोगसे नकभीओंसे औंबुद्धिनउद्गीथसे उ
द्गीथबुद्धिहटेगी नयहवाक्यवस्तुपरहै किन्तुउपासनापरहै नकि
ऐक्यपक्षयुक्तहै निःप्रयोजनशब्ददोहोनेसे इष्टार्थकोएकहीदेस-
ताहै नहोअआध्वर्यवमेंअक्षरओंवाच्यमेंउद्गीथप्रसिद्धहै न कि-
सामकोसबदूसरीभक्तिउद्गीथमें ओंप्रसिद्धहै जिससे अनतिरिक्ता
र्थहै। फिरविशेषणपक्षबचाहै व्याप्तेः सर्ववेद साधारणसे सर्व

व्यापीअचरमतहोद्दूसमें उद्गीथअचरकाविशेषणहै कैसे नामोद्गी
थावयवओंगृहीतहै उद्गीथकाअङ्गलचणाहै हैलचणातोभीदूरपा
सकाभेदहै अध्यासमेअर्थान्तरबुद्धिअर्थान्तरमेडालते हैं यह दूर
लचणाहै विशेषणपचमे अङ्गवाक्यसेअङ्गीसमर्पितहै इसमे लच
णाहै विशेषणपचमे अङ्गवाक्यसेअङ्गीसमर्पितहै इससेलचणा
पासहै पुंजमेप्रवृत्तशब्दएकदेशमेदेखेहैं जैसे पटग्रामादिमेइस
व्याप्तहैतुसेओंइसअचरकाउद्गीथविशेषणसमञ्जसनिरवद्यहै ॥

वशिष्टत्वाद्युपसंहाराधिकरण ॥ ५ ॥

सर्वाभेदादन्यत्रेमे १०

वाजिछन्दोगप्राणसम्वादमेश्रेष्ठगुणयुक्तप्राणउपास्य कहिते
हैं औरवागादिवसिष्टत्वादियुक्तकहतेहैं कौषीतकि आदि प्राण
सम्वादमेप्राणकोश्रेष्ठकहितेहैं नकि वसिष्टत्वादिगुणअहंश्रेयसइ
त्यादि इसमेसंशयहैकिइसेवसिष्टत्वादि गुणकहींकहेअन्यत्रजा-
वेंगे यानहीं नजावेंगे कैसे यथोयएवम्विद्वानित्यादि इसमे एवं-
शब्दनेवेद्यवस्तुनिवेदनकीहै सोपासकीनकिशाखांतरकीसी न-
हींकहींकहे वसिष्टादिअन्यत्रपहुंचेंगेकैसेसर्वाभेदात्सर्वत्रएकप्रा
णविज्ञानप्रत्यभिज्ञातहै प्राणसम्वादादिसारूप्यसेविज्ञानकेअभे
दसेकैसेजेगुणकहींकहेकहींनपहुंचेंगे यद्यपि कौषी० तकिकेएवंश
ब्दसेवाजिगुणजातनहींकहेहैंअसन्निधिसे तथापिउसविज्ञानमे
वाजसनेयिकेएवंशब्दसे गुणजातकहाहै इससे नपरशाखाका अ
भिन्नविज्ञानसे वहगुणजातस्वशाखाके गुणसे विशेषनहीहै नश्रु
तहानिअश्रुतकल्पनाहै एकशाखामेश्रुतगुणसर्वत्रश्रुतहैं गुणीके
भेदकेअभावसे नकिमैचस्वदेशमेशौर्यादिसे प्रसिद्धदेशांतरगत उ
सदेशियोंनेशौर्यादियुक्तनहींजानातोक्यावुहशौर्यादिसे हीन न-
हींहै जैसे देशांतरमेप्रकटहोतेरमैचगुणप्रकटहोतेहैंऐसे अभियो

गसे शाखान्तरमेंउपास्यगुणशाखांतरमें उपासासे जावेंगेतिस्से एकप्रधानमेंसम्बद्धधर्मऔरएकत्रकहे सर्वत्रउपसंहर्तव्यहैं बिरोधीमेंभीनि:श्रेयसऔरअभ्युदयकाहेतुजोधर्म होवे तौउसको अवश्यस्वीकारकरेऔरवर्तेयहअधिकरणकाखुलासाहै ॥

आनन्दाद्युपसंहाराधिकरण ॥ ६ ॥

आनन्दादय:प्रधानस्य ११

ब्रह्मस्वरूपप्रतिपादनपरवाक्योंमेंविज्ञानघनादिब्रह्म के-धर्मसुनतेहैंउनमेंसंशयहै कि आनन्दादिब्रह्मधर्मजैतेजहांसुनेते तेतहांजाने यासबसर्वत्र फिर जैसे श्रुतिनेविभागकिया तैसा हीधर्मबोधप्राप्त है इस्से कहा कि आनन्दादय: प्रधानस्य अर्थ ब्रह्मकेधर्मसबसर्वत्रजाननयोग्यहैं किस्से सर्वत्रएकमुख्यविशेष्य अभिन्नब्रह्महै तिस्से सार्वत्रिकब्रह्मधर्महैं पूर्वाधिकरणोदित-मैत्रकेशौर्यादिनिदर्शनसे ॥

प्रियशिरस्त्वाद्यप्राप्तिरुपचयापचयौ-हिभेदे १२

तैत्तिरीयकमेंप्रियादिधर्मपढ़े हैं उसकासर्वत्रसङ्करहो इस काउत्तरहै किप्रियशिरस्त्वाद्य उनकी यहांप्राप्तिनहींहै जिस-कारणसे प्रियमोदप्रमोदआनन्दजेमिथोपेक्षासे औरभोक्तन्तर-कोअपेक्षासे उपचितअपचितरूपशब्दहैं औरभेदमें उपचयापच यहोतेहैं ब्रह्मनिर्भेदहै नप्रियादिब्रह्मधर्महैं कोशधर्म हैं ब्रह्म चिन्तावतारोपायमात्रसेकाल्पितहैं नकिद्रष्टव्यहैंइस्से उनकोअन्य त्राप्राप्तिहै व्यासनेक्तत्वाचिन्तामात्रजेधर्मकहेहैं औरसो न्याय अन्यउपासनोंमेंहैं संयत्वामत्वादिसत्यकामादिमेंहै जैसे दो-नारोएकनृपकोउपासनाकरतीहैं एकछत्रसेदूसरीचामरसे इ-

समेउपास्यएकहै तोभीउपासनभेदसे धर्मव्यवस्थाहै ऐसे यहां भीहै किसगुणमेउपचयापचयहोसक्तेहैं नकिनिर्गुणमें इस से नकहींपढ़े सत्यकामादिसर्वत्रप्राप्तहोसक्तेहैं ॥

इतरेत्वर्थसामान्यात् १३

तुशब्दउपसंहार्यसंग्रहार्थहै इतरे आनन्दादिएकशाखासे दूसरीशाखामेलानेयोग्यहैं यहकैसे हैं अर्थसामान्यात् प्रतिपाद्यब्रह्मएकरूपहोनेसे या तिसर प्रकारकभ्रमसंशयादिकीनिवृत्ति रूपअर्थएकहोनेसे भावार्थ आनन्दोब्रह्मसत्यंज्ञानमनंतंब्रह्मेति इसमें आनन्दकेसत्या दितैतिरीयकब्रह्मविद्यामें पढ़े हैं औरप्रज्ञानंब्रह्मेति इसऐतिरेयकथित परब्रह्मविद्यामें नलेना चाहियें जैसे वामनीआदिगुणउपकोसलविद्यामेपढ़े हैं औरसत्य कामादिदहरविद्यामेपढ़े हैं इनमें जैसे मिथोगुणोंकालेनादेनानहीं है ऐसाहीआनन्दादिमें भीजानो सोनहींविषमदृष्टांतहोनेसे वामनीआदिध्येयहैं तिससे जैसे पढ़े तैसे रहो आनन्दादिप्रतिपत्तिफलार्थहैं तिसमें व्यवस्थापकविधिकेअभावसे प्रतिपत्तिफल सर्वत्रसमानहैं तिसमें आनन्दादिसर्वत्रउपसंहर्तव्यहैं ॥

सर्वान्तरपुरुषाधिकर ॥ ७ ॥

आध्यानायप्रयोजनाभावात् १४

कठवल्लीमेपढ़ाहै किइन्द्रियेभ्यः यहांसे सापरागतिः यहां तक इसमेसंशयहै किजैसवअर्थादिपरर प्रतिपाद्यहैं इनसबका परर प्रतिपादनहै जिससेसुनाहै किइन्द्रियों से अर्थादि आगेर कोपरहैं ननुबहुतअर्थपरकहिनेमेवाक्यभेदनहींहै बहुतवाक्योंसे तिससेइनमेप्रत्येकपरप्रतिपाद्यहै सोनहींहै पुरुषइनसेपरप्रतिपाद्यहै नकिसब कैसे प्रयोजनाभावात् इतरपरप्रतिपन्न मे कुछप्रयोजननहींदिखतेसुनतेहैं औरपुरुषइन्द्रियव्रातसे छुटेमेमो

चसिद्धिप्रयोजन है निचाय्यतंमृत्युमुखात्प्रमुच्यतइत्यादि काष्ठा-शब्दसे और परप्रतिषेधसे पुरुषका आदर दिखाया है पूर्वापरप्रवाहपुरुषप्रतिपत्त्यर्थकहा है आध्यानाय आध्यानपूर्वकसम्यग्दर्शनार्थहै नकिआध्यानस्वप्रधानहै ॥

आत्मशब्दाच्च १५

गूढोत्मा नप्रकाशतइत्यादि इसमेप्रकृतपुरुषआत्माकहाहै इस्से इतरइन्द्रियादिअनात्मा हैं तद्विज्ञानायैवचयच्छेद्वाङ्मनसीप्राज्ञइस्से पुरुषमें अतिशयहै नकिअन्यमें और विष्णुकेपरमपदकोचाहमेइन्द्रियादिकेअनुक्रमसेपरमपदप्राप्त्यर्थयहश्रमहै सोध्वन:पारमित्यादि ॥

आत्माधिकरण ॥ ८ ॥

आत्मगृहीतिरितरवदुत्तरात् १६

ऐतरेयकमेसुना है किआत्मावाइदमेकएवाग्रआसीन्नान्यत्किंचनमिषत्सईचतलोकान्नुसृजाइति सइमान्लोकानसृजतांभोमरीचीर्मरमापइत्यादि अर्थ मिषत्चलत् अम्भ: स्वर्ग: मरीचयो अन्तरिक्षं मर: मर्त्यलोक: आप: पाताल: इसमेसंशयहै किक्याआत्मापरहै यासूत्रात्माहै फिरपरनहींहै वाक्यान्वयदेखनेसे ननुपरमेवाक्यान्वयहै जन्मकेपूर्वआत्मैक्यकेअवधारणसेऔरईक्षणपूर्वसृष्टिवाक्यसे यहनहींकहिताहूं कैसे लोकसृष्टिवाक्यसेजोपरस्रष्टाहैतोआदिमेमहाभूतसृष्टिकहिनीथी कहीसोनलोकसृष्टिआदिमेकहीहै लोकमहाभूतोंकीरचनाहैं अम्भआदि लोकहैं अदोंभ:परेणदिवमित्यादि लोकसृष्टिपराधिष्ठिताअन्य ईश्वरनेकरीहै यहश्रुतिस्मृतिसेलब्ध है आत्मैवेदमग्रआसीत्पुरुषविधइत्यादि सवैशरीरीप्रथमइत्यादि अथातोरेतस:सृष्टि:प्रजापतेरेतोदेवाइत्यादि ऐतरेयि इसप्रकरणमेप्रजापतिकीविचित्र-

सृष्टिकहितेहैं आत्मशब्दउसमे है आत्मैवेदमग्रआसीतपुरुषवि-
धः इसमेऐक्यावधारणभीजन्मकेपूर्वअपनीविकारकोअपेक्षासेहै
प्रजापतिचेतनहै तिससेईक्षणयुक्तहै अपिच ताभ्योगामानयत्
ताभ्योश्वमानयत्ताभ्यःपुरुषमानयत्ताअब्रुवन् प्रजागोश्वसेदृप्त
नहुई तोमनुष्यकोपायकेतृप्तहुईहैंइसव्यवहारसेप्रजापतिस्पष्टहै
तिस्से विशेषवान्कोईयहांआत्माहैसोनहीं परहीआत्मा गृहीत
है इतरवत् जैसेअन्यसृष्टिवाक्यमे आत्माशब्दसे परगृहीतहै त
स्माद्वाएतस्मादात्मन इत्यादि जहां विशेषणांतरहोतहांविशेषव
त्आत्माकाग्रहण हो यहां परानुगुणविशेषणआगेहै उत्तरात्स
ईक्षतइत्यादि तिस्से परन्याय्यहै ॥

दूसरावर्णन

अन्वयादितिचेत्स्यादवधारणात् १७

वाक्यान्वयसेपरात्माकाग्रहणनहींकहाथा सोनिरसनीयहै
अनस्यादवधारणादितिहोयुक्तपरकाग्रहणकैसे अवधारणात् ज
न्मकेपूर्वआत्मैक्यनिश्चितहोनेसे यहनिर्दोषहै लोकसृष्टिवाक्यश्रु
त्यन्तरसेप्रसिद्धमहाभूतसृष्टिकेपीछेयोज्यहै औरजोगोलानादि है
सोभीविवक्षितार्थकेअनुसारलेनाचाहिये सब अथा विवक्षित है
सोनहींकहसक्तेहो कथासचीसानेमेपुमर्थसिद्धिनहींहै तिस्से आ
त्मगृहीतिनिर्बाधहै अन्ययोजना आत्मगृहीतिरितरवदुत्तरात्
वाजसनेयकमेहै कतमआत्मेत्यादि इससेअमृतनिर्धारितहै
छान्दोग्यमेंसआत्मातत्वमसीति इससे तादात्म्यकहाहैइसमेसं
शयहैकिदोनोवाक्यतुल्यार्थहैंयाअतुल्यार्थहैंअतुल्यपाठसे पाठ
कोवैषम्यमेअर्थकोसाम्यनहींहै अर्थपाठतन्त्रहै वाजीमेआत्मश-
ब्दकेउपक्रमसेआत्मतत्वगृहीतहै छान्दोग्यमेउपक्रमकेविपर्यय
सेउपदेशविपर्ययहै उपक्रमाधीनउपसंहार मे तादात्म्य चाहिये

सोनहींहै यह मत कहो आत्मगृहीत सदेवेति इससे छन्दोगो कोयोग्यहै इतरवत् जैसे कतमआत्मेति इसमेवाजियोंको आ- त्मगृहीतिहै तैसे छन्दोगोंकोहै कैसे उत्तरात् तादात्म्योपदेश से उपक्रमकाकहिनायुक्तनहींहै नपाठ विषम से अर्थ विषम- होताहै लोटालायाबालोटायहांअर्थसाम्यमेपाठविषमहैतिससे ऐसेवाक्यमेउक्तिभेदमेंभीप्रतिपाद्यार्थाभेदहै यहसिद्धहै ॥

प्राणविद्याधिकरण ॥ ६ ॥

कार्याख्यानादपूर्वं १८

छन्दोगवाजसनेयिसेप्रकटहै किप्राणनेवागादिसेपूछाकि मेराअन्नक्याहै उन्नेउत्तरदिया किकुत्ताकृमिकीटादि तक का- खायापिया तुम्हाराअन्नहै औरपियाबस्त्रके ठिकाने हैं फिर- छन्दोगभेदपढ़ते हैं तस्माद्वाएतदशिष्यन्तइत्यादि तद्विद्वांसः इ- ससेवाजसनेयिअन्नअनग्नमानतेहैं इनमेखानेकेआगेपीछे जल- पानविधानहै सोआचमनअनग्नताचिन्तनप्राणकाप्रतीतहै सो क्यादोनोविहितहैं याआचमनयाअनग्नताचिन्तनयहविचार है दोनोविध्यर्थहैंअपूर्वसे या आचमनकाविधान है स्पष्टविधिवि भक्तिसे तस्मादेवम्विदशिष्यन्नाचामेदशित्वाचाचामेदिति इसी विधिकास्तावकअनग्नताकीर्तन है सोनहीं आचमन विधेयन- हींहै कैसे कार्याख्यानात् आचमनस्मृतिसे शुध्यर्थप्राप्तथा उसी काश्रुतिनेअन्वाख्यानकराहै नयहश्रुतिउसस्मृतिकामूलहै विष यभेदसे सामान्यविषयकस्मृतिशुध्यर्थपुरुषमात्रमे सम्बद्ध आच- मनकीप्रापिकाहै श्रुतिप्राणविद्याकेप्रकरणमे पढ़ीप्राणविषयक आचमनबिधानकर्तीहै फिरकैसे मानसक्तेहो भिन्नविषयकश्रु- तिस्मृतिकामूलमूलिभावअशितवतोंकोउभयत्रआचमनकाअनु वादकरप्राणकाअनग्नताकरणसङ्कल्पवाक्यसे आचमनीय जल-

में प्राणविद्यासम्बन्धित्वसे अपूर्वकहाहै शुध्यर्थ और परिधानार्थ जलकोवस्त्रकल्पनक्रियांतरप्राणकाहै यहअनवद्यहै यदिदङ्कि श्वाश्वभ्यः यहांसे तत्तिन्नं यहांतक जोकुत्तादिसबप्राणकाअन्नक-हाहै सोसबखाद्यनहींकहिसक्तेहो अशब्दसेऔरअशक्य से सब-प्राणकाअन्नहै ऐसीअन्नदृष्टिकहीहैइसीकेसङ्गसेजलकाआचमन नहींकहाहै किन्तु जलमेंपरिधानदृष्टिकहीहै यहीयुक्तहै नवि-धर्इवैशससम्भवहै आचमनविधिश्रितनहींहै इसमेंकाण्वकाअ-पठनलिङ्गहै एतमेवतदन्नमनग्नङ्कुर्वन्तोमन्यन्तइति माध्यन्दिनों केपाठमेंआचमनकेअनुवादसे एवम्वित् शब्दसेप्रकृतप्राण वस्त्र-विहितहै किसीमतसे पाठवत्तसेमाध्यन्दिनसे आचमन विधि-औरकाण्वमें ध्यानविधिहै सोसाधुनहींहैआपोवासः यहसर्वत्र एकरूपहोनेसे तिस्से वस्त्रविज्ञान विधान है न कि आचमन यह युक्तहै यहश्रुतिवर्णाश्रमकेप्रकरणमेंनपढ़नेसेभिन्नविषयकहै फि रइसस्मृतिकामूलअन्यश्रुतिअनुमेय है तिस्से अनग्नबुद्धिही प्रा-णोपासककेलियेविधेयहै स्मृतिप्राप्ताचमनसे ॥

शांडिल्यविद्याधिकरण ॥ १० ॥

समानएवञ्चाभेदात् १९

समाने एकहीवाजसनेयिशाखामें काण्वकेअग्निरहस्यब्रा-ह्मणमें शांडिल्यनामांकितविद्याविज्ञातहै उसकेबीच पढ़ा है जैसा सआत्मानमुपासीतमनोमयंप्राणशरीरमित्यादि औरउसी शाखाकेबृहदारण्यमें फिरपढ़ा है जैसे मनोमयंपुरुषोभाःसत्य इत्यादि इममें संशयहै कि क्याअग्निरहस्यबृहदारण्यकी एक-विद्याहै औरगुणोपसंहारहै याद्वोविद्याहैं और गुणानुपसंहा रहै विद्याभेदऔरगुणव्यवस्थाप्राप्तहै कैसे पुनरुक्तिसे एकशा खामें अध्येतावेदिताकेभेदाभावसे अशक्यपरिहारमेंपुनरुक्ति से

दूरदेशस्थएकविद्याहै एकपाठविद्याविधानार्थहै अन्यगुणवि-
धानार्थहै यहविभागसम्भवनहींहै न्यूनाधिकगुणअन्यत्र२पढ़े
होतेनकिसमानऔरपढ़े तोदोनोंमेसमान हैं मनोमयादि ति-
ससे अन्योन्यगुणोपसंहारनहींहै सोमतकहो जैसे भिन्नशाखा
मे विद्यैक्यऔरगुणोपसंहारहै ऐसे एकशाखामेयोग्यहै उपा-
स्यकेअभेदसे अभिन्नमनोमयादिगुणोब्रह्मदोनोंमे है विद्या का
उपास्यरूपहै रूपाभेदमे विद्याभेदशक्यनहींहै नकिविद्याके अ
भेदमे गुणव्यवस्थाहै अर्थविभागसेपुनरुक्तिनहींहै एकपाठ वि-
द्याविधानार्थहै अन्यगुणविधानार्थहै इससेसवयुक्तहै समान-
गुणपढ़नेसे दूरदेशमे शांडिल्यविद्या।कोप्रत्यभिज्ञाकरउसमेईशा
नादिकहेहैं अन्यथाकैसे उसमे गुणविधिहै याअप्राप्तांशकाउप
देशऔरप्राप्तांशका अनुवादसे प्रत्यभिज्ञाकीउपिचानहींकहिसक्ते
हो तिससे समानशाखामे विद्यैक्यऔरगुणोपसंहारयुक्तहै ॥

नामव्यवस्थाधिकरण ॥ ११ ॥

सम्बन्धादेवमन्यत्रापि २०

बृहदारन्यकमे सूर्यमण्डलमे औरदहिनेनेत्रमे जो पुरुष है
उस।सत्यब्रह्मका अधिदैवतअध्यात्मस्थानकह फिरव्याहृतिशरी-
रसम्पादनकरदोउपनिषत्रहस्यदेवताकेनामकहेहैं तस्योपनि-
षदहरित्यधिदैवतन्तस्योपनिषदहमित्यध्यात्मं इसमे संशयहै कि
क्यादोनोउपनिषत्अविभागसेदोनोठौरमे अनुसन्धानार्ह हैं या
विभागसे एकअधिदैवएकाध्यात्महै जैसे अविभागसेपढ़ीशाडि
ल्यविद्यामेगुणलेनाकहाथा ऐसाअन्यत्रभीयोग्यहै एकविद्या के
सम्बन्धसे सत्यविद्याएकहै अधिदैव अध्यात्मपढ़ीहै उपक्रमकेअ-
भेदसे औरव्यतिषक्तपाठसे जोवापकेसङ्गवर्त्तावकहाहै सोग्रामव
नगतमेतुल्यहै तिससेदोनोउपनिषदोंकोदोनोठौरप्राप्तिहै ॥

नवाविशेषात् २१

इसप्राप्तिकानिरासहै नवा दोनोकीदोनोठौरप्राप्तिनहीं है कैसे विशेषात् उपासनस्थानभेदसे सूर्यमेआधिदैविकऔरनेत्रमेआ- ध्यात्मिकपुरुषकेनामकहेहैं तस्येति यहसर्वनामपासवाचीहैति ससेस्थानभेदसेउपनिषद्भेदकहाहैइसे दोनोकीदोनोठौरप्राप्ति नहींहै एकब्रह्मके स्थानद्वयअवस्थाभेदसेउपनिषद्भेदकहाहै उ सीअवस्थाकासोउपनिषद्हैवापकास्वरूपएकहीहै तोभीजोबैठे परवर्त्ताहै सोखड़े परनहींहै ग्राममे वनमे वापएकहीहै इससे स्वरूपानुबद्धधर्मकाग्रामवनमेविशेषनहींहै दोनों ठौरतुल्यहैं इ समें अदृष्टांतहैतिसे दोनोउपनिषदोंकीव्यवस्थाहै ॥

दर्शयतिच २२

श्रुतिआदित्यपुरुषकारूपआदिअक्षिपुरुषमेदिखातो है श्रु- ति तस्यैतस्यतदेवरूपंयदमुष्यरूपमिति इसअतिदेशमेस्थलभेद- सेधर्मभेदहैचनेराजादिकास्थलभेदसेधर्मभेदप्रसिद्धकहाहै तिस सेदोनोउपनिषद्व्यवस्थितहैं ॥

संभृत्यधिकरण ॥ १२ ॥

संभृतिद्युव्याप्त्यपिचातः २३

ब्रह्मज्येष्ठावीर्यासंभृतानिइत्यादि राणायनियोंकेखिलमेवीर्य संभृतिद्युनिवेशआदिब्रह्मकीविभूतिपढ़ीहैं विधिनिषेधशून्यवा क्यमेउनकेउपनिषदमेशांडिल्यविद्यादिब्रह्मविद्यापढ़ी हैं उनब्र ह्मविद्याओंमेवेब्रह्मविभूतिउपसंहर्तव्यहैं यानहींहैं इस विचार णामे ब्रह्मसम्बन्धसे उपसंहारकीप्राप्तिमेपढ़ताहै कि संभृतिद्यु, व्याप्तिआदिविभूतिशांडिल्यविद्या मे उपसंहर्तव्य नहीं है अतः स्थानविशेषयोगसे शांडिल्यविद्यामे ब्रह्मकाहृदयस्थानकहा है

एषमश्रात्मान्तर्हृदय इति उपकोसलविद्यामेंनेचस्थान कहा है इनमें श्राध्यात्मिकस्थानप्रकटहै श्रौरसंभृतिद्य,व्याप्तिश्रादिश्रा-धिदैविकविभूतिहैं फिरउनकोइनसेंकैसेप्राप्ति है ज्यायान्दिवेइ त्यादि इनसेश्राधिदैविकविभूतिश्रुतहै षोडशकलादि ब्रह्म वि-द्यास्थानविशेषहीनहै सचहै तोभीभेदहै संभृतिश्रादिकेश्रनु पसंहारकाहेतुहै संभृविश्रादिशांडिल्यविद्याकेगुणमिथो भिन्न-रूपहैं तिससे देशांतरवर्तीविद्यामेपहुंचनयोग्यनहींहैं ब्रह्म सम्ब न्धविद्याभेदमें युक्तहै एकब्रह्मविभूतिभेदोंसेबहुधाउपास्यहै ति-ससे वीर्यसंभृतिश्रादिकाशांडिल्यविद्यादिमें उपसंहारनहींहै ॥

पुरुषविद्याभेदाधिकरण ॥ १३ ॥

पुरुषविद्यायामिवचेतरेषामनाम्ना-नात् २४

तांडिपैंगिदोनोंकेरहस्यब्राह्मणमें पुरुषविद्याहै पुरुषोवावयज्ञइ त्यादि२४वर्षायुःप्रातःसवन४४वर्षायुःमध्यन्दिनसवन ४८वर्षायु तीसरासवनहै ऐसीसवयज्ञकल्पनाहै तैत्तिरीयकपुरुषयज्ञकल्प तेहैं कितस्यैवम्विदुषोयज्ञस्यात्मायजमानःश्रद्धापत्नीयहांसेमन्युः पशुःमनोब्रह्मेति यहांतक इसमें संशयहै किजोपुरुषयज्ञकेधर्म श्रन्यत्रकहेथे वेतैत्तिरीयकपुरुषयज्ञमेलेनायानहींलेनायज्ञ का भेदनहींहै इससेलेना पाया है सोनहीं नलेना कैसे पुरुषवि-द्यायामिवेति जैसें तांड्पैंगिशाखियोंकेपुरुषविद्यामे पढ़ा है ऐसातैत्तिरीयकोंकेनहींपढ़ाहै उनकेयज्ञसम्पदाभिन्न है जैसेप त्नीयजमानवेदवेदिवर्हियूपाज्यपशुश्रादिहैं सवनभी तांडिपैंगि-सेश्रन्यहै जोसायम्प्रातर्मध्यन्दिनहै सोसवनतीनहैं जोमरणा-वभृथश्रादिसाम्यश्रर्थात्खरोष्ट्रवत्है सोश्रल्पीयहै भूरिभेद से-

छिपीहै इससे दोनोंएकहैं यहप्रत्यभिज्ञानहींहोसक्तीहै तैत्तिरीयकमें पुरुषयज्ञ नहीं सुनाहै किन्तु विदुषोयज्ञस्येति विदुषः औरयज्ञस्य जिदोषष्ठीसमानाधिकरणनहींहैं विद्वान् जो यज्ञ है एककायज्ञयजमानकेविरोधसेआत्मवेदोकाजोयज्ञप्रसिद्धहै उसकोवैयधिकरण्ययुक्तहै हैपुरुषकोमुख्ययज्ञसम्बन्धजोउचितहीनकिभाक्त तस्यैवमिति यहश्रुतिसिद्धवत् अनुवादिनी है पुरुषकोयज्ञआत्मादिकोयजमानादिमानेसेवाक्यभेदहोगा फिर आभिमानिकयज्ञकेसंन्याससेआत्मविद्यापहिलेकहीहै पीछे तस्यैवमिति यहवेदपूर्वशेषहै नकिस्वतन्त्रहै तांडिपैंगिके११६षोडशाधिकशतवर्षजीवनफलहै तिस्से शाखांतरमें पढ़ीपुरुषविद्याकेधर्म आशीमैंचादिकोप्राप्तितैत्तिरीयकमें नहींहै ॥

वेधाद्यधिकरण ॥ १४ ॥

वेधाद्यर्थभेदात् २५

आथर्वणिकोंकेउपनिषद्केआदिमें मन्त्र समाम्नाय है सर्वम्प्रविध्यहृदयम्प्रविध्यधमनीःप्रवृज्यशिरोभिवृज्यत्रिधाविपृक्तइत्यादि ताण्डियोंके देवसवितःप्रसुवयज्ञमित्यादि शाट्यायनियों के श्वेताश्वोहरितनीलोसीत्यादि कठोंके औरतैत्तिरीयकोंकेशन्नोमित्रःशंवरुणइत्यादि वाजसनेयिकेउपनिषदारम्भमें प्रवर्ग्य ब्राह्मणमें पढ़ाहै किदेवाहवैसत्रंनिषेदुरित्यादि कौषीतकियोंके अग्निष्टोमब्राह्मणमें है कि ब्रह्मवाअग्निष्टोमोब्रह्मैवतदह ब्रह्मणैवतेब्रह्मोपयन्तितेमृतत्वमाप्नुवन्तियएतदहरुपयन्तीति इनमें मीमांसाहै किजैसेप्रविध्यादिमन्त्रऔरप्रवर्ग्यादिकर्मविद्यामेलेनायानहींलेना लेनाजानपड़ताहै विद्यामुख्यउपनिषदों के पास मेपाठसेयद्यपिइनकाविधानविद्यार्थलब्धनहींहै तथापिअनुमितहैपासकेपाठसे मंत्रोंकीसामर्थ्यविद्यामें युक्तिसेहै जैसाकिदया

हृदिस्थानउपासनार्थंप्रायकहेहैं इससेहृदयवेधनादिमन्त्रउपास
नाङ्गहैं उपासनामेमन्त्रविनियोगदेखाहै भूःप्रपद्येऽमूनामुनेत्या
दिअर्थंपुत्रकौदीर्घायुष्यार्थंछांदोग्यमे त्रिलोकीकोशकीउपासना
मे पिताकीप्रार्थनामन्त्रहै पुत्रकेसाथमैंइसलोकमे पहुंचाहूंमेरा-
पुत्रसेवियोगनहो तैसे प्रवर्ग्यंकर्मअन्यत्रलगेहैं तोभीविद्यामेयो
गहै जैसे वाजपेयमेबृहस्पतिसवकायोगहै यहशङ्करकादृष्टांत अ
योग्यहै भट्टगुरुतन्त्रदोमे इस्को सर्वसम्मतदृष्टांतहै किवादिरव
त् अर्थं खैरकायूपक्रतुमे है औरवीर्यादिफलार्थंभी है सो नहीं
उक्तमन्त्रोंकाविद्यामे कामनहींहै कैसे वेधाद्यर्थभेदात् हृदयछे
दनकाटनादिजेअर्थहैं उनकाऔपनिषदीविद्याकेसाथ सामर्थ्य-
नहींहै हृदयप्रवेधादिअर्थआभिचारिकहैं उनकाअभिचारकर्म
मेसम्बन्धयुक्तहै और देवेतिइसमन्त्रकायज्ञप्रसवलिङ्गसेयज्ञ क-
र्ममेसम्बन्धहै किसीकालिङ्गसेकिसीकावाक्यसेकिसीकाप्रमाणा
न्तरसेअर्थान्तरमे विनियुक्तरहस्यमे पढ़ोंकासन्निधिमात्रसेविद्या
शेषकीसिद्धिनहींहै दुर्बलहै सन्निधिश्रुत्यादिसे यह पूर्व मीमांसा
मेकहाहै श्रुतिलिङ्गवाक्यप्रकरणस्थानसमाख्यानांसमवायेपार-
दौर्बल्यमर्थविप्रकर्षादिति प्रवर्ग्यादिकीविद्याकेसाथ ऐकार्थ्यं न-
हींहै वाजपेयमेबृहस्पतिसबकावाक्यसेविनियोगहै वाजपेयेने-
ष्ट्वाबृहस्पतिसवेनयजेतेतिवलवत्प्रमाणसे विनियुक्तप्रवर्ग्यादिफि
रदुर्बलमान अन्यत्रनहींजोड़सक्ताहै तिस्से ऐसेमंत्रऔरकर्मसन्नि
धिपाठमात्रसेविद्याकेशेषशङ्काहंनहींहैं उपनिषदोंकेपासवेधा-
दिकापाठअरण्यानुवचनादिधर्मसामान्यसेहै यहसन्तोषरीतिहै

उपायनोपसंहाराधिकरण ॥ १५ ॥

हानौतूपायनशब्दशेषत्वात्कुशाछंदः स्तुत्युपगानवत्तदुक्तम् २६

अश्वइवरोमाणीति यहताण्डीपढ़तेहैं तथाविद्वान्पुण्यपापेविधूयेतियहआथर्वणिकपढ़तेहैं तस्यपुत्रादायमुपयन्तीति यहशाट्यायनपढ़तेहैं तत्सुकृतदुष्कृतेविधुनतेइतियहकौषीतकि पढ़तेहैं इनमें कहींसुकृतदुष्कृतकोहानसुनोहै कहींवेबांटसे प्रियअप्रियकोमिलतेहैं कहींदोनोकीहानऔरउपायनहै जहांहानोपायनदोनोसुनेहैं तहांकुछनहींकहिनाहै जहांउपायन सुनाहै नकिहानतहांअर्थसेहानकासन्निपातहै अन्यअपने सुकृत दुष्कृतअवश्यभोक्ताहै उनकीहानिकाजहांहानसुनीनकिउपायनवहांभीउपायनकासन्निपातहै यानहींहै इसविचिकित्सामेंन सुननेसेसन्निपातनहींहै शाखांतरश्रवणका विद्यान्तर विषय से औरअपनेकरेसुकृतदुष्कृतकोहानऔरपरायेकरेसुकृत दुष्कृतकाउपायनइनदोकाअवश्यहोनेमेंकैसेहानसेउपायनका अपेक्षाहो तिस्से हानमें असन्निपातहै उपायनकाइसप्राप्तिमें पढ़ा है किहानौत्विति केवलहानमेंउपायनकासन्निपातयोग्य है कौषीतकिरहस्यमें हानशब्दकाशेषउपायनशब्दसुनातहै हान उपायअनुष्ठेयनहींकहेहैं वेविद्यास्तावकहैं ऐसीमहाभागाविद्या है किजिसकीशक्तिसेविद्वान्केसुकृतदुष्कृतछुटकेमिलशत्रुकोपहुंचतेहैं हानकेपीछेहोनाउपायनकाकहींसुनमाअन्यवहानसुननेमें उपायनकीअनुवृत्तिमानतेहैं स्तुतिलाभार्थं अर्थवादका अर्थवादसेसम्बन्धप्रसिद्धहै एकविंशोवाइतोसावादित्यइति इससेजब तकदूसराअर्थवादनहींमिलेगा तबतक एकविंश सूर्य नहीं समुझे जावेंगे द्वादशमासाःपञ्चर्तवस्त्रय इमेलोकाअसावादित्यएकविंश इति हेमन्तशिशिरएकमानेसेपांचहैं बह्वृचब्राह्मणमेंयज्ञकोपुरुषमानाहै उसमेंत्रिष्टुभछन्दकोइन्द्रियमानाहै यजुर्ब्राह्मणसे इससेतथात्रिष्टुभोभवतःसे न्द्रियत्वायेत्यादिवादोंमेंइन्द्रियम्वैत्रिष्टु

प्रकृत्यादिअर्थवाद अपेक्षितहैंअमूर्तपुण्यपापअन्यकी अन्यमेनहीं जासक्तेहैंइससेउपायनवादस्तावकहैवचनभी फलपहुंचानेवाला नहींहै जैसापुत्रकेकरेश्राद्धसेपिताकोफलहै तैसा यहां नहीं है जिसकेफलार्थजोकर्मकियाथा उसकोउसकर्मकाफलहोता है इससेपिताकीतृप्त्यर्थकर्मसेव्यधिकरणफलयुक्तहै विद्वान्को कर्मकालमें अनुद्दिष्टव्यधिकरणफलकायोगनहींहै विद्वान्केमरनेमेकर्मकेअभावसेजबतकजीतारहा तबतकविद्वत्सेवकयाद्वेषीकोफलहो इसमेबहुतमतघुसो विद्वत्सेवाद्वेषसेविद्वद्वर्तीपापपुण्यकेतुल्यअन्यपुण्यपापसेवकशत्रुमेजन्मतेहैं जातकाफलसेस्वीकारउपायनहै यहपरिहारसुलभहै इससेअनाग्रहहै हान मे उपायनकीअनुवृत्तिसूचकहै तिससेगुणोपसंहारकीविवक्षामे उपायनार्थकीहानमेअनुवृत्तिकहो तिससेस्तवकाउपसंहारदर्शनार्थसूत्रहै उपमोपादानहैकि कुशाछन्दस्तुत्युपगानवत्एकशाखाकाविशेषदूसरीमेस्वीकार्यहै इसमेदृष्टांतदेखो जैसे भाल्लवियोंकेकुशवानस्पत्यहैं शाट्यायनियोंकेऔदुम्बरकुशहैं जैसे कहींदेवअसुरछन्दोंकेपूर्वापरकेअविशेषमेदेवछन्दपूर्वहै यहपैंगीकेकहनेसेजानाहैजैसेषोडशिस्तोत्रकवपढ़े इसछन्दोगोंकोविशेषइच्छामेसूर्योदयआर्चश्रुतिसेनिश्चितहैजैसेऋत्विज्गावेइससमानकाविशेष भाल्लविकहितेहैं किअध्वर्युनगावे जैसे कुशादिमेश्रुत्यन्तरसे विशेषकाअन्वयहै तैसे हानमेउपायनकाअन्वयहै यहअर्थहै श्रुतिमेअन्यश्रुतिकाविशेषलेनानकिविकल्पमाननाउचितहैइसमें मीमांसासम्मतहै अपितुवाक्यशेषत्वादितरपर्युदासःस्यात्प्रतिषेधेविकल्पःस्यादिति जैसे ज्योतिष्टोममें दीक्षितोनजुहोतीति और यावज्जीवमग्निहोत्रंजुहुयादिति द्वादशलक्षणीपूर्व मीमांसा से मिश्र नेपर्युदासाधिकरणकासिद्धांतसूत्रपढ़ाहै अपितुवाक्यशेषः

स्यादन्याय्यत्वाद्विकल्पस्यविधीनामेकदेशः स्यादिति श्रुति एष वैसप्तदशप्रजापतिर्यज्ञमन्वायत इति ननु याजेषुयजामहङ्करोतीति इसविधिनिषेधकेप्रवेशसेविकल्पप्राप्तहोनेमें जैमिनिनेकहाकि अपित्वित्याादितुविकल्पवारकहै अन्याय्यसेविकल्पमेंआठदोषहोनेसे इससेविधिकाएकदेशहो वहयहहैकिअनुयाजवर्जितमेंयजामहयहकर्तव्य है इसकानामपर्युदासहै फिरइसपर्युदासमेंनानुयाजेषुयजामहङ्करोतीति यहवाक्यशेषभी अनुकूल होवे फिरजैसे इसमें विकल्पजैमिनिनेनहींमानाहै तैसेहीउपायनमें भीव्यासविकल्पकोनहींमानताहै इतिसौत्रोर्थः ॥

वर्णकांतर अथवाविधूननश्रुतिमेंसूत्रसेयहचिन्तयितव्यहैकि क्याविधूननवाक्यनेपापपुण्यकीहानिकहीहै याअर्थान्तरकहाहै फिरविधूननेहाननहींकहीहै धूञ्कम्पने इसस्मृतिसेधूञ्का- अर्थकांपनाहै दोधूयन्तेध्वजाग्राणीति यहांवायुसेहिलतेधजामें धूननदेखाहै तिससेचालनविधूननकहाहै औरपुण्यपापकाचालनकुछकालफलनदेनाहै यहप्राप्तनिराश्यहै यहविधूननशब्द- हानमेंहै उपायनशब्दशेषसेपरायेपापपुण्यकेकीर्तनसेहान विधूननहै कहीं विधूननकेपाससुनाउपायनकुशाछन्दस्तुत्युपगानवत् विधूननश्रुतिसेसर्वत्रअपेक्षमाणसार्वत्रिकनिर्णयकाकारणहै ध्वजावत्उनकाचालनमुख्यनहीं है अद्रव्यसे अश्वइवेतिइसब्राह्मणवाक्यसेऔरधातुओंकेअनेकार्थसेघोड़ेकेसे जीर्णरोमोंकासापापपुण्यकात्यागहै सर्वत्रविधूननसेशब्दलक्षकहैं नकिमुख्यार्थक हैं विधूननहानऔरहानमेंउपायनोपसंहारसिद्धहै ॥

सांपरायाधिकरण ॥ १६ ॥

सांपराये तर्तव्याभावात्तथान्ये २७

पर्यंकविद्यामेंकौषीतकिपढ़तेहैंकि देवयानमार्गसेपर्यंकस्थ

ब्रह्मप्रस्थितका अर्द्धमार्गेव्यध्वमेपुण्यपापकात्यागहै मृतदेवमार्ग
सेअग्निलोकमेजाताहै सोविरजानदीकोमनसेतरताहै औरपु-
ण्य पाप को छाड़ताहै सआगतिविरजांनदींतांमनसैवात्येती-
त्यादि सोक्याअर्द्धमार्गमेवेकुटतेहैं यादेहसेनिकरनेसेयह विचा
रणाहै जैसा श्रुतिनेकहावैसाप्रमाणहै इसप्रसक्तिमेपढ़ाकि सां
परायइति गमनमे देहसेअपसर्पणमरणयहअर्थहै विद्याशक्तिसे
उनकोहानप्रतिज्ञातहै मरणमे कैसे तर्तव्याभावादिति विद्या
सेब्रह्मप्रेप्सुमरेकोवीचमे उनसेकुछप्राप्तव्यनहींहै मृतकेकुछ का
लकर्मकेसत्वमेफलकेअभावसेदेवमार्गमे प्रवेशनहोनेसे आदिमे
क्षययुक्तहै फिरवेकुछक्षणनहींक्षीणक्युंकल्पतेहो मध्यमार्गमे वि
द्यानहींहोतीहै इससेजबविद्याफलाभिमुखहै तबहीउनकाक्षय
है विद्यासेमरणकेपहिलेउनकाक्षययथा सोनदीउतरेपीछेपढ़ाहै
ऐसेअन्यशाखीतांडीशाट्यायनोमरेसेप्राग्उनकोहानपढ़तेहैं अ
श्वइवेत्यादि तस्यपुत्राइत्यादि विरजाब्रह्मलोककेपासहै जीव-
उसकेपारपुण्यपापसेछुटताहै एक मत हैं ॥

छन्दतस्तूभयाविरोधात् २८

यदिमृतककेअर्द्ध मार्गमे उनकाक्षयमानोतदामृतदेहमे य-
मनियमादिउनकेक्षयकाहेतुपुरुषप्रयत्नकादेहादिकेअभावसे इ-
च्छासेअनुष्ठाननहींहोगा अनुष्ठानासिद्धिसेउनकाक्षय असिद्ध है
साधकदशामेइच्छासेशमादिसेवायुक्तहै उससेउनकोहानयुक्तहै
मेरेमतमेतांडिशाट्यायनिश्रुतिसम्मतहैं औरशमादिकानिमित्त
नैमित्तिकभावयुक्तहै विद्याकाफलकर्महानहै औरहानमे उपा-
यनोपसंहारविद्यास्तावकसिद्धहै ॥

ज्ञान्युपासकमार्गाधिकरण ॥ १७ ॥

गतेरर्थवत्वमुभयथान्यथाहिविरोधः २९

सगुणमेमार्गमुनाहै नकिनिर्गुणमेइससेसंशयहै किहानमे अविशेषसेदेवयानकासन्निपातहै याविभागसेकहीँहै कहीँ नहीँ है सन्निपात जैसे हानमे अविशेषसेउपायनकीअनुवृत्ति वशी है ऐसाहीदेवयानकीअनुवृत्तिहोसोनहीँ गतेः देवयानमार्गकाअ- र्थवत्वमुभयथा विभागसेयोग्यहै कहीँअर्थवतीगतिहै कहीँनहीँ है नकिअविशेषसेअर्थवतीहै अन्यथाहिविरोधः अविशेषसेगति माने मे बिरोध हो पुण्यपापे विधूयनिरञ्जनः परसंसाम्यमुपै तीति इसश्रुतिसेदेशान्तरप्रापणीगतिश्रुतिविरुद्ध है भला कैसे- निरञ्जनगन्तादेशांतरमेजासक्ताहै औरगन्तव्यपरमब्रह्मदेशांतर कीप्राप्तिकेआधीननहीँहै निरञ्जनदेशादिसेव्यवहितनहीँहै फि रनिर्गुणमे गतिव्यर्थहै ॥

उपपन्नस्तल्लक्षणार्थोपलब्धेर्लोकवत् ३०

उपपन्नः गतिकहीँसार्थकहीँनिरर्थयहयुक्तहै तल्लक्षणार्थोप लब्धेः गतिकाअर्थसगुणपर्यंकविद्यादिमेउपलब्धहै सगुणवेदोप र्यङ्कपरलेटेगापर्यङ्कस्थब्रह्मकेसाथबातचीतकरेगाद्दूतरादि दिव्य गन्धसूंघेगा अन्यजोचाहेगा सोसबपावेगा जोदूरदेशमेप्राप्तहैं इ ससेद्दूसमेगतिसार्थहै सम्यग्दर्शीकोगतिसेकुछप्राप्तव्यनहीँहैआ त्मैकात्म्यदर्शीआत्मकामयहांहीजरेक्लेशबीजसाआरब्धभोगकर्मा शयकेक्षपणकेबिनाकुछअपेक्षितनहीँहै रखताहै इससेयहांग तिव्यर्थहै लोकवत् जैसे लोकमेगाउंमेजानेकेअर्थ देशांतरप्राप णमार्गअपेक्षितहै नकिनैरोग्यप्राप्तिमेऐसाहीनिर्गुणमेहै साग- तिःलक्षणङ्कारणंयस्यार्थस्यसतल्लक्षणार्थःइतिसमासः ॥

पञ्चाग्निविद्याधिकरण ॥ १८ ॥

अनियमःसर्वासामविरोधःशब्दानुमा- नाभ्यां ३१

सगुणेश्वरविद्यामेगतिसार्थश्रौरनिर्गुणेश्वरविद्यामेगतिव्य-र्थयहकहाथा सगुणमेभीकिसी२मेगतिसुनीहै जैसे पर्यंकविद्या उपकोसलविद्यापञ्चाग्निविद्यादहरविद्या नकिश्रन्यविद्यामे जैसे मधुविद्याशांडिल्यविद्याषोडशकलविद्य।वैश्वानरविद्या इसमेसंशयहै किजिनमेगतिसुनीहै उनमेनियमसेरहेगी याश्रनियमसेसबविद्याकेसाथसम्बद्धहोगी प्रकरणनियामकहै तिससेजहांसुनीगतिहै तहांरहो यदिविद्यान्तरमेविनासुनीगतिजावे तदाश्रुत्यादिश्रप्रमाणहो सबसर्वार्थहोनेसेश्रर्चिरादिकाएकगतिउपकोसलविद्यापञ्चाग्निविद्यामेतुल्यवत्पढ़ीहै होसर्वार्थमेपुनर्बाक्यव्यर्थहो तिससेनियम है इससेकहाकिश्रनियमइति सर्वासांसबब्रह्मलोकप्राप्तिफलकसगुणविद्याकाश्रविशेषसेदेवयाम गति है श्रविरोधःप्रकरणबिरोधनहींहैशब्दानुमानाभ्यांपञ्चाग्नि वेदीश्रौरश्ररण्यमेश्रद्धातपोविदीकोसममार्गकहा हैश्रद्धातपविद्यातौ नमुख्यहैं श्रथयएतौपन्थानौनविदुस्तेकी टापतङ्गायदिदन्दंदशूकंइति विद्याकर्ममार्गसेभ्रष्टोंकोकष्टश्रधोगतिहोतीहै मार्गद्वीभ्रष्टोंकादेवयानपितृयाणमेश्रन्तर्भावहै श्रनुचिन्तनार्थदोवारपाठदेवयानकाउपकोसलपञ्चाग्निविद्यामेहै तिससेश्रनियमहै स्मृति शुक्लकृष्णेगतीइत्यादि प्रतीककोछोड़श्रन्यसबउपासनोंमेश्रर्चिरादिकीप्राप्तिहै ॥

श्रधिकारिपुमधिकरण ॥ १९ ॥

यावदधिकारमवस्थितिराधिकारिकाणां ३२

ज्ञानीकोमरेपीछेश्रन्यदेहहोतीयानहींहोतीहै यहचिन्तना है विद्यासाधनसंपत्तिमेकैवल्यनिवृत्तिहै यानहींहै यहचिन्तायुक्तनहींहै जैसे पाकसाधनसंपत्तिमेरोटीहोगी यहचिन्ताहै न

किभुंजानहुयाहै यानहींहै यहचिन्ताहै फिरकिसीब्रह्मवेदीका- इतिहासपुराणसेदेहांतरमेंजन्मसुननेसेचिन्ताहै जैसे अपांतर तमानामवेदकाप्रवर्तकपुराणर्षि विष्णुकी आज्ञासे कलिद्वापर कीसन्धिमेंकृष्णद्वैपायनहुआथा श्रुतिमन्त्रअर्थवादोंमेंवसिष्टादि कामित्रावरुणसेजन्मसुनाहै इनमें सेकोईमरके फिर जन्मते हैं और कोई योगबलसे स्थितदेहको अनेकदेहैं करलेते हैं वेस बवेदार्थवेदी होते हैं देहसे देहांतर जन्म देखने से ब्रह्मविद्या पक्षमे मुक्तिहेतु है पक्षमे नहींहै इसकाउत्तरहै किउनकोस्थि तिअधिकाराधीन है जैसे सूर्य की सहस्रयुग तक है फिर कै वल्यहै तस्यतावदेवचिरमित्यादि अर्थ प्रारब्धभोगके क्षयमेंकैव ल्यहै ऐसेअपांतरतमादिमेंजानो जैसे एकघरसे दूसरे घर में जाताहै तैसे देहसे देहांतरमें जाताहै स्मृति रहिती है देहे- न्द्रियप्रकृत्यादिसबवशरहितेहैं इनकानामजातिस्मरनहींहै जो स्मृतिमें प्रसिद्धहैं जैसे सुलभाजनकदेहमें घुसउससेवादकरफि रअपनीदेहमेंनहींघुसीथी यहस्मार्तगाथाहै जबअविद्यादिक्ले- शबीजजरेतबकैसे जनसक्तेहैं यहभी नहींहै किबीजएकदग्धज न्मताहै जैसे तैसे कुछकर्माशयदग्धकुछअदग्ध हैं प्रवृत्तफलार्थ कर्माशयफलकोदेकेथमेंगा जैसे मुक्ततीरवेगक्षय से थमता है ज्ञानसे सबकीमुक्तिश्रुतिसे है योयोदेवानामित्यादि कुछहिर- ण्यगर्भकेसाथमुक्तहोतेहैं तबतकउसकेयहांरहितेहैं कर्मफल स्व र्गादिअनुभवमें नहींआतेहैं उनमें शङ्काहै किहोयानहो ज्ञानफ लअनुभवमें आसक्ताहै तत्वमसीत्यादि तत्वमसीतिइसकाअर्थ तत्वंस्तोभविष्यसीति यहनहींहै अहस्मनुरभवमिति इससे बा मदेवकोज्ञानकालमें सर्वात्मफलदिखायाहै तिससे ज्ञानीकोऐ कांतिककैवल्यसिद्धहै औरनिर्गुणमें मार्गकाउपसंहार नहीं है

निषेधोपसंहाराधिकरण ॥ २० ॥

अक्षरधियांत्ववरोधः सामान्यतद्भावा-भ्यामौपसदवत्तदुक्तम् ३३

अस्थूलमनणवह्रस्वमित्यादि जैव्रह्मबोधार्थगार्गिब्राह्मणमें निषेधश्रुतहैं और कठवल्लीमें भीहैं अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययमित्यादि अथपरायायातदक्षरमधिगम्यते यहअथर्वाहै ऐसेअन्य उदाहरणभीहैं औपसदवत् जैसे जामदग्न्यअहीनमेंपुरोडाशिनीउपसत्में पुरोडाशकाटन के मन्त्रों को पढ़ाहै अग्नेर्वैहोत्रं वेरध्वरमिति इनसे उद्गात्वेदीत्यन्त इनका अध्वर्यु से सम्बन्ध है पुरोडाशका काटना अध्वर्युका कामहोने से और अङ्गमुख्य केआधीनहोनेसेयहजैसेप्राग्कांडमेंतुमजैमिनिकोहै तैसेहीउत्तरकांडमेंमुभिव्यासकोअक्षराधीनसेजहांकहींपढ़ेविशेषोंकासर्वत्रहीअक्षरसेसम्बन्धहै जैमिनीयसूत्र गुणमुख्यव्यतिक्रमेतदर्थत्वान्मुख्येनवेदसंयोग इति शावरमुदाहरण वारवन्तीत्यादि सामोंकायजुर्वेदमेविनियोगसुनाहै उच्चैःसाम्नेत्यादि यहउत्पत्तिविधि गुणहै उपांशुयजुषेति यहविनियोगविधिमुख्यहै इनदोकेव्यतिक्रमअर्थाद्विरोधमें तदर्थत्वात् विनियोगविधिकेअर्थउत्पत्तिविधि होनेसेमुख्ययजुकेउपांशुखरसे वेदस्य वारन्तीत्यादि सामकासंयोगअर्थात्सम्बन्धहै तु तत् पहिलाशावर दृष्टांत छिपा नहीं है मीमांसाभाष्यशवरनामपण्डितनेबनायाहै तिस्से वहशावर कहिलाताहै वेदमेंवहुतठौरविशेषकेनिराससेअक्षरसुनाया है कहींकुछअतिरिक्तविशेषनिषिद्धहैंक्यानिषिद्धबुद्धियों को सर्वत्र सबकोप्राप्तिहै याव्यवस्थाहै इससंशयमेंश्रुतिसेवांटमेंव्यवस्था है इससेकहाकिअक्षरधियांअक्षरमेंविशेषनिषेधबुद्धिसबसबठौरअत्र-

रोद्दव्यहै सामान्यतद्भावाभ्यां विशेषनिरासससर्वंचसमान है और ब्रह्मअभिन्नप्रत्यभिज्ञातहै आनन्दादयः इसमेविधि रूप विशेषणोंकीचिन्ताकीथी इस्मे निषेधरूपोंकीहै यहभेदहै यहचिन्ता भेदप्रपञ्चार्थहै ॥

इयदामननाधिकरण ॥ २१ ॥

इयदामननात् ३४

द्वासुपर्णाइति इसकोअध्यात्मविद्याकेअधिकारमेआथर्वणिकऔरश्वेताश्वतरपढ़तेहैं ऋतंपिवन्ताइति इस मन्त्रको कठ पढ़तेहैं क्याइनमेविद्यैक्यहै याबहुविद्यहै यहसंशयहै बहुविद्य है केसेविशेषदेखनेसे द्वासुपर्णामेएकभोक्ताएकअभोक्तादेखतेहैं ऋतम्पिवन्तामेदोनोभोक्तादेखतेहैं फिरभिद्यमानवेद्यरूपविद्याका भेदकहै सोनहींसुनो विद्यैक्यहै केसे जिससेइनदोमन्त्रोंमे इयत्तापरिच्छिन्नदोसंख्यायुक्तवेद्यरूपअभिन्नपढ़ाहै पाताबुद्धिजीवलेनापिवन्तमे सुपर्णमेजीवईश्वरलेनाइसशङ्कामेजीवकेअनुवादसेअसंसारिब्रह्ममेमन्त्रदोकातात्पर्यहैतिससेअधिकधर्मकाउपसंहारहै यहसूत्रप्रपञ्चार्थहोहै ॥

उषस्तकहोलविद्याधिकरण ॥ २२ ॥

अन्तराभूतग्रामवत्स्वात्मनः ३५

एकयाबहुविद्याहै यहसंशयहै अभ्याससामर्थ्यसेबहुविद्याहै अन्यथाअन्यूनानतिरिक्तार्थदोवारपाठव्यर्थहो जैसे अभ्याससेकर्मभेदहै ऐसे अभ्याससेविद्याभेदहै सोमतकहो अन्तरासबकेबीचस्वआत्मादोनोमेसमानपूछाऔरकहाहै दोआत्माएकदेहमे सर्वान्तरनहींहोसक्तेहैं एकभीसर्वान्तरनहींहोसक्ता है भूतग्रामवत् जैसेपञ्चभूतपुञ्जमेपृथिवीकेबीचजलऔरजलकेबीचतेज इनमेएककीअपेक्षासेएकअन्तरहै नकिमुख्यसर्वान्तरहै तैसाहीउन

प्रश्नोंमेहै अथवाभूतग्रामवत् इसनेश्रुत्यन्तर दिखाया है यथाएकोदेवःसर्वभूतेषुगूढ़इत्यादि इसमेजैसेसर्वमेएकआत्मा कहा है तैसेउनदोमेएकसर्वान्तरआत्माकहाहै तिससेविद्यैक्यसेविद्यैक्य है यत्साचादपरोचाद्ब्रह्मय आत्मासर्वान्तरस्तन्मेव्याचचस्वेतिइति यहवृहदारण्यकेवीचउषस्तऔरकहोड़काप्रश्नहै याज्ञवल्क्यसेअपरोचादितिविभक्तिपञ्चमीप्रथमाकेठौरहै व्यत्ययसे अपरोचंब्रह्महै फिरदोनोन्यूनानतिरिक्तहोनेसेपुनरुक्तिवारणार्थविद्याभेदहै ॥

अन्यथाभेदानुपपत्तिरितिचेन्नोपदेशान्तरवत् ३६

पाठभेदकीअनुपपत्तिहै विद्याभेदनमानेमेसो दोष नहीं है उपदेशांतरवत् जैसे तांडिकेउपनिषद्केछठेप्रपाठकमेसआत्मा तत्वमसिश्वेतकेतोइसमेनौवारकहिनेसे जैसे विद्याभेद नहीं है ऐसेहीयःसेतुरीजानानामचरंब्रह्मइसमेभेदनहींहोगा पूर्वमे आत्माकाहोनाकहाउषस्तमेउत्तरमेआत्माअशनादिसंसारधर्मशून्य कहाहै इससेएकार्थसिद्धिहै तिससेविद्यैक्यहै ॥

व्यतिहाराधिकरण ॥ २३ ॥

व्यतिहारोविशिंषन्तिहीतरवत् ३७

ऐतरेयसूर्यपुरुषकेप्रकरणमेपढ़तेहैं तद्योहंसोसौयोसौसोहमिति तैसे जावालापढ़तेहैं त्वम्वाअहमस्मिभगवोदेवतेअहवैत्त्वमसीति इसमेसंशयहै कि व्यतिहारसेदोरूपमतिकरेयाएकरूप आत्माकीईश्वरसेऐक्यकहकेअन्यकुछचिन्तयितव्यनहींकहाहै जैसंसारीकोईश्वरमानेमेउत्कर्षहो ईश्वरकोसंसारीमाने मे निकर्षहोगा तिसमे ऐक्यदृढ़ार्थव्यतिहारहै सोनहींयहव्यतिहारध्याना

र्थपढ़ाहै कैसे इतरवत् जैसे सर्वात्मत्वादिगुणध्यानार्थकहेहैं त
हत्है विशिंषन्ति समाम्नाताहीनोंकोपढ़नेसेतूमैंमैंतूअन्योन्यवि-
शेषणकरतेहैं सोदोरूपमतिमेंसार्थहै मैंऐक्यदृढ़कोनहींवारताहूं
व्यतिहारसेदोरूपमतिकर्तव्यहै वाक्यप्रामाण्यसेनकिएकरूपम-
ति फिरफलसेऐक्यदृढ़है तिसे व्यतिहारध्येयहै, और अहंग्रहोपा
स्तिमेंउपसंहर्तव्यहै ॥

सत्यविद्याधिकरण ॥ २४ ॥

सैवहिसत्यादयः ३८

वृहदारण्यमेंसुनतेहैं सयोहवैतन्महद्यचंप्रथमजम्वेदसत्यंब्रह्मे
तिजयतीमान्लोकानिति यक्षं पूज्य है प्रथमजं हिरण्यगर्भरूप
सप्रथमजन्मा इसवाक्य ने सत्य विद्याकहि फिर कहाकिजोसत्यहै
सो आदित्य है तत्यत्सत्यमसौसआदित्योयएषएतस्मिन्मण्डले
पुरुषइति तत् तत्र और यश्चायन्दक्षिणे ऽक्षन्पुरुषइत्यादि इन
दोसेदोसत्यविद्यायाएक है यह संशयहै यहकैसे फलभेदसेयत्र
वाक्यमेंलोकजयफलकहाहै और सूर्यादिवाक्यमेंपापक्षयफलक
हाहैश्रुति सहन्तिपाप्मानमिति तिससेविद्याभेदहै जोविद्याक
हीसोएकही हैतत्सत्यमितिहिजिसे प्रकृतसत्यकेअनुवादसेसूर्यरू
पवर्णनकियाहै असौसआदित्यइति और पापक्षयअङ्गोपासनाके
फलसेअर्थवादहै तिससेफलभेद नहीं हैअङ्गेषुफलश्रुतिरर्थवादइ
सजैमिनिवाक्यसे यापापक्षयलोकजयकामउपासकअधिकारीहै
तिससेएकहीसत्यविद्याहै केचित्कहितेहैं कि छांदोग्यवाजसनि
यकअक्ष्यादित्यपुरुषविषयक वाक्योंमेंविद्याएकहै इसे सत्यादि
गुणवाजसनेयिसेछन्दोगलेवें सो साधुनहींहै छांदोग्यमेंआदिम
ध्यअन्तिमेंकर्मसम्बन्धसेकर्मसम्बधिनीविद्या है नकि वाजसनेय
कमेंकर्मसम्बन्धिविद्याहैछांदोग्यइयमेवर्गग्निःसामेत्यादिति ससे

गुणव्यवस्थायुक्तहै ॥ सच्चत्यच्चेतिसत्यं वेदउपास्तेइत्यर्थः स त्यविद्यानामतीनवर्णसत्यहैं इनमे प्रथमउत्तमदोवर्णसत्यहैं म ध्यमवर्णअन्तहै दोनोसत्य सेसंपुटितसत्यसा है यह नामाचरो पासनासत्यविद्याङ्गकहीहै

हार्ददहरविद्यैक्याधिकरण ॥ २५ ॥

कामादीतरत्रतत्रचायतनादिभ्यः ३९

छांदोगसत्यकामादिपढ़तेहैं औरवाजसनेयीवशित्वादिपढ़ तेहैं इनमेविद्याएकऔरमिथोगुणयोगहै यानहीहै इससंशय मे विद्यैक्यहै इससेकहाकि कामादीति सत्यकामादिजैसे सत्यभा माभामायहांशब्दकाएकअङ्गलियाहैतैसे कामादिकहाहै जोछा न्दोग्यमेहृद्व्योमकेसत्यकामादिगुणलब्धहैंइतरत्रवाजसनेयकमे सवाएषमहानजइसमेसम्बद्धहैं जोवाजसनेयकमेवशित्वादिलब्ध हैं तेभीतत्र छांदोग्यमे एषआत्मा इसमे सम्बद्ध हैं कैसे आयत नादिभ्यः दोनोमेहृदयायतनसमानहै औरवेद्यईश्वरसमानहैउ सकेसेतुलोकसामादिप्रयोजनादिबहुसामान्यदेखतेहैं छांदोग्य मेहृद्व्योमकागुणयोगऔर वाजसनेयकमेव्योमाश्रयब्रह्मगुणयो गविशेषहैसोनहींव्योमसे ब्रह्मकहाहै सगुणविद्याछान्दोग्यमेहैअ थयइहात्मानं इसमेआत्मवत् सत्यकामादिभीवेद्यसुननेसे वा- जसनेयकमेनिर्गुणकहाहै अतऊर्ध्वंविमोचायेत्यादि यह विशेष है वशित्वादिस्तवार्थगुणहैं वाजसनेयकमेनेतिनेतिनिर्गुणोपसं- हारहै गुणीब्रह्मएकहै इससे विभूतिदर्शनार्थगुणोपसंहारसूचि तहै नकिउपासनार्थयहद्रष्टव्यहै ॥

प्राणाग्निहोत्राधिकरण ॥ २६ ॥

आदरादलोपः ४०

छांदोग्यकीवैश्वानरविद्यामेसुना किजोप्रथमभक्तमिले सो-
होमीयहै प्राणायस्वाहेत्यादि पांचप्राणाहुतिकहिकेफिर अग्नि-
होत्रंजुहोतीति इससेज्ञानीकोअग्निहोत्रकहाथा जैसा भूखाव
च्चामाकोसेवताहै ऐसे सबभूतअग्निहोत्रकोसेवतेहैं इसमेविचा
रहै किभोजनकेलोपमेप्राणाग्निहोत्रकालोपहैयानहीहैगलेपड़ा
भोजनकेअसंयोगसेप्राणाग्निहोत्रकालोप सोनहीं कैसे श्राद
रात्वैश्वानरविद्यामेजावालश्रुतिहैकिअतिथिसेपहिलेखालेपूर्वो
तिथिभ्योश्नीयात्इससेप्राणाग्निहोत्रकाआदरहैप्रकृतअग्निहोत्र
मेदुग्धादिद्रव्यहैं इसअग्निहोत्रमेभी कौंडपायिनामयनवत् भ
क्तद्रव्यएकगुणकाविधानहै गुणलोपेनमुख्यस्येति इससेभोजना-
भावमेजलादिअविरुद्धद्रव्यसेप्राणाग्निहोत्रअनुष्ठेयहै इसकाउत्त
रपढ़ताहै ॥

उपस्थितेऽतस्तद्वचनात् ४१

तद्यद्भक्तंप्रथमसागच्छेत्तद्धोमीयति इसनेभोजनहोनेमेभक्त से
प्राणाहुतिकाविधानकियाहै औरभोजनकेअलोपमेभी उपस्थि
त प्रत्यागतभक्तद्रव्यहै अतः उसी भक्तद्रव्यसे प्राणाग्निहोत्रको
सिद्धिहैजोकिसीढवसेभक्तमिलेगासोअग्निहोत्रद्रव्यश्रुतिसेश्रुतहै
तद्यद्भक्तमिति औरआदरभोजनपक्षमेप्रथमभोजनविधानार्थ हो
गा तिससेभोजनलोपमेंप्राणाहुतिलुप्तहै उपस्थिते भोजनमे अ
तः उसीभोजनसेप्राणाग्निहोत्रनिर्वर्त्तयितव्यहै कैसे तद्वचनात्
तद्यद्भक्तंप्रथममित्यादि कुण्डपायिनामयनमेएकमहीनाअग्निहो
त्रकाविधानहै तिससेउसमेनित्यअग्निहोत्रकेधर्मपहुंचतेहैं प्रा-
णाग्निहोत्रशब्दअर्थवादहै तिससेअग्निहोत्रधर्मोकोनहींलेसक्ता
है यहहोममुखमेहै तिससेअग्न्युद्धरणादिनहींहैं नकालदोकी
प्राप्तिहै सायंप्रातर्होमवत् उरआदिमे वेदीआदिमानलियेहैं सु

ख्य।ग्निहोत्रमें वेदीनहींहै वेदीस्थंडिलमात्रहै आदरवचन भो-
जनपक्षमें प्रथमार्थहै बचनकोवड़ाभारनहींहै तिससेभोजनलो
पमेप्राप्ताग्निहोत्रकालोपहै ॥

कर्माङ्गाववद्धोपासनाधिकरण ॥ २७ ॥

तन्निर्द्धारणानियमस्तद्दृष्टेःपृथग्घ्यप्रतिवन्धःफलं ४२

कर्माङ्गाश्रयउद्गीथादिनित्यहैं जैसे कर्ममेंपर्णमयीत्वादि हैं
याअनित्यहैं जैसा गोदोहनादियहविचारहै अङ्गान्तरवत्नित्य
हैं उद्गीथादिजैसे जिसकीपर्णमयीजुहूहै सोदुर्यशनहींसुनता-
है इसअप्रकरणपढ़ेकाजुहूद्वाराक्रतुमें प्रवेशसे प्रकरणपठितवत्
नित्यहै तैसा उद्गीथादिमें जानोसोनहीं तन्निर्द्धारणानियमः क
र्मगुणयथार्थनिर्द्धारणरसतमादि नित्यवत्कर्ममें नियम नहींहै
कैसे तद्दृष्टेः ऐसोंकाश्रुतिअनियमदिखातीहै तेनोभौकुरुतो
यश्चैतदेवंवेदयश्चनवेदेति इसनेमूर्खकोकर्मकीआज्ञा दी है ऐसे
कर्माश्रयविज्ञानकाकर्मसेपृथक्फललब्धहै कर्मफलकोसिध्यप्र-
तिवन्धः अर्थकर्मफलसमृद्धिअतिशय जैसे ज्ञानीअज्ञानीवणिक
शवरमणिवेचनमेंफलातिशयलभताहैतैसाहीकर्ममेंहैविद्याहीन
काकामवीर्यवत्औरसविद्याकाकामवीर्यवत्तरहोताहैयहअनित्य
विद्यामेंयुक्तहै नकिनित्यमेंलोकादिफलार्थसामादिमेंउपासना-
काफलनियतहै ऊपरनीचेकेलोकलाभ नफलअर्थवाद है गुण-
वादकोआपत्तिसे फलोपदेशमेंमुख्यवादसिद्धहै प्रयाजादिमेंफ-
लअर्थवादहै क्रतुकेप्रकृतहोनेसे अक्रियपर्णमयीकाफलसम्वन्ध-
आश्रयकेबिनायुक्तनहींहै गोदोहनादिकीफलमेंविधिहै प्रकृतज
लप्रणयरूपआश्रयकेलाभसेअङ्गयाप्रधानमेंफलार्थविधियुक्तहै जै
से वैल्वमन्नाद्यकामस्यखादिरंवीर्यकामस्येति पर्णमयीका आश्र-

यप्रकृतनहींहै वाक्यसेजुहूकेकाठको आश्रयमानफलमेविधि वि
वक्षोवाक्यभेदहो यागादिवत् क्रियारूपउपासनाफलसहित-
विहितहैजैसे अङ्गावेदक्रमानाभावसेजैसेक्रतुके आश्रयगोदोहादि
फलयोगसेअनित्य हैं ऐसे उद्गीथादिउपासन। हैंकल्पसूत्रकारोंने
ऐसीउपासनाक्रतुमेनहींमानीहैंअनङ्गहोनेसेतिससे अङ्गोपास्ति
केअभावमेंकर्माधिकारसिद्धहै ॥

प्रदानाधिकरण ॥ २८ ॥

प्रदानवदेवचतदुक्तम् ४३

वाजसनेयमें वागहमितिइति इससेवागादिमेंअध्यात्मप्राणश्रे
ष्ठहै अग्न्यादिमेंअधिदैववायुश्रेष्ठहै औरछान्दोग्यकीसम्वर्गवि-
द्यामेंवायुर्वावसम्वर्गइससे अधिदैववायुसम्वर्गअग्न्यादिमेंहैऔर
प्राणोवावसम्वर्गइससेवागादिमें अध्यात्मप्राणश्रेष्ठहैफिरप्राणवा
युकेभेदाभेदसेसंशयहै किक्यावायुप्राणपृथक्लेवें याअपृथक् अ
पृथक्तत्वमेंपृथक्चिन्तनन्याय्यनहींहै अध्यात्मअधिदैवकेतत्वा-
भेदकोकहतीहै तथातएतेसर्वएवसमा:सर्वेअनन्ताइत्यादि इस-
सेप्राणविभूतिकहीहै जिससेसूर्योदयहै उसकोकहोइसप्रश्नमेंसू
त्रात्मावायुकहाहै फिरवायुस्थानमेंप्राणकहाहै इससे उनको
ऐक्यहै ऐसेबहुततत्वाभेदहैं कहींजोवायुसोप्राणहै यहांस्पष्टवा
युप्राणकोएककराहै वाजोब्राह्मणं यश्चोदेतिसूर्यइत्यादि प्रा-
णापानएकव्रतकरे छान्दोग्यमें चतुरोदेवएकइत्यादिसेवह्नि सू-
र्यजलचन्द्रयावाग्नेत्रकर्णमनइनको एकप्रजापतिजीर्णवान्उप
संहृतवान्एकसंवर्गजताताहै नहींकहिताहै एकसंवर्ग एकोंको
दूसराऔरोंको तिससेअपृथक्ज्ञानहै सोनहीं वायुप्राण पृथक्
हैं ध्यानार्थयासङ्कल्पार्थअध्यात्मआधिदैविकविभागकहाहै सो
विनापृथक्मेंव्यर्थहो जैसे प्राणोंमें मध्यमप्राण स्थिरव्रत है तैसे

देवोंमें वायुस्त्रोचहै सैषानस्तमितादेवतायद्वायुरितिश्रुतेः है इ ससेउपमानोपमें यक्रिया तेपांचअन्यपांचअन्यऐसेदशहैं तिससेपृथक्प्राप्तहै कैसे प्रदानवत् यथेंद्रायराज्ञेपुरोडाशमेकादशकपालमिन्द्राय।धिराजायेन्द्रायस्वराज्ञ इति इस त्रिपुरोडाशिनीइष्टिमें सबदेवोंकोहविका।लेनाहै अक्रम्वट्कारं वैषट्कार देवभागहै यादेवोंकोयुगपत्अवदानहै एकार्थ अवदानमें यागव्यर्थहो इन्द्रादिकेअभेदसेसाथप्रदानकीशङ्कामें राजादिगुणभेदसें देवभेदहै उससे प्रदानभेदहै ऐसें तत्वाभेदमेध्येयांशभेदसेध्यानभेदहै तदुक्तं सङ्कर्षेनानादेवतापृथक्त्वानादितिसङ्कर्षदेवकाण्डहै देवनाना।हैं राजादिगुणभेदसे यह सूत्रार्थ है द्रव्य देवभेदसेयागभेदहो यहांविद्याभेदनहींहै अध्यात्मअधिदैवमेविद्यैक्यप्रतीतमेंभी अध्यात्म अधिदैवभेद से प्रवृत्ति भेद होगा जैसे अग्निहोत्रकासायंप्रातःकालभेदसेभेदहै तिस अभिप्राय से प्रदानवत्कहाथा ॥

लिङ्गभूयस्त्वाधिकरण ॥ २९ ॥

लिङ्गभूयस्त्वात्तद्धिवलीयस्तदपि ४४

वाजसनेयकअग्निरहस्यमेंमनकेअधिकारसेपढ़ाहै षट्त्रिंशत्सहस्राण्यपश्यदात्मनोग्नीनर्कान्मनोमयान्मनश्चितइति अर्थं पुरुषकोसौवर्षमितआयुहै औरसौवर्षके ३६००० हजारदिनहोतेहैं उनएकर दिनमेंजोमनोवृत्तिहै उसकोएकर अग्निकेध्यानसे ध्येयअग्निभी ३६००० हजारसम्पन्नहैं और वेप्रत्यगात्म रूप से ध्येयहैं अतएवार्चनीयामनसाचीयन्तेसंपाद्यंतइति एवंवाक्चितःप्राणचितःचक्षुश्चितइति वेअग्निमनश्चिदादिमनसेसम्पादितक्रत्वर्थअर्थात्यागकाअङ्गहैं याअग्निचयनप्रकरणमेंपढ़नेसेकर्मशेषहैं औरनकिस्वतन्त्रविद्यारूपहैं स्वतन्त्रअर्थात्पुरुषार्थं विद्यात्म

कहैं यहसंशयहै औरनकर्ममेंप्रविष्टहैं कैसे तद्यत्किञ्चेति लिङ्ग-
भूयस्त्वात् आधिक्यसे लिङ्गहोतीभी अग्निचयनप्रकरणसेंवे उन-
कांक्रियामें अनुप्रवेशहै इससेपढ़ाकि तद्धिवलीय: हि जिस्से लि
ङ्गप्रकरणसे वलीहै वहभीपूर्वकांडमेंकहाहै श्रुतिलिङ्गवाक्यप्रक
रणस्थानसमाख्यानांसमवायेपारदौरवल्यमर्थविप्रकर्षादिति अ
र्थं एकदोतीनचारपांचछहकेविलम्बसे आगे२दुर्बलहै और पूर्व-
प्रवलहै यहपूर्ववादीकाआक्षेपहै पूर्वाधिकरणमें तान्‌है तानेवं
विदेसर्वदासर्वाणिभूतानिविचिन्वन्तीत्यादि ॥

पूर्वविकल्पःप्रकरणात्स्यात्क्रियामानस वत् ४५

मनश्चिदादिक्रियाहीहो किसढव पूर्वक्रियामयअग्निमेंविक
ल्पः सङ्कल्पविशेषकहाहै सोभीकैसे क्रियामयाग्निकेप्रकरणसेवि
रूपकाऔरविरूपकेप्रकरणसे क्रियारूपकहादेखाहै इससेकहा
किमानसवत्‌जैसेदशरात्रकेदशमेंदिनकेअविवाक्यनामदिनमेंभी
ग्रहणआसादनहवनहरणउपह्वानभक्षणआदिसोमके मानस ही
पढ़ेहैं पृथिव्या:पात्रेसमुद्रस्यसोमस्यप्रजापतयेदेवतायैगृह्यमाण-
स्येति औरमानसभीग्रहकल्पक्रियाकेप्रकरणसे क्रियाशेषहै जैसे
ऐसेहीअग्निकल्पहै इत्यर्थ ॥

अतिदेशाच्च ४६

षट्त्रिंशत्सहस्राण्यग्नयोर्कास्तेषामेकैकएवतावान्यावा
नसौपूर्वइति अर्थ ३६००० हजारअग्निऔरसूर्यहैं इनमेंसेएक
जितनापूर्वथा उतनाअवहै इससाम्यकानामअतिदेशहै तिस्से
भीमनश्चिदादिक्रियांगहैं अन्यथा दोमें अनुस्यूतधर्मके अभावसे
अतिदेशकाअयोगहोगाइतिभावार्थइतिपूर्वपक्ष अथ सिद्धांती ॥

विद्यैवतुनिर्द्धारणात् ४७

तु अग्नियोंकोक्रियारूपकावारकहै तोक्याहैं विद्यात्मकस्व-तन्त्रमनश्चिदादिनकि क्रियांग हैं कैसे तद्देतेविद्याचितएवेतिइ समेएवकाअर्थनिर्द्धारणसे श्रुतिलिङ्गवाक्योंसेप्रकरणवाध्यहै यह तीनसूत्रोंकाअर्थहै ॥

दर्शनाच्च ४८

लिङ्गानामितिशेषः ॥

षसेसहकारीकोअनपेक्षाकहीहै लिङ्गलिङ्गभूयस्त्वसूत्रमे कहि चुके पुनर्थबोधकवाक्यदेखनेसेभीविद्यास्तन्त्र है विद्ययाहैवै-तेएवम्विदश्चिताभवन्तीति ॥

श्रुत्यादिवलीयस्त्वाच्चनवाधः ४९

मनश्चिदादिस्वतन्त्रहैं प्रकरणलिङ्गकावाधकनहोनेसे कैसे श्रुत्यादेर्वलीयस्त्वात् प्रकरणसेवलीहैं श्रुतिलिङ्गवाक्ययह श्रुति-लिङ्गसूत्रमेकहीथी स्वतन्त्रपक्षसाधकमेश्रुति तद्देतेइति लिङ्ग स र्वदासर्वाणिभूतानिचिन्वन्त्यपिस्वपतेइति वाक्य विद्ययाहैवेति विद्याचितएवेतियहसावधारणश्रुतिमनश्चिदादिकोक्रियामेघुसा नेसेपीड़ापावेगी अवाह्यसाधनकीआश्रयसेअवधारणहोगा सो नहीअवाह्यसाधनउनकारूपहोने से मानसग्रहवत्क्रियांगशङ्का वारकएवकारहै सोतेजगतेमेसबभूतउनकाचयन करते हैं यह-सातत्यउनकेस्वातंत्र्यमेसमर्थहै जैसे सम्पादिकवाक्प्राणमय अ-ग्निहोत्रमेप्राणकोवाणीमेऔरवाणीकोप्राणमेहोमेयहकहिके फि रकहाकिजेअनन्तअमृतहोमसोतेजगतेपरसततहोते हैं तैसे म-नश्चिदादिहैं क्रियांगमानेमेक्रियाप्रयोगयोराकालहै फिरइनको सातत्यकहांरहा अर्थवादवहांमानाहै जहांविस्पष्टविधायक लि

ज्ञादिलब्धहैं तहांकहिनामाचअर्थवादहै यहांविस्पष्टअन्यविधि नहींलब्धहै कहिनेसेहीइनकाविज्ञानऔर विधान कल्पनीय है तिससेमनश्चिदादिस्वतन्त्रहैं औरकिसीनेकहाहै किजेभूतजोकु कमनसेसङ्कल्पकरतेहैं उनकोयहमोआकृतिहै औरएवंविद यह वाक्यपुरुषसेउनकासम्बन्धकहिताहै फिरक्रतुसेसम्बन्धक्युंसहि-सकेगा तिससेस्वतन्त्रपक्षज्यायान्‌जानपड़ताहै ॥

अनुबन्धादिभ्यःप्रज्ञांतरपृथक्त्ववद्दृष्ट-श्चतदुक्तम् ५०

प्रकरणकेभङ्गसेमनश्चिदादिस्वतन्त्रहैं जिसमेंमनश्चिदादिमे क्रियांगोंकोमनःप्रभृतिव्यापारोंमेवांधाहै तेमनसैवाधीयन्तइत्या दिमेजोकुछयज्ञमेकर्मकरतेयायज्ञोयकर्महै सो सबमनोमयमन-श्चिदादिमेमानसकहाहै इसमें सम्पत्फलार्थ अनुबन्धहै क्रियांग नहींआदानहैकिन्तुषट्‌त्रिंशत्सहस्र मनोवृत्तिकाआदानहै उनमे अग्न्यादिकल्पेहैं पुरुषयज्ञादिवत् संख्यापुरुषकेआयुकेदिनोकी थी सोवृत्तियोंमेमानलीहै आदिशब्दसेअतिदेशादिलिये हैं क्रि-याकाअनादरदर्शनार्थक्रियामयअग्निकामाहात्म्यज्ञानमयअग्नि मेकरहै जिस आहवनीयादिव्यापारसे पूर्वक्रियामे उपकार है तिससेउत्तरमेउपकारशक्यनहींहै इससेविकल्पनहींहै सांपादि कभीअग्निअग्निहै अनुबन्धअतिदेशश्रुतिलिङ्गवाक्यकारणसे म-नश्चिदादिस्वतन्त्रहैं कैसे प्रज्ञांतरपृथक्त्ववत् जैसे शांडिल्य वि-द्यादिअपनेर अनुबन्धसेअनुबध्यमानकर्मोसेपृथक्‌और प्रज्ञान्तर-से भीस्वतन्त्रहैं ऐसे जैहैं देखाग्याकिराजसूयप्रकरणमेपढ़ी अवे-ष्टिकाप्रकरणसे भेद कैसे तीनवर्णोकेअनुबन्धसे औरराजयज्ञ से राजसूयमेसम्बन्धहैं तदुक्तं पूर्वकांडमे क्रत्वर्थायामितिचेन्नव र्णत्रयसंयोगादितिराजास्वाराज्यकामोराजसूयेनयजेतइससेरा

जाकोराजसूयभिन्नविधानकहाहैभेदकवाकहै यदिब्राह्मणोयजे तवार्हस्पत्यमित्यादि ॥

नसामान्यादप्युपलब्धेर्मृत्युवन्नहिलोकापत्तिः ५१

मानसग्रहसामान्यसेमनश्चिदादिक्रियांगनहींकल्प्यसकेहो श्रुत्यादिहेतुसेकेवलपुमर्थ अर्थात्उपासनार्थकोउपलब्धिसे कुछ-किसीकोकिसीकेसाथसामान्यनहींहैसोनहीं है कुछ सामान्य से जैसे वैषम्यनहींछुटताहै मृत्युवत् यथासवाएषएवमृत्युर्यएषएत स्मिन्मण्डलेपुरुषइति अग्निर्वैमृत्युरिति इनसेसूर्याग्निमेसमान-मृत्युशब्दहै तोभीअत्यन्तसाम्यनहीं है यथावासौवैलोकोग्निर्गौत मतस्यादित्यएवसमिदिति इसमेसमिदादिसामान्यसेलोकअग्नि नहींसोसकताहै कोटिवाक्यसे तैसे वेक्रियांगनहीं हैं ऐसे वाक्य-अर्थवादहैं लोकदृष्टांतअत्यन्तभेदमेहै ॥

परेणचशब्दस्यताद्विध्यम्भूयस्त्वात्त्वनुबन्धः ५२

अयम्वावलोकएषोग्निश्चितइसअगिलेवाक्यमेताद्विध्यं केव-लविद्याविधिहै शब्दप्रयोजनलच्यमानहै नकिशुद्धकर्माङ्ग विधि विद्ययातदारोहन्तियत्रकामाःपरागताः नतत्रदक्षिणायन्ति न-विद्वांसस्तपस्विनः इसश्लोकसेकेवलकर्मनिन्दाविद्याप्रशंसासेवि-द्या स्वतन्त्र कही है तथापुरस्तादपियदेतन्मण्डलन्तपतीतिमेवि-द्यामुख्यलच्यमानहै सोमृतोभवतिमृत्युर्ह्यस्यात्माभवतीतिमे वि द्याफलसे उपसंहारसे कर्ममुख्यनहींहै इससामान्यसे मनश्चिदा दिमेकर्ममुख्यनहींहै भूयस्त्वात्त्वनुबन्धः विद्यामे बहुतअग्न्यंग संपादनीयहैं इसहेतुसे अग्निकेसाथवेअनुबध्यमानहैं कर्माङ्गके

विधानसे तिससे मनश्चिदादिकेवलविद्यात्मसिद्ध हैं ॥

देहभिन्नात्माधिकरण ॥ ३० ॥

एक आत्मन:शरीरेभावात् ५३

श्रुति एतेभ्योभूतेभ्य:समुत्थायतान्येवानुविनश्यतिनप्रेत्यसंज्ञा-स्तीति बन्धमोक्षाधिकारार्थदेहसे भिन्नआत्मासमर्थ्यमानहै न-हींदेहभिन्नआत्माकेविनापरलोकफलार्थचोदनायुक्तहैं औरकि-सकोब्रह्मकाउपदेशकरोगेयज्ञायुधीययजमान:स्वर्गंलोकमेतीति मन्त्र प्रेहिप्रेहिपूर्वेभि:पथिभिरित्यादि मीमांसाकेप्रथमपादमेदे हभिन्नआत्माकहाथा सोशवरस्वामीनेकहाथा नकिजैमिनिनेउ पवर्षनेपूर्वमीमांसासूत्रकोव्याख्यामेकहाथा किआत्मास्तित्वशा रीरकमेकहेंगे यहकहचुपपरहै शारीरकसूत्रव्याख्याउपवर्ष की यच्छोहै आत्माहै यानहींहै इसविप्रतिपत्तिसे संशयहै एके लो कायतिकदेहसे भिन्नआत्मानहींमानतेहैं देहमात्रकोआत्मादेख तेहैं सबमिलेभूतोंमेचैतन्यनहींहै जैसे तप्तोदकुम्भकोज्ञानकेअ भावसे और व्यस्तमे नहीं है तोभीदेहाकारभूतोंमें है परिणा मसे किणवशक्तिसमविज्ञानहै चैतन्यविशिष्टजीकाय है सोपुरुष है नस्वर्गापवर्गकोसमर्थहै देहहीचेतनऔर आत्मासंघातज है हेतुशरीरेभावादितिजो जिसकेहोनेमेहोनहोनेमे नहोसोउसका धर्मनिश्चितहै जैसे अग्निधर्म औष्ण्यप्रकाशहैं तैसे देहमेचेतनभा वहै औरप्राणचेष्टाचैतन्यस्मृत्यादि जे आत्मधर्मआत्मवादीको-दृष्टहैंतेभीदेहकेभीतरलभ्यमानहैं बाहिरअलभ्यमानहैंअसिद्धदेह भिन्नधर्मीमेदेहधर्महोनेकोयोग्यहैंतिस्से अभेदहैदेहसेआत्मा का

व्यतिरेकस्तद्भावाभावित्वान्नतूपलब्धिवत् ५४

आत्माकादेहसेव्यतिरेकहै कैसे तद्भावभावित्वात् यदि-देहभावमेभावसे आत्मधर्मकोदेहधर्ममानो तिससेदेहभावमेअभावसे अदेहकेधर्मउनकोक्युंनहींमानतेहो देहधर्मवैलक्षण्य से जोदेहधर्मरूपादिहैं तेजवतकदेहहै तवतकहैं प्राणचेष्टादिमरे परदेहहोनेमेभीनहींहोतेहैं रूपादिदेहधर्मपरदेखतेहैं नकि आत्मधर्मचैतन्यस्मृत्यादिदेहकेहोनेमेजीवत्दशामेउनकाभावनिश्चयकीशक्यहै नकिअसत्देहमेअभावकभीपतितदेहमे देहांतर संचारसे आत्मधर्मअनुवर्तहो संशयमात्रसे परपक्षकानिषेधहै चैतन्यकैसीहै जिसकाजन्ममूर्तोंसे मानाहै ऐसे परपर्यनुयोज्यहै लोकायतिकभूतचारसे व्यतिरिक्ततत्वनहींमानताहै जोभूतभौतिकोंकाअनुभवहै सोचैतन्ययदिकहोतोसोविषयसे भूतोंकाचैतन्यधर्मनहींहै भावार्थ देहात्मकभूतोंकोचैतन्य की प्रति विषय से कर्तृकर्मविरोधकरविषयकर्त्तानहींहोसक्ताहै इससे भूतकर्तृकचैतन्यनहींहै ज्ञानकोभूतधर्ममानेमेरूपादिवत्जड़होवेगा नहींहै कि अग्निदाहकहै परआपकोनजरातीहै नहींनटआपसिखा हुआ अपनेकांधेपरचढ़ताहै नहींसत्भूतभौतिकधर्मचैतन्य भूतभौतिकोंकोविषयकर्त्ताहैनहींरूपादिस्वरूपयापररूपकोविषय करतेहैंऔरचैतन्यसेवाह्याध्यात्मिकभूतभौतिकविषयकियेजाते हैं इससे जैसे भूतभौतिकविषयकउपलब्धिकाभाव मानते हो ऐसे इसकाभूतोंसे व्यतिरेकमानो उपलब्धिकास्वरूपहीआत्मा नहींहै इससेव्यतिरिक्तहै देहसे उपलब्धिनित्यहै एकरूपसे यहमैनेदेखाथाइसअवस्थान्तरकेयोगमे उपलब्धाकीप्रत्यभिज्ञा से स्मृत्यादिकोसिद्धिसे और दीपादिउपकरणहोनेमेउपलब्धिहै न-होनेमेनहींहै इससे उपलब्धिदीपधर्मनहींहै ऐसे होदेहकेहो-नेमेउपलब्धिहै नहोनेमे नहींहै तिससे उपलब्धि देहधर्मा ईन-हींहै उपकरणमात्रसे दीपादिवत् देहकाउपयोगसिद्धहै और-

नकिअत्यन्तदेहकीउपलब्धिमेउपयोगदेखतेहैं स्वप्नमेनिश्चेष्ट देह मेनानाविधकीउपलब्धिदेखनेसे तिससे अनवद्यहै देहसेव्यतिरिक्तआत्माकाहोना ॥

उक्थ्योपासनाधिकरण ॥ ३१ ॥

अङ्गावबद्धास्तुनशाखासुहिप्रतिवेदं ५५

कहिचुकेप्रासङ्गिकीकथा अवतोप्रकृतकथाकाअनुवर्त्तावहैउद्गीथावयवोंकारमेप्राणदृष्टिकरे औरलोकोमेपांचविधसाम उपास्यहै धराग्निअन्तरिक्षसूर्यद्युइनपांचकोक्रमसे हिंकारप्रस्तावउद्गीथप्रतिहारनिधनइनपांचसाममेदृष्टिकरे इनकानामलोकसामहैजेउद्गीथादिकर्माङ्गावबद्धप्रत्ययहैंप्रतिवेदमेशाखाभेदसेपढ़ेहैं वेतिसतिसशाखाकेउद्गीथादिमेहोयासवशाखामेंहोयहसंशय है प्रतिशाखामे स्वरादिभेदसेउद्गीथादिकाभेदपकड़संशयहै स्वशाखोद्गीथमे उपासनाविधानहोकैसेसन्निधिसे उद्गीथमुपासीतइससामान्यविधानकोविशेषाकांक्षामेपासस्वशाखाकेविशेषसेआकांक्षादिकोनिवृत्तिहै इसकोछोड़शाखांतरविशेषपकड़नेमेहेतु नहींहै तिससे प्रतिशाखामेव्यवस्थाप्राप्तिसे कहिता है अङ्गावबद्धास्त्विति तुपक्षवारकहै नस्वशाखासुहिप्रतिवेदं जोप्रतिवेदकीस्वशाखामेनहींठहिरसकेहैं अपितुसवशाखोंमे घुसेंगे कैसे उद्गीथादिसमानसुननेसे जोउद्गीथमुपासीतयहसामान्यश्रुतिस्वशाखामेरही तोसन्निधिसेविशेषमे पहुंचाई पीड़ितहो सोन्याय्य नहीं है सन्निधिसेश्रुतिवलीहै तिससेस्वरादिभेदसे उद्गीथादिकेसमानसे सवशाखोंकेउद्गीथादिमे ऐसे प्रत्ययहोवें भाव सामान्यकाव्यक्त्यपेक्षासेस्वशाखाकीव्यक्तिग्रहहै सामान्यश्रुतिसेसन्निहितव्यक्तिग्रहनामसंकोचकरो जहांव्यक्तिमात्रग्रहनहीं है जैसे शुक्लगोकोलाइसमेगोसुनेकेपासशुक्लव्यक्तिमे उसवाक्यकासङ्कोच है

मंत्रादिवद्वाऽविरोधः ५६

एकशाखाकीबातकिदूसरीशाखामें सम्बन्धसे विरोधप्रतीतथा उसकेसमानकेसम्बन्धकहाथा अबएकशाखाकीबातकादूसरीमें विरोधनहींहै अथवाविरोधकीशङ्कामतकरो किकैसे अन्य शाखाकेउद्गीथादिमें अन्यशाखामें विहितप्रत्ययहोवें मन्त्रादिवत् अविरोधकीउपपत्तिसे जैसे यजुर्वेदीको कुक्कुटोसीति यहमन्त्रहै और कुटरुरसीति यहमन्त्रनहींहै तौभीचाउर पीसन के अर्थचक्कीकेलेनेमें उक्तदोनोमन्त्रोंकेविकल्पसे विनियोगमेंकुटरुरसीति यहमन्त्रप्राप्तहै मैत्रायणीयोंकेशाखामें समिदादिप्रया जनहींपढ़ेहैं उनकोभीपञ्चत्वरूपगुणकाविधानहै जैसे ऋतवो वैप्रयाजाः इत्यादितुल्यकर्मस्थलमें होतव्यहैंशाखांतरमेंपढ़ेसमिदादिगुणियोंकेसाथसम्बध्यमानहैं गुण जैसे यजुर्वेदियोंको अग्नीषोमीयपशुसुनाहै नकिअजजातिविशेषतोभीप्रैषमन्त्रलिङ्गसे जातिविशेषकासंग्रहै छागस्यवपायामेदसोनुब्रूहीतिमन्त्रोंका औरउदाहरण सामवेदकेमन्त्रोंकायजुर्वेदमें संग्रह है अग्नेर्वेहोत्रंवेरध्वरमित्यादि औरबह्वृचपठितसूक्तकाआध्वर्यवमेंसजनीयं शस्यं इसमें परिग्रहदेखा है योजातएवप्रथमोमनस्वानिति अर्थ जोजन्माबालप्रथमगुणोंसेश्रेष्ठहै मनस्वान्विवेकवान्सो इन्द्र है हेजनासोजनहैंसजनासइन्द्रइससे उपलक्षितसूक्तसजनीयहै उसका यजुर्वेदमेंजोअध्वर्युकर्तृकप्रयोगहै उससेकहिनादेखाहै तिससेजैसे आश्रयकर्माङ्गोंकासर्वत्रघुसावहैऐसेआश्रितप्रत्ययोंकाभी घुसाव हैइससेअविरोधहै ॥

समस्तोपासनाधिकरण ॥ ३२ ॥

भूम्नः क्रतुवज्ज्यायस्त्वन्तथाहिदर्शयति ५७

वैश्वानरकीव्यस्तअर्थात्प्रत्येकद्युलोकादिकीउपासना और समस्तअर्थात्द्युलोकादिकेअङ्गीकीउपासनाहै अश्वपतिराजाने औपमन्यवसे पूछाकिव्यस्तोपासनकहो उसनेदिवकहाएषवै सुतेजाआत्मा वैश्वानरोयन्त्वमात्मानमुपास्से इत्यादि समस्तोपासनभीतस्यहवाएतस्यात्मनोवैश्वानरस्यमूर्द्धैवसुतेजाइत्यादिसे कहाहै इसमेसंशयहै किक्यायहांव्यस्तसमस्तदोनो का उपासन है यासमस्तकाहै प्रत्यङ्गमेप्राप्तहै सुतेजआदिमेउपास्सइसक्रिया पट्केसुन्नेसेऔरसुतादिफलभेदसुन्नेसे तवसुतंप्रसुतमासुतंकुलेदृश्यतइत्यादि अर्थ सुतखण्डितसोमद्रव्यहै उसीकीअवस्था प्रसुतादिहैं सोमयागतेरेकुलमेदेखतेहैं व्यस्तोपासनप्राप्तहै इससेकहाकि भूम्नः बहुतवस्तुरूपसमस्तवैश्वानररूपका उपासन ज्यायस्त्वम् इसवाक्यमेमुख्यविवक्षितयोग्यहै नकिप्रत्येकअङ्गकाउपासन क्रतुवत् जैसे दर्शपूर्णमासादिमेसमस्तसांगप्रधानकाप्रयोग एकविवक्षितहै नकिप्रयाजादिव्यस्तोकाप्रयोगऔरनकिएक देशांगयुक्तप्रधानकाप्रयोगविवक्षितहैतैसेसमस्तोपासनहैकैसेभूमा ज्यायान्हैवैश्वानरविद्याकेविषयमे पूर्वापरएकवाक्यहोनेसे वह यहकिप्राचीनशालादिउद्दालकांतछहऋषिइससेअपनेको अनिपुणजानअश्वपतिकेकेयराजाकेपासगयेथे एकएककाउपास्यद्युआदिमेएकएककोसुनाके मूर्द्धात्वेषआत्मनइतिहोवाचेत्यादिसे उनको मूर्द्धादिविधानकरफिरमूर्द्धातेव्यपतिष्यत्यन्मांनागमिष्यत् इसनेव्यस्तोपासनकीनिन्दाकरीहै फिरव्यस्तोपासनछांड़ समस्तोपासनलेकेभूमाश्रयफलदिखायाहैससर्वेषुलोकेषुसर्वेषुभूतेषुसर्वेष्वात्मस्वन्नमत्तीति अन्नभोजनफलहै जोतेजआदिमेपृथक्फल सुनाहै सोअङ्गफलहैतोभीप्रधानाधीनहै उपास्से यह प्रत्यङ्ग मे क्रियापदसुननासमस्तोपासनानुवादार्थहै नकिव्यस्तोपासनके विधानार्थहै तिससे समस्तोपासनकापक्षश्रेयान्है कोईयहक-

हितेहैं किज्यायस्त्वशब्दसे सूत्रकारकोसमस्तोपासनपक्षश्रेयान् दृष्टहै उसीसे व्यस्तोपासनपक्षभीउसकोश्रेष्ठअनुमतहै सोअयुक्तहै वाक्यभेदकीकल्पनासे मूर्द्धावाक्यमें निन्दाकेविरोधसे सूत्रमें ज्यायस्त्वशब्दप्रमाणवानकी आशयसेहै शांकरीयवाक्यभेदादिदोषनहींहैं अवांतरप्रकरणभेदसे जोव्यस्तकाफलथोरा तो बहुनिंद्यहै समस्तोपासनकेफलभूरिसे जिनदिनोंमें मूर्ति पूजा नहींथी उनदिनोंमेऋषिविराट्रूपईश्वरकोऐसेउपासनाकरते थेजैसा किद्यु १ सूर्य २ वायु ३ व्योम ४ जल ५ पृथिवी ६ सिर आं खसांसटुडीलिङ्गपांवजेक्रमसे उसके अङ्ग उपासनार्थ हैं ऐसे ध्यानकरे किईश्वरकासिरद्युलोकहै ऐसेऔरोंमें जानलो ॥

विद्यानानात्वाधिकरण ॥ ३३ ॥

नानाशब्दादिभेदात् ५८

पिछिलेअधिकरणमेफलभेदमेसमस्तोपासनज्याय:कहा था इससेबुद्धिहै किअन्यभिन्नउपासनसमासकरउपासेजावेंगे अपिच वेद्यकेअभेदमे विद्याभेदनहींजानसक्तेहैं विद्याकावेद्यरूपहै जैसा यागकारूपद्रव्यदेवताहै श्रुतिनानामेवेद्यएकईश्वरत्र्वाताहै मनोमय:प्राणशरीर:कंब्रह्मखंब्रह्म सत्यकामइत्यादि तैसेएकप्राण प्राणोवावसम्वर्ग:प्राणोवावज्येष्ठश्चेत्यादि इनमेवेद्यैक्यसेविद्यैक्य है इस पक्षमे गुणान्तरपरहोनेसे नानाश्रुतिव्यर्थनहीं हैं तिससे स्वयापरकीशाखामेपढ़ाएकवेद्यकेआश्रयगुणमात्रउपसंहर्तव्य है विद्याकोंकात्स्नार्थं इसकाउत्तर नानेतिवेद्याभेदमेविद्या भिन्न योग्यहै कैसेशब्दादिभेदात् जैसेवेदोपासीतसक्रतुङ्कुर्वीतेत्यादिश ब्दभेदकहिचुकेपहिले श ब्दान्तरेकर्मभेदइससूत्रसेआदिशब्दसेगै सासम्भवहोवैसागुणादिभेदहेतुयोजनीयहैंननुभिन्नार्थवाचीयाग दानहोमशब्दहैं इनमेविध्यर्थभावनाकाभेदयुक्तहै धात्वर्थभेदसे

औरउपासनमें वेदोपासीतेत्यादि शब्दकाअर्थउपासनाकायाग दिवत्स्वतःभेदकेअभावसेसिद्वगुणब्रह्मएकसविषयसेभीभेदनहीं है फिरकैसेउपासनाभेदहै वेदोपासीत इसमेंशब्दभेदहै न कि यागादिवत्अर्थभेदहैइनसबकामनोवृत्यर्थकेअभेदसेऔर अर्थान्तरकेअसम्भवसेसोकैसेशब्दभेदसेविद्याभेदहैयहदोषनहीं है मनोवृत्तिकेअर्थोंकेअभेदमेंभी अनुवन्धकेभेदसेवेद्यभेदमें विद्याभेद सिद्वहै जैसे रूपादिगुणभेदसेराजोपासनभेदहै जैसे आमिक्षावाजिनगुणोंकेभेदसेयागभेदहैतैसेप्रतिविद्यामेंफलादिभेदसे याद्दरशांडिल्यादिनामभेदसेभेदयुक्तहैजैसेएकचैत्रमल्लादिगुणोंसेमल्लादिनामोंसेकहाताहै एककेहीईश्वरोपासनार्थप्रतिप्रकरण में भिन्न२गुणसिखायेहैं औरएकप्राणकेतहां२उपास्यकेअभेदमेंअन्याद्दग्गुणपन्यत्रउपासितव्यहै अन्याद्दग्गुणअन्यत्रऐसेअनुवन्धभेदसेवेद्यभेदमेंविद्याभेदजानतेहैं एकविद्याविधिहै अन्यगुणविधिहैं श्रुतिनानासेनहींकहिसक्तेहो एकपक्षमेंहेतुकेअभावसे वेद्यैक्यकेनिमित्तमेंविद्यैक्यसर्वत्रनिरङ्कुशजानेमेंभी समस्तगुणोपसंहारअशक्यहै दहरकाध्यानीसबलोकोंमेंकामचारी होता है वैश्वानरध्यातासर्वत्रअन्नभक्षकहोताहै यह अधिकरण पादकोआदिमेंसङ्गतथा परयहांप्रासङ्गिकहै तिससेअच्छा कहा किनानाशब्दादिभेदादिति ॥

अहंग्रहोपासनाधिकरण ॥ ३४ ॥

विकल्पोऽविशिष्टफलत्वात् ५९

विद्याकास्वरूपभेदकहाथा अवअनुष्ठानरीतिकहिताहै विद्याकेतीनभेदहैं अहंग्रह तटस्थ अङ्गाश्रितश्क्याअहंग्रहमेंइच्छासेसमुच्चयहै याविकल्पहै अथवानियमसेविकल्पहै समुच्चयनियममेंहेतुनहीहै विद्याभेदकीस्थितिसे ननु भिन्नअग्निहोत्रदर्श-

पूर्णमासादिकासमुच्चयनियतदेखाहै उक्तसमुच्चयमेहेतु नित्यता
श्रुतिहै विद्याकेसमुच्चयमेनित्यताश्रुतिनहींहै इससेसमुच्चय का
नियमनहींहै नकि विकल्पमे नियम है विद्यान्तर मे अधिकृत
काविद्यान्तरमेअनिषेधसे अन्तिमेठहिराकोइच्छानुसारकरै जि
नकाईश्वरप्राप्तिफललच्यमानहै उनकाविकल्पन्याय्यहै मनोम
यःप्राणशरीरःकंब्रह्मखंब्रह्मसत्यकामादि नहींहै यहदोष समा-
नफलस्वर्गादिकेसाधनकर्ममेयाथा काम्यकेदेखनेसे तिससेजै-
सेइच्छाहो वैसाकरैसोनहींहै विकल्पःअहंग्रहादिका विकल्प-
योग्यहै नकिसमुच्चयक्युंएकफलसेवुहउपास्यकासाचात्करण है
फिरजोएकोपासनामेउपास्यईश्वरादिकेसाचात्कारसेदूसरी व्य
र्थहै औरसुनोसाचात्कारकासमुच्चयपचमे असम्भवहै चित्तवि-
चेपहेतुसे यस्यस्यादद्धानविचिकित्सास्तीतिदेवोभूत्वादेवानप्ये-
तीति जिसकोईश्वरहूं मैऐसासाचात्कारहो मैईश्वरहूं यानहीं
हूं ऐसासंशयभीनहो उसीकोईश्वरकोप्राप्तिहै यह पूर्व श्रुत्यर्थ है
जीतेमे आपकोदेवजानबूझदेवहोकेमरेपीछेदेवोंकोपाताहै यह
दूसरीश्रुत्यर्थहै अहंग्रहादिकेअनुष्ठानकीरीति जेअविशिष्टफला
र्थविद्याहैं उनमेसेअन्यतमकोलेकेउसीविद्यासेवेद्यमेघुसेमिले
एकहोजावेऐसाजबतककरैतबतकउपास्यविषय का साचात्कर
णसेसाचात्कारफलप्राप्तहोवे ॥

काम्यसमुच्चयाधिकरण ॥ ३५ ॥

काम्यास्तुयथाकामंसमुच्चीयेरन्नवापू-
र्वहेत्वभावात् ६०

सयएतमेवम्वायुंदिशांवत्सम्वेदनपुत्ररोदंरोदितिसयोनाम-
ब्रह्मेत्य,पास्तेयावन्नाम्नोगतन्तत्रास्यकामचारोभवतीति अर्थ जो

वायुकोवरुणऔरदिशोंकोगायेंउपासताहै सोपुत्रशोककोनहीं लभताहै सदापुत्रजीतारहिताहै तटस्थोपासनविषयहैं क्रियावत् अदृष्टआत्मासेअपनेफलकोसाधकइनकाम्यविद्योंमेसाक्षात्कारणकीअपेक्षानहींहै फिरइनकायथाकामसमुच्चयहै यासमुच्चयनहींहै पूर्वहेत्वभावात् अविशिष्टफलत्वादिति इस विकल्प हेतुकेअभावसे ॥

प्रतीकोपासनाधिकरण ॥ ३६ ॥

अङ्गेषुयथाश्रयभावः ६१

लौकिकऔरकर्माङ्गकेभेदसेप्रतीकदोढबहैं लौकिकप्रतीक कानिर्णयपूर्वहोचुकाहै अवयथाकाम्यकर्माङ्गोमेविचार है जैसे क्रतुकेसेवनमेक्रत्वाश्रितअङ्गोंकासमुच्चितअनुष्ठानकानियमहैतैसे अङ्गानुष्ठानमेअङ्गाश्रितउपासनोकेअनुष्ठानकानियम है यह सूत्रार्थहै कर्माङ्गउद्गीथादिमेजेआश्रितप्रत्ययतीनवेदोंमे विहित हैं क्याउनकासमुच्चयहै यायथाकामहैं इससंशयमे यथाश्रयभावः कहाहै जैसे इनकेआश्रयस्तोत्रादिमिलकेहोतेहैं ऐसे प्रत्यय भीआश्रयतन्त्रसेप्रत्ययोंकामिलकेअनुष्ठानहै यदिप्रयोगविधिअङ्गानुष्ठानकरावे औरनकिउपासनोंकातदाअङ्गाश्रितउपासनाव्यर्थहैं यहभावहै ॥

यहपूर्वपक्षसूत्रहै ॥

शिष्टेश्च ६२

जैसे आश्रयस्तोत्रादितीनवेदोमेंशिष्टशंसितविहितहैं ऐसेहीआश्रितप्रत्ययहैं उपदेशकृतकुछविशेषनहींहै अङ्गोंकाऔरअङ्गाश्रितप्रत्ययोंकागोदोहनके अनुष्ठानकानियमनहींहै चमसके पलटेमे विधानसे गोदोहनकेनियममे चमसविधिव्यर्थहो उपा-

सनोंकाकिसीअङ्गकेपलटेमेविधाननहींहै इससे समुच्चयनियम-विरुद्धनहींहै यहभावार्थहै ॥

समाहारात् ६३

होतृषदनाद्धैवापिदुरुद्गीतमनुसमाहरतीति ॥

जोप्रणवऋग्वेदियोंकोहै सोसामवेदियोंकोउद्गीथहै इससे छांदोग्यमेप्रणवउद्गीथकेऐक्यकोध्यानविधिहै उसकाफलाथंवा द्दहोतृषदनादित्यादिहै होताकाशंसनहोतृषदनशब्दसेलक्ष्यमान है स्वरादिप्रमाद से उद्गाताबुरे उक्थको अच्छेहोतृष*दनसे निर्दोषकर्त्ताहै शंस्यमानप्रणवसेअपनेउद्गीथकोऐक्यकेध्यानबल से सामवेदकेउद्गीथध्यानकाऋग्वेदोक्तप्रणवसेसम्बन्धदेखाहै सो होअङ्गोंकासबवेदांतमें विहितोपास्तिकेसमुच्चयमें लिङ्गहै प्रण-वरूपवस्तुकाऔरउपासनोंकावेदांतोक्तमाहात्म्यसेवेदांतरोक्तअङ्ग केसम्बन्धसमानतासे सर्बवेदोदितप्रत्ययोंकेउपसंहारकासूचक-लिङ्गदर्शनहै ॥

* स्थल ॥

गुणसाधारण्यश्रुतेश्च ६४

विद्यागुण और विद्याश्रयओं को साधारण तीनवेदमे सुनाहै ओंसेत्रयीविद्यायात्रिवेदोक्तकर्मवर्ततेहैं ओमित्याश्रावयत्योमितिशंसत्योमित्युद्गायतीतिच इससे ध्येय ओंकेसाधारण्य से-ध्येयाश्रितध्यानोंकेसमुच्चय से अनुष्ठानरूपलिङ्गदर्शनहै अन्वयकहाअबव्यतिरेककहितेहैं अथवागुणसाधारण्यश्रुतेश्चेतियदि कर्मगुणउद्गीथादिसबसबप्रयोगसे साधारणनहींहोवेतिससे उद्गीथादिकेआश्रयप्रत्ययोंकासहभावनहींहो उद्गीथादिसर्वाङ्गग्राहिप्रयोगवाक्यसे सर्वप्रयोगसाधारणसुनेहैं फिरआश्रयसहभावमें प्रत्ययसहभावहै समाधिसूत्रहै ॥

नवातत्सहभावाश्रुतेः ६५

जैसे आश्रयभावआश्रितउपासनोंकाहोनायोग्यनहींहै कैसे तत्सहभावाश्रुतेः जैसे त्रिवेदीमेपढ़े स्तोत्रादिअङ्गोंकासहभावसुनाहै यहस्वाग्रहोत्वाचसमस्वोन्नायस्तोत्रमुपाकरोतिस्तुतमनुशंसतिप्रस्तोतःसामानिगायहोतुरेहियजेत्यादि ऐसो उपासनोंमेसहभावश्रुतिनहींहै प्रयोगवाक्यउपासनोंकेसहभाव प्राप्त होसोनहीं उपासनापुमर्थ है प्रयोगवाक्यक्रत्वर्थउद्गीथादिकेसहभावप्रापकहो विमतउपासनाक्रतुमे समुच्चयकरअनुष्ठेय नहीं है भिन्नफलसे गोदोहनवत् जैसे एकगायकी दोवच्चेचोंटेहैं तैसे उद्गीथादिक्रत्वर्थाश्रय हैं हैंभीतोभीगोदोहनादिवत्पुमर्थहैं अङ्ग औरअङ्गावलम्बनउपासनोंका यहउपदेशाश्रयविशेषहै किएक क्रत्वर्थहैंएकपुमर्थहैंयहशिष्टेःसूत्रका निरास है समाहाराद्गुणसाधारण्यश्रुतेश्चजोदोलिङ्गमानांतरसे प्राप्तकेद्योतकहैं नकिसाधकहैं श्रुतियुक्तिके अभावसे सहभावकेअकारणहैं आश्रयाधीनउपासनआश्रयकेअभावमे मतहो औरनकिआश्रयसहभावसे सहभावनियमयोग्यहै सहभावनियमनसुननेसे तिससे जैसीइच्छा होवे तैसीउपासनाअनुष्ठानकरे ॥

दर्शनाच्च ६६

प्रत्ययोंकाअसहभावश्रुतिदिखातीहै एवंविद्धवैब्रह्मायज्ञंयजमानंसर्वांश्चर्त्विजोभिरक्षतीति ऋग्वेदादिविहितांगलोपसेव्याहृतिहोमप्रायश्चित्तादिज्ञानवान्ब्रह्माहै सबप्रत्ययके उपसंहारमे सबसर्ववित् इसरीतिसे नज्ञानीब्रह्माकोइतरोंकापालनकोर्तनहो तिससे यथाकामउपासनोंकासमुच्चयऔरविकल्पहै ॥

इतिश्रीयुक्ताराचन्द्रवर्मणाकृतेब्रह्मसूत्रभावाभाष्येतृतीया-

ध्यायस्यतृतीयःपादःपूर्णः ॥

ज्ञानान्तरङ्गबहिरङ्गसाधनपाद ४

आत्मज्ञानस्वातंत्र्याधिकार ॥ १ ॥

पुरुषार्थोतःशब्दादितिवादरायणः १

अबऔपनिषद्आत्मज्ञानक्याअधिकारीकेद्वारासेकर्ममेघु-
सताहै यास्वतन्त्रपुमर्थकासाधनहैऐसामीमांस्यमानअपनीअभि
प्रायसेहिउपक्रमताहै पुरुषार्थोतइति अतःवेदांतविहितआत्म
विज्ञानस्वतन्त्रसेपुमर्थसिद्धिवादरायणमानताहै यह कैसे जाना
है शब्दादिति वेदने कहा है सयोहवैतत्परमंब्रह्मवेदब्रह्मैवभव-
तीत्यादि श्रुतिवृन्दकेवलविद्याकोपुमर्थहेतुसुनातेहैं ॥

शेषत्वात्पुरुषार्थवादोयथान्येष्विति-
जैमिनिः २

उक्तअसहमानकर्मठबोलउठा जैसे आत्माकर्त्ताहै कर्मशेष
मेतैसेआत्मज्ञानभीव्रीहिप्रोक्षणादिवत्विषयद्वारा से कर्म सम्ब-
न्धिहै इसके ज्ञातप्रयोजनआत्मज्ञानमेजोफलश्रुतिहै सोअर्थवाद
है यहजैमिनिमतहै सूत्रमेअर्थवादपददोहराकरलोफिरज्ञानसे
जोपुमर्थवादहै सोअर्थवादहै यहभावहै यथान्येषु द्रव्य संस्कार
कर्मसु द्रव्यमे यस्यपर्णमयोजुहूर्भवतीत्यादि संस्कार मे यदङ्क्ते
चक्षुरेवभ्रातृव्यस्यवृंक्ते अर्थ पर्णमयीद्रव्य यजमानकाअञ्जन सं-
स्कारहै कर्ममेयत्प्रयाजानुयाजाइज्यंतेवर्मवाएतद्यज्ञस्यक्रियतेव
र्मयजमानस्यभ्रातृव्याभिभूत्याइत्यादि वर्म कवच प्रयाजादिक-
र्महै इत्यादिमेफलकासुननाअर्थवादहै तैसाहीज्ञानमेफलश्रुति
अर्थवादहै अङ्गिकेफलसेअङ्गफलनिश्चितहै सिद्धान्ति शङ्का कैसे

अनारभ्याधीतआत्मज्ञानकीप्रकरणादिहेतुकेविनाक्रतु मे घुसा-
सक्तेहो ज्ञानकर्माङ्गवादी कर्त्ताकेद्वारावाक्यसेआत्मज्ञानकाक्र-
तुमेसम्बन्धहै सोनहींवाक्यसेविनियोगकी असिद्धि से अनारभ्या-
धीतोंका अव्यभिचारिकिसीद्वारसेवाक्यनिमित्तक्रतुसम्बन्धकल्प्य
मानहै कर्त्ताव्यभिचारिद्वारसेलौकिकवैदिककर्म मे साधारण है
तिससेकर्त्ताकेद्वारा आत्मज्ञानकाक्रतुसम्बन्धसिद्ध नहीं है समा-
धिज्ञानकर्माङ्गवादीसेहै किवैदिककर्मोंसेअन्यत्र व्यतिरेक ज्ञान
काअनुपयोगनहींहै देहभिन्नात्मज्ञानलौकिककर्ममेउपयुक्तनहीं
है देहात्मासेभीदृष्टार्थमेप्रवृत्तिकीसिद्धिसे वैदिककर्मोंकाऊरपी-
छेफलदेहभिन्नात्मज्ञानकेविनाप्रवृत्तिकीसिद्धिनहींयुक्तहै इससे
देहभिन्नआत्मज्ञानउपयुक्तहै ननुअपहतपाप्मादिविशेषणोंसेअ
संसारीपरऔपनिषददर्शनप्रवृत्त्यङ्गनहींहोगा सोनहीं जिसकेअ
र्थंजाय।दिप्रियभोग्यहै सोआत्माद्रष्टव्यहै इसभोग्यचिन्हसे सूचि
तभोक्तृभिन्नअकर्तृस्वरूपनहींहै स्तावकहैंअपहतपाप्मादिविशेष
ण लटकसेवार२असंसारीकासंसारीबनातेहैं याउलटाकरतेहैं

आचारदर्शनाच्च ३

जनकोहवैदेहोबहुदक्षिणेनयज्ञेनेजेयक्ष्यमाणोवैभगवन्तो-
हमस्मीत्यादि ईजे जनकयज्ञकरचुकाथा फिरवैऋत्विज्कैकेय-
राजाकेपासगयेउसनेकहाकिमैयज्ञकरूंगा आपयहांठहिरियें ऐ
साब्रह्मवेदोंकाकर्ममेसम्बन्धदेखाहै यद्यपियहवाक्यविद्या विधि
परहै तथापियज्ञमेऐसाहै कि जैसे सज्जनकेपासगवैयाजावेबु-
हुकुछगीतसुनधनदेदेवेउद्दालकादिअपनेबेटोंकोसिखातेथे इस
सेगार्हस्थ्याकासम्बन्धविदितहै अल्पायासज्ञानसेपुमर्थकीसिद्धि
सेबहुायासवित्तव्ययकर्ममेक्युंवेफसते जोघरमेसहितमिलेतोवन
गिरिमेकिसलियेजावे ॥

तच्छ्रुतेः ४

यदेवविद्ययाकरोतिश्रद्धयोपनिषदातदेववीर्यवत्तरम्भवतीति अर्थ लोकमेंजोकामविचारसेप्रीतिसेसामग्रीसेकिया जाता है सोअतिपूर्णहोताहै शेषअधूरेरहितेहैं इससेकेवलविद्यापुमर्थनहींहै किन्तुकर्मसहितहै जोसबनङ्गेवोमुण्डेभिखारीफिरे तो खानेपहिरनेकोकहांसेमिले ॥

समन्वारम्भणात् ५

तम्विद्याकर्मणीसमन्वारभेतेइति अर्थ परलोककेजानेवारेकेसाथवेजातेहैं फलकेआरम्भमेंविद्याऔरकर्मकासाहित्यदेखने सेविद्यास्वतन्त्रफलार्थनहींहै नहींनिपुणशिल्पवेदीविद्यासेघटकाकामदेसक्ताहै यहश्रौतऔरसौत्रार्थहै ॥

तद्वतोपिविधानात् ६

आचार्यकुलेवेदमधीत्ययथाविधानंगुरोः कर्मातिशेषेणाभिसमावृत्यकुटुम्बेशुचौदेशेस्वाध्यायमधीयानइत्यादि ऐसीश्रुतियां समस्तवेदार्थज्ञानीकोकर्मकाअधिकारदिखातीहैं तिस्सेभीज्ञानस्वतन्त्रफलकाहेतुनहींहै यद्यपिअधीत्यपदसुन्नेसेपाठमात्रप्राप्तहै नकिअर्थज्ञान तथापिजैसाधानोंकाकूटनाभूसीकुटानेकेअन्ततकहै ऐसाअध्ययनभीअर्थज्ञानकेअन्ततकहै क्युंकिपाठकादृष्टअर्थज्ञानफलकेसम्भवहोनेमेंपाठकाअदृष्टार्थमाननायोग्य नहीं है यहपूर्वतन्त्रमेंस्थितहैऔरब्रह्मभीवेदार्थहैइनहेतुओंसेब्रह्मज्ञानीकोभीकर्मकाविधानहै ॥

नियमाच्च ७

कुर्वन्नेवेहकर्माणिजिजीविषेच्छतंसमाः एवन्त्वयिनान्यथेतोस्तिनकर्मलिप्यतेनरेइति यजुर्मन्त्रार्थ इह देहसे कर्मकर्त्ताहुआ

सोवर्षंजीवनकीइच्छाकरजोतूअपनेशुभकर्मसेजीवेगा तोतुजिन रमे कर्मअर्थात्पापनलगेगा इत: कर्मसे अन्यथा अन्यकुछजीवनार्थयत्नकर्मकेविनाशयेनहींहै तथाएतद्वैजरामर्यंसत्रं यदग्निहोत्रञ्जरयावाह्यान्मुच्यन्तेमृत्युनावेतिऐसेनियमोंसे विद्याकर्मशेषहैहोचुकाकर्मठोंका।सिद्धांतअवसुनोज्ञानियोंकाआकूत ॥

अधिकोपदेशात्तुबादरायणस्यैवन्तद्दर्शनात् ८

तुशब्दजैमिनीयमतव्यावर्तकहै जोकहाथाकि शेषत्वात्पुरुषार्थवाद:सोअयुक्तहै कैसे अधिकोपदेशात् यदिसंसारी शारीर शरीरमात्रसेभिन्नवेदान्तमे उपदिष्टहोतदाउक्तरीतिसेफल श्रुतिअर्थवादहो अधिक: शारीरसेईश्वरकर्तृत्वादिधर्मशून्यअपहतपाप्मादिविशेषणयुक्त योगीवेद्यवेदांतमे उपदिश्यमान है ऐसे ज्ञानकर्ममेप्रवर्तकनहींकिन्तुउलटाकर्मोच्छेदक है तिससे पुरुषार्थोत: शब्दादिति इससेजोमतबादरायणकाथा सोतैसाठहिराहै उसकोशेषत्वादिहेत्वाभासोंसेनहींहटासक्तेहो तत् तमधिकं देहीसेईशकोश्रुतिदिखाती हैं य:सर्वज्ञ:ससर्ववित्महद्भयम्वज्रमुद्यतमित्यादि जोप्रियादिसूचनसेसंसारीकेवेदनार्थअनुकर्षणथा जैसा किआत्मनस्तुकामायसर्वम्प्रियम्भवतीत्यादि सोभी अस्यमहतोभूतस्येत्यादि योऽशनायापिपासेशोकम्मोहंजरांमृत्युमत्येति ऐसेवाक्यशेषोंसेअधिककी उपदिदिक्षामेअत्यन्तभेदकीअभिप्रायसेजीवकाअनुकर्षणनहींहै इस्से अविरोधहै ज्ञान कर्माङ्गहै अफलहोनेमेकर्मशेषाश्रयत्वसेयहहेतुअसिद्धहै क्युंकिपारमेश्वरस्वरूपशारीरकापारमार्थिकऔरऔपाधिकशारीरहै नान्यदतोस्तिद्रष्टा इनसेवेदान्तमेयहीवार९है ॥

तुल्यन्तुदर्शनं ९

आचारसेकर्माङ्गज्ञानकहाथा उसकाउत्तरहै कि तुल्यं अ कर्मशेषमेविद्याकाआचारदर्शनतुल्यहै एतद्धस्मवैतद्विद्वांसआहु ऋषयःकावषेयाःकिमर्थावयमध्येष्यामहेकिमर्थावयंयक्ष्यामहेए- तद्धस्मवैतत्पूर्वेविद्वांसोअग्निहोत्रन्नजुहवांचक्रिरेइति यहयज्ञादि मेविरागसेईश्वरमेरागादिदिखातीहै आत्मवेदी ब्राह्मणपुत्रवित्त लोकतीनइच्छाकोछाड़भीखमेरुचिसेमुक्तिमानतेहैं यहएकश्रुति काअर्थहै अथभिक्षाचर्यंमित्यादि याज्ञवल्क्यादिब्रह्म वेदियोंने- कर्मत्यागहीसंन्यासकहाहै नकिलिङ्गोंकाधरनायाज्ञवल्क्यप्रव- व्राजेति औरयक्ष्यमाणोवैभगवन्तइत्यादि वैश्वानरविद्याविषय मेलिङ्गदर्शनहै इससे सोपाधिकब्रह्मविद्यामेकर्मज्ञानकासाहित्य सम्भवहै ब्रह्मवेदीकोलोकसंग्रहार्थभीकर्ममे प्रवृत्ति अनुचित है ब्रह्मविद्यामेकर्मअङ्गनहींहै प्रकरणादिकेअभावसे ॥

असार्वत्रिकी १०

यदेवविद्ययाकरोतीति यहश्रुतिकाविषयसबविद्यानहीं हैं किन्तुप्रकृतउद्गीथविद्याहीविषयहै इससेसबविद्याकर्माङ्गनहीं हैं

विभागःशतवत् ११

तद्विद्याकर्मणी। इसकाउत्तरहै कि विभागः यहांबांटऐसा है किविद्याअन्यपुरुषकेपीछेजावे औरकर्मअन्यपुरुषकेपीछेजा वेहै कैसे शतवत् जैसे सौदोकोदेनेकाहिनेमेपचासरएकएकको देतेहैं समन्वारम्भवाक्यमुमुक्षुपरनहींहै संसारी परहै नुकाम- यमानइति औरअकामयमानमुमुक्षुसेपृथक्उपक्रमितहै संसा- रीमेविद्याविहितयानिषिद्धग्रहीतहै विशेषकेअभावसे विहितो द्गीथादिविद्या।निषिद्धहै नग्ननारीध्यानादिरूपवत् कर्मभीयथा-

प्राप्तिकेअनुवादादिसेविहितनिषिद्धहैऐसे अविभागमेभीसमन्वारम्भवाक्यसमर्थहै ॥

अध्ययनमात्रवत: १२

आचार्यकुलाद्वेदमधीत्यइसमें अध्ययनमात्रवालेकोकर्मविधि निश्चितहै ननुवेदार्थज्ञानशून्यमेकर्ममें अधिकारनहो नहींमैंअध्ययनजन्य कर्मकेबोधन अधिकारकेहेतुकाबारकहूं किन्तुहिंस्वातंत्र्यसेऔपनिषद्आत्मज्ञानप्रयोजनवत्जोजानपड़ताहै सोनहीं कर्माधिकारहेतुहोसक्ताहैयहबतलाताहूं जैसे एकक्रतुकाज्ञानक्रत्वन्तरमेंअपेक्षितनहींहै तैसा हीकर्ममात्रमेभीवेदान्तार्थज्ञानअपेक्षितनहींहै ॥

नाविशेषात् १३

कुर्वन्नेवेह इननियमोंमेंविद्वान्काविशेनहींहै विद्वान्अविद्वान्कोअविशेषसेनियमविधानहै ॥

स्तुतयेऽनुमतिर्वा १४

कुर्वन्नेवमेंअपरविशेषकहिताहै किप्रकरणकीसामर्थ्यसे विद्वान्हीकुर्वन्सेसम्बद्धहै सोभीविद्यास्तवार्थकर्मानुज्ञानद्रष्टव्य है नियमअज्ञकोहै ज्ञकोज्ञानकेस्तवार्थहै कुर्वन्इसकाव्यासमत से अर्थहै कि एवं कर्मकर्त्तानरमें नेतो ब्रह्मभावसेअन्यथास्तिकर्मसेसंसारनहींहोगा यत: कर्मनलिप्यतेकर्मअपूर्वरूपलेपार्थनहींहै

कामकारेणचैके १५

मुख्या: ॥

कोईप्रत्यक्षकियाविद्याकाफलउसीकोथामकेफलांतरसाधनप्रजादिमेंप्रयोजनकाअभावसुनाताहै कामकारेणेति वाजसनेयिनी है एतद्धस्मवैतत्पूर्वेविद्वांस:प्रजांनकामयन्तेकिम्प्रजयाकरिष्या-

नोयेषांनोयमात्माऽयंलोकइति अर्थ एतत्ब्रह्म येषां नो हम-
को अयं अपरोक्षआत्मा अयमेवलोकः पुमर्थहै ते हमप्रजादि-
सेक्याकरेंगेऐसाशोचकर्मकोछाड़तेहैं मैकहिचुकाप्रियवारर कि
विद्याकाफलप्रत्यक्षशब्दसेअनुभवमेअढ़ाहै नकिक्रियाफलवत्का
लांतरभावीहै विनासुनेकभीविद्याहोतीहीनहींहै इस्से भीनवि
द्याकर्मकाशेषहै औरनकिविद्याविषयमेफलश्रुतिअयथार्थठहि-
रासक्तीहो ॥

उपमर्दंच १६

अविद्याकृतक्रियाकारकफलरूपसवप्रपञ्चकाविद्यासामर्थ्यसेस्व
रूपकाउपमर्दचित्तसेनिवृत्तिपढ़तेहैंयत्र त्वस्यसर्वमात्मैवाभूत्तत्के
नकम्पश्येदित्यादि वेदांतसेकहोआत्मज्ञानसेकर्माधिकारमेजो
सिद्धिकोप्रत्याशासनहै उसकोकर्मकेअधिकारकाउच्छेदहै तिस
सेविद्यास्वतन्त्रहै ॥

ऊर्ध्वरेतस्सु चशब्दे हि १७

शब्देवेदमेऊर्द्धरेतःआश्रमोंमेविद्यासुनतेहैंनकिउनमे कर्मा-
ग्निहोत्रादिएतमेवप्रव्राजिनोलोकमिछन्तःप्रव्रजन्तीत्यादि अनेक
श्रियोंकोविद्याकाअधिकारनहीं कहाहै अथवा शब्देहि जिससे
वेदमे तीनआश्रमपठित हैं त्रयोधर्मस्कन्धाइति कर्मप्रधानआ-
श्रमतीनहैं ब्रह्मचर्यगृहाश्रमवानप्रस्थ३ चौथाब्रह्मसंस्थहै यमाश्र
ममिक्छेत्तमावसेदिति अर्थजिसमे रुचिहोउसमेबसेनकिबचनसुन-
हठसेसन्यासमेघुसेरुचिकेअनुसारश्रुतिस्मृतिमेभेदहै तिससे वि-
द्याकर्मकानसमुच्चयहैनकिविकल्पहै किन्तुज्ञानहीमोक्षकासाध
नहैरतिपुत्रधर्मार्थसेत्रिविधविवाहहैनित्यनैमित्तिककाम्यभेद से
त्रिविधहैअध्ययनसालमेहोब्रह्मचर्याश्रमपूराहै शेषायुर्विवाहार्थ-

है यदहरेवविरज्येततदहरेवप्रव्रजेद्ब्रह्मचर्याद्वागृहाद्वावनाद्वेति-- इसनेवैराग्यमात्रसेप्रव्रज्याकोविधानकरगृहाश्रमकीनित्यताका बाधकियाहै तस्मादेकोबह्वीर्विन्देतेति श्रुतिः तस्मादेकस्यबह्वो जायाभवन्तिनैकस्यैवबहवःसहपतयइति ऊर्ध्वरेतसोऽज्ञानमात्रंना नुष्ठेयमितिस्वांतंजैमिनिमुनेः ॥

परामर्शंजैमिनिरचोदनाचापवद तिहि १८

त्रयोधर्मस्कंधाः जेशब्दऔर्ध्वरेतसादिकेसाधननहींहैं जिससेइनमेंपरामर्शहोआश्रमांतरकाजैमिनिमानताहै नकिविधि कैसे इनमेंलिङ्गादिमेंसेकोईचोदनाशब्दनहोनेसे जेशब्दअर्थान्तरपरउपलब्धहैं त्रयोधर्मस्कन्धाइसमेंक्रमसेहै कियज्ञोध्ययनंदानमिति प्रथमस्तपएवद्वितीयो ब्रह्मचर्याचार्यकुलवासी तृतीयोऽत्यन्तमात्मानमाचार्यकुलेवसादयन् सर्वेएतेपुण्यलोकाभवन्तीति अर्थ आश्रमोंकाअनात्यन्तिकफलपरामर्शपूर्वककहिकेफिरआत्यन्तिकफलद्वाराब्रह्मसंस्थकेस्तवार्थब्रह्मसंस्थोऽमृतत्वमेतीतिकहाहै ठीकहैकोपरामर्शमेंभीआश्रमप्राप्तहैं तोभी उनकोप्रसिद्धिस्मृति आचारनेकरीहै और नकि प्रत्यक्षश्रुतिनेप्रत्यक्षश्रुतिविरोधसेवे सेव्यनहीं हैं

याअनधिकृतअन्धादिकेलियेहैं गृहीदोविधहैं साग्निकऔरनिरग्निकभेदसेननुगार्हस्थ्यभी और्ध्वरेतसोंकेसाथपरामृष्ट है जैसे यज्ञोऽध्ययनंदानमितिप्रथमः ठीकहै तोभीतोगृहस्थोंकोअग्निहोत्रादिकेविधानसेश्रुतिसिद्धगार्हस्थ्य है तिससे स्तवार्थपरामर्श है नकिचोदनार्थचापवदतिहि प्रत्यक्षश्रुतिगृहस्थसेअन्यका निषेध करती है वीरहावाएषदेवानांयोग्निमुद्वासयते आचार्यायप्रियं धनमाहृत्यप्रजातंतुंमाव्यवच्छेत्सीर्नापुत्रस्य लोकोस्तितत्सर्वेपश-

वोविदुरित्यादि औरश्रुति येचेमेरण्ये श्रद्धातपइत्युपासते तपःश्रद्धेयेह्युपवसंत्यरण्ये इनमेदेवयानका उपदेशकिया है नकिगृहस्थान्य आश्रमकाउपदेशकियाहै तपएवद्वितीयइत्यादिमेआश्रमांतरकाकहिनासंदिग्धहै स्कंधशब्दआश्रममेंअरूढ़होनेसे और एतमेवप्रव्राजिनोलोकमिच्छन्तःप्रव्रजन्तीति आत्मलोकवड़ाजान पुत्रादिप्रेमछाड़अवश्यपारिव्राज्यकरतेहैं सोयहवर्तमान क्रियोपदेशसेस्तुतिहै स्कन्धश्रुतिपुरोवादहै नकिअनुवादहै वेदमेआश्रमभेदनथा नयीश्रुतिऔरस्मृतियोसे उनके अनेकभेदवहिरेचिन्हसे औरभाविविचारसेहैंकात्यायनस्मृतिहै किगायत्रोब्राह्मःप्राजापत्योबृहन्निति ब्रह्मचारीचतुर्विधः अर्थ गायत्री मात्रपढा १ वेदकेअन्तितकपढ़ा २ स्वदारगामी ३ नैष्टिकगुरुघरमे मरा ४ वार्त्ताकःशालीनोयायावरोघोरसंन्यासिकश्चेति कमायखावे १ वैठेवैठेमिलेसोखाय २ छहकर्मसेखावे ३ उञ्छवृत्तिग्रामवासी घोरसंन्यासीहै हिंसाविमुखसे ४ जैचारगृहीकहे वैखानसऔदुम्बरोवालखिल्यःफेनपश्च वन्यखावे १ गूलरवेरआदिखाये २ आठमासकोकमाईवर्षामेचारमासखावेबचेसोदेदे ३ गिरेपत्ते फलखावे ४ जैचारगृहीहैं कुटीचकावहूदकाहंसाःपरमहंसाश्च पुत्रकेघरमेरहेत्रिदण्डी १ जलादिपासरखे तीर्थमेफिरे २ छक्का दिकरेंगाउं मेएकरातिरहें ३ सर्वकर्मत्यागीआत्मरत ४ इसने लोककासंस्तवकियाहै नकिपारिव्राज्यकीविधिकीहै ब्रह्मचर्यादेवप्रव्रजेदित्यादि इनसे जावालादिनेप्रत्यक्षपरिव्रजनविधानकियाहै ठीकतोहै परजैअपेक्षाहैनहींहैं जावालाकेनामसेआधुनिकहैं ॥

दूसरावर्णक ॥

त्रयोधर्मस्कन्धाइति इससेआश्रमों का अधिकार कर फिर पढ़ाकि सर्वेएतेपुण्यलोकाभवन्तीति इससेआश्रमसेवियोंको पु

ण्यलोकफलकहिकेपढ़ाकि ब्रह्मसंस्थोमृतत्वमेतीति इससेमोक्ष कासाधनब्रह्मनिष्ठाही कहीहै सोयह ब्रह्मनिष्ठापुण्यलोककामी आश्रमियोंकेलियेहैसोभीनहींहै ब्रह्मनिष्ठासर्वव्यापीसम्भवहैआ-श्रमकेकर्मोंको करके जैसा अवकाशहोवे तैसा ब्रह्ममे निष्ठाक रनेकोसुकरहै औरकहांयहनिषेधहै किलोककामीब्रह्मकोनजा नेऔरकहांवेदमेपढ़ाहै किकषायवस्त्रपहिरने से ब्रह्म वर्षता है तिससेहै सबआश्रमियोंकेअर्थब्रह्मनिष्ठा सबव्यापारछोड़ब्रह्ममे चित्तलगानाब्रह्मनिष्ठाहै कर्मानुष्ठानऔरकर्मत्यागकामिथो वि-रोधसेकर्मठमेब्रह्मनिष्ठाकासम्भवहोनहींहै तिससे श्रौतादि कर्म कात्यागहीब्रह्मनिष्ठाहै ॥

अनुष्ठेयंवादरायणःसाम्यश्रुतेः १९

अनुष्ठेय अर्थात् आश्रमांतरसेव्य है यह वादरायण मानते हैं मैव्यासइसजैमिनिमतकानिरासकर्त्ताहूं कि वेदसे अग्निहोत्रा-दिकेसुन्नेसेवेअवश्य अनुष्ठेयहैं फिरउनकेविरोधसेअनधिकृताधि कृतआश्रमांतरहैं जैसे गार्हस्थ्यसेव्यहै तैसे आश्रमांतरभीअनि कुकोसेव्यहै कैसे साम्यश्रुतेः त्रयोधर्मस्कन्धाइत्यादि जैसेश्रुत्यन्त रसेविहितगार्हस्थ्यकाइसमेपरामृष्टहै ऐसे आश्रमांतरभीप्रतिप त्तव्यहै दृष्टांत उपवीतविधिपरवाक्यमेजैसेशास्त्रान्तरसेप्राप्त नि वीतप्राचीनावीतकापरामर्शहै उपवीतम्मनुष्याणांप्राचीनावीत म्पितृणामुपवीतन्देवानामिति अर्थ दैवकर्ममेउपवीतका विधा नहै उपवीतकेस्तवार्थदोकाअनुवादहै मानुषकर्ममेदेहार्थवस्त्र-कावस्थननिवीतहै सोकर्यार्थसे प्राप्तहै पित्र्यकर्ममेप्राचीनावीत-विध्यन्तरसेप्राप्तहै तिससेगृहस्थीऔरआश्रमांतरतुल्यसेव्यहैं तै-से एतमेवप्रव्राजिनोलोकमिच्छन्त इत्यादि इससेपारिव्राज्यविधेयहै वि धेयवेदानुवाक्यादिकोसाहित्यसे औरभीश्रुतिसाम्यहै कि येचे-

त्वादि विधेयपञ्चाग्निविद्याकेमाथवानप्रस्थकोकहिनेसे वानप्रस्थभीविधेयहै तौनस्कंधप्रतिज्ञातहैं भूरियज्ञादिधर्महैं जैसे यष्टव्य अध्येतव्यदातव्य पृथक्जन्मेहैं इनको आश्रमकेसम्बन्धसे अन्यत्रतौनमेअन्तर्गतनहींकरसक्तेहो श्रुतिमेयज्ञादिचिन्होंसेगृही एकधर्मस्कन्ध ब्रह्मचारीदूसराकहाहै तपोमुख्याश्रमसेओरधर्मस्कन्धकोनहै येचइसआरख्यचिन्हसे तिस्से परामर्शमेभी आश्रमांतरअनुष्ठेयहै ॥

संन्यासाधिकरण ॥ २ ॥

विधिर्वाधारणवत् २०

आश्रमान्तरकोविधिहै नकिपरामर्शमात्रहै स्कंधश्रुतिसेन नुस्कंधश्रुतिविधायिकामानेमेएकवाक्यकारोधहोगाओर सो प्रतीतहै पुण्यलोकफलदतौनधर्मस्कन्धहैं ओरब्रह्मसंस्थतामोक्षफलदाहैसत्यहैजोकहातुमनेहमतोएकवाक्यकोछाड़विधिमानते हैं अपूर्वसेओरविध्यन्तरकेनदेखनेसेविस्पष्टसे आश्रमविधिभेदकल्पनवरहै आश्रमान्तरप्रत्ययसे गुणवादकल्पनासेएकवाक्यअसिद्धहै धारणवत् यथाधस्तात्समिधन्धारयन्ननुद्रवेदुपरिहिदेवेभ्योधारयतीति अर्थ महापितृयज्ञमे प्रेताग्निहोत्रमेस्रुक्सेधराहविजबआहवनीयकेपासलावेतवहविकेनोचेसमिध कोधरे अनुद्रवेदितिइससेविहितहैनोचेधरनास्तावकसे उपरिहि इसकेसाथ एकवाक्यहोनेमेभीदैवहोममेस्रुग्दण्डकेऊपरसमिधधरनेमे विधिमानीहै अपूर्वसेयहवाक्यभेदतोसरेअध्यायमे जैमिनिसेकहागयाहै विधिस्तुधारणेऽपूर्वत्वादिति तैसेयहांभीआश्रमपरामर्शश्रुतिविधिकल्पीगयीहै इस्से चारआश्रमोंकाविधानहै यहपक्षकहाथा अबतोपरामर्शसेतीनकाअनुवादओरएक पारिव्राज्यकाविधानहै किब्रह्मसंस्थतास्तवसामर्थ्यसेअवश्य विधेय है ओर

सोब्रह्मसंस्थताक्याचारआश्रमोंमें जिस किसीकोयापरिव्राजक
कोहैयहविवेक्तव्यहैचौथाआश्रमव्यासनेब्रह्मसंस्थशब्दसे चलाया
है रीति यदिब्रह्मचार्यन्तआश्रमोंकेपरामर्शमें परिव्राजकभीप-
रामृष्टहै तदाचारोंकेपरामृष्टकेअविशेषसेअनाश्रमीनहो अना-
श्रमीनतिष्ठतइमनिषेधसे जोकोईचारोंमें ब्रह्मसंस्थहोगाऔर प
रामृष्टनहींहै तिससे परिशिष्यमाणपरि ब्राट्हो ब्रह्म संस्थ सिद्ध
होगा कोईवैखानसग्राहीतपःशब्दसे परिव्राट् परामृष्ट कहते हैं
सोअनुचितहै वानप्रस्थकेविशेषणतपशब्दसे परिव्राट् का ग्रहण
योग्यनहींअन्यथानिर्बाहहोतो जैसे ब्रह्मचारीऔरगृहीअपने२
विशेषणोंसे विशेषितहैं तैसे भिक्षुवैखानसभीहोयहयुक्तहै तप
कृच्छ्रादिवानप्रस्थकेअसाधारणधर्म है कायक्लेशमुख्यसे कायक्ले
शमें तपरूढ़है औरभिक्षुकातपइन्द्रियसंयमादिहैं फिरचारआ
श्रमप्रसिद्धहुये तोतीनकापरामर्शअन्याय्यहै औरभेदभी कहा-
है फलसे त्रयएतेपुण्यलोकभाजएकोमृतत्वभागिति ऐसानहीं
कहाजाताहै कि चैत्रमैत्रमन्दप्रज्ञहैं औरइनदोमेंएक महाप्रज्ञ
हैऐसाहोगाकिवेदोंमन्दप्रज्ञहैंऔरजैत्रमहाप्रज्ञहै तिससेपूर्व के
तीनआश्रमीपुण्यलोकभागी हैं वचापरिव्राट्सो अमृत भागी है
फिरयहतोकहोकिब्रह्मसंस्थशब्दयोगवृत्तिसे सबआश्रमोंमें सम्भ-
वहै फिरकैसे परिव्राजकमें ठहिररहाहै रूढ़िमानेमें आश्रमआ
चर्से अमृतकीप्राप्तिसे ज्ञानव्यर्थहो भाव में मानलूंब्रह्मसंस्थाती
नोंकोपरमें रीबुद्धिमें ऐसाहोताहै किकर्मोंमें रहैतोचित्तउनके का
लद्रव्यादिकेजोड़नेसे विचिप्तरहनेमेंब्रह्म संस्थाकी सिद्धि नहीं है
औरकर्मत्यागमें परिव्राट्हो।हैइसे ब्रह्मसंस्थहै तोमुक्ति संन्यासी
काहीइष्टसिद्धिहै सोनहीं ब्रह्मसंस्थवहहै जोसबव्यापारछोड़ब्र-
ह्मनिष्ठहै सोतीनमें सम्भवनहींहै जिसआश्रममें बसेगा उसके
विहितकर्मकोनहींकरनेमेंप्रत्यवायसुननेसे और परिव्राजकको

सबकर्मोंकेसंन्याससेप्रत्यवायकासम्भवनहींहै जो अननुष्ठान के-
निमित्तसेहै औरयतिधर्मशमादिब्रह्म संस्थता का उपोद्बलकअ-
र्थात्सहकारीबढ़ानेवालाहै नकिविरोधी संन्यासाश्रमका कर्म
शमादिसेउपबृंहितब्रह्मनिष्ठत्वहैइतरोंकेस्वाश्रमकर्मयज्ञादिहैंय
ह्रप्रेमपुञ्ज है ब्रह्म निष्ठाकेव्यतिक्रममेंसंन्यासीकोप्रत्यवायहैसर्वक
र्मत्यागीकोओमर्थमेनिष्ठाब्रह्मनिष्ठाहै इससेअन्यअनुष्ठेयनहीं है
तीर्थाटनादिइस्क्षार्थहैं तथाचन्यासइतिब्रह्मा।ब्रह्माहिपरःपरोहि
ब्रह्मातानिवाएतान्यवराणितपांसिन्यासएवात्यरेच अर्थन्यासनं
न्यास ब्रह्माहि हिरण्यगर्भ पर प्रसिद्ध इससेब्रह्मत्वकरस्तुत सं-
न्यासहीपर कहि कर्मकीनिन्दाकर्त्ताहै तानि इन्हें ज्ञानद्वारा
मोचकहोनेसेन्यासहीअधिकहै ऐसीश्रुतियांब्रह्म संस्थ को कर्म-
काअभावदिखातीहैं अबतोब्रह्मसंस्थशब्द ज्ञान प्रधानाश्रम का
वाचीहोनेसेऐसीविधिबनालेतेहैं किअमृतत्वकामस्तमाश्रमम-
नुतिष्ठेदिति यहपरिसंख्याविधिहै नकिश्रौतहै आश्रमभावसेअ
मृतप्राप्तिमें भीज्ञानव्यर्थनहींहै इतरआश्रमोंकेपरामर्शमेभी पा
रिव्राज्यब्रह्मसंस्थरूपलब्धहै उक्तविचारव्यासनेआश्रमांतरकेवि-
धायिनीजाबालश्रुतिकीअनपेक्षाकरकराहै कृत्वाचिन्ता पिछि
लीबातलेकेचिन्ताकृता जैसे यहांस्कन्धश्रुतिलेकेचिन्ताकरी है
यहभावहै आश्रमांतरमेंविधिश्रुतिप्रत्यक्षहै ब्रह्मचर्यं समाप्य गृ-
हीभवेद्गृहीभूत्वावनीभवेत्वनीभूत्वाप्रव्रजेत्यदिवेतरथाब्रह्मचर्या
देवप्रव्रजेत्गृहाद्वावनाद्वेति यहश्रुतिअनधिकृतअन्धादिकेलिये
कहीहै सोभीनहींकहिसक्ते हो अविशेषसुने से अन्धअनन्ध सा-
मान्यश्रुतिकोअन्धमेनहींघुसासक्तेहोहेतुकेअभावसेयहभावार्थहै
संन्यासकापृथक्विधानहैअनधिकृतोंकोअथपुनरव्रतीव्रतीवास्ना
तकोवास्नातकोवोत्सन्नाग्निरनग्निको वेत्यादि इससेअर्थव्रतीगो

दानादिविदव्रतवाला गुरुकुलसेछुटेपीछे अव्याहागुरुसेवीस्नात-कहै उत्सन्नाग्निविधुरहै अनग्निकजिसनेअग्निकाआधान नहीं कियाहै जैसवसंन्यासीहोवें पूर्वाङ्गकथश्चित्कर्ममेंअनधिकृतोंको संन्यासयुक्तहै भग्नाङ्गअन्धादिकोज्ञानप्रधानसंन्यासमें अधिकार नहींहै दृष्टिपूतसञ्चारादिश्रवणादिकेविनाज्ञानकीअसिद्धिसे परिव्रजनकोब्रह्मज्ञानकाअङ्गश्रुतिदिखातीहै अथपरिव्राड्विवर्ण-वासामुण्डोऽपरिग्रहःशुचिरद्रोही भैक्षाणोब्रह्मभूयायभवतीति ब्रह्मसाक्षात्कारार्थहै चतुर्थी तिससे ऊर्ध्वरेतआश्रम सिद्धहै औरऊर्ध्वरेतोंमेंविद्या स्वतन्त्रसिद्धहै विधानसे शरीरमेंविचकर्षं वांजिह्वामेमधुमत्तमाकर्णाभ्यांभूरिविश्रुवमिति यद्यपिजोदेहपूर्ण प्रार्थनालिङ्गसंन्यासियोंकोशङ्कराचार्यनेनहींलिखेहैं तोभी उन केटीकाकारोंनेपूर्णाङ्गको संन्यासमें अधिकारार्थलिखेहैं परन्तु ऐसेमन्त्रग्रहीकोप्रार्थनार्थहोहैं संन्यासीकोअनिक्षुहोनेसे ॥

उद्गीथोपासनाधिकरण ॥ ३ ॥

स्तुतिमात्रमुपादानादितिचेन्नापूर्व-त्वात् २१

सएषरसानांरसतमःपरमःपरार्ध्योऽष्टमोयदुद्गीथः इयमेवर्ग ग्निःसामअयम्वावलोकएषोग्निश्चितस्तदिदमेवोक्थमियमेवपृथिवीत्यादि अर्थ पृथिवी १ जल २ औषधि ३ पुरुष ४ वाक् ५ ऋग् ६ साम ७ इनसातरसोंमेंरसतमआठमाउद्गीथांगओंहै परमः परमात्माकीप्रतीकसे परब्रह्मकाचाधेस्थान के योग्यहोने-से परार्ध्यहै क्याऐसाश्रुतियांउद्गाथादिकी स्तुत्यर्थ हैं या उपासन विध्यर्थहैं इससंशयमेंस्तुत्यर्थहैं उद्गीथादिकर्माङ्गोंकोउपादानात् सेकेसुन्ने से इयमेवजुहूरादित्य १ कूर्म २ स्वर्गोलोकआहवनी-

य३ इत्यादि जुहूपृथिवी १ चयनयागमेंकछुआसूर्य २ आहवनी यस्वर्गलोक ३ जैजैसेजुहू आदिकीस्तुत्यर्थहैं तैसे उद्गीथादिकी- स्तुतिरसतमादिगुणोंसेहैं इतिचेन्न इनकास्तुतिमात्रप्रयोजनयु क्तनहींहै अपूर्वत्वात् विध्यर्थमेंअपूर्वअर्थकाविधानहै स्तुत्यर्थ मे अपूर्वार्थव्यर्थहो विधिनात्वेकवाक्यत्वात्स्तुत्यर्थेनविधीनांस्युरि- ति इसमेंविधायकशब्दकीस्तुतियुक्तहै वाक्यशेषभावमें जुहू स्तु- तियांफलवज्ज्,हादिविधिप्रकरणमें स्तावकहोनेसेअर्थवतीहैं औ ररसतमादिस्तुतिक्रत्वङ्गविधिकेप्रकरणमेंनहोनेसेफलवत्अपूर्वउ पासनाकीविधात्रीहैं क्रत्वंतरस्तुतिवत् तिससेविध्यर्थऐसीजाति कीस्तुतिहैं ॥

भावशब्दाच्च २२

विधिशब्दाच्च ओमित्येतदक्षरमुद्गीथमुपासीत सामोपासीत उक्थमुक्थमस्मीतिविद्यादित्यादित्यादि जोस्पष्टविधिशब्दसुनेतेस्तु तिमात्रप्रयोजनमानेमें व्याघाततहो देवोमदिष्टंकुर्यादिति य हांप्रार्थनादिमेंलिङ्गादिप्रयोगदेखनेसेफिरउपासीतादिशब्द वि- धिपरकैसेनिश्चितहोंगेविधिमेंन्यायविदोंकीस्मृतिसुनोकुर्यात्क्रि येतकर्तव्यंभवेत्स्यादितिपञ्चमं एतत्स्यात्सर्ववेदेषुनियतम्विधिल क्षणमिति मीमांसकलिङादि अर्थविधिबताते यह धोखा मत- खायोकिश्लोकमेंपांचपदहीविधिहैं क्युंकिश्लोकपूरणार्थपञ्चमपद है जैसे मृत्युर्धावतिपञ्चमइति धातु प्रत्यय कर्त्रादि कारक इन केभेदमेंभीविधिभेदनहींहै यहो जतानेकेलियेतीनधातुकेउदा हरणदियेथेऔरसर्वधातुकेअर्थसेउपरक्तभावनामेंपुरुषाइष्टसा धनरूपविधि एककहितेहैं सूत्रमेंभावविधिकहो चशब्दफलार्थ प्रकरणरमेफलसुनायाहै आपयितावैकामानांभवति एवद्वि- वकामागानस्येष्ठ कल्पान्तेहास्मै लोकाऊर्ध्वांश्चाहृत्तास्चेत्यादि ए

षऋत्विक्उपासककामागानस्य गानसेफललेनेमें इष्ट समर्थ हैतिस्से उपासनविधानार्थउद्गीथादिश्रुतिहैं नकिकर्माङ्गहैं ॥

पारिप्लवार्थाधिकरण ॥ ४ ॥

पारिप्लवार्थाइतिचेन्नविशेषितत्वात् २३

अश्वमेधमेंसकुटुम्बराजाकोबैठारउसकेआगेवैदिकआख्यानोंकोअध्वर्युपढ़ताहै इसकानामपारिप्लवाख्यकर्महै जैसे यहकर्मवाक्यसेविहितकर्मांगहै तैसेही औपनिषदआख्यानभीअनुष्ठानकेउपयोगीहैं विद्यास्तुतिसेअनुष्ठानश्रेष्ठहै तिससेसबउपनिषद्पारिप्लवार्थ अर्थात् निष्फल है यहजैमिनिमतहै अथहयाज्ञवल्क्यस्यद्वेभार्येबभूवतुर्जनकोहवैदेहआसांचक्रेऐसेपारिप्लवाख्याननामभेदसेपढ़ेहैं तिस्से औपनिषदाख्यानकर्माङ्गनहींसम्भवहोसक्ता हैऔरसन्निधिसेविद्यास्तावकमेंविद्यावाक्योंके साथएकवाक्यतालब्धहोगीतिससे आख्यानविद्यास्तावक हैं प्रतर्दनोहवैदैवोदासिरिन्द्रस्यजानश्रुतिर्हपौत्रायणइत्यादि जैसे ऋग्मेंसुनःशेपादिकेशतमन्त्रहैं मन्त्रउपनिषद्कीकथाओंमें संशय है किवेपारिप्लवकेअर्थहैं यासंनिधानसेविद्याकीप्रतिपत्त्यर्थहैं जोकथाश्रुतिपारिप्लवार्थहैं कथासामान्यसेऔरकथाप्रयोगपारिप्लवमेंचोदितहोनेसेऔरइससेवेदांतविद्याप्रधाननहो मन्त्रवत् प्रयोगकेशेषसे जैसे देवस्यत्वासवितुरित्यादि इनमन्त्रोंमेंकोईपदप्रयोग समवेतार्थहै औरशेषप्रयोगांतरहैं तैसे सबवेदांतकीकथाप्रयोगशेषहैं औरसबवेदांतोंकोएकवाक्यसेकर्मशेषहोनेमेंविद्याप्रधाननहीं इतिचेत् न यदियहकहोसोनहींहै कैसे विशेषितत्वात् पारिप्लवमाचक्षीतेति इसप्रकरणमें प्रथमेऽहनिमनुर्वैवस्वतोराजेत्यादि कथाविशेषहैं जोकथासामान्यसेसबकाग्रहणहो तोविशेषव्यर्थहो इसलियेउपक्रमकासंकोचयुक्तहै तिससेपारिप्लवार्थजोकथा

श्रुतिनहींहै ॥

तथाचैकवाक्यतोपबन्धात् २४

उपलक्षणार्थकावारकहै आख्याननिकटपाठसेविद्या के उपयोगीन्याय्यहैं एकवाक्यतोपबन्धात् प्ररोचनाके योग से और प्रतिपत्तिसौकर्यकेयोगसेमैत्रेयीब्राह्मणमेआत्मावाअरेद्रष्टव्यः इत्याद्यविद्याकिसाथएकवाक्यतादेखो प्रातर्द्दनमेभीप्राणोस्मीति इसआद्यविद्याके ज्ञानश्रुतिमेभीवायुर्वावसंवर्गइति आद्यविद्या केसआत्मनोवपामुदखिदित्यादि अर्थ प्रीतिजननार्थप्रजापति होमार्थअपनीचरवीनिकारतायायहउसविधिकाशेषहै जोआगेलिखताहूं प्राजापत्यमजंतूपरमालभेतेति अर्थ तूपरदाढ़ीवाले छाग कीचरवीप्रजापतिकोप्रियहै ऐसेआख्यानकर्मश्रुतिमेसन्निहितविधिकीस्तुत्यर्थहैं तैसे औपनिषदआख्यानहैं तिससेवेपारिप्लवार्थनहींहै ॥

अग्नीन्धनाद्यनपेक्षाधिकरण ॥ ५ ॥

अतएवचाग्नींधनाद्यनपेक्षा २५

विमतब्रह्मबोध स्वांगकर्मोंकेसापेक्षफलदाताहै अङ्गि होने सेप्रयाजादिसापेक्षदर्शपूर्णमासवत् विमतब्रह्मबोधस्वनिवर्त्यके निवर्तनमेअन्यकीअपेक्षानहींकर्त्ताहै प्रकाशसेदीपवत् औरघट ज्ञानवत् सूत्रार्थहैकि अतःशब्दसेपुरुषार्थोतःशब्दादिति इसकासम्भवसेपरामर्शहै अतएवच विद्यापुमर्थहेतुहोनेसे अग्निइन्धन आदि आश्रम कर्मों की विद्या पुमर्थादि की सिद्धि मे अनपेक्षिका है ॥

सर्वापेक्षाधिकरण ॥ ६ ॥

सर्वापेक्षाचयज्ञादिश्रुतेरश्ववत् २६

अवयहचिन्ताहै किविद्याकोअत्यन्तअनपेक्षाहै आश्रमकेक मौंकीयाकुछअपेक्षाहै अतएवचाग्नीन्धनाद्यनपेक्षा इससेअत्यन्त उनकोअनपेक्षाउसकोहै इससेकहाकिसर्वापेक्षाचेति विद्यास- बआश्रमकर्मोंकोअपेक्षिकाहै नकिअत्यन्तअनपेक्षिकाहै आश्रम कर्मकीअपेक्षाऔरअनपेक्षाविरुद्धकथनहै सोनहींकहिताहूं ज- न्मोविद्याफलसिद्धिमेंकिसीकीअपेक्षानहींचाहतीजन्ममेंचित्तशु द्धियावैराग्यार्थकर्मादिचाहतीहै जैसे यज्ञादिश्रुतेः श्रुतियज्ञादि कोविद्याकासाधनदिखातीहै तमेतंवेदानुवचनेनब्राह्मणाविवि दिषन्तियज्ञेनदानेनतपसानाशकेनेति विविदिषन्ति इसपद्मयीं लकारसेइच्छाभाव्यनहींविषयसौंदर्यकेलाभसेऔरवेदनफल मो क्षभाव्यनहींकर्मसेकिन्तुविविदिषाकेयोगसेकर्मविद्याकेजन्म मे- साधनहैअश्रुतमोक्षफलनहींकल्पसक्तेहोअन्यथाकाठसे पचाता- हैइसमेंभीकाठपाकफलतृप्तिका हेतुहोअथयद्यज्ञइत्याचक्षतेब्रह्म चर्यमेवतदिति इसमेंविद्याकेसाधनब्रह्मचर्यकायज्ञादिकेसाथस्तु तिसेयज्ञादिसाधनसूचितहैं सर्वेवेदा*यत्पदमामनन्तितपांसि- सर्वाणिचयद्वदन्ति यदिच्छन्तोब्रह्मचर्यंचरन्तितत्तेपदंसंग्रहेणब्रवी म्योमित्येतदित्यादि * कुछवेदसाक्षात्ब्रह्मकोकहताहै कुछ ज्ञा नार्थकर्मद्वारा कर्मवेदउसवैद्यसाहैकिजोकटुकषायादिसेवर्तता है ज्ञानवेदउसवैद्यसाहै जोमधुरादिसेवर्तताहै फिरकौनसुधी- मधुरछोड़कटु सेवेगा अश्ववदिति योग्यताके वशसे जैसे घो- ड़ारथमेंयुक्तहै नकिहलमें ऐसेआश्रमकर्मविद्याकेफलसिद्धिमेंन हींचाहतेहैं उसकेजन्ममेंचाहतेहैं वहिरङ्गसाधनकहे जैसे शुद्धा र्थमट्टीखरसेयावर्द्धसे लाईगई मेंखरवर्द्ध शुद्धिमेंनियतनहींहै अ न्तरङ्गअर्थात्जैसेशुध्यर्थंशुद्धमिट्टीनकिखरवर्द्ध परलाना ॥

अशमदमाद्युपेतःस्यात्तथापितुतद्विधेस्तदङ्ग तयातेषामवश्यानुष्ठेयत्वात् २७

कोई मानता है कि यज्ञादि विद्या के साधन न्याय्य नहीं हैं वि-धि के अभाव से यज्ञेनेति ऐसी श्रुति अनुवाद रूप विद्या के अभिष्टव-पर है न कि यज्ञादि विधि पर है ऐसी महाभाग विद्या है कि जिस-को यज्ञादि से लाभ की इच्छा है तथापितु शमाद्युपेतःस्यात् विद्या-र्थी तस्मादेवंविच्छान्तोदान्तउपरतस्तितिक्षुःसमाहितोभूत्वात्मन्ये-वात्मानंपश्यतीति जो शमादि साधन विद्या के मुख्य हैं तेषां विहि तों का अवश्यानुष्ठेयत्वात् अनुष्ठान योग्य है इसमें शमाद्युपेतोभू-त्वापश्यतीति यह वर्त्तमान कहा न कि विधि सो नहि तस्मादिति-प्रकरण में स्तुति के ग्रहण से विधि प्रतीति से और माध्यन्दिन स्पष्ट वि-धि पढ़ते हैं पश्येदिति च तदङ्गतया साधनांग है तद्विधेःशमादि-विधि से तिससे यज्ञादि को अनपेक्षा है और शमादि को अपेक्षा है य ज्ञादि श्रुति से यज्ञादि अपेक्षित पूर्व थे यह एक मत है ननु कहा था कि यज्ञादिभिर्विविदिषन्तीति इसमें विधि नहीं सच कहा था तो भी अपूर्व से संयोग विधि कल्पते हैं यज्ञादि का विविदिषा से संयोग-पूर्व प्राप्त था सो विविदिषा ने अनुवाद नहीं किया दर्शपूर्णमास के प्र-करण में सुना कि पुषाप्रपिष्टभागोदन्तकोहीत्यादि इन अश्रुत वि-वाक्यों में अपूर्व से विधि कल्पना कर प्रकृति से निकार विकृति में पूषा के भाग का सम्बन्ध किया था पौष्णंपेषणमिति इस सूत्र से विचारित है पूर्वतन्त्र में विवेक है कि एवंवित् इस विद्या संयोग से पास विद्या सा-धन शमादि ही हैं और विविदिषा संयोग से यज्ञादि वाह्यतर दूरतर हैं

सर्वान्नानुमत्यधिकरण ॥ ७ ॥

सर्वान्नानुमतिश्चप्राणात्ययेचतद्दर्श-

बात् २८

छन्दोगोंकेप्राणसम्वादमेसुनाहैकिनहवाएवं*विदिकिञ्चनानन्नं
भवतीतिवाजसनेयियोंकेहैकिनहवाअस्यानन्नञ्जग्धं भवतिनान
न्नम्परिगृहीतमितिसर्वप्राणोपासककोअदनीयहै क्यासर्वान्नानु
ज्ञानशमादिवत्विद्यांगविधानयास्तवार्थसंकीर्तनहै इससंशयमें
विधिप्राप्तहैप्रवृत्तिविशेषकेलियेउपदेशहै प्राणविद्या केपाससेप्रा
णविद्याकेअङ्गसेयहनियमनिवृत्तिकहीहै जोऐसाहै तोभक्ष्याभ
क्ष्य के विभागकाव्याघातहोसोदोषनहींसामान्यकाबाधविशेषसे
युक्तहैजैसेप्राणिहिंसानिषेधकापशुवधविधिसेबाधहै यथाचनकां
चनस्त्रियम्परिहरेत्तद्व्रतमित्यादि इस वामदेव्यविद्याविषयकसब
स्त्री के अत्याग वाक्य से सामान्य गम्यागम्य विभागशासनबाधि
तहैवामदेव्यसामोपासकसबस्त्रियोंसे मैथुनकरेअन्यस्वदारासेऐ
सेहीसबअन्नभक्षणवाक्यसेभक्ष्याभक्ष्यविभागशासनबाधितहैसो
नहीं सिद्धांतकोसूत्रसेबाहिरदिखाताहै लोकरक्षार्थं विधाय-
कशब्दकेअलाभसे सर्वान्नानुज्ञानकीविधिनहींहै अनन्नंभवति
इसवर्तमानकहिनेसेविधिप्रतीतिकेबिना।प्रवृत्तिविशेषकरनेकेलो
भसेविधिमाननेकोशक्यनहींहैऔरसुनोकिश्वादिमर्यादम्प्राणस्या
न्नमितियहकहफिरकहाकिनैवंविदः किञ्चिदनन्नंभवतीति नहीं
नरदेहसेकुत्ताकामाअन्नखासक्ताहै यहचिन्ताकरसक्ताहै किस-
बप्राणकाअन्नहै तिसप्राणान्नज्ञानकेस्तुत्यर्थ यह अर्थवाद है न-
किसर्वान्नानुज्ञानकीविधिहै सो देखो सर्वान्नानुमतिश्चप्राणात्य
यइतिप्राणनाशमें याबड़ीविपत्तिमेंसबअन्नअदनीयकीअनुज्ञाहै
तद्दर्शनात् मटचीहतेषुकुरुष्वित्यादि मटचीटीडीइसछन्दोगब्रा
ह्मणमेंकथाहै किचाक्रायणऋषिजबटीडीनेकुरुक्षेत्रकोखेतीना-
शकरदीतबवुहअकालसेस्त्रीसाथले इभ्यगाउंमे पहुंचा इभ्य के-

* सब प्राण का अन्न है ऐसे ज्ञानीने ॥

आधिखायेकुल्माषकोमांगकेखायेवचेतेस्त्रीकोदियेउसनेबांधिरा खे फिरइभ्यनेकहाकिजलपीतवचाक्रायणनेकहाकितेरेजूठेकुल् माषइसहेतुसेखायेकिमुझकोअन्नकीआपत्तिथी और जल तेरा जूठा नहींपीयूंगा क्यूंकिबुहतड़ागआदिमेंपीलूंगा फिरप्रातःका-लमेंवेरक्षितकुल्मापस्त्रीनेचाक्रायणकोदियेउससेइभ्यकेऔरअप नेजूठेऔरवासिकुल्माषखायेस्त्रीनेनहींखाये उसने भूख सह ली फिरराजाकेयज्ञमेंगयेप्राणादिप्रस्तावादिदेवताकोकहि प्रस्तोत्रा दिकोहराकेराजासेधनलेठहिरायाथा सोयहजूठाजूठा और बासा-खानाऔरजलनपीनाइसशिष्टाचारकोदिखातीहैश्रुति की यह-आशयलक्षितहै किप्राणनाशमेंप्राणधारणार्थअभक्ष्य भी भक्षणी यहै औरबुद्धिमान्स्वस्थावस्थामेंअभक्ष्यनहींखावे यहजलपानके निषेधसेजानाहैरोगकेनाशार्थंसबअभक्ष्यभक्षणकरेअनशनतीर्था दिमेंस्वर्गार्थंप्राणनछोड़े नपुरायुषःस्वकामीप्रेयादितिश्रुतिनेस्वे च्छासेमरनमनेकराहै स्वर्गार्थभीतिससेअर्थबादहै नहवाएवंविदी त्यादि ॥

अबाधाञ्च २९

आहारशुद्धौसत्वशुद्धिःसत्वशुद्धौध्रुवास्मृतिरितिऐसेभक्ष्या भक्ष्यविभागशास्त्रोंकाअबाधहोगा अन्यथाइनकाबाधहोगाचसे शिष्टाचारकाअबाधसुझायाहै ॥

अपिचस्मर्यते ३०

जीवतात्ययमापन्नोयोन्नमत्तियतस्ततो लिप्यतेनसपापेनप-द्मपत्रमिवांभसेति इस मनुस्मरणसेविद्वान्मूर्खकोसाधारण अन्न भक्षणविहितहै आपत्कालमेंमादकद्रव्यनखावेधोध्वंसादिसेपरजन रकमेंजन्म कीटादिमेंहोताहै यहस्मृतिसेप्रकटहै ॥

शब्दश्चातोऽकामकारे ३१

अनन्नकाप्रतिषेधकऔरकामकारकीनिवृत्तिप्रयोजन शब्द-काठकोंकीसंहितामें सुनते हैं तस्माद्ब्राह्मणःसुरांनपिबेदितिसो निषेधयुक्ततरहै नहवाएवंविदीत्यादिकेअर्थवादहोनेसे तिससिद्ध सजातिकेसबअर्थवादहैं नकिबिधिहैं ॥

सकलप्रयोगाधिकरण ॥ ८ ॥

विहितत्वाच्चाश्रमकर्मापि ३२

अबक्याविद्याकोनचाहताऔरआश्रम मात्रमेंनिष्ठ और अ-मुमुक्षुहै उसकोआश्रमकर्मअनुष्ठेयहै यानहीहै यहचिन्ताहै त मेतम्वेदानुवचनेनेत्यादिमेंसर्वापेक्षाचेतिसूत्रमेंसोकहाथा आश्र मकर्मविद्याकेसाधनविहितहैं विद्याकाअनिच्छुऔरफलान्तरका मीकोनित्यकर्मअननुष्ठेयहैंयाउसकोभीअनुष्ठेयहैंजेविद्याऔरजि न कोविद्यासाधनत्वनहींहै नित्यानित्य केसंयोगकेविरोधसेभाव जानेजासेकर्मकरेअनित्यहैं औरयावज्जीवादिविधिसेकरेनित्यहैं यहपायाथाउसकाउत्तरहैकिअमुमुक्षुआश्रममात्रमेंनिष्ठकोनित्य कर्मकर्तव्यहैं यावज्जीवमग्निहोत्रंजुहोतीत्यादिकेविधानसे बच नकोबड़ाबोझकुछनहींहै ॥

सहकारित्वेनच ३३

कर्मविद्याकासाधननहींहैंउसकाउत्तरहैकि सहकारिविद्या स हकारीकर्महैं विहितहोनेसे तमेतम्वेदानुवचनेनेत्यादिसेनहीं-विद्यासहकारिवाक्यकर्मोकोप्रयाजादिवत्विद्याके साथफलका-रीमन्तव्यहै अविधिरूपसेविद्याकोऔरविद्याफलअसाध्यहै ब्रह्म रूपसेविधिरूपसाधनहैं जैसे दर्शपूर्णमासादिमेंस्वर्गफलकी सि-साधयिषासेसहकारीसाधनांतरकीकांक्षाहै विद्या ऐसी नहीं है अग्नीध्राद्यनपेक्षासेकहाथा तिससेकर्मविद्याजन्मानेमें सहका-रीहैं हांगेजीनीलसेनीलउजलाहोगाकर्मकेअभेदमेंसंयोगभेदसे

नित्य। नित्यकेसंयोगकाविरोधशङ्कानहींहै नित्यएकसंयोगहै जो यावज्जीवादिसेकल्पितहैसोविद्याफलार्थनहींहै अनित्यसंयोग-दूसराहै जोतमेतम्वेदानुवचनेत्यादिसेकल्पितहै सोविद्याफला र्थहै जैसे एकखादिरकोनित्यसंयोगसेक्रात्वर्थत्वहै औरअनित्य-संयोगसेपुमर्थत्वहै यहचिन्तासंयोगपृथक्त्वमितिइससूत्रमेंहै त त्वांतरमेंदोवाक्यसेविनियुक्तकाविनियोगविरुद्धनहीं है तैसे य-हांहै किविविदिषासेश्रवणादिसहकारीकेलाभमेंविरोधनहीं है

सर्वथापितएवोभयलिङ्गात् ३४

सर्वथापि आश्रमकर्मपक्षमेंऔरविद्यासहकारीपक्षमें तए-व अग्निहोत्रादिधर्मअनुष्ठेयहैं एवअवधारणसेकर्मभेदकी शङ्का वारीहै जैसे कुण्डपायिनामयनेमासमग्निहोत्रञ्जुहोतीति इस-होमसेनकियहांनित्यअग्निहोत्रसेकर्मान्तरकाउद्देशहै कर्मभेदहै कर्मों को ज्ञानार्थ विधि है यहभावहै कैसेउभयलिङ्गात्श्रुति लिङ्गतमेतंवेदानुवचनेनेत्यादिसिद्धवत् जन्मरूपयज्ञादिको वि-विदिषामेंविनियोगकरतीहै नकिजुहोतीत्यादिवत् अपूर्व रूपय ज्ञेनेत्यादिकाजन्मायाहै दूसरास्मृतिलिङ्ग जिसकोकर्तव्यताज्ञा तहै उसकर्मकोविद्याजन्मार्थदिखाताहैअनाश्रित:कर्मफलंकार्यं कर्मकरोतियइत्यादि यस्यैतअष्टचत्वारिंशत्संस्कारादइत्यादि सं-स्कारकीप्रसिद्धिवैदिककर्ममेंउक्तसेसंस्कृतकी विद्याकोजन्मकोअ भिप्रायसेस्मृतिमेंहै तिससेअभेदकाअवधारणअच्छाहै॥

अनभिभवञ्चदर्शयति ३५

एषह्यात्मा।ननश्यतियंब्रह्मचर्येणानुविंदतीत्यादि ऐसीश्रुतियां ब्र ह्मचर्यादिसाधककोरागादिक्लेशसेआत्माकानाशनहीं दिखाती हैं भाव जे यज्ञादिज्ञानकेहेतुविविदिषावाक्यमेंविहितहैं तेही-आश्रमधर्मपूर्वकांडमेंविहितहैं फिरइनकेदोफलोंसेदोवारअनु-

ष्टानहो सोनहीं जैसे श्राद्धभोजनसेद्दष्टिनांतरीयकसिद्ध है तैसे विद्यार्थअनुष्ठितकर्मोंसेआश्रमधर्मसिद्धहो विद्याहेतुककाम्यऔ-रआश्रमधर्मनित्यहोनेसेसकृत्प्रयोगमेनित्यानित्योंकेसंयोगकावि रोधभीनहींहै बलीदोवाक्योंसेएककर्मकेआकारहोसेदोठौर मे-यज्ञादिकाविधानसकृत्होप्रयोगार्थहै तिससेयज्ञादिआश्रमक-र्महैं औरविद्याकेसहकारीहैं यहनिश्चयथा ॥

अन्तराधिकरण ॥ ९ ॥

अन्तराचापितुतद्दृष्टेः ३६

तुनेआश्रमियोंकोहीज्ञानहोताहै इसनियमकावारणकिया है चमत्रकोभीज्ञानमेअधिकारकेसमुच्चयार्थहै औरज्ञान वेदही सेहोताहै तिससेमनुष्यमात्रकोपठनीयहै विधुरादि द्रव्यादिही न अन्यतमाश्रममेप्रतिपत्तिहीनअन्तरालवर्त्तीचण्डालादिकोवि द्यामे अधिकारहै यानहींहै इससंशयमे नहींहैउनकोअधिकार आश्रम कर्म को विद्याहेतुकेनिश्चयसे और आश्रमकर्मकेअसम्भव से सो नहीं अन्तराचापितु मनुष्य मात्रको विद्यामे अधिकारहै कैसेतद्दृष्टेः रैक्वशाचक्नवीआदिकेब्रह्मवेदनमेश्रुतिलभतीहै ॥

अपिचस्मर्यते ३७

ध्यानादिविद्याकेसाधकहैं चसेअकृताश्रमधर्मसम्बर्तादिम-हायोगियोंका आचारनग्नचर्यादिस्मृतहै इतिहासमे ॥

विशेषानुग्रहश्च ३८

विद्याकासम्भव १८केत्यागसेदानकेसेवनसेउनकोहैसंन्यासकेवि नाहृष्टार्थविद्यानिषेधकेअभावमात्रसेअर्थीको अधिकार कर्ताहै श्रवणादिमे तिससेविधुरादिसबकोअधिकारमेविरोधनहींहै ॥

अतस्त्वितरज्ज्यायोलिङ्गाच्च ३९

तु आश्रमकर्मोंके अनुष्ठानार्थहै अत: अन्तरालवर्तीहोनेसे इतरत् आश्रमवर्तीहोनाज्याय: श्रेष्ठविद्याका साधन है कैसे लिङ्गात् अनाश्रमीनतिष्ठेदिति इसस्मृतिलिङ्गसेतनैतिब्रह्मवित्पुण्यकृत्तैजसश्चेति यश्रुतिसेविहितकासूचकहै भाव जिनकोबुद्धिशुद्धिहेतु अग्निहोत्रादिवैदिककर्मोंकाअधिकारनहींहै उनको ज्ञानकासम्भवभीनहींहै सोनहींहै सबकोज्ञानकासम्भवहै अहिंसादिद्वाराबुद्धिशुद्धिसे अनाश्रमीविवाहार्थीरैक्वकीनाईसम्वर्गविद्यामेश्रुतिहै ऐसेही आश्रमशून्य गार्ग्यादिउदाहार्य्य हैं बहुतशुद्धिकेहेतुसे आश्रमव्यर्थ नहीं है जो बहिरे आश्रमके कल्पित चिन्होंसेव्यर्थहोतोभीकुछहानिनहीं तिससेसबकोविद्याकासम्भव है ॥

तद्भूताधिकरण ॥ १० ॥

तद्भूतस्यतुनातद्भावोजैमिनेरपिनियमातद्रूपाभावेभ्य: ४०

जेऊर्ध्वरेतआश्रमस्थापितकियेथे उनमेप्राप्तकीप्रच्युतिहैया नहींहै यहसंशयहै पूर्वकर्मके अनुष्ठानकीचिकीर्षासेजैसेयतीअग्निहोत्रादिकोयारागादिवशसेजैसेयतीसेगृहीहोना ऐसाप्रच्युत होविशेषकेअभावसे सोनहीं तद्भूतस्यतु प्राप्तऊर्ध्वरेत: कोनकिसीढबसे अतद्भाव: ऊर्ध्वरेतसेप्रच्युतहो कैसे नियमातद्रूपाभावेभ्य: जैसे अत्यन्तमात्मानमिति यह नैष्ठिक नियमहै अरण्यमियादिति एकांतरहै याकान्तरमे ततोनपुनरियादिति जैसे संन्यासीहोकेफिरगृहीनहोधोखाआदिसेहोजावे तोलोटिजावे आचार्य्येणाभ्यनुज्ञातस्यतुर्णामेकमाश्रमं आविमोक्षाच्छरीरस्यसोनुतिष्ठेद्यथाविधीति ऐसेनानानियमप्रच्युतिकेअभावदर्शीहैं जैसे ब्रह्मचर्यंसमाप्यगृहीभवेत् ब्रह्मचर्यादेवप्रव्रजेदित्यादिआरोहमेवाक्यलब्धहैं नकितेसेअवरोहमेहैं नाकिऐसेशिष्टहैं यहअतद्रू-

पप्रच्युतिमे प्रमाणकाअभावकहाहै न्यायसेजोजिसकेअर्थ विधी यमानहै सोउसकाधर्मकर्महै औरनकिजोजिससेअनुष्ठानकोश क्यहै सोउसकाधर्मकर्महै धर्मकालक्षणवैदिकविधिहै चोदनाल क्षणोर्थोधर्मः नियमशास्त्रकेबलसेरागादिनहींडिगासक्तेहैं जैमि नेरपि यहांअपिपदसेजैमिनिवादरायणदोनोंकीसम्मति प्रतिप- त्तिदृढ़ार्थशासिताहै इनकातात्पर्यहै किअन्यपुत्रादिसमर्थकेआ धीनअपनेगृहभारकोकरदेनकिसमर्थपुत्रादिकोगृहकर्मसे छुटा राखे ॥

अष्टाधिकरण ॥ ११ ॥

नचाधिकारिकमपिपतनानुमानात्तद- योगात् ४१

कर्ममीमांसाकेछठेअध्यायकानामअधिकारलक्षण है उसमे जोकहाहैसोआधिकारिकहैसूत्र अवब्रह्मचारीपशुमतहदाधानस्या प्राप्तकालत्वादिति अवकीर्णीअथयोब्रह्मचारीस्त्रियमुपेयात्सगर्द भंपशुमालभेतेति अर्थ विद्यार्थीमैथुनकरेतोगदहा का होम करे तद्वत् उपनयनहोमवत् जैसे जनेउमेहोमलौकिकआगमेहोता- है तैसेहीगदहेकाभीहोमलौकिकआगमेहीहै कैसे आधानस्यअ ग्नाधानविवाहितस्त्रीकेसाथहोताहैइससेअग्न्याधानब्रह्मचारी कोप्राप्तहीनहींहै यदिनैष्टिकप्रमादसेमैथुनकरे तोउसकोप्राय- श्चित्तहै यानहीं जोयहकहाथा पूर्वकांडमे सो नैष्टिक ब्रह्मचारी कोनहींहै यहकैसेहै आरूढोनैष्टिकं धर्मंयस्तुप्रच्यवतेपुनः प्राय- श्चित्तंनपश्यामियेनसुच्येत्सआत्महेति ब्रह्मचर्यकेरक्षार्थयत्नबहुत करोयहज्ञापनार्थअचिकहाहैताहै किस्पष्टप्रायश्चित्तमैनहींदेखता हूं इसपतनबोधक स्मृति से तदयोगात् जैसे शिरकटेप्राणीको जिवानेकाकोईयत्ननहींहै तैसेहीनैष्टिककोप्रायश्चित्तकायोग न-

होंहै उपकुर्वाणकोप्रायश्चित्त है पतनायोगसुन्नेसे यह पूर्व पक्ष है

उपपूर्वमपित्वेकेभावमशनवत्तदुक्तम् ४२

अपित्वेकि एकआचार्यउपपातकमानतेहैं उसकोजोनैष्ठिक गुरुदारादिसे अन्यस्त्रीसेमैथुनिकरेक्युंकिमहापातकोंमेन गिनने से तिससेउपकुर्वाणमनैष्ठिककोभीप्रायश्चितहै ब्रह्मचारीऔर अवकीर्णीदोनोसमहोनेसे अशनवत् जैसे ब्रह्मचारीमधुमांसखा वेतोव्रतलोपऔरफिरसंस्कारकरेंऐसा यहांहै जो प्रायश्चितनहींक हितेहैं उनकामूलनहींमिलताहै जोप्रायश्चित्तकहितेहैं उनका अविशेषसुननामूल श्रुति है ब्रह्मचार्यवकीर्णीति प्रायश्चित्तन्नप- श्यामिति इस्कामूलश्रुतिकल्पाहै प्रायश्चित्तविधानोश्रु तिक्लृप्त- मे कल्पनीयवाधितहैयहभावहैतिससेप्रायश्चित्तयुक्ततरहै तदुक्तं पूर्वकांडकेप्रथमाध्यायमे समाविप्रतिपत्तिःस्याच्छास्त्रस्थावातन्नि मित्तत्वादिति अर्थयवमयश्चरुर्भवतीतिइसमेयवशब्दसेआर्य दीर्घ शूकअन्नलेतेहैं किसीदेशमेप्रियङ्गुकोयवकहितेहैं म्लेच्छइससेकि सकाचरुकरेइससंशयमेव्हुप्रयोगकोसाम्यसे समातुल्याविकल्प मेप्रतिपत्तिहोइसपूर्वपक्षकासिद्धांतहैकि वेदमूलप्रतिपत्ति लोध नादिकेज्ञानमेवेदमूलहैवेद यदान्याओषधयोम्लायंत्यथैतेयवामो दमानास्तिष्ठन्तीति जोवहहै किजिसकालमेअन्यओषधिसबसु- खजावें औरजोहरारहैसोहै इसवेदसेदीर्घशूककाआदरहै न किप्रियङ्गुका तिस्से स्मार्तप्रायश्चितहै ॥

भाष्टाग्राह्याधिकरण ॥ १२ ॥

वहिस्तूभयथापिस्मृतेराचाराच्च ४३

ऊर्ध्वरेतसादिअपनेरआश्रमसेच्युतमहापातकीयाउपपातकी उभयथापि दोनोसेशिष्टउसकोवहिः अर्थात्उससेविवाहभोजना

दिक्षाइदं प्रायश्चित्तपरलोकमेंशुद्धिकासाधनहै नकियहां स्मृति आरूढ़पतितमित्यादि अच्छेपतितकेसङ्गविवाहादिसम्बन्ध नहीं करतेहैं यहशिष्टाचारहै ॥

ऋत्विगुपासनाधिकरण ॥ १३ ॥

स्वामिनःफलश्रुतेरित्यात्रेयः ४४

अङ्गाधीनउपासनोंमेंसंशयहै किवेउपासनायजमानकर्महैं याऋत्विज्कर्महैं कैसे फलश्रुतेः वर्षतिहास्मैवर्षयतियएत देवंविद्वान्वृष्टौपञ्चविधंसामोपास्तइत्यादि अर्थ हिङ्कार१ प्रस्ताव२ उद्गीथ३ प्रतिहार४ निधन५ इनपांचढबकेसामसेवर्षाकिध्याता कोजलवृष्टिकोसम्पत्तिफलहोताहै सोफलस्वामिकोन्याय्यहै स्वामीसांगप्रयोगमेंअधिकृतहोनेसऔरऋत्विक्तोअधिकृत स्वामीसेअधिकारपायेहैंसुनतेहैंउपासनाकाफलकर्त्तामेंवर्षत्यस्मैयउपास्तेइत्यादिजोऋत्विज्कोफलदेखासो उसकोनहींयाचनिकहोनेसेयात्मनेवायजमानायवायङ्कामङ्कामयतेतमागायतीतिफलभोक्तासेस्वामीहिकोफलवत्उपासनोंमेंकर्तृत्वहैयहआत्रेयमानताहै

आर्त्विज्यमित्यौडुलोमिस्तस्मैहिपरिक्रियते ४५

यहनहींकिउपासनास्वामीकाकर्महैं वेऋत्विक्कर्म हैं यह औडुलोमिमानताहै किसहेतुसे तस्मै सांगकर्मार्थयजमान नेमोललियेहैं सांगप्रयोगकेबीचमेंउद्गाथादिउपासनाहैं अधिकृताधिकारिसे तिससे गोदोहनादिनियमवत्ऋत्विजोंसेवेनिर्वर्त्त्य हैं वैदिकलिङ्गतंहबकोदाल्भ्योविदांचकारसहनैमिशीयानामुद्गातावभूवेति इसनेविज्ञानकाकर्त्ताउद्गाता दिखायाहै अर्थ तं उद्गीथनामओंकोप्राणदृष्टिसेध्यानकरफिरनैमिशीयसत्रियोंकाउ

द्गाताहु आथाट्टालभ्य क्रयणकेद्व। ऐसेकर्त्ताभोक्ता कासामानाधिकरण्ययुक्तहै जैसेभृत्ययुद्धकरतेहैंउसयुद्धमेकहाजाताहै किराजा लड़ताजीतताहैपरार्थंसे ऋत्विजको अन्यत्ववचनसेफलसम्बन्ध कोअनुपपत्तिहै ॥

श्रुतेश्च ४६

यांवैकांचनयज्ञे ऋत्विज्आशिषमाशासतइति यजमानायैवतामाशासतइतिहोवाचेति तस्मादुहै वम्विदुद्गाताब्रूयात्कन्तेकाममागायानीति अर्थ यहऋत्विक्कर्त्ताहै जिसज्ञानका उसकाफलयजमानकोदिखातोहै तिस्से अङ्गोपासनऋत्विज्काकर्म सिद्धहै ॥

———*———

सहकार्यन्तराधिकरण ॥ १४ ॥

सहकार्यन्तरविधिःपक्षेणतृतीयन्तद्वतोविध्यादिवत् ४७

वृहदारण्यकेकहोडब्राह्मणमेसुनतेहैं कितस्माद्ब्राह्मणःपांडित्यन्निर्विद्यबाल्येनतिष्ठासेत्बाल्यञ्चपाण्डित्यञ्चनिर्विद्याथमुनिरमौनंचमौनञ्चनिर्विद्याथब्राह्मणइति अर्थ पांडित्यश्रवणसेनिर्विद्यनिश्चयसेपाके बाल्येनश्रवणजन्यज्ञानकेवलभावमननसेचसम्भावनादिनिरासकरयाबालककेभावनिश्छलचित्तसेरहैऐसेमननश्रवणकेपीछेनिदिध्यासनकारीमुनिहोताहै अमौनंमौनसेअन्यवाल्यपांडित्यदोनोहैं मौनञ्चनिदिध्यासनपाकेदृढ़ज्ञानकोसामग्रीकेपीछेमैब्रह्महूं ऐसासाक्षात्कारवान्ब्राह्मणहोताहै नान्यथा यहअभिचादिनीचवृत्तिसेजोवेन किछलादिसेधनलेके दूससेसंशय

है कि मौन विधेय है या नहीं है मौन विधेय नहीं है वाल्येन तिष्ठासे
दिति यहां विधि हो चुकने से नहीं अथ मुनि इसमें विधायक विभक्ति
लभती है तिससे अनुवाद मौन में युक्त है कैसे प्राप्ति है मौन की मु-
नि पण्डित पदों में ज्ञानार्थकहोने से हैं पांडित्यन्निर्विद्य इससे मौन
प्राप्त है और अमौनञ्च मौनञ्च निर्विद्याथब्राह्मण इसमें ब्राह्मण्य का
विधान नहीं है सोपूर्व प्राप्त होनेसे तस्मादथब्राह्मण इति प्रशंसा-
वाद है तथैवाथमुनिरिति यह भी प्रशंसावादयोग्य है समान कहि
नेसे इससे पढ़ा कि सहकार्यन्तरविधिः विद्याके सहकारी मौनकी
वाल्यपांडित्यवत् विधिमानो अपूर्व से शङ्का पांडित्य शब्द से मौन
का ग्रहण कहाथा यह दोष नहीं है मुनि शब्द ज्ञानातिशयार्थक हो-
नेसे मननसे मुनि है इस व्युत्पत्तिके सम्भव से मुनीनामप्यहंव्यास-
इस प्रयोगके देखनेसे ननु मुनिपद उत्तमाश्रमकावाची सुनते हैं आ
पस्तम्ब वाक्यगार्हस्थ्यमाचार्यकुलम्मौनंवानप्रस्थमिति इसमेसौन
हीं वाल्माकिर्मुनिपुङ्गव इत्यादिमें सुननेसे व्यभिचारी है मुनिपदसे
इतराश्रमके सन्निधानसे और पारिशेष्यसे श्रुतिमे उत्तमाश्रमकाग्र-
हण है ज्ञानकी प्राधान्यसे तिससे वाल्यपांडित्यसे तीसरा मौन ज्ञा
नातिशयरूप विधेय है जो वाल्यमें विधिका अन्त कहा था सो नहीं
अपूर्वसे मुनि विधीयमाना है जैसा कि मुनि होवे निर्वेदनीय के क-
हिनेसे भी मौन वाल्यपांडित्यवत् विधि याश्रित है तद्वतो विद्यावा-
न् कर्मत्यागी ईश्वरैकचित्तको यह कैसे जाना विद्याके अधिकार से
आत्मानम्विदित्वेत्यादि पुत्रवित्तार्थ भी ईश्वरसे अन्य देवाराधनन क
रे परोक्ष ज्ञानीको मौन विधान है ननु विद्यावान्मे अतिशयकी प्रा
प्तिसे फिर मौन विधानसे क्याफल है इससे पढ़ा कि पक्षेण जिस
पक्षमें भेद दर्शनको प्रावल्यमें विधिकी प्राप्ति नहीं है उसमे मौन की
विधि है विध्यादिवत् जैसे कि दर्शपूर्णमासाभ्यांस्वर्गकामोयजेत

यादिऐसे विध्यादिमे अन्नान्वाधानादि अङ्गजातसहकारी विधीयमानहैं ऐसे अविधिप्रधानइसविद्यावाक्यमेमौनकीविधिहै ध्यानादिकाषड्जादि ने लोक से सूक्ष्मार्थ का साचात्कारवत् यहां नहीं किंतु नियमविधिहै कोई कहितेहैं किसंन्यासाश्रमकेधर्म श्रवणादिमे विधिनहींहै क्योंकि विधिमे अप्राप्तिमान अपेचितहै श्रवणादमे भेददर्शनकीप्राबल्यसेविधिहै ॥

कृत्स्नभावात्तुगृहिणोपसंहारः ४८

तु विशेषणार्थहै और कृत्स्नभावविशेष्यहै जोकैवल्याश्रम मे श्रुतिविद्यमानथी तोकैसेछां दोग्यमेवेदपढ़े पीछे कुटुम्बमेस्थितगृही ब्रह्मलोककोप्राप्तहोताहै नचपुनरावर्तते इससेगृहीकाउपसंहारहै नकिसंन्यासकाविधानहै इसकाउत्तरपढ़ाकिकृत्स्न बहुश्रमधनादिसाध्ययज्ञादिगृहीकोकरणेकेलियेकहेथे औरयथासम्भवअहिंसाइन्द्रियसंयमादि अन्याश्रमकेकर्मउसकोविद्यमानहैं तिससेगृहमेधीकाउपसंहारहै नकिसंन्यासाभावसे अभिप्रायार्थहै किकर्मोंसेथकाईश्वरकाध्यानधरे ॥

मौनवदितरेषामप्युपदेशात् ४९

जैसे मौनगार्हस्थ्यदोमतश्रौतहैं तैसे वानप्रस्थगुरुकुलवास भीहैं तपएवद्वितीयइत्यादि तिससेचारआश्रमोंकेउपदेशके अविशेषसेतुल्यवत्विकल्पऔरसमुच्चयसेप्रतिपत्तिहै इतरेषां दो आश्रममेबहुबचनवृत्तिभेदसेअनुष्ठातोकेभेदकीअपेक्षासेहै ॥

---*---

बाल्याधिकरण ॥ १५ ॥

अनाविष्कुर्वन्नन्वयात् ५०

वालकावोधज्ञानमेंउलटिजाताहै जैसे चन्द्रकोदेखताहोतोचुटकीवजानेसेयाबिल्लीदिखानेसेचन्द्रसेवाहिरभीतरकी इन्द्रियां हटाकेविल्लीकोदेखताहै औरकुत्ताकुत्तीकेपीछेदौड़ताहोजो पैंड़ेमेसूखाहाड़मिलेतोकुत्तीकाछोड़हाड़परपड़ताहै तस्माद्ब्राह्मण:पांडित्यंनिर्विद्यवाल्येनतिष्ठासेदिति इसमेंवाल्यमनुष्टेयसुनाहैवालकाभावयाकर्मवाल्यहै इसतद्धितमेंवालभाववयविशेषका इच्छासेकरनाशक्यनहींहै यथासम्भवविट्मूत्रादिवालचरितादिवाह्यशक्याशक्यहैं याअन्तर्गतभावशुद्धिहै याअप्ररूढ़ेंन्द्रियदम्भदर्पादिशून्यवाल्यहोइससंशयमेंकामचारवादभक्षयथेच्छविटसूत्रादिप्रसिद्धतरलोकमेंवाल्यहै उसकाग्रहणायुक्तहैमनुपलिताादिदोषसेनहींयुक्तहै कामचारवादभक्ष।दिकास्वीकार नहींविद्यावान्कोवाक्यसामर्थ्यंसेदोषकोनिहत्तिसेऐसेप्राप्तियधप्राप्तहै सोनहींवाल्यप्रधानज्ञानकीअभ्यासार्थविधेयहै सववालचर्यानहीं अङ्गीकार्यहै ज्ञानाभ्यासमेंअसंभावसे तिससेवालकाअांतर भावविशेषचाहिये अप्ररूढ़इन्द्रियादिसोकहाकि अनाविः कुर्वन्निति ज्ञानअध्ययनादिवड़ेधर्मोंसेअपनेकोनगाता। फिरेदम्भदर्पादिसेछुटारहै ऐसावालकअपुष्टेन्द्रियोंसेअपनेकोअन्यसेनहींआविःकरसताहै तैसा आपकुलवलहीनबुद्धिमान्रहे अन्यथाभीतरीवहिरीप्रवृत्तिसमाननिष्कंपअहियाआहारमेंकभीकिसीकोनहींहोतीहै सोयतीजीकोहो इसीमेंइन स्मृतियोंकाहृदयहै किअव्यवज्जडवच्चापिमूकवच्चमहींचरेदित्यादि ॥

———*———

ज्ञानोत्पत्यधिकरण ॥ १६ ॥

ऐहिकमप्यप्रस्तुतप्रतिबन्धेतद्दर्शनात् ५१

क्याविद्याकाफलइसजन्ममेयाजन्मांतरमेंहोगा नहीं कोई
श्रवणादिजन्मांतरमेंविद्याकेलाभार्थकर्त्ताहै जैसे औषधियाका
रीरीष्टिकाफलइसीजन्ममेहै वैसाविद्याकाहै यज्ञादिश्रवणादि
द्वाराइसीजन्ममेविद्याकोजन्मातेहैं विद्याप्रमाणजन्यहोनेसे ति
ससेविद्याजन्मइसीजन्ममेहै सोनहीं इससेकहाकि ऐहिकमप्य
प्रस्तुतप्रतिबन्धइति जोकुछरोकनहोवेतोइसीजन्ममेविद्या होती
हैउपस्थितविपाकअतिआयु:भोगकर्मान्तरसेविद्यायहांपकतीहै
जोसाधन कोरोकहैतोपरलोकमेपकतीहैकर्मदेशकालनिमित्तसे
फलदेतेहैंयहनियमअक्यनहीहै किजोएककर्मकेविपाचकअर्थात्
फलदेनेकोखड़े हैं देशकालनिमित्त वेअन्यकर्मकेभीहैंजिससेवि
रुद्धफलदायीकर्महैंशास्त्र इसीमेबैठाहै किइसकर्मकायहफलहै
नकिदेशकालनिमित्तविशेषकोकहिताहै साधनकेवीर्यविशेषसे
किसीकोफलतोक्षिप्रप्रगटहोतीहै औरकोरुकीरहितीहै मु
क्तिकोयहांअपरलोकमेविद्याहोऐसीअविशेषणविद्या मेअभिस
न्धिनहींहोती सोनहीं अभिसन्धिकोनिरङ्कुशहोनेसेनहींश्रवणसे
विद्याबर्धतीहै किन्तुप्रतिबन्धक्षयकीअपेक्षाकरतीहै श्रुतिदुर्बो
धआत्माकोदिखातीहै श्रवणायापिबहुभिर्योनलभ्य:शृणवन्तोपि
बहवोयन्नविदु:आश्चर्योवक्ताकुशलोस्यलब्धाआश्चर्योज्ञाताकुशला
नुशिष्टइति अर्थ आत्माकायथावत्वक्ताअद्भुतकोईहै औरलब्धा
साक्षात्कारवाभूपरोक्षसेअद्भुतहै निपुणसेसिखायाशिष्य ज्ञाता
अद्भुतहै भावशब्दसेसुनिरकहाकरतेहैं तद्दर्शनात् गर्भएवैतच्छ
यानोवामदेवएवमुवाचेतिश्रुतिवामदेवकोमाकेपेटमेज्ञानहुआ
किमैब्रह्महूं इसअर्थकोश्रुतिदिखातीहै तिससे ऐहिकयाआमुष्मि

कविद्याकाजन्मप्रतिबन्धकेचयकीअपेक्षासेहै जैसे चित्रेष्टिकाफलपशुइसजन्ममेंया जन्मान्तरमेंहै ॥

मुक्तिफलाधिकरण ॥ १७ ॥

एवंमुक्तिफलानियमस्तदवस्थावधृतेस्तदवस्थावधृतेः ५२

जैसे ब्रह्मलोकनाममुक्तिचारबिधहै सालोक्य १ सारूप्य २ सामीप्य ३ सार्ष्टि ४ चतुर्मुखकेसमानऐश्वर्यमिलनासार्ष्टिनाममुक्तिहै तैसे मुक्तिभीसातिशयहै फलसे जैसे कर्म भूयस्त्व से फलभूयस्त्वहै इसहेतुसेस्वर्गबहुतभांतिकाहै मुक्तियहांविषयहै विद्यावत्विशेषनियमहैयानहींहै फलकेउभयथासम्भवसेसंशयहै जैसे मुमुक्षुकोफलमेंऐहिकामुष्मिकफलकृतविशेषनियम देखाथा तैसे मुक्तिमेंउत्कर्षअपकर्षसेविशेषनियमहो इसशङ्कासे कहाकिएवंमुक्तिफलानियमइति मुक्तिफलमेंविशेषनियमशङ्कितव्यनहींहै कैसे तदवस्थावधृतेः वेदांतमेंमुक्त्यवस्थाएकरूपनिश्चितहै ब्रह्महीमुक्त्यवस्थाहै सोनानाकारनहींहै अस्थूलादि श्रुतियोंसेऔरविद्याकासाधनअपनेवीर्यसेअपनेफलविद्यामेंकुछअतिशयकरोनकिविद्याकेफलमुक्तिमेंविद्यासेअभिव्यक्तब्रह्मानन्दमुख्यफलहै अभिव्यक्तिअविद्याकीनिवृत्तिहै आनन्दस्फूर्तिविद्यासेसाध्यहै औरअविद्याअनिर्वाच्यहै अन्यमतमेंमुक्तिब्रह्मसेअनन्यहै विद्याछोटीबड़ीनहींहै किन्तुबड़ीहै तिससेविद्यामेंचिरअचिरकाभेदहै मुक्तिमेंछुटाईबड़ाईनहींहैविद्याभेदकेअभावसे भी विद्याफलभेदकानियमनहींहै मुक्तिसाधननिर्गुणविद्याकाकर्मों

कासाभेदनहींहै औरमनोमयादिसगुणविद्यामेगुणोंके आवापउ द्वापकेवश सेविद्याभेदभेदहैउससेफलभेदहै कर्मभेदवत् तैसालि ङ्गदेखो तंयथायथोपासतेतदेवभवतीति फिरनिर्गुणमेकुछगुण- हीनहीं तोकौनकरेगा अतिशयकोविद्यामे तदवस्थाधृतेः इस पदकाअभ्यासअध्यायकीपूर्तिकाद्योतकहै तिससेविद्यासम का लहीं मुक्तिहै ॥

इतिश्रीयुक्तताराचन्द्रवर्मणाकृतेब्रह्मसूत्रभाषाभाष्ये तृतीया- ध्यायस्यचतुर्थपादःपूर्णः ॥

औरपादमेभीआत्मेत्यादि इससूत्रसेलेचारअधिकरणप्रासङ्गिकहैं अन्यअधिकरणसाधनाध्यायकेहीशेषहैं तोभीप्रमाणफलसेफलाध्यायमेंसङ्गतहैं अहंग्रहोपासनाओंका औरश्रवणादिका अभ्यासअर्थसिद्धहै इसीसूत्रकोपढ़ताहै तीसरेमेपरापरविद्याकि साधनोंकीचिन्ताजाता इसीवहसाधनाध्यायथा अबचौथेमेफलकीचिन्ताआवेगी इसी फलाध्यायकहावेगा पूर्वश्रवणादिसाधनकहेसम्प्रति आवृत्यादिफलजोकिअर्थापत्तिसेप्राप्तहै उसकी चिन्ताअघके अश्लेषाधिकरणसेपूर्वचिन्ताहै उसी आगेजीवन्मुक्तिकीचिन्ताहै दूसरेपादमेउत्क्रान्ति तीसरेमेगन्तव्यअर्चिरादि मार्गकानिर्णय चौथेमेज्ञानवोउपासनाकेफलकानिर्णयहै ॥

फलाध्याय ४ जीवन्मुक्ति पाद ॥ १ ॥

आवृत्त्यधिकरण ॥ १ ॥

आवृत्तिरसकृदुपदेशात् १ ।

आत्मावाअरेद्रष्टव्यः सोन्वेष्टव्यः सविजिज्ञासितव्यइत्यादि इनमेसंशयहै किक्यासकृत्प्रत्ययकरे या आवृत्तिकरे प्रत्ययकी सकृत्प्रत्ययहै जैसेप्रयाजादिहोतेहैं यज्ञमेंअदृष्टार्थशास्त्रसकृत् करनेसेकृतार्थहै जोअश्रुतआवृत्तिकोकरेगेतोअशास्त्रार्थकृतहो ननुतुमनेअसकृत्उपदेशोंकाउदाहरणदियाथा श्रोतव्योमन्तव्यो निदिध्यासितव्यइत्यादि जैसेशब्दहैंउनकीआवृत्तिमेंतात्पर्यहैकि सकृत्श्रवण सकृत्मनन सकृत्निदिध्यासनकरे नकिबारबार इनहीमेंलगारहै वेदोपासीतेत्यादि इनसकृत्उपदेशोंमेअनावृत्तिदेखोहै ऐसाप्राप्तहै इसकाउत्तरसुनो प्रत्ययोंकीआवृत्तिकरो कैसे असकृदुपदेशात् श्रोतव्योमन्तव्योनिदिध्यासितव्यइत्यादि

इसजातिका।असकृत्उपदेश प्रत्ययोंकोआवृत्तिकासूचकहै ननु
कहाकिजेतेशब्द हैंउतनीआवृत्तिकरोनकिअतिरिक्तअधिक सो
नहीं श्रवणादिदर्शनांतआवर्त्यमानदृष्ठार्थहैंजैसेतंदुलादिकोसि
द्धितकअवघातादिहैं तैसेश्रवणादिका।बारबारकरना औरभीउ
पासनऔरनिदिध्यासन जोअन्तर्गताऽवृत्तिगुणकोक्रियाहै उस
काअभिधानहैं देखोलोकमें नृपमुपास्तेइति इसमेंजोतात्पर्यहैसो
नृपकेअनुवर्त्तीहैसोहीकहाहै औरध्यायतिप्रोषितधवाधवमि-
त्यादि इनवाक्योंमेजोस्त्रीनिरन्तरपतिकीउत्कण्ठाकर्तीहैसोही
कहीहै जहांतकदृष्टवनैवहांतकअदृष्टमाननाअनुचितहै आवृ-
त्तिद्वारासाक्षात्कारफलहै जिनका।ऐसेश्रवणादिका।षड्जादिमेंदे
खनेसेअसकृत्कहिनाआवृत्तिकासूचकहै वेदान्तोंमेंवेदनउपास
नदोनोंकाप्रयोगएकार्थअव्यतिरेकसेदेखतेहैं कहींविदिसेउपक्र
महैऔरउपासिसेउपसंहारहै जैसे यस्तद्वेदयत्सवेदस मयैतदुक्त
इत्यनुमएतांभगवोदेवतांशाधियांदेवतामुपास्सइति अर्थ स
रैक्वनेजोजानासोप्राणहै रैक्वसेअन्यभीजोकोईजानेतोउसकेफ
लमेंसबघुसाहै एतदुक्त इत्यंमैंनेरैक्वश्रेष्ठकहा यहएकहंसनेदूसरे
हंससेकहासोसुनिरैक्वकेपासजाकेजानश्रुतिनेकहाथा किहेभग
वन् एतां जिसदेवताकोरैक्वजानताहैउसको मेनुशाधि मुझसे
कहिये इसकाअभिप्रायहैकिईश्वरसेअन्यदेवकोमतमानोउनसे
कुछभीभलानहींहै उनकेअर्थव्यर्थधनपशुवधादिहैं औरईश्वरा
र्थवेदमेंधनपशुआदिसाधनसाध्ययज्ञनहींहै कहींउपासिसेउप-
क्रमऔरविदिसेउपसंहारहै जैसे मनोब्रह्मेत्युपासीत इसमें
भातिचतथातेचकीत्यायशसाब्रह्मवर्चसेनयएववेदेति ब्रह्मवर्चस
वेदविद्यावढ़तीहै तिन्हमेंकृत्कहिनेमेंआवृत्तिसिद्धिहै औरअ-
सकृत्कहिनाआवृत्तिकासूचकहै चाहेंसगुणहोचाहेंनिर्गुणहोउ

नकेसाक्षात्कारकासाधनजोध्यानहैउसकीआवृत्तिश्रोतीभीरच-र्थसिद्धहैदृष्टार्थसे औरश्रवणमननकेभसकृत्कहिनेसेभर्थसिद्धहै आवृत्ति ॥

लिंगाच्च २।

लिङ्गभीप्रत्ययों* कीआवृत्तिकाप्रत्यायकहै आदित्यउद्गीथइत्येत देकपुत्रतादेविगापोयरश्मींस्त्वंपर्यावर्त्तयादिति अर्थएकआदित्य कोउद्गीथमेंउपासनासेमेरातूएकपुत्रहै यहकौषीतकिनेपुत्रसेक हाथाइसमें तूतैसामतकर किन्तुबहुतरश्मिओरआदित्यकीपृथक् आवृत्तिकर पर्यावर्त्त यात्पर्यावर्त्तयतात् तत्लोपश्छांदसहै इस मेंरश्मिबहुतकाज्ञानबहुतपुत्रार्थविहितहै सोसिद्धवत्प्रत्ययावृ-त्तिकोदिखाताहैफलात्वसामान्यसेयाध्यानसामान्यसेसबप्रत्ययों मेंआवृत्तिसिद्धिहै श्रवणमननध्यानमें आक्षेप कहिताहूंकिहोसा ध्यफलप्रत्ययोंमें आवृत्तिसगुणमें आवृत्तिकेअतिशयकेसंभवसे। औरजोपरब्रह्ममेंप्रत्ययहै जैसाकिनित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभावआत्मा कोसमर्पतीहै उसमेंकिसअर्थ आवृत्तिहोइसमें इथाहो सकृत् सुनेसेब्रह्मात्मकीप्रतीतिकीअसिद्धिसेआवृत्तिमानीहै यदियहक होसोनहींहै आवृत्तिसेंभीब्रह्मात्मप्रतीतिकीअसिद्धिसे जोतत्व मसीत्यादिवाक्य सकृत्सुनेब्रह्मात्मप्रतीतिकोनहींजन्माओफिर सेहीआवर्त्यमानउसकीजन्माबेगा यहकाप्रत्याशाहो अबकहो किनहींकेवलवाक्यकिसीअर्थकेसाक्षात्कारकरनेकीशक्तहै इसमें युक्तिसापेक्षवाक्य अनुभवकरादेगाब्रह्मात्माका तोभीखतःअश-क्तकीयुक्तिकेसहारेसेशक्तिमेंआवृत्तिव्यर्थहै युक्तिसकृत्प्रवृत्तहीअप नेअर्थकीअनुभाविकाहोगी होयुक्तिओरवाक्यसे परोक्षज्ञानन

* विज्ञान

कि अपरोक्ष जैसेहैमेरेपेटमेशूल इसवाक्यसेदेहकम्पादिचिन्हों
सेशूलकाहोनाहीसामान्यपरजानताहै नकिविशेषकाअनुभव
होताहै जैसेवुहीशूलीऔरविशेषानुभवअविद्याकानिवर्त्त कहो
उसकेअर्थंआवृत्तिहै यदिसोनहींअसकृत्युक्तिवाक्यकेकरनेसेवि
शेषज्ञानकेजन्मकेअसम्भवसेनहीं जोसकृत्प्रयुक्तशास्त्रयुक्तिदोसे
अज्ञातविशेषहै सोसहस्रशास्त्रयुक्तिकेप्रयुज्यमानसेज्ञातनहींहो
सकाहैतिसेयदिशास्त्रऔरयुक्तिविशेष*यासामान्य*जोचाहेसो
कहोउभयथाभीसकृत्प्रवृत्तवेत्ताकार्यंकरेहैं इससेआवृत्तिकाअनुप
योगहैसकृत्कहेशास्त्र औरयुक्तिकिसीको अनुभवनहींकरासक्ते
हैं सोनियमशक्यनहींहै प्रतिपत्तृयोंकीविचित्रप्रज्ञासे । औरभी
नानांशलौकिकपदार्थं सामान्यविशेषवान्हैं उनमे एकावधा
नसेएकअंशकाअवधारणहैऔरअपरसेअपरकाहै ऐसाहीअभ्या
सकाउपयोगजैसाकिवर्णोंकाअभ्यासवड़ेपाठादिमें सामान्यवि
शेषसेरहित चैतन्यमात्रात्मकनिर्विशेषमेप्रमाकेजन्मार्थंअभ्यास
कीअपेक्षायुक्तनहींहै यहांकहिताहूंहोआवृत्तिव्यर्था उसकोजो
तत्वमसीतिसेसकृत्कहाब्रह्मात्मकेअनुभवकोसक्ताहो. जोशक्ता
नहींहैउसकोआवृत्तिउपयुज्यमानहै देखोछान्दोग्यमेंतत्वमसि
कहिकेफिरबारबारपूछातोजोजोशङ्काहैतुया उसकोनिरासकर
तत्वमसिहीअसकृत्कहाहै तैसेश्रोतव्यआदिदिखायेहैं ननुजो
कहायाकिसकृत्सुना तत्वमसिवाक्यअपनेअर्थंको अनुभवकरा
नेमेसक्तनहींहै तिस्से आवर्त्यमानभीसक्तनहींहोगा यहदोषन-
हींहै जोदृष्टहैउसमेअयुक्तनहींहै सकृत्सुनेवाक्यसेमन्दप्रतीत
वाक्यार्थंकेआवर्त्तकदेखेहैं औरअभ्यासकेव्युदाससेसम्यक् प्रति
पन्नदेखेहैं जैसेषड्जादिस्वरभेदकेसाक्षात्कारमेसक्तभीकान अ-

१ प्रात्यक्षिक। २ पारोक्ष्य।

भ्यासकोचाहताहै तैसेब्रह्मकेसाक्षात्कारमेंसततवाक्यअभ्यासको चाहताहै यहअनुभवहै औरतत्वमसितुमकोतत्कहिताहै तत् सेप्रकृतसत्ब्रह्मकहाहै अजादिपदोंसे जन्मादिभावकेविकार निवारेहैं अस्थूलादिपदोंसेद्रव्यभावकेधर्म लंबाईचौड़ाईमुटाई आदि निवारेहैं विज्ञानादिपदोंसेचैतन्यकहाहै यहशून्यसर्व संसारधर्मऔरअनुभवात्मक औरब्रह्मसंज्ञका तत्पदकाअर्थ वेदान्तियोंमेंप्रसिद्धहै तैसात्वंपदार्थभी प्रत्यगात्माश्रोता देहसेले प्रत्यगात्मासेसंभाव्यमानचैतन्यांतनिश्चितहै जिनकोतत्वंअज्ञानसंशयविपर्ययसेबद्धहैं उनकोतत्वमसिअपनेअर्थमेंप्रमाकोनहीं जन्मासक्ताहै वाक्यार्थकोपदार्थपूर्वकहोनेसे इस्सेउनकोशास्त्रयुक्तिकाअभ्यासपदार्थविवेकार्थएष्टव्यहै जोभीप्रतिपत्तव्यआत्मा-निरंशहै तोभीउसमेंनानांशआरोपितहैं वेजेहैं देहइन्द्रियमनबुद्धिविषयवेदनादि एकावधानसेएकांशउठादिया फिरअपरअवधानसेअपरांशऐसीक्रमवतीप्रतिपत्तियुक्तहै आत्मामें यहआत्माकीप्रतिपत्तिकापूर्वरूपहै औरजिननिपुणमतियोंकोअज्ञानसंशयविपर्ययादिपदार्थमेंबंधननहींहैं वेतत्वमसिसकृत्कहनेसे वाक्यार्थकेअनुभवमेंसक्तहोतेहैं उनकोआवृत्तिव्यर्थइष्टहै सकृत्जन्मीआत्माकीप्रतिपत्तिअविद्याकीनिवर्त्तिकाहै इसमेंकुक्रमनहींमानाहै सच्चहै सोतोयुक्तहो । जोकिसीकोआत्मप्रतिपत्तिहो आत्माकोदुःखित्वादिकीप्रतिपत्तिबलीहै इस्से नहींदुःखित्वादिकेअभावकोकोईपहुंचताहै यदियहकहोसोनहीं जैसेदेहादिका अभिमानमिथ्याभिमानहै तैसेदुःखित्वादिकाअभिमानमिथ्या होनेसे प्रत्यक्षसेदेहमेंमिथ्याभिमानदेखतेहैं जैसेदेहकेछेदवोदाहसेकहिताहै किमैंछिदावोदहाहूं औरबाह्यतरजेपुत्रमित्रादिहैं सन्तप्यमान उनकीतापमेंमैंतपाहूं यहआरोपदेखाहै तैसादुः

खित्वादिअभिमानहो देहादिवत्चैतन्यसेबाहिर दुःखित्वादि कोप्राप्तिसे जोसुषुप्तादिमेंचैतन्यनहींजानपड़ताहै तोउसकासो केउठेकोसुखदुःखशयनकाअनुभवकौनकर्त्ताहै जोकर्त्तासोचेतनहै तिस्से सबदुःखोंसेछुटाएकचैतन्य अहं यहीआत्माकाअनुभवहै आत्माकेअनुभावककोअन्यज्ञत्यनहींहै चाहेआवृत्तिहोयानहोपरतत्वमसिसेछुट्टीनहो नहींयरवथार्थसुतोद्दाहहै नियुक्तकहैगाकिमैं इसकाममेंअधिकृतहूं कर्त्ताहूं सुजिसेयहकर्त्तव्यअवश्यहै ऐसाब्रह्मप्रत्ययसेउलटाप्रत्ययहोगा जोवाक्यार्थकाजिज्ञासुहै उसकोवाक्यार्थमेंघुसनेकेलियेआवृत्यादिकाकहिनाइष्टहै तिसे परविषयप्रत्यत्वमें औरप्रत्ययकेउपायोंकेउपदेशमें आवृत्तिसिद्धिहै अनुभवसुखदुःखकाएकहीठौरमेहै फिरआत्मासुखरूपहै नकिदुःखरूप यहहठवोउपासनाहै ॥

आत्मेश्वराधिकरण ॥ २ ॥

आत्मेतितूपगच्छंतिग्राहयंतिच ३ ।

तत्वज्ञानार्थध्यानकीआवृत्तिकेकालमें जो वैदिकविशेषणयुतईश्वरहै सोक्याअहंब्रह्मास्मि ऐसाध्येययामत्स्वामीश्वर ऐसाध्येयहै यहविचारहै प्रत्यगात्मवाचीआत्मशब्दमेंकैसेसंशयहुआ कहिताहूं जीवेश्वरकेअभेदसंभवमेंआत्मशब्दमुख्यहै इतरथागौणहैऐसामानतेहैं नाहमीश्वरः यहीग्राह्यहै अपहत* पाप्मादिगुणीईश्वरविपरीतगुणोंसे औरविपरीतगुणीशारीरअपहतपाप्मादिगुणोंसेनहींलिनकोशक्यहै औरईश्वरकोसंसारीआत्मामानेसेईश्वरकाअभावहो तिस्से ईश्वरबोधकवेदव्यर्थहो औरसंसारीकोईश्वरात्मकमानेसे अधिकारीकेअभावसे वैदिकविधि

* सर्वज्ञेत्यादि

व्यर्थहै। औरप्रत्यक्षादिप्रमाणोंसेबिरोधहै। जीवईशकीभेदमेभी
तादात्म्यदर्शनवेदसेकर्त्तव्यहै जैसेप्रतिमादिमें विष्णुआदिकाद-
र्शनहै यदियहकहो।कोऐक्यध्यानइष्टहै नकिऐक्य हमकोयहप्रा-
मनहीकरासकतेहो। किसंसारीकोमुख्यआत्माईश्वरहै कहितःहूं
किआत्माहीईश्वरप्रतिपत्तव्यहै जाबालईश्वरप्रक्रियामे ईश्वर
कोआत्माजानतेहैं त्वंवाअहमस्मिभगवोदेवते अहं वैत्वमसिदे
वतेइति अन्यऐसेवाक्यवेदमेंहैं ग्राहयन्तिच आत्माकोईश्वरग्रा
हकवेदान्तहैं एषतेआत्मांतर्याम्यमृतइत्यादि जीवईशकातादा-
त्म्यदर्शनप्रतीकदर्शनहोगा। विष्णुप्रतिमान्यायसेन्यायार्थ अमूर्त्त
कोमूर्तिमानमानाझूठहै सोअयुक्तहै अभेदश्रुतिगौणीनहीहोतीहै
सोकर्ममेंअप्रसिद्धअपूर्वार्थकेविधानसे भेदश्रुतिलोकभेदानुवादि
नीहै।जैसेगौणीहै विंबप्रतिबिंबकोनांईविरुद्धधर्ममिथ्या हैं जहां
प्रतीकदृष्टिइष्टहैतहांसकृत्वाक्यहै जैसे मनोब्रह्मादित्योब्रह्मेत्या
दिफिरजहांइयुंकहा।कित्वमैंहूं औरमैंतूहै इसलौटपौटसंप्रती
कश्रुतिवैरूप्यसेअभेदकाबोधहै भेददृष्टिकेअपवादसेअपवादका
श्रुति अथयोन्यांदेवतामुपास्तेऽन्योसावन्योहमस्मीतिनसवेदय-
थापशुः सर्वंतंपरादाद्योन्यत्रात्मनः सर्ववेदेत्यादि अर्थ एकही
चेतनआत्मादेवतामान्यहै नकिनानाजड़रूप विरुद्धगुणोंमेंमि-
थ्याआत्मभावसम्भवनहींहै यहदोषनहींहै विरुद्धगुणोंमेंमिथ्यात्व
सिद्धिसे जोईश्वरकाअभावकहाथासोझूठहै ईश्वरकोसंसारी
आत्मानहीकहिताहूं किन्तुसंसारीकोसंसारित्वकोहटाकेईश्व-
रात्माकहिनेकोइष्टहै ऐसेभईतईश्वरके अपहतपाप्मादिगुण
और जीवकेअल्पज्ञादिगुणमिथ्याहैं यहव्यवस्थाहै अधिकारी
काअभावऔरप्रत्यक्षादिमानविरोधनहींहै बोधसेपूर्वसंसारीमा
नाहै औरसंसारीविषयकप्रत्यक्षादिव्यवहारहै यत्रत्वस्यसर्वंइसने

बोधमें प्रत्यक्षादिकोंकाअभावदिखायाहै यदिकहोकिप्रत्यक्षादि
कोंअभावमें वेदकाभीअभावहै।सोइष्टहै अत्रपितापिताभवती
ति इसउपक्रमसेवेदाअवेदाइसवाक्यसेइष्टहै मुक्तिकोवेदकाभी
अभावबोधमें यदिकिसकोअवोधहै यहपूछैतूतो।जोतूपूछताहै
उसीकोहैमैंकहिताहूं ननुवेदमेंईश्वरहीकहा फिरअबोधकहां
सर्वज्ञसेयदिऐसा।प्रतिबुद्धहै तूतदाकिसीकोअबोधनहीहै जोकि
सीनेदोषकहाकिअविद्यासेआत्मासहितीयहै इससेअद्वैतासिद्धि
हैसोनही अनिर्वाच्यअज्ञानसे तिससेआत्माहीईश्वरमें मनको
धीयमानकरै ॥

प्रतीकोपासनाधिकरण ॥ ३ ॥

नप्रतीकेनहिसः ४ ।

मनोब्रह्मेत्युपासीतेत्याध्यात्ममथाधिदैवतमाकाशोब्रह्मेति त
थादित्योब्रह्मेत्यादेशःसयोनामब्रह्मेत्युपास्तइत्यादि इनप्रतीको
मेंसंशयहैकिसंशयबीजदोपक्षमर्वोंनहैं जैसेब्रह्ममेंअभेदसेअहंग्र-
हकहाथा ऐसेप्रतीकोंमेंब्रह्मविकारद्वाराजीवाभिन्नब्रह्माभिन्नसे
जीवकेअभेदसेअहंग्रहकार्यहै प्रतीकोंमेंआत्मग्रहकार्यहैयानही
उनमेंआत्मग्रहयुक्तहै कैसेश्रुतिमेंब्रह्मकोआत्मप्रसिद्धिसे औरप्र
तीकब्रह्मकेविकारहैं फिरवेब्रह्माहैं इससेआत्मसिद्धहैं तिससेप्रती-
कमेंअहंग्रहकरोसोनही प्रतीकमेंआत्माकोमतिनबांधो सः उ-
पासकप्रतीकव्यस्तोंकोआत्मानहीअनुभवताहै जोब्रह्मविकारसे
प्रतीकब्रह्मकहेथेतिससेआत्माहै सोझूठहै प्रतीकोंकाअभावहो
जानेसे विकाररूपकाउपमर्दनकरनामादिजातको ब्रह्मकीआ-
श्रयकहाहै विकाररूपकेउपमर्दमेंनामादिप्रतीकहीनहीतोआ-
त्मग्रहनही विकारऔरब्रह्मस्वरूपसेएकहोनाअनहोनाहै वि-
कारबाधसेऐक्यकहीऔरप्रतीकबाधमेउपासनविधिनहीहै न-

हींब्रह्मकोआत्माके कहिनेसेब्रह्मदृष्टिके उपदेशोंमेंआ त्मदृष्टि कीकल्पनानहीहै कर्तृत्वादिसबसंसारधर्मोंकेनिराससेब्रह्मको आत्माकहाहै औरकर्तृत्वादिकेअनिराससे उपासनकाविधान है जीवऔरप्रतीकमेंरूपभेदसेऔरअहंग्रहमेंविधिकेनसुन्नेसेअ- हंग्रहनहीहै जैसेरुचकस्वस्तिकहेमरूपसे एकऔरमिथोभिन्नहैं तथाजीवऔरप्रतीकब्रह्मरूपसेएकऔरमिथोभेदसमहैयदिधर्मि केभेदसेजीवप्रतीकके अभावकेनिश्चयसेएक वस्तुमानोतदाउपा सनेकेछेदकहिचुके इस्से प्रतीकोंमें आत्मदृष्टिनहीकर्त्ते अर्थात् ऐक्यधी नहीं है जैसा कि मैं ब्रह्म हूं तैसा मैं मन हूं या आदित्य हूं या ईश्वर हूं यह बुद्धि नहीं हो सक्ती है प्रतीको नात्मेतिधीः कुतोयस्मादुपासकोनात्मतयाप्रतीकं गृही- तुंशक्तोस्तीति ॥

ब्रह्मदृष्ट्यधिकरण ॥ ४ ॥

ब्रह्मदृष्टिरुत्कर्षात् ५ ।

जैसेस्थाणुचोरइतिप्रत्येतीति इसवाक्यमें स्थाणुशब्दमुख्या- र्थवाचीहै और चोरशब्ददृष्टिकालक्षकहै तैसेही मनोब्रह्ममेंहै इत्यादिउदाहरणोंमेंभीसंशयहै किक्याआदित्यादिदृष्टि ब्रह्ममेंउपा सनीयहैं याब्रह्मदृष्टिआदित्यादिमें कैसेयहसंशयउठा सामा नाधिकरण्यमेंकारणकेअनिश्चयसे आदित्यादिशब्दोंसेब्रह्मशब्द कासामानाधिकरण्यलब्धहै जैसेआदित्योब्रह्म प्राणोब्रह्म विद्यु द्ब्रह्मेत्यादि इनमेंसमानविभक्तिकहीहै इनमेंआंजससामानाधि करण्यकल्पनहीहै ब्रह्मऔरआदित्यादिशब्द अर्थान्तरवाचिसे प्रसिद्धागायकासामानाधिकरण्यनहीहै ननुब्रह्मप्रकृतिऔरआ- दित्यादिविकृतिहैं इससम्बन्धसेब्रह्मादित्यादिकासामानाधिक

रण्यहोमृद्घटवत् मैंयहनहींकहिताहूं ऐसेप्रकृतिसामाधिक-
रण्यसेविकारकाप्रविलयहो कहामैंनेयाइस्से प्रतीककेअभावका
प्रसङ्ग प्रतीककेअभावमेंवुहपरमात्मवाक्यहो उस्से उपासनाधि
कारबाधितहो और परिमितविकारोंका ग्रहणव्यर्थहो सर्वत्र
ह्मयहकाहो तिस्से ब्रह्मकाअग्निर्वैश्वानरइत्यादिवत् अन्यअन्य
दृष्टिकेलगानेमेकिसमेकिसदृष्टिकोलगावेयहसंशयहै इस्सेअनि-
नियमहै नियामकशास्त्रकेअनहोनेसे यहप्राप्तहै निकृष्टमप्यु-
पास्यंफलवत्वादितिन्यायोनियामकोस्ति बांभगायसेदुधारीके-
रीपालनयोग्यहै इसयुक्तिसेब्रह्ममेंआदित्यादिदृष्टिकरोयहप्राप्त
है ऐसेआदित्यादिदृष्टिसेब्रह्मउपासितहै औरब्रह्मोपासनफलव
तहै यहशास्त्रसेसोमाहै तिस्से मतआरोब्रह्मदृष्टिआदित्यादिमे
सोमतकहो आदित्यादिमेब्रह्मदृष्टिहोहो कैसेउत्कर्षसे उत्कर्षसे
आदित्यादिदृष्टहैं उत्कृष्टदृष्टिसेआदित्यादिमेअभ्यासहै इस्से य
हलौकिकन्यायअनुकूलहैकि उत्कृष्टदृष्टिर्हिनिकृष्टअभ्यसनीया-
स्तीति अर्थ छे।टेकोबड़ादेखे जैसेचत्तामेंनृपदृष्टि औरचत्ताअ-
नुसर्त्तव्यहै उलटेमेपापहो नहिचत्ताकीदृष्टिसेगृहीतराजाऔर
निकर्षणीयमानश्रेयार्थहो ननुशास्त्रकी प्रामाण्यसेअशंकनीय
यहांपापहो औरनहींलौकिकन्यायसे शास्त्रीयदृष्टिका नियम
युक्तहै यहांकहिताहूं निश्चितशास्त्रार्थमेतुम्हाराकहाहो औरसं
दिग्धशास्त्रार्थमे संदेहनिर्णयार्थं आश्रीयमानलौकिकन्यायभी
नहींविरुद्धहै इस्से शास्त्रकीआशयउत्कृष्टदृष्टिकेअभ्यासमेहै फिर
निकृष्टदृष्टिकेअभ्याससेपापहोयहस्निष्यमानहैपहिलेतोआदित्या
दिशब्दोंकामुख्यार्थ लोकअविरोधसे फिरउननेअपनीअपनीअर्थ
वृत्तिसेलोकोंकीवुद्धिमे पीछेसेउतरा।ब्रह्मशब्दकाअर्थ उसकाउनके
अर्थोंसेमुख्यवृत्तिद्वारासामानाधिकरण्यकाअसम्भवहै तिस्से ब्रह्मदृ

ष्टिविधानस्थिरहै इतिशब्दशिरस्कजोशब्दहै सोसमीपकहीक्रि-
याकालक्षकहैयहलोकमेप्रसिद्धहै जैसेब्रह्मेत्यादेशइत्यादिमेसर्वं
अब्रह्मशब्दइतिपरपढ़ाहै औरआदित्यादिशब्द इतिशून्यपढ़ेहैं
जैसेशुक्तिकांरजतमितिप्रत्येति इसमेशुक्तिवाचकही शुक्तिका
शब्दहै औररजतशब्दरजतप्रतीतिकेवास्तार्थहै केवलरजतकी
प्रतीतिहीहै नकिवहांरजतहै ऐसेहीयहांभीआदित्यादिकोब्रह्म
प्रतीतकरोयहजानाहै वाक्यशेषभीदूसरीविभक्तिसेआदित्यादि
कोउपास्तिक्रियाकाव्याप्यमानदिखाताहै सयएतदेवंविद्वानादि
त्यंब्रह्मेत्युपास्ते ऐसावाक्सङ्कल्पमेजानो फलार्थब्रह्मोपासनआ-
दर्त्तव्यकहाथा सोउत्कृष्टोपास्यन्यायसे आदित्यादिउपास्यहैं
जैसेअतिथिआदिकीउपासनाकाफलब्रह्मदेताहै तैसेआदित्या
दिकीउपासनकाभीफलब्रह्महीदेगा भोजनदानादिसबकाफल
ब्रह्मदेगा नकिलेनेवाला याअन्यकोईदेवापूर्वादि सर्वाध्यक्षहोने
से यहांब्रह्मऐसाउपास्यहैकि प्रतीकोमेब्रह्मदृष्टिकाठहिराना
जैसेप्रतिमादिमेविष्णुआदिकाआरोपहै ॥

आदित्याधिकरण ॥ ५ ॥

आदित्यादिमतयश्चांगेउपपत्तेः ६ ।

यएवासौतपतितमुद्गीथमुपासीतेत्यादि पृथिवी १ अग्नि २ अन्तरिक्ष ३ आदित्य ४ द्यु ५ इनपांचलोकसामोंमें हिङ्कार १ प्रस्ताव २ उद्गीथ ३ प्रतिहार ४ निधन ५ इनपांचअंशोंसेपञ्चां शसामहै जोपांचऔरआदिरितिउपद्रवइति इनदोअधिकविभ- क्तिसेसप्तांशसामहै यहभेदहै इनअंगावबद्धउपासनोंमेंसंशयहैकि क्याआदित्यादिमेंउद्गीथादिदृष्टियोंकाविधानहै याउद्गीथादिमे आदित्यादिदृष्टियोंकाविधानहै यहांअनियमहैनियमनिदानके

नहोनेसेयहप्राप्तहै यहांब्रह्मकासाकिसीकाउत्कर्षविशेषनिश्चित नहींहै ब्रह्मआदित्यादिसेउत्कृष्टनिश्चयकोशक्यहै सवविश्वकेनि दानसेऔरअपहतपाप्मादिसेअविशेषसेआदित्यउद्गीथादिविका रीहैंतोउनकोकुछविशेषकेनिश्चयमेंकारणनहींहै अथवानियमसे उद्गीथादिमतिकोआदित्यादिमेंठहिराओ कैसेउद्गीथादिकर्मा-त्मकहै औरकर्मसेफलप्राप्तिकीप्रसिद्धिसे उद्गीथादिमतिमे उपा समानआदित्यादिकर्मरूपहुए फलकाहेतुहोंगे फिरइयमेवर्ग-ग्निःसाम इसमेंतदेतदेतस्यामृच्यध्यूढंसाम इसमेंऋग्शब्दसे पृ-थिवीऔरसामशब्दसेअग्निकहीहै सोअभ्यासपृथिवीअग्निदोनों मेंऋग्सामदोनोंकीदृष्टिकीचिकीर्षामेंसमर्थहै नकिऋग्सामदो नोंमेंपृथिवीअग्निदोनोंकीदृष्टिकीचिकीर्षामेसमर्थहै भाव अन इसमेंअङ्गाभ्यासइयमेवसेकहा तदेतत् अग्निनामसामएतास्यां पृथिवीरूपऋचामे अध्यूढं ऊपरवैठाहै सामवत् ऋचामेपृथिवी अग्निहै इससाम्यसे पृथिव्येवर्गग्निः सामयहध्यानकहाथा (जैसे धत्तामेंनृपदृष्टिकरनेसे नृपशब्दऔपचारिकहै नकिनृपमेंधत्ट शब्द और लोकेषुपञ्चविधं इसमेंअधिकरणसप्तमीकहिनेसेलो कमे सामकाअध्यासध्यानप्रतीतहै एतद्गायत्रंप्राणेषुप्रोतमिति इसनेउक्तदिखायाहै प्रथमपढ़े आदित्यादिमेंचरमपढ़ाब्रह्मअ-ध्यस्तहै कहां आदित्योब्रह्मेत्यादिशः इनमे प्रथमपढ़े पृथिव्या-दि चरमपढ़े हिङ्कारादि कहां पृथिवीहिङ्कारइत्यादिश्रुतियों मे इस अनङ्गआदित्यादिमेंअङ्गमतिकाक्षेपफेंकहै इसपरकहि ताहूं आदित्यादिमतिअङ्गउद्गीथादिमेंफेंको किस उपपत्तेः अपूर्वसन्निकर्षसे आदित्यादिमतिकेद्वारा संस्क्रियमाणउद्गीथा दिमेंकर्मकीसमृद्धिउपपद्यमानहै यदेवविद्ययाकरोतीति अर्थ जोसमुझबूझकामकियाजाताहै सोपूराहोताहै होकर्मसमृद्धि

फलमेंविद्याहेतु स्वतन्त्रफलकपांचसाममेंवैसेहोगा उनमेंभीअ
धिकृतकेअधिकारसे प्रकृतापूर्वकेसन्निकटसेयुक्तहै फलकल्पना
गोदोहनादिनियमवत् कर्मरूपउद्गीथसे आदित्यादिकोउत्कर्ष
कीसिद्धिहैफलरूपसे आदित्यादिप्राप्तिकर्म फलश्रुतिमेंशिष्टहै
और ओमित्येतदक्षरं इसअक्षरकाउपव्याख्यानं इससेउपास्यउ
द्गीथकेउपक्रममेआदित्यादिमतिकाविधानहै जोकहाकिउद्गी-
थादिमतिसे उपास्यमानआदित्यादिकर्मबहुतहोके फलकरेंगे
सोअयुक्तहै उपासनाआपकर्महोनेसेफलवतीहै आदित्यादिरूप
सेउद्गीथादिकोकर्मकेअनपायसे तदेतदेतस्यामृच्यध्यूढंसामयह
वाक्यथकपृथिवीअग्निमेंऋग्सामकाप्रयोगहै ऐसेअन्यादिशब्द
ईश्वरादिमेलाक्षणिकहैं लोकप्रसिद्धिवोवेदसीमासे औरलक्षणा
यथासम्भव कहींनिकटकहींदूरकेस्वार्थसम्बन्धसेप्रवर्त्ततीहै जैसे
गङ्गामेघर औरलड़काअग्निहै जोऋग्साममेपृथिवीअग्निकीदृ
ष्टिकोचिकीर्षाहै तोभीप्रसिद्धार्थऋग्साममेभेदसेकहिनाहै और
पृथिवीअग्निकेनिकटसे उनमेऋग्सामकाप्रयोगहै ऋग्सामके
सम्बन्धसेइसमे लक्षणायुक्तहै यष्टिशब्दभीन्टपमे रथहांकनेसेदौड़
गया क्युंकिक्षत्तासारथिहै इयमेवर्गिति इसनेऋचाकोपृथिवी
यथाक्षरन्यासनिश्चयकियाहै जबपृथिवीकोऋग्मानोगे तबइय
मृगेव यहअक्षरन्यासहोगा और यएवंविद्वान्सामगायतीति
इसनेजैसेअङ्गाश्रयविज्ञानका उपसंहारकिया नकिपृथिव्याश्रय
विज्ञानका तैसेहीलोकेषुपञ्चविध मित्यादिमेहै जोभीलोकके
आगेसप्तमीविभक्तिहै तोभीलोकोंकोसाममेंघुसाओध्याओ सा-
मकेआगेद्वितीयाविभक्तिकहिनेसे सामहीउपास्यजानाजाताहै
जोसाममे अध्यस्यमानलोकहैं उनमेसामहीलोकरूपसेउपासि-
तहै ऐसानमानोगेतोलोकहीसामरूपसेउपासितहो इससे एतद्

गायत्रंप्राणेषुप्रोतमित्यादि इनकाभीनिर्णयहोचुका क्योंकिइनमेंभीद्वितीयाविभक्ति तुल्यहीपढ़नेसे तुम्हारेपक्षमेंलोकेष्विति इनमेंसामरूपसेलोकउपास्यहैं इससे द्वितीयाऔरसप्तमीकाभङ्ग है हमारेपक्षमेंलोकरूपसेसामउपास्यहै इससे सप्तमीमात्रकाभङ्गअच्छाहै. अथखल्वमुमादित्यंसप्तविधंसामोपासीतेति इसमेंसबसामकाउपासनअच्छाहै पांचयासातढबकासामउपक्रमसेउपास्यहै उसमेंआदित्यादिकाअध्यासध्यानहै पृथिवीहिङ्कारइत्यादि इनकेपाठव्यत्ययसेभी हिङ्कारादिमें पृथिव्यादिदृष्टियुक्तहै तिसमेंअनङ्गाश्रय आदित्यादिमति अङ्गउद्गीथादिमें अपणीयसिद्धहै । उक्तचारअधिकरणप्रासङ्गिकहैं ॥

आसीनाधिकरण ॥ ६ ॥

आसीनःसंभवात् ७ ।

कर्मजैसेबैठेठाढ़ेनानाविधिसेहोसक्ताहै तैसेकर्माङ्गोंमेंसम्बन्धउपासनोंमें कर्माधीनसेआसनादिचिन्तानहींहै औरनकिसम्यग्दर्शनमेंविज्ञानकोआसनादिचिन्ताहै विज्ञानवस्तुतन्त्रहोनेसे अन्यउपासनोंमें क्याखड़ाबैठालेटाचलताआदि अनियमसेवर्त्तें यानियमसेबैठिकेहीकरे उपासनमानसहै इससे अनियमहैदेहस्थितिका इससे कहिताहैकि आसीनएवोपासीतेति कैसे सम्भवात् समानप्रत्ययकेप्रवाहकेकरनकानामउपासनहै सोचलतेदौड़तेपरसम्भवनहींहै गत्यादिचित्तकेविक्षेपकहोनेसेखड़ेकाभीदेहधारणमेंलगामन सूक्ष्मकेनिरीक्षणमेंक्षमनहींहै लेटेकाभीअकस्मात्ही नींदसेमनदबिजाताहै बैठेकोभीनींदबड़ादोषकुटिसक्ताहै आचमनादिसे इससे बैठेकोउपासनसम्भवहै देहस्थैर्यसेमनःस्थैर्यहोसक्ताहै ॥

ध्यानाच्च ८ ।

ध्यायतिकाअर्थसमानप्रत्ययप्रवाहकरनाहै ध्यायति ढीलाअङ्गचेष्टा रुकीहृष्टि एकबिषयसेखिचेचित्तमे उपचर्यमाणध्यायति देखतेहैं जैसेध्यायतिवक वोध्यायतिप्रोषितबन्धुहै औरआसन अनायासहै तिस्से आसीनकर्मोपासनहै ॥

अचलत्वंचापेक्ष्य ९ ।

औरध्यायतीवपृथिवी इनपृथिव्यादिमेअचलकीअपेक्षासेध्यायतिवादहै सोउपासनआसीनकाकर्महै इसमेंलिङ्गहै याऐसे करेकिअसतीस्त्रीमनजारमेरखती देहसेधवादिकामकाप्रकास करतीहै ॥

स्मरंतिच १० ।

आसनउपासनांगशिष्टस्मरतेहैं यहअर्थकेवलयौक्तिकहीनहीं किन्तुस्मार्त्तभीहै इस्सेयोगाम्नायमेंपद्मादि आसनकहेहैं इस्सेआसीनहीउपासनाकरे नकिअन्योकीनांई कभीवैठिजा वैकभी खड़ाहोवे कभीसिरझुककेमहीपरपड़े जैसेतड़फेतप्तनीरबालू मेमीन ॥

एकाग्रताधिकरण ॥ ७ ॥

यत्रैकाग्रतातत्राविशेषात् ११ ।

ब्रह्मयज्ञेनप्राच्यांदिशीति इसनेदिग्नियमकहा प्राचीनप्रवणे वैश्वदेवेनयजेतेति इसनेदेशनियमकहा अपराह्णे पिण्डपितृयज्ञेनचरन्तीति इसनेकालनियमकहाहै इनतीननियमोंसे जैसे कर्मकोकरतेहैं तैसेहीउपासनानियमोंसेकर्त्तव्यहै दोनोंसमा-

नवैदिकहोनेसे औरश्रुतिभी मनोनुकूलहीदेशकोकहितीहै य-स्मिन्देशेसोमन्यंतत्रैवात्मानंयुंज्यादिति औरशास्त्रसेकोईदेशा-दिनियमितनहींहै समेशुचौ यहयोगार्थदेशविशेषसुनतेहैं यदि यहकहोतदासत्यहै किसुनतेहो परयहभीनियमतात्पर्यसे वाक्य शेषनेमनोनुकूलार्थहीकहाहै दृष्टिसौकर्यार्थितदिति यहवाक्यशे षदृष्टार्थहै गङ्गाद्युतवेश्यादिगृहोंमें विघ्नपसेध्यानानुकूलसौमन स्यनहींहैकिन्तुरागानुकूलहै तीर्थादिभीजनतादिसे ध्यानानुकू लदेशनहींहैऔरदिग्देशकालद्रव्यकरताइनपांचकानियमज्ञान कांडमेंयज्ञकांडकेसमाननहींहै औरनकिआश्रमादिकानियमहै सबकोईश्वरकाज्ञानध्यानसर्वदाउचितहै तिसेदिगादिकानिय मनहींहैदिग्देशकालमेंसंशयहै किइनकाकुछआदरहैयानहींहै प्रायवैदिकआरम्भोंमेदिगादिकेआदरसे यहांभीउनकाआदरहै यहजिसकीमतिहै उसकोकहिताहै किदिग्देशकालमेंअर्थरूप आदरहै वहयहकिजिसदिशामे जिसदेशमे जिसकालमेमनके सौकर्यसेएकाग्रताहै तहांउपासनाकरै प्राचीदिग्पूर्वाह्णप्राची-नप्रवणादिवत् विशेषवेदकेनकहिनेसे इष्टएकाग्रतासर्वत्रस-मानहै शंका विशेषभीकोईपढ़तेहैं समेशुचौशर्करावह्निबालु-काविवर्जितेशब्दजलाश्रयादिभिः । मनोनुकूलेनतुचक्षुःपीड़ने गुहानिवाताश्रयणेप्रयोजयेदिति इसनेदेशविशेषकहाहैसोसत्य है ऐसाआदरतोभीइनविशेषोंमे आचार्यनेसुहृत्होकेअनादर कहाहैकि मनोनुकूलइतिच यहश्रुतिजहांएकाग्रताहै तहांहीं उपासनाकरनेकोकहतीहै आगेसमशुचदेशादिका विधानकर पीछेसेमनोनुकूलहीका विधानठहिरायाहै देशादिकेइटमेचि-त्तविक्षेपसे समाधिभङ्गहोसोमतहो इसे देशादिका आदर नहींहै ॥

आप्रायणाधिकरण ॥ ८ ॥

आप्रायणात्तत्रापिहिदृष्टं १२ ।

विजातीयप्रत्ययानन्तरितसजातीयप्रत्ययप्रवाहउपासनाशब्दका अर्थहैपहिलेअधिकरणमेंठहिराया किआवृत्तिसबउपासनोंमेंआ दर्त्तव्यहै जोसम्यग्दर्शनार्थउपासनाहैं वेअवघातादिवत्कार्या-न्तहैं दूसरेउनकाआवृत्तिपरिमाणज्ञातहै नहींसम्यग्दर्शनसेका-र्यकीसिद्धिमेकुछफलान्तशासनकोशक्यहै अनियोज्यब्रह्ममेंआ-त्माकोप्रतिपत्ति जिससूरिकोउसकोशास्त्रकेअविषयसे जोअहं ग्रहादिअभ्युदयफलार्थहैंउनमेंचिन्ताहै क्याकिसप्रत्ययकोंकेती देरआवृत्तिकरकेफिरछांड़दे याजौलोंजीवे तौलोंआवृत्तिकरता रहे फिरयहीप्राप्तहै किकुछकालप्रत्ययका अभ्यासकरकेछांड़दे आवृत्तिविशिष्ट उपासनशब्दार्थको सार्थकरणसे सोनहीं आप्रा यणादेवावर्त्तयेत्प्रत्ययं अन्त्यप्रत्ययवशाद्दृष्टफलप्राप्तेः कर्मज-न्मान्तरभोग्यफलकेआरम्भकहैं और कर्मानुरूपभावनाकेविज्ञा नकोभीमरणकालमेंआक्षेपकहैं (१श्रुति सविज्ञानोभवति स विज्ञानमेवान्ववक्रामतियच्चित्तस्तेनैषप्राणमायातिप्राणस्तेजसा युक्तः सहात्मनायथासंकल्पितंलोकंनयतीत्यादि) अर्थ भावना मयविज्ञानकेफलकेस्फुरणसहितहै विज्ञानसेस्फुरितफलसवि ज्ञानहोदेहसेनिकरताहै यहांजहांकासङ्कल्पकरताहै वहांमन प्राणमेंलीनहोताहै तेजः उदान आत्मा जीव । जलूकादृष्टान्त श्रुतिकाभाविफलस्फूर्तिहै । तृणजलूका जैसे अगिलापांव धरिराकेपिछिलापांवउठातीहै तैसेजीवकेसंकल्पानुसार देह भावादिसबमिलकेतोमरताहै जेप्रत्ययस्वरूपकोआवृत्तिकोछा-ड़क्या अन्त्यमरणकालमें भावीभावनाविज्ञानहै जिसकोआहैं

तिसेजैप्रतिपत्तव्यफलभावनारूपप्रत्ययहैं उनमेंमरणतककीआवृत्तिकरो श्रुतिसयावत्क्रतुरस्माल्लोकात्प्रैतीति इसनेधारासावह ताअन्यविज्ञानकहाहै वर्णार्थ स उपासक क्रतुः ध्यान कर्ममें इष्टद्वारा अन्यथीकाफलनहींहै अदृष्टद्वारकल्पनाहै सौंतवेला- यामेतत्त्रयंप्रतिपद्यतेतिच यहभीमरणकालमेंकर्त्तव्यशेषकोसुनातीहै अक्षितमसि १ अच्युतमसि २ प्राणसंशितमसि ३ जेतीनमन्त्रमरणकालमेंपढ़े। इनआठअधिकरणोंसेसाधनोंका विचारहै इससेसाधनाध्यायमेंइनकालिखनायोग्यथा तोभीफलाध्यायमेंफलकेपाससेलिखेहैं ॥

पापसंश्लेषाधिकरण ॥ ९ ॥

तदधिगमउत्तरपूर्वाघयोरश्लेषविनाशौ तद्व्यपदेशात् १३।

पूराहुआतीसरेकाशेष। अबब्रह्मविद्याकेफलकीचिंताकाप्रतायनहै ब्रह्मकेअधिगममें ब्रह्मसेविपरीतफलजोदुरितहै सो क्षीणहोताहै यानहींक्षीणहोताहै यहसंशयहै कर्मफलार्थहैं विनाफलदियेक्षयसम्भवनहींहै फलदातृत्वशक्तिकर्मकीश्रुतिसे अधिगतहै जोकर्मफलभोगकेबिनाअपवर्गहोतो श्रुतिकदर्थित हो फलांतपापहैंनकिबीचमेंनाशहै ऐसेप्रायश्चित्तकाउपदेशव्यर्थहै यहदोषनहींहै आहिताग्निकाघरजरेतोइष्टिकरे जरनेकी निमित्तसेनकिदोषनाशार्थविधिहै श्रुति अग्नयेक्षामवतेपुरोडाशमष्टाकपालंनिर्वपेदिति अर्थ पुरोडाश आंटिकाथोड़ेकेशुअबरावर सुघरकेमुहसावनताहै आठटुकरेमाटीकेतवेकेठौर धर उनपरउसकोपकावतेहैं उसकाहोमक्षामवत् अग्निकेअर्थ होताहै वेदमेंइसीकानामपुरोडाशहै जैसेगृहदाहेष्ट्यादिनैमि

त्तिकहैं तैसेसबप्रायश्चित्तनैमित्तिकहैं दोषीप्रायश्चित्तकरेयहऐ-
सेहै जैसेमलिनस्नानकरे यहांदोषनिवृत्तिद्वाराफलपरहै तर-
तिब्रह्महत्यांयोश्वमेधेनयजतइत्यादि जेश्रौतप्रायश्चित्तदोषसङ्ग
केविधानसे दोषक्षपणार्थहैं नकिनैमित्तिकहैं ज्ञानदोषक्षया-
र्थनहींविहितहै क्षीयन्तेचास्यकर्माणीत्यादि जेज्ञानकेस्तावक
मात्रहैं ननु ब्रह्मवेदीकेकर्मक्षयनमानेमे कर्मफलकोअवश्यभो-
क्तव्यसेअनिर्मोक्षहो सोनहींकहिताहूं देशवोकालवोनिमित्तसे
कर्मफलवत् ज्ञानफलमोक्षहोगी तिससे ब्रह्माधिगममे दुरितनि
वृत्तिनहींहै जोतुमकहासोनहीं जोमैंकहिताहूंसोहै तदधिग-
मे ब्रह्माधिगमेसति उत्तरपूर्वयोरघयोरश्लेषविनाशौस्तः आगे
केपापअसम्बन्ध औरपीछेकेपापकानाश किसे तद्व्यपदेशात्
देखोब्रह्मविद्याकीप्रक्रियामे आगेकेपापकासम्भाव्यमानसम्बन्ध
काअसम्बन्धज्ञानीकोकहितीहै यथापुष्करपलाशआपोनश्लिष्य
न्तएवमेवंविदिपापंकर्मनश्लिष्यतइति तैसेपिछिलेइकठेपापोंका
नाशदिखातीहै तद्यथेषीकातूलमग्नौप्रोतंप्रदूयेतैवंहास्यसर्वेपा
पान: प्रदूयन्तइति कहिचुकेसगुणकोदशा अबनिर्गुणदशासुनो
भिद्यतेहृदयग्रथिश्छिद्यन्तेसर्वसंशयाःक्षीयन्तेचास्यकर्माणितस्मि
न्दृष्टेपरावरइति जोकहाकि अभुक्तफलकर्मकोक्षयमानेमेश्रुति
कदर्थितहोसोदोषनहीं नहीमैंकर्मकीफलदायिनीशक्तिकोअव-
ज्ञाकरताहूं हैशक्ति फिरशक्तिविद्यादिकारणोंसेप्रतिबद्धकहि-
ताहूं शक्तिकेसद्भावमात्रमेश्रुतिकाव्यापारहै नकिप्रतिबन्धअप्र-
तिबन्धमे नहिकर्मक्षीयतइत्यादि स्मृति औत्सर्गिकीहै नभोगा
दतेकर्मक्षीयते यहभोगार्थहै इष्टहैप्रायश्चित्तादिसे कर्मकाक्षय
सर्वंपाप्मानन्तरति तरतिब्रह्महत्यांयोश्वमेधेनयजतेयदुवैनमेवं
वेदेत्यादि जोकहाथाकिनैमित्तकप्रायश्चित्तहोंगे सोझूठहै दो-

षसंयोगसेचोद्यमानप्रायश्चित्त दोषनाशफलकेसम्भवमें फलांत रकीकल्पनाअसिद्धिसे औरजोकहाकिनहींप्रायश्चित्तवत् दोष चयार्थविद्याकाविधानहै कहिताहूं यहांपर सगुणविद्यामेंवि-धानविद्यमानहै उसकेवाक्यशेषमें ऐश्वर्यकालाभ औरपापका नाश विद्यावान्कोकहाहै जिस्से ऐश्वर्यऔरपापनाश दोनोंकी अविवचाकाकारणनहींहै इस्सेपापहानिपूर्वक ऐश्वर्यकीप्राप्ति है सगुणउपासनोंकाफलहै निश्चीयमानहै निर्गुणविद्यामेंयद्य पिविधाननहींहै तथापिअकर्तृत्त्वादिबोधसेकर्मदाहसिद्धहै अ-श्लेषदिखाताहै किआगामीकर्ममेंब्रह्मवित् करतानहींहै अति-क्रान्तकर्ममेंयद्यपिमिथ्याज्ञानसे करताप्राप्तसाथा तथापिविद्या सामर्थ्यसे मिथ्याज्ञानकीनिवृत्तिसे कर्मकालयहै इस्से पढ़ाकि बिनामहूंतपूर्वसिद्धकरता भोक्तासेविपरीततीनकालमेंअकर्त्ता भोक्तास्वरूप मैंब्रह्महूं नकिइस्से पूर्वभी कर्त्ताभोक्तामैंथा नकि अब नकिभविष्यत्कालमें ऐसाब्रह्मवेदीजानताहै ऐसामोचयुक्त है अन्यथाअनादिकालसेप्रवृत्तकर्मकेचयकेअभावमें मोचाभाव होनहींदेशकालनिमित्तकीअपेचासे कर्मफलवत्मोचहोनेयो-ग्यहै अनित्यकेप्रसङ्गसे औरज्ञानकाफलपरोचनहींहै तिस्सेब्र-ह्माधिगममें दुरितकाचयश्रुतहै ॥

पुण्यासंश्लेषाधिकरण ॥ १० ॥

इतरस्याप्येवमश्लेषःपातेतु । १४ ।

पूर्वाधिकरणमें स्वाभाविकबन्धकेहेतु पापकासङ्ग औरनाश ज्ञाननिमित्तकविचारवेदकेकहिनेसे फिरधर्मवैदिकसे वैदिक ज्ञानसे अविरोधशक्य विरोधनिरासार्थ पूर्वाधिकरणकेन्याय काअतिदेशकर्ताहै ज्ञानसेपुण्यकाचयहैयानहींहै ज्ञानपुण्यना शकनहींहै वैदिकसेपुण्यवत् इतरस्यापि पुण्यकर्मका एवं पाप

वत् असंश्लेषः असंश्लेषऔरविनाशज्ञानीकेहोतेहैं किसे ज्ञान
कोभीस्वफलमेंहेतुसे ज्ञानफलकेप्रतिबन्धिकेप्रसङ्गसे श्रुति उभे
उहैवैषएतेतरतीत्यादि इनमेंदुष्कृतवत् सुकृतकाभीनाशकहा
है अकर्ताऐसाबोधसुकृतदुष्कृतमेंतुल्यहोनेसे चीयंतेचास्यक-
र्माणि इसनेपुण्यपापकाक्षयअविशेष कहाहै सर्वंपाप्मानमि-
त्यादि विशेषश्रुतिनेपापशब्दसे पुण्यकाभीसंग्रहकियाहै ज्ञा-
नापेक्षासे पुण्यफलनिकृष्टसे औरहैभीश्रुतिसेप्रयुक्तपुण्यमेंपाप
शब्द नैनंसेतुमहोरात्रेतरतइति इसमें दुष्कृतकेसाथसुकृतका
अनुक्रमकर सर्वेपाप्मानोतोनिवर्त्तंतइति इसनेअविशेषसेप्र-
कृतपुण्यमेंपाप्मशब्दपढ़ाहै पातेतु तुअवधारणार्थहै ऐसाबन्ध
हेतुधर्माधर्मकाविद्यासामर्थ्यसे अश्लेषविनाशकीसिद्धिमें ज्ञानी
कोदेहपातपीछे अवश्यभाविनीमुक्तिअवधारितहै ज्ञानीकोभी
सञ्चितपापोंकेभोगेपीछेमुक्तिहै अन्यमतमेंज्ञानसमकालमेंपाप
नाशसेजीवन्मुक्तिहै जैसेतीरलगाऔरमरा तैसेज्ञानहुआऔर
मुक्तिहुई सोयहांहोनीअनहोनीहैबिनामरेइसेज्ञानीकोजीवन्
मुक्तिकहीहै अन्यथाज्ञानव्यर्थहोदेरसे ॥

अनारब्धकार्याधिकरण ॥ ११ ॥

अनारब्धकार्येएवतुपूर्वेतदवधेः १५।

पिछिलेदोअधिकरणोंमें ज्ञाननिमित्तपापपुण्यकानाशनिश्चि
तकियाथा वुहनाशक्याआरब्धकार्यपापपुण्यका याअनारब्धका
र्योंकातुल्यहै याविशेषसेअनारब्धकार्येजेपापपुण्यहैंउनकाहै यह
विचारहै उभेउहैवैषएतेतरतीत्यादि इनमेंअविशेषसुननेसेअविशे
षप्राप्तहैइसेपढ़ाकिअनारब्धकार्येएवतु पहिलेजन्मान्तरकेइकट्ठे
औरफलदेनेकोनहींघड़े जेपापपुण्यहैं वेइसजन्ममें ज्ञानकेज-

न्मसेपहिलेधरेपापपुण्य ज्ञानाधिगमसेक्षयहोतेहैं नकिआरब्ध
कार्यपापपुण्यसामि भुक्तफलोंकाक्षयहै जिनपापपुण्योंसेयहब्र-
ह्मज्ञानीठौरजन्मबनाथा सोकैसे तस्यतावदेवचिरंयावन्नविमो
क्षेयसंपत्स्यइति अर्थ जौलोप्रारब्धसेमुक्तनहोगा तौलोदेरउसको
मुक्तिमेंहै सम्पत्स्ये ब्रह्मसंपद्यतइत्यर्थहै मरेपरक्षेमप्राप्तिसे अन्य
थाज्ञानसेसबकर्मोंकेक्षयमे ठहिरानेकेहेतुकेनरहिनेसे ज्ञानप्रा
प्तिमेंहीक्षेमभोगो वहांदेहक्षयकीप्रतीक्षामतकहो सुनेहैंयाज्ञव
ल्क्यादिज्ञानीज्ञानभयेपर देहधरेफिरतेबेदसे ननु वस्तुकेबल
सेअकर्ताआत्मबोधकर्मोंकोक्षयकर्त्ता कैसेकुछकोक्षयकरेवोकुछ
कोछाड़दे नहींवह्निवीजकेसमानसम्प्रबंमें ;किसीबीजकीशक्ति
काक्षयवोकिसीकीनहींक्षय यहअङ्गीकारशक्य सुनोजोकहूंहूं
नहींआरब्धकार्यजोकर्माशयहै उसकेबिनाआश्रयकरे ज्ञानका
जन्मयुक्त जैसेदण्डसेघुमाया कुम्हारकाचाक बीचमेंरोकबिन
नहींथमताहै तैसाहीकर्माशयहै हैवेगक्षयकाप्रतिपालन अक-
र्ताआत्मबोधमिथ्याज्ञानकेबाधसे कर्मोंकानाशकहै औरबाधि
तभीमिथ्याज्ञान दो चन्द्रादिकेज्ञानवत्संस्कारकेवशसे कुछका
लअनुवर्त्तताहै अपिच यहांविवादमतकरो किब्रह्मवेदीकुछ
कालजीतायाज्ञानकालहीमेंमरताहै यदिश्रु,त्यादिसेआरब्धका
र्यकोस्थिरनमानोगे तदाउपदेष्टाकेनरहिनेसे बिद्याकीसम्प्रदा
यकानाशहोगा औरयहभीकहिसक्तेहैं कितौलोउपदेष्टाअवि-
द्वान्है विद्वान्होतातोवेदनकालहीमेमरजाता कैसेएककेस्वहृ-
दयकीप्रत्ययऔरब्रह्मवेदन औरदेहधारणअपरसे पहुंचिसक्ता।है
श्रुतिस्मृतिमेंस्थिरप्रज्ञकोकहिनेसे मैंनेभीवैसाकहा।है तिस्से अ-
नारब्धकार्यजेसुकृतदुष्कृतहैं उनकाविद्यासामर्थ्यसेक्षयहै यह
निर्णयहै ॥

अग्निहोत्रादितुतत्कार्यायैवतद्दर्शनात् १६ ।

पुण्यकेसम्बन्धविनाशमेंअघन्यायकहाथा सोअतिदेशसर्वपुण्योंमेंहै इसशंकाका उत्तरहैकि अग्निहोत्रादितु तुशब्द शंकावारक है जोवैदिकनित्यकर्मअग्निहोत्रादिहैं तत्कार्यायैव ज्ञानका जो कार्यहै सोहीकार्यउनकाहै सोकैसे तद्दर्शनात् तमेतंवेदानुवचनेनेत्यादि श्रुतिकेदेखनेसे किसीपक्षमेंज्ञानवीकर्मसाक्षात्एककार्यार्थहैं अद्वयपक्षमेंज्ञानसाक्षात् औरकर्मपरंपरासेमुक्तिहेतुहै ननुज्ञानकर्मकेकार्यवीरूपभेदसे कार्यैक्यकीअसिद्धिहै सो दोषनहीं जैसेज्वरमरणकार्यवाले दधिविषगुड़मंत्रसयुक्तसे तृप्तिपुष्टिकार्य्यदेखतेहैं तैसेज्ञानसंयुक्तकर्मसेमुक्तिकार्यसिद्धहै ननु मोक्षअनारभ्यहै फिरकैसेकहितेहोकि मोक्षकर्मकार्यहै सो दोषनहीं ? कर्मआरात्उपकारकहैं वेज्ञानकेप्रापकहैंकि कर्म कीप्रनाडीसेमोक्ष हेतुऔपचारिकहैं ज्ञानकेआगेकर्मकेअभावसे पूर्वसेकार्यैक्यकाकहिनाहै नहीब्रह्मवेदीको आगेअग्निहोत्रादिकासंभवहै अनियोज्यब्रह्मात्मकी प्रतिपत्तिसे और वेदकेअविषयसे सगुणविद्यामें कर्तृत्वसे निवृत्तिनहीहै इससे आगे अग्निहोत्रादिकासंभवहै सोअग्निहोत्रादि निरभिसंधिअर्थात्फलेच्छाकेबिनाकियाहुआ कर्यान्तरकाअभावहैतिससे उसकी विद्याकेसाथसंगतिकी उपपत्तिहै ॥

अतोन्यापिह्येकेषामुभयोः १७ ।

किसकेलिये अश्लेषविनाशवाक्यहै औरकिसकेलिये आदिमेंविनियोगवाक्यहै जोप्रारब्धसे अन्यकाम्यपुण्यपापहै सोज्ञा-

नौकाशत्रुमित्रमेघुसिजाताहै आपत्कालसे नाशहोताहै यह एकशाखीकहितेहैं तस्यपुत्रादायमुपयंतिसुहृद: साधुकृत्यांद्विषंत: पापकृत्यामिति इसकाउत्तरपढ़ाकि अतोन्यापिह्येकेषामुभयो: अत: अग्निहोत्रादिनित्यकर्मसे अन्यापि औरभी होहै साधुकृत्यजोफलको अनिच्छासेकर्त्ते हैं उसकायहविनि-योग कहाथाएकशाखियोंको सुहृद:साधुकृत्यामुपयंतीति और उसीकाअधवत् अस्तेषविनाशकहाहै औरपापकृत्यकाभीअ-स्लेषहैऐसाही इसजातिकेकाम्यकर्मोंका विद्याकेअनुपकारमें उभयो: जैमिनिबादरायणदोनोंकीसम्प्रतिपत्तिहै ॥

विद्योपहितकर्माधिकरण ॥ १३ ॥

यदेवविद्ययेतिहि १८ ।

ज्ञानागयामुक्तिसेकिपूर्वाधिकरणमें मोक्षार्थअग्निहोत्रादि मुमुक्षुकृत कृतपापक्षयसेअन्त:करणशोधकहोके मोक्षार्थब्रह्मा-धिगमकेनिमित्तसे ब्रह्मविद्याकेसाधकाऐक्यकारीहैं फिरअग्निहोत्रादिअङ्गाश्रयविद्यासंयुक्तऔरकेवलहैं श्रुति यएवंविद्वान्यजतियएवंविद्वान्जुहोति यएवंविद्वान्शंसतियएवंविद्वान्गायति तस्मादेवंविदमेवब्रह्माणंकुर्वीततेनोभौकुरुतोयश्चै तदेवंवेदयश्च-नवेदेत्यादि इनसेविद्यासंयुक्त औरकेवलभीकर्महै इसमेंविचारहैकि क्याविद्यासंयुक्त अग्निहोत्रादि मुमुक्षुकोविद्याकेहेतुसे विद्याकेसाथएककार्यकरते नकिकेवलयाविद्यासंयुक्त औरकेवलअविशेषसे कैसेसंशयहै तमेतमात्मानंयज्ञेनविविदिषतीति इसनेयज्ञादिअविशेषसे आत्मवेदनकेअङ्गसुनायेहैं इसी विद्यासंयुक्तअग्निहोत्रादिका विशिष्टबोधहै फिरप्राप्तहैकिअग्निहोत्रादिविद्यासंयुक्तआत्मविद्याकेशेषहैं नकिविद्याहीनविद्याहीनसे

बिद्यायुक्तविशिष्टजाननेसे यदहरेवजुहोतितदहः पुनर्मृत्युमपज यत्येवंविद्वानित्यादिसे बुध्यायुक्तोययापार्थइत्यादि स्मृतिसे इस पढ़ाकि यदेवविद्ययेतिहि सचहैकि विद्यासंयुक्तअग्निहोत्रादि विद्याहीनअग्निहोत्रादिसेविशिष्टहैं जैसेविद्याहीननरसे विद्या वान्नर सोभीनहीं अत्यन्तअचहीतेहैं । विद्याहीनअग्निहोत्रादि कैसे तमेतमात्मानंयज्ञेनेति इस अविशेषअग्निहोत्रादिकोवि द्याकाहेतुसुन्नेसे ननु विद्यासंयुक्तअग्निहोत्रादिको विद्याहीनसे विशिष्टकेबोधसेविद्याहीनअग्निहोत्रादि आत्मविद्याहेतुसेअप-हीतेहैं यहयुक्तहैसोनहीं विद्यासहायअग्निहोत्रादिकोविद्यानि मित्तसामर्थ्यातिशयकेयोगसे आत्मज्ञानमेकोईकारणातिशय* होगानतैसाविद्याहीनकर्मसे यहकल्पनायुक्तहै औरनकियज्ञेन विविदिषन्तीति इसमेंआत्मज्ञानांगअविशेषसे श्रुतअग्निहोत्रा दिकोअनङ्गमानसक्तेहो यहीश्रुतिकहितीहै यदेवविद्ययाकरो-तीत्यादि इसनेकर्मकोकेवलवीर्यवत्कहाहै कर्मवीर्यवत्वुहहै कोस्वप्रयोजनसाधकहै तिस्से विद्यासंयुक्तनित्यअग्निहोत्रादिऔ रविद्याहीन दोनोंकोमुमुक्षुमोक्षार्थं इसमेंवाजन्मान्तरमेंज्ञान जन्मकेपहिलेकियेजेकर्म वेयथासामर्थ्य ब्रह्माधिगमकाजोप्रति बन्धकेहेतुकियेपापकेक्षयकेहेतुसे ब्रह्माधिगमकेहेतुहोके श्रवण मननश्रद्धातात्पर्यादिअन्तरङ्गकारणकीअपेक्षासे ब्रह्मविद्याकेसा थएककार्यहैयहस्थितहै ॥

अधिकारिमुक्त्यधिकरण ॥ १४ ॥

भोगेनत्वितरेक्षपयित्वाथसंपद्यते १९ ।

तत्ववित् यहांविषयहै सोक्याप्रारब्धकेनाशकेआगेसंसरता

* शीघ्रकारी ।

हैयानहीं जिनकर्मों नेपुण्यपापकार्यनहींआरब्धाहै उनका यथ कहायाविद्यासामर्थ्य से इतरेतुआरब्धकार्यपुण्यपापकोभोगसे दूरकरब्रह्ममेसम्पन्नहोताहै ब्रह्मैवसन्ब्रह्माप्येति इनसे ननुस-म्यग्दर्शनसेभी जैसेदेहनाशसे पूर्वभेददर्शन दोचन्द्रदर्शनरीति सेअनुवृत्तहै ऐसेपीछेभी अनुवर्त्तनहो मरेपीछेभी तत्वविस्सं सारमेंआवेगा संसारयोग्यसे जैसे देहनाशसेपूर्वथा सोनहीं भोगनिमित्तकर्मकेअभावसे अनुवृत्तिकानिमित्त भोगशेषकाक्ष-यभाहै पुनर्भवमें वीदोचन्द्रदर्शनमें तैसाज्ञानीकोनहींहै नस-ञ्चितकर्मान्तर पुनर्भवकानिमित्तहै फलकेमूलकेदाहसे ननु अन्यकर्माशयनयेभोगकोरचेंगे सोनहीं कर्माशयकेबीजजरनेसे अविद्यादिक्लेशकर्म औरकर्मफलकेबीजहैं मिथ्याज्ञानकेबलसे कर्मान्तर देहनाशमेंभोगान्तरकोरचतेहैं सोमिथ्याज्ञानसम्यग् ज्ञानसेजराहै इससे यहसाधुहैकिआरब्धकर्मोंकेक्षयमेंज्ञानीको कैवल्यअवश्यहै अर्थात्मरेपीछेमुक्तिहोतीहै ॥

इतिश्रीयुक्तताराचन्द्रवर्मणाकृतेब्रह्मसूत्रभाषाभाष्येतुर्याध्यायस्य प्रथमःपादःपूर्णः ॥

उत्क्रान्ति पाद दूसरा । २ ।

वाङ्मनोधिकरण ॥ १ ॥

वाङ्मनसिदर्शनाच्छब्दाच्च १ ।

अबअपरविद्यामें फलार्थदेवयानपन्थकेअवतारसे प्रथमयथा शास्त्रउत्क्रान्तिकाक्रमकहितेहैं कहेंगेयहकिसूरिमूढ़कोसमान उत्क्रांतिहै हैश्रुतिप्रायणमें अस्यसोम्यपुरुषस्यप्रयतोवाङ्मनसि

सम्पद्यतेमन:प्राणेप्राणस्तेजसितेज:परस्यांदेवतायामिति व्याय
हांवृत्तिमतीवाणीकीमनमेंसम्पत्तिहै यावाग्वृत्तिकीयहविशयहै
वाग्कीमनमेंसम्पत्तिप्राप्तहै इसीश्रुतिपनुग्रहीतहै अन्यथाल-
क्षणाहो श्रुतिवोलक्षणाकेविषयमेंश्रुतिलेनान्याय्यहैनकिलक्षणा
इसिवाणीकामनमेंप्रलयहै सोनहीं वाग्वृत्तिमनमेंसम्पद्यमान
है तुमकैसेवाग्वृत्तिकालक्षकहितेहो आचार्यतोवाङ्मनसिऐसा
पढ़ताहै सचहै अबऐसाहीपढ़ाहै आगेपढ़ेंगाकि अविभागोव
चनादिति तिसी यहांवृत्तिकाशममात्रविवक्षितजानो तत्वकेप्र-
लयकीविवक्षामेंसर्वत्रअविभागकीसाम्यसेक्युंपरत्रअविभागवि-
शेषहो वृत्तिकेलेनेकीविवक्षामेंपूर्ववाग्वृत्तिउपसंहृतहै स्थितमन
कीवृत्तिमे यहअर्थहै कैसे दर्शनात् देखतेहैं वाग्वृत्तिकापूर्वउप
संहारविद्यमानमनोवृत्तिमे नकिवृत्तिमतीवाणीका मनमेंउप-
संहारकिसीसेदेखनेकोशक्यहै शंका।श्रुतिकीसामर्थ्यसेवाणीका
मनमेंअप्यययुक्तहै यहकहाथा सोनहीं जिसकाजिससे जन्महै
उसकाउसमेंप्रलयन्याय्यहोनेसे जैसाघड़ेकामाटीमें नहींमनसे
वाग्जन्मीइसमेंकुछप्रमाणहै वृत्तिकाउद्भवऔरअभिभवअप्रकृ-
तिमेदेखतेहैं पार्थिवकाठआदिसे तैजसअग्निकीवृत्तिवढ़तीहै
जलमेंठण्डीहोतीहै इसपक्षमेंयहकैसेबनेगाकि शब्दवाङ्मनसि
सम्पद्यतइति इसीपढ़ाकि शब्दाच्च शब्दभीइसीपक्षमेसमर्थहै
वृत्तिऔरवृत्तिमान्केअभेदकेउपचारसे यदिकारणमेंस्वरूपसेली
नहैं तदाभृतमात्रकीमुक्तिहै किसीमतसे स्वरूपसे लयमेंसंसार
होताहै ॥ वृत्तिलयाधिकरण ॥ २ ॥

अतएवचसर्वाण्यनु २।

तस्मादुपशान्ततेजाः पुनर्भवमिन्द्रियैर्मनसिसम्पद्यमानैरि

ति अयं देहठग्टीहोनेसेमरेपीछेफिरजन्मताहै इसनेअविशेषसे सबइन्द्रियोंकालयमनमेंकहाहै अतएवच वाणीकोनांईनेचादि कासवृत्तिकमनकीस्थितिमें वृत्तिलोपदेखनेसेतत्वकाप्रलयनहीं है श्रुतिमेंइन्द्रियशब्दवृत्तिपरहै सर्वाणि वृत्तिद्वारासबइन्द्रियां मनमेंघुसतीहैं अनुवृत्तिकेपीछे सबकरणोंकामनमेंउपसंहार कोअविशेषसेवाणीकापृथक्कहिना वाङ्मनसिसम्पद्यते इसउ-दाहरणकेअनुकूलसेहै ॥

मनोधिकरण ॥ ३ ॥

तन्मनःप्राणउत्तरात् ३ ।

वाङ्मनसिमेवृत्तिकाशयजानाथा अबजोउसकेआगेवाक्यहै कि मनःप्राणइति क्यायहांभीवृत्तिकीसम्पत्तिविवक्षितहै या वृत्तिमत्कीसम्पत्ति इससंशयमें वृत्तिमत्कीसम्पत्तिप्राप्तहै श्रुत्यनुग्रहसे औरउसकीप्रकृतिकीसिद्धिसे अन्नमयंहिसोम्यमनः आपोमयःप्राणइति इसनेमनकीयोनिअन्न औरप्राणकीयोनि जलबतादिया आपस्थान्नमसृजन्तेतिश्रुति इससेजोमनप्राणमें लीन तोअन्नजलमेंलीनहै अन्नमनऔरजलप्राणहै प्रकृतिविकृ-तिकेअभेदसे सोनहीं सोमनअगृहीतवाह्येंद्रियवृत्तिसे मनःप्रा णेप्रलीयते इसअगिलेवाक्यसे मनकालयप्राणमेंजाना सुषुप्सु औरमुमूर्षुकोपरिस्पन्दरूपजोप्राणवृत्तिस्थिरहै उसमेंमनोवृत्ति योंकाशमदेखतेहैं मनकेस्वरूपकाअप्ययप्राणमेंसम्भवनहीं मन कीप्रकृतिप्राणनहोनेसे अन्यथाहिमयटमेंप्रकृतिविकृतिभावहो ननुदिखायाथाकिमनकीप्रकृतिप्राणहै सोसारनहीं इसप्रना-ड़ीसेअन्नमेंमनजलमेंअन्नऔरजलमेंप्राणलीनहो नहींइसपक्षमें

प्राणरूपपरिणतजलसेमनकेजन्मसेकुछप्रमाणहै तिस्से मनकेस्व-रूपकालयप्राणमेनहींहै वृत्तिकेलयमेंभीशब्दसमर्थहै वृत्तिवृत्ति-मत्केअभेदकेउपचारसे ॥

प्राणलयाधिकरण ॥ ४ ॥

सोऽध्यक्षेत्तदुपगमादिभ्यः ४।

जिसका जिसेजन्मनहीं उसकाउसमेंस्वरूपसेलयनहीं किंतु उसकीवृत्तियोंकालयहैयहध्रुवहै अबप्राणस्तेजसीति इसमेंचि-न्ताहैकि प्राणकीवृत्तिकातेजमेंउपसंहारहै या देहेन्द्रियपञ्जरके अध्यक्षजीवमें श्रौतार्थमेंशङ्कानहींयोग्यहै इस्सेश्रुतिनेप्राणकीसं पत्तितेजमेंकहीसोसहीहै अश्रुतकल्पनामान्यनहींहै हांशब्दभ-क्तोंकीयहीचालहै तोभीशब्दकेअर्थ निश्चयमेंजोकायुक्तियोग्यता होउचितहै सोऽध्यक्षे स प्राण अध्यक्षे अविद्याकर्मप्रज्ञाउपाधि मेंजोविज्ञानात्मास्थितहै जीवप्रधानप्राणवृत्तिहै कैसे तदुपग-मादिभ्यः एवमेवेममात्मानमन्तकालेसर्वेप्राणाःअभिसमायन्ति यत्रैतदूर्ध्वोच्छ्वासीभवतीति अर्थ इसनेजीवकेपासमरणकालमें सबप्राणोंकाआनाकहाहै अविशेषसे जैसेयात्राकालमेंनृपपास भृत्यआतेहैं समिटके तमुत्क्रामंतप्राणोनूत्क्रामतीति इसनेपंच वृत्तिप्राणकाजीवकेपीछेजानेकहाहै विशेषसे प्राणमनूत्क्रामंतं सर्वेप्राणाअनूत्क्रामंतीति सबइन्द्रियांप्राणकेपीछेचलदेतेहैं स-विज्ञानोभवतीति अर्थ सप्राणसबकरणजीवमेंस्थितहोतेहैं जीव भोग्यफलार्थं ननु प्राणकालयतेजमेंसुना फिरकैसेप्राणकोजीव मेंडालायहदोषनहींहै उत्क्रमादिव्यवहारअध्यक्षाधीनसे और अन्यश्रुतिकेकहेविशेषकेआदरसेहैं ।

भूतेषुतच्छ्रुतेः ५।

फिरप्राणस्तेजसि इससेकेवलअव्यवधानसेतेजमेंलयकहा इसी कहाकिभूतेषु स प्राणसंपृक्तअध्यक्षदेह बीजसूक्ष्मभूतोंमेंरहिता है प्राणस्तेजसोतिइसी ननु इसनेप्राणकीतेजमेंस्थितिदिखा ई नकिप्राणसंपृक्तअध्यक्षकी सोदोषनहीं सोध्यक्षइति इसका अध्यक्षकेबीचमेंउपसंख्यानसे जोसुघ्नसेमथुराकोगया मथुरासे पाटलिपुत्रकोगया सोभीसुघ्नसेपाटलिपुत्रकोगया कहिसक्तेहैं तिसीप्राणसंपृक्तअध्यक्षकातेजसहचरितभूतोंमेंस्थानहै॥

नैकस्मिन्दर्शयतोहि ६।

तेजसहचरितभूतोंमेंकैसेकहा एकहीतेजसुनतेहैं इसीपढ़ा किं नैकस्मिन् जीवदेहान्तरकेप्रसावेलामेंएकतेजमेंहीनहींघु-सारहताहै कार्यदेहअनेकात्मकदेखनेसे दर्शयतः उक्तार्थको प्रश्नप्रतिवाक्यदोनोंदिखातेहैं आपःपुरुषवचसइति देहबनाने कोस्थूलभूतआवश्यकहैं यहरंहत्यधिकरणमेंकहिचुके त्र्यात्मक-त्वात्तुभूयस्त्वादिति इसी श्रुति पृथिवीमयआपोमयो वायुम यआकाशमयस्तेजोमयइत्यादि ननु॰ अण्व्योमात्राविनाशिन्यो दशार्द्धानांतुयाःस्मृताः ताभिःसार्द्धमिदंसर्वं संभवत्यनुपूर्वशः। इत्यादि अण्व्यः सूक्ष्म मात्रा परिछिन्न मोक्षसेपूर्वअविनाशि-नीहैं दशार्द्धानां पांचभूतोंकेसूक्ष्मभागमुक्तिकेपहिलेजीवकोन-हीछोड़तेहैं ननुवागादिकेलोनमें औरदेहांतप्रसावेलामेंक्वायं तदापुरुषोभवतीति इसउपक्रममें जीवकाआधारकर्मकोकहि तीहै तोहयदूचतुःकर्महै वतदूचतुरथयत्प्रशशंसतुः कर्महैवतत्प्र शशंसतुरिति तोहैयाज्ञवल्कावेदोआर्त्तभागहैं जोजीवकेया

धारकहैथेसोकर्महै तौकर्मबोभूत यास्थूलसूक्ष्महैं सोविरोधन हींहै कर्ममेप्रेराग्रहातिग्रह अर्थात् इन्द्रिय वोविषयरूपवन्धनको प्रवृत्तिकर्माश्रयकहीथी देहान्तरमे जन्मभूतोपादानसे भूताश्रय कहाथा श्रुतिमेंप्रशंसासेकर्मकोप्राधान्य मात्रकहाथा नकिआ- श्रयान्तरकानिवारणकियाथा तिस्सेअविरोधहै ।

आन्यज्ञान्युत्क्रान्त्यधिकरण ॥ ५ ॥

समानाचासृत्युपक्रमादमृतत्वंचानुपोष्य ७ ।

क्याउत्क्रांतिसूरिमूढकोसमानहै याविशेषवतीहै यहवि- षयहै विशेषवतीहै पुनर्भवार्थभूतोंकाआश्रयहै नकिसूरिका- सोसंभवहै अमृतको सूरिभोगताहै इस्से मूढकोउत्क्रांतिहै ननुविद्याकेप्रकरणमेपढनेसे सूरिकोउत्क्रांतिहो सोनहीं जैसे स्वापादिसर्वप्राणियोंके साधारणयथाप्राप्तकाअनुकीर्तनहै वि- द्याप्रकरणमेनकिसूरिको विशेषसेउनकाविधानहै तैसेउत्क्रांति महाजनकोभीअनुकीर्त्तितहै यत्रैतत्पुरुषः स्वपितिनामअशि- शिषतिनाम पिपासतिनामचेत्यादि जिसपरदेवमेमरेकातेज घुसताहै सोआत्मातत्वमसीतिसे कहिनेकोउत्क्रांतिनिषिद्धहै सूरिको नतस्यप्राणाउत्क्रामंतीति ऐसीप्राप्तिमेकहिताहूंकि समाना वाङ्मनसीत्यादिउत्क्रांति सूरिमूढको आसृत्युपक्रमात् समानहोनेकोयोग्यहै अविशेषसुनेसे मूढदेहवीजसूक्ष्मभूतोंमे आपिटाकर्मसे प्रेरादेहलेनेकोसंसारमेआताहै सूरिज्ञानप्रका- शित मोक्षनाडीद्वारकेआश्रितजाताहै यहआसृत्युपक्रमसेकहा है उपासकसिरकीनाडीमेघुसिअर्चिरादिमेजाताहै नकिअन्य यहविशेषहै ननुमोक्षसूरिकोमिलेगा सोदेशांतरमेतंत्रनहीहै फिरक्युभूतोंकाआश्रयहै यासृत्युपक्रमहै इस्से पढाकि अनुपोष्य

उपदाहिकायहरूपहै यहम्भूा अविद्यादिक्लेशोंकी अत्यन्तविना शरायेअपरविद्याकीसामर्थ्यसे अपेक्षितमुक्तिकीप्रसाहै इस मुक्त्यर्थत्वउपक्रमऔर भूताश्रयकासंभवहै नहीनिराश्रयप्राण चलतेहैं इसंदोषनहीहै ॥

उपासकवृत्तिलयाधिकरण ॥ ६ ॥

तदापीतेःसंसारव्यपदेशात् ८।

तेजः परस्यांदेवतायामिति इसप्रकरणसामर्थ्यसे जैसे प्रकृततेजसाध्यक्ष वोसप्राण वोसाध्यग्रामवो भूतांतरसहित मरेकापरदेवमेंघुसताहै यहजोकहाथासोहै फिरकैसीसंपत्ति होयहचिंताहै आत्यन्तिकस्वरूपकालयप्राप्तहै सवजन्यमात्रवस्तु जातकीपरादेवताप्रकृति ठहिराईथी तिसमेंआत्यांतिकी अ-विभागापत्तिहै परादेवतामें सोनहीं तत् तेजआदिभूतसूक्ष्म औरश्रोत्रादिकरणाश्रय आपीतेः आसंसारमोक्षजीसम्यक्ज्ञान निमित्तसे जीलोहैगातौलोठहिरेगा संसारव्यपदेशात् योनि-मन्येप्रपद्यंतेशरीरत्वायदेहिनः स्थाणुमन्येनुसयंति यथाकर्मयथा श्रुतमित्यादि श्रुत्येइकेमंत्रोंनेभी संसारहीगायाहै अन्यथा सवकोईमरणवेलामेंउपाधिसे छुटाअत्यंतब्रह्ममेंघुसो इसमें विधिशास्त्रव्यर्थहो मृतमात्रकोमुक्तिसेऔरविद्याशास्त्रभीव्यर्थहो जोमिथ्याज्ञानकेनिमित्तसेबंधहै सोसम्यक्ज्ञानके विनानहीं खुलनेकेयोग्यहै कर्मविद्यादोनोंके शास्त्रबलसे सबकीप्रकृति परदेवमेंसुषुप्तप्रलयवत् बीजमात्रअवशेषलयहै ॥

सूक्ष्मंप्रमाणतश्चतथोपलब्धेः ९।

मोक्षवेदिकीसंज्ञा अजरंजरीभावहै अन्यभूतोंकेसहित तेज इसदेहसे प्रवासीजीवकाआश्रयहै सोस्वरूपवोप्रमाणसेसूक्ष्महो

नेयोग्यहै देखोकैसेबड़ीवारीकनाड़ियोंसेनिकरनावेश्रवणादि से तेजकीसौक्ष्मालब्धहै तनुनाड़ीसेतनुतरहै इसी उससे चलने फिरनेकीसिद्धिहै स्वच्छसेकिसीमेंटकरातानहीहै इनीगुणोंसेदेह से निकरतेतेजकोपासकै बैठेयानहीलभतेहैं ॥

नोपमर्देनातः १० ।

अतः सौक्ष्मासेस्थूलदेहकेनाशमें सूक्ष्मदेहकानाशनहीहै ॥

अस्यैवचोपपत्तेरेषऊष्मा ११ ।

इनचारसूत्रोंकायहतात्पर्यहैकितेजः परस्यांदेवतायामिति इसनेतेजआदिभूतोंकालय परमात्मामे स्वरूपसेकहाहैपरमा-त्माभूतोंकाउपादानहोनेसे सोनहींतुम्हारीरीतिसे आत्मवेदी के भूतोंकास्वरूपसे लयहैवेवुहनिर्णयमाणहै तिससेउपासक औरकर्मियोंकेजन्मांतरकी सिद्धिकेअर्थवृत्तिकालयही माननीय है अस्यैवच सूक्ष्मदेहकी एषऊष्मा देहतप्तरहिनाहै इसदेहमे स्पर्शसे जिसउष्माकोजानतेहैं उसीसेतेजोमयलिंग देहकोसा-धिसक्तेहैं देखोमृतदशामेस्थितदेहमे वेविद्यमानरूपादिदेहगु-णोंमेऊष्मानहीलभतीहै जीवत् दशामेलभतीहै इसी सिद्धहै किप्रसिद्धदेहसे भिन्नदेहमेऊष्माश्रितहै यहअनुमानप्रपंचउन कोकियाहै जोशब्दकोनहीमानतेहैं हमतोश्रुतिनेउष्मालिङ्गसेउ यादेहसिखादीहै उष्णएवैषजीविष्यन्शीतोमरिष्यन्निति ॥

गत्यादिप्रतिषेधाधिकरण ॥ ७ ॥

प्रतिषेधादितिचेन्नशारीरात् १२ ।

अमृतत्वञ्चानुपोष्य इसविशेषणसेआत्यन्तिकमुक्तिमें गति

नउत्क्रान्तिहै उसमेभीकिसीहेतुसे उत्क्रान्तिकीशंकामानमने करताहै अथाकामयमानोयोऽकामोनिष्कामआप्तकामआत्मकामोनतस्यप्राणाउत्क्रामन्तिब्रह्मैवसन्ब्रह्माप्येतीति यहकाणश्रुतिहै अर्थ सकामकोसंसारकहिपीछे मुक्तिकामार्थअथशब्दहै आत्मकाम पूर्णानन्दात्मवेदी आप्तकाम लब्धपरमानन्द इससे निष्कामहै प्रकटवासनाशून्यअकामहैयाव्यक्तबहिरेकामोंसेरहित ऐसाजोअकामयमानहै उसकाउत्क्रमननहींहै इसपरविद्याबि-षयनिषेधसेनहीं परब्रह्मवेदीकेदेहसेप्राणोंकीउत्क्रान्तिहै यदि ऐसाकहोसोनहींहै शारीरात् जिससेजीवसेउत्क्रान्तिकानिषेध हैप्राणोंका नकिदेहसे कैसेजाना नतस्मात्प्राणाउत्क्रामन्तीति यहमाध्यन्दिनश्रुतिहै पञ्चमीसेसंबन्धसामान्य षष्ठीपञ्चमीनेस-म्बन्धविशेषमेस्थापितकीहै तस्मादिति इसप्रधानपञ्चमीसेअभ्युदयनिःश्रेयसमे अधिकृतदेहीसम्बद्धहैनकिदेह नतस्मात् उच्चि-क्रमिषु जीवसेप्राणनिकरतेहैं किन्तु जीवकेसाथसम्बद्धहै नि-करना ॥

स्पष्टोह्येकेषां १३ ।

सप्राणप्रवासीजीवजबब्रह्मलोकमेपहुंचताहै तबउसकोप्राण छोड़तेहैं इसशङ्काकाफिरसिद्धान्तकहताहै कि स्पष्टोह्येकेषां १३ जोकहाथाकिब्रह्मवेदीकोदेहसेउत्क्रांतिकानिषेधहै सोनहीं देहीअपादानसे जिससे उत्क्रान्तिनिषेधदेहापादान एकसमा-म्नातोंकेशाखामें स्पष्टलभताहै देखोआर्त्तभागकेप्रश्नमें यत्रायं पुरुषोम्रियतउदस्मात्प्राणाः क्रामन्त्याहोनेतीति इसमे नेतिहोवाचयाज्ञवल्क्यइति इसमें अनुत्क्रान्तिपक्षकोलेकेकहाकि नतर्ह्ययमनुत्क्रान्तेषुप्राणेषुम्रियतइति इसशङ्कामेपढ़ाकि अत्रैवसमव-

नीयतइति इसमें प्राणोंके प्रविलयकी प्रतिज्ञाकर फिरउसकीसि-द्धार्थंपढ़ाकि सउच्छ्वयत्याध्मायत्याध्मातोमृत:शेतइति यहांसपद संउच्छ्वयनादिउत्क्रान्तिकापढ़ेहैं उच्छ्वयनादिदेहकेहैं नकिदे-हीके उत्तश्रुतिका औरइसकाएकार्थंपाठहै नतस्मात्प्राणाउत्क्रा मन्ति अत्रैवसमवनीयन्तइति यहांभीअभेदकेउपचारसे देहा-पादानकउत्क्रमणकानिषेधहै माध्यन्दिनीयपञ्चमीपाठमें दे-हीप्रधानहै काण्वकेषष्ठीपाठमें सूरिसम्बन्धिनीउत्क्रान्तिकानि षेधहै फिरप्राप्तउत्क्रान्तिकेनिषेधार्थसेयहवाक्यहै तिस्से देहा-पादानउत्क्रान्तिनिषिद्धहै देहसेउत्क्रान्तिप्राप्तहै नकिदेहीसे यदिच चक्षुष्टोवामूर्ध्नोवान्येभ्योवाशरीरदेशेभ्यस्तमुत्क्रामन्तंप्रा-णोनूत्क्रामतिप्राणमनूत्क्रामन्तं सर्वेप्राणा अनूत्क्रामन्तीत्यादि इसनेमूढ़कासप्रपञ्चउत्क्रमणवोसंसारमेंगमनकहाहै फिर नु-कामयमानइति यहउपसंहारकसूरिकथाकाकर फिरअथाका-मयमान: यहसूरिकेअर्थकहाहै जोसूरिकोभीउत्क्रान्तिपहुंचा तोकहिनासन्दिग्धहो तिस्सेअसूरिकीगतिवोउत्क्रान्तिहै और सूरिकोउनकानिषेधहै दोनोंसार्थहैं ब्रह्मवित्सर्बगतब्रह्मरूपसे वोचीणकामकर्मसे उसकीगतिउत्क्रान्तियुक्तनहींहै निमित्तके नहोनेसे अत्रब्रह्मसमश्नुतेइति ऐसीश्रुतियांगतिवोउत्क्रान्तिके अभावकोसूचनकरतीहैं बहिरीवायुभरनेसेफूलना भोजाढोल सावोलना जोधर्मदेहकेहैंनाकिजीवके ॥

स्मर्यतेच १४ ।

महाभारतमेंगतिऔरउत्क्रान्तितत्त्ववेदीकेप्राणोंकीनहीं प-ढ़ीहै नोत्क्रामन्तिमुने:प्राणाव्यापीसर्वगतोहिस:इति जैसेतप्त शिलालोहेपरपड़ापानी नकहांनऔरठौरगयाकिन्तुउनमेंघुसि

यथा तैसीप्राणरोतिहै शुकादिसदेहयोगबलसे सर्वत्रफिरतेथे नकिसगुणबलसे अदेहकोसवनहीदेखसक्तेहैं

परेलयाधिकरण ॥ ८ ॥

तानिचपरेतथाह्याह १५।

जैसेसूरिकीगत्यादिनहीहैं तैसेप्राणादिकलाओंकालयकहाथा सोपकड़केसंशयहै किकलाअपनीअपनी प्रकृतिधरादिमे यापरमेलयहोंगीपूर्वपक्षपीछेकहेंगे अबसिद्धान्तकहितहै तानि ब्रह्मवित्के इन्द्रियवोभूतपरमेलयहोतेहैं सोकैसे तथाह्याह श्रुतिः एवमेवास्यपरिद्रष्टुरिमाः षोड़शकलापुरुषायणाः पुरुषंप्राप्यास्तंगच्छन्तीति अर्थ जैसेनदीसमुद्रमेलीनस्वरूपसेहोती हैं ऐसेसर्वत्रब्रह्मदर्शीकोप्राणश्रद्धादिसोरहकलापुरुषमेंकल्पित सोयपुरुषकोपहुचिलयहोतीहैं ननु सूरिपरअन्यश्रुतिपरसेयन्यमेंकलोंकालयकहितीहै गताःकलाःपञ्चदशप्रतिष्ठाइति मन प्राणकोएकमानेसेकलापन्द्रहहैं प्रतिष्ठायहद्वितीयाकाबहुवचन है अपनेअपनेकोप्रकृतिधरादिहैं यत्रास्यपुरुषस्याग्निंवागप्येति वातंप्राणश्चक्षुरादित्यमित्यादि सोनहीं व्यवहारमें पार्थिवादि कलापृथिव्यादिअपनीअपनीप्रकृतिमेलयहोतीहैं अन्यश्रुतिसूरिकीप्रतिपत्तिकीअपेक्षासेसबकलाज्ञातपरमेलीनहोताहैलोक दृष्टिसेप्रकृतिमेश्रुतिदृष्टिसेपरमेउनकालयहै प्रथमवेप्रकृतिमेल यहोकेफिरप्रकृतिकोलेकेपुरुषमेलीनहोतीहैं कलायहतात्पर्यहै तिससेदोषनहीहै ॥

वागादिलयाधिकरण ॥ ९ ॥

अविभागोवचनात् १६।

ऐक्यंवेदात् लयसूरिकीकलाका मूढ़कीकलाकासा साव-शेषहैया निरवशेषहै लयसामान्यसेशक्तिशेषरहितीहै इस्सेपढ़ा कि अविभाग: भेदनहींरहिताहै जैसे वचनात् कलालयकहि फिर कहिताहैकि भिद्यंतेचासांनामरूपेपुरुषइत्येवंप्रोच्यते स एषोऽकलोऽमृतोभवतीति अनुमान विमतकलालयसावशेष है कलालयसेसुषुप्तिवत् विमतकलालयनिरवशेषहै विद्याकृ तत्वसेरस्सोमेविद्यासेसर्पैलयवत् तिस्सेअविभागहै कलाक्रम स प्राणमसृजतप्राणात् खंवायुर्ज्योतिराप: पृथिवीमिन्द्रियंमनो न्नमन्नाद्वीर्यंतपोमन्त्र: कर्मलोकालोकेषुचनामांता: ॥

उपासकगतिविशेषाधिकरण ॥ १० ॥

तदो कोग्रज्वलनंतत्प्रकाशित्तद्वारोविद्यासाम-र्थ्यात्तच्छेषगत्यनुस्मृतियोगाच्चहार्दानुगृहीत:शता-धिकया १७।

तस्यविज्ञानात्मनोजीवस्य औक: स्थानंहृदयं तस्य हृदयस्या ग्रस्य ज्वलनं तेजनन्तेनप्रकाशितानि द्वाराणियस्यसोयंतत्प्रका शितद्वार: सर्वोपिहिजन्तुश्चचुरादिभ्य: स्थानेभ्यउत्क्रामतिसूरि स्तुहार्देनब्रह्मणानुगृहीत: शताधिकयामूर्द्धन्यनाड्याकुत: विद्या सामर्थ्याद्उपास्तिसामर्थ्यात् एवंनियमेकोहेतुस्तत्राह तच्छेषग-त्यनुस्मृत्तियोगात् तस्याविद्याया:शेषभूता मूर्द्धन्यनाड़ीगतिरुत्त रमार्गंइतियावत् तस्यानुस्मृतिरनुस्मरणंतस्ययोगस्तत्प्रमाणकत्वं तस्मादपिइतिसोयोनुवाद:होचुकीपरविद्याकीचिन्ताग्रवग्रपर विद्याकीचिन्ताहैग्रवसत्युपक्रमदेखो तदोक: जिसमेउपसंहृतहै वागादिवृन्दग्रौरजोउच्चिक्रमिषुविज्ञानात्माहैउस्काग्रोक:स्थान

हृदयहैश्रुतिसे सएतास्तेजोमात्राःसमभ्याददानोहृदयमेवान्ववक्रामतीति समुमूर्षु तेजोमात्राइन्द्रियां हृदयकेअगेनाड़ीकेमुहकाप्रकाशाख्यतेजहैश्रुतितस्यहैतस्यहृदयस्याग्रंप्रद्योततेतेनप्रद्योतेनैषआत्मानिष्क्रामतिचक्षुष्टो वामूर्ध्नोवान्येभ्योवाशरीरदेशेभ्यइति क्यागतिसूरिमूढ़कीअनियमसेहै याकुछविशेषनियमसूरिको इससंशयमेंश्रुतिसाम्यसेअनियमहै सोनहीं तत्प्रकाशितद्वारः सूरिमूढ़कोहृदयकेमुहकेआगेउजेरासमानहै फिरवहउजेराद्वारकाप्रकाशकहैजैसागृहद्वारकाप्रकाशकगृहद्वारकादीपहैइसमानमेभीमूर्धस्थानसेसूरिनिकरता अन्यस्थानोंसे मूढ़निकरतेहैं सा कैसे विद्यासामर्थ्य से यदिसूरिभीमूढ़वत्जिसकिसीदेहकेदेशसेनिकरातदाबड़ेलोककोनलभी औरविद्याव्यर्थहो तच्छेषगत्यनुस्मृतियोगाच्च जोगतिविद्याशेषऔरमूर्धन्यनाड़ीसम्बन्धहै सोअनुशीलयितव्यहै औरजोविद्याविशेषमेंविहितहै गतिउसकेअभ्याससेउसीमेंप्रतिष्ठितयुक्तहै अनुस्मरणाअदृष्टार्थहो उसयोगसेहृदयालयमेंसूपासितब्रह्मसेअनुगृहीत ब्रह्मरूपसूरिमूर्धन्यनाड़ीसे शताधिकया जोकिएकसोएकनाड़ीसेनिकलताहै इतरइतरनाड़ियोंसे सोहीहार्दविद्यामेंपढ़ाहै शतञ्चैकाचहृदयस्यनाड्यस्तासांमूर्धानमभिनिःसृतैकातयोर्ध्वमायन्नमृतत्वमेतिविष्वङन्याउत्क्रमणेभवंतीति अर्थ हार्द ब्रह्म विष्वङ् नानाविधअन्यनाड़ीअन्यकोहैं सुषुम्नाड़ीहृदयसेनिकरदहिनीओरतालुककंठांतस्तननाककेबीच भित्तिद्वाराब्रह्मरंध्रमेंप्राप्तहो सूर्यरश्मियोंसेएकहोरहिहै सोहीउपासककेजानेकोब्रह्मलोककोराहहै ॥

रश्म्यधिकरण ॥ ११ ॥

रश्म्यनुसारी १८।

हार्दविद्याहै अथयदिदमस्मिन्ब्रह्मपुरेदहरंपुण्डरीकंवेश्मेति

इसउपक्रममेंविहितहैहार्दविद्या इसकोप्रक्रियामें अथयाएता हृदयस्यनाड्य इसउपक्रममेनाड़ीरश्मिकासम्बन्धमप्रपञ्चकहिके फिरकहाथा अथयचैतदस्माच्छरीरादुत्क्रामत्यथैतैरेवरश्मिभि-रूर्ध्वमाक्रमतइति फिरकहाकि तयोर्ध्वमायन्नमृतत्वमेतीति तिस्से यहजानाकि जोएकसोएकनाड़ीसेनिकरा सोरश्मिमेंहो केगयाहै सोक्याअविशेषसेदिनयारातिमेंम्रियमाणरश्मिसेजा-ताहै यादिनमेंइससंशयमेंअविशेषसुनैसे अविशेषसेहीरश्मिसे जाताहै ॥

निशिनेतिचेन्नसंबंधस्ययावद्देहभावित्वाद्दर्शय-तिच १९।

हैदिनमेनाड़ीवोरश्मिकासम्बन्ध इस्से दिनमेंमरारश्म्यनुसा रीहो रातिमेंमरारश्म्यनुसारीनहो नाड़ीरश्मिकेसम्बन्धविच्छे-दसे इस्से पढ़ाकि इतिचेन्न यदिसम्बन्धाभावकहो सोनहीहै संबन्धस्य यावद्देहभावित्वात् नाड़ीरश्मिकासंबन्ध शिरारश्मि सम्पर्कजोलोदेहहै तोलाहै दर्शयतिच इसअर्थकोश्रुतिदिखा-तीहै अमुष्मादादित्यात्प्रतायन्ते तास्वासुनाड़ीषुसृप्ता आभ्योना ड़ीभ्यः प्रतायन्ते तेमुष्मिन्नादित्ये सृप्ताइति अर्थ प्रतायन्ते फै-लतीहैं सृप्ताः संबद्धहोतीहैं युक्तितुइष्टकोयुक्तिहै कि निदाघ कीरातिमे रश्मिकीअनुवृत्ति लभतीहै प्रतापादिकार्य देख नेसे हेमन्तादिकीरातिमेंलोकानुवृत्तिरहितीहै जैसीहेमन्तादि मे वैसीदुर्दिनमेहै अहरेवैतद्रात्रौदधातीति अर्थ सूर्यरातिमे दिनकोधरताहैथोरीरश्मिसे जोरातिमेंमराबिनारश्मिकेसहारे सेऊपरकोगयातोरश्मिकासहाराव्यर्थहो यहविशेषनहींकहाकि जोदिनमेमरासो रश्मिकोअपेक्षाकरऊपरजाताहै नकिरातिमे

मराजो सौरश्मिकोअनपेक्षाकर जाताहै अथ सूरिभीराति मेंमरणमात्रदोषसे जोऊपरनहींजाओ तोविद्यापाक्षिकफलदा हो इससेविद्यामेंप्रवृत्तिनहो मृत्युकालकेअनियमसे अथजोरातिमेमरादिनकीप्रतीक्षाकरो दिनकेनिकारनेमेभीमरेकोकदाचित्रश्मिसम्बन्धयोग्यदेहनहो अग्न्यादिसम्पर्कसे यथावत्चिप्येन्मनस्तावदादित्यङ्गच्छतीति यहश्रुति अनुदीक्षाकोदिखाती है किउपासकजबकभीमराब्रह्मलोकभेरश्म्यानुसारीजाताहै रातिदिनकाकुछविशेषनहींहै जैसेधनीरथादिमेचलताहै ॥

अयनाधिकरण ॥ १२ ॥

अतश्चायनेपिहिदक्षिणे २० ।

अतएव सूर्यकीप्रतीक्षाव्यर्थहोनेसे वोअपाक्षिकफलविद्या होनेसेवोअनियतकालमृत्युसेदक्षिणायनमेंमरा सूरिविद्याकेफलकोपाताहै उत्तरायणमेंमरणश्रेष्ठहै भीष्मकीउदीक्षासे आपूर्यमाणपक्षाद्यान् षडुदङेतिमासांस्तानिति इसश्रुतिसेउत्तरायणमरणार्थचाहिये इसशंकाकोइससूत्रसेछुटताहै मूढार्थप्राशस्त्यकीप्रसिद्धिहै मूढकादैवसेउसमेंमरणप्रशस्तहै इसअभिज्ञाअभिवदनआचारभीष्मनेपालाथा या बापकेवरसेस्वेच्छामरणदिखायाथा श्रुतिउत्तरायणदेवताकोकहतीहै वोदेवतासदारहताहै इससेदक्षिणायनमेभीमरेकोविद्यासे ब्रह्मप्राप्तिअविरुद्धहै यह भावहै ॥

योगिनःप्रतिचस्मर्यतेस्मार्त्तेचैते २१ ।

यत्रकालेत्वनावृत्तिमित्यादिस्मृतिः इसकालप्राधान्यसेउपक्रममेदिनादिकालविशेषस्मृतिमे अनावृत्त्यर्थनियमितहै फिरके-

सेरातियादक्षिणायनमेमरानहींलौटेगा कहांकहिताहूं दिना दिकालका विनियोग योगीकोहै अनावृत्त्यर्थंस्मृतिमे योगसां- ख्यदोस्मार्त्त हैं नकिश्रौतहैं विषयभेदसेबोप्रमाणविशेषसेस्मा- र्त्त कालकेविनियोगका श्रौतविज्ञानमेघुसावनहींहै ननु अग्नि ज्योतिरहःशुक्लइत्यादिस्मृति इसस्मृतिमेंश्रौतदेवयान वोपितृ याणप्रत्यभिज्ञातहै कहिताहूं तंकालंवक्ष्यामीति इसमेकाल कीप्रतिज्ञासे विरोधकीशङ्काकर परिहारकहाथा यदास्मृतिमे अग्न्यादिदेवताआतिवाहिकलो तदाकुछविरोधनहींहै कालश ब्ददेवतापरहै तोश्रुतिस्मृतिकाएकार्थहै ॥

इतिश्रीयुक्तताराचन्द्रवर्मणाकृते ब्रह्मसूत्रभाषाभाष्येतुर्याध्याय स्यद्वितीयःपादःपूर्णः ॥ २ ॥

पूर्व पाद मे उत्क्रान्ति का विचार किया था अब उत्क्रान्त विद्वान् को अर्चिरादि की गति विचारते हैं ॥

ब्रह्मप्राप्ति पाद तीसरा ॥ ३ ॥

अर्चिराद्यधिकरण ॥ १ ॥

अर्चिरादिनातत्प्रथितेः १ ।

जैसेचौराहेसेचलकेचौराहेमेअवश्यजावेगा वैसबएकठौरजा मिलनेसे तैसेअर्चिरादिमार्गसबउपासकोंकोएकहीहै आसृति केउपक्रमसेसमानउत्क्रान्तिकहीथी औरस्वतिश्रुतियोंमेनाना विधसुनतेहैं एकनाडीरश्मिसम्बन्धसे अथैतैरेवरश्मिभिरूर्ध्वंमा क्रमतइति दूसरीअर्चिरादि तेर्चिषमभिसम्भवन्त्यर्चिषोहरिति

तीसरी सएतंदेवयानंपथानमापद्याग्निलोकमागच्छतीति चौ-
थी यदावैपुरुषोस्माल्लोकात्प्रैतिसवायुमागच्छतीति पञ्चमी सूर्य
द्वारेणतेविरजाः*प्रयांतीति इनस्रुतियोंमेंसंशयहै किजोमिथो-
भिन्नरहैं याएकहैनानाविशेषणवती भिन्नप्रकरणसेभिन्नस्रुतिहैं
वोभिन्नोपासनाशेषसे अपिच अथैतैरेवरश्मिभिरिति यहअवधा
रणअर्चिरादिकीअपेक्षामेंरुद्धहो औरएकस्रुतिमे त्वरा वाक्यपी
ड़ितहो सयावत्क्षिप्येन्मनस्तावदादित्यङ्गच्छतीति तिस्सेअप-
न्य आपुसमे भिन्नरहैं इस्से पढ़ाकि अर्चिरादिना सवब्रह्मप्रेप्सु-
र्चिरादि स्रुतिसे जाताहै कैसे तत्प्रथितेः सब सूरियोंकोअ-
र्चिरादिस्रुतिठहिरीहै देखोपञ्चाग्निविद्याकेप्रकरणमे येचामी-
अर इसनेविद्यान्तरकेसेवकोंकाभी अर्चिरादिस्रुतिसुनाईहै जो
कहासोहो जिसविद्यामेकोईस्रुतिनहीं उसमे अर्चिरादिस्रुति
स्थिरहो जिसमेअन्यस्रुतिसुनी उसमेकिसलियेअर्चिरादिस्रुति
काआश्रयलेतेहो सुनोउक्ततोहोजोजेस्रुतिअत्यन्तभिन्नहों एकस्रु
तिनानाविशेषणवती ब्रह्मलोकमेपहुंचानेवालीकहि किसीवि
शेषणसेउपलक्षितकहिताहूं सर्वंचएकदेशकीप्रत्यभिज्ञासे इतर
काइतरमे विशेषणविशेष्यभावसिद्धिसे एकस्रुतिकेअग्न्यादिवि
शेषणहैं जैसेप्रकरणभेदवोविद्यैक्यमे मिथोविशेषणोपसंहारहै
तैसेगतिविशेषोंकाउपसंहारहै विद्याभेदमेएकदेशगतिकीप्रत्य-
भिज्ञासे वोगन्तव्यकेअभेदसे गतिकाअभेदहै एकगन्तव्यदेखो
क्तितेषुब्रह्मलोकेषुपराः परावन्तोवसन्तीति तस्मिन्वसतिशा-
श्वतीःसमाः सायाब्रह्मणोजितिर्याव्युष्टिस्तांजितिञ्जयतितां व्यु
ष्टिं व्यश्नुते तद्यएवैतंब्रह्मलोकंब्रह्मचर्येणानुविदन्तीतिच अर्थ
परावतः दीर्घायुः हिरण्यगर्भके पराः दीर्घ समावर्ष कार्यब्रह्म

* निष्पाप ।

की जितिः सर्वंजय व्यष्टिः व्याप्तिकोपातेहैं इनमेंएकफलब्र-
ह्मलोकदिखायाहै एतैरेव यहनिश्चयअर्चिरादिकी मानेमेंनहो
यहदोषनहीं एवकाररश्मिप्राप्त्यर्थहोनेसे नहिएकाएवशब्दरश्मि
काप्रापक वोअर्चिरादिकानिवर्तकयोग्यहै फिरएवसेरश्मिस-
म्बन्धहीनिश्चितहै यथावत् यहत्वरावाक्य अर्चिरादिसेक्षिप्रार्थ
है जैसेलोकमेंहैकि निमिषमात्रमेंयहांआताहूं अपिच अथैत-
योः पथोर्नकतरेणचनेति इसनेदोमार्गसेभ्रष्टोंकेअर्थकष्ट तीस-
रास्थानकहाहै पितृयाणसेभिन्नएकदेवयानकहाहै सोअर्चिरा
दिपर्वपन्थहै अर्चिरादिश्रुतिमेंमार्गकेपर्वबहुतहैं अन्यत्रथोरेहैं
बहुतकेआदरसेथोरेकीप्राप्तिन्याय्यहै ॥

वायुलोकाधिकरण ॥ २ ॥

वायुमब्दादविशेषविशेषाभ्यां २ ।

फिरकिससन्निवेशसेगतियोंका इतरेतरविशेषणविशेष्यभा-
वहै इसकोआचार्य सुहृदहोकेप्रथताहै सएतन्देवयानंपन्थान
मापद्याग्निलोकमागच्छतिसवायुलोकं सवरुणलोकं सइन्द्रलो-
कं सप्रजापतिलोकं सब्रह्मलोकमिति यह कौषीतकियोंकादेव
यानहै इसमेंअर्चिः वो अग्निलोकदोनोंशब्दएकार्थहैं ज्वलनव-
चनसे नकिइनमेंसन्निवेशक्रमढूंढ़नयोग्यहै वायुअर्चिरादिमेंन
हींसुनीहै फिरकहांबैठानाचाहिये वायुको कहिताहूं तेर्चिष
मभिसम्भवन्त्यर्चिषोहरन्ह आपूर्यमाणपक्षमापूर्यमाणपक्षान्या
न्षडुदङेतिमासान्मासेभ्यः सम्वत्सरंसम्वत्सरादादित्यमि
ति इसमेंसम्वत्सरसेपराक् वोआदित्यसेअर्वाक् वायुकासम्भव
है कैसे अविशेषविशेषाभ्यां देखो सवायुलोकं इसनेअविशेषसे
वायुकोकहाहै वोश्रुत्यन्तरमेंविशेषकहाहै यदावैपुरुषोस्माल्लो

कात्मैतिसवायुमागच्छतितस्मैसतत्रविजिहीतेयथारथचक्रस्यखं-तेन सऊर्ध्वआक्रमते सआदित्यमागच्छतीति अर्थ उपासक देहसेनिकरप्राप्तपुरुषकेअर्थवायुअपनेमेंछिद्रकरताहै वुहपहिये केछिद्रतुल्यवायुने अपनेमेंदियाछिद्र उसीद्वारेसेनिकर आदि-त्यमेंजाताहै इत्यर्थं इसनेआदित्यसे पूर्ववायुदिखायाहै इसवि शेषसे अब्द वोआदित्यकेबीचमें वायुनिवेशयितव्यहै फिरक्युं नहींअग्निकेपरदेखनेसे अर्चिकेआगेवायुका सन्निवेशकरतेहो यहविशेषनहींहै ननुसएतंदेवयानंपन्थानमापद्याग्निलोकमाग च्छति सवायुलोकमिति यहश्रुतितुमनेकहीथी हांसुनोकहिता हूं कौषीकिमेपाठमात्रपौर्वापर्यसेहै नकिक्रमवाचीकोईशब्द है इसमेंपदार्थकादर्शनमात्रकियाहै जैसे इसकोरपहुंचताहै वायुकेयहां वायुदत्तछिद्रसेऊपरपहुंचि आदित्यमेंजाताहै इसी क्रमप्राप्तहै तिसेठीककहाकि अविशेषविशेषाभ्यां और मासे भ्योदेवलोकंदेवलोकादादित्यमिति ऐसावाजसनेयीपढ़ताहै इ समेंआदित्यकेआनन्तर्यार्थ देवलोकसेवायुसेउपासकोंकाअभिस म्भबहै सूत्रकारने वायुमब्दादिति यहछांदोग्यश्रुतिकोअपेक्षा सेकहाथा छांदोग्यवोवाजसनेयोंके एकठौरदेवलोकनहींविद्य-मानहै माससेसम्वत्सरहै इसमेंश्रुतिदोकेविश्वाससे दोनोंदो-नोंठौरमेंग्रथितव्यहैं इसविवेकसेकि मासकेसम्बन्धसेवर्षपूर्वहै पश्चिमदेवलोकहै ॥

तडिदधिकरण ॥ ३ ॥

तडितोधिवरुणःसंबंधात् ३ ।

आदित्याच्चन्द्रमसंचन्द्रमसोविद्युतमिति इसविद्युत्केऊपर सवरुणलोकमिति इस्मेवरुणसम्बद्धहै हैविद्युत्वोवरुणकासंबंध

यद्दाहिविशालाविद्युतस्तीव्रस्तनितनिर्घोषाजीमूतोदरेषुप्रनृत्यं- न्तित्रथापःप्रपतन्ति विद्योततेस्तनयतिवर्षिष्यतिवाइतिचब्राह्म णं अलाधिपवरुणश्रुतिस्मृतिमेप्रकटहै वरुणसेऊपरइन्द्रवोप्र- जापतिकेस्थानकेत्रभावसे वोपाठसामर्थ्यसे वोत्रागतूनामन्ते सन्निवेश इसन्यान्यसे वरुणादिकात्रन्तमेनिवेशहै वैशेषिकस्था नकेनहोनेसेवोरविद्युत्अन्त्यार्चिरादिमेंहै ॥

आतिवाहिकाधिकरण ॥ ४ ॥

आतिवाहिकास्तल्लिंगात् ४।

अतिवहतीत्यातिवाहिकास्तेतनादेवाअर्चिरादयः कुतःतल्लि ङ्गात् तेषांचेतनानामेकीकरणेनलिंगादितिसोअर्थोनुवाद्यतेसं स्कृतेनअर्चिरादिमेंसशयहैकिक्याजेमार्गचिन्हहैंयाभोगभूमिहैंया अतिनेताहैंगंतोंकेमार्गचिन्हअर्चिरादिहैंमार्गरूपकाहिनेसे जैसे लोकमेंकोईग्रामयानगरमेंप्रतिष्ठासमानसिखायाजाताहैकिजा तूअमुकगिरिको फिरवटको फिरनदीको फिरग्रामको फिरनगर कोपहुंचेगा ऐसेयहांभीअर्चिषोहरन्हइत्यादिसेकहाहै याभोग भूमिहैं लोकशब्दसेअग्न्यादिकाअनुबंधहै अग्निलोकमागच्छती त्यादि लोकशब्दप्राणियोंकेभोगायतनमेंभाषितहै जैसेमनुष्य लोक पितृलोक देवलोक सोहीब्राह्मणनेकहाहै अहोरात्रेषु ते षुलोकेषुसज्जन्तइत्यादि तिसमें नहीहैं आतिवाहिकअर्चिरादि अचेतनसेअर्चिरादिअतिवाहिकनहीसिद्धहैं राजासेनियुक्तचेत नपुरुषदुर्गंवनगिरिपथमे अतिवाह्योकोअतिवाहतेहैं निवाहते हैंसोनहीं अर्चिरादिआतिवाहिकहोनेयोग्यहैं कैसे तल्लिंगात् लिंगदेखो चन्द्रमसोविद्युतंतत्पुरुषोअमानवः सएतान् ब्रह्मगम

यतीति इसने सिद्धवत्गमयितादिखायेहैं पुरुषपदअमानववोने तामेमानेसेवाक्यभेदहोसोनहीं विशेषणप्राप्तमानवकीनिवृत्ति मात्रपरहै यद्दिअर्चिरादिमेपुरुषगमयिताप्राप्तहै औरवहमानव है तिस्सेयुक्तहै पुरुषनिवृत्यर्थं पुरुषकाविशेषणअमानवइति ।

उभयव्यामोहात्तत्सिद्धे ५ ।

ननु स्वयंप्रयत्नशून्यश्चेतनांतरेणनेयः इसन्यायकेअभावसेलिंगअगमकहै सोदोषनहीं उभयजोअर्चिरादिमेजातेहैंवेविनादेह संपिंडितकरणग्रामसेअस्वतंत्रहैं औरअचेतनसेअर्चिरादिभीअ- स्वतंत्रहैं इस्से अर्चिरादिके अभिमानी चेतनदेव विशेषहैं अति यात्रामेंनियुक्तसमुभेजातेहैंजैसेलोकमेंमत्तमूर्छितादिकेसंपिण्डितकरणव्यूहपरप्रेरणासेवर्त्ममेंहोतेहैं अर्चिरहरादिकेअस्थिरसे अर्चिरादिमार्गकेचिन्हनहीहैंनहीरातिमेंमरेकाअहःस्वरूपाभिसंभवयुक्तहै नकिद्दिनकीप्रतीक्षाकरताहै देवलाध्रुवसेअस्थिरदोष नहींहै नमार्गचिन्हनभोग्यहै अर्चिरादिशब्ददेवतोंमें अर्चिरादिकेअभिमानसेयुक्तहै अर्चिषोहरित्यादि ऐसाकहिनाआतिवाहिकमेंविरुद्धनहींअर्चिहैंतुसेअहःसंभवहै अन्हाइसहेतुसेऽऽपूर्यमाणपक्षइत्यादि जैसेलोकप्रसिद्धआतिवाहिकोमेंऐसाहीउपदेशदेखतेहैं कियहांसेजावलवर्माके फिरजयकेफिरकृष्णके औरउपक्रममे तेर्चिरभिसंभवंतीति इस्मे सम्बन्धमात्रकहा नकिसंबन्धविशेषकोई औरउपसंहारमें सएतान्ब्रह्मगमयतीति इस्मेसंबंधविशेषकहा जोकिअतिवाह्यआतिवाहिकरूपहै सोहीउपक्रममें नि- श्चितहै संपिंडितकरणोसेगंताकोमार्गमेंभोगसंभवनहीहै जैसे वन्धेनिगडितको अभुंजानगंतामें लोकशब्दपहुंचानेकोशक्यहै

वेलोकअन्यलोकवासियोंकेभोगभूमिसेयहयोजनाहैकिजबअग्नि स्वामिकेलोकमेंपहुंचा तबअग्निसे अतिवाह्यमानहै ऐसेवायु स्वामिकेलोकमेंजानो ।

वैद्युतेनैवततःतच्छ्रुतेः ६ ।

फिरकैसेआतिवाहिकपक्षसे वरुणादिसेउनकासंभवहै वि-द्युत्सेऊपरवरुणादिचिह्नहैं औरविद्युत्केआगेब्रह्मतकअमान वपुरुषपहुंचानेवालासुनाथा इसकाउत्तरपढ़ाकि वैद्युतेन ततः विद्युत् केअभिसंभवसेऊपरवोविद्युत्केआगेरहितेअमानवपुरु षसेवरुणलोकादिमेंअतिवाह्यमानब्रह्मलोकमेंपहुंचतेहैं तान्वै द्यु*तात्पुरुषोऽमानवः सएत्यब्रह्मलोकान्गमयतीति इसने अमानवहीपहुंचानेवालाकहाहै वरुणादिअमानवकेअप्रतिबंध करनेसेयासहायसे अनुष्ठानमेंअनुग्राहकहैं तिस्से साधुकहाकि अर्चिरादिआतिवाहिकदेवतारूपहैं ।

कार्यब्रह्मप्राप्त्यधिकरण ॥ ५ ॥

कार्यंबादरिरस्यगत्युपपत्तेः ७ ।

होचुकीमार्गगाथा अवगंतव्यचिन्ताहै सएनान्ब्रह्मगमयती ति इसमें विचिकित्साहै किक्याकार्यअपरब्रह्मकोपहुंचातेया परअविकृतमुख्यब्रह्मको कैसेसंशयउठा ब्रह्मशब्दसुननेसेवोगति श्रुतिसेकार्यसगुणसबलअपरादिब्रह्मपर्यायहैंकार्यकोअमानवइ नकोपहुंचाताहै यहबादरिकामतहैं कैसे अस्यगत्युपपत्तेः कार्यं ब्रह्मगन्तव्यहोसक्ताहैप्रदेशवत्त्वसे जैसेव्योम नकिपरब्रह्ममेंगन्ता गन्तव्यगतिकल्पिसक्तेहो सर्वंगतसेप्रत्यगात्मासे ॥

* विद्युत्लोकसे ।

विशेषितत्वाच्च ८।

ब्रह्मलोकान्गमयतीति तेतेषुब्रह्मलोकेषुपरा:परावतोवसन्तीति इसश्रुत्यंतरमे विशेषितत्वात् कार्यब्रह्मविषयकगतिजानीहै बहुवचनविशेषणपरमेसमर्थनहोगा कार्यमेअवस्थाभेदकी सिद्धिसे बहुवचनकासम्भवहै औरलोकश्रुतिभीविकारगोचरसन्निवेशसभोगभूमीमे आंजसोगोणीहै औरअन्यत्र एषब्रह्मैवलोक:संम्राडित्यादि इनमेअधिकरण वोअधिकर्त्तव्यकाकहिना परमेआंजसनहीहै तिस्से कार्यविषयकनयनहै ॥

सामीप्यात्तुतद्व्यपदेश: ९।

तुकार्यमेब्रह्मशब्दकोअनुपपत्तिकावारकहै कैसेकहिसकतेहो कार्यमेब्रह्मशब्दकोसमन्वयमे विश्वनिदानस्थापनसे कहिताहूं सामी ९ परकोसामीप्यसे अपरकापरमेब्रह्मशब्दकहिनाविरुद्ध नहींहै परहीविशुद्धोपाधिके सम्बन्धसे कहींकुछविकारधर्मजो मनोमयादिहैं उनसेउपासनार्थ अपरकाहाहै यहसीमाहै ॥

कार्यात्ययेतदध्यक्षेणसहात:परमभिधानात् १०।

ननुकार्यमे प्राप्तिसेसुनीअनावृत्तिनहींघटतीहै नकिपरसेअन्यचकहींनित्यताकासम्भवकरासक्तो दिखातोहै श्रुतिदेवयानसे जानेवालोंकोअनावृत्तिको एतेनप्रतिपद्यमानाइमंमानवमावर्त्तंनावर्त्तंते अर्थ वेयहांफिरनहीलौटिआतेहैं जोगयेदेवयानपथसे तयोर्ध्वमायन्नमृतत्वमेतीति चेत् यहकहिताहूं कार्यात्य १० कार्यब्रह्मलोकप्रलयप्रत्युपस्थानमे ब्रह्मलोकमेंउपासकोंकोसम्यग्दर्शनजन्मताहै तदध्यक्षेण हिरण्यगर्भके सहात: साथ अत: शुद्धविष्णुकेपरमपदकोपहुंचतेहैं इत्यं क्रममुक्तिअनावृत्त्या

दिश्रुतिकेकहिनेसेमाननीयहै नहि अञ्जसा अनावृत्तिलिङ्गसे परमेपहुंचनाहै क्रममुक्तिसे लिङ्गअन्यथासिद्धहै ॥

स्मृतेश्च ११।

अपनीस्मृतिमेव्यासने परस्मृतिकी सम्मतिदीहै ब्रह्मणासह तेसर्वेसम्प्राप्तेप्रतिसञ्चरे परस्यांतेकृतात्मानः प्रविशन्तिपरम्पद मित्यादिः अन्तसमष्टिलिङ्ग देहरूपविकारकेअवसानमें यश्रुति सूचकहै तेब्रह्मलोकइत्यादि श्रुति सूत्र स्मृति इनतीनोंका अर्थहै कि सत्यलोकमें ब्रह्मकेसाथरहितेहैं वहांशमादिसेनिर्गुणब्रह्मबोधकोपायके प्रलयमेंउसकेसाथहीमुक्तहोतेहैं तिस्से कार्यमेगतिसिद्धान्तहै ॥

परंजैमिनिर्मुख्यत्वात् १२।

फिरकिसपत्तकोलेकेयहसिद्धान्तस्थापनकियाथा सुनो कार्यम्बादरिरित्यादि इसे सोअवसूत्रोंसेदिखाताहै परंजै १२ जैमिनि सएनान्ब्रह्मगमयतीति इसमेपरहीकोउपासकपहुंचतेहैं यहमानताहै कैसे मुख्यत्वात् परब्रह्मब्रह्मशब्दकामुख्यआलम्बनअर्थात्अर्थहै अपरब्रह्मगौणहै मुख्यवोगौणकेयोगसे मुख्यमेसम्प्रत्ययहै इसन्यायसे ॥

दर्शनाच्च १३।

तयोर्ध्वमायन्नमृतत्वमेतीतिच इसनेपूर्वगतिपीछेअमृतफलकहाहै सोपरमेंयुक्तहै नकिकार्यमे कार्यविनाशीहोनेसे अथ यत्रान्यत्पश्यतितदल्पं तन्मर्त्यमिति इसप्रवचनसेपरविषयगतिकठवल्लीमेपढ़ीहै नहींकठवल्लीमे विद्यान्तरकाक्रमहै अन्यत्र धर्मादित्यादि इसमेभीपरहीप्रक्रान्तहोनेसे ॥

नचकार्येप्रतिपत्त्यभिसंधिः १४।

अपिच प्रजापतेःसभांवेश्मप्रपद्य इति अर्थ उपासकमरणका लमेप्रजापतिकीसभा वोवेश्ममे कार्यप्राप्तिकासङ्कल्पकरता है यहप्रतिपत्ति वो अभिसन्धि कार्यमेनहीं है नामरूपयोर्निर्वहिता इति इसनेकार्यसेविलक्षणपरप्रकृतदिखाया है यशोहंभवामिब्राह्मणानांराज्ञांयशोविशांयशइतियहांयशःशब्द आत्मवाची है सो सार्वात्म्यलिङ्गसे परप्राप्त्यर्थसङ्कल्प है नतस्यप्रतिमाअस्तियस्यना ममहद्यशइति इसमेपरकायशनामप्रसिद्धिसे वेश्मप्रतिपत्तिहा- ई बिद्यामेकही है गतिसे तदपराजितापूर्ब्रह्मणःप्रभुविमितं हिर ण्मयमिति अर्थ सत्ब्रह्मलोकमेंअपराजिताविद्याहीनसेसोजी तीनहींजाती है ऐसीपुरी है हिरण्यगर्भकीप्रभुसेरची है सोनेकीसू रिकोमिलती है नहींकुछसाम्यसे ब्रह्मचारी खरकेपलटेमेयोग्य है प्रपद्यइसमेपद्धातुकेगत्यर्थसे मार्गावसित है तिसपरकेविषय मेगति है यहपक्षान्तर है जेदोपदसूचित हैं गत्युपपत्त्यादिभिः इसमे एकतोमुख्यादिभिः दूसरा गत्युपपत्त्यादिमुख्यादिको आ- भासकरनेमेप्रभु हैं नकिमुख्यादिगत्युपपत्त्यादिको यहआद्यसि- द्धान्त है दूसरापूर्वपक्ष है नहींअसम्भवमेमुख्यअर्थकेग्रहणका कोई ज्ञापयिता है ब्रह्मलोकेषु बहुवचनसे सङ्कल्पादेवगन्धादिदिव्य भोगसुन्नसे परमेअसम्भवसेमुख्यार्थत्याग है एतद्वैसत्यकामपरं चापरंचब्रह्मेत्यादि इनमेप्रयोगसाम्यसेब्रह्मशब्द दोनोंब्रह्मोंमेरू- ढ़ होनेसेमुख्य है परमे अवयवार्थनिरतिशयमहत्वकेलाभसे अपर मेअमुख्य है यहलिङ्गियोंकास्वीकार है नकिवेदिकोंका जैसेका- ठकको परविद्याकेप्रकरणमे सुषुम्नास्तवार्थ नाडान्तरकहे हैं तैसेपरविद्यामे अपरविद्याकीगतिकाकहिनायुक्त है विष्वगन्या

उत्क्रमणेभवंतीतिवत् प्रजापतेःसभां इससेप्रकरणकाबाधहै यशोहं इसनेउपासनाअपरकीकहीहै इस्सेकार्यमेप्रतिपत्त्यभिसन्धिविरुद्धनहींहै सगुणमेभीसर्वात्मकाकहिना सर्वकर्मासर्वकामइत्यादिवत्योग्यहै तिस्सेगतिश्रुतिअपरार्थहै कोईकहतेहैंकि पूर्वकेपूर्वपक्षार्थसूत्रहैं वोउत्तरकेसिद्धान्तसूत्रहैं इसव्यवस्थाको पकड़केपरार्थगतिश्रुतिहैं यहस्थापनकरतेहैं सोअयुक्तहै पर गन्तव्यनहोनेसे ब्रह्मैवेदंविश्वमिदंवरिष्ठमित्यादि जोऐसाहैसो गन्तव्यकभीनहींहोसक्ताहै नहींगतहीगन्तागम्यहो लोकमेप्रसिद्धहै किअन्यअन्यत्रगन्ताहै ननुलोकमे गतभीगन्तव्यदेशादिविशिष्टदेखाहै जैसे भूस्थहीभूकोदेशान्तरसेगन्ताजाताहै और अनन्यमेवालकोकालान्तरविशिष्टयौवन वार्धक्यअपनेमेगन्तव्य देखीहै तैसेहीपरभीसर्वशक्तियोगसेगन्तव्यहो सोनहीं परमेसवविशेषोंकेनिषेधसे निष्कलंनिष्क्रियंशान्तं निरवद्यंनिरञ्जनम् अस्थूलमनरावङ्क्स्वमदीर्घमलोहितंसवाह्याभ्यन्तरोह्यजः इत्यादिश्रुतिश्चोस्मृतिवोयुक्तिसे देशकालादिकाविशेषयोगपरमेकल्पनकोशक्यहै जिस्मे भूकाप्रदेश वोवयकी अवस्थाकेन्यायसे परगन्तव्यहो भूवोवयप्रदेश वोअवस्थादिकेविशेषयोगसे देशकालविशिष्टगंतव्यहै जगकाजन्म स्थितिलयकेहेतुसे परमेभी नानाशक्तिहैं यदियहकहोसोनहीं विशेषनिरासश्रुतियोंकोअनन्यार्थसे जन्मादिश्रुतियोंकोभीसमानअनन्यार्थत्वहै सोनहीं जन्मादिश्रुतियांऐक्यवोधनपरहोनेसे मृदादिकेदृष्टान्तोंसेपरएकसत्यवोविकारसांतकहितीश्रुति जन्मादिपरनहीं हैं प्रश्न क्युंहैंजन्मादिश्रुति विशेषनिरासश्रुतिकाशेषहै फिरनकिविशेषनिरासश्रुति जन्मादिश्रुतिकाशेष कहिताहूं विशेषनिरासश्रुति निराकांक्षार्थसे जैसेआत्माएकनित्यादिजानेसे फिरआकांक्षा

नहींरहितीहै पुमर्थंपूरेज्ञानकेजन्मसे एतंहवावनतपतिकिमहं
साधुनाकरवंकिमहंपापमकरवमित्यादि इनसे सूरिकीतुष्टिवो
अनुभवऐसादेखनेसे बिकारवोअन्तकी अभिसन्धिके निषेध
से मृत्यो: सइत्यादि इस्से नहीं बिशेषनिरासश्रुति जन्मादि
श्रुतिकाशेषकहिसक्ते हैं नहींजन्मादिश्रुतिनिराकांक्षार्थकहि-
नेकोसमर्थहै जन्मादिश्रुतिप्रत्यक्षसेअन्यार्थहै देखोकि तच्चैतच्छु
ङ्गमुत्पतितंसोम्यविजानाहिनेदममूलंभविष्यतीति इसउपन्या-
सकेआगेपढ़ाकि तेनशुङ्गेनसन्मूलमन्विच्छेत्यादि इसउपसंहा
रमेसत्हीज्ञेयकहाहै छान्दोग्यमे यतोवाइमानीत्यादि इसतै-
त्तिरीयने जगज्जन्मादिकेअनुबादसे ब्रह्मज्ञेयकहाहै ऐसेजन्मा
दिश्रुतिकोएकात्मबोधसे नानाशक्तियोगपरमेनहींहै इस्से पर
गन्तव्यनहींहै परमेगतिनिवारितहै नतस्यप्राणाइत्यादिसे गति
कल्पनामेगन्ताजीव वोगन्तव्यब्रह्मकाअवयव वोबिकारवोअन्य
कुछहो अत्यन्ततादात्म्यमेगतिअसिद्धहो जोऐसातोक्याहो इस्से
कहिताहूं यदि एकदेशहै तिस्मे एकदेशीनित्यहै फिरन ब्रह्म
मेगतियुक्तहै निरवयवसेपरमेएकदेश एकदेशीकाकल्पनायुक्तन
हींहै विकारपक्षमेंभीविकारसे विकारीनित्यहो नकिघड़ामट्टी
कोछाड़केठहिरताहै यात्यागमेअभावहै विकारवोअवयवपक्ष
मेविकारअवयववालेको स्थिरसेसंसारमेगतिनिश्चितनहींहै या
अन्यजीवहैब्रह्मसे फिरजीवअणु वोव्यापीवोमध्यम परिमाण
होनेकेयोग्यहै व्यापीहैतोगतिअसिद्धहै मध्यमानमेअनित्यहो
अणुसेसवदेहमे वेदनाकीअसिद्धिहो पुरस्तात्विस्तरसेमध्यवोअ
णुमानकानिषेधकिया औरपरस्तात् जोजीवअन्यहै तोतत्वम-
सीत्यादिकाबाधहो इसदोषकोसमानजानो विकारवोअवयव
पक्षमे फिरकहिताहैभेदाभेदवादी किविकारवोअवयववोवि-

कारावयववालेको अनन्यसेअदोषहै यदिकहोसोन मुख्यैक्यकी
असिद्धिसे इनसबपक्षोंमेंअनिर्मोक्षहो संसारीआत्माकीनतिवृ-
त्तिसे वोअतिवृत्तिमें स्वरूपनाशहो ब्रह्मात्माकेअस्वीकारसे कर्म
ठजल्पतेहैंकि प्रत्यवायकेअजन्मार्थ नित्यनैमित्तिककाअनुष्ठान
है औरकाम्यवोनिषिद्धोंकापरिहारहै स्वर्गनरकोंअप्राप्त्यर्थ अब
देहभोग्यकर्मोंको भोगसेक्षयकर वर्त्तमानदेहकेपातपीछे देहा
न्तरकेप्रतिसन्धानकाजोकारणथा उसकेअभावसे स्वरूपावस्था
नलक्षणकैवल्यबिनाहीब्रह्मात्मके ऐसेवृत्तकोसिद्धहोगी ऐसावृ-
त्तभूठाहै प्रमाणकेअभावसे नहींकिसीवेदनेकहीकिमोक्षार्थी
ऐसावृत्तआचरणकरे तुमनेअपनीबुद्धिसेऐसामोक्षोपायतर्काहै
जिस्सेकर्मनिमित्तसंसारहै तिस्से कर्मरूपनिमित्तकेअभावसे सं-
सारनहोगा यहनहींतर्किसकतेहो निमित्तकेअभावकादुर्ज्ञान
होनेसेकर्मबहुत वोजात्यन्तरमेंसञ्चित वोइष्टानिष्टविपाककेदा
ताएकएकजन्तुकेसम्भवहै उनकाफलविरुद्धहै तोयुगपत्भोगका
असम्भवहै कुछअवसरपाकेइसजन्मकेरचकहै कुछदेशओकाल
वोनिमित्तकोदेखरहेवोवैठेहैं इस्से उनकाइसदेहकेभोगसे क्षप-
णकेअसम्भवसे जैसावर्णितवृत्तीका इसदेहकेपातपीछेदेहान्तर
केनिमित्ताभावका निश्चयनहींशक्यहै श्रुतिस्मृतिमेंकर्मशेषसे
तद्यइहेत्यादि यहहोकर्मकेक्षेपक नित्यनैमित्तिकहोंगे सोन वि
रोधाभावसे विरोधमेंक्षेप्यक्षेपकभावदेखाहै जन्मान्तरकेसञ्चि
तसुकृतोंका नित्यनैमित्तिकोंसेविरोधनहींहै दोनोंमेंशुद्धिकेअ
विशेषसे दुरितोंकाक्षपणहो अशुद्धिसे शुद्धिकेविरोधमें इतने
सेदेहान्तरकेनिमित्तकाअभावसिद्धनहींहै सुकृतनिमित्तरहिनेसे
दुरितभीअशेषक्षपणनहींहोताहै नचनित्यनैमित्तिककेसेवनसे
पापकाअजन्ममात्रहै नकिफलान्तरकाजन्मइसमेंप्रमाणहै पी

छेसेफलान्तरकेजनकहोनेसे सोहीस्मरणक्रियाथा आपस्तम्बने तद्यथाऽम्रेनिर्मितेफलार्थेछाया गन्धइत्यनूत्पद्य तेएवंधर्मञ्चर्यमा णमर्थाअप्यनूत्पद्यन्तइतिनहींसम्यग्दर्शनकेविना पूरापूराकाम्य निषिद्धका वर्जनजननमरणकेबीचमेंकिसीसे प्रतिज्ञाकोभीश- क्यहै सुनिपुणोंमेसूक्ष्मदोषदेखनेसे संशयितव्यहैतुम्हारापक्ष वोनिमित्तकेअभावका।दुर्ज्ञानहै नहींजीवकोब्रह्मनमानेसे क- र्तृत्वादिस्वभावसेकैवल्यअशक्यहै स्वभावकेअनपायसे अग्न्यौष्ण्य वत् औष्ण्याभावमेअग्निकाअभावहै हो कर्तृत्वादिकार्यअनर्थ है नकिकर्तृत्वादिशक्ति शक्तिकेस्थानमेंकार्यकेपरिहारसे मोक्ष युक्तहै सोनहीं शक्तिकेहोनेमेंकार्यकाजन्मदुर्निवारहै ऐसाहो तोभीकेवलशक्तिकार्यनहींजन्मतीहै अन्यनिमित्तोंकेविना इसे एकाकिनीठहिरीभीअपराधवतीनहींहै सोनहीं निमित्तभीश- क्तिरूपसम्बन्धसेनित्यसम्बन्धहै तिस्से कर्तृत्वादि स्वभावआत्मा मे विनाब्रह्मात्मताविद्याके कभीकैसेभी मोक्षकीआशानहींहै मन्त्रभीज्ञानसे अन्यमोक्षपथकावारकहै नान्यःपन्थाविद्यतेय नायेति तिस्से जीवकेअनन्यमेंसांव्यवहारलोपहो वोप्रत्यक्षादि प्रमाणोंकीअप्रवृत्तिहो यदियहकहोसोनहीं बोधसेपूर्वस्वप्नव्यव- हारवत्सवप्रत्यक्षादियुक्तहै यत्रहिद्वैतमिवभवतीति यहवेदअ- बुद्धकोप्रत्यक्षादिव्यवहारकहिताहै यत्रत्वस्यसर्वमात्मैवाभूदिति यहवेदप्रबुद्धको प्रत्यक्षादिकाअभावकहिताहै ऐसेपरवेदीकीग- तिकहिनहींसक्तेहो गन्तव्यादिविज्ञान*केबाधसे किसकेअर्थग तिश्रुतिहै सगुणविद्यार्थहोगी कहींपञ्चाग्निविद्यामें कहींपर्यंक विद्यामें कहींवैश्वानरविद्यामेगतिकहीहै प्राणोब्रह्मकंब्रह्मेति अथयदिदमस्मिन्ब्रह्मपुरेत्यादि यहांजोगतिब्रह्मप्रकरणमेहै सो

* जीव

भीवामनीवोसत्यकामादिगुणोंसेमगुणउपास्यकोसम्भवहै कहीं परविषयगतिनहींसुनीहै जैसेगतिकानिषेधसुनायाथा नतस्य प्राणा उत्क्रामन्तीत्यादि ब्रह्मविदाप्नोतिपरमित्यादि इनमे आप्नोतिकाअर्थगतिहै सोभीदेशान्तरकीप्राप्तिवीयसम्भवसे स्व रूकीप्रतिपत्तिहै अविद्यासेआरोपितनामरूपकेलयकीअपेक्षासेक हीहै रोचनार्थयाअनुचिन्तनार्थहै गतिकहिनेसेब्रह्मवेदीकाप्र- रोचननहीहोताहै स्वसम्वेद्यसेप्ररोचनकीसिद्धिसे नित्यसिद्धनि श्रेयसकेनिवेदन वोअसाध्यफल वोविज्ञानकीगतिकेअनुचिन्त नमेअपेक्षायुक्तनहींहै तिस्सेअपरार्थगतिहै किसीनेपरापरका विवेककेअनवधारणसे अपरमेवर्त्तमानगतिश्रुति परमेजोड़दी क्यादोहैं परवोअपर वाढ दोहैं एतद्वैसत्यकामपरञ्चापरञ्चब्रह्म यदोंकारइत्यादि श्रुतिकेदिखानेसे फिरकौनपरवोकौनअपरहै कहिताहूं जहांअविद्याकृतनामरूपादि विशेषोंके निषेधसे अस्थूलादिशब्दोंसे जोब्रह्मकहासोपरहै सोहीजहांनामरूपादि विशेषोंसे विशिष्टउपासनार्थकहाहै सोअपरहै जैसेमनोमयः प्राणशरीरोरूपइत्यादि जोअदय श्रुतिकारोधकहो सोअविद्या कृतनामरूपोपाधिसेनिवारितहै अपरकोउपासनाकेपासमेसु- ना जगकाऐश्वर्यसंसारगोचरफलहै अविद्याकेनछुटनेसे और सोफलदेशविशेषमेंबद्धहोनेसे उसकीप्राप्तिकेअर्थ गतिविरुद्धन- हींहै फल सयदिपितृलोककामोभवतीत्यादि जैसेविभुव्योम कीगतिघटकेलेजानेमेहै तैसेहीविभुआत्माकी बुध्यादिउपाधि कीगतिसेगतिप्रसिद्धहै हमतोयहीकहेंगे तिस्से कार्यंवादरिरिति यहीपक्षस्थिरहै परंजैमिनिरिति इसपक्षकाभानमात्रदिखाया है प्रज्ञाकेप्रकाशार्थ ५ कहिचुकेगन्तव्य ॥

प्रतीकोपासकगत्यधिकरण ॥ ६ ॥

अप्रतीकालंवनान्नयतीतिवादरायणउभयथादोषात्तत्क्रतुश्च १५।

अवगन्ताकाअवधारणहै यहसंशयहै किसबविकारालम्बनोंकोअविशेषसे अमानवपुरुषपहुंचाताहै ब्रह्मलोकमें याकुछकोसबसूरियोंकोगतिपरसेअन्यनहो देखो अनियम:सर्वेषां इसमेंअविशेषसे इनकोबिद्यान्तरमेंगतिअवतारितहै इसपढ़।किअप्रतीकालंवनानिति प्रतीकालम्बनोंकोछोड़अन्यसबविकारालम्बनोंकोब्रह्मलोकमे अमानवपहुंचाताहै यहबादरायणमानताहै उभयथाभावमानेमेंकुछदोषनहींहै अदोषादितिसूत्रेपदच्छेदः अविरोधसे अनियम:सर्वेषां इसमेंसर्वशब्दप्रतीकोपासकसेअन्यपरहै तत्क्रतुश्च यहउभयथाभावकासमर्थकहेतु द्रष्टव्यहै जोब्रह्मक्रतुहैसोब्राह्मऐश्वर्यपावेगा तंयथायथोपासतेतदेवभवतीति इसश्रुतिसे प्रतीकमेंब्रह्मक्रतुनहींहै उपासनाप्रतीकप्रधानसे ननु अब्रह्मक्रतुकीभीगतिब्रह्ममेंसुनीहै जैसेपञ्चाग्निबिद्यामें सएनान्ब्रह्मगमयतीति होवहांप्रत्यक्ष* वाक्यसेबाधदृष्टहै पञ्चाग्न्यादिकेअभावमें औत्सर्गिकतत्क्रतुन्यायसे ब्रह्मक्रतुयोंकीब्रह्ममेंप्राप्तिहै नकिअन्यकी ॥

विशेषंचदर्शयति १६।

नामादिप्रतीकउपासनोंमेंपूर्वं पूर्वसेफलअधिकआगे २ कीउपासनोंमेंदिखातीहै यावन्नाम्नोगतंतत्रास्ययथाकामचारोभवति वाग्वावनाम्नोभूयसीयावद्वाचोगतंतत्रास्ययथाकामचारोभ-

* अहत्यवाद

वति मनोवावयवाचोभूयइत्यादि यहफलविशेषप्रतीककेतन्त्रसे उपासनोंकाउपपद्यमानहै औरब्रह्मतन्त्रमे ब्रह्मकेअविशिष्टसे केसेफलविशेषहोगा तिसेप्रतीकालम्बनोंको अप्रतीकालम्बनों केतुल्यफलनहींहै भाव ब्रह्मध्यायीब्रह्मगन्ताहै नकिअन्यदेवध्यायी ब्रह्मसेअन्यत्वतकेअभावसे अन्यदेवध्याननिष्फलहै ॥

इतिश्रीयुक्तताराचन्द्रवर्मणाकृतेब्रह्मसूत्रभाषाभाष्ये तुर्याध्यायस्यतृतीयःपादःपूर्णः ॥ ३ ॥

पूर्व पाद में सगुण विद्या वेदी को अर्चिरादि गति और कार्यब्रह्म में प्राप्ति फल कहा था अब निर्गुणब्रह्म विद्यावेदी को ब्रह्मसम्पत्ति रूप फल कहिता है ॥

ब्रह्मलोक पाद चौथा ॥ ४ ॥

मुक्तिस्वरूपाधिकरण ॥ १ ॥

संपद्याविर्भावःस्वेनशब्दात् १ ।

एषसम्प्रसादोस्माच्छरीरात्समुत्थायपरंज्योतिरूपसम्पद्यस्वेनरूपेणाभिनिष्पद्यतइति इसमेसंशयहैकिक्यादेवलोकादिभोगस्थानोंमेसेकोनांईआगन्तुक* किसीविशेषसे अभिनिष्पन्नयाआत्ममात्रसे स्थानांतरमेआगन्तुककोनांईनिष्पत्तिहो मोक्षफलकोप्रसिद्धिसे अभिनिष्पद्यते यहउत्पत्तिकावाचीहै यदिअभिनिष्पत्तिस्वरूपमात्रहै तदापूर्वावस्थामेभी स्वरूपकाअनपायविभा

---

* आत्मीय

वितहै तिस्सेकिसीविशेषसेअभिनिष्पद्यमानहै सोनहीं कहिता हैं केवलआत्माआविर्भावहै नकिधर्मान्तरसे सोकैसे स्वेनेत्या दि इससेस्वशब्दसे अन्यथाजोस्वशब्दविशेषणहै सोअनवक्लृप्तहै। ननुहोगास्वशब्दआत्मीयवाची सोनहीं आत्मीयअवचनीयसे जिसकिसीरूपसे अभिनिष्पादहै सोहीआत्मीय कोसिद्धिसेस्वेन यहविशेषणव्यर्थहो आत्मवाचीमेसार्थहै कितिस्से केवलआत्म रूपसेअभिनिष्पद्यमानहै नकिअपरआगन्तुकरूपसे किसीमतमे मोक्षवोस्वर्गमेअविशेषहै स्वर्गभिन्नमोक्षवादमेविशेषहै अनुमा मोक्ष आगन्तुकःफलत्वात्स्वर्गवदिति इसन्यायसे ॥

मुक्तःप्रतिज्ञानात् २

पूर्वावस्थावोमोक्षमे स्वरूपकेअनपायकीसाम्यमे इस्सेपढ़ाकि मुक्तः जोयहांअभिनिष्पन्नहै सोसबबन्धोंसेछुटाहै शुद्धआत्मासे ठहिराहै जगतेमेअन्धादि देहधर्मोस्वप्नमेकिसीसेहतासा रोता साहै सुषुप्तिमें विशेषकेअज्ञानसेनष्टसाहै इनतीनसेकलुषित जोआत्मा इस्सेविशेषहै कैसेजानाकिअवमुक्तहै प्रतिज्ञानात् देखो एतंत्वेवतेभूयोनुव्याख्यास्यामीति इसनेतीनदशाकेदोषहीनआत्माकेव्याख्यानकीप्रतिज्ञाकर फिर अशरीरंवावसन्तमि- त्यादि कोकहिके स्वेनेत्यादिकाउपसंहारकियाहै औरगाथाके उपक्रममेयअपहतपाप्माइत्यादिमुक्तात्मविषयकप्रतिज्ञानहैजो मोक्षफलप्रसिद्धहै सोबन्धनिवृत्तिमात्रकीअपेक्षासेहै नकिअपूर्व जननकीअपेक्षासेहै नाकवत् जोअभिनिष्पत्तिउत्पत्तिकावाची है सोभीपूर्वावस्थाकीअपेक्षासेहै जैसेरोगकीनिवृत्तिमे अरोग- अभिनिष्पन्नकहाताहै तैसेमुक्तिकीअभिनिष्पत्तिहै तिस्सेदोष नहींहै ॥

आत्माप्रकरणात् ३ ।

ज्योतिश्शब्द सेयहांपरमात्माहीकहाहै सोकैसे यआत्माअप
हतपाप्माविजरोमृत्युर्विशोकइत्यादि इनमेंआत्माहीकाप्रकर-
णहैइससेज्योतिमेंसम्पत्तिनहींहै किन्तुआत्मरूपसेहीआविर्भाव
है जोतुमनेतीनसूत्रोंमेंजीवकामुक्तिरूपकहाथा सोपहिलेसिद्ध
नहींथा किन्तुस्वर्गसाआगन्तुकहै यहकैसे सुनोध्यानसे अभि-
निष्पद्यते इसक्रियापदसेउत्पन्नसुन्नेसे यदिपूर्वसिद्धमानोगेतदा
संसारदशामेंभीहोनेसे मुक्तिफलहीनहोगी जिसेस्वर्गकीनांई
नईहैमुक्ति सोनहींस्वेनरूपेणाभिनिष्पद्यतइति इसमेंस्वशब्दके
विशेषसेपूर्वभीमुक्तिरूपथा औरनांकिस्वशब्द स्वकीयकोकहिता
है विशेषणस्वशब्दव्यर्थहोनेसे मुक्तिमेंजिसजिसरूपकोग्रहणकर
ताहै सोस्वकीयहीहै फिरकिसकीनिवृत्तिकेलिये स्वशब्दविशेष
णहोगा औरआत्मवाचकस्वशब्द सदाहीनिष्प्रयोजनहोगा और
अभिनिष्पत्तिकाअर्थ उत्पत्तिनहींकरसकतेहो पूर्वसिद्धवस्तुकी
उत्पत्तिकेअसम्भवसे फिरक्याहैगुरुजीनिष्पत्तिकाअर्थ तबभीबो
लउठादयालुगुरुसुनो बच्चे तत्वबोधसे ब्रह्मकाआविर्भाव नि
ष्पत्तिशब्दकाअर्थहै जैसेखेहसेढकीआगकोउघारलेनाहै खेहउ
ठाकेइसमें पुनरुक्तिकीशङ्काभीनहींहै उपसम्पद्यऔरअभिनिष्प
द्यते इनदोपदोंकेकहनेमें सम्पत्पदसे तत्पदार्थकेविचारकी
विवक्षाहै औरअभिनिष्पत्तिकाअर्थ वाक्यार्थबोधहै औरपूर्वसि
द्धमुक्तिकेरूपका फलकेसाथविरोधनहींहै ज्ञानसेअज्ञाननिवृत्ति
ज्ञानरूपमुक्ति पूर्वसिद्ध न होने से तिस्से पुरातनवस्तुरूपमुक्ति
हैनकिनूतनरूप कैसेमुक्तकहा परंज्योतिरुपसम्पद्येति इसने
कार्यमेंसम्पत्तिसुनाईहै ज्योतिशब्दभौतिकज्योतिमेंरूढ़से नहीं

के। ईश्वनतिवृत्तविकारसे मुक्तायोग्यहै विकारश्चार्त्तप्रसिद्धहै सो दोषनहीहै जिस्सेयहांज्योतिशब्दसे आत्माहीजतायाहै प्रकरणात् यअपहतपाप्माइत्यादि परआत्माकेप्रकृतमे अकस्मात् भौतिकमेंज्योतिशब्द नहींग्रहणकोशक्यहै प्रकृतहानसे वोअप्रकृतकीप्रक्रियाकेप्रसङ्गसे ज्योतिशब्दआत्मामेदेखाहै तद्देवाज्योतिषांज्योतिरिति ॥

मुक्तस्वरूपाधिकरण ॥ २ ॥

अविभागेनदृष्टत्वात् ४।

परंज्योतिरूपसम्पद्यस्वेनरूपेणाभिनिष्पद्यतेयोऽत्रनिष्पन्नः स ब्रह्माभेदेनकुतः तत्वमसीत्यादौतथैवदर्शनात् उपाधियोंसेछुटा जीवब्रह्महीहै जोमुक्तस्वरूपहैसापरब्रह्मसेभिन्नहीयोग्यहै कर्तृ कर्मकेभेदसे एषसम्प्रसादः परंज्योतिरूपपद्यतेइति इसमेसम्प्रसादजीवउपसम्पत्ताकरताकहाहै और ज्योतिःब्रह्मकोकर्मकहाहै इसेमुक्तजीवकास्वरूपब्रह्मसेभिन्नयोग्यहै सोनहीं ज्योतिरूपसंद्यति यहवाक्यतत्पदकेविचारार्थहै इसो विचारदशामेभेदरहो उसवाक्यकेआगेजोवाक्यहै सोवाक्यार्थदशापन्नमुक्तस्वरूपकाब्रह्महीकहिताहै वाक्यस्वे नरूपेणाभिनिष्पद्यतेइति और मुक्तकाब्रह्मकेसाथभेदनहींहै सउत्तमःपुरुषइति इसवाक्यमेजो सशब्दहैउसनेअभिनिष्पन्नरूप मुक्तस्वरूपकापरामर्षकर मुक्तकोहीउत्तमशब्दवाच्य ब्रह्मस्वरूपकहाहै तिस्से मुक्तस्वरूपसेब्रह्मभिन्ननहींहै श्रुतिसयथासैंधवेत्यादि परंज्योतिरूपसम्पद्यस्वे नेत्यादि जोयहांनिष्पन्नहै सोक्यापरसेपृथक्है याअविभागसेरहिताहै इसवीचामे सतअपर्येतीति इसअधिकरणकोअधिकर्तव्यके

कहिनेसेवोज्योतिरूपसम्पद्यते इममेवार्त्तावोकर्मकेकहिनेसेमे दमेहीरहितहै नकिपरमेमिलता है चौरैषवसा ऐसोकिमोको मतिहै उमकाव्युत्पादनहै अविभक्तहीपरसेमुक्तरहिता है कैसे दृष्टत्वात् देखा नतुतत्द्वितीयमस्तितातोन्यद्विभक्तंयत्पश्येदित्या- दि जैअविभागमुक्तबोपरकादिख। तेहैं जैसेशुद्धजलशुद्धजलमेप ड़ाशुद्धहीहै जैसेनदीसमुद्रमेसमुद्रहोतीहैं भेदोक्तिअभेदमेगौ- णीहै तिसमेयथादर्शनफलयुक्तहै ॥

सविशेषनिर्विशेषाधिकरण ॥ ३ ॥

ब्राह्म्येनजैमिनिरुपन्यासादिभ्यः । ५ ।

ध्रुवहै कि आत्ममात्ररूपसेनिष्पन्न नकिआगन्तुकअपररूपसे अबउसकी विशेषवुभुत्सा का अभिधानहै अपहतपाप्माहिसत्य सङ्कल्पान्त वोसर्वज्ञसर्वेशजोस्वरूपहैसोहीनिष्पन्नहोताहै यह जैमिनिमतहै कैसे उपन्यासादिभ्यः यआत्मापहतपाप्मेत्यादि सत्यकामइत्यन्त इसउपन्याससेऐसाआत्माबोधितहै और स- तत्रपर्यैतिजक्षन् क्रीड़न्रममाण इत्यादिनेऐश्वर्यरूपकावेदन कियाहै तस्यसर्वेषुलोकेषुकामचारोभवतीतिच सर्वज्ञःसर्वेश्वर जेभीव्यपदेशयुक्तहोंगे जैसेराजालोकमे ॥

चितितन्मात्रेणतदात्मकत्वादित्यौडुलोमिः ६ ।

चितिरूपंयत्तत्तन्मात्रंनिर्विशेषं ब्रह्मअतस्तेतन्यमात्रेणैवाभि निष्पद्यतेकुतस्तदेवइत्यतआह एवंवाअरेइत्यादिना चैतन्यमा- त्रात्मकत्वात् आत्मनोवस्तुनः सत्यसङ्कल्पत्वादीनामुपाधिधर्म त्वादित्यौडुलोमिराचार्योमन्यते अपहतपाप्मादिधर्म धर्मोसे

अभिन्नकहेहैं तोभीवेशब्दविकल्पजन्य अर्थात्सन्प्रत्ययसेजन्य हैं इसेअत्यन्तअसत्हैं पाप्मादिकोंनिवृत्तिमात्रज्ञातहै आत्माकास्वरूपचैतन्यहै तन्मात्रेण चैतन्यमात्ररूपसेनिष्पत्तिहैश्रुति एवंवाअरेयमात्मानन्तरोऽवाह्यः कृत्स्नःप्रज्ञानघनः यद्दभीअनुगृहीतहोगी सत्यकामादि यद्यपिवस्तुरूपहीधर्मकहेहैं जसेसत्यहैंकामइसके सोसत्यकामहै तोभीउपाधिसम्बन्धाधीनसेसत्यादिहैं चैतन्यवत्स्वरूपसम्भवनहींहै ब्रह्मकोनानाकारकेनिषेधसे जक्षणादिसङ्कीर्तनभी दुःखाभावमात्रकोअभिप्रायसेहै स्तवार्थ आत्मरतिरित्यादिवत् नहींआत्मनिमित्त रतिक्रीड़ामिथुनकोकहिसक्तेहैं रत्यादि दोमेघटतेहैं तिस्से निरस्ताशेषप्रपञ्च वोप्रसन्न वोअव्यपदेश्य वोवोधात्माअभिनिष्पद्यमान औडुलोमिमानताहै इसमेंधर्मशशशृङ्गवत् अत्यन्तअसत्हैं वोचिन्मात्रआत्माठहिराहै ॥

एवमप्युपन्यासात्पूर्वभावादविरोधंवादरायणः ७।

एवमपि पारमार्थिकचैतन्यरूपेणस्वरूपाधिगमेपि पूर्वस्याप्युपन्यासादिभ्योधिगतस्यब्राह्म्यस्यैश्वर्यरूपस्यभावात् व्यवहारापेचयाव्याख्यानादप्यविरोधं वादरायणआचार्योमन्यते इसत्रिसूत्रीकाखुलासाहै किमुक्तस्वरूपब्रह्मदोश्रुतिसे दोढवसुनाहै यआत्मापहतपाप्माविजरोविमृत्युर्विशोको विजिघत्सोऽपिपासः सत्यकामःसत्यसङ्कल्पइति इसनेसविशेषहीआत्माकहाहै। सयथासैंधवघनोनन्तरोवाह्यः कृत्स्नोरसघनएवैवं वा अरेअयमात्मानन्तरोवाह्यः कृत्स्नःप्रज्ञानघनएवेति इसनेनिर्विशेषआत्माकहाहै जैसविशेषऔरनिर्विशेषरूपमुक्तिदशामे ब्रह्मकेयुगपत्स-

अभिन्न नहींहोसक्तेहैं मिथोविरोधसे इस्से कालकेभेदसेदोनोंब्रह्म
होमेबैठारनये।ग्यहैं सोनहीं प्रतिपत्तिकेभेदसे मुक्तप्रतिपत्तिसे
ब्रह्मआत्मानिर्विशेषहीहै औरबद्धकीप्रतिपत्तिसे सविशेषब्रह्म
आत्माहै मुक्तस्वरूपब्रह्मसर्वज्ञादिगुणोंसेयुक्त विश्वकाकारणन
हींभासताहै कभीभीमुक्तपुरुषनहींजानतेहैं किहमसर्वज्ञसत्यस
ङ्कल्पादिगुणोंसेभरेहैंक्युंकिसर्वज्ञादिबोधकाहेतुअविद्याकेनाश
से औरबद्धपुरुषहीअविद्यायुक्तहीसविशेषहीब्रह्मसर्वज्ञादिगुणों
सेभराकल्पतेहैं इसप्रतिपत्ताकेभेदसेएकहीब्रह्ममेंव्यवस्थाकीसि
द्धिहोनेसे कालभेदकीकल्पनाव्यर्थहै तिस्सेयुगपत्ही निर्विशेष
मेंसविशेषनिर्विशेषसुलभहैं जैसेएकस्त्रीमाभगिनीबधूकामिनी
भक्ष्यहै क्रमसेपुत्रभ्रातासुसुरपति कुत्ताकोज्ञानकीअपेक्षासेतै
सेहीमुक्तबद्धज्ञाताकेज्ञानभेदसे सविशेषनिर्विशेषादिब्रह्मकेभे-
दहैं नकिकालकेभेदसे धर्मसत्त्वेवाअत्यन्तअसत्त्वे जेदापत्त अयुक्त
हैं सर्वज्ञादिश्रुति वाव्यवहारमेंअद्वयश्रुतिकेबाधसे इस्से तोम
रापक्षश्रेयान्है इस्से एवमपि पारमार्थिकचैतन्यस्वरूपमानेमे
व्यवहारकीअपेक्षासे पूर्वकेउपन्यासादिभ्यः इस्से जो पूर्वअवगत
ब्राह्मैश्वर्यरूपहै उसकेअनिषेधसे अविरोधकोबादरायणमान-
ताहै मुक्तिमेंवस्तुसेचिन्मात्रभी जीवान्तरकीव्यवहारदृष्टिसे क
ल्पितसर्वज्ञादिमान्भातहै ऐसेमुनिमतविप्रतिपन्नहैं मूलावि-
द्याएकनानांशहै इस्से जीवनानाहैं कहींनानाविद्याहैं इस्से
जीवनानाहैं ॥

सङ्कल्पाधिकरण ॥ ४ ॥

संकल्पादेवतुतच्छ्रुतेः ८।

ब्रह्मलोकमेंपहुंचेसगुणवंदीको सबवस्तुबाह्यसाधनकेबिना-

हीसङ्कल्पमात्रहीसेंमिलतीहै श्रुति सङ्कल्पादेवास्यगन्धमाल्येसमु तिष्ठतइति सयदिपितृकामोभवति सङ्कल्पादेवास्यपितरः समु पतिष्ठन्तीति परविद्याकाफल मुक्तिकहिचुके अब अपरविद्या काफलमुक्तिकहतेहैं हार्दविद्यासेसुनाकि सयदिपितृलोकका मोभवति सङ्कल्पादेवास्यपितरःसमुपतिष्ठन्तीत्यादि इसमेंसशय हैकिक्या केवलसङ्कल्पहीं पित्रादिकेमिलनेकाहेतु याकिसीअ- न्यनिमित्तकेमङ्गसहेतुहैसुनतेनोसङ्कल्पहीसे परतोभीलोकवत् निमित्तांतरअपेक्षितयोग्यहै जैसेहमआदिकोपूर्वसङ्कल्पसे फि रगमनादिहेतुसे पित्रादिकीसम्पत्तिहोतीहै ऐसेहीमुक्तकोभी होऐसादृष्टविपरीतकल्पितनहींहोगा जैसेराजाकासङ्कल्पसङ्क ल्पितार्थकीसिद्धिमे सुलभसाधनान्तर सामग्रीकोअपेक्षासेहै तैसे सङ्कल्पादेवयहांहै नकिसङ्कल्पमात्रसे मिलेपित्रादि मनो- रथविजृम्भितवत् चञ्चलसे पुष्कलभोगके समर्पणकोसमर्थहो सोनहीं केवलसङ्कल्पहीसेपित्रादिकामेलहै कैसे तच्छ्रुतेः स- ङ्कल्पादेवेत्यादि ऐसीश्रुतिनिमित्तान्तरकीचाहमेंपोड़ितहो जो निमित्तान्तरसङ्कल्पकेअनुधायीहोतेहो प्रयत्नान्तरसे सम्पाद्य निमित्तान्तरइष्टनहींहै सम्पत्तिकेपूर्वबन्ध्यसङ्कल्पहोनेसे लोक वत् यहसामान्यतोदृष्टअनुमान सङ्कल्पश्रुतिसेबाधितहै मुक्त कासङ्कल्पवद्धकेसङ्कल्पसे विलक्षणहै जैसाराजसङ्कल्पप्रजास- ङ्कल्पसे ॥

अतएवचानन्याधिपतिः ९ ।

पहिलितीनअधिकरणोंमें विदेहमुक्तिविचारीथी अबब्रह्मरूप मुक्तिकाविचारकरतेहैं अर्चिरादिमार्गसेब्रह्मलोकमेंपहुंचे उपा सककोभोग्यवस्तुकीप्राप्तिमे बहिराकारणचाहिये औरनकिस-

ङ्कल्पनाचहीकारणहै जोसङ्कल्पहीकारणहै तोमनसेहीलड्का भोजनहै पुष्कलतृप्तिकाअभावहीहै सोनहीं मैंक्याकरूं श्रुति नेहीएदकारसे बहिरीबस्तुकीचाहनावारणकरदीहै सङ्कल्पसे पित्रादिकालाभकहिके औरसङ्कल्पकाफल मनोमोदकनहींहै उपासनाकेप्रसादसे सङ्कल्पशक्तिनिरंकुशहोतीहै इसेअजित मोदकसाफलकल्पितनहींहैं तिस्सेभोग्यसृष्टिमेंसङ्कल्पहीकारणहै अतएव अवन्ध्यसङ्कल्पसे सूरिअनन्याधिपतिहै जिसकाअन्य प्रभुनहींहै प्राकृतभीअपनेकोअन्यस्वामिकनहींसङ्कल्पताहै नि र्वाहहोनेमें यहीश्रुतिदिखातीहै अथयइहात्मानमनुविद्यव्रज- न्त्येतांश्च सत्यान्कामांस्तेषां सर्वेषुलोकेषु कामचारोभवतीति अर्थ ईश्वरकेधर्मसूरिमेंप्रकटहोतेहैं इस्से उसकेसङ्कल्पकाभङ्ग नहींहै ॥

ऐच्छिकदेहाधिकरण ॥ ५ ॥

अभावंबादरिराहह्येवं १० ।

बादरिआचार्य ब्रह्मलोकमेंपहुंचेको देहइन्द्रियादिकाअभा वमानताहै कैसे हि जिस्से जैसाउसनेकहाथा तैसाहीश्रुति कहतीहै मनसैतान्कामान्पश्यन्रमत यएतेब्रह्मलोकइत्यादि इसनेभोगमनोमात्रसेहीसाध्यकहाहै तिस्से देहादिकाव्यवच्छेदहै बादिबिवादसेसंशयहै किमुक्तिमेंदेहादिहैंयानहींहैं पूर्वपक्षने कालभेदसे वाइच्छासेहैं सिद्धान्तमेंनहींहैं सङ्कल्पादेवेत्यादि इस्से मनसङ्कल्पकासाधनसिद्धहै देहेन्द्रियांप्राप्तैश्वर्य सूरिकोहैं यानहींहैं यहीसमीचाहै महीयमानसूरिको देहेन्द्रियोंकाअ- भावबादरिमानताहै आहह्येव वेदकाहताहै मनसैतान्कामा न्पश्यन्रमतेयएतेब्रह्मलोकइति अर्थ यदिमन वोदेहेन्द्रियोंसे

विहरीतदामनसेतिविशेषणनहो तिस्से मोक्षमेंदेहेन्द्रियोंकाऋ-
भावहै ॥

भावंजैमिनिर्विकल्पामननात् । ११ ।

जैमिनिमनीवत् सेन्द्रियदेहकामुक्तिमें मुक्ताभावमानताहै
सएकधाभवतित्रिधाभवतीत्यादि अनेकधाभावविकल्पपढ़नेसे
नहींदेहभेदकेबिना अनेकविधताआंजसीहो यद्यपिनिर्गुणभूम
विद्यामेअनेकधाभावका विकल्पपढ़ाहै तथापिसगुणावस्थामे
विद्यमानऐश्वर्यकाभूमविद्यास्तवार्थसङ्कीर्तनहै इस्से सगुणविद्या
मेफलभावसेउपतिष्ठमानहै ॥

द्वादशाहवदुभयविधंबादरायणोतः १२ ।

द्वादशाहमृद्धिकामाउपेयुरिति जैसेइसनेद्वादशाहसत्रकहा
है ऋद्धिकामियोंकेअथ द्वादशाहेनप्रजाकामंयाजयेदिति इसने
द्वादशाहहीप्रजाकामीकोअहीनकहाहै तैसेहीदानोंश्रुतिसेज-
बदेहचाहंतबसदेहहोता जबदेहनहींचाहेतबअदेहहोताहै इस
रीतिसेबादरायणउभयविध अर्थात्सदेहनिर्देहमानताहै बाद-
रायण अतः उभयलिङ्गश्रुतिदेखनेसे उभयविधसाधुमानता
है यदादेहकासङ्कल्पकरता तदासदेहहोताहै यदाअदेहकात-
दाअदेहहोताहै सत्यसङ्कल्पसेवोसङ्कल्पवैचित्र्यसे द्वादशाहवत्
जैसेपूर्वमीमांसामे येएवंविद्वांसःसत्रमुपयन्तीति इसउपायिचो
दनागम्यश्रुतिसे द्वादशाहसत्रहै वोआसतेतिचोपयन्तीति वा
चोदितसत्रलक्षणहै और द्वादशाहेनप्रजाकामं याजयेदिति
यजतिचोदनाकेदेखनेसे नियतकरताकेबोधकरकेद्विरात्रादि-
वत् अहीनहै भाव जैसेएकहीद्वादशाहसत्र वोअहीनदोरूपसे
है दाश्रुतिसे तैसेसदेहविदेहमुक्तिमेमुक्तहै ॥

तन्वभावेसंध्यवदुपपत्ते १३।

देहकेअभावमे जैसेस्वप्नमेमातादिकीउपलब्धिहोतीहै ऐसे-हीमोक्षमेभी मातादिकीउपलब्धिसिद्धहै मनसेकल्पितबिषयोंका स्वप्नमेभोगसाक्षिभास्यहै यदासेन्द्रियदेहकाअभावहै तदा जैसे सन्ध्य स्वप्नस्थानमेदेहेन्द्रियविषयकेनहोनेमे उपलब्धिमात्र हीपित्रादिकामहोतेहैं एसेमोक्षमेहोयहीयुक्तहै ॥

भावेजाग्रत्वत् १४।

सेन्द्रियदेहकेहोनेमे जाग्रत्कासाभोगमुक्तिमेभीहोताहै इन पांचसूत्रोंकाव्यक्ष्यर्थहोचुका अवइनकासमष्ट्यर्थभीसुनोकि एक श्रुतिसमानभोगकोदिखाती औरसेन्द्रिय वहिरोदेहकाअभाव भीकहितीहै दूसरीनानासेन्द्रियदेहोंकेभावकोकहितीहै जैसे देहकेभावअभावएकपुरुषमें युगपत्‌बिरुद्धहैं फिरकिसीकोदेह हैऔरकिसीकोनहींहै यहीव्यवस्थाठीकहै सोनहीं एकहीपुरुष कोकिसीकालमेंदेहहै औरकिसीमेंनहींहै यहव्यवस्थाठीकहै यदादेहकीइच्छाकरताहै तदासङ्कल्पमात्रसेहीदेहकोरच उस मेबैठकेजाग्रत्‌कालमे जैसेप्राणीभोगोंकोभोगताहै तैसेभोगता है औरयदादेहकीइच्छानहींकरताहै तदासङ्कल्पमात्रसेहीदेह कोमिटाके जैसेप्राणीस्वप्नमेभोगोंकोभोगताहै तैसेहीभोगताहै मनहीसे तिसे एकहीपुरुषकोइच्छासे देहकाहोनानहोनाहै औरजोयोगकेसिद्धिपादमे सिद्धियांकहीहैं वेभीसत्यलोककाआ श्चर्यहै ऐहिकतोऐन्द्रजालहीहैं फिरसेन्द्रियदेहकेहोनेमे जैसे जागरितमेविद्यमान पित्रादिकामहैं तैसे मुक्तिमेमुक्तभीहैं ॥

प्रदीपवेशाधिकरण ॥ ६ ॥

प्रदीपवदावेशस्तथाहिदर्शयति १५।

देहान्तरोंकेस्वीकारमे देहान्तरसेदेहान्तरमेऐसाघुसजाताहै जैसेकिएकप्रदीप प्रदीपसहस्रोंमेआविष्टहोजाताहै यहकैसे हि जिस्मे सयुक्तिकमैंनेजैसाकहाथा तैसाहीश्रुतिभीदिखातीहै स एकधाभवति सत्रिधाभवति पञ्चधासप्तधानवधाभवतीत्यादि अनेकदेहेन्द्रियादिमे चैतन्यअभिव्यक्त त्रिधादिरूपसे होताहै भावंजैमिनिरिति इसमेमुक्तसदेहकहाथा फिरत्रिधाभावादि से नानादेहकेसर्गमे क्यावेनिरात्मकदेहहोंगे जैसेदारुयन्त्रहैं यासात्मकहोंगे अस्मदादिदेहकेतुल्यसृजेजावेंगे यहयहांवीचा है इसमेआत्मावोमनकेभेदकीअसिद्धिसे एकदेहमेयोगसेअन्यदे हनिरात्मकहैं इस्से पढ़ाकि प्रदीपवदावेश: जैसेएकप्रदीपना नाप्रदीपहोताहै विकारशक्तियोगसे तैसेएकसन्सूरिऐश्वर्ययो गसे नानाभावहोकेसबदेहोंमेंघुसताहै कैसे तथाहिदर्शयति सएकधाभवति त्रिधाभवति पञ्चधासप्तधानवधेत्यादि नकिदा रुयन्त्रोपमदेहमानसक्तेहो वोनकिजीवान्तरका।आवेशअसत्कार्य वादसे निरात्मकदेहकीप्रवृत्तिकासम्भवनहींहै जोआत्मावोमन केभेदकीअसिद्धिसे नानादेहयोगोंकाअसम्भवकहाथा सोदोषन हींहै एकमनकेअनुवर्तीसमनस्कअन्यदेह सत्यसङ्कल्पसेसृजेगा उनसृष्टोंमेंउपाधिकेभेदसे आत्माकेभीभेदसे अधिष्ठाताकायोग होगाइसीकानाम योगशास्त्रमेयोगियोंकीनानादेहयोगप्रक्रिया हैयोगसूत्र निर्माणचित्तान्यस्मितामात्रादित्यादि अर्थ योगीकेरचे देहोंमेअभिमानमात्रसेरचेचित्तहैंउनचित्तोंकानियामकअनादि चित्तहै सूरिनदेहन किन्त्विन्मात्रहै किन्तु लिङ्गोपहितात्माहै॥

स्वाप्ययसंपत्योरन्यतरापेक्षमाविष्कृतंहि १६।

फिरकैसेमुक्तकोनानादेहोंमेंप्रवेशरूप ऐश्वर्यमानतेहो सलिलएकोद्रष्टाद्वैताभवतीति अर्थ जलवत्स्वच्छहै ऐसीश्रुतियांविशेषविज्ञानकावारणकरतीहैं॰ इसकाउत्तरपढ़ाकि स्वाप्ययसुषुप्तहै स्वमपीतोभवतितस्मादेनंस्वपीतीत्याचक्षते इसश्रुतिसेसम्पत्तिकैवल्यहै ब्रह्मैवसन्ब्रह्माप्येतीतिसे सुषुप्तिवोमुक्ति इनदोमेंसेएकावस्थाकोचाहसे विशेषसंज्ञाभाववाक्यकहींसुषुप्तावस्थाकोचाहसेवोकहींकैवल्यावस्थाकाचाहसेकहाहै कैसेजाना जिस्सेवहांहीअधिकारकेवशसेप्रकटकियागयाथा एतेभ्योभूतेभ्यः समुत्थायेत्यादि यत्रत्वसर्वमित्यादि यत्रसुप्तोनकंचनकामंकामयतेनकंचनंस्वप्नंपश्यतीत्यादिश्रुतिसे सगुणविद्याकेविपाककास्थानअवस्थान्तरहै जहांऐश्वर्यवर्णमानहै स्वर्गादिकेतुल्य तिस्से अदोषहै। जगत्व्यापाराधिकरण ॥ ७ ॥

जगत्व्यापारवर्जंप्रकरणादसंनिहितत्वाच्च १७।

योगीभौतिकोंमेस्वतंत्रहै नकिभूतोंकेरचनेमें कैसेसबभूतोंकीसृष्टिकेवाक्यमेपरमात्माहीप्रकृतहै औरसृष्टिकालमेंयोगीहीनहींथा योगीऔरसगुणवित् एकार्थवाचीहै जेसगुणोपासनासेमनकेसाथईश्वरसायुज्यकोपहुंचेहैं उनकाऐश्वर्यक्यानिरवग्रहहै यासावग्रह यहसंशयहै फिरउनकाऐश्वर्यनिरंकुशहोनेयोग्यहै आप्नोतिस्वाराज्यं सर्वेस्मैदेवाबलिमावहन्ति तेषांसर्वेषुलोकेषुकामचारोभवतीति इस्मेपढ़ाकि जगद्व्यापारवर्जं जगकेजन्मादिव्यापारोंकोछोड़केमुक्तोंको अन्यअणिमादिऐश्वर्यहोतेहैं औरजगकाव्यापारनित्यसिद्धईश्वरकोहीहै कैसे ईश्वरसृष्टिप्रकरणमेंप्रकृतहोनेसेऔरमुक्तोंकेअसंनिहितहोनेसे नित्यशब्दनिबंधनसेईश्वरान्वेषण विजिज्ञासनपूर्वकजगत्सृष्टिईश्वरसे है नकिजेजो

वईश्वरप्रसादसेलब्धसिद्धिहैं उनसेसृष्टिहै उनकोअणिमादिऐश्वर्यहीसुनाहै इस्से जगकेव्यापारमेंसिद्धसंनिहितनहींथे जेजीवसिद्धहैं,वेसबईश्वरहैं फिरसमनस्कहै।नेसेउनमेंएकमतिनहोगी वह यहकिकिसीकीइच्छासृष्टिरचनेकी वोकिसीकी संहारकरनेकी होगी यहविरोधभीकभीहोगा जोकहोकिकिसीकेसंकल्पकेपीछेअन्यकासंकल्पहोगा इस्से अविरोधसमर्थितहै इस्सेपरमेश्वराकूतकेतंत्रहैं जीवसिद्धसबयहव्यवस्थितहै इस्से एकहीईश्वर है नकिअनेकयहभावहै ।

प्रत्यक्षोपदेशादितिचेन्नाधिकारिकमंडलस्थोक्तेः १८।

जोकहाथाकि आप्नोतिस्वाराज्यमित्यादि प्रत्यक्षकेउपदेशसे निरवग्रह ऐश्वर्यसूरिकोन्याय्यहै सोपरिहर्त्तव्यहै कहिताहूंयहां उक्तदोषनहींहै आधिकारिकमण्डलस्थोक्तेः जोआधिकारिक सूर्यमण्डलादि विशेषस्थानोंमें स्थितपरईश्वरहै उसकेआधीनस्वाराज्यकीप्राप्तिकहीहै यत्कारणमनंतरमाप्नोतिमनसस्पतिमित्याह जोसबमनोंकापतिपूर्वसिद्धईश्वरहै उसकोप्राप्तहै इसीकेअनुसारआगेकहाकि वाक्पतिश्चक्षुष्पतिः श्रोत्रपतिर्विज्ञानपतिश्चभवतीति ऐसेही सर्वत्रयथासंभव नित्यसिद्धेश्वराधीन योगिवोसिद्धहुए जीवोंकाऐश्वर्ययोजयितव्यहै भोगमेंस्वाराज्यहै नकिजगकेजन्मादिमेसिद्धजीवको।जोआधिकारिकहैसोहीमण्डलस्थहै मनसस्पति परमात्मातत्सवितुर्वरेण्यमित्यादिश्रुतिसे ॥

विकारावर्त्तिचतथाहिस्थितिमाह १९।

विकारावर्तिभीनित्यमुक्तपारमेश्वररूपहैनकेवलविकारमात्रगोचरसूर्यमण्डलादिमेस्थानहै तथाहि देखो स्थितिमाह ईश्वरकी

टोरूपस्थितिवेदनेकहीहै तावानस्यमहिमाततोज्यायांश्चपूरुषः पादोस्यसर्वाभूतानित्रिपादस्यामृतंदिवीत्यादि सगुणालम्बननिर्विकाररूपकोनहींपासक्तेहैं यतत्क्रतुसिद्दूसोजेसेदोरूपईश्वरमे निर्गुणकोनहींपायकेसगुणमेठहिरतेहैं तैसेसगुणमेभीनिरङ्कुश ऐश्वर्यकोनहींपायकेसांकुशऐश्वर्यमेठहिरतेहैंयहीदेखो ॥

दर्शयतश्चैवंप्रत्यक्षानुमाने २० ।

श्रुतिस्मृतिदोनोंपरज्योतिर्विकाराऽवर्तिदिखातीहैं नतत्रसूर्योभातीत्यादि नतद्भासयतेसूर्यइत्यादि परज्योतिकोविकारसे अवर्तित्वप्रसिद्धहैयहआशयहै २० याध्यानाभावसेसर्गाभाव वोध्यानाभावबिध्यभावसेयोगीउपासककेहै ॥

भोगमात्रसाम्यंलिंगाच्च २१ ।

इससेभीनिरङ्कुशऐश्वर्यबिकारालम्बनोंकानहींहै जिससेअनादिसिद्धईश्वरकेसाथ सादिसिद्धजीवोंको भोगमात्रसमानसुना है तमाहापोवैखलुमौयन्तेलोकोसाविति सयथैतान्देवतांसर्वाणिभूतान्यवंत्येवंहै वंविदंसर्वाणिभूतान्यवन्ति तेनोएतस्यैदेवतायैसायुज्यसलोकतांजयतीत्यादि जेभेदव्यपदेशलिङ्गहैं अर्थ ब्रह्मलोकमेपहुंचेउपासककोदेखहिरण्यगर्भकहिताहै किमैंनेजेतुमकोअमृतरूपजलभोगार्थकियेहैं तुमकोयहलोकअमृतजलरूप होभोगसमानसे सः दृष्टान्तहै यथा तेनो तेन ऊ० यहपदहै उअपिकेअर्थमेहै सायुज्य समानदेहथाक्रममुक्तिहै ॥

अनावृत्तिःशब्दादनावृत्तिःशब्दात् २२ ।

ननुसातिशयसे ऐश्वर्यअन्तवत्हो इससेसादिसिद्धेश्वरोंकी आवृत्तिहो इसकाउत्तरपढ़ाकि अनावृत्तिः नाड़ीरश्मिसम्बद्ध अर्चिरादिपर्वदेवयानपथसे जेवेदोक्तविशेषणब्रह्मलोकमेगये ते

नहींलौटिआतेहैंमर्त्यलोकमे यस्मिन्नरश्चरायश्चार्णवौब्रह्मलोके तृतीयस्यामितोदिवियस्मिन्नैरंमदीयंसरोयस्मिन्नश्वत्थः सोमसवनोयस्मिन्नपराजिता पूर्ब्रह्मणोयस्मिंश्चप्रभुविमितंहिरण्मयंवेश्मेत्यादि अर्थ यस्मिन् इतः पृथिवीलोकसे तीसरेदिवलोकमेंजो ब्रह्मलोकहै उसमे नरः अ्यः जैदोअर्णवतुल्यसुधाकेहृदहैं ऐरं अन्नमय मदीयं मदकर सरः सोमसवनअमृतवर्षी खुलासाब्रह्मलोकमेसुराकाऐसातालहै किजिसेदेखनेहीसे नसाहोताहै इसकाप्रपञ्चमन्त्राथर्बादादिमेनानाविधहै भुक्तभोगजैसेचन्द्रलोकादिसेलौटिआतेहैं तैसेउसहिरण्यपुरकोपायकेउपासकनहीं लौटतेहैं कैसे तयोर्ध्वमायन्नमृतत्वमेति तेषांनपुनरावृत्तिरेतेनप्रतिपाद्यमानाइमंमानवमावर्त्तंनावर्त्तंतेब्रह्मलोकमभि सम्पद्यंतेनचपुनरावर्त्तत इत्यादिशब्दोंसे सगुणविद्याकेफलकेत्वयमेनिरंकुशेश्वरकेअनुग्रहसेलब्धात्मज्ञानसेमुक्तिहीहै अनावृत्तिउनकोसिद्धहै जिनकेसम्यग्दर्शनसेध्वस्त तमवोनित्यसिद्धनिर्वाणपरायणहैं सगुणशरणोंकोभीअनावृत्तिसिद्धिहैसम्यग्दर्शनसे नकिकल्पान्तरमेजन्मसबसूत्रकादोबारपाठशास्त्रकीसमाप्तिकाद्योतकहै उनकाफिरवहांजन्महोताहै ईश्वरकाज्ञाननहीं होनेसे अपामसोममम्ताअभुवनित्यादिमन्त्रजात ऐसेमन्त्रोंसे सोमकेपीनेवालेआपकोमुक्तमानतेहैं सोमुक्तिस्वर्गरूपाचिरस्थायिनीहै कर्मजन्यहोनेसे और नकिनिरतिशयानन्दाविर्भावरूपमुक्तिहै बोधशून्यहोनेसे । इतिश्रीयुक्तताराचन्द्रवर्मणाकृतेब्रह्मसूत्रभाषाभाष्येतुर्याध्यायस्यतुर्यपादःपूर्णः ॥

नागरामांकचन्द्राब्दे ताराचन्द्रेणवर्मणा ।
अकारिब्रह्मसूत्रेषु भाष्यंहार्दतमोपहम् ॥ १ ॥